ऑक्सफोर्ड
बाल हिन्दी
शब्दकोश

आक्सफोर्ड

बाल हिन्दी शब्द कोश

संस्कृत हिन्दी साहित्य
तथा अन्य विभिन्न विषयों
के नवीन शब्दों का संग्रह।

प्रकाशक :
कमल पुस्तकालय
1677, नई सड़क दिल्ली-110006.
दूरभाष : 269327

सम्पादक :
के. के. सपरा, बी० ए०

मूल्य 6-60

मुद्रक :
सकई लार्क प्रिंटर्स दिल्ली

प्राक्कथन

'आक्सफोर्ड हिन्दी शब्द कोश' की अपार सफलता के बाद हमने एक लघु बहुत उपयोगी तथा सस्ते मूल्य के शब्द कोश का निर्माण करने का दृढ़ संकल्प किया। इस कोश की रचना में छात्रों के लिए उपयोगी, प्रचलित तथा कठिन शब्दों के अर्थ को सविस्तार समझाने का भरसक प्रयास किया है। प्रस्तुत शब्द कोश हर दृष्टि से पूर्ण उपयोगी तथा संग्रहणीय है।

हमें पूर्ण विश्वास है प्रस्तुत शब्द कोश शिक्षकों तथा स्कूल, कालेज के विद्यार्थियों के लिए एक वरदान सिद्ध होगा।

प्रकाशक

संकेत-विवरण

संकेत	विवरण
अं.	अंग्रेजी भाषा
अं.	अरबी भाषा
अव्य.	अव्यय
उप.	उपसर्ग
कवि.	केवल कविता में प्रयुक्त
क्रि. अ.	अकर्मक क्रिया
क्रि. वि.	क्रिया विशेषण
क्रि. स.	सकर्मक क्रिया
ग्रा.	ग्रामीण
(दे)	देशज
दे.	देखिए
पु.	पुल्लिग
प्रत्य.	प्रत्यत
फा.	फारसी
मुहा.	मुहावरा
रा.	रामचरित-मानस
वि.	विशेषण
सर्व.	सर्वनाम
सू.	सूरदास
स्त्री.	स्त्रीलिंग

हिन्दी शब्दकोश

अ-हिन्दी तथा संस्कृत-वर्णमाला का पहिला अक्षर। यह कंठ से बोला जाता है।
अँकवार-संज्ञा स्त्री० गोद। छाती।
अँकाई-संज्ञा स्त्री० अन्दाज लगाना।
अँकाना-क्रि० स० अँकवाना।
अँकुड़ा-संज्ञा पुं० लोहे को मुड़ी हुई कील या काँटा। कुलाबा।
अँकुरना-क्रि० अ० बीज जमना।
अँकुसी-संज्ञा स्त्री० कँटिया।
अँकोर-संज्ञा पुं० गोद। घूस या भेंट।
अंकोरी-संज्ञा स्त्री० गोद। आलिंगन।
अँखुआ-संज्ञा पुं० महीन अंकुर।
अँखुआना-क्रि० अ० अंकुर फूटना। बीज जमना।
अँगड़ाई-संज्ञा स्त्री० आलस्य के कारण देह टूटना।
अँगड़ाना-क्रि० अ० अँगड़ाई लेना।
अँगरखा-संज्ञा पुं० लम्बा कुरता।
अँगीठी-संज्ञा स्त्री० छोटा चूल्हा, छोटी आतिशदान।
अँगूठा-संज्ञा पुं० तर्जनी के पास की सब से मोटी अंगुली।
अँगूठी-संज्ञा स्त्री० गहना। छल्ला।
अँगोछना-क्रि० स० कपड़े से गीले शरीर को पोंछना।
अँगोछा-संज्ञा पुं० तौलिया, गमछा।

अँचरा-संज्ञा पुं० (दे०) आँचल।
अँचवना-क्रि० स० आचमन करना। भोजन के बाद कुल्ला करना।
अँजवाना-क्रि० स० अंजन या सुरमा लगवाना।
अँजुरी, अँजुली-(दे०) अंजलि।
अँटिया-संज्ञा स्त्री० छोटा गट्ठा।
अँटियाना-क्रि० स० छिपाना, लुप्त करना। गठरी बाँधना।
अँतड़ी-संज्ञा स्त्री० आँत।
अंदरसा-संज्ञा पुं० पीसे हुए चावल की एक प्रकार की मिठाई।
अँधियारा-संज्ञा पुं० वि० (दे०) अँधेरा, अन्धकार।
अँधेरा-संज्ञा पुं० उजाले का अभाव, अन्धकार, धुंधलापन।
अँधेरिया-संज्ञा स्त्री० अन्धकार, अँधेरी रात।
अंधोटी-संज्ञा स्त्री० बैल या घोड़े की आँखों को ढाँपने का पट्टा।
अंबराई-सं० स्त्री० आम का बाग।
अंबिया-संज्ञा स्त्री० आम का बिना जाली पड़ा कच्चा छोटा फल।
अँसुवा, असुवा-संज्ञा पुं० आँसू।
अंक-संज्ञा पुं० गोद। शरीर।
अंकगणित-संज्ञा पुं० (सं०) एक, दो आदि के जोड़ने, घटाने, गुणा और भाग करने के ढंग बतानेवाली

विद्या।
अंकन-संज्ञा पुं० (सं०) निशान या चिह्न लगाना। गिनना।
अंकित-चिह्न या निशान किया हुआ। लिखित। वर्णित।
अंकुर-संज्ञा पुं० (सं०) अँखुआ। कल्ला। कोंपल।
अंकुरित-वि० (सं०) उगा हुआ।
अंकुश-संज्ञा पुं० (सं०) हाथी को हाँकने का अस्त्र। रोक। नियंत्रण।
अंग-संज्ञा पुं० देह, भाग, अंश।
अंगज-वि० (सं०) अंग से उत्पन्न। पुत्र।
अंगजा-संज्ञा स्त्री० बेटी। पुत्री।
अंगण-संज्ञा पुं० (सं०) आँगन।
अंगत्राण-संज्ञा पुं० (सं०) कवच।
अंगद-संज्ञा पुं०(सं०) बाजूबंद।
अंगदान-संज्ञा पुं० (सं०) पीठ दिखाना। देह-समर्पण।
अंगभंग-सं० पुं० (सं०) शरीर के किसी भाग को नष्ट करना या उसका नष्ट या खंडित होना।
अंगभूत-वि० (सं०) अंग से उत्पन्न।
अंगरक्षा-संज्ञा स्त्री० (सं०) देह की रक्षा या हिफाजत।
अंगराग-संज्ञा पुं० चन्दन, केसर आदि का लेप या उबटन।
अंगविकृति-संज्ञा स्त्री० (सं०) मृगी रोग। सुडौलपन का विपर्यय।
अंग-विक्षेप-संज्ञा पुं० (सं०) कलाबाजी। नाचना, मटकना।
अंगहीन-वि० (सं०) जिसका कोई अंग न हो। अनंग, कामदेव।

अंगा-संज्ञा पुं० अँगरखा, चपकन।
अंगार-संज्ञा पुं० अंगारा, जलता हुआ कोयला। धुआँ-रहित अग्नि।
अंगार पुष्प-संज्ञा पं० लाल फूल।
अंगार मणि-संज्ञा पुं० (सं०) मूंगा, प्रवाल।
अंगारिणी-संज्ञा स्त्री० अँगीठी। वह दिशा जिस पर सूर्य की लालिमा छायी हो।
अंगिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) चोली, अँगिया, कुरती। कंचुकी।
अंगी-वि० (सं०) शरीर धारण करने-वाला। अंशी।
अंगीकार-संज्ञा पुं० (सं०) स्वीकार। मंजूरी। अंगीकरण।
अंगीकृत-वि० (सं०) ग्रहण या स्वीकार किया हुआ।
अंगुर-संज्ञा स्त्री० (दे०) अंगुल।
अंगुल-संज्ञा पुं० आठ जव के बराबर की नाप। बित्ते का माप।
अंगुलि-त्राणसंज्ञा पुं० (सं०) अंगुस्ताना, दस्ताना।
अंगुश्तनुमाई-संज्ञा स्त्री० (फा०) बदनामी। उंगली उठाना।
अंगुश्तरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) अंगूठी।
अंगुश्ताना-संज्ञा पुं० (फा०) अँगूठा। अंगुलित्राण।
अंगुष्ठ-संज्ञा पुं० अंगूठा।
अंगूर-संज्ञा पुं० (फा०) द्राक्षा, दाख। मीठा और रससिक्त फल।
अंगूरी-वि० (फा०) अंगूर के रंग का। अंगूर का बना हुआ शराब।

अंघस-संज्ञा पुं० (सं०) पाप। पातक।
अंघ्रि-संज्ञा पुं० (सं०) पैर। चरण।
अंचल-संज्ञा पुं० (सं०) आँचल। प्रांत अथवा देश की सीमा के आसपास का भाग। किनारा, तट।
अंचित-वि० (सं०) आराधित। पूजित।
अंछर-संज्ञा पुं० अक्षर। जादू, टोना।
अंजन-संज्ञा पुं० काजल, सुरमा, स्याही, रात्रि, एक वृक्ष।
अंजर-पंजर-संज्ञा पुं० ठठरी। शरीर के जोड़। हड्डियों का ढाँचा।
अंजलि, अंजली-संज्ञा स्त्री० (सं०) दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ गड्ढा, सम्पुट या मुद्रा।
अंजलिबद्ध-वि० (सं०) हाथ जोड़े हुए। करबद्ध।
अंजाम-संज्ञा पुं० (फा०) फल, नतीजा।
अंजीर-संज्ञा पुं० (फा०) एक मीठा और स्वादिष्ट फल।
अंझा-संज्ञा पुं० (सं०) किसी नित्य किए जानेवाले काम में नागा या छुट्टी।
अंटा-संज्ञा पुं० बड़ी गोली या कौड़ी।
अंटी-संज्ञा स्त्री. उँगलियों के बीच का स्थान, लच्छी, गाँठ।
अंठी-संज्ञा स्त्री० गाँठ। गिलटी।
अंड-संज्ञा पुं० अंडा, फोता, शरीर।
अंडकोश-संज्ञा पुं० फोता।
अंडज-संज्ञा पुं० अंडे से उत्पन्न होनेवाले जीव।
अंड-बंड-संज्ञा पुं० बेमतलब की बातें, व्यर्थ प्रलाप।

अंडाकार-वि० (सं०) अंडे के समान आकृतिवाला।
अंडी-संज्ञा स्त्री० रेंड़ी। एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
अंडैल-संज्ञा स्त्री० जिसके पेट में अंडा हो, अंडेवाली।
अंत-संज्ञा पुं० आखिर, समाप्ति। अन्तिम भाग। मृत्यु, अंतकाल।
अंतक-संज्ञा पुं० (सं०) नाश करनेवाला, मृत्यु, यमराज।
अंतकारी-संज्ञा पुं० अंतक।
अंतकाल-संज्ञा पुं० (सं०) मृत्यु।
अंतक्रिया-संज्ञा स्त्री० (सं०) मरने के बाद किये जानेवाले कर्म।
अंतग-संज्ञा पुं० (सं०) निपुण।
अंतगति-संज्ञा स्त्री० मौत। मृत्यु। अन्तिम अवस्था।
अंतपाल-संज्ञा पुं० द्वारपाल।
अंतरंग-वि० (सं०) आत्मीय। घनिष्ठ।
अंतर-संज्ञा पुं० फर्क, शेष, दूरी।
अंतरजामी-संज्ञा पुं० (दे०) अन्तर्यामी।
अंतरपट-संज्ञा पुं० परदा, ओट।
अंतरस्थ-वि० (सं०) भीतर रहनेवाला।
अंतरा-क्रि० वि० भीतर, बीच में, अतिरिक्त।
अंतरात्मा-संज्ञा स्त्री० आत्मा। जीवात्मा। अन्तःकरण।
अंतराय-संज्ञा पुं० (सं०) विघ्न।
अंतराल-संज्ञा पुं० मध्यवर्ती काल या स्थान। मध्य।
अंतरिक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) आकाश।

अंतरित-वि० (सं०) भीतर रखा या छिपाया हुआ। गुप्त।
अंतरीय-संज्ञा पुं०(सं०) बनियान।
अंतर्गत-वि० (सं०) सम्मिलित।
अंतर्गति-संज्ञा स्त्री०(सं०) भावना।
अन्तर्द्धान-संज्ञा पुं० (सं०) आंखों से अदृश्य या गायब हो जाना।
अंतर्निहित-वि०(सं०) भीतर रखा हुआ। मन के अन्दर स्थित।
अंतर्बोध-संज्ञा पुं०(सं०) आत्मा की पहचान। अंतर्ज्ञान।
अंतर्भाव-संज्ञा पुं० अंतर्गत होना।
अंतर्मुख-वि० (सं०) जिसका मुँह भीतर की ओर हो।
अंतर्यामी-वि० (सं०) मन की बात या उसके भाव समझने वाला।
अंतर्लापिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह पहेली जिसका उत्तर भी उसके अक्षरों में छिपा हो।
अंतर्लीन-वि० (सं०) निमग्न या मानसिक विचारों में ही लीन।
अंतर्विकार-संज्ञा-पुं० (सं०) शरीर के स्वाभाविक धर्म; जैसे भूख, प्यास। मन के धर्म या दशाएँ।
अन्तर्शय्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) मृत्यु-शय्या। श्मशान, मरघट।
अंतस्-संज्ञा पुं० (सं०) अन्तःकरण।
अंतस्थ-वि०(सं०)भीतरी।बीच का।
अंतस्नान-संज्ञा पुं० (सं०) यज्ञ की समाप्ति पर किया जानेवाला स्नान।
अंतिम-वि० (सं०) आखिरी। सब से बढ़कर।
अंतेवासी-संज्ञा पुं० शिष्य, चेला।
अन्तःकरण-संज्ञा पुं० ज्ञानेन्द्रिय। मन जो संकल्प-विकल्प, स्मरण, निश्चय आदि क्रियायें करता है।
अंतपटी-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी चित्रपट के पिछले भाग का दृश्य।
अन्तःपुर-संज्ञा पुं० (सं०) भीतरी महल या रनिवास। जनानखाना।
अन्तःराष्ट्रीय-वि० सब राष्ट्रों से सम्बन्धित।
अंत्य-वि०(सं०) अंत का, अन्तिम।
अंत्यज-पुं० शूद्र, अछूत।
अंत्याक्षर-संज्ञा पुं० (सं०) वर्णमाला का अंतिम अक्षर। पद या शब्द का अंतिम अक्षर।
अंत्याक्षरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की प्रतियोगिता जिसमें प्रतिद्वन्द्वी लोग पूर्व वक्ता के बोले हुए पद या पद्य के अंतिम अक्षर से शुरू होने-वाला पद्य आदि पढ़ते हैं।
अंत्यानुप्रास-संज्ञा पुं० (सं०) पद्य के अन्तिम अक्षरों का मेल। तुक।
अंत्येष्टि-संज्ञा पुं० (सं०) मरे हुए व्यक्ति का शवदाह आदि संस्कार।
अंत्र-संज्ञा पुं० (सं०) आँत, अँतड़ी।
अंदर-क्रि० वि० (फा०) भीतर।
अंदरूनी-वि०(फा०)भीतरी।
अंदाज-संज्ञा पुं० (फा०) अदा, अनुमान, अटकल।
अंदेशा-संज्ञा पुं०शक, आशंका, फिक्र। सन्देह, भय, खतरा, पसोपेश।
अंध-वि०(सं०)बिना आँख का,अंधा।
अंधक-संज्ञा पुं० (सं०) नेत्रहीन।

अंधखोपड़ी-संज्ञा स्त्री० मूर्ख, बुद्धिहीन।
अंधड़-संज्ञा पुं० धूल से भरी तेज वायु,आँधी।
अंधतमस-संज्ञा पुं० (सं०) घोर अंधकार। गाढ़ा अन्धकार।
अंधतमिस्र-संज्ञा पुं० (सं०) घोर अंधकार-युक्त नरक।
अंधपरंपरा-संज्ञा पुं० बिना सोचे-समझे पुरानी रीति-रिवाज का अनुकरण।
अंधविश्वास-संज्ञा पुं० (सं०) बिना परीक्षा किये बनाई मान्यता या धारणा। तर्कहीन विश्वास।
अंधा-संज्ञा पुं० जिसे दिखाई न दे, अंध, विचारहीन, मूर्ख।
अंधाधुंध-संज्ञा स्त्री० बड़ा अँधेरा। अन्यायपूर्ण।
अंधेर-संज्ञा पुं० अन्याय, अनाचार।
अंधेरखाता-हिसाब-किताब में गड़बड़, गड़बड़ी, कुप्रबंध।
अंब-संज्ञा स्त्री० (सं०) आम का पेड़। मा, माता।
अंबक-संज्ञा पुं० (सं०) आँख।
अंबर-संज्ञा पुं० केसर, वस्त्र, धोती। आसमान। एक सुगंधित द्रव्य।
अम्बर-डम्बर-संज्ञा पुं० साँझ की लाली।
अंबा-संज्ञा स्त्री० (सं०) मां, दुर्गा।
अंबार-संज्ञा पुं० (फा०) ढेर। समूह।
अंबिका-संज्ञा स्त्री० अंबा। दुर्गा।
अंबु-संज्ञा पुं० पानी, जल।
अंबुज-संज्ञा पुं० (स्त्री० अंबुजा) जो पानी से पैदा हुआ हो। कमल।
अंबुद-संज्ञा पुं० (सं०) जल देनेवाला, बादल।
अंबुधर-संज्ञा पुं० पानी रखनेवाला, बादल।
अंबुधि-संज्ञा पुं० सागर, समुद्र।
अंबुनिधि-संज्ञा पुं० (सं०) सागर।
अंबुपति-संज्ञा पुं० समुद्र। वरुण।
अंबुरुह-संज्ञा पुं० कमल।
अंबुशायी-संज्ञा पुं० जो पानी पर शयन करे, विष्णु।
अंभ-संज्ञा पुं० (सं०) जल।
अंभोरुह-संज्ञा पुं० कमल।
अंश-संज्ञा पुं० भाग, हिस्सा। वृत्त की परिधि का ३६० वाँ भाग जिसे इकाई मानकर कोण को नापा जाता है।
अंशक-संज्ञा पुं० मझिया, पट्टीदार, हिस्सेदार।
अंशुमाली-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य।
अकंटक-वि० (सं०) बिना काँटे का। विघ्न-रहित, निःशत्रु।
अकंपन-वि० (सं०) न काँपनेवाला। संज्ञा पुं० एक राक्षस।
अकड़-संज्ञा स्त्री० ऐंठन, अहंकार।
अकड़ना-क्रि० अ० ठिठुरना, ऐंठना।
अकड़बाज-वि० घमंडी। अभिमानी।
अकड़बाजी-संज्ञा स्त्री० ऐंठ। अभिमान।
अकथ; अकत्थ-वि० (सं०) जो कहा न जा सके।
अकथनीय-वि० (सं०) न कहा जाने योग्य। अवर्णनीय।
अकथ्य-वि० (सं०) न कहा जाने योग्य, व्यर्थ।

अकबक-संज्ञा स्त्री० बेकार बात।
अकरण-संज्ञा पुं० (सं०) कर्म का अभाव। इंद्रियों से रहित, ईश्वर।
अकरणीय-वि० (सं०) न करने योग्य।
अकर्तव्य-वि० (सं०) न करने योग्य।
अकर्ता-वि० (संज्ञा) काम से अलग।
अकर्मण्य-वि० (सं०) कुछ काम न करनेवाला, सुस्त, बेकाम।
अकर्मी-संज्ञा पुं० पापी।
अकलंक-वि० (सं०) बिना दोष का।
अकलंकित-वि० (सं०) कलंक रहित, निर्दोष।
अकसर-क्रि० वि० (अ०) अधिकतर।
अकसीर-संज्ञा स्त्री० एक रसायन।
अकस्मात्-क्रि०वि० (सं०) अचानक।
अकाज-संज्ञा पुं० दुष्कर्म। बिना काम का।
अकाजी-वि० कार्य की हानि करनेवाला। बाधक।
अकाट्य-वि० जिसको काटा न जा सके, अटल, दृढ़।
अकाम-वि० (सं०) इच्छारहित।
अकारज-संज्ञा पुं० हानि।
अकारण-वि० (सं०) निष्प्रयोजन। बिना वजह।
अकारथ-क्रि० वि० बेकार।
अकाल-संज्ञा पुं० अनुपयुक्त समय।
अकाल मूर्त्ति-संज्ञा स्त्री० कभी नष्ट न होनेवाला पुरुष या देवता।
अकाल मृत्यु-संज्ञा स्त्री० असामयिक मृत्यु, अपमृत्यु।
अकाली-संज्ञा पुं० नानकपंथी साधु जो सिर पर लोहे के चक्र के साथ काली पगड़ी धारण करते हैं।
अकिंचन-वि० (सं०) निर्धन।
अकिंचनता-संज्ञा स्त्री० (सं०) दरिद्रता। गरीबी।
अकीर्ति-संज्ञा स्त्री० दुर्नाम। अपयश।
अकुल-वि० (सं०) जिसके कुल में कोई न हो। नीच कुल।
अकुलाना-क्रि० अ० शीघ्रता करना। परेशान होना। आवेश में होना।
अकुलीन-वि० (सं०) नीच वंश का।
अकूत-वि० जिसका अंदाज न लगाया जा सके। अगणित।
अकृत-वि० (सं०) बिना किया हुआ।
अक्खड़-वि० हठी, उद्धत, उग्र, खरा। स्पष्ट वक्ता।
अक्खड़पन-संज्ञा पुं० कहा न मानना। खरापन, मूर्खता, साफ बोलना।
अक्खर-संज्ञा पुं० (ग्रा०) अक्षर।
अक्रम-वि० (सं०) बिना सिलसिले का।
अक्रिय-वि० (सं०) क्रियारहित, स्तब्ध, निकम्मा।
अक्रूर-वि० (सं०) सरल।
अक्ल-संज्ञा स्त्री० (अ०) बुद्धि। समझ।
अक्लमंद-संज्ञा पु० (फा०) बुद्धिमान्। चतुर।
अक्लमंदी-संज्ञा स्त्री० (फा०) समझदारी। चतुराई।
अक्लिष्ट-वि० (सं०) क्लेश-रहित। सहज, शीघ्र, सुगम।

अक्ष-संज्ञा पुं० जुआ खेलने का पासा। गाड़ी। धुरी। आँख।
अक्षत-वि० (सं०) बिना टूटा हुआ, समूचा।
अक्षपाद-संज्ञा पुं० गौतम ऋषि जिन्होंने न्यायशास्त्र बनाया।
अक्षम-वि० (सं०)असमर्थ। अशक्त।
अक्षमता-संज्ञा स्त्री० (सं०) शक्ति का अभाव। असामर्थ्य। अयोग्यता।
अक्षय-जो क्षय न हो, अविनाशी।
अक्षय वट-संज्ञा पुं० (सं०) बरगद का एक खास वृक्ष, एक प्रयाग में और एक गया में। कहते हैं प्रलय में भी इसका नाश नहीं होता।
अक्षर-वि० (सं०) जिसका नाश न हो, स्थिर, नित्य।
अक्षसूत्र-संज्ञा पुं० (सं०) रुद्राक्ष की माला।
अक्षहीन-वि० (सं०) अंधा, नेत्रहीन।
अक्षांश-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी की
अक्षि-संज्ञा स्त्री० नेत्र, आँख।
अक्षिगोलक-संज्ञा पुं० (सं०) आँख का टेंटर या ढेढ़न। कॉनिया।
अक्षितारा-संज्ञा स्त्री० (सं०) आँख की पुतली।
अक्षिपटल-संज्ञा पुं० (सं०) आँख का परदा।
अक्षुण्ण-वि० (सं०) न टूटा हुआ।
अक्षौहिणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) पूरी चतुरंगिणी सेना जिसमें १०९३५० पैदल, ३६५६१० घोड़े, २१८७० रथ, और रथों के बराबर ही २१८७० हाथी।

अक्स-संज्ञा पुं० (अ०) छाया, परछाईं, प्रतिबिम्ब।
अक्सर-क्रि० वि० (अ०) प्रायः, ज्यादातर, बहुधा।
अखंड-वि० (सं०) जिसके टुकड़े न हों, पूर्ण, पूरा, सब, जिसका क्रम न टूटा हो।
अखंडनीय-वि० (सं०) जिसके टुकड़े न हो सकें। जिसके विरोध में तर्क न दिया जा सके। पुष्ट, अटूट।
अखड़ैत-संज्ञा पुं० बलवान् पुरुष।
अखरना-क्रि० स० बुरा लगना, कष्ट होना।
अखरा-वि० (कवि०) झूठा। बना-
अखाड़ा-संज्ञा पुं० मल्लयुद्ध करने की जगह।
अखाद्य-वि० (सं०) न खाने योग्य।
अखिल-वि० (सं०) सम्पूर्ण, सब।
अखीर-संज्ञा पुं० (अ०) अन्त।
अखोह-संज्ञा पुं० ऊँची-नीची भूमि।
अख्तियार-संज्ञा पुं० (दे०) किसी काम के करने का हक़ होना।
अग-वि० (सं०) न चलनेवाला।
अगड़बगड़-वि० बे सिर-पैर का, ऊटपटाँग।
अगणनीय-वि०(सं०) जिसकी गिनती न हो सके।
अगन-संज्ञा स्त्री० आग। अग्नि।
अगम-वि० जहाँ तक पहुँचा न जा सके, बहुत गहरा, असंख्य।
अगमासी-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह लकड़ी (हल की) जिसमें फाला लगा होता है।

अगम्य-वि० (सं०) अज्ञेय, असंख्य।
अगर-अव्यय (फा०) यदि। जो।
अगरचे-अव्यय (फा०) यद्यपि, जो कि।
अगरबत्ती-संज्ञा स्त्री० अगर और अन्य सुगन्धित वस्तुओं में लिपटी सींक।
अगल-बगल-वि० (फा०) आस-पास।
अगला-वि० आगे का। आनेवाला।
अगवानी-संज्ञा स्त्री० अतिथि और वर के आने पर, उसे लेने के लिए आगे बढ़ जाना।
अगस्त, ऑगस्ट्-संज्ञा पुं० (अं०) अंग्रेजी साल का आठवां माह।
अगह्-वि० जो पकड़ा या पाया न जा सके, अग्नि।
अगहन-संज्ञा पुं० हिन्दी का एक माह, मार्गशीर्ष।
अगहनिया-वि० अगहन मास में काटा जानेवाला धान।
अगाड़ा-संज्ञा पुं० यात्री द्वारा अगले पड़ाव पर भेजा जानेवाला सामान। कछार।
अगाड़ी, अगाड़ू-वि० आगे। पहले। संज्ञा पुं० किसी चीज के सामने का हिस्सा।
अगाध-वि० (सं०) बहुत गहरा, गंभीर, लोभहीन, अपार।
अगार-क्रि० वि० आगे।
अगिया बैताल-संज्ञा पुं० विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक का नाम। मुंह से आग फेंकनेवाला भूत।
अगुआ-संज्ञा पुं० आगे जानेवाला, मार्गदर्शक, नेता, मुखिया।
अगुण-संज्ञा पु० गुणरहित, निर्गुण, बुराई।
अगुणज्ञ-वि० (सं०) गुणों को न जाननेवाला, अनाड़ी।
अगुणी-वि० (सं०) गुण को न रखनेवाला। गँवार।
अगेह-वि० (सं०) बे घर-बार या ठिकाने का।
अगोचर-वि० (सं०) जो इंद्रियों द्वारा जाना न जा सके, अबोध्य।
अग्नि-संज्ञा स्त्री० (सं०) आग। वेद के देवताओं में से एक।
अग्निकर्म-संज्ञा पुं० होम, चिता में आग लगाने की क्रिया।
अग्निदीपक-संज्ञा पुं० पाचन-शक्ति का बढ़ानेवाली दवा।
अग्निदेवता-संज्ञा पुं० (सं०) आग के जो देवता माने जाते हैं।
अग्निपरीक्षा-संज्ञा स्त्री० (सं०) आग पर चलाकर परीक्षा किया जाना।
अग्निबाण-संज्ञा पुं० (सं०) आग प्रकट करनेवाला बाण।
अग्निबीज-संज्ञा पुं० (सं०) सोना।
अग्निमांद्य-संज्ञा पुं० (सं०) भूख न लगने का रोग, मंदाग्नि।
अग्निशाला-संज्ञा स्त्री० अग्नि रखने का स्थान।
अग्निष्टोम-संज्ञा पुं० यज्ञ।
अग्निसखा-संज्ञा पुं० वायु हवा।
अग्निसहाय-संज्ञा पुं० (सं०) वायु।
अग्निसात्-वि० (सं०) अग्नि द्वारा भस्म किया हुआ।
अग्निहोत्र-संज्ञा पुं० (सं०) वेद-मंत्रों के उच्चारण के साथ अग्नि

में आहुति डालने की क्रिया, हवन।

अग्निहोत्री-संज्ञा पुं० (सं०) अग्नि होत्र करनेवाला ब्राह्मण।

अग्र-संज्ञा पुं० चोटी, नोक, आगे का हिस्सा। वि० उत्तम, श्रेष्ठ।

अग्रगण्य-वि० (सं०) जिसकी गणना सब से पहले की जावे।

अग्रगामी-संज्ञा पुं० आगे चलनेवाला। प्रधान व्यक्ति।

अग्रज-संज्ञा पुं० बड़ा पुत्र या भाई।

अग्रणी-संज्ञा पुं० अगुवा। मुखिया। मालिक। प्रधान।

अग्रतः-अव्यय (सं०) आगे। पहले।

अग्रमहिषी-संज्ञा स्त्री० पटरानी।

अग्रवर्ती-वि० आगे रहनेवाला, अगुवा, नेता।

अग्रसर-वि० (सं०) जो आगे जाय। अग्रगामी, नेता।

अग्राह्य-वि० (सं०) न ग्रहण करने योग्य। त्याज्य।

अग्रिम-वि० (सं०) आगे आने वाला। प्रधान। श्रेष्ठ।

अघ-संज्ञा पुं० अधर्म, पाप, दुःख।

अघट-वि० (सं०) जो किया न जा सके। कठिन। बे-ठीक।

अघटित-वि० (सं०) जो हुआ न हो। असम्भव।

अघनाशक-वि० (सं०) पाप को दूर करनेवाला। पापनाशक।

अघाना-क्रि० अ० पेट भर भोजन खाना। तृप्त होना। उगताना।

अघारि-संज्ञा पुं० पाप का शत्रु।

अघृण-वि० (सं०) दया न रखनेवाला, दयारहित, क्रूर।

अघृणी-वि० (सं०) अच्छा।

अघोर-वि० प्रिय, सौम्य।

अघोरपंथ-संज्ञा पुं० अघोरियों का सम्प्रदाय।

अघोरपंथी-संज्ञा पुं० अघोर पंथ का अनुयायी, अघोरी।

अचंचल, अचञ्चल-वि० (सं०) जो चंचल न हो, धीर। गम्भीर।

अचम्भा, अचंभा-संज्ञा पुं० आश्चर्य, ताज्जुब।

अचकित-वि० (सं०) भय से रहित। स्थिर। इधर-उधर न देखनेवाला।

अचगरी-संज्ञा स्त्री० उपद्रव। शरारत। छिछोरापन।

अचर-वि० (सं०) ठहरा हुआ, स्थिर।

अचरज-संज्ञा पुं० आश्चर्य, ताज्जुब।

अचल-वि० (सं०) जो हिले नहीं, पर्वत, निश्चल, स्थिर, दृढ़।

अचला-संज्ञा स्त्री० (सं०) जो न चले, स्थिर। पृथ्वी।

अचवन-संज्ञा पुं० पीने की क्रिया, आचमन, भोजन के बाद हाथ-मुँह धोना तथा कुल्ली करना।

अचवाई- संज्ञा स्त्री० आचमन।

अचानक-संज्ञा अव्य एका-एक, अकस्मात्।

अचार-संज्ञा पुं० (फा०) खट्टा पदार्थ, आचरण, व्यवहार।

अचाहा-वि० अनचाहा, नापसन्द।

अचिंतनीय-वि० (सं०) ध्यान में न आ सकनेवाला, दुर्बोध, अज्ञेय।

अचिन्तित-वि०(सं०) विना चिंता किया हुआ। आकस्मिक।
अचिंत्य-वि० (सं०) जिस पर सोचा न जा सके, जैसे ईश्वर।
अचित्-संज्ञा पुं० निर्जीव पदार्थ।
अचिर-क्रि० वि० (सं०) थोड़े काल तक रुकनेवाला। जल्दी से।
अचीता-वि० जिसका पहले से अनु-मान न हो। आकस्मिक।
अचूक-वि० न चूकनेवाला, ठीक।
अचेत-वि० (सं०) बेहोश।
अचेतन-वि० जिसमें सुख-दुःख आदि के अनुभव करने की शक्ति न हो, ज्ञानशून्य, चेतनारहित।
अच्छ-वि० (सं०) साफ।
अच्छर-संज्ञा पु० वर्ण, अक्षर।
अच्छा-वि० बढ़िया, उत्तम, भला।
अच्छाई-संज्ञा स्त्री० अच्छे होने का भाव, भलाई, उत्तमता, सुघड़पन।
अच्युत-वि० (सं०) जो गिरा न हो, स्थायी, नित्य।
अछत-क्रि० वि० (ग्रा०) रहते हुए, उपस्थिति में।
अछताना-क्रि० अ० पछताना।
अछरौटी-संज्ञा स्त्री० वर्णमाला।
अछूत-वि० जो छुआ न गया हो। छुआ न जाने योग्य।
अछूता-वि० विना छुआ हुआ। कोरा, नया।
अछेद्य-वि०(सं०) जिसे भेदा न जा सके, अभेद्य। अविनाशी।
अज-वि० (सं०) जिसका जन्म न हो, अजन्मा।
अजगर-संज्ञा पुं० (सं०) शरीर का बहुत भारी और मोटा एक प्रकार स्थूलकाय सर्प।
अजनबी-वि० (अ०) जो जाना हुआ न हो, अपरिचित। परदेसी।
अजन्म-वि० जो जन्म के बन्धन में न आवे, अनादि।
अजपा-वि० (सं०) जिसका उच्चारण न किया जा सके।
अजपाल-संज्ञा पुं० (सं०) गड़ेरिया।
अजब-वि० (अ०) अद्‌भुत, अनोखा।
अजमत-संज्ञा स्त्री० (अ०) महत्त्व। प्रताप। चमत्कार।
अजय-संज्ञा पुं० पराजय, हार। वि० जो जीता न जा सके, अजेय।
अजय्य-वि० (सं०) जो जीता न जा सके, अपराजित।
अजर-वि० (सं०) जो बूढ़ा न हो। चिर-युवा, अमर।
अजस-संज्ञा पुं० अपयश, बदनामी।
अजहद-क्रि० वि० (फा०) हद से ज्यादा, बहुत अधिक।
अजातशत्रु-वि० (सं०) जिसका कोई शत्रु न हो।
अजामिल-संज्ञा पुं० (सं०) पुराणों में वर्णित एक पापी ब्राह्मण जो अपने पुत्र 'नारायण' का नाम मृत्यु-समय पुकारने के कारण तर गया था।
अजायब-संज्ञा पुं० (अ०) अजब का बहुवचन। अनोखी चीजें।
अजायबखाना-संज्ञा पुं० (अ०) वह घर जिसमें अद्‌भुत वस्तुएँ रखी जायँ, म्यूज़ियम।

अजिर-संज्ञा पुं० टीला, आँगन।
अजी-अव्यय सम्बोधन शब्द, जी।
अजीज-वि० (अ०) प्यारा।
अजीब-वि० (अ०) अनोखा। अनूठा।
अजीर्ण-संज्ञा पुं० भोजन न पचने का दोष, अपच।
अजूबा-वि० (अ०) अद्भुत, अनोखा।
अजेय-वि० (सं०) जिसे कोई जीत न सके। न जीतने योग्य।
अज्ञ-वि० संज्ञा पुं० ज्ञानशून्य, मूर्ख।
अज्ञता-संज्ञा स्त्री० (सं०) मूर्खता। अज्ञान।
अज्ञात-वि० (सं०) बिना जाना हुआ, अपरिचित, अविदित।
अज्ञातनामा-वि० (सं०) जिसका नाम-पता न हो। अप्रख्यात।
अज्ञान-संज्ञा पुं० अविद्या, विरुद्ध ज्ञान, जड़ता, मूर्खता। वि० नासमझ।
अज्ञानता-संज्ञा स्त्री० (सं०) मूर्खता, अविद्या, पढ़ा लिखा न होना।
अज्ञानी-वि० (सं०) मूर्ख।
अज्ञेय-वि० (सं०) जो समझ में न आ सके। ज्ञान के अयोग्य।
अटंबर-संज्ञा पुं० ढेर, राशि।
अटक-संज्ञा स्त्री० रोक पड़ना, अड़चन, आवश्यकता, बाधा, विघ्न।
अटकना-क्रि० अ० रुकना, फँस जाना। प्रेम करना, बकझक करना।
अटकल-संज्ञा स्त्री० अन्दाज, अनुमान।
अटकाना-क्रि० संज्ञा रोकना। फँसाना। रोक रखना, उलझाना।
अटकाव-संज्ञा पुं० रोध, रुकावट।
अटपटाना-क्रि० अ० अटकना।
अटम्बर-संज्ञा पुं० (ग्रा०) दिखाना आडम्बर। संज्ञा पुं० परिवार।
अटल-वि० (संज्ञा) न टलनेवाला, चिरस्थायी, पक्का।
अटवी-संज्ञा स्त्री० बन जंगल।
अठखेली-संज्ञा स्त्री० खिलवाड़, उछल-कूद, चुलबुलापन।
अठासी-वि० अस्सी और आठ मिलकर ८८।
अठोतरी-संज्ञा स्त्री० एक सौ आठ दाने की जपने की माला।
अड़ंगा-सं० पुं० रोक, बाधा, विघ्न।
अड़काना-क्रि० संज्ञा दे० अड़ाना।
अड़चन-सं० स्त्री० विघ्न, रुकावट।
अड़ाना-क्रि० सं० सहारा लगाना, किसी चीज को बीच में रखकर गति को रोकना।
अड़ियल-वि० जिद्दी। हठी।
अडोल-वि० न डोलनेवाला, स्थिर।
अड़ोस-पड़ोस-संज्ञा पुं० आसपास। नजदीक।
अड़ोसी-पड़ोसी-संज्ञा पुं० आसपास का रहनेवाला। पास रहनेवाला।
अड्डा-संज्ञा पुं० ठहरने की जगह। प्रधान जगह, वेश्यालय, करगह।
अढ़ैया-संज्ञा पुं० ढाई सेर की तोल। ढाई गुना।
अणु-संज्ञा पुं० सबसे सूक्ष्म मात्रा। द्वयणुक से छोटा, और परमाणु से बड़ा।
अणुवीक्षण-संज्ञा पुं० सूक्ष्म-दर्शन। छोटी वस्तुओं को देखने का यंत्र।

अतः-क्रि० वि० (सं०) इस कारण से, इसलिए।
अतएव-क्रि० वि० (सं०) इसलिए।
अतनु-वि० (सं०) बिना देह का, कामदेव। मोटा, स्थूल।
अतर-संज्ञा पुं० (अ०) फूलों की सुगंधि का सार, इत्र।
अतरदान-संज्ञा पुं० इत्रदान। इत्र रखने का चाँदी का बरतन।
अतरसों-क्रि० वि० परसों के आगे का दिन या बाद का दिन।
अतर्कित-वि० (सं०) जिसका पहले से अनुमान न हो, आकस्मिक।
अतर्क्य-वि० (सं०) जिस पर सोच-विचार न किया जा सके, अचिन्त्य।
अतल-संज्ञा पुं० (सं०) सात पातालों में से पहिला पाताल।
अति-वि० (सं०) बहुत अधिक।
अतिकाय-वि० (सं०) मोटा, स्थूल।
अतिकाल-संज्ञा पुं० विलंब, बहुत देर।
अतिक्रम-संज्ञा पुं० (सं०) कर्त्तव्य का उल्लंघन करना।
अतिक्रमण- संज्ञा पुं० (सं०) सीमा उल्लंघन, बढ़ती।
अतिथि-संज्ञा पुं० (सं०) बिना सूचना दिये आ गया हुआ व्यक्ति।
अतिथि-पूजा-संज्ञा स्त्री० (सं०) अतिथि का आदर-सत्कार, मेहमानदारी।
अतिवाद-संज्ञा पुं० कटोर वचन।
अतिवादी-वि० सच्चा। खरा। कड़वी बात कहनेवाला।
अतिवृष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) बहुत अधिक वर्षा। छः ईतियों में से एक।
अतिशय-वि० (सं०) बहुत अधिक।
अतिशयोक्ति-संज्ञा स्त्री० काव्य में एक अलंकार जिसमें किसी चीज को बहुत बढ़ाकर दिखलाया जाता है।
अतिसार-संज्ञा पुं० एक उदर रोग।
अतींद्रिय-वि० (सं०) जिसे इंद्रियों द्वारा न जाना जा सके।
अतीत-वि० (सं०) बीता हुआ, काल-(पुं०) बीता हुआ समय।
अतीव-वि० (सं०) बहुत, अत्यंत।
अतुल-वि० (सं०) जिसकी तौल का अनुमान न किया जा सके। असीम। जिसकी उपमा न दी जा सके, अनुपम।
अतुलनीय-वि० (सं०) बहुत अधिक।
अतृप्त-वि० (सं०) जो तृप्त या संतुष्ट न हो। भूखा।
अतृप्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) मन भरा हुआ न होना। असंतुष्टि।
अत्तार-संज्ञा पुं० इत्र या तेल बेचने-वाला, गंधी।
अत्यंत-वि० (सं०) बहुत अधिक।
अत्याचार-संज्ञा पुं० (सं०) आचार की सीमा का अतिक्रमण, अन्याय।
अत्याचारी-संज्ञा पुं० अन्याय करने-वाला, अन्यायी, पाखंडी।
अत्युक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) बढ़ा-चढ़ाकर कहने का ढंग।
अत्रभवान्-संज्ञा पुं० (सं०) सम्मान करने योग्य, माननीय। श्रेष्ठ।
अत्रि-संज्ञा पुं० (सं०) सप्त ऋषियों

में से एक ऋषि जो ब्रह्मा के नेत्र से उत्पन्न हुये थे।
अथ-अव्यय (सं०) अनन्तर। आरंभ में।
अथक-वि० जो न थके, बहुत अधिक परिश्रमी, अक्लांत।
अथच-अव्यय (सं०) और, फिर, और भी।
अथर्व-संज्ञा पुं० (सं०) एक वेद।
अथवा-अव्यय (सं०) या। किंवा।
अथाह-वि० जिसकी थाह न हो, वेथाह, अपार, अतिगूढ़, अगाध।
अदंडनीय-वि० (सं०) जो दण्ड पाने के योग्य न हो।
अदंड्य-वि० (सं०) जिसे दण्ड न दिया जा सके।
अदंत-वि० (सं०) जिसके दाँत न हों। दुधमुहाँ।
अदद-संज्ञा स्त्री० (अ०) गिनती। संख्या का चिह्न या संकेत।
अदना-वि० (अ०) बहुत छोटा, तुच्छ। मामूली।
अदम्य-वि० (सं०) जिसका दमन न हो सके, प्रबल, अजेय।
अदय-वि० (सं०) दया-रहित।
अदरक-संज्ञा पुं० अदरख।
अदर्शनीय-वि० (सं०) जो देखने योग्य न हो, बुरा, कुरूप।
अदल-बदल-संज्ञा पुं० (अ०) उलट-पुलट, परिवर्तन, हेरफेर।
अदवान-संज्ञा स्त्री० चारपाई के पैताने की बिनावट को खींचकर कड़ी रखने के लिए बाँधी गई रस्सी।
अदा-वि० (अ०) चुकाना। भाव-भंगी।
अदालत-संज्ञा स्त्री० (अ०) जहाँ न्याय होता है, न्यायालय, कचहरी।
अदालती-वि० अदालत का। मुक़-दमा लड़नेवाला।
अदावत-संज्ञा स्त्री० (अ०) दुश्मनी, शत्रुता। बैर।
अदीन-वि० (सं०) दीनतारहित। निडर। उदार।
अदूरदर्शी-वि० (सं०) जो दूर तक न सोचे। मोटी बुद्धि का।
अदूषण-वि० (सं०) निर्दोष, स्वच्छ जिसमें बुराई न हो, शुद्ध।
अदृश्य-वि० (सं०) जो दिखाई न दे। लुप्त, गायब।
अदृष्ट-वि० (सं०) न देखा हुआ।
अदृष्टपूर्व-वि० (सं०) जो पहले न देखा गया हो। अनोखा।
अदेय-वि० (सं०) न देने योग्य।
अद्धी-संज्ञा स्त्री० एक पैसे का सोल-हवाँ भाग, दमड़ी का आधा।
अद्भुत-वि० (सं०) आश्चर्य-जनक। अनूठा।
अद्भुतालय-संज्ञा पुं० देखिए 'अजा-यबघर'।
अद्य-क्रि० वि० आज, अब, अभी।
अद्यावधि-क्रि० वि० (सं०) अब तक।
अद्रि-संज्ञा पुं० पहाड़, पर्वत।
अद्वितीय-वि० (सं०) अकेला। जैसा दूसरा कोई न हो, केवल।
अद्वैत-वि० (सं०) अतुल्य, जैसा

दूसरा न हो, अनुपम।
अद्वैतवाद-संज्ञा पुं० (सं०) वेदान्त मत, जिसमें आत्मा-परमात्मा में कोई अन्तर नहीं माना जाता और ब्रह्म के अतिरिक्त कोई सत्ता नहीं मानी जाती।
अद्वैतवादी-संज्ञा पुं० ब्रह्मवादी, अद्वैत मत को माननेवाला, वेदान्ती।
अधः-अव्यय (सं०) नीचे।
अधःपतन-संज्ञा पुं० (सं०) नीचे गिरना, अवनति, दुर्दशा।
अधःपात-संज्ञा पुं० अधोगति, नीचे गिरना, पतन।
अधकचरा-वि० आधा कच्चा, अपूर्ण, अपरिपक्व। अधूरा। अकुशल।
अधकहा-वि० आधा ही कहा हुआ।
अधखिला-वि० आधा खिला हुआ।
अधन-वि० पुं० (क्रवि०) निर्धन।
अधम-वि० (सं०) दुष्ट, निकृष्ट, पतित, नीच।
अधमरा-वि० आधा मरा हुआ। मृतप्राय। मरे के समान।
अधर-संज्ञा पुं० (सं०) ओंठ। बिना आधार का, अन्तरिक्ष।
अधरपान-संज्ञा पुं० (सं०) ओठों का चुंबन।
अधर्म-संज्ञा पुं० (सं०) धर्म से खिलाफ काम, अन्याय।
अधर्मात्मा-वि० पुं० दुराचारी।
अधसेरा-संज्ञा पुं० दो पाव का बाट या तोल।
अधिक-वि० (सं०) बहुत, ज्यादा।
अधिकता-संज्ञा स्त्री० वृद्धि, बहुतायत, ज्यादती।
अधिकरण-संज्ञा पुं० (सं०) आधार। आसरा, न्यायाधिकरण।
अधिकांश-संज्ञा पुं० (सं०) अधिक भाग। वि० बहुत। क्रि० वि० प्रायः, बहुधा, खासकर। अवसर।
अधिकार-संज्ञा पुं० (सं०) काम का भार, प्रभुत्व।
अधिकारी-संज्ञा पुं० प्रभु, स्वामी।
अधिकृत-वि० (सं०) अधिकार में आ गया हुआ।
अधिगत-वि० (सं०) स्वीकृत। अधिकार कर लिया गया हुआ।
अधित्यका-संज्ञा स्त्री० (सं०) पहाड़ी मैदान।
अधिनायक-संज्ञा पुं० मालिक, सरदार, मुखिया।
अधिया-संज्ञा स्त्री० आधा भाग। गाँव में आधी पट्टी की हिस्सेदारी।
अधिवास-संज्ञा पुं० (सं०) रहने की जगह। खुशबू। विवाह के पहले तेल हलदी चढ़ाने की रीति।
अधिवासी-संज्ञा पुं० स्थापित, निवासी।
अधिवेशन-संज्ञा पुं० विधान सभा। संघ। जलसा या सभा।
अधिष्ठाता-संज्ञा पुं० मुखिया, प्रधान, बड़े उद्योग या संस्था आदि की स्थापना करनेवाला।
अधिष्ठान-संज्ञा पुं० (सं०) रहने

का स्थान। नगर। स्थिति।
अधिष्ठित-वि० नियुक्त, बसा हुआ।
अधीन-वि० (सं०) किसी के नीचे होना, वशीभूत, विवश, लाचार।
अधीनता-संज्ञा स्त्री० दूसरे का सहारा, परवशता, लाचारी।
अधीर-वि० पुं० बिना धीरज का। बेचैन, अस्थिर, चंचल।
अधीश, अधीश्वर-संज्ञा पुं० मालिक।
अधुना-क्रि० वि० इन दिनों। अब।
अधुनातन-वि० (सं०) जल्दी ही का। एतत्कालीन, हाल का।
अधूरा-वि० जो पूरा न हो, अपूर्ण।
अधेड़-वि० ढलती जवानी का।
अधोगति-संज्ञा स्त्री० निम्न गति, दुर्दशा, पतन, अवनति।
अधोगामी-वि० (सं०) नीचे जानेवाला, नरकगामी।
अधोमार्ग-संज्ञा पुं० (सं०) नीचे का रास्ता, पतन का रास्ता। गुदा।
अधोमुख-वि० (सं०) नीचे की ओर। नीचे मुंह किये उलटा।
अधोवायु-संज्ञा पुं० (सं०) नीचे की ओर निकलनेवाली वायु।
अध्यक्ष-संज्ञा पुं० सभापति, मालिक, स्वामी, अधिकारी।
अध्यवसाय-संज्ञा पुं० (सं०) लगातार उद्योग। उत्साह। निश्चय।
अध्यवसायी-वि० निरन्तर उद्योग करनेवाला। मेहनती। उत्साही।
अध्यात्म-संज्ञा पुं० आत्मज्ञान।
अध्यापन-संज्ञा पुं० पढ़ाने-लिखाने का काम, शिक्षण।
अध्याय-संज्ञा पुं० पाठ, ग्रंथ के किये गये विभाग, कांड, पर्व।
अध्यास-संज्ञा पुं० (सं०) मिथ्याज्ञान।
अनंग-सं० (सं०) बिना शरीर का, कामदेव।
अनंत-वि० (सं०) जिसका कोई अंत या सीमा न हो। असीम।
अनंत-चतुर्दशी-संज्ञा स्त्री० भादों मास की चतुर्दशी का एक त्योहार।
अनंतर-क्रि० वि० (सं०) बाद में। पीछे। लगातार।
अनकहा-वि० जो कहा न गया हो।
अनखाहट-संज्ञा स्त्री० नाराजगी।
अनगढ़-वि० बिना बनाया हुआ। प्राकृतिक। भद्दा। स्वयंभू।
अनगिनत-वि० जिसकी गिनती न हो, असंख्य। बहुत। अगणित।
अनजान-वि० अनभिज्ञ, अज्ञात, नादान, अपरिचित।
अनत-वि० (सं०) जो नत या झुका हुआ न हो, सीधा, अभिमानी।
अनदेखा-वि० पुं० बिना देखा हुआ।
अनध्याय-संज्ञा पुं० छुट्टी का दिन।
अनन्य-वि० किसी दूसरे से सम्बन्ध न रखनेवाला। एकनिष्ठ।
अनन्यता-संज्ञा स्त्री० अन्य के संबंध का अभाव। एकनिष्ठा।
अनपढ़-वि० जो पढ़ा न हो, मूर्ख।
अनपेक्षित-वि० (सं०) जिसकी अपेक्षा, या आवश्यकता न हो।
अनबन-संज्ञा पुं० बिगाड़, झगड़ा।

अनबोल-वि० न बोलनेवाला, गूँगा।
अनब्याहा-वि० जिसका विवाह न हुआ हो अविवाहित, कुँवारा।
अनभिज्ञ-वि० (सं०) जिसे समझ या जानकारी न हो, अज्ञ।
अनभ्यस्त-वि० (सं०) जिसका अभ्यास न किया गया हो।
अनमिल-वि० (कवि०) जिसका मेल या सम्बन्ध न हो, असम्बद्ध।
अनमेल-वि० जो मेल या सम्बन्ध न रखता हो, असम्बद्ध।
अनमोल-वि० अमूल्य, मूल्यवान्, बड़े दाम का। बहुमूल्य। सुंदर।
अनय-संज्ञा पुं० अशुभ। अन्याय।
अनर्थ-संज्ञा पुं० (सं०) उलटा अर्थ। नुकसान। विपद्।
अनवधान-संज्ञा पुं० (सं०) असावधानी, बेपरवाही।
अनवरत-क्रि० वि० (सं०) लगातार, निरंतर। हमेशा।
अनशन-संज्ञा पुं० (सं०) भोजन का छोड़ देना, उपवास।
अनश्वर-वि० (सं०) जो कभी नष्ट न हो। अटल।
अनसुना-वि० बिना सुना हुआ, अश्रुत।
अनसूया-संज्ञा स्त्री० (सं०) अत्रि मुनि की पत्नी। ईर्ष्या का अभाव।
अनहोनी-वि० स्त्री० न हो सकनेवाली, असंभव।
अनागत-वि० (सं०) जो आया न हो, अनुपस्थित। भविष्य।
अनाचार-संज्ञा पुं० बुरा या असद् काम। बुरी प्रथाएँ।
अनाड़ी-वि० अज्ञानी, असभ्य, मूर्ख, नादान, जो कुशल न हो, अदक्ष।
अनात्म-संज्ञा पुं० आत्मा का विरोधी पदार्थ। जड़। अचेतन।
अनादर-संज्ञा पुं० अपमान, आदर का अभाव, निरादर, बेइज्जती।
अनामय-वि० (सं०) निरोग, रोग से रहित। स्वस्थ।
अनामिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) सब से छोटी और मध्यमा के बीच की उँगली, जिसमें अँगूठी पहनते हैं।
अनार्य-संज्ञा पुं० (सं०) जो आर्य न हो, म्लेच्छ, दुष्ट,असाधु।
अनावश्यक-वि० (सं०) जिसकी जरूरत न हो। बेकार।
अनावृत-वि० जो ढँपा न हो।
अनावृष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) वर्षा का न होना, सूखा पड़ना,अवर्षण।
अनास्था-संज्ञा स्त्री० (सं०) आस्था या श्रद्धा का न होना। अनादर।
अनाहत-वि० (सं०) जिस पर आघात न हुआ हो।
अनाहार-संज्ञा पुं० (सं०) भोजन का त्याग, अनशन।
अनिच्छा-संज्ञा स्त्री० (सं०) इच्छा का न होना, अनभिलाषा, अरुचि।
अनिंद्य-वि० पुं० (सं०) जो निन्दा के योग्य न हो। उत्तम।
अनित्य-वि० (सं०) जो हमेशा न रहे, अस्थायी। नाशवान्।
अनिद्र-वि० (सं०) जिसे नींद न

आती हो।
अनिमिष, अनिमेष-क्रि० वि० (सं०) बिना पलक झपकाए (देखना)। लगातार।
अनियंत्रित-वि० (सं०) बिना रोक-टोक या नियंत्रण के। मनमाना।
अनियमित-वि० (सं०) बिना नियम के, अव्यवस्थित। अनिश्चित।
अनियारा-वि० (कवि०) नुकीला।
अनिर्दिष्ट-वि० (सं०) जो बताया न गया हो। अनिश्चित।
अनिर्वाच्य-वि० (सं०) जो बतलाया न जा सके।
अनिल-संज्ञा पुं० (सं०) हवा।
अनिवार्य-वि० (सं०) जो आवश्यक हो, अत्यावश्यक।
अनिश्चित-वि० (सं०) जिसका निश्चय न किया हो, अनियत।
अनिष्ट-वि० (सं०) जो इष्ट न हो, अशुद्ध, अशुभ अधम।
अनी-संज्ञा स्त्री० सेना। ग्लानि।
अनीक-संज्ञा पुं० सेना, दल, युद्ध। वि० जो अच्छा न हो, बुरा।
अनीति-संज्ञा स्त्री० दुर्नीति, अन्याय, बेइन्साफी।
अनीश्वरवाद-ईश्वर की सत्ता को न मानना, नास्तिकता।
अनीश्वरवादी-ईश्वर की सत्ता को न माननेवाला, नास्तिक।
अनुकंपा-संज्ञा स्त्री० (सं०) दया, कृपा। सहानुभूति।
अनुकरण-संज्ञा पुं० (सं०) नकल करना।
अनुकर्त्ता-संज्ञा पुं० अनुकरण करनेवाला। आज्ञाकारी।
अनुकारी-वि० नकल करने वाला। आज्ञाकारी।
अनुकूल-वि० (सं०) पक्ष में रहनेवाला। सहायक। पक्षपाती।
अनुकूलता-संज्ञा स्त्री० मेल।
अनुकृति-संज्ञा स्त्री० अनुकरण, नकल।
अनुक्रम-संज्ञा पुं० क्रम, सिलसिला।
अनुक्रमणिका-संज्ञा स्त्री० शब्द-सूची।
अनुक्षण-क्रि० वि० (सं०) हर क्षण में, निरंतर, लगातार।
अनुग, अनुगत-वि० (सं०) पीछे चलनेवाला, अनुगामी।
अनुगमन-संज्ञा पुं० (सं०) पीछे-पीछे जाना, सहमरण, अनुगामी।
अनुगामी-वि० (सं०) पीछे चलनेवाला। अनुयायी। आज्ञाकारी।
अनुगृहीत-वि० (सं०) जिस पर कृपा की गयी हो, कृतज्ञ।
अनुग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) कृपा, दया। सहायता।
अनुचित-वि० (सं०) जो ठीक नहीं है, अयुक्त। खराब। बुरा।
अनुज-वि० (सं०) जो बाद में पैदा हुआ हो, छोटा भाई।
अनुताप-संज्ञा पुं० पश्चात्ताप, गर्मी, तपन। जलन। दुःख। पछतावा।
अनुदिन-क्रि० वि० प्रतिदिन, रोज, नित्य।
अनुनय-संज्ञा पुं० विनय, प्रार्थना।

अनुनासिक-वि० (सं०) वह शब्द जो मुंह और नाक से बोला जाय; जैसे –ञ, म, ङ, ण, न।
अनुपम-वि० (सं०) जिसकी कोई उपमा न हो, बेजोड़।
अनुपमेय-वि० दे० उपमा न देने योग्य।
अनुपयुक्त-वि० (सं०) जो ठीक न हो।
अनुपस्थित-वि० (सं०) जो सामने न हो, अविद्यमान।
अनुपात-संज्ञा पुं० (सं०) गणित की एक त्रैराशिक क्रिया।
अनुबंध–संज्ञा पुं० बंधन। संबंध।
अनुभव-संज्ञा पुं० (सं०) सामने देखकर किसी चीज का ज्ञान प्राप्त किया जाना। तजुरबा।
अनुभवी-वि० अनुभव करनेवाला, जानकार व्यक्ति।
अनुभूत-वि० (सं०) अनुभव किया हुआ। परीक्षा किया हुआ।
अनुभूति-संज्ञा स्त्री० (सं०) अनुभव, संवेदन, बोध।
अनुमति-संज्ञा स्त्री० सम्मति, आज्ञा। इजाजत, स्वीकृति।
अनुमान-संज्ञा पुं० विचार, अंदाजा, अटकल।
अनुमोदन-संज्ञा पुं० (सं०) समर्थन करना। प्रसन्नता दिखलाना।
अनुरंजन-संज्ञा पुं० अनुराग, मनोरंजन, दिलबहलाव।
अनुरक्त-वि० (सं०) आसक्त।
अनुराग-संज्ञा पुं० प्रीति। प्रेम।
अनुरोध-संज्ञा पुं० प्रार्थना, आग्रह। दबाव, जोर डालना, रुकावट।
अनुवाद-संज्ञा पुं० पुनरुल्लेख, फिर कहना, पुनरुक्ति, दूसरी भाषा में बदलना, उल्था।
अनुवादक-संज्ञा पुं० (सं०) अनुवाद या उल्था करनेवाला।
अनुवादित-वि० अनुवाद किया हुआ।
अनुशासक-संज्ञा पुं० (सं०) हुक्म या आदेश देनेवाला। शिक्षक।
अनुशासन-संज्ञा पुं० संयम, आदेश, आज्ञा, उपदेश, शिक्षा, प्रबन्ध।
अनुशीलन-संज्ञा पुं० मनन, बार-बार पढ़ना, चिंतन, विचार।
अनुष्ठान-संज्ञा पुं० (सं०) नियम के अनुसार काम करना। फल के लिए देवताओं की आराधना।
अनुसंधान-संज्ञा पुं० अन्वेषण, प्रयत्न, खोज। पीछे लगना। कोशिश।
अनुसरण-संज्ञा पुं० (सं०) पीछे-पीछे जाना, साथ-साथ चलना। नकल करना।
अनुसार-वि० (सं०) अनुकूल।
अनुहार-वि० (सं०) समान, अनुसार। अनुकूल। संज्ञा स्त्री० भेद।
अनूठा-वि० अनोखा, विचित्र। बढ़िया।
अनूठापन-संज्ञा पुं० विचित्रता।
अनूदित-वि० (सं०) अनुवाद किया या उल्था किया हुआ।
अनृत-संज्ञा पुं० (सं०) झूठ।
अनेक-वि० (सं०) एक से अधिक,

बहुत, कई।
अनोखा-वि० विचित्र। निराला।
अनोखापन-संज्ञा पुं० अपूर्वता। निरालापन। नयापन। सुन्दरता।
अनौचित्य-संज्ञा पुं० (सं०) वह बात जो ठीक न हो, अनुपयुक्तता।
अन्नजल-संज्ञा पुं० जीविका, दाना-पानी, खाना-पीना।
अन्नदाता-संज्ञा पुं० (सं०) अन्न देनेवाला। मालिक।
अन्य-वि० (सं०) दूसरा। और कोई।
अन्यत्र-वि० (सं०) किसी दूसरी जगह।
अन्यथा-वि० (सं०) मिथ्या, असत्य, अव्यय-नहीं तो, वर्ना।
अन्य पुरुष-संज्ञा पुं० (सं०) दूसरा मनुष्य।
अन्यमनस्क-वि० (सं०) जिसका जी न लगता हो, उदास, चिंतित।
अन्याय-संज्ञा पुं० (सं०) न्याय के खिलाफ काम। अत्याचार।
अन्यायी-वि० न्याय के खिलाफ काम करनेवाला। दुराचारी।
अन्योन्य-सर्व० (सं०) आपस में। एक-दूसरे का।
अन्वय-संज्ञा पुं० (सं०) परस्पर सम्बन्ध। मेल।
अन्वेषक-वि० (सं०) खोजनेवाला, खोज करनेवाला।
अन्वेषी-वि० अनुसन्धान करनेवाला।
अपकर्म-संज्ञा पुं० (सं०) बुरा काम, पाप।
अपकर्ष-संज्ञा पुं० (सं०) नीचे को खींचना।
अपकार-संज्ञा पुं० अनिष्ट। बुराई। हानि। अपमान।
अपकारी-वि० अनिष्ट करनेवाला। बुराई करनेवाला।
अपघात-संज्ञा पुं० हिंसा। हत्या। धोखा, विश्वासघात। आत्महत्या।
अपढ़-वि० बिना पढ़ा लिखा, मूर्ख।
अपथ्य-वि० (सं०) जो सेवन करने योग्य न हो।
अपना-सर्व० निज का।
अपमान-संज्ञा पुं० (सं०) अनादर, मान का न होना। बेइज्जती।
अपरंपार-वि० (कवि०) जिसका पार न हो, अपार, असीम।
अपर-वि० (सं०) अन्य दूसरा।
अपराध-संज्ञा पुं० जुर्म, दोष, पाप, भूल।
अपराधी-वि० पुं० दोषी, पापी। भूल करनेवाला।
अपरिग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) दान का न लेना।
अपरिचित-वि० (सं०) जिससे पहिचान न हो। बिना परिचय का, अनजान। अज्ञात।
अपरिच्छिन्न-वि० (सं०) जिसके टुकड़े न हो सकें। जो भेदा न जा सके।
अपरिपक्व-वि० (सं०) जो पक्का न हो, कच्चा, अधूरा, अप्रौढ़।
अपरिमित-वि० (सं०) जो परिमित या सीमित न हो, असीम।

अपरिमेय-वि० (सं०) जिसका माप न हो सके, अनन्त, असंख्य।
अपरूप-वि० (सं०) भद्दा, असुन्दर, कुरूप, अद्भुत।
अपवर्ग-संज्ञा पुं० मुक्ति, छुटकारा मिलना, मोक्ष, त्याग, पूर्णता।
अपवाद-संज्ञा पुं० (सं०) विरोध। किसी नियम के अन्तर्गत न आनेवाला। निन्दा। दोष।
अपव्यय-संज्ञापुं० (सं०) अपरिमित खर्च, फिजूलखर्ची।
अपशकुन-संज्ञा पुं० बुरा शकुन या सगुन।
अपहरण-संज्ञा पुं० (सं०) छीनना। हर लेना, लूट। चोरी।
अपहृत-वि० (सं०) छीना हुआ। चुराया हुआ।
अपादान-संज्ञा पुं० (सं०) विभाग। व्याकरण में एक कारक जिसका चिह्न 'से' है, जैसे—स्कूल से।
अपान-संज्ञा पुं० (सं०) दम या पाँच प्राणों में से एक। गुदा से निकलनेवाली वायु।
अपार-वि० (सं०) जिसका कोई पार या सीमा न हो, अनंत।
अपाहिज-वि० लूला, लँगड़ा, आलसी खंज, काम करने के अयोग्य।
अपितु-अव्यय (सं०) किन्तु। बल्कि।
अपील-संज्ञा स्त्री० (अं०) विचारार्थ निवेदन या प्रार्थना। छोटी अदालत से बड़ी अदालत में फिर से मामले के न्याय के लिए प्रार्थना।
अपूत-वि० (सं०) जो पवित्र न हो, अशुद्ध। वि० (ग्रा०) जिसके पुत्र न हो।
अपूर्ण-वि० (सं०) जो पूरा न हो, आधा। असमाप्त। कम।
अपूर्णता-संज्ञा स्त्री० (सं०) अधूरापन, न्यूनता, कमी।
अपूर्व-वि० (सं०) निराला, नूतन, विचित्र, अद्भुत, श्रेष्ठ।
अपेक्षा-संज्ञा स्त्री० आकांक्षा, इच्छा का होना, लालच, आशा, अनुरोध, तुलना, तुलना में।
अपेक्षाकृत-अव्यय (सं०) तुलना में।
अपेक्षित-वि० (सं०) जिसकी इच्छा हो, चाहा हुआ, आवश्यक।
अपेय-वि० (सं०) जो पीने योग्य न हो।
अप्रचलित-वि० (सं०) जो व्यवहार में न लाया जाता हो, अप्रयुक्त।
अप्रतिभ-वि० (सं०) मूक, जिसमें प्रतिभा न हो, उदास, श्रीहीन।
अप्रमेय-वि० (सं०) जो जाना न जा सके, अपरिमित, अपार।
अप्रसन्न-वि० (सं०) असन्तुष्ट, खिन्न, नाराज, दुःखी, उदास।
अप्राप्त-वि० (सं०) जो न पाया गया हो, दुर्लभ, परोक्ष।
अप्रिय-वि० पुं० (सं०) जो अच्छा न लगे, अरुचिकर।
अप्सरा-संज्ञा स्त्री० देवांगना। स्वर्ग की वेश्या। परी।
अफरा-संज्ञा पुं० अजीर्ण या वायु से पेट फूलने का रोग। फूलाव।

अफवाह-संज्ञा स्त्री० (अ०) उड़ता खबर। गप्प।

अफसाना-संज्ञा पुं० (फा०) कहानी, कथा।

अफसोस-संज्ञा स्त्री० (फा०) शोक, दुःख। पछतावा।

अफीम-संज्ञा स्त्री० एक मादक विष या पदार्थ। अहिफेन।

अफीमची-संज्ञा पुं० जिसे अफीम खाने की आदत है।

अबध्य-वि० (सं०) जिसे मारना ठीक न हो। जिसे कोई मार न सके। अनर्थक, बिना अर्थ का।

अबल-वि० (सं०) कमजोर, निर्बल।

अबाध-वि० (सं०) जिसे कोई बाधा न हो। क्रि० वि० बेरोक-टोक।

अबीर-संज्ञा पुं० (अ०) रंगीन चूरा, जिसमें अबरक मिला होता है और जिससे होली खेली जाती है।

अबोध-संज्ञा पुं० (सं०) समझ न होना। अज्ञान, मूर्खता।

अबोला-संज्ञा पुं० रञ्ज में या गुस्से में मौन रहना।

अब्ज-संज्ञा पुं० पद्म, जो जल से पैदा हुआ हो, कमल। चन्द्रमा।

अब्धि-संज्ञा पुं० सागर, समुद्र।

अभद्र-वि० (सं०) जो भद्र न हो, अशिष्ट। अशुभ।

अभय-वि० (सं०) बिना डर का, निर्भय। सं० पुं० निर्भयता।

अभयदान-भय से छुटकारा देना।

अभागा-वि० जिसका भाग्य बुरा हो।

अभागी-वि० खराब भाग्यवाली, भाग्यहीन। (स्त्री के लिए)

अभाग्य-खराब भाग्य या किस्मत।

अभिगमन-संज्ञा पुं० पहुँच। पास जाना। सम्भोग। सहवास।

अभिजात-वि० (सं०) उच्च कुल में पैदा, श्रेष्ठ।

अभिज्ञ-वि० (सं०) जाननेवाला, निपुण, कुशल, बुद्धिमान्।

अभिनंदन-संज्ञा पुं० सन्तोष। आनंद। प्रशंसा। प्रार्थना।

अभिनंदनीय-वि० (सं०) प्रशंसा या वन्दना करने के योग्य।

अभिनय-संज्ञा पुं० (सं०) किसी की हूबहू नकल करना। नाटक का खेल।

अभिनव-वि० (सं०) नया। ताजा।

अभिनीत-वि० (सं०) समीप लाया हुआ। सजाया हुआ।

अभिनेता-संज्ञा पुं० (सं०) अभिनय करनेवाला व्यक्ति। ऐक्टर।

अभिनेय-वि० (सं०) जो अभिनय करने योग्य हो (नाटक)।

अभिन्न-वि० (सं०) जो भिन्न न हो, एकमय। मिला हुआ।

अभिप्राय-संज्ञा पुं० तात्पर्य, मतलब, अर्थ, आशय।

अभिभूत-वि० (सं०) हराया हुआ। जो मोह लिया गया हो।

अभिमत-वि० (सं०) वांछित। राय के पक्ष में, सम्मत। मनचाही बात। विचार।

अभिमानी-वि० घमंडी । अहंकारी ।
अभिमुख-क्रि० वि० समक्ष, सामने ।
अभियुक्त-वि० (सं०) मुलजिम ।
अभियोग-संज्ञा पु० (सं०) किसी के प्रति न्यायालय में मुकदमा पेश करना । मुकदमा ।
अभिरुचि-संज्ञा स्त्री० इच्छा, चाह ।
अभिलाष-संज्ञा पुं० मनोकामना । चाह ।
अभिलाषा-संज्ञा स्त्री० मनोकामना, इच्छा, चाह, आकांक्षा ।
अभिलाषी-वि० इच्छा या आकांक्षा करनेवाला ।
अभिवादन-संज्ञा पुं० स्तुति, प्रणाम, नमस्ते, वन्दना ।
अभिव्यक्ति-संज्ञा स्त्री० प्रकाशन, किसी चीज को साफ रूप से उपस्थित करना ।
अभिषेक-संज्ञा पुं० (सं०) जल से सींचना । स्नान । विधि के साथ राजा को सिंहासन पर बिठलाना ।
अभिसंधि-संज्ञा स्त्री० ऐंठना । धोखा, चाल । षड्यंत्र ।
अभिसार-संज्ञा पुं० सहारा, नायिका का प्रिय से मिलने निश्चित स्थान की ओर जाना ।
अभिसारिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह स्त्री जो प्रिय से मिलने निश्चित स्थान की ओर स्वयं जाय या उसे बुलावे ।
अभीक-वि० (सं०) जिसे डर न हो, निर्भय, निष्ठुर ।
अभीष्ट-वि० (सं०) चाहा हुआ, वांछित, ईप्सित, प्रिय, मन का ।
अभूतपूर्व-वि० (सं०) जो पहले न हुआ हो, अपूर्व ।
अभेद-संज्ञा पुं० (सं०) जहां भेद न हो, अभिन्नता । एकरूपता ।
अभ्यंतर-संज्ञा पुं० बीच का स्थान, हृदय । क्रि० वि० भीतर ।
अभ्यस्त-वि० (सं०) जिसका अभ्यास किया गया हो ।
अभ्यागत-वि० (सं०) सामने आया हुआ । मेहमान ।
अभ्युत्थान-संज्ञा पुं० (सं०) ऊंचे उठना ।
अभ्युदय-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य आदि का निकलना । वृद्धि । उन्नति ।
अमंगल-वि० (सं०) जहां शुभ या मंगल न हो । दुःख ।
अमर-वि० (सं०) न मरनेवाला । संज्ञा पुं० (सं०) देवता ।
अमरता-संज्ञा स्त्री० मृत्यु का न होना । देवत्व । चिरजीवन ।
अमरपद-संज्ञा पुं० स्वर्ग, संसार से छुटकारा, मुक्ति ।
अमरपुर-संज्ञा पुं० (सं०) देवताओं का नगर । अमरावती । देवलोक ।
अमरबेल-संज्ञा स्त्री० एक पीली लता जो वृक्ष से ही उत्पन्न होकर उसे ही सुखा डालती है ।
अमराई-संज्ञा स्त्री० आम का बाग ।

अमरावती-संज्ञा स्त्री० (सं०) देवताओं का नगर, इन्द्रपुरी।

अमरी-संज्ञा स्त्री० देवपत्नी, देवता की स्त्री।

अमर्ष-संज्ञा पुं० रोष । क्रोध।

अमल-वि० (सं०) जिसमें मल या गन्दगी न हो, स्वच्छ। निर्दोष।

अमा-संज्ञा स्त्री० (सं०) अमावस्या।

अमात्य-संज्ञा पुं० मन्त्री, सचिव, वजीर।

अमानत-संज्ञा स्त्री० (अ०) अपनी चीज कुछ समय के लिए किसी के पास रख देना, धरोहर।

अमावस-संज्ञा स्त्री० अमावस्या।

अमावस्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) कृष्ण पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि।

अमिट-वि० जो मिट न सके, या मिटाया न जा सके। स्थायी।

अमित-वि० (सं०) बहुत अधिक, अपरिमित।

अमिताभ-संज्ञा पुं० (सं०) बुद्धदेव।

अमित्र-वि० (सं०) दुश्मन, वैरी। जिसका कोई दोस्त न हो।

अमिय-मूरि-संज्ञा स्त्री० संजीवनी जड़ी, अमृत बूटी।

अमीर-संज्ञा पुं०, (अ०) धनवाला। सरदार। उदार।

अमुक-वि० (सं०) इस तरह का। ऐसा-ऐसा, फलां।

अमूर्त-वि० (सं०) जिसकी कोई मूर्ति या आकार न हो। ईश्वर।

अमूल्य-वि० (सं०) जिसका मूल्य न आंका जा सके। बहुत कीमत का।

अमृत-संज्ञा पुं० (सं०) वह पदार्थ जिसे पीकर जीव अमर हो जावे।

अमृतत्व-संज्ञा पुं० मरण का अभाव, अमरता, मोक्ष।

अमृतांशु-संज्ञा पुं० (सं०) अमृत जैसी किरणोंवाला, चन्द्रमा।

अमेय-वि० (सं०) जिसका अन्दाजा न लग सके, असीम।

अमोघ-वि० (सं०) बेकार न होनेवाला, अचूक।

अमोल, अमोलक-वि० बहुत मूल्यवाला, अमूल्य।

अम्मां-संज्ञा स्त्री० मां, माता। स्थान, घर। गाय या भैंस के थन का ऊपरी भाग।

अयाचक-वि० (सं०) न मांगनेवाला, संतुष्ट।

अयि-अव्य० (सं०) सम्बोधन के लिए कहा जाता है, अरे, अरी।

अयुक्त-वि० (सं०) जो ठीक न हो, अनुचित, गँवार।

अयुत-संज्ञा पुं० (सं०) दस हजार की संख्या।

अयोग्य-वि० (सं०) जो योग्य न हो, अनुपयुक्त, निष्प्रयोजन, नित्य।

अरगनी-संज्ञा स्त्री० वस्त्र इत्यादि टाँगने की रस्सी या लकड़ी।

अरजी-संज्ञा स्त्री० (अ० अर्जी) नौकरी आदि के लिए लिखा गया कागज, आवेदन पत्र।

अरथी-संज्ञा स्त्री० जिस पर मुर्दे को बांधकर ले जाया जाय, लकड़ी का ढांचा, टिकठी।

अरब-संज्ञा पुं० सौ करोड़ की संख्या।
अरबी-वि० (फा०) अरब देश का रहने वाला।
अरविन्द-संज्ञा पुं० पद्म, कमल।
अराधना-क्रि० स० पूजा करना, जप करना।
अराल-वि० (सं०) टेढ़ा।
अरि-संज्ञा पुं० शत्रु, दुश्मन, बैरी।
अरिष्ट-संज्ञा पुं० अशुभ चिह्न। कष्ट। अपशकुन। बुरा।
अरिहा-वि० (सं०) जो शत्रु का नाश करे।
अरुण-वि० (सं०) लाल। संज्ञा पुं० लाल रग, प्रातःकाल, तड़का।
अरुणाचूड़-संज्ञा पुं० (सं०) लाल चोटीवाला, मुर्गा।
अरुनारा-वि० (कवि०) लाल।
अरूप-वि० (सं०) जिसका कोई रूप या आकार न हो, कुरूप, भद्दा।
अर्गल-संज्ञा पुं० चटखनी, कपाट, किवाड़।
अर्घ-संज्ञा पुं० मूल्य, दाम।
अर्चन-संज्ञा पुं० पूजन, पूजा। आदर, सत्कार।
अर्चा-संज्ञा स्त्री० मूर्ति, पूजा। जिस मूर्ति की पूजा की जाय, प्रतिमा।
अर्ज-संज्ञा स्त्री० प्रार्थना, निवेदन।
अर्जन-संज्ञा पुं० उपार्जन, संग्रह करना, कमाना, इकट्ठा करना।
अर्जित-वि० कमाया हुआ। संग्रह किया हुआ।
अर्जुन-पुं० एक बड़ा वृक्ष। पाँच पाण्डवों में तीसरे का नाम।
अर्थ-संज्ञा पुं० (सं०) किसी शब्द का मतलब, मानें। अभिप्राय, इष्ट। धन।
अर्थ-पिशाच-वि० (सं०) बहुत अधिक धन जोड़नेवाला, कंजूस।
अर्थशास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह शास्त्र जिसमें धन की उत्पत्ति, वितरण और वृद्धि के सिद्धान्त बतलाये गये हों।
अर्थसचिव-संज्ञा पुं० राज्य के आय-व्यय की देखभाल करनेवाला मंत्री।
अर्थात्-अव्य० (सं०) यानी, मतलब यह है कि। वस्तुतः।
अर्थी-वि० इच्छा करनेवाला। याचक, धनी।
अर्ध-वि० (सं०) आधा।
अर्धांग-संज्ञा पुं० (सं०) आधा अंग, पत्नी। लकवा, रोग।
अर्धांगिनी-संज्ञा स्त्री० आधा अंग कहलायी जानेवाली स्त्री, पत्नी।
अर्पण-संज्ञा पुं० त्याग। दान। भेंट।
अर्बुद-संज्ञा पुं० (सं०) दस करोड़ की संख्या।
अर्भक-संज्ञा पुं० छोटा बच्चा।
अर्वाचीन-वि० (सं०) सामने का, आधुनिक। नया।
अर्हत्-संज्ञा पुं० प्रसिद्ध जैनियों के देवता, जिन। बुद्ध। जीवन्मुक्त।
अलंकार-संज्ञा पुं० सजाना, आभूषण,

गहना।
अलंघ्य-वि० (सं०) जो लांघा या फांदा न जा सके।
अलका-संज्ञा स्त्री० (सं०) कुबेर की पुरी।
अलख-वि० अलक्ष्य, अदृश्य।
अलबेला-वि० अनुपम, अनोखा, छैला, बांका, सुन्दर।
अलभ्य-वि० (सं०) जो मिल न सके। कठिनता से मिलनेवाला।
अलमस्त-वि० (फा०) जो होश में न हो, मतवाला। बेफिक्र, निश्चिन्त।
अलस-वि० (सं०) आलसी, सुस्त।
अलसी-संज्ञा स्त्री० एक पौदा, जिसके बीजों से तेल निकलता है, अतसी।
अलसौंहां-वि० आलस से भरा हुआ, आलस्ययुक्त, सुस्त।
अलापना-क्रि० अ० बोलना, कहना। गीत की तान लगाना। गाना।
अलिंद-संज्ञा पुं० (सं०) दरवाजे के सामने का चबूतरा या छज्जा। संज्ञा पुं० भौंरा।
अलि-संज्ञा पुं० भ्रमर, भौंरा। संज्ञा स्त्री० सखी, सहेली।
अली-संज्ञा स्त्री० सखी। पंक्ति।
अलीक-वि० (सं०) झूठा। जिसका सम्मान न रह गया हो।
अलोना-वि० जिसमें नमक न पड़ा हो। फीका। स्वाद-रहित।
अलोल-वि० (सं०) जो चंचल न हो, अचंचल, स्थिर।
अल्प-वि० (सं०) थोड़ा, कम। छोटा।
अल्पजीवी-वि० (सं०) जो कम दिनों तक जीवित रहे, अल्पायु।
अल्पज्ञ-वि० (सं०) जिसे थोड़ा ही ज्ञान हो, छोटी बुद्धि का।
अल्पायु-वि० (सं०) थोड़ी आयु में मरनेवाला।
अल्हड़-वि० मन की करनेवाला।
अल्हड़पन-संज्ञा पुं० अनुभवहीनता। बेपरवाही। अनाड़ीपन। कमसिनी। उजड्डपन।
अवकाश-संज्ञा पुं० विश्राम लेने का समय, अवसर, छुट्टी।
अवकीर्ण-वि० (सं०) इधर-उधर छितराया हुआ। नष्ट किया हुआ।
अवगत-वि० (सं०) जाना हुआ, ज्ञात।
अवगुंठन-संज्ञा पुं० छिपाना, ढाँपना, घूंघट, बुर्का।
अवगुण-संज्ञा पुं० अपराध, खराब गुण, दोष, बुराई।
अवज्ञा-संज्ञा स्त्री० (सं०) अपमान। आज्ञा न मानना।
अवतार-संज्ञा पुं० (सं०) उतरना। जन्म लेना।
अवतारी-वि० उतरनेवाला, देवता आदि जो मनुष्य शरीर धरकर संसार में आते हैं।
अवदात-वि० (सं०) स्वच्छ, साफ।
अवद्य-वि० (सं०) गिरा हुआ, पापी।
अवध-संज्ञा पुं० अयोध्या नगर, कोशल राज्य की राजधानी।
अवधि-संज्ञा स्त्री० निर्धारित काल, सीमा, निश्चित समय, मियाद।

अवनत-वि० (सं०) नीचा, कम, झुका हुआ।
अवनति-संज्ञा स्त्री० घाटा। गिरे या हीन होने की दशा। कमी। न्यूनता।
अवनि-संज्ञा स्त्री० भूमि, जमीन।
अवमान-संज्ञा पुं० (सं०) अपमान।
अवयव-संज्ञा पुं० अंश, भाग, शरीर के भाग, हिस्सा।
अवरोध-संज्ञा पुं० रुकावट, विरोध, विघ्न, अड़चन, झगड़ा, घेरा।
अवरोह-संज्ञा पुं० (सं०) उतार, गिराव, अवनति।
अवर्ण्य-वि० (सं०) जो वर्णन करने के योग्य न हो।
अवलंब-संज्ञा पुं० (सं०) सहारा, आश्रय। जिस पर टिका जाय।
अवलंबन-संज्ञा पुं० आश्रय। सहारा।
अवलंबित-वि० (सं०) सहारे पर। टिका हुआ। आश्रित।
अवली-संज्ञा स्त्री० पंक्ति, समूह, लाइन, झुण्ड।
अवलेह-संज्ञा पुं० (सं०) चटनी। चाटी जानेवाली दवा।
अवश-वि० (सं०) जिसका वश न हो, पराधीन, विवश, लाचार।
अवशेष-वि० (सं०) बचा हुआ। समाप्त।
अवश्यंभावी-वि० अवश्य होनेवाला। अटल।
अवश्य-क्रि० वि निस्संदेह। निश्चय करके।
अवश्यमेव-क्रि० वि० (सं०) जरूर ही, निःसंदेह।
अवसर-संज्ञा पुं०(सं०)समय, मौका।
अवसाद-संज्ञा पुं० विषाद। दुःख।
अवसान-संज्ञा पुं० (सं०) समाप्ति, खातमा। सीमा। मृत्यु।
अवसेर-संज्ञा स्त्री० (कवि०) उलझन, अड़चन। देर।
अवस्था-संज्ञा स्त्री० स्थिति, दशा, हालत, उम्र, आकार।
अवहेलना-संज्ञा स्त्री० (सं०) ध्यान न देना, बेपरवाही। तिरस्कार। क्रि० स० बात न मानना, तिरस्कार करना।
अवाक्-वि० चुप, निस्तब्ध, मौन, घबड़ाया हुआ।
अविकल-वि० (सं०) चिन्ताशून्य। पूरा।
अविकारी-वि० जिसमें विकार या बुराई न हो।
अविगत-वि० (सं०) जो जाना न जाय।
अविचल-वि० (सं०) जो विचलित न हो, अचल, स्थिर, अटल।
अविचार-संज्ञा पुं० (सं०) विचार का न होना। खराब विचार। अज्ञान। अत्याचार।
अविचारी-वि० अविवेकी, अत्याचारी, अन्यायी.
अविच्छिन्न-क्रि० वि० (सं०) लगातार। क्रि० सतत, निरन्तर।
अविज्ञात-वि० (सं०) जो समझा बूझा न हो, अनजाना।
अविद्यमान-वि० (सं०) जो मौजूद न हो, अनुपस्थित, मिथ्या।

अविद्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) विद्या का अभाव होना। गलत ज्ञान।
अविनय-संज्ञा पुं० (सं०) जहाँ विनय न हो, धृष्टता, उद्दण्डता।
अविनाशी-वि० पुं० जिसका नाश न हो सके, अविनश्वर, अक्षय।
अविनीत-वि० (सं०) जो विनीत न हो, उद्धत, धृष्ट, ढीठ।
अविभक्त-वि० (सं०) जो विभक्त न किया गया हो, या बाँटा न गया हो। एक मेल का।
अविरत-वि० (सं०) बिना ठहराव का, लगातार।
अविवेक-संज्ञा पुं० विवेक-ज्ञान का न होना, अज्ञान, अन्याय।
अविवेकता-संज्ञा स्त्री० (सं०) विवेक का अभाव, अज्ञानता, अन्याय।
अविवेकी-वि० जिसके विवेक या बुद्धि न हो। अविचारी। अन्यायी।
अविश्रांत-वि० (सं०) जो थके नहीं। विरामरहित।
अविश्वसनीय-वि० (सं०) जिस पर विश्वास न किया जा सके।
अविश्वास-संज्ञा पुं० विश्वास का अभाव, सन्देह, भरोसा खोना।
अवैतनिक-वि० (सं०) बिना वेतन या तनख्वाह के काम करने वाला।
अवैदिक-वि० (सं०) वेद-विरुद्ध।
अव्यक्त-वि० (सं०) जो सामने न हो, जो कहा न गया हो। अज्ञात, अगोचर, अप्रत्यक्ष।
अव्यवस्था-संज्ञा स्त्री० (सं०) व्यवस्था या नियम का अभाव, शास्त्रादि के विरुद्ध व्यवस्था।
अशंक-वि० (सं०) बिना डर का।
अशक्त-वि० (सं०) बिना शक्ति का, अयोग्य, असमर्थ, निर्बल।
अशक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) कमजोरी, निर्बलता, नपुंसकता।
अशक्य-वि० (सं०) जो किया न जा सके, असाध्य।
अशन-संज्ञा पुं० अन्न, भोजन, आहार, खाने की क्रिया।
अशरण-वि० (सं०) जिसे कहीं शरण न हो, अनाथ, निराश्रय।
अशरफी-संज्ञा स्त्री० (फा०) सोलह से पचीस रु० तक का एक सोने का सिक्का।
अशांत-वि० (सं०) जो शांत न हो, असन्तुष्ट, अधीर।
अशांति-संज्ञा स्त्री० (सं०) शान्ति का न होना। चंचलता।
अशिक्षित-वि० (सं०) जिसे शिक्षा न मिली हो, अपढ़।
अशिष्ट-वि० (सं०) जो शिष्ट न हो, अविनीत, उजड्ड।
अशिष्टता-संज्ञा स्त्री० ढिठाई। शिष्टता का न होना, उजड्डपन।
अशुद्ध-वि० (सं०) दोषयुक्त, अपवित्र, असंस्कृत, गलत।
अशुभ-संज्ञा पुं० (सं०) शुभ न होना, अमङ्गल, पाप, अपराध।
अशेष-वि० (सं०) शेषरहित। पूरा। समाप्त।
अशोक-वि० (सं०) जिसे शोक . .

न हो, शोक-रहित। प्रसन्न।
अश्रुतपूर्व-वि० (सं०) विलक्षण, जो पहले न सुना गया हो, अद्भुत।
अश्रुपात-संज्ञा पुं० रुलाई, आँसुओं का गिरना, रोना।
अश्लील-वि० (सं०) जो श्लील या उत्तम न हो, गंदा, भद्दा।
अश्व-संज्ञा पुं० घोटक, घोड़ा।
अश्वत्थ-संज्ञा पुं (सं०) पीपल का वृक्ष।
अश्वमेध-संज्ञा पुं० (सं०) एक यज्ञ जिसमें एक घोड़े के मस्तक पर सम्राट बनने की इच्छा रखनेवाला राजा जय-पत्र बाँध देता है, और उसे छोड़ देता है। जिस-जिस देश से वह जाता है, वह सम्राट का हो जाता है, और घोड़े को रोकनेवाले से युद्ध होता है। यज्ञ के समय इसे मारकर इसकी बलि चढ़ाई जाती है।
अश्वशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) जहाँ घोड़े बाँधे जाते हैं, अस्तबल।
अश्वारोही-वि० (सं०) घोड़े पर चढ़नेवाला, घुड़सवार।
अष्टमी-संज्ञा स्त्री० (सं०) शुक्ल अथवा कृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि।
अष्टांग-संज्ञा पुं० (सं०) योग की क्रिया के आठ भेद, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि। वे आठ अंग जिनसे प्रणाम किया जाय।
असंगत-वि० (सं०) जो ठीक न हो, अयुक्त। अनुचित। बेठीक।
असंतुष्ट-वि० (सं०) जो संतुष्ट या तृप्त न हो, अतृप्त। नाराज।
असंतोष-संज्ञा पुं० (सं०) संतोष का अभाव, अधैर्य।
असंबद्ध-वि० (सं०) जो एक दूसरे मे सम्बद्ध न हो।
असंभव-वि० (सं०) जो हो न सके।
असंस्कृत-वि० (सं०) जो संस्कृत या शिष्ट न हो। सुधारा न गया।
असगंध-संज्ञा पुं० आयुर्वेद की एक दवा या औषधि।
असती-वि० (सं०) व्यभिचारिणी, कुलटा, पुंश्चली।
असत्-वि० (सं०) जो सच्चा न हो, अच्छा न हो।
असत्य-वि० (सं०) झूठ।
असबाब-संज्ञा पुं० (अ०) मतलब का सामान। वस्तु।
असभ्य-वि० (सं०) जो शिष्ट न हो, 'असंस्कृत, गँवार।
असभ्यता-संज्ञा स्त्री० (सं०) शिष्टता का न होना, गँवारपना।
असमंजस-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी काम के करने का निश्चय न होना, दुविधा। आगा-पीछा।
असमय-संज्ञा पुं० अनिर्दिष्ट काल। कुसमय। बुरा समय।
असमर्थ-वि० (सं०) जिसमें सामर्थ्य या करने की योग्यता न हो, अयोग्य।

असल-वि० (अ०) सच्चा। बिना मेल का, शुद्ध। संज्ञा पुं० मूलधन, जो महाजन कर्ज पर देता है।
असलियत-संज्ञा स्त्री० (अ०) सच्चाई, वास्तविकता। तत्त्व।
असहनीय-वि० (सं०) सहा न जा सकने योग्य, असह्य।
असहयोग-संज्ञा पुं० (सं०) सहयोग या सहायता न देना।
असहाय-वि० (सं०) जिसको कोई सहारा न हो अनाथ, निःसहाय।
असहिष्णु-वि० (सं०) जो किसी बात को सह न सके, असहनशील।
असह्य-वि० (सं०) जो सहा न जा सके, असहनीय।
असा-संज्ञा पुं० (अ०) डंडा जो सोने या चाँदी से मढ़ा हो।
असाढ़-संज्ञा पुं० आषाढ़ मास।
असाधारण-वि० (सं०) जो साधारण या मामूली न हो, असामान्य।
असाध्य-वि० (सं०) जो किया न जा सके। दुष्कर। ठीक न हो सकनेवाला रोग।
असामान्य-वि० (सं०) जो सामान्य या मामूली न हो, असाधारण।
असार-वि० (सं०) सारशून्य।
असावधान-वि० (सं०) जो सावधान या सचेत न हो, असतर्क।
असावधानी-संज्ञा स्त्री० उपेक्षा।
असि-संज्ञा स्त्री० खड्ग, तलवार।
असित-वि० (सं०) काला। बुरा।
असीम-वि० (सं०) सीमारहित, अगाध, अपार, अनन्त।
असुविधा-संज्ञा स्त्री० सुविधा या सहूलियत का न होना, अड़चन।
असुर-संज्ञा पुं० (सं०) राक्षस, दैत्य।
असुरारि-संज्ञा पुं० असुरों के दुश्मन, देवता, विष्णु।
अस्तंगत-वि० (सं०) जो अस्त होने को हो, गिरा हुआ, हीन।
अस्त-वि० (सं०) फेंका हुआ। डूबा हुआ। अदृश्य।
अस्तर-संज्ञा पुं० (फा०) नीचे की तह। कोट आदि वस्त्रों का भीतरी कपड़ा।
अस्तव्यस्त-वि० (सं०) जो व्यवस्थित या ठीक-ठीक न हो।
अस्ताचल-संज्ञा पुं० पुराणों में माना हुआ वह पर्वत जिसके पीछे सूर्य डूबता है।
अस्तित्व-संज्ञा पुं० (सं०) सत्ता का होना, सत्ता, वजूद।
अस्तु-अव्य० (सं०) ऐसा ही हो जो हो। अच्छी बात है।
अस्तेय-संज्ञा पुं० (सं०) चोरी करना छोड़ना। साहूकारी।
अस्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) युद्ध में मारने के लिए प्रयोग किये जानेवाले साधन, हथियार।
अस्थि-संज्ञा स्त्री० हाड़, हड्डी।
अस्थिर-वि० (सं०) जो स्थिर या ठहरा हुआ न हो। अनिश्चित।
अस्पताल-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ दवा मिलती है, चिकित्सालय।

अस्पृश्य-वि० (सं०) जो छूने योग्य न हो। छोटी जाति का।

अस्फुट-वि० (सं०) न खिला होना। स्पष्ट न होना। गूढ़।

अस्वाभाविक-वि० (सं०) जो साधारण रूप से होनेवाला न हो, बनावटी।

अस्वीकार-संज्ञा पुं० (सं०) स्वीकार या कुबूल का अभाव। न मानना।

अस्वीकृत-वि० (सं०) स्वीकार न किया हुआ। न माना हुआ।

अहंकार-संज्ञा पुं० घमंड, आत्म-सत्ता, गर्व, अपनेपन की भावना, 'मैं' पन की भावना।

अहंता-संज्ञा स्त्री० अभिमान, घमंड, गर्व।

अहंवाद-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह सिद्धान्त जिसके अनुसार अपने को (व्यक्ति) महत्त्व दिया जाय।

अहद-संज्ञा पुं० (अ०) वादा।

अहमक-वि० (अ०) जिसे बुद्धि न हो, मूर्ख।

अहर्निश-क्रि० वि० (सं०) दिन-रात, हमेशा। लगातार।

अहसान-संज्ञा पु० (अ०) नेकी करना। अच्छा व्यवहार करना। कृपा, अनुग्रह।

अहह-अव्य० (सं०) अचम्भा, दुःख और पछतावा बतलानेवाला शब्द।

अहा-अव्य० खुशी और प्रसन्नता सूचक अव्यय।

अहाता-संज्ञा पुं० (अ०) घेरा हुआ स्थान। चहारदीवारी।

अहिंसा-संज्ञा स्त्री० अद्रोह, किसी को दुःख न देना, न सताना, न मारना।

अहि-संज्ञा पुं० सर्प, सूर्य, राहु।

अहित-वि० (सं०) दुश्मन।

अहिवात-संज्ञा पुं० स्त्री का सौभाग्य, सुहाग।

अहीर-संज्ञा पुं० एक जाति जो गाय-भैंस पालती और दूध बेचती है।

अहीश-संज्ञा पुं० सर्पराज, साँपों का राजा, शेषनाग।

अहेतु-वि० (सं०) बिना कारण का, व्यर्थ।

अहेरी-संज्ञा पुं० शिकारी। व्याध।

अहो-अव्य० (सं०) सम्बोधन-वाचक शब्द, प्रसन्नता, पछतावा, हाय, वाहवाह, क्यों।

अहोरात्र-संज्ञा पुं० दिन-रात।

आ

आँख-संज्ञा स्त्री० चक्षु, नेत्र, दृष्टि।

आँखमिचौनी, आँखमिचौली-एक खेल।

आँगन-संज्ञा पुं० घर के भीतर का खुला स्थान, सहन, अजिर।

आँच-संज्ञा स्त्री० गरमी। आग की लपट। अग्नि।

आँचल-संज्ञा पुं० धोती आदि का

अन्तिम छोर, पल्ला।
आँत-संज्ञा स्त्री० पेटसे गुदा तक जाने-वाली एक लम्बी नली जिसमें भोजन पचता है और जिससे मल बाहर जाता है, अँतड़ी।
आँधी-संज्ञा स्त्री० धूल से युक्त तेज हवा।
आकबत-संज्ञा स्त्री० (अ०) मरने के बाद की दशा, परलोक।
आकर-संज्ञा पुं० समूह, वह स्थान जहाँ वस्तु इकट्ठी की जाय।
आकर्षक-वि० (सं०) खींचनेवाला।
आकर्षण-संज्ञा पुं० (सं०) किसी वस्तु का दूसरी की ओर किसी विशेष कारण से खिचना।
आकर्षण शक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह ताकत जो भौतिक पदार्थों को एक-दूसरे की ओर खींचती है।
आकलन-संज्ञा पुं० आशंका, सन्देह। खोज करना। बन्धन।
आकस्मिक-वि० (सं०) बिना कारण के उपस्थित हो गया हुआ।
आकांक्षा-संज्ञा स्त्री० (सं०) इच्छा, चाह। खोज।
अकांक्षी-वि० इच्छा या चाह करने-वाला, इच्छुक, चाहनेवाला।
आकार-संज्ञा पुं० स्वरूप। डील-डौल। बनावट। 'आ' अक्षर।
आकाश-संज्ञा पुं० गगन, आसमान, खाली जगह।
आकाशचारी-वि० आकाश में फिरनेवाला। संज्ञा पुं० सूर्य आदि ग्रह। पक्षी। देवता।
आकाश पुष्प-संज्ञा पुं० (सं०) आकाश में फला हुआ पुष्प।
आकाशवाणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह शब्द जो देवता लोग अन्तरिक्ष से बोलें, देववाणी।
आकीर्ण-वि० (सं०) सब जगह फैला हुआ। पूर्ण।
आकुंचन-संज्ञा पुं० संचय, सिमटन।
आकुंचित-वि० (सं०) सिकुड़ा हुआ। टेढ़ा, घुंघराले (बाल)।
आकुल-वि० (सं०) व्याकुल। परेशान। घबराया हुआ।
आकुलता-बि० (सं०) परेशान या घबराये होने की दशा।
आकृति-संज्ञा स्त्री० रूप, बनावट। आकार, लक्षण, मूर्ति।
आकृष्ट-वि० (सं०) खींचा हुआ।
आक्रंदन-संज्ञा पु० (सं०) रोना, चिल्लाना, प्रबलता।
आक्रमण-संज्ञा पुं० चढ़ाई, हमला करना, धावा, प्रसारण, फैलाव।
आक्रांत-वि० (सं०) जिस पर हमला हो।
आक्रोश-संज्ञा पुं (सं०) शाप देना। नाराजगी में चिल्लाना।
आक्षिप्त-वि० (सं०) फेंका हुआ, गिराया हुआ। निन्दा किया हुआ।
आक्षेप-संज्ञा पुं० फेंकना, गिराना। दोष मढ़ना। गाली देना।
आखिर-वि० (फा०) अन्त का, समाप्ति, नतीजा।
आखिरकार-क्रि० वि० (फा०) अन्त में। नतीजे में।

आखिरी-वि० (फा०) अन्त का, अन्तिम।
आखेट-संज्ञा पुं० अहेर, शिकार।
आखेटक-संज्ञा पुं० (सं०) जिसका शिकार किया जाय। वि० (सं०) शिकार खेलनेवाला, शिकारी।
आखेटी-संज्ञा पुं० शिकारी।
आख्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) बड़ाई, नाम, यश, व्याख्या।
आख्यान-संज्ञा पुं० कथन, कहा हुआ, वर्णन, कथा, कहानी।
आख्यायिका-संज्ञा स्त्री० गल्प, कथा, सच्ची कहानी।
आगंतुक-वि० (सं०) आनेवाला। आया हुआ।
आगत-वि० (सं०) आया हुआ। सामने, उपस्थित।
आगम-संज्ञा पुं० आगमन, अवाई।
आगमन-संज्ञा पुं० अवाई, प्राप्ति। आना।
आगम-विद्या-संज्ञा स्त्री० वेद की विद्या।
आगा-संज्ञा पुं० अग्रभाग। सिरा। शरीर का अगला भाग। छाती।
आगा-संज्ञा पुं० (फा०) मालिक।
आगा-पीछा-संज्ञा पुं० हिचक। सोच-विचार। आगे और पीछे के भाग।
आगार-संज्ञा पुं० घर, मकान, स्थान, वह स्थान जहाँ कोई चीज इकट्ठी की जाय, खजाना।
आगाही-संज्ञा स्त्री० (फा०) समझ, जानकारी, सूचना।
आगे-क्रि० वि० सामने। कुछ या अधिक दूर पर। भविष्य में। पहले।
आग्नेय-वि० (सं०) आग का-सा। अग्नि देवता संबंधी।
आग्नेयास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह अस्त्र जिसके चलाने से आग निकले।
आग्रह-संज्ञा पुं० विनय, हठ, जिद। अनुरोध। जोर डालना। तत्परता।
आघ्राण-संज्ञा पुं० (सं०) सूँघना। तृप्त होना।
आचमन-संज्ञा पुं० (सं०) जल पीना। मन्त्र पढ़कर हवन के समय दायें हाथ में जल लेकर पीना।
आचमनी-संज्ञा स्त्री० यज्ञ में पानी पीने का छोटा-सा चम्मच।
आचरण-संज्ञा पुं० आचार, काम करना, व्यवहार। चाल-चलन। सफाई। चरित्र।
आचार-संज्ञा पुं० चरित्र। शुद्धि।
आचारवान्-वि० (सं०) अच्छे व्यवहार का।
आचार-विचार-संज्ञा पुं० (सं०) रहन-सहन, शुद्ध आचरण।
आचार्य्य-संज्ञा पुं० गायत्री शिक्षा देनेवाला, गुरु। वेद पढ़ानेवाला।
आच्छादन-संज्ञा पुं० (सं०) जिससे घेरा या ढाँका जाय, झूल।
आजन्म-क्रि० वि० जन्म से। जीवन भर।
आजमाइश-संज्ञा स्त्री० (फा०) प्रयोग करना, जाँच, परीक्षा।

आजमाना-क्रि० वि० परीक्षा लेना, परखना, आजमाइश करना।
आजाद-वि० (फा०) जो बँधा न हो, स्वतंत्र, स्वाधीन।
आजादी-संज्ञा स्त्री० (फा०) बँधा या गुलाम न होना, स्वतन्त्रता, स्वाधीनता।
आजानुबाहु-वि० (सं०) जानु या घुटनों तक लम्बे हाथोंवाला।
आजिज-वि० (अ०) परेशान। हीन।
आजीवन-क्रि० वि० (सं०) जीवन भर।
आजीविका-संज्ञा स्त्री० (सं०) जीवन-निर्वाह का उपाय। रोजी। वृत्ति।
आज्ञा-संज्ञा स्त्री० आदेश, हुक्म।
आज्ञाकारी-वि० कही हुई बात करनेवाला।
आटोप-संज्ञा पुं० घमंड, दिखावा, आडम्बर, फैलाव, सूजन।
आडम्बर-संज्ञा पुं० (सं०) आटोप। ऊपरी दिखावा। ठाट-बाट।
आढ़त-संज्ञा स्त्री० किसी व्यापारी के माल को बिकवा देने का धंधा, या इससे प्राप्त कमीशन (धन)।
आतंक-संज्ञा पुं० रोग, सन्ताप, डर, दबाव।
आततायी-संज्ञा पुं० धन, भूमि या स्त्री का हरण करनेवाला।
आतप-संज्ञा पुं० (सं०) धूप। गर्मी।
आतश-संज्ञा स्त्री० (फा०) आग।
आतशपरस्त-संज्ञा पुं० (फा०) आग की पूजा करनेवाला, पारसी।
आतिथ्य-संज्ञा पुं० (सं०) मेहमान का आदर-सत्कार, मेहमानदारी।
आतुर-वि० (सं०) व्याकुल।
आतुरता-संज्ञा स्त्री० पीड़ा। परेशानी। घबराहट। जल्दी।
आत्मगौरव-संज्ञा पुं० (सं०) अपनी बड़ाई की बात।
आत्मघात-संज्ञा पुं० (सं०) अपने-आप अपने प्राणों का हरण, आत्महत्या।
आत्मज-संज्ञा पुं० बेटा। पुत्र।
आत्मज्ञान-संज्ञा पुं० (सं०) अपने को जानना, यानी आत्मा को जानना। सच्चा ज्ञान।
आत्मत्याग-संज्ञा पुं० (सं०) दूसरों की भलाई के लिए अपने स्वार्थ को छोड़ना।
आत्मनिवेदन-संज्ञा पुं० (सं०) अपने देवता पर अपने आपको अर्पित कर देना, आत्मसमर्पण।
आत्मप्रशंसा-संज्ञा स्त्री० (सं०) अपनी ही प्रशंसा अपने-आप करना। आत्मश्लाघा।
आत्मबोध-संज्ञा पुं० स्वीय ज्ञान, आत्मज्ञान।
आत्मभू-वि० (सं०) अपने-आप ही पैदा होनेवाला।
आत्मविद्या-संज्ञा स्त्री० ब्रह्म-विद्या वह ज्ञान जिससे आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हो।
आत्मश्लाघा-संज्ञा स्त्री० (सं०) अपने-आप अपनी प्रशंसा करना।

आत्मश्लाघी-वि० (सं०) अपने-आप अपनी प्रशंसा करनेवाला।
आत्महत्या-संज्ञा स्त्री० स्ववध। आत्मघात।
आत्मा-संज्ञा स्त्री० (सं०) मन से दूर होकर उसके कार्यों को समझनेवाली सत्ता, जीवात्मा।
आत्मानंद-संज्ञा पुं० (सं०) आत्मा का आनन्द ।
आत्माभिमान-संज्ञा पुं० अपने बड़प्पन अथवा प्रतिष्ठा का ध्यान रखना।
आत्माराम-संज्ञा पुं० वह योगी जिसे आत्मा का अनुभव हो गया है। अपने में सन्तुष्ट, ज्ञानी।
आत्मावलंबी-संज्ञा पुं० (सं०) अपने पर ही निर्भर रहनेवाला।
आत्मिक-वि० (सं०) आत्मा से सम्बन्ध रखनेवाला। अपना।
आत्मीय-वि० (सं०) अपना।
आत्मोत्सर्ग-संज्ञा पुं० (सं०) दूसरे की भलाई के लिए अपना स्वार्थ त्याग देना।
आदम-संज्ञा पुं० (अ०) सृष्टि का पहला मनुष्य।
आदमजाद-संज्ञा पुं० आदम से पैदा, आदमी। मनुष्य।
आदर-संज्ञा पुं० प्रतिष्ठा, इज्जत।
आदरणीय-वि० (सं०) इज्जत, सम्मान या आदर किया जाने योग्य, ध्यान देने योग्य।
आदर्श-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छे या ऊँचे गुणोंवाला व्यक्ति। नमूना।
आदान-प्रदान-संज्ञा पुं० (सं०) लेन-देन।
आदि-वि० (सं०) पहला। शुरू का।
आदिकारण-संज्ञा पुं० (सं०) पहला या मुख्य कारण जिससे कोई कार्य हो। सृष्टि का पहला कारण। परमेश्वर। प्रकृति।
आद्योपांत-क्रि० वि० (सं०) शुरू से आखीर आदि से शेष तक।
आधान-संज्ञा पुं० ग्रहण, पकड़, गिरवी रखना।
आधार-संज्ञा पुं० (सं०) वह जिसका सहारा लिया जाय। आसरा।
आधासीसी-संज्ञा स्त्री० आधे सिर में पीड़ा।
आधि-संज्ञा स्त्री० (सं०) मानसिक परेशानी, चिन्ता।
आधिक्य-संज्ञा पुं० (सं०) अधिकता, ज्यादती, बहुतायत।
आधिपत्य-संज्ञा पुं० प्रभुत्व, अधिकार का होना, स्वामित्व।
अधिभौतिक-वि० (सं०) वह कष्ट जो जीवों या भौतिक वस्तुओं द्वारा प्राप्त हो। जीवन-संबंधी।
आधुनिक-वि० (सं०) सामने का। आजकल का।
आध्यात्मिक-वि० (सं०) वह ज्ञान जो आत्मा, या ब्रह्म-जीव से सम्बन्धित हो।
आनंद-संज्ञा पुं० हर्ष। सुख।
आनंदित-वि० (सं०) प्रसन्न। सुखी।
आनंदी-वि० (सं०) खुश। प्रसन्न

रहनेवाला। खुशमिजाज।
आन-संज्ञा स्त्री० मर्यादा।
आनन-संज्ञा पुं० मुंह, मुख, चेहरा।
आनन् फानन-क्रि० वि० फौरन्, जल्दी ही।
आन-बान-संज्ञा स्त्री० सज-धज, दिखावा। मर्यादा। ठाट-बाट।
आनरेरी-वि० (अं०) बिना वेतन लिये कार्य करनेवाला, अवैतनिक।
आनाकानी-संज्ञा स्त्री० किसी काम के न करने में बहाने बनाना।
आनुषंगिक-वि० (सं०) जो खास न हो, अप्रधान।
आन्वीक्षिकी-संज्ञा स्त्री० (सं०) अपने को जानना, आत्म-विद्या। तर्क-विद्या, न्याय।
आपगा-संज्ञा स्त्री० (सं०) नदी।
आपत्काल-संज्ञा पुं० क्लेश, बुरे या विपत्ति के दिन, कुसमय।
आपत्ति-संज्ञा स्त्री० क्लेश, विपत्ति रोगग्रस्त अवस्था। परेशानी।
आपद्धर्म-संज्ञा पुं० (सं०) खराब समयों में किया जानेवाला धर्म या कार्य।
आपा-संज्ञा पुं० अपने-आप का होना, अपना अस्तित्व। घमंड।
आपात-संज्ञा पुं० पड़ना, पतन, गिराव, घटना, धक्का।
आपाततः-क्रि० वि० (सं०) शुरू से। हठात्। तुरन्त।
आपाधापी-संज्ञा स्त्री० खींचातानी।
आप्लावन-संज्ञा पुं० डुबाना, बाढ़।
आफत-संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसीबत, दुःख, आपत्ति।
आफ़ताब-संज्ञा पुं० (फा०) सूर्य।
आब-संज्ञा स्त्री० (फा०) चमक, छबि। संज्ञा पुं० पानी।
आबजोश-संज्ञा पुं० (फा०) गरम पानी के साथ उबाला हुआ मुनक्का।
आबदस्त-संज्ञा पुं० मल त्याग के पश्चात् गुदेंद्रिय को धोना।
आबदार-वि० (फा०) चमकीला, पानीदार।
आबद्ध-वि० (सं०) प्रतिबद्ध, कैद, बँधा हुआ।
आबनूस-संज्ञा पुं० (फा०) एक काला जंगली पेड़।
आबरू-संज्ञा स्त्री० (फा०) इज्जत।
आबला-संज्ञा पुं० (फा०) छाला।
आबहवा-संज्ञा स्त्री० (फा०) जल-वायु।
आबाद-वि० (फा०) बसा हुआ। प्रसन्न, खुश।
आबादी-संज्ञा स्त्री० (फा०) जहाँ लोग बसें या रहें, बस्ती। रहनेवालों की गिनती, जनसख्या।
आभरण-संज्ञा पुं० अलंकार, गहना।
आभा-संज्ञा स्त्री० दीप्ति, चमक, तेज, छाया।
आभार-संज्ञा पुं० (सं०) भार। एहसान।
आभारी-वि० जिस पर बोझ या जिम्मेदारी हो। उपकार या एह-

आभास-संज्ञा पुं० संकेत। इशारा।
आभीर-संज्ञा पुं० गोप, अहीर।
आभूषण-संज्ञा पुं० (सं०) गहना।
आभ्यंतर-वि० (सं०) भीतर का।
आमंत्रण-संज्ञा पुं० नेवता, निमंत्रण देकर बुलाना। आह्वान, गौर।
आम-संज्ञा पुं० एक फल। वि० खास का उलटा, सर्वसाधारण।
आमद-संज्ञा स्त्री० (फा०) आना।
आमदनी-संज्ञा स्त्री० (फा०) कमाया हुआ धन, आय।
आमना-सामना-संज्ञा पुं० एक दूसरे के सामने पड़ना, भेंट।
आमय-संज्ञा पुं० आघात, बीमारी।
आमरण-क्रि० वि० (सं०) मरने के समय तक, मृत्युपर्यंत।
आमात्य-संज्ञा पुं० नायक, सरदार।
आमादा-वि० (फा०) किसी काम के लिए तैयार, संनद्ध।
आमाशय-संज्ञा पुं० कोष्ठ, पेट के अन्दर की एक थैली जिसमें भोजन पचता है।
आमिष-संज्ञा पुं० (सं०) मांस।
आमोद-संज्ञा पुं० हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, दिलबहलाव।
आमोद-प्रमोद-संज्ञा पुं० भोग-विलास, हँसी-खुशी, दिलबहलाव।
आम्र-संज्ञा पुं० (सं०) आम का पेड़ या फल।
आय-संज्ञा स्त्री० (सं०) आमदनी। लाभ। कमाया हुआ धन।
आयत-वि० (सं०) बहुत बड़ा, विशाल। लम्बा-चौड़ा, दीर्घ।
आयतन-संज्ञा पुं० क्षेत्रफल, आश्रय, विस्तार, वॉल्यूम।
आयत्त-वि० (सं०) अधीन।
आयस-संज्ञा पुं० (सं०) लोहा। लोहे का कवच।
आयात-संज्ञा पुं० (सं०) देश में विदेशों से व्यापार के लिए आया हुआ माल।
आयाम-संज्ञा पुं० विस्तार, लम्बाई। नियम से रहना।
आयास-संज्ञा पुं० परिश्रम, मेहनत।
आयु-संज्ञा स्त्री० आयुष्य। उम्र। जीवन-काल।
आयुध-संज्ञा पुं० शस्त्र, हथियार।
आयुर्वेद-संज्ञा पुं० (सं०) आयु से सम्बन्ध रखनेवाला शास्त्र, वैद्यक।
आयुष्मान्-वि० (सं०) बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला, चिरंजीवी।
आयोजन-संज्ञा पुं० (सं०) किसी काम में लगना या उसका प्रबन्ध करना।
आरंभ-संज्ञा पुं० (सं०) श्रीगणेश। किसी काम को शुरू करना।
आरक्त-वि० (सं०) कुछ लाली लिये हुए, लाल।
आरजू-संज्ञा स्त्री० (फा०) इच्छा। प्रार्थना।
आरती-संज्ञा स्त्री० दीपक घुमाते समय पढ़े जानेवाले मंत्र, स्तोत्र आदि।
आरसी-संज्ञा स्त्री० शीशा जिसमें प्रतिबिम्ब देखा जाय, दर्पण।

आराजी-संज्ञा स्त्री० (अ०) भूमि, खेत।

आराधन, आराधना-संज्ञा पुं० सेवा, पूजा, उपासना।

आराम-संज्ञा पुं० उपवन, बाग। संज्ञा पुं० (फा०) सुख। थकावट मिटाना, विश्राम।

आराम-तलब-वि० (फा०) सुख चाहनेवाला। आलसी।

आरूढ-वि० (सं०) चढ़ा हुआ, तत्पर किसी बात पर स्थिर, दृढ़।

आरोग्य, आरोग्यता-संज्ञा स्त्री० (सं०) स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती।

आरोप-संज्ञा पुं० झूठी कल्पना, मढ़ना।

आरोह-संज्ञा पुं० चढ़ना, ऊपर की ओर जाना, चढ़ाव। सवार होना।

आरोही-वि० चढ़नेवाला, सवार।

आर्त्त-वि० (सं०) चोट खाया हुआ। दुःखी। दीन।

आर्त्तनाद-संज्ञा पुं० (सं०) दुःख या कष्ट में निकला हुआ शब्द।

आर्द्र-वि० (सं०) भीगा हुआ।

आर्य- संज्ञा पुं० (सं०) बड़ा मनुष्य। एक प्राचीन सभ्य जाति।

आर्यपुत्र-संज्ञा पुं० नाट्यभाषा में पति को पुकारने के लिए प्रयुक्त।

आर्यावर्त-संज्ञा पुं० (सं०) जहाँ आर्य रहते थे, उत्तरी भारत।

आलंबन-संज्ञा पुं० आश्रय सहारा। साधन। कारण।

आलम-संज्ञा पुं० (अ०) दुनिया। दशा। मजमा। समूह।

आलय-संज्ञा पुं० घर, मकान स्थान।

आलस-वि० (सं०) सुस्त। संज्ञा पुं० काम करने में ढील-ढाल। आलस्य।

आला-संज्ञा पुं० ताक। वि० (अ०) ऊँचा, श्रेष्ठ, औवल।

आलाप-संज्ञा पुं० कथन, कहना। बातचीत, कथोपकथन। संगीत में स्वर का रागसहित उच्चारण।

आलि-संज्ञा स्त्री० सखी। कतार या लाइन। भ्रमरी।

आली-संज्ञा स्त्री० सहेली, सखी।

आलीशान-वि० (अ०) देखने में बढ़िया। शानदार। विशाल।

आलेख-संज्ञा पुं० लिखावट, लेख, लिखा हुआ, लिपि।

आलोक-संज्ञा पुं० (सं०) प्रकाश, चमक, रोशनी, दीपक, उल्लास।

आलोचक-वि० (सं०) गुण-दोषों को देखनेवाला। दोषदर्शी।

आलोचना-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी के गुण-दोषों का देखना।

आलोड़न-संज्ञा पुं० मथना।

आल्हा-संज्ञा पुं० दे० इकतीस मात्रा का एक छन्द। पृथ्वीराज के समय का महोबे का एक वीर जिसकी कथा आज भी गाँवों में गायी जाती है। वह कथा।

आवभगत-संज्ञा स्त्री० आदर-सत्कार, खातिरदारी।

आवरण-संज्ञा पुं० लपेट किसी चीज को जिससे ढँका जाय। परदा। घेरा।

आवर्त्त-संज्ञा पुं० (सं०) पानी में

पड़ जानेवाला भँवर।
आवर्त्तन-संज्ञा पुं० घुमाव, मोड़ना, चक्कर देना, मथना, गुणन।
आवली-संज्ञा स्त्री० (सं०) लाइन। पंक्ति। कतार।
आवश्यक- वि० (सं०) जरूरी।
आवश्यकता-संज्ञा स्त्री० प्रयोजन, जरूरत, मतलब।
आवागमन--संज्ञा पुं० आना-जाना।
आवारा-वि० (फा०) बेकार, इधर-उधर फिरनेवाला। बदमाश।
आवास-संज्ञा पुं० रहने का स्थान, निवास।
आवाहन-संज्ञा पुं० (सं०) मंत्र द्वारा किसी देवता को बुलाना।
आविर्भाव-संज्ञा पुं० प्रकाश। सामने आना। पैदा होना। उत्पत्ति।
आविष्कार-संज्ञा पुं० (सं०) सामने लाना। पहले से न जानी हुई वस्तु की खोज करना।
आवृत-वि० (सं०) छिपा या ढँका हुआ, व्याप्त, लपेटा हुआ।
आवृत्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी कार्य का बार-बार किया जाना।
आवेदनपत्र-संज्ञा पुं० (सं०) प्रार्थना करने के लिए जिस कागज पर लिखा जाय, अरजी।
आवेश-संज्ञा पुं० (सं०) जोश। मन की तेजी या उमंग।
आवेष्टन--संज्ञा पुं० (सं०) किसी चीज को छिपाना या ढँकना।
आशंका-संज्ञा स्त्री० भय। डर। संदेह। अविश्वास।
आशना-संज्ञा (फा०) जिससे जान-पहचान हो। प्रेमी।
आशनाई-संज्ञा स्त्री० (फा०) जान-पहचान, दोस्ती। प्रेम। स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध।
आशय-संज्ञा पुं० आश्रय, मतलब, उद्देश्य, जगह, गड्ढा।
आशा-संज्ञा स्त्री० उम्मीद।
आशिक-संज्ञा पुं० (अ०) प्रेम करनेवाला; --**माशूक**--प्रेमी-प्रेमिका।
आशिष-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुआ, आशीर्वाद।
आशीर्वाद-संज्ञा पुं० आशिष, दुआ। कल्याण या भलाई की कामना प्रकट करनेवाला वाक्य।
आशु-क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी।
आशुकवि-संज्ञा पुं० (सं०) दिये गये विषय पर तुरन्त कविता बना डालनेवाला कवि।
आशुतोष--वि० शीघ्र ही प्रसन्न या संतुष्ट हो जानेवाला।
आश्चर्य--संज्ञा पुं० अचंभा, विस्मय, अनोखापन, अद्भुत रस।
आश्रम-संज्ञा पुं० (सं०) वह स्थान जहाँ ऋषि-मुनि रहें।
आश्रय-संज्ञा पुं० (सं०) सहारा। ठहरने या रक्षा पाने का स्थान।
आश्रित-वि० (सं०) वह जो किसी के सहारे या आधार पर हो।
आश्विन-संज्ञा पुं० (सं०) क्वार का महीना, जिसकी पूर्णिमा अश्विनी नक्षत्र के समय पड़ती है।

आषाढ़--संज्ञा पुं० (सं०) एक हिन्दी महीना, जिसकी पूर्णिमा पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के समय पड़ती है।
आषाढ़ी-संज्ञा स्त्री० (सं०) आषाढ़ मास में होनेवाली पूर्णिमा।
आस-संज्ञा स्त्री० आशा। भरोसा।
आसक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी एक ही विषय का अवलम्बन, प्रेम।
आसमानी-वि० (फा०) आसमान के रंग का। आसमान संबंधी।
आसरा-संज्ञा पुं० सहारा। आशा। भरोसा। इच्छा।
आसीन-वि० (सं०) विराजमान। बैठा हुआ।
आसुरी-वि० (सं०) असुर या राक्षसों से सम्बन्धित। राक्षसी।
आसूदा-वि० (फा०) भरा-पुरा। सन्तुष्ट, इच्छा न रखनेवाला।
आस्तिक-वि० (सं०) ईश्वर में विश्वास रखनेवाला। धार्मिक।
आस्था-संज्ञा स्त्री० सहारा, किसी के गुणों पर विश्वास होना, श्रद्धा।
आस्वाद-संज्ञा पुं० रस, स्वाद, जायका।
आस्वादन-संज्ञा पुं० (सं०) चखना।
आहत-वि० (सं०) चोट खाया हुआ, घायल।
आहार-संज्ञा पुं० भोजन, अन्न। जो खाया जाय।
आहार-विहार-संज्ञा पुं० (सं०) व्यवहार, रहन-सहन।
आहिस्ता-क्रि० वि० (फा०) धीरे-धीरे।

आहुति-संज्ञा स्त्री० (सं०) मंत्र पढ़ते हुए अग्नि में देवता के लिए घृतादि फेंकना।
आहूत-वि० (सं०) निमन्त्रित।
आह्वान-संज्ञा पुं० पुकार, बुलाना। देवताओं को बुलाने का कार्य करना।

इ

इंजील-संज्ञा स्त्री० (यूनानी) ईसाइयों की धर्म-पुस्तक। बाइबिल।
इंतकाल-संज्ञा पुं० (अ०) मरना, मृत्यु।
इंतजाम-संज्ञा पुं० (अ०) प्रबन्ध।
इंतजार-संज्ञा पुं० (अ०) राह देखना, प्रतीक्षा।
इंदिरा-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी, श्री।
इंदु-संज्ञा पुं० (सं०) चन्द्रमा। कपूर।
इंद्र-वि० (सं०) एक पानी बरसानेवाला वैदिक देवता।
इंद्रगोप-संज्ञा पुं० (सं०) एक लाल रंग का बरसाती कीड़ा, बीरबहूटी।
इंद्रजाल-संज्ञा पुं० छल, धोखा, जादू, तिलस्म।
इंद्रनील-संज्ञा पुं० (सं०) नीलम।
इंद्रलोक-संज्ञा पुं० अमरावती, स्वर्ग।
इंद्रवधू-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक लाल रंग का छोटा बरसाती कीड़ा, बीरबहूटी।
इंद्राणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) इन्द्र

को पत्नी, शची। बड़ी इलायची।
इंद्रायुध-संज्ञा पुं० (सं०) इन्द्र का
इंद्रिय-संज्ञा स्त्री० (सं०) शारीरिक वे शक्तियाँ जिनसे हम जगत का ज्ञान प्राप्त करते हैं, जैसे आँख, नाक, कान आदि। शरीर के वे अवयव जो काम करते हैं, जैसे हाथ-पैर (कर्मेन्द्रियाँ)।
इंद्रिय-निग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) इन्द्रियों को वश में रखना।
इंधन-संज्ञा पुं० आग जलाने की लकड़ी, तृण इत्यादि।
इकराम-संज्ञा पुं० (अ०) इनाम। इज्जत, सम्मान।
इकरार-संज्ञा पुं० (अ०) किसी काम को करने को स्वीकृति। वज्र, इन्द्र-धनुष, इद्रचाप।
इक्षु-संज्ञा पुं० (सं०) ईख, गन्ना।
इच्छा-संज्ञा स्त्री० वांछा, किसी अच्छी लगनेवाली वस्तु को प्राप्त कर लेने की कामना, चाह।
इजलास-संज्ञा पुं० (अ०) वह स्थान जहाँ मुकदमों का न्याय होता है, न्यायालय। बैठक का कमरा।
इजहार-संज्ञा पुं० (अ०) खोलना, जाहिर करना, प्रकट करना, न्यायालय में बयान देना।
इजाजत-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी को कुछ काम करने की स्वीकृति दे देना, मंजूरी।
इजाफा-संज्ञा पुं० (अ०) उन्नति होना, बढ़ती।
इजारबंद-संज्ञा पुं० नारा।
इजारा-संज्ञा पुं० (अ०) ठेका। अधिकार होना।
इज्जत-संज्ञा स्त्री० (अ०) आदर, सम्मान। मर्यादा।
इठलाना-क्रि० अ० इतराना, ठसक दिखाना। नखरे दिखाना।
इतमीनान-संज्ञा पुं० संतोष।
इतर-वि० (सं०) दूसरे लोग, अन्य, गैर ;–जन– पुं० सामान्य लोग।
इतराना-क्रि० अ० घमण्ड करना।
इताअत-संज्ञा स्त्री० (अ०) कही हुई बात को करना, आज्ञा-पालन।
इतिवृत्त-संज्ञा पुं० कहानी। कथा।
इतिहास-संज्ञा पुं० (सं०) बीती हुई मनुष्य-सम्बन्धी घटनाओं का क्रमानुसार वर्णन। प्राचीन आख्यान।
इत्तफाक-संज्ञा पुं० (अ०) अचानक मेल होना। संयोग।
इत्तला-संज्ञा स्त्री० खबर देना।
इत्थंभूत-वि० (सं०) ऐसा।
इदमित्थं-(सं०) ठीक ऐसा ही है। सही है।
इनकार-संज्ञा पुं० (अ०) किसी की बात अस्वीकृत करना, मुकरना।
इनसान-संज्ञा पुं० (अ०) मनुष्य।
इनसानियत-संज्ञा स्त्री० (अ०) मनुष्य को जो कुछ करना चाहिए, मनुष्यता।
इनायत-संज्ञा स्त्री० (अ०) कृपा करना। अनुग्रह। मिहरबानी।
इबारत-संज्ञा स्त्री० (अ०) लिखने का ढंग। लिखावट।
इमाम-संज्ञा पुं० (अ०) आगे

चलनेवाला। मुसलमानों में धर्म का काम करनेवाला। अली के बेटों की उपाधि।
इमामबाड़ा-संज्ञा पुं० जहाँ शिया मुसलमान अपना ताजिया रखते तथा दफनाते हैं।
इमारत-संज्ञा स्त्री० (अ०) बड़ा, पक्का, बढ़िया बना मकान। महल।
इम्तहान-संज्ञा पुं० (अ०) जाँच करना, परीक्षा।
इयत्ता-संज्ञा स्त्री० सीमा।
इर्द-गिर्द-क्रि० वि० चारों ओर।
इलजाम-संज्ञा पुं० (अ०) दोष मढ़ना। अभियोग या जुर्म लगाना।
इला-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी, वाक्य।
इलाही-संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वर। ईश्वर का बनाया हुआ, दैवी।
इल्तिजा-संज्ञा स्त्री० (अ०) बिनती करना।
इल्म-संज्ञा पुं० (अ०) ज्ञान, शास्त्र विद्या।
इल्लत-संज्ञा स्त्री० (अ०) परेशानी। झंझट। रोग।
इशारा-संज्ञा पुं० (अ०) किसी बात को बतलाने का एक ढंग, संकेत।
इश्क-संज्ञा पुं० (अ०) प्रेम।
इष्ट-वि० (सं०) अभिलषित, प्रिय, मन का।
इष्टदेव, इष्टदेवता-संज्ञा पुं० (सं०) आराध्य देवता।
इसपात-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कड़ा और पक्का लोहा।
इसलाम-संज्ञा पुं० (अ०) एक धर्म, जिसे मुहम्मद साहब ने चलाया था, मुसलमानी धर्म।
इस्तीफा-संज्ञा पुं० किसी पद को छोड़ देने के लिए प्रार्थना पत्र, त्यागपत्र।
इस्तेमाल-संज्ञा पुं० (अ०) किसी चीज का काम में लाया जाना, प्रयोग, उपयोग।

ईंगुर-संज्ञा पुं० एक सुंदर लाल रंग का खनिज सिन्दूर जिसे स्त्रियाँ अपनी माँग में भरती हैं।
ईख-संज्ञा स्त्री० गन्ना, ऊख।
ईजाद-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी नई चीज की खोज करना, या उसे बनाना।
ईति-संज्ञा स्त्री० झगडा, दुःख।
ईद-संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसलमानों का रोजा खत्म होने पर होनेवाला त्योहार।
ईप्सा-संज्ञा स्त्री० वांछा, इच्छा, चाह, अभिलाषा।
ईप्सित-वि० (सं०) चाहा हुआ।
ईमान-संज्ञा पुं (अ०) धर्म में विश्वास। अच्छा चरित्र और विचार। सत्य।
ईर्षा-संज्ञा स्त्री० दूसरे को बढ़ता न देख सकने पर उत्पन्न क्षोभ, डाह।

ईशान-संज्ञा पुं० (सं०) पूर्व और पश्चिम का कोना।

ईशिता-संज्ञा स्त्री० (सं०) आठ सिद्धियों में एक जिसके द्वारा साधक सब पर शासन कर सकता है।

ईश्वर-संज्ञा पुं० (सं०) सबका मालिक। सृष्टि का आधार।

ईश्वरीय-वि० (सं०) ईश्वर द्वारा बनाया हुआ, दिव्य, दैवी।

ईसा-संज्ञा पुं० (अ०) ईसाई धर्म को चलानेवाले, ईसा मसीह।

उ

उंगली-संज्ञा स्त्री० हथेली से निकले हुए पाँच अंग जिनसे कोई वस्तु उठायी जाती है।

उंघाई-संज्ञा स्त्री० निद्रा, झपकी।

उंछवृत्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) अपना जीवन खेत के गिरे दाने बीन-कर चलाना।

उऋण-वि० ऋण या कर्ज को अदा कर चुकनेवाला।

उकठा-वि० शुष्क, सूखा हुआ।

उकताना-क्रि० अ० परेशान होना, ऊबना, जल्दी करना।

उकसाना-क्रि० स० किसी काम को करने के लिए प्रेरित करना, सुलगाना, भड़काना, छेड़ना।

उकाब-संज्ञा पुं० (अ०) बड़ी जाति का एक गिद्ध।

उक्ति-संज्ञा स्त्री० कही हुई बात।

उखड़ना-क्रि० अ० अपनी जगह से जड सहित अलग हो जाना। हट जाना। लड़ाई में हार जाना।

उखाड़ना-क्रि० स० नष्ट करना।

उगटना-क्रि० अ० (कवि०) बार बार कहना, किये हुए उपकार को जताना, हँसी उड़ाना।

उगना-क्रि० अ० पैदा होना।

उगलना-क्रि० स० मुंह से अन्दर की वस्तु बाहर निकालना। किसी गुप्त बात को प्रगट करना।

उगालदान-संज्ञा पुं० पीकदान।

उगाहना-क्रि० स० वसूल करना। आसामियों से धन प्राप्त करना।

उगाही-संज्ञा स्त्री० किसानों से अन्न धन वसूल करने की क्रिया।

उग्र-वि० (सं०) तीव्र, प्रचण्ड।

उघड़ना-क्रि० अ० खुलना, नंगा होना। स्पष्ट होना।

उचटना-क्रि० अ० अलग होना, चिपका न रहना मन न लगना।

उचाट-संज्ञा पुं० मन न लगने की दशा, हताश, चित्त न लगना।

उचारना-क्रि० स० किसी बात को मुंह से कहना।

उचित-वि० (सं०) ठीक, योग्य।

उच्च-वि० (सं०) ऊँचा। श्रेष्ठ।

उच्चतम-वि० (सं०) सबसे ऊँचा।

उच्चता-संज्ञा स्त्री० श्रेष्ठता।

उच्चार-संज्ञा पुं उच्चारण, मुंह से कुछ कहना।
उच्चारण-संज्ञा पुं० कथन, मुंह से स्वर-व्यञ्जन-युक्त ध्वनियों को कहना, बोलने का काम।
उच्छिन्न-वि० (सं०) कटा हुआ उखड़ा हुआ, नष्ट, नीन।
उच्छिष्ट-वि० (सं०) खाने से बचा हुआ भोजन, जूठा।
उच्छृंखल-वि० (सं०) जो किसी क्रम से न हो, स्वेच्छाचारी।
उच्छ्वास-संज्ञा पुं० (सं०) ऊपर को खींची हुई सांस।
उछल-कूद-संज्ञा स्त्री० खिलवाड़।
उछलना-क्रि० अ० छलांग मारना। चौंक पड़ना।
उछाल-संज्ञा स्त्री० कूद-फांद, ऊपर कूदना।
उछाह-संज्ञा पुं० प्रसन्नता और तेजी से काम करना, उत्साह, इच्छा।
उजड़ना-क्रि० अ० वीरान हो जाना।
उजड्ड-वि० समाज में जिसे बैठना न आता हो, नितान्त मूर्ख, तुच्छ, गँवार।
उजरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) किराया, मजदूरी।
उजागर-वि० दीप्तिमान्, विख्यात, प्रकाशित।
उजाड़-संज्ञा पुं० वह स्थान जो नष्ट-भ्रष्ट हो गया हो। जहाँ कोई रहता न हो। वि० ध्वस्त, टूटा-फूटा, उजड़ा। निर्जन।
उजाड़ना-क्रि० स० तोड़ना, नष्ट-भ्रष्ट करना।
उजालना-क्रि० स० किसी वस्तु को साफ करना।
उजाला-संज्ञा पुं० प्रकाश।
उजास-संज्ञा पुं० उजाला, प्रकाश।
उजेला-संज्ञा पुं० उजला, स्वच्छ।
उज्र-संज्ञा पुं० (अ०) किसी काम के करने में आनाकानी करना।
उज्ज्वल-वि० (सं०) प्रकाश से युक्त या भरा हुआ, बिनादोष का, स्वच्छ, खिला हुआ, सुन्दर।
उटज-संज्ञा पुं० पर्णशाला, झोंपड़ी।
उठान-संज्ञा स्त्री० ऊपर उठने की क्रिया। चढ़ान। वृद्धि।
उठाना-क्रि० स० पड़ी चीज को ऊँचा करना।
उड़ंकू-वि० उड़नेवाला। दौड़-धूप करनेवाला।
उड़न-संज्ञा स्त्री० उड़ने का कार्य।
उड़नखटोला-संज्ञा पुं० विमान।
उड़ाऊ-वि० उड़नेवाला। अधिक पैसा बरबाद करनेवाला।
उड़ाका, उड़ाकू-वि० जो उड़ सकता हो।
उड़ान-संज्ञा पुं० हवा में ऊपर उड़ने की क्रिया। छलांग।
उड़िया-वि० उड़ीसा देश का रहने-वाला। वहाँ की भाषा।
उडु-संज्ञा स्त्री० तारा, पक्षी, पानी।
उडुप-संज्ञा पुं० (सं०) नाव। चाँद। बड़ा गरुड़।
उडुपति-संज्ञा पुं० समुद्र, चन्द्रमा।
उतराई-संज्ञा स्त्री० ऊपर से नीचे

खाने की क्रिया। उतार, ढाल।

उतार-संज्ञा पुं० उतरने की क्रिया। घटाव, कमी, मूल्य का कम होना, नाश, ढाल।

उतारना-क्रि० स० ऊँचे से किसी चीज को नीचे लाना। नकल करना।

उतारू-वि० किसी काम को करने को तैयार, उद्यत।

उतावला-वि० कुछ करने को जल्दी करनेवाला। घबड़ाया हुआ।

उतावली-संज्ञा स्त्री० जल्दी करना, व्यग्रता, चपलता।

उत्कंठा-संज्ञा स्त्री० उत्सुकता, कुछ करने की बहुत अधिक इच्छा होना।

उत्कंठित-वि० (सं०) बहुत अधिक इच्छा रखनेवाला।

उत्कट-वि० (सं०) तेज, तीव्र।

उत्कर्ष-संज्ञा पुं० श्रेष्ठता। बड़ाई। ऊँचे उठना। उन्नति। समृद्धि।

उत्कीर्ण-वि० (सं०) खोदकर लिखा हुआ। खोदा हुआ।

उत्कृष्ट-वि० उत्तम, बहुत अच्छा, श्रेष्ठ।

उत्क्रांति-संज्ञा स्त्री० उभाड़, धीरे-धीरे लगातार ऊँचे उठना।

उत्तप्त-वि० (सं०) खूब गरम किया हुआ। तप्त। दुःखी।

उत्तम-वि० (सं०) सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, बढ़िया।

उत्तमता-संज्ञा स्त्री० (सं०) सबसे अच्छा होना, श्रेष्ठता, अच्छाई।

उत्तमर्ण-संज्ञा पुं० (सं०) ऋणदाता, जो कर्ज आदि देता है, महाजन।

उत्तर-संज्ञा पुं० (सं०) एक दिशा जो दक्षिण के सामने है। किसी पूछी हुई बात के बारे में कुछ कहना, जवाब, बदला।

उत्तरदाता-संज्ञा पुं० किसी काम के लिए जिम्मेदार। जवाबदेह।

उत्तरदायी-वि० भारवाहक, जिम्मेदार।

उत्तर मीमांसा-संज्ञा स्त्री० (सं०) वेदान्त दर्शन।

उत्तराखंड-संज्ञा पुं० भारत का उत्तर का हिमालय पर्वत के पास का हिस्सा।

उत्तराधिकार-संज्ञा पुं० (सं०) किसी के मरने के बाद उसकी किसी प्रकार की सम्पत्ति का मालिक या क्रमिक स्वत्व, बपौती।

उत्तराधिकारी-वि० वह जो किसी के मरने के बाद उसकी किसी प्रकार की सम्पत्ति का मालिक या अधिकारी हो, वारिस।

उत्तरायण-संज्ञा पुं० (सं०) वह समय जब सूर्य मकर रेखा से उत्तर को कर्क रेखा की ओर गमन रहता है।

उत्तरार्ध-संज्ञा पुं० (सं०) किसी वस्तु के पीछे का आधा भाग।

उत्तरीय-संज्ञा पुं० ओढ़नी, ऊपर से ओढ़ने का वस्त्र, चादर, दुपट्टा।

उत्तरोत्तर-क्रि० वि० (सं०) लगातार एक के बाद एक।

उत्तान-वि० (सं०) पीठ के बल

से लगाये लेटा हुआ।
उत्ताप-संज्ञा पुं० उष्णता। गर्मी। दुःख। कष्ट। उत्तेजना।
उत्तीर्ण-वि० (सं०) किसी कार्य में सफल। परीक्षा में सफल।
उत्तुंग-वि० (सं०) बहुत ऊँचा।
उत्तेजना-संज्ञा स्त्री० (सं०) बढ़ावा, प्रोत्साहन।
उत्तोलन-संज्ञा० पुं० (सं०) ऊँचा उठाना, चढ़ाना, तौलना।
उत्थान-संज्ञा पुं० (सं०) नीचे से ऊपर उठना, समृद्धि।
उत्पत्ति-संज्ञा स्त्री० उद्भव। पैदा होना। आरम्भ। सृष्टि।
उत्पन्न-वि० (सं०) कोई निकली हुई नयी वस्तु। पैदा।
उत्पल-संज्ञा पुं० पद्म, कमल।
उत्पाटन-संज्ञा पुं० (सं०) उखाड़ना।
उत्पात-संज्ञा पुं० (सं०) गड़बड़ मचाना, उपद्रव।
उत्पाती-वि० ऊधम मचानेवाला, उपद्रवी।
उत्पादक-वि० (सं०) किसी नयी वस्तु को पैदा करनेवाला।
उत्पादन-संज्ञा पुं० उपजाना।
उत्पीड़न-संज्ञा पुं० उत्तेजना, कष्ट देना, सताना, बढती, उपद्रव।
उत्प्रेक्षा-संज्ञा स्त्री० उपेक्षा, आरोप। एक अलंकार।
उत्फुल्ल-वि० (सं०) खिला हुआ, प्रसन्न।
उत्सर्ग-संज्ञा पुं० त्याग। दान।
उत्सव-संज्ञा पुं० आनन्द, प्रसन्नता के साथ मिलकर कोई काम करना, उन्नति, पर्व, त्योहार।
उत्साह-संज्ञा पुं० उद्यम, हर्ष, काम को करने का जोश, उमंग।
उत्साही-वि० जिसके अन्दर किसी काम को करने का जोश हो, उत्साह रखनेवाला।
उत्सुक-वि० (सं०) किसी काम को करने, या किसी बात के बारे में जानने को इच्छुक, व्याकुल।
उत्सुकता-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी काम को करने या किसी बात को जानने की इच्छा।
उथल-पुथल-संज्ञा स्त्री० क्रम को गड़बड़ कर देना। हलचल।
उथला-वि० कम गहरा। छिछला।
उदंत-वि० बिना दांत का।
उदक-संज्ञा पुं० जल, पानी।
उदधि-संज्ञा पुं० (सं०) समुद्र।
उदय-संज्ञा पुं० सूर्य का उगना। प्रकट होना, निकलना।
उदयगिरि-संज्ञा पुं० (सं०) उदयाचल पर्वत।
उदयाचल-संज्ञा पुं० (सं०) पुराणों में बताया हुआ एक कल्पित पर्वत जिसके पीछे से सूर्य का निकलना माना जाता है।
उदर-संज्ञा पुं० पेट, शरीर के बीच का वह अंग जिसमें भोजन पचता है, बीच का भाग।
उदात्त-वि० (सं०) ऊँचे स्वर से

वाला। साफ बोलनेवाला, स्पष्ट।
उदान-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्रकार की प्राण वायु जो गले में स्थित है और जिससे छींक तथा डकार आदि आती हैं।
उदार-वि० (सं०) दाता, देनेवाला। श्रेष्ठ।
उदार चरित-वि० (सं०) उदार हृदयवाला।
उदारचेता-वि० जिसका हृदय उदार हो। उदारमना।
उदारता-संज्ञा स्त्री० (सं०) सरल और ऊँचे हृदय से किया काम। उच्च विचार। दानशीलता।
उदास-वि० (सं०) उदासीन, विरक्त, दुःखी, तटस्थ।
उदासी-संज्ञा पुं० मन न लगने की दशा।
उदासीन-वि० (सं०) वह जिसका मन न लगता हो, या वस्तु से हट गया हो। सम्पर्करहित।
उदाहरण-संज्ञा पुं० दृष्टान्त, किसी बात को समझाने के लिए उसी प्रकार की कुछ बातों को बताना, मिसाल।
उदित-वि० (सं०) उठा हुआ। पैदा हुआ हो। प्रकट हुआ। प्रसन्न।
उद्गार-संज्ञा पुं० वमन, उलटी, दबी बात को एकदम कह देने की इच्छा। उबाल। अधिकता।
उद्घाटन-संज्ञा पुं० (सं०) किसी बात को खोलकर कहना। शुभारंभ।
उद्दंड-वि० जिसको दंड का कोई डर न हो, अक्खड़।
उद्दाम-वि० (सं०) उच्छृंखल, उग्र, उद्दंड, बन्धन से दूर।
उद्दिष्ट-वि० (सं०) जिसकी ओर इशारा करके दिखाया गया हो।
उद्दीपन-संज्ञा पुं० प्रकाश, वह क्रिया जिससे उत्तेजना हो,
उद्देश-संज्ञा पुं० अभिलाषा, मतलब, कारण।
उद्देश्य-वि० (सं०) लक्ष्य, जिसे पूरा करना है।
उद्धत-वि० (सं०) तेज, उग्र। अविनीत, अक्खड़।
उद्धतपन-संज्ञा पुं० उजड्ड या अक्खड़ तरह से काम करना, उग्रता।
उद्धरण-संज्ञा पुं० उद्धार, ऊपर या नीचे उठना।
उद्धरणी-संज्ञा स्त्री० पढ़ं पाठ को बार-बार दोहराने का कार्य।
उद्धव-संज्ञा पुं० (सं०) यज्ञ की अग्नि, उत्सव, कृष्ण के एक मित्र।
उद्धार-संज्ञा पुं० (सं०) किसी को किसी प्रकार के बन्धन से मुक्त करना, सुधार, उन्नति, ऋणमुक्ति।
उद्धृत-वि० (सं०) उगला हुआ। ऊपर उठाया हुआ।
उद्बुद्ध-वि० (सं०) विकसित, खिला हुआ। उठा हुआ, जगा हुआ।
उद्बोध-संज्ञा पुं० अल्प ज्ञान या जागृति। समझ।
उद्बोधक-वि० (सं०) समझाने या ज्ञान देनेवाला।

उद्भट-वि० (सं०) प्रबल, प्रचण्ड। उत्तम, श्रेष्ठ।
उद्भासित-वि० (सं०) शोभित, प्रकट किया हुआ।
उद्भिज्ज-संज्ञा पुं० (सं०) वे जो भूमि को भेदकर निकलते हैं, पेड़-पौधे, वनस्पति इत्यादि।
उद्भूत-वि० (सं०) पैदा हुआ, उत्पन्न।
उद्भ्रांत-वि० (सं०) व्याकुल। भौचक्का। भूला हुआ। परेशान।
उद्यत-वि० (सं०) किसी काम को करने को तैयार।
उद्यम-संज्ञा पुं० रोजगार।
उद्यमी-वि० काम-धाम या प्रयत्न करनेवाला।
उद्यान-संज्ञा पुं० बगीचा, उपवन।
उद्यापन-संज्ञा पुं० आरंभ, किसी व्रत को खत्म करने के बाद जो काम किया जाय, धार्मिक कृत्य।
उद्योग-संज्ञा पुं० प्रयत्न, काम-धाम करना, कोशिश, परिश्रम।
उद्योगी-वि० काम-धाम, उद्योग या मेहनत करनेवाला।
उद्रेक-संज्ञा पुं० बढ़ती, वृद्धि। अधिकता होते जाना।
उद्वाह-संज्ञा पुं० (सं०) विवाह।
उद्विग्न-वि० (सं०) व्याकुल, आकुल, घबड़ाया हुआ।
उधार-संज्ञा पुं० किसी से कुछ समय के लिए ऋण माँग लेना।
उधेड़ना-क्रि० स० एक-दूसरे से [illegible] की पर्तों को अलग-अलग करना, काटना।
उधेड़बुन-संज्ञा स्त्री० मन में कुछ भरी हुई बातों को सोचते रहना। चिन्ता, उपाय, युक्ति।
उनहार-वि० समान, सदृश।
उनींदा-वि० वह जिसके नींद भरी हो, ऊँघता हुआ। अलसाया।
उन्नत-वि० (सं०) ऊँचा। उठा हुआ। भरा पुरा, समृद्ध। श्रेष्ठ।
उन्नति-संज्ञा स्त्री० वृद्धि। ऊँचे उठना। बढ़ना। सौभाग्य।
उन्नाबी-वि० कुछ काला मिला हुआ लाल रंग।
उन्नायक-वि० (सं०) ऊँचा उठानेवाला। परिणाम देनेवाला।
उन्निद्र-वि० (सं०) नींद से रहित।
उन्मत्त-वि० (सं०) सोच-समझकर काम न करनेवाला। मतवाला। जो आपे में न हो, बावला। पागल।
उन्माद-संज्ञा पुं० सनक, मन और दिमाग के ठीक काम न करने की दशा, पागलपन।
उन्मादक-वि० मादक, ऐसी चीज जिसके कारण मन या दिमाग ठिकाने न रहे, पागल करनेवाला।
उन्मादी-वि० पागल।
उन्मीलित-वि० (सं०) खुला हुआ।
उन्मुख-वि० (सं०) ऊपर की ओर मुख किये हुए। कुछ जानने की इच्छा रखनेवाला, उत्सुक।
उन्मूलन-संज्ञा पुं० उखाड़ना, जड़ समेत खतम कर देना, हटाना।
उन्मेष-संज्ञा पुं० प्रकाश, आँख का

खुलना।

उपकरण-संज्ञा पुं० (सं०) वह सामान जिसकी सहायता से कोई कार्य किया जाय। सामग्री।

उपकार-संज्ञा पुं० मदद, भलाई करना, नेकी।

उपकारी-वि० उपकार या नेकी करनेवाला।

उपकृत-वि० (सं०) एहसानमंद।

उपकृति-संज्ञा स्त्री० (स०) उपकार।

उपक्रमणिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी काम के पहले उसका दिया हुआ क्रम, किसी पुस्तक की भूमिका, प्रस्तावना।

उपग्रह-संज्ञा पुं० अनुग्रह, छोटा ग्रह, जो अपने से बड़े के चारों ओर घूमे, जैसे चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है।

उपचय-संज्ञा पुं० वृद्धि, उन्नति।

उपचार-संज्ञा पुं० चिकित्सा, दवा करना, सेवा करना।

उपज-संज्ञा स्त्री० खेत में जो अनाज पैदा होता है। उत्पत्ति।

उपजाऊ-वि० वह स्थान जिसमें अधिक वस्तु पैदा हो सके, उर्वर।

उपजाना-क्रि० स० पैदा करना। खेत में अनाज उत्पन्न कराना।

उपत्यका-संज्ञा स्त्री० (सं०) पहाड़ के नीचे की भूमि, तराई, घाटी।

उपदंश-संज्ञा पुं० (सं०) एक रोग जिसमें दांत या नाखून लगने के कारण शिश्न (लिंग) में घाव हो जाता है।

उपदिष्ट-वि० (सं०) वह जिसका उपदेश दिया जाय, या जिसके बारे में उपदेश दिया जाय।

उपदेश-संज्ञा पु० शिक्षा, नसीहत।

उपदेशक-संज्ञा पुं० शिक्षक।

उपदेष्टा-संज्ञा पुं० उपदेश देनेवाला।

उपदेसना-क्रि० स० किसी को उसकी भलाई की शिक्षा देना।

उपद्रव-संज्ञा पुं० उत्पात, आपत्ति, ऊधम, दंगा-फसाद।

उपद्रवी-वि० काम के बीच गड़बड़ उपस्थित करनेवाला, उत्पाती, ऊधम मचानेवाला।

उपनयन-संज्ञा पु० (सं०) यज्ञोपवीत या जनेऊ पहनाने का संस्कार।

उपनाम-संज्ञा पुं० उपाधि।

उपनायक-संज्ञा पुं० (सं०) नाटकों में प्रधान पात्र का साथ देनेवाला या उससे कम महत्त्व का पात्र। छोटा अधिकारी।

उपनिवेश-संज्ञा पुं० (सं०) किसी स्थान से हटकर किसी दूसरे स्थान में कुछ लोगों का बस जाना।

उपनिषद्-संज्ञा स्त्री० रहस्य, वेद की शाखा के ब्राह्मणों के वे अन्तिम भाग जिनमें आत्मा-परमात्मा आदि के बारे में शिक्षा है।

उपनीत-वि० (सं०) जिसका जनेऊ या उपनयन संस्कार हो गया हो।

उपन्यास-संज्ञा पुं० नावेल।

उपपत्ति-संज्ञा स्त्री० युक्ति, हेतु।

उपपादन-संज्ञा पुं० सम्पादन।
उपपुराण-संज्ञा पुं० व्यास के मुख्य १८ पुराणों के अलावा १८ अन्य छोटे पुराण।
उपभोग-संज्ञा पुं० व्यवहार, किसी वस्तु को अपने काम में लाना।
उपमंत्री-संज्ञा पुं० (सं०) प्रधान मंत्री के नीचे का या छोटा मंत्री।
उपमा-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी वस्तु का किसी अन्य वस्तु से मिलान करना, तुलना।
उपमान-संज्ञा पुं० (सं०) वह वस्तु जिससे किसी वस्तु का मेल दिखाया जाय।
उपमित-वि० (सं०) जिसकी उपमा दी गयी हो, सदृश, बराबर।
उपमेय-वि० (सं०) जिसकी उपमा दी गयी हो। वर्णन करने लायक।
उपयुक्त-वि० (सं०)ठीक, उचित। योग्य, मुनासिब।
उपयोग-संज्ञा पुं० व्यवहार, किसी चीज का काम में लाया जाना, प्रयोग, प्रयोजन, औषधि-क्रिया।
उपयोगिता-संज्ञा स्त्री० (सं०) काम में आने लायक होना।
उपयोगी-वि० काम में आने योग्य।
उपरति-संज्ञा स्त्री० सन्यास, मृत्यु।
उपरांत-क्रि० वि० (सं०) बाद।
उपरि-क्रि० वि० (सं०) ऊपर।
उपरोध-सज्ञा पुं० आवरण, रुकावट डालना। ढँकना। अनुरोध।
उपर्युक्त-वि० (सं०) ऊपर बताया या कहा हुआ।
उपल-संज्ञा पुं० ओला। पत्थर।
उपलक्षण संज्ञा पुं० (सं०) वह वस्तु या चिह्न जिससे कोई बात समझी जाय।
उपलब्ध-वि० (सं०) पाया या मिला हुआ। समझा हुआ।
उपलब्धि-संज्ञा स्त्री० पाने या जानने की क्रिया। बुद्धि, ज्ञान।
उपला-संज्ञा पुं० जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर, कंडा।
उपवन-संज्ञा पुं० बाग, बगीचा।
उपवास-संज्ञा पुं० अनशन।
उपवीत-संज्ञा पुं० जनऊ।
उपवेद-संज्ञा पुं० (सं०) वेदों से निकली हुई विद्याएँ।
उपशम-संज्ञा पुं० तृष्णा का नाश, इन्द्रियों का शमन, करना या दबाना, निवृत्ति, छुटकारा।
उपशिष्य-संज्ञा पुं० चेले का चेला।
उपसंपादक-संज्ञा पुं० (सं०) किसी कार्य के मुख्य कर्ता का सहायक। सहायक सम्पादक।
उपसंहार-संज्ञा पुं० नाश, सारांश।
उपसर्ग-संज्ञा पुं० क्लेश।
उपस्थित-वि० (सं०) सामने होना। समीप का, पास हाजिर होना।
उपस्थिति-वि० (सं०) सामने रहने की अवस्था, स्मृति, याददाश्त।
उपहार-संज्ञा पुं० (सं०) किसी को कुछ विशेष भाव से देना, भेंट, नजर।
उपहास-संज्ञा पुं०निन्दासूचक हँसी करना। हँसी-ठट्ठा।

उपहासास्पद-वि० (सं०) जिसकी हँसी उड़ाई जाय।
उपांत-संज्ञा पुं० (सं०) खतम होने के निकट का भाग, तीर, किनारा।
उपाख्यान-संज्ञा पुं० (सं०) किसी बड़ी कथा के बीच की छोटी कथा।
उपादान-संज्ञा पुं० प्राप्ति, वर्णन, कारण, जैसे मिट्टी घड़े का।
उपादेय-वि० (सं०) ले लेने लायक, योग्य, श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा।
उपाधि-संज्ञा स्त्री० उपद्रव। सम्मान-सूचक पद। खिताब।
उपाध्याय-संज्ञा पुं० (सं०) वह जो वेद पढ़ावे। ब्राह्मणों में एक भेद।
उपाय-संज्ञा पुं० युक्ति। तरीका।
उपायन-संज्ञा पुं० उपहार। भेंट।
उपार्जित-वि० (सं०) प्राप्त किया हुआ। इकट्ठा किया हुआ।
उपासक-वि० (सं०) पूजा करनेवाला, भक्त।
उपास्य-वि० (सं०) जो पूजा किये जाने के योग्य हो, आराध्य।
उपेक्षा-संज्ञा स्त्री० त्याग, किसी बात की ओर ध्यान न देना। घृणा, तिरस्कार, अनादर।
उपेक्षित-वि० (सं०) वह वस्तु जिसकी ओर ध्यान न दिया गया हो, या अनादर किया हुआ, अस्वीकृत, छोड़ा हुआ।
उपोद्घात-संज्ञा पुं० (सं०) किसी काम को शुरू करने के पहले कुछ कहना। ग्रंथ की प्रस्तावना।
उफ-अव्य० (अ०) अफसोस या कष्ट सूचित करनेवाला शब्द।
उफनना-क्रि० अ० (ग्रा०) उबलकर उठना। जोश या उद्यत होना।
उफनाना-क्रि० अ० उबल जाना।
उफान-संज्ञा पुं० गर्मी पाने के कारण फेन के साथ उबलना।
उबटन-संज्ञा पुं० शरीर पर मलकर मैल छुड़ाने के लिए बनाया गया सरसों, तिल, चिरौंजी आदि का लेप, बुकवा।
उबरना-क्रि० अ० किसी काम से छुटकारा पाना, किसी मुसीबत से बच जाना, निस्तार पाना।
उबलना-क्रि० अ० गर्मी पाकर फेन के साथ किसी तरल पदार्थ का ऊपर उठना। खौलना।
उबारना-क्रि० स० किसी मुसीबत से छुटकारा दिलाना, बचाना।
उबाल-संज्ञा पुं० आँच या गर्मी पाकर फेन के साथ किसी तरल पदार्थ का ऊपर को उठना।
उबालना-क्रि० स० किसी तरल पदार्थ को इतना गरम करना कि वह फेन के साथ ऊपर उठ आवे, खौलाना, जोश उत्पन्न करना।
उभरना-क्रि० अ० ऊपर की ओर उठ आना, उत्तेजित होना, फूलना, उतरना, खुलना, उत्पन्न होना।
उभड़ना-क्रि० अ० आस-पास की सतह से ऊपर उठना। उसकाना।
उभय-वि० (सं०) दोनों।
उभाड़-संज्ञा पुं० ऊँचा उठान। ओज होना। बढ़ाव।

उमंग-संज्ञा स्त्री० मन की भावनाओं का उमड़ना, मौज, अधिकता।
उमगना-क्रि० अ० ऊपर उठना। मन का किसी खास भाव से भरकर उत्तेजित होना। हुलसना।
उमड़ना-क्रि० अ० अधिक हो जाने के कारण किसी द्रव का ऊपर उठकर फैल जाना, आवेश में आ जाना, उमंग में आना।
उमर-संज्ञा स्त्री० अवस्था।
उमस-संज्ञा स्त्री० हवा न चलने के कारण गर्मी होना।
उमेठना-क्रि० स० ऐंठना, मरोड़ना।
उम्दा-वि० (अ०) अच्छा, भला।
उम्मीद-उम्मेद-संज्ञा स्त्री० आशा, भरोसा या सहारा होना।
उम्मेदवार-संज्ञा पुं० (फा०) आशा या अपेक्षा रखनेवाला। किसी नौकरी या पद का प्रार्थी।
उम्र-संज्ञा स्त्री० अवस्था। जीवन के साल, आयु।
उर-संज्ञा पुं० हृदय, छाती।
उरग-संज्ञा पुं० सर्प, साँप।
उरगारि-संज्ञा पुं० मोर। गरुड़।
उरोज-संज्ञा पुं० स्तन, स्त्रियों के वक्ष, कुच।
उर्दू-बाजार-संज्ञा पुं० वह बाजार जहाँ सारी चीजें मिल सकें।
उर्फ-संज्ञा पुं० (अ०) पुकारने का चलतू नाम, उपनाम।
उर्वरा-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह भूमि जिसमें अनाज पैदा किया जा सकता है, उपजाऊ भूमि।
उर्वी-संज्ञा स्त्री० भूमि। पृथ्वी।
उर्वीधर-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी को धारण करनेवाला, शेषनाग।
उलंघना-उलँघना-क्रि० स० लाँघना। बात न मानना। टालना।
उलझन-संज्ञा स्त्री० रुकावट। पेंच। गड़बड़ी। परेशानी। व्यग्रता।
उलझाव-संज्ञा पुं० अटकाना, जिससे रुकावट पड़े, गड़बड़, चक्कर, परेशानी।
उलट-पलट (पुलट)-संज्ञा स्त्री० अव्यवस्था, गड़बड़ी।
उलट-फेर-संज्ञा पुं० अदल-बदल। परिवर्तन।
उलटा-वि० नीचे का ऊपर या ऊपर का नीचे किया हुआ।
उलटा-पलटी-संज्ञा स्त्री० इधर का उधर, फेरफार।
उलटी-संज्ञा स्त्री० खाया हुआ भोजन मुँह से फिर निकल जाना, कै।
उलाहना-संज्ञा पुं० किसी को की हुई भूल को उसे बताना, उपालंभ, निन्दा।
उलीचना-क्रि० स० हाथ या किसी दूसरी वस्तु से जल उछालकर फेंकना।
उल्का-संज्ञा स्त्री० प्रकाश। ज्वाला। मशाल। टूटा हुआ तारा।
उल्कापात-संज्ञा पुं० आकाश से तारों का टूटकर गिरना। उत्पात।
उल्कामुख-संज्ञा पुं० (सं०) गीदड़। मुँह से आग निकालनेवाला।
उल्था-संज्ञा पुं० एक भाषा से

दूसरी भाषा में बदलना।
उल्लंघन-संज्ञा पुं० (सं०) लाँघना, फाँदना। आज्ञा को न मानना।
उल्लास-संज्ञा पुं० आनन्द, प्रकाश। प्रसन्नता, खुशी।
उल्लिखित-वि० (सं०) खोदकर किसी वस्तु पर लिखा हुआ।
उल्लू-संज्ञा पुं० एक पक्षी जिसे दिन में नहीं दीख पड़ता।
उल्लेख-संज्ञा पुं० (सं०) लिखना। बतलाना। जिक्र।
उल्लेखनीय-वि० (सं०) लिखा जाने योग्य। कहा या बताया जाने योग्य।
उषा-संज्ञा स्त्री० सवेरा, प्रभात के समय की लाली।
उषाकाल-संज्ञा पुं० (सं०) प्रभात का समय, तड़का।
उष्ट्र-संज्ञा पुं० (सं०) ऊँट।
उष्ण-वि० (सं०) गरम।
उष्णता-संज्ञा स्त्री० आतप, गरमी।
उसास-संज्ञा स्त्री० उच्छ्वास। दुःख या शोक में ऊपर खींची गयी साँस। ठंडी साँस।
उसूल-संज्ञा पुं० (अ०) सिद्धान्त।
उस्ताद-संज्ञा पुं० (फा०) पढ़ानेवाला, अध्यापक। वि० चालाक।

ऊँघ-संज्ञा स्त्री० नींद का आना। नींद में भारी होना, उँघाई।
ऊँचा-वि० ऊपर उठा हुआ। उन्नत।
ऊँचाई-संज्ञा स्त्री० ऊपर की ओर बहुत दूर तक होना, उठान।
ऊँहूँ-अव्य० कभी नहीं, नहीं।
ऊख-संज्ञा पुं० गन्ना। ईख।
ऊखल-संज्ञा पुं० काठ या पत्थर का बर्तन या गड्ढा जिसमें अनाज कूटा जाता है, ओखली।
ऊजड़-वि० जनशून्य, उजाड़।
ऊटपटाँग-वि० बेढंगा, व्यर्थ, टेढ़ा-मेढ़ा, गडबड़।
ऊढ़ा-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका विवाह हो चुका हो, या विवाह के बाद जो किसी अन्य पुरुष से प्रेम करती है।
ऊदबत्ती-संज्ञा स्त्री० धूपबत्ती जिसे जलाने से सुगंध फैलती है।
ऊदा-वि० ललाई लिए हुए काले रंग का, बैंगनी।
ऊधम-संज्ञा पुं० गड़बड़, उपद्रव। शोरगुल, हुल्लड़।
ऊधमी-वि० गड़बड़, शैतानी या शोरगुल करनेवाला, उपद्रवी उत्पाती।
ऊना-वि० (सं०) कम। छोटा। बेकार। हीन।
ऊनी-वि० ऊन का बना हुआ। संज्ञा स्त्री० कमी, घटी। उदासी।
ऊब-संज्ञा स्त्री० व्यग्रता, परे-

ज्ञानी, अरुचि, उमंग।

ऊबड़-खाबड़-वि० जो सपाट न हो, ऊँचा-नीचा, असमतल, अटपटा।

ऊरु-संज्ञा पुं० (सं०) पैर के ऊपर का भाग। जंघा। जानु। रान।

ऊर्ज-वि० (सं०) बलिष्ठ, ताकत-वाला। संज्ञा पुं० बल, ताकत।

ऊर्जस्वी-वि० (सं०) बलवाला। तेजस्वी, प्रतापवाला, प्रतापी।

ऊर्ण-संज्ञा पुं० (सं०) भेड़ या बकरी के बाल, ऊन।

ऊर्णनाभि-संज्ञा स्त्री० (सं०) मकड़ी।

ऊर्ध्व-क्रि० वि० (सं०) ऊपर।

ऊर्ध्वगति-संज्ञा स्त्री० (सं०) संसार से छुटकारा पा जाने की दशा, मुक्ति।

ऊर्ध्वगामी--वि० (सं०) ऊपर की ओर चलनेवाला या उन्नति करने-वाला। मुक्त।

ऊर्ध्वबाहु-संज्ञा पुं० (सं०) ऊपर बाँह उठाये व्यक्ति।

ऊर्ध्वरेता-वि० (सं०) ब्रह्मचारी।

ऊर्ध्वलोक-संज्ञा पुं० वैकुण्ठ, आकाश, स्वर्ग।

ऊर्ध्वश्वास-संज्ञा पुं० लंबी साँस, ऊपर की ओर खींची हुई साँस। वायु की शरीर में कमी।

ऊर्ध्वांग- सं० पुं० मस्तक, सिर।

ऊर्मि, ऊर्मी-संज्ञा स्त्री० तरंग, लहर, पीड़ा।

ऊलजलूल-वि० (देश०) बिना क्रम का, ऊटपटांग। बे-सिर-पैर का, असम्बद्ध। अशिष्ट।

ऊषा-संज्ञा स्त्री० सवेरा, प्रभात के समय फैलनेवाली लाली।

ऊष्म-संज्ञा पुं गरमी, ग्रीष्म काल। वि० गरम।

ऊष्मा-संज्ञा स्त्री० (सं०) गर्मी का समय, ग्रीष्मकाल, तपन।

ऊसर-संज्ञा पुं० वह भूमि जिसमें कोई वस्तु उत्पन्न न की जा सके।

ऊहापोह-संज्ञा पुं० सोच-विचार। तर्क-वितर्क।

ऋ

ऋक्-संज्ञा स्त्री० (सं०) वेदों के मन्त्र, स्तुति, पूजा।

ऋक्ष-संज्ञा पुं० तारा, नक्षत्र, भालू। ज्योतिष की राशियाँ।

ऋक्षपति-संज्ञा पुं० ऋक्षनाथ या सितारों के पति, जांबवान् और चन्द्रमा।

ऋग्वेद-संज्ञा पुं० (सं०) चार वेदों में से पहला वेद।

ऋचा-संज्ञा स्त्री० (सं०) कविता में लिखे वेदों के मंत्र। स्तुति।

ऋच्छ-संज्ञा पुं० देखिए 'ऋक्ष'।

ऋजु-वि० (सं०) जो टेढ़ा न हो सीधा, सरल। सरल हृदय का व्यक्ति, सज्जन।

ऋजुता-संज्ञा स्त्री० सचाई। सीधा या सरल होना। सरलता। सरल

हृदय का होना, सज्जनता।
ऋण-संज्ञा पुं० उधार, किसी से कुछ समय के लिए उधार ली हुई वस्तु या रुपया, कर्ज।
ऋणी-वि० कर्जदार। अपने साथ किये गये उपकार को माननेवाला, कृतज्ञ।
ऋतु-संज्ञा स्त्री० (सं०) मौसम। काल-विशेष।
ऋतुचर्या संज्ञा स्त्री० (सं०) जैसी ऋतु हो, उसी के अनुसार अपने रहन-सहन को भी बनाना।
ऋतुमती-वि० स्त्री० (सं०) मासिक-धर्म से युक्त स्त्री।
ऋतुराज-संज्ञा पुं० वसन्त काल, ऋतुओं का राजा, वसंत ऋतु।
ऋतुस्नान-संज्ञा पुं० (सं०) स्त्रियों का रजोदर्शन के उपरान्त चौथे दिन किया जानेवाला स्नान।
ऋत्विक्-ज-संज्ञा पुं० पुरोहित, यज्ञ करानेवाला।
ऋद्ध-वि० (सं०) भरा-पुरा, सम्पन्न।
ऋद्धि-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक लता जिसका कंद दवा के काम आता है। वृद्धि, बढ़ती, समृद्धि।
ऋद्धि-सिद्धि-संज्ञा स्त्री० (सं०) गणेश जी की मानी जानेवाली दो दासियाँ, समृद्धि और सफलता।
ऋषभ-संज्ञा पुं० वृषभ, बैल, श्रेष्ठता बतलानेवाला शब्द।
ऋषि-संज्ञा पुं० शास्त्रप्रणेता, जो वेद मंत्रों को समझे या समझायें।
ऋष्यमूक-संज्ञा पुं० (सं०) दक्षिण का एक पर्वत।

ए

एक-वि० (सं०) इकाइयों में सब से छोटी गिनती १। जैसा दूसरा न हो।
एकछत्र-वि० (सं०) एक के अधिकार में।
एकड़-संज्ञा पुं० (अं०) पृथ्वी की नाप जो १¾ बीघे की होती है।
एकतरफा-वि० (फा०) एक ही तरफ या ओर का।
एकता-संज्ञा स्त्री० मेलजोल, बराबरी। विचारों की समानता। वि० वैसा दूसरा न होना।
एकतारा-संज्ञा पुं० एक तारवाला सितार के समान बाजा।
एकदंत-संज्ञा पुं० गणेशजी। एक दाँतवाले।
एकदा-क्रि० वि० (सं०) एक बार।
एक नयन-वि० (सं०) एक आँखवाला, काना। संज्ञा पुं० कौवा, कुबेर।
एकनिष्ठ-वि० (सं०) एक ही चीज़ पर निष्ठा या श्रद्धा रखनेवाला।
एकपक्षीय-वि० (सं०) एक ओर का, एक तरफा।
एक पत्नीव्रत-वि० (सं०) एक ही पत्नी से सम्बन्ध रखनेवाला।

संज्ञा पुं० वह नियम जिसके अनुसार एक पत्नी रखी जाय।
एकवाल-संज्ञा पुं० (अं०) बड़प्पन, प्रताप। स्वीकार।
एकमत-वि० (सं०) एक मत या रायवाला, समान मत का।
एकरबन-संज्ञा पुं० गणेश।
एकरार-संज्ञा पुं० (अ०) वादा। संधि। स्वीकार, मंजूरी।
एकरूपता-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक ही रूप सब में होना, बराबरी, एकता, समानता, सायुज्य मुक्ति।
एकवचन-संज्ञा पुं० (सं०) व्याकरण में एक वस्तु या व्यक्ति के बारे में बोध करनेवाला वचन।
एकवेणी-वि० (सं०) बालों की एक ही चोटी बनानेवाली स्त्री। विधवा।
एकहरा-वि० एक परत का। एक लड़ी का। अकेला।
एकान्त-वि० (सं०) एक, अकेला। विलकुल, जहाँ दूसरा कोई न हो, निराला, निर्जन, सूना।
एकांतिक-वि० (सं०) सब जगह न होकर एक ही जगह होने या घटनेवाला, फलस्वरूप, अन्तिम।
एका-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुर्गा। संज्ञा पुं० एक होना, ऐक्य, मेलजोल।
एकाएक-क्रि० वि० अचानक, पहले से न मालूम होनेवाली बात का घटना।
एकाकार-संज्ञा पुं० (सं०) कई वस्तुओं का मिलकर एक आकार हो जाने की दशा।
एकाकी-वि० जिसके साथ दूसरा न हो, असहाय, अकेला।
एकाक्ष-वि० (सं०) एक आँख-वाला, काना।
एकाग्र-वि० (सं०) एक वस्तु पर ही मन लगाये रखनेवाला।
एकाग्रचित्त-वि० (सं०) अपने मन को किसी एक चीज पर ही लगाये रखनेवाला, स्थिरचित्त।
एकाग्रता-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक ही पर ध्यान लगाये रखने की दशा। मन का स्थिर होना।
एकात्मता-संज्ञा स्त्री० अभेद, एक आत्मा का होना, एकता।
एकादश-वि० (सं०) एक और दस, ग्यारह, ग्यारहवाँ।
एकीकरण-संज्ञा पुं० (सं०) कई चीजों को मिलाकर इकट्ठा करना।
एकीभूत- वि०(सं०) कई भिन्न चीजों का मिलकर एक हो जाना, मिश्रित, मिला हुआ।
एड़ी-संज्ञा स्त्री० तलवे के पीछे का उभड़ा हुआ भाग।
एतद्देशीय-वि० (सं०) इस देश से सम्बन्ध रखनेवाला।
एतबार-संज्ञा पुं० (अ०) किसी की कही बात को सच्चा मानना, विश्वास।
एतराज-संज्ञा पुं० (अ०) किसी बात को मानने से इनकार करना, विरोध। आपत्ति।

एतवार-संज्ञा पुं० सप्ताह का एक दिन, इतवार, रविवार।
एतादृश-वि० (सं०) ऐसा।
एरंड-संज्ञा पुं० रेंड़, रेंड़ी।
एला-संज्ञा स्त्री० (सं०) इलायची।
एवं-क्रि० वि० (सं०) ऐसा ही।
एवज-संज्ञा पुं० (अ०) बदला।
एवजी-संज्ञा स्त्री० वह व्यक्ति जो कुछ समय के लिए किसी के स्थान पर कार्य करे।
एहतियात-संज्ञा स्त्री० (अ०) ध्यान रखना, सावधानी।
एहसान-संज्ञा पुं० (अ०) उपकार कृतज्ञता।

ऐंचना-क्रि० सं० घसीटना, खींचना।
ऐंचातानी-संज्ञा स्त्री० अपनी-अपनी ओर किसी बात को या वस्तु को घसीटना, खिंचाव, आग्रह।
ऐंठ-संज्ञा स्त्री० अकड़। घमण्ड। मन में बुरा भाव होना, द्वेष।
ऐंठन-संज्ञा स्त्री० घुमाव। लपेट। खिचाव।
ऐंठना-क्रि० स० घुमाव देना, धोका देकर कुछ ठगना, घूमना, घमण्ड दिखाना। ऊंट पटांग बात करना, टर्राना।
ऐंड़-संज्ञा पुं० ऐंठ। पानी का भँवर। अभिमान। तनाव।

ऐंड़ना-क्रि० अ० ऐंठना। घमण्ड करना, इतराना। क्रि० स० अपने शरीर को तोड़ना, अंगड़ाना।
ऐंद्रजालिक-वि० (सं०) इन्द्रजाल या जादू करनेवाला, मायावी।
ऐक्य-संज्ञा पुं० (सं०) एक होने, या मेल में रहने का भाव, एकता।
ऐतरेय-संज्ञा पुं० (सं०) ऋग्वेद का एक ब्राह्मण।
ऐतिहासिक-वि० (सं०) जो इतिहास से सम्बन्धित हो।
ऐनक-संज्ञा स्त्री० आँख पर लगाये जानवाले शीशे, उपनेत्र, चश्मा।
ऐपन-संज्ञा पुं० हल्दी के साथ भीगे पिसे चावल मिला हुआ लेप, जिसका थापा देवताओं की पूजा करते समय लगाया जाता है।
ऐब-संज्ञा पुं० (अ०) बुराई, दोष, कलंक, बुरा अभ्यास।
ऐबी-वि० (अ०) बुराई या शैतानी करनेवाला।
ऐयार-संज्ञा पुं० (अ०) चालबाज, धूर्त। छली।
ऐयाश-वि० (अ०) आराम या ऐश से जीवन बितानेवाला, विलासी।
ऐरा-गैरा-वि० अपरिचित, तुच्छ अजनबी।
ऐरावत-संज्ञा पुं० बिजली से चमकता बादल। इन्द्र का पूर्व दिशा में रहने वाला सफेद हाथी।
ऐश-संज्ञा पुं० (अ०) आराम, भोग-विलास; —पसंद—वि० विलासी।

ऐश्वर्य-संज्ञा पुं० (सं०) खूब धन-सम्पत्ति या भोग-विलास के साधनों का होना। प्रभुत्व।

ऐहिक-वि० (सं०) इस लोक से सम्बन्ध रखनेवाला, दुनिया का, सांसारिक।

ओ

ओं-अव्य० वह शब्द जिससे किसी चीज को स्वीकार किया जाय। हां, अच्छा।

ओंकार-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर के लिए कहा जानेवाला शब्द।

ओक-संज्ञा पुं० घर, पक्षी, शूद्र, ठहरने का स्थान, आश्रय।

ओखली-संज्ञा स्त्री० लकड़ी या पत्थर का गड्ढे के रूप का बना हुआ, जिसमें अनाज कूटा जाता है।

ओघ-संज्ञा पुं० समूह, ढेर, इकट्ठा की गई वस्तुएँ। घनत्व।

ओछा-वि० ऊँची भावनाओंवाला न होना, छोटा, नीच।

ओछापन-संज्ञा पुं० नीच या छोटा होना, क्षुद्रता।

ओज-संज्ञा पुं० बल, तेज, प्रकाश।

ओझल-संज्ञा पुं० दृष्टि के सामने न होना, ओट में।

ओझा-संज्ञा पुं० भूत-प्रेतों का डर उतारनेवाला पुरुष।

ओट-संज्ञा स्त्री० सामने आ गयी कोई चीज जिससे दीख न पड़े, आड़।

ओढ़ना-क्रि० सं० शरीर को किसी वस्त्र से ढँकना।

ओढ़नी-संज्ञा स्त्री० स्त्रियों का शरीर ढँकने का एक वस्त्र।

ओत-प्रोत-वि० (सं०) एक दूसरे से खूब मिला हुआ।

ओदन-संज्ञा पुं० भात। पका हुआ चावल।

ओनामासी-संज्ञा स्त्री० शुरू करना।

ओप-संज्ञा स्त्री० चमक। शोभा। तेज। माँजा। कलई।

ओर-संज्ञा स्त्री० तरफ, दिशा। किसी दिशा की ओर संकेत के लिए प्रयुक्त।

ओला-संज्ञा पुं० जमे हुए पानी या बर्फ के टुकड़े जो बरसात में पानी के साथ-साथ गिरते हैं। पत्थर। वि० बहुत ठंडा, सफेद।

ओषधि-संज्ञा स्त्री० (सं०) पृथ्वी से उगी वह वनस्पति जो दवा के काम आया करती है, जड़ी-बूटी।

ओष्ठ-संज्ञा पुं० दन्तच्छद, ओंठ, होंठ।

ओस-संज्ञा स्त्री० हवा में मिली वह भाप जो जाडों में रात के समय पानी की बूँदें बनकर गिरती है, शबनम।

ओसारा-संज्ञा पुं० (ग्रा०) घर के बाहर का छप्पर के नीचे का स्थान, दालान। छप्पर।

ओह-अव्य० आश्चर्य, दुःख या लापरवाही सूचित करनेवाला

शब्द अरे ! हाय !
ओहदा-संज्ञा पुं० (अ०) वह स्थान जिस पर काम करना हो, पद।
ओहदेदार-संज्ञा पुं० (फा०) वह व्यक्ति जो पद को रखता हो, पदारूढ़ अधिकारी।
ओहो-अव्य० आश्चर्य और प्रसन्नता को सूचित करनेवाला शब्द, अरे अहो ! अहा !

औंघना, औंघाना-क्रि० अ० (ग्रा०) नींद से भरा होना, ऊंघना। झपकी लेना।
औंधा-वि० उलटा। जिसका मुंह नीचे की ओर हो।
औकात-संज्ञा पुं० समय। हैसियत, जमाना।
औघड़-संज्ञा पुं० बिना सोचे-विचारे काम करनेवाला, बेवकूफ, फूहड़, अनाड़ी, उलटा-पुलटा।
औचक-क्रि० वि० अचानक। एका-एक। धोखे से।
औज़ार-संज्ञा पुं० (अ०) बढ़ई, लोहार, राज आदि के काम करने के उपकरण, हथियार।
औटना-क्रि० स० किसी पतली चीज को आग पर चढ़ाकर गरम करके गाढ़ा करना, उबलना।
औढर-वि० जिस ओर मन चाहे उस ओर काम करनेवाला, घूमनेवाला, मनमौजी।
औत्सुक्य-संज्ञा पुं० उत्कण्ठा, उत्सुकता, किसी बात को जानने या करने की इच्छा।
औदार्य-संज्ञा पुं० (सं०) उदारता।
औद्धत्य-संज्ञा पुं० धृष्टता, उद्धत स्वभाव का होना, अक्खड़पन।
औद्योगिक-वि० (सं०) उद्योग या काम-काज से सम्बन्धित।
औरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) स्त्री।
औरस-संज्ञा पुं०(सं०)सर्वश्रेष्ठ पुत्र। विवाह की गयी स्त्री से उत्पन्न पुत्र।
औलाद-संज्ञा स्त्री० (अ०) संतान। बाल-बच्चे। बेटा-बेटी।
औला मौला-वि० (देश०) अपने मन की करनेवाला, मनमौजी।
औलिया-संज्ञा पुं० मुसलमान मत का पहुंचा हुआ फकीर।
औवल-वि० (अ०) पहला। सबसे बड़ा या प्रथम, प्रधान।
औषध-संज्ञा पुं० स्त्री० (सं०) दवा, जिससे बीमारियाँ दूर की जाती हैं।
औसत-संज्ञा पुं० (अ०) बीच का। बराबर का परता। मामूली।

क

कँगना-संज्ञा पुं० कंकण।

कँटिया-संज्ञा स्त्री० काँटेदार बना हुआ अँकुसियों का गुच्छा जिससे फँसाकर कुयें आदि में गिरी चीजें निकालते हैं। सिर में पहनने का एक आभूषण।

कँपना-क्रि० अ० हिलना, काँपना। भय या क्रोध में शरीर का हिलना।

कँपाना-क्रि० स० किसी को हिलाना। भय दिखलाना।

कंकड़-संज्ञा पुं० पत्थर या ईंट का छोटा टुकड़ा। चिकनी मिट्टी तथा चूने के मिश्रण से बना रोड़ा।

कंकण-संज्ञा पुं० कंगन।

कंकरीट-संज्ञा स्त्री० पत्थर या ईंट के बहुत महीन टुकड़े। चूने, कंकड़ तथा बालू से बना मसाला।

कंगन-संज्ञा पुं० हाथ में पहनने का एक आभूषण, कंकण। अकाली सिखों का हाथ में डालने का लोहे का छल्ला।

कंगला-वि० देखिए 'कंगाल'।

कंगाल-वि० निर्धन, जिसके पास धन न हो, दरिद्र।

कंचन-संज्ञा पुं० सोना।

कंचुक-संज्ञा पुं० (सं०) छाती पर पहना जानेवाला वस्त्र। चोली। अचकन। कवच।

कंचुकी-संज्ञा स्त्री० केंचुली। स्त्रियों की पहनने की चोली। संज्ञा पुं० रनिवास की देखभाल करनेवाला व्यक्ति। साँप।

कंज-संज्ञा पुं० ब्रह्मा, कमल, सिर के बाल, केश।

कंजड़-संज्ञा पुं० एक इधर-उधर घूमनेवाली जाति, जो रस्सी, सिरकी आदि बनाती है।

कंजूस-वि० धन को खर्च न करके बचा-बचाकर रखनेवाला। कृपण।

कंटक-संज्ञा पुं० (सं०) काँटा। काँटे के समान छोटा-मोटा शत्रु। रोमांच, घड़ियाल।

कंठ-संज्ञा पुं० गला, स्वर, गले के अन्दर की वे नलियाँ जिनसे भोजन अन्दर पहुँचता है।

कंठगत-वि० (सं०) गले में आया या अटका हुआ।

कंठमाला-संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसके कारण लगातार गले में फुंसियाँ निकलती हैं।

कंठस्थ-वि० (सं०) गले में स्थित। जबानी याद। रटा हुआ।

कंठा-संज्ञा पुं० फूलों का हार, गले का एक आभूषण, हँसुली, तोतों आदि के गले में होनेवाली रेखा।

कंठाग्र-वि० (सं०) जबानी याद। कण्ठस्थ।

कंठी-संज्ञा स्त्री० छोटे दाने की गले में पहनने की माला।

कंडा-संज्ञा पुं० जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर।

कंथा-संज्ञा स्त्री० (सं०) फटी गुदड़ी।

कंद-संज्ञा पुं० गाँठ, बिना रेशे की गूदेदार जड़, शकरकंद आदि। बादल। संज्ञा पुं० (फा०) जमायी हुई चीनी, मिश्री।
कंदन-संज्ञा पुं० (सं०) नाश।
कंदरा-संज्ञा स्त्री० गुफा, पहाड़ों में के अँधेरे स्थान, घाटी।
कंदर्प-संज्ञा पुं० कामदेव, प्रणय।
कंदील-संज्ञा स्त्री० तख्ती या मिट्टी की बनी लालटेन जिस पर अबरक या कागज लगा रहता है और जिसका मुँह ऊपर की ओर होता है।
कंदुक-संज्ञा पुं० गेंद, सुपारी, छोटा गोल तकिया।
कंधर-संज्ञा पुं० बादल। गरदन।
कंधा-संज्ञा पुं० शरीर का वह भाग जो गले और मोढ़े के बीच होता है, स्कंध।
कंप-संज्ञा पुं० (सं०) कँपकँपी।
कंपन-संज्ञा पुं० कंप। थरथराहट।
कंपायमान-वि० (सं०) हिलता हुआ।
कंपास-संज्ञा पुं० (अं०) एक छोटी डिबिया-सा यंत्र जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है।
कंपित-वि० (सं०) काँपता हुआ। क्रोध या भय में हिलता हुआ।
कंबल-संज्ञा पुं० (सं०) ऊन का बना मोटा कपड़ा जिसे जाड़े में लोग ओढ़ते हैं।
कंबु-कंबुक-संज्ञा पुं० गला। शंख।

कंस-संज्ञा पुं० बरतन, कटोरा, सुराही।
ककहरा-संज्ञा पुं० 'क' से 'ह' तक वर्णमाला।
कक्ष-संज्ञा पुं० बाहुमूल, कोख, बगल।
कक्षा-संज्ञा स्त्री० (सं०) ग्रहों के चलने का रास्ता। क्लास।
कगार-संज्ञा पु० नदी का किनारा।
कच-संज्ञा पुं० (सं०) सिर के बाल।
कचहरी-संज्ञा स्त्री० दरबार, कार्यालय, राज्य का वह स्थान जहां न्याय हो, न्यायालय।
कचाई-संज्ञा स्त्री० कच्चा होना। किसी काम में कुशल न होना।
कचायँध-संज्ञा स्त्री० किसी कच्ची चीज की महक।
कचूमर-संज्ञा पुं० कुचलकर बनाया जानेवाला अचार। कुचली हुई चीज।
कच्चा-वि० जो पका न हो। जो पूर्ण न हो। आँच पर न पकाया गया हो। जो कुशल न हो। शरीर से कमजोर।
कच्चा चिट्ठा-संज्ञा पुं० छिपी या गुप्त बात। किसी घटना का पूरा विवरण करना।
कच्चा हाथ-संज्ञा पुं० किसी काम के करने में कुशल न होना।
कच्ची रसोई-संज्ञा स्त्री० पानी में ही पकाया गया अन्न, जैसे दाल, चावल, रोटी आदि।
कच्छप-संज्ञा पुं० कूर्म, कछुआ।

विष्णु का कछुवे का अवतार, कच्छप अवतार।

कछार-संज्ञा पुं० नदी या समुद्र के किनारे की नीची भूमि।

कछुआ-संज्ञा पुं० एक बहुत कड़े खोलवाला पानी का जीव।

कछोटा, कछौटा-संज्ञा पुं० धोती पहनने में लाँग के पीछे की ओर खोंसे जाने का ढंग।

कज-संज्ञा पुं० (फा०) टेढ़ापन। बुराई, दोष।

कजरा-संज्ञा पुं० (ग्रा०) काजल जो तेल को जलाकर तैयार किया जाता है। वह जिसकी आँखें काली हों।

कजरारा-वि० कज्जलयुक्त। काजल लगी आँखोंवाला। काला, स्याह।

कजरौटा-संज्ञा पुं०काजल रखने की डंडी लगी हुई डिबिया।

कजली-संज्ञा स्त्री० कालिख। काली आँखोंवाली गाय। बरसात में गाया जानेवाला गीत।

कजलौटा-संज्ञा पुं० वह डिबिया जिसमें काजल रखा जाता है।

कजा-संज्ञा स्त्री० (अ०) मौत।

कजिया-संज्ञा पुं० (अ०) झगड़ा। बखेड़ा।

कज्जल-संज्ञा पु० काजल। सुरमा। कालिख। अञ्जन।

कटक-संज्ञा पुं० चक्र। सेना। राज-शिविर। समूह।

कटकट-संज्ञा स्त्री० दाँतों के बजने या कड़कड़ाने का शब्द। झगड़ा।

कटकटाना-क्रि० अ० दाँतों को लड़ाना, दाँत पीसना।

कटघरा-संज्ञा पुं० जंगला लगा हुआ काठ का घेरा। बड़ा पिंजड़ा।

कटनी-संज्ञा स्त्री० वह औजार जिससे काटने का काम लिया जाय।

कटरा-संज्ञा पुं० छोटा चौकोर बाजार। संज्ञा पुं० भैंस का नर बच्चा। छोटा चौकोर हाट।

कटहल-संज्ञा पुं० एक वृक्ष जिसमें हाथ भर लंबे काँटेदार मोटे फल लगते हैं, पनस।

कटाई-संज्ञा स्त्री० काटना। कटाने की मजदूरी।

कटाक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) तिरछी दृष्टि से देखना। व्यंग्य। आक्षेप।

कटार-संज्ञा स्त्री० छोटा-सा दोनों ओर धारवाला हथियार।

कटाव-संज्ञा पु० काटकर बनाया हुआ। काट-छाँट।

कटाह-संज्ञा पु० (सं०) बड़ी कढ़ाई, कड़ाही। कछुए की खोपड़ी।

कटिबंध-संज्ञा पुं० (सं०) कमर में लपेटने का वस्त्र।

कटिबद्ध-वि० (सं०) कमर बाँधकर तैयार।

कटिसूत्र-संज्ञा पुं० (सं०) कमर में पहनने का डोरा, करधनी।

कटीला-वि० काँटों से युक्त, काटनेवाला, तीक्ष्ण, नोकदार।

कटु-वि० (सं०) कड़ुआ, बुरा करनेवाला, अप्रिय, तीक्ष्ण।

कटुता-संज्ञा स्त्री० उग्रता, कड़ुआपन, वैमनस्य।

कटूक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) कड़वी उक्ति या बात। अप्रिय वार्ता।

कट्टर-वि० हठी, अन्धविश्वासी।

कट्टा-वि० मजबूत, हट्टा-कट्टा।

कठबाप-संज्ञा पुं० सौतेला पिता।

कठमस्त-वि० मोटा-ताजा।

कठिन-वि० (सं०) कड़ा, मुश्किल। कठोर।

कठिनता-कठिनाई-संज्ञा स्त्री० कड़ापन, मुश्किल। कठोरता।

कठोर-वि० (सं०) कड़ा। कड़े हृदय का, निष्ठुर। निर्दय।

कठोरता-संज्ञा स्त्री० कड़ापन।

कठौता-संज्ञा पुं० काठ का बनाया हुआ बड़ा पात्र, कठरा।

कड़क-संज्ञा स्त्री० कुछ भारी चीजों के टकराने का या बादल के गरजने का शब्द, कठोर शब्द, बिजली।

कड़कड़ाना-क्रि० अ० भारी चीजों का टकराना, कड़कड़ ध्वनि होना। क्रि० स० कड़कड़ करते हुए तोड़ना, भंग करना, चिल्लाना।

कड़कड़ाहट-संज्ञा स्त्री० कर्कश शब्द, कठोर शब्द, गरज।

कड़कना-क्रि० अ० कड़कड़ की या चिटकने की ध्वनि होना। डाटना। फटना, टूटना-फूटना, चिल्लाना।

कड़खा-संज्ञा पुं० लड़ाई के समय गाया जानेवाला गीत।

कड़खैत-संज्ञा पुं० लड़ाई का गीत कड़खा गानेवाला, भाट या चारण।

कड़ा-संज्ञा पुं० हाथ या पाव में पहिनने का कंगन या चूड़ा, छल्ला। वि० न दबनेवाला, कठिन, ठोस। सहनशील, सूखा हुआ, कठोर। दुष्कर, दुःसाध्य, प्रचण्ड, रूखा, उग्र, जो ढीला न हो, तीक्ष्ण, सबल दृढ़, सख्त।

कड़ाई-संज्ञा स्त्री० कड़ा होना, कठोरता, कड़ापन।

कड़ाका-संज्ञा पुं० किसी वस्तु के टूटने का शब्द।

कड़ी-संज्ञा स्त्री० किसी लम्बी जंजीर आदि का छोटा टुकड़ा। किसी वस्तु को लटकाने के लिए लगाया गया छल्ला। वि० स्त्री० सख्त, कठोर।

कड़ुआ-वि० कुछ चीजों का तेज स्वाद जो जीभ पर चरपराता है, जैसे मिर्च का। बुरा, अच्छा न लगनेवाला।

कढ़ना-क्रि० अ० ऊपर उठना, उभरना। निकलना। उदय होना। खिंचना।

कढ़ाई-संज्ञा स्त्री० आंच पर चढ़ाया जानेवाला लोहे का गहरा और गोल बरतन। सुई-तागे से कपड़े पर कोई कसीदा काढ़ना।

कढ़ाव-संज्ञा पुं० कपड़े पर बेल-बूटे काढ़ने का काम।

कण-संज्ञा पुं० किनका, बहुत छोटा टुकड़ा, कना, छोटे छोटे दाने।

कणाद-संज्ञा पुं० (सं०) एक मुनि जिन्होंने वैशेषिक शास्त्र लिखा है।
कणिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) बहुत छोटा टुकड़ा, कण, टुकड़ा।
कण्व-संज्ञा पुं० (सं०) एक कश्यप गोत्र के ऋषि जिन्होंने शकुन्तला को पाला था।
कतई-अव्य० (अ०) बिलकुल।
कतरना-क्रि० स० कैंची आदि से काटना, टुकड़े करना।
कतरनी-संज्ञा स्त्री० कैंची।
कतर-ब्योंत-संज्ञा स्त्री० काट-छांट।
कतरा-संज्ञा पुं० खण्ड, अंश, टुकड़ा।
कतराना-संज्ञा स्त्री० किसी व्यक्ति या वस्तु से बचकर किनारे से निकल जाना।
कतल-संज्ञा पुं० मार डालना, वध।
कतलाम-संज्ञा पुं० सामान्य को. सभी को मार डालना।
कतली-संज्ञा स्त्री० चौकोर कटी हुई मिठाई।
कताई-संज्ञा स्त्री० रुई से धागा बनाना। कताई की मजूरी।
कतार-संज्ञा स्त्री० (अ०) लाइन, पंक्ति, पाँत, क्रम।
कतिपय-वि० (सं०) कुछ थोड़े से। कितने ही। कई।
कत्थई-वि० खैर के रंग का।
कत्थक-संज्ञा पुं० एक गाने-नाचने-वाली जाति।
कत्था-संज्ञा पुं० खैर की लकड़ियों को जमाकर सुखाया हुआ काढ़ा जो पान में खाया जाता है।
कथंचित्-क्रि० वि० (सं०) शायद।
कथक-संज्ञा पुं० (सं०) कथा कहने-वाला। कत्थक जाति का।
कथक्कड़-संज्ञा पुं० बहुत अधिक कथा-कहानी कहनेवाला।
कथन-संज्ञा पुं० (सं०) कही हुई बात। बात कहना। कथा, वाक्य।
कथनी-संज्ञा स्त्री० (ग्रा०) बात। बकवाद।
कथनीय-वि० (सं०) कहने लायक, वर्णनीय, निन्दनीय, खराब।
कथानक-संज्ञा पुं० गल्प, कहानी।
कथामुख-संज्ञा पुं० कथा-ग्रन्थ आदि की शुरुआत। प्रस्तावना
कथावस्तु-संज्ञा स्त्री० (सं०) उपन्यास या कहानी का प्लाट।
कथोपकथन-संज्ञा पुं० विविध बात बातचीत। वाद-विवाद।
कदंब-एक वृक्ष जिसमें गोल पीले फूल निकलते हैं। समूह, ढेर।
कद-संज्ञा पुं० मनुष्यों की ऊँचाई।
कदन-संज्ञा पुं० (सं०) कुचलन। वध। संग्राम। पाप।
कदन्न-संज्ञा पुं० (सं०) बुरा भोजन। मोटा अनाज, कोदो आदि।
कदम-संज्ञा पुं० (अ०) पैर। चलनेमें एक पैर से दूसरे पैर के बीच का फासला।
कदर-संज्ञा स्त्री० (अ०) आदर-सम्मान या प्रतिष्ठा।
कदरदान-वि० (फा०) गुण को समझ सकनेवाला, या आदर करनेवाला। गुणग्राहक।

कदरदानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) गुणग्राहकता।
कदराई-संज्ञा स्त्री० डर, कायरता।
कदर्य-वि० (सं०) कंजूस, रुपया खर्च न करके जमा करनेवाला।
कदली-संज्ञा स्त्री० रंभाफल, केला एक पेड़ जिसकी लकड़ी जहाज बनाने के काम आती है।
कदा-क्रि० वि० (सं०) कब, किस समय।
कदाकार-वि० (सं०) बुरे आकार का, कुरूप।
कदाचार-संज्ञा पुं० (सं०) बुरा व्यवहार। बदचलनी।
कदाचित्-क्रि० वि० कभी। शायद।
कदापि-क्रि० वि० (सं०) कभी। समय-समय पर।
कदीम-वि० (अ०) बहुत पुराना।
कद्दावर-वि० (फा०) बड़े डील-डौलवाला।
कन-संज्ञा पुं० कण, छोटा टुकड़ा।
कनक-संज्ञा पुं० सुवर्ण। सोना। धतूरा। पलाश। खजूर।
कनककशिपु-संज्ञा पुं० एक दैत्य। हिरण्यकश्यप।
कनकटा-वि० जिसका कान कटा हो, बूचा, कान काटनेवाला।
कनकफल-संज्ञा पुं० (सं०) धतूरे का फल। जायफल।
कनकाचल-संज्ञा पुं० (सं०) सोने का पहाड़, सुमेरु पर्वत।
कनकौवा-संज्ञा पुं० कागज की बड़ी पतंग। बड़ी गुड्डी।
कनखजूरा-संज्ञा पुं० एक छोटा सा भूरे या लाल रंग का बहुत से पैरों-वाला जहरीला कीड़ा।
कनखियाना-क्रि० स० तिरछी दृष्टि से देखना, कटाक्ष, या आँख से इशारा करना।
कनखी-संज्ञा स्त्री० आँख के कोने से देखना।
कनछेदन-संज्ञा पुं० हिन्दुओं में कान छेदे जाने का संस्कार।
कनपटी-संज्ञा स्त्री० कान और आँख के बीच का स्थान।
कनरसिया-संज्ञा पुं० गाना-बजाना सुनने का रसिक।
कनसलाई-संज्ञा स्त्री० कनखजूरे की तरह का एक कीड़ा।
कनागत-संज्ञा पुं० पितृपक्ष। मरने के बाद का संस्कार, श्राद्ध।
कनियाँ-संज्ञा स्त्री० गोद।
कनिष्ठ-वि० (सं०) सब से छोटा।
कनिष्ठा-वि० (सं०) स्त्री० सब से छोटी। कई पत्नियों में सब से छोटी पत्नी। छोटी उँगली।
कनी-संज्ञा स्त्री० सब से छोटा टुकड़ा। किरच। छोटा सा टुकड़ा।
कनेरिया-वि० कनेर के फूल के रंग का। कुछ नीलापन लिए।
कनौजिया-वि० कन्नौज का रहने-वाला।
कनौड़ा-वि० जिसका कोई अंग टूटा हो अपंग, कृतघ्न (मनुष्य)।
कन्यका, कन्या-संज्ञा स्त्री० कुमारी

बिना ब्याही लड़की, पुत्री।
कन्याकुमारी-संज्ञा स्त्री० भारत के बिलकुल दक्षिण में एक अन्तरीप, रासकुमारी।
कन्यादान-संज्ञा पुं० (सं०) विवाह के समय कन्या देने की रीति।
कन्याराशि-वि० चन्द्रमा के कन्या राशि में होने के समय जन्म लेनेवाला। बेकार, क्षुद्र, नपुंसक।
कन्हाई, कन्हैया-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण। प्यारा सुन्दर लड़का।
कपड़छन, कपड़छान-किसी महीन पिसी वस्तु को कपड़े से छानना।
कपड़ा-संज्ञा पुं० रुई, रेशम, ऊन आदि से बना हुआ वस्त्र जिससे शरीर ढँका जाय।
कपर्दिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) कौड़ी।
कपाल-संज्ञा पुं० माथा, सिर के ऊपर का भाग, खोपड़ी, मस्तक। खप्पर।
कपालक्रिया-संज्ञा स्त्री० (सं०) जलते शव की खोपड़ी बाँस आदि से फोड़ने का कार्य।
कपाली-संज्ञा पुं० शिव। भैरव। एक जाति, कपरिया।
कपास-संज्ञा स्त्री० एक पौदा जिसके फूल से रुई निकलती है।
कपि-संज्ञा पुं० (सं०) बंदर। सूर्य। हाथी। भूरे रंग का धूप।
कपिकेतु, कपिध्वज-संज्ञा पुं० (सं०) अर्जुन, जिसके झण्डे पर हनुमान् की मूर्ति बनी थी।
कपिला-... (सं०) ... मटमैला।
सफेद। संज्ञा पुं० सांख्य शास्त्र के आदि प्रवर्त्तक एक मुनि।
कपिलवस्तु-संज्ञा पुं० (सं०) जहाँ गौतम बुद्ध पैदा हुए थे।
कपीश-संज्ञा पुं० (सं०) बन्दरों का राजा, हनुमान् सुग्रीव, विष्णु।
कपूत-संज्ञा पुं० बुरी चालचलन का पुत्र।
कपूर-संज्ञा पुं० एक सफेद सुगंधित पदार्थ।
कपूरकचरी-संज्ञा स्त्री० दवा के काम आनेवाली एक सुगंधित जड़।
कपोत-संज्ञा पुं० चिड़िया। कबूतर। परेवा। पक्षी।
कपोतव्रत-संज्ञा पुं० (सं०) चुपचाप किसी के अत्याचारों को सहना।
कपोती-संज्ञा स्त्री० (सं०) कबूतरी, पेंडुकी। वि० (सं०) कपोत के रंग का, धुंधला, भूरे रंग का।
कपोल-संज्ञा पुं० गण्डस्थल, गाल।
कपोलकल्पना-संज्ञा स्त्री० मनगढ़ंत, मन की झूठमूठ गढ़ ली गयी बात। गप्प।
कपोल-कल्पित-वि० (सं०) कल्पना द्वारा झूठ-मूठ बनायी हुई।
कफ-संज्ञा पुं० (सं०) खाँसने के समय मुँह या नाक से निकलनेवाला गाढ़ा लसदार पदार्थ। बलगम।
कफन-संज्ञा पुं० (अ०) मुर्दे को लपेटने के लिए कपड़ा।
कफनी-संज्ञा स्त्री० मुर्दे के गले

में डाला जानेवाला कपड़ा। बिना सिला हुआ वस्त्र जिसमें गला डालने के लिए एक छिद्र होता है।

कफस-संज्ञा पुं० (अ०) कैद। पिंजरा।

कबड्डी-संज्ञा स्त्री० बालकों का दो दल बनाकर खेला जानेवाला एक भारतीय खेल।

कबाड़िया-कबाड़ी-संज्ञा पुं० कबाड़ या टूटी-फूटी पुरानी चीजें बेचनेवाला आदमी। झगड़ालू।

कबाबी-वि० कबाब बेचने वाला या मांस खानेवाला।

कबीर-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध संत जो कवि थे।

कबीरपंथी-वि० कबीर के मत को माननेवाला।

कबीला-संज्ञा स्त्री० (अ०) पत्नी।

कबूतर-संज्ञा पुं० एक सफेद या भूरे रंग का पक्षी।

कबूल-संज्ञा पुं० (अ०) स्वीकार, मानना, स्वीकृति।

कब्ज-संज्ञा पुं० (अ०) साफ दस्त न होना। पकड़।

कब्जियत-संज्ञा स्त्री० (अ०) साफ दस्त न होना।

कब्र-संज्ञा स्त्री० (अ०) वह गड्ढा जिसमें मुसलमान और ईसाई लोग अपने मुर्दों को गाड़ते हैं।

कब्रिस्तान-संज्ञा पुं० (फा०) वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हैं।

कमंडल-संज्ञा पुं० देखिए 'कमंडलु'।

कमंडलु-संज्ञा पुं० (सं०) साधुओं का पानी का बरतन जो पीतल, मिट्टी, तुमड़ी या नारियल का होता है।

कमंध-संज्ञा पुं० (कवि०) पीपा। बिना सिर का धड़। फंदा।

कमखाब-संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकार का बेल-बूटों से युक्त-रेशमी कपड़ा।

कमठ-संज्ञा पुं० कछुआ।

कमनीय-वि० (सं०) कामना या इच्छा करने लायक, मनोहर।

कमनैत-संज्ञा पुं० कमान चलानेवाला।

कमबख्त-वि० (फा०) खराब भाग्यवाला, अभागा।

कमरबंद-संज्ञा पुं० (फा०) वह पतली लम्बी डोरी जिससे कमर पर पायजामे को बाँधते हैं, नारा।

कमल-संज्ञा पुं० पद्म, कई रंगों का पानी में होनेवाला सुन्दर और प्रसिद्ध फूल।

कमलगट्टा-संज्ञा पुं० कमल के अन्दर का कड़ा भाग, कमल का बीज।

कमलनयन-वि० (सं०) कमल की पंखुड़ियों की भाँति सुन्दर और बड़ी आँखोंवाला।

कमलनाभ-संज्ञा पुं० (सं०) जिनकी नाभि से कमल पैदा हुआ हो, विष्णु।

कमलनाल-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह हरी डण्डी जिस पर कमल का फूल रहता है, मृणाल।

कमलयोनि-संज्ञा पुं० (सं०) ब्रह्मा

कमला-संज्ञा स्त्री० (सं०) लक्ष्मी

कमलालया-संज्ञा स्त्री० (सं०) लक्ष्मी।
कमलासन-संज्ञा पुं० (सं०) कमल पर स्थित, ब्रह्मा। योग का एक प्रकार का आसन। पद्मासन।
कमलिनी-संज्ञा स्त्री० कोई। छोटी जाति का कमल।
कमसिन-वि० (फा०) कम सिन या उम्र का।
कमाई-संज्ञा स्त्री० पैदा किया हुआ या कमाया हुआ धन। व्यवसाय, उद्यम, काम-धंधा।
कमाऊ-वि० वह व्यक्ति जो धनोपार्जन या पैदा करे।
कमान-संज्ञा स्त्री० (फा०) धनुष, जिससे तीर चलाया जाता है।
कमाना-क्रि० स० धन पैदा करना। उपार्जन करना।
कमानिया-संज्ञा पुं० धनुष चलानेवाला। वि० कमान के आकार का, अर्ध-चंद्राकार।
कमाल-संज्ञा पुं० कबीर के पुत्र का नाम, परिपूर्णता, आश्चर्य की बात। निपुणता, कुशलता।
कमीना-वि० (फा०) छोटा, नीच।
कमीनापन-संज्ञा पुं० नीचता, छोटापन, दुष्टता।
कयाम-संज्ञा पुं० (अ०) ठहरने या रहने का स्थान। निश्चय।
कयामत-संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसलमानों के अनुसार सृष्टि का अन्तिम दिन जब सम्पूर्ण मुर्दों का न्याय होगा। प्रलय।
कयास-संज्ञा पुं० (अ०) अन्दाज,

अनुमान।
कर-संज्ञा पुं० (सं०) हाथ। हाथी की सूँड। राज्य को दिया जानेवाला टैक्स। महसूल।
करकट-संज्ञा पुं० साफ करने के बाद निकली हुई गन्दगी।
करण-संज्ञा पुं० (सं०) व्याकरण में कारक का एक भेद जिसका चिह्न 'से' है। औजार।
करणीय-वि० (सं०) करने योग्य। कर्तव्य।
करतब-संज्ञा पुं० काम। साधारण से भिन्न काम, चालाकी। जादू।
करतल-संज्ञा पुं० (सं०) हाथ का तल, हथेली।
करतार-संज्ञा पुं० सब कुछ करनेवाला, ईश्वर, विधाता, करताल।
करताल-संज्ञा पुं० (सं०) हाथ से दी हुई ताल, ताली।
करतूत-संज्ञा स्त्री० काम, कुकर्म।
करधनी-संज्ञा स्त्री० कमर में पहना जानेवाला सूत।
करनफूल-संज्ञा पुं० स्त्रियों का कान का एक गहना।
करनबेध-संज्ञा पुं० बच्चों का कान भेदने का एक संस्कार।
करनी-संज्ञा स्त्री० कर्म, करतूत। शव के जलाने का संस्कार।
करपीड़न-संज्ञा पुं० (सं०) विवाह।
करभोरु-संज्ञा पुं० (सं०) वह जाँघ जो हाथी की सूँड की तरह हो। मोटी जाँघवाली स्त्री।
करम-संज्ञा पुं० [illegible]

करवट-संज्ञा स्त्री० शरीर के किनारे या हाथ के सहारे लेटना।
करवाल-संज्ञा पुं० तलवार।
करश्मा-संज्ञा पुं० (फा०) कुछ आश्चर्य पैदा करनेवाला काम, चमत्कार।
करामात-संज्ञा स्त्री० साधारण से अधिक काम। आश्चर्य पैदा करनेवाला काम, चमत्कार।
करामाती-वि० करामात या अनोखा काम दिखलानेवाला।
करार-संज्ञा पुं० (अ०) आराम, चैन, इकरार, प्रतिज्ञा।
कराहना-क्रि०अ० कष्ट और दुःख का द्योतक शब्द निकालना, जैसे आह! कांखना, हाय-हाय करना।
करि-संज्ञा पुं० हाथी।
करिणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) हथिनी।
करिवदन-संज्ञा पुं० (सं०) हाथी के-से मुखवाले, गणेश।
करी-संज्ञा पुं० हाथी। संज्ञा स्त्री० छत पाटने की कड़ी, धरन, कली।
करीम-वि० (अ०) दया करनेवाला। सज्ञा पुं० ईश्वर।
करील-संज्ञा पुं० विना पत्तियोंवाली कांटेदार झाड़ी।
करुण, करुणा-संज्ञा पुं० (सं०) काव्य का एक रस। दूसरे के दुःख से प्रभावित होकर अपने मन में उठनेवाला भाव।
करुणा दृष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) करुणा से भरकर देखना।
करुणानिधान, करुणानिधि-वि० (सं०) बड़ा दयालु।
करुणामय-वि० (सं०) बहुत अधिक करुणा या दया करनेवाला।
करेणु-संज्ञा पुं० गज, हाथी।
करोड़पति-वि० करोड़ों रुपयों का मालिक, धनी।
करौंदा-संज्ञा पुं० एक पौधा जिसके छोटे खट्टे फल होते हैं।
करौली-संज्ञा स्त्री० नोकदार भोंकने की छुरी।
कर्क-संज्ञा पुं० (सं०) एक पानी का जन्तु, केकड़ा। अग्नि। सूर्य की एक राशि।
कर्कट-संज्ञा पुं० (सं०) केकड़ा। साफ करने के बाद बची गन्दगी।
कर्कश-संज्ञा पुं० (सं०) ईख। वि० कड़ा। कड़े हृदय का, क्रूर।
कर्कशता-संज्ञा स्त्री० (सं०) कड़ापन। क्रूरता। कड़े हृदय का होना।
कर्कशा-वि० स्त्री० (सं०) झगड़ा करनेवाली स्त्री ; वि० लड़ाकी।
कर्ज, कर्जा-संज्ञा पुं० (अ०) कुछ समय के लिए कुछ दर पर मांगा हुआ धन।
कर्जदार-वि० (फा०) जिसने कर्ज लिया हो।
कर्ण-संज्ञा पुं० श्रवणेन्द्रिय, कान, समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा।
कर्णकटु-वि० (सं०) कान को कटु या बुरा लगनेवाला शब्द।
कर्णकुहर-संज्ञा पुं० (सं०) कान का छेद।

कर्णधार-संज्ञा पुं० (सं०) पतवार, नाविक, मल्लाह।
कर्त्तनी-संज्ञा स्त्री० कतरनी, कैंची।
कर्त्तरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) कैंची।
कर्त्तव्य-वि० (सं०) वह काम जो करने योग्य हो, या करने योग्य कार्य, धर्म, उचित काम।
कर्तव्यमूढ़-वि० (सं०) काम को न समझनेवाला। अपना कर्तव्य न जाननेवाला।
कर्त्ता-संज्ञा पुं० (सं०) काम करनेवाला। बनानेवाला। ईश्वर।
कर्त्तार-संज्ञा पुं० विधाता, करनेवाला, ईश्वर।
कर्तृक-वि० (सं०) किया हुआ, करनेवाला, प्रतिनिधि।
कर्तृवाचक-वि० (सं०) व्याकरण में कर्त्ता का ज्ञान करानेवाला।
कर्तृवाच्यक्रिया-संज्ञा स्त्री० (सं०) ऐसी क्रिया जिससे खास रूप से काम करनेवाले का बोध हो।
कर्दम-संज्ञा पुं० मास। कीचड़।
कर्पर-संज्ञा पुं० कपाल, खोपड़ी,
कर्बुर-संज्ञा पुं० स्वर्ण, सोना। धतूरा। पाप। वि० रंग-बिरंगा।
कर्म-संज्ञा पुं० कार्य, क्रिया। व्याकरण में वह शब्द जिसके वाच्य पर कर्त्ता की क्रिया का फल गिरे। मृतक का संस्कार करना।
कर्मकांड-संज्ञा पुं० (सं०) धर्म से सम्बन्ध रखनेवाला कर्म, यज्ञादि।
कर्मकांडी-संज्ञा पुं० ब्राह्मण।
कर्मक्षेत्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह स्थान जहाँ कर्म किया जाय, संसार।
कर्मचारी-संज्ञा पुं० कार्य करनेवाला।
कर्मठ-वि० (सं०) काम करने में निपुण। कर्मनिष्ठ। संज्ञा पुं० नियम-पूर्वक नित्य कर्म संध्या, यज्ञ आदि करनेवाला।
कर्मण-क्रि० वि० काम से।
कर्मण्य-वि० (सं०) खूब काम करनेवाला। उद्यमी।
कर्मण्यता-संज्ञा स्त्री० (सं०) खूब काम कर सकना, कार्य-कुशलता।
कर्मधारय समास-संज्ञा पुं० (सं०) व्याकरण में वह समास जिसमें विशेषण और विशेष्य का समान अधिकरण होता है।
कर्मनाशा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बिहार की एक प्रसिद्ध नदी।
कर्मनिष्ठ-वि० (सं०) अपने नित्य के धार्मिक कृत्यों का करनेवाला।
कर्म-बंधन— पुं० जन्म-मरण।
कर्मभोग-संज्ञा पुं० (सं०) किये हुए काम का नतीजा या फल।
कर्मयोग-संज्ञा पुं० (सं०) वह कार्य जिससे चित्त शुद्ध हो।
कर्मरेख-संज्ञा स्त्री० कर्म या भाग्य की रेखा। भाग्य या तकदीर।
कर्मवाच्यक्रिया-संज्ञा स्त्री० व्याकरण में वह कर्म क्रिया जिसमें कर्म स्वयं कर्त्ता के रूप में प्रयुक्त हो।
कर्मविपाक-संज्ञा पुं० (सं०) पुराने या पूर्व जन्म में किये गये कर्मों

का भला-बुरा फल।
कर्मशूर-संज्ञा पुं० कार्यदक्ष।
कर्महीन-वि० (सं०) जो शुभ कार्य न कर सके।
कर्मिष्ठ--वि० (सं०) काम करने-वाला।
कर्मी-वि०कर्मनिष्ठ, कामकाजी।
कर्मेन्द्रिय-संज्ञा स्त्री० (सं०) शरीर के वे अवयव जिनसे कोई कार्य किया जाता है। उपस्थ।
कर्षक-संज्ञा पुं० (सं०) खींचने-वाला। हल जोतनेवाला।
कर्षण-संज्ञा पुं० (सं०) खींचना। खुरचकर लकीर बनाना। हल जोतना। कूँड़।
कलंक-संज्ञा पुं० (सं०) कालिया। धब्बा। लांछन, दोष।
कलंकित-वि० (सं०) धब्बा लगा हुआ। दोष-युक्त लांछित।
कलंदर-संज्ञा पुं० संसार से विरक्त मुसलमान साधु। रीछ बन्दर आदि नचानेवाला, मदारी।
कल-संज्ञा पुं० (सं०) सुन्दर स्वर या ध्वनि। वह दिन जो आज के बाद आवेगा, वीर्य, साल वृक्ष।
कलई-संज्ञा स्त्री० (अ०) राँगा। बरतनों को चमकाने के लिए;
कलकंठ-संज्ञा पुं० कोकिल, सुन्दर ध्वनि निकालनेवाले गलेवाला। कोयल। परेवा। हंस।
कलक-संज्ञा पुं० परेशानी। बेचैनी।
कलकल--संज्ञा पुं० कोलाहल, झरने आदि के गिरने का शब्द।
कलत्र-संज्ञा पुं० (सं०) पत्नी।
कलदार-वि० जिसमें कल या मशीन लगी हो।
कलधौत-संज्ञा पुं० (सं०) सोना-चाँदी। सुन्दर ध्वनि।
कलपना-क्रि० अ० विलाप करना। दुःखी होना।
कलपाना-क्रि० स० किसी को दुःखी करना। जी दुखाना। रुलाना।
कलबल-संज्ञा पुं० चाल, तरकीब।
कलम कसाई-संज्ञा पुं० (अ०) अपने लेख द्वारा दूसरे का नुकसान करनेवाला।
कलमदान--संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकार का डब्बा जिसमें कलम, दावात आदि रखी जाती हैं।
कलमा-संज्ञा पु० (अ०) बात। मुसलमान धर्म के धार्मिक मूल-मंत्र।
कलमुहाँ-वि० काले मुँहवाला। कलंकित। खराब भाग्यवाला।
कलल--संज्ञा पुं० गर्भ में लिपटी हुई झिल्ली, जरायु।
कलवार--संज्ञा पुं० शराब बनाने और बेचनेवाली एक जाति।
कलश-संज्ञा पुं० गगरा, धातु का बना घड़ा। मंदिरों के ऊपर के धातु के शिखर।
कलसा-संज्ञा पुं० धातु का बना पानी भरने का गगरा, बरतन।
कलहांतरिता-संज्ञा स्त्री० (सं०) पहले पति या नायक का अपमान

करके बाद में पछतानेवाली स्त्री।
कला-संज्ञा स्त्री० अंश, हिस्सा, कपट, चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग। किसी काम को अच्छी तरह कर सकने की योग्यता।
कलाकौशल-संज्ञा पुं० (सं०) कला की कुशलता। कारीगरी। शिल्प।
कलाधर-संज्ञा पुं० चन्द्र, चन्द्रमा। चन्द्रमा को रखनेवाले, शिव।
कलानिधि-संज्ञा पुं० (सं०) चन्द्रमा।
कलाप-संज्ञा पुं० (सं०) झुण्ड। चन्द्रमा। गौ, व्यापार, बाण।
कलापी-संज्ञा पुं० मोर। कोयल।
कलाबाज-वि० कलाबाजी करनेवाला, नट-क्रिया करनेवाला।
कलाम-संज्ञा पुं० (अ०) कहा हुआ वाक्य। कथन। वादा।
कलावंत-संज्ञा पुं० संगीत को अच्छी तरह जाननेवाला। कलाबाजी करनेवाला, नट।
कलावान-वि० (सं०) कला जाननेवाला, नट, चन्द्रमा, गुणी।
कलिंद-संज्ञा पुं० सूर्य, बहेड़े का पेड़।
कलिंदजा-संज्ञा स्त्री० कलिन्द से पैदा, यमुना नदी।
कलिंदी-संज्ञा स्त्री० (देश०) देखिए 'कालिन्दी'।
कलि-संज्ञा पुं० (सं०) चार युगों में चौथा युग, कलियुग। झगड़ा।
कलिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) बिना खिला फूल, कली। छन्द विशेष।
कलिकाल-संज्ञा पु० (सं०) कलियुग।
कलित-वि० (सं०) सजाया हुआ। सुन्दर। मधुर।
कलिमल-संज्ञा पुं० (सं०) पाप।
कलिया-संज्ञा पुं० (अ०) भूनकर रसेदार पकाया मांस।
कलियुग-संज्ञा पुं० (सं०) चार युगों में से चौथा वर्तमान युग।
कलियुगी-वि० (सं०) कलियुग में रहनेवाला, पापी, दुराचारी।
कलिवर्ज्य-वि० (सं०) वह काम जिसे कलियुग में करने की आज्ञा न हो, जैसे अश्वमेध।
कली-संज्ञा स्त्री० बिना खिला फूल, कलिका। हुक्के के नीचे का भाग।
कलुष-संज्ञा पुं० (सं०) गंदगी। मलिनता। पाप।
कलुषित-वि० (सं०) मलिन, पापी, दूषित। काला, कषाय, कसैला।
कलेजा-संज्ञा पुं० छाती के भीतर बायीं ओर मनुष्यों का एक अंग जहाँ से रक्तसंचार होता है। हृदय। जिगर।
कलेवर-संज्ञा पुं० चोला, शरीर, देह।
कलेस-संज्ञा पुं० (प्रा०) देखिए 'क्लेश'।
कल्कि-संज्ञा पुं० (सं०) माना हुआ विष्णु का दसवाँ अवतार जो संभल (मुरादाबाद) में कुमारी कन्या के गर्भ से होगा।
कल्प-संज्ञा पुं० विधान, विधि, तरीका। रोग को दूर करने का

एक उपाय। अध्याय, विभाग। ब्रह्मा का एक दिन। ४३२०००-०००० वर्ष का समय।
कल्पतरु, कल्पद्रुम, कल्पवृक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) स्वर्ग का एक वृक्ष जिससे मांगने पर सम्पूर्ण इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं।
कल्पना-संज्ञा स्त्री० (सं०) रचना, बनावट, किसी अप्रत्यक्ष वस्तु का अनुमान करना। मान लेना।
कल्पित-वि० (सं०) कल्पना किया हुआ। माना हुआ, बनावटी।
कल्मष-संज्ञा पुं० मलिनता, मैल,
कल्याणी-वि० (सं०) भलाई या शुभ करनेवाली। संज्ञा स्त्री० (सं०) गाय।
कल्लोलिनी-संज्ञा स्त्री० नदी।
कवच-संज्ञा पुं० (सं०) लोहे की कड़ियों का युद्ध में शरीर पर पहना जानेवाला पहनावा।
कवरी-संज्ञा स्त्री० चोटी, जूड़ा।
कवर्ग-संज्ञा पुं० (सं०) क से ङ तक के शब्दों का समूह।
कवल-एक बार में मुंह में खाने के लिए रखी जानेवाली वस्तु, कौर। कुल्ली, कोण, किनारा, प्रतिज्ञा, एक कुजाति का घोड़ा।
कवलित-वि० (सं०) कौर बनाकर खाया हुआ। निगला हुआ।
कवायद-संज्ञा स्त्री० नियमावली. व्याकरण।
कविता-संज्ञा स्त्री० काव्य, पद्य में कहे गए मन के भाव, शायरी।
कवित्त-संज्ञा पुं० कविता। कविता का एक छंद।
कवित्व-संज्ञा पुं० (सं०) कविता रचने की शक्ति।
कविराज, कविराय-संज्ञा पुं० (सं०) बड़ा कवि। भाट। बंगाली वैद्यों को दी जानेवाली उपाधि।
कश-संज्ञा पुं० (सं०) चाबुक। संज्ञा पु० (फा०) खिंचाव। हुक्के चिलम आदि का एक दम।
कश-मकश-संज्ञा स्त्री० (फा०) खींच-तान। भीड़। सोच-विचार।
कशा-संज्ञा स्त्री० (सं०) रस्सी,
कशीदा-संज्ञा पुं० (फा०) कपड़े पर सुई-तागे से काढ़े गये बेल-बूटे।
कश्चित्-वि० कोई, एक न एक।
कश्यप-संज्ञा पुं० (सं०) एक ऋषि। कछुआ। सप्तर्षि मंडल का एक तारा। एक प्रकार का हिरन।
कषाय-वि० (सं०) कसैला। गेरुआ। खुशबूदार। जैनशास्त्र में क्रोध।
कष्ट-संज्ञा पुं० (सं०) तकलीफ।
कष्ट-कल्पना-संज्ञा स्त्री० (सं०) कठोर अनुमान जिसके स्थिर करने में बड़ा कष्ट होता है।
कष्टसाध्य-वि० (सं०) बड़ी मुश्किल से होनेवाला।
कसक-संज्ञा स्त्री० हलका दर्द, टीस। मन में का दबा द्वेष, पुराना बैर।
कसकना-क्रि०अ० पीड़ा होना, दुखना।
कसबा-संज्ञा पुं० (अ०) गाँवों से कुछ बड़ी बस्ती।

कसबी-संज्ञा स्त्री० वेश्या।
कसम-संज्ञा स्त्री० सौगंध, शपथ।
कसर-संज्ञा स्त्री० (अ०) कमी। बचा हुआ। न्यूनता।
कसरती-वि० व्यायाम करनेवाला।
कसाई-संज्ञा पुं० पशुओं को मारनेवाला, वधिक। वि० बिना दया का, निष्ठुर, निर्दय, क्रूर-हृदय।
कसाला-संज्ञा पुं० तकलीफ। बहुत मेहनत।
कसूर-संज्ञा पुं० (अ०) अपराध, गलती।
कसेरा-संज्ञा पुं० कांसे, फूल आदि के बरतन बनाने और बेचनेवाला।
कसौटी-संज्ञा स्त्री० एक काला पत्थर जिस पर रगड़कर सोने-चाँदी को जाँचते हैं। मानदण्ड।
कस्तूरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) हिरन की नाभि से निकलनेवाला एक सुगंधित द्रव्य।
कस्तूरीमृग-संज्ञा पुं० (सं०) वह मृग जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।
कहत-संज्ञा पुं० (अ०) अकाल, दुर्भिक्ष।
कहर-संज्ञा पुं० (अ०) आफत।
कहानी-संज्ञा स्त्री० कथा, किस्सा।
कहा-सुना-संज्ञा पुं० खराब व्यवहार, या भूल।
कहा-सुनी-संज्ञा स्त्री० कहा-कही। तकरार।
काइयां-वि० चालाक, धूर्त, वंचक।
कांच-संज्ञा स्त्री० धोती की लाँग। गुदा के भीतर का भाग।
कांटी-संज्ञा स्त्री० छोटा काँटा। काँटा लगा हुआ छोटा तराजू।
कांपना-क्रि० अ० हिलना, थरथराना। डर से कंपित होना।
कांय-कांय, कांव-कांव-संज्ञा पुं० कौवे की ध्वनि। बेकार का शोर।
कांक्षा-संज्ञा स्त्री० (सं०) इच्छा।
कांक्षी-वि० इच्छा करनेवाला।
कांचन-संज्ञा पुं० सोना, दीप्ति, धतूरा, चंपा, पद्मकेसर।
कांड-संज्ञा पुं० (सं०) दो गांठों के बीच का भाग, जैसा बाँस में होता है। एक प्रसंग को रखनेवाला ग्रंथ का एक भाग, प्रकरण। घटना। ग्रंथ का विभाग।
कांता-संज्ञा स्त्री० (सं०) पत्नी। प्रिया। सुंदरी स्त्री।
कांतार-संज्ञा पुं० (सं०) डरावनी जगह। घना जंगल।
कांति-संज्ञा स्त्री० (सं०) मुख का तेज, चमक, मुख-सौन्दर्य।
काई-संज्ञा स्त्री० जल में होनेवाली गहरे हरे रंग की एक प्रकार की मलीन घास।
काक-संज्ञा पुं० वायस। कौवा।
काकतालीय-वि० सं० संयोगवश या आकस्मिक होनेवाला।
काकदंत-संज्ञा पुं० (सं०) ऐसी बात जो हो न सके, असंभव।
काकपक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) कानों के बालों की रचना, जुल्फें।
काकली-संज्ञा स्त्री० (सं०) मधुर

ध्वनि। वह औजार जिससे सेंध लगायी जाय।
काका-संज्ञा पुं० पिता का भाई, चाचा। कौवा-ठोंठी, घुंघची।
काकी-संज्ञा स्त्री० पिता के भाई की पत्नी, चाची। संज्ञा स्त्री० मादा कौआ। वायसी।
काकु-संज्ञा पुं० (सं०) मन पर चोट करनेवाली गूढ़ बात। उल्लाप, व्यंग्य, ताना।
काग-संज्ञा पुं० कौआ।
कागजात-संज्ञा पुं० कागजपत्र।
काज-संज्ञा पुं० काम। व्यवसाय।
काजल-संज्ञा पुं० तेल के दीपक का धुआँ जमाकर बनायी जानेवाली कालिख जो आँखों में लगायी जाती है।
काजी-संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानों के धर्म के अनुसार न्यायाधीश, मौलवी।
काजू-संज्ञा पुं० एक मेवा।
काठी-संज्ञा स्त्री० घोड़े या ऊँट की पीठ पर कसने की जीन जिसके नीचे काठ लगा रहता है। शरीर की गठन। म्यान।
काढ़ना-क्रि० स० अन्दर से किसी वस्तु को बाहर निकालना। आवरण हटाकर वस्तु को दिखाना। लकड़ी, कपड़े आदि पर बेल-बूटे बनाना, पकाना, छानना।
काढ़ा-संज्ञा पुं० जड़ी-बूटियों को उबालकर छाना हुआ शरबत। जोशांदा।
कातर-वि० (सं०) व्याकुल। भयभीत। दुःखी।
कातिक-संज्ञा पुं० हिन्दी कार्तिक महीना जो क्वार के बाद आता है।
कातिल-वि० (अ०) किसी को मार डालनेवाला।
कादंबरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) कोयल। सरस्वती। शराब। बाण भट्ट की लिखी एक प्रसिद्ध गद्यकाव्य।
कादंबिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) बादलों की कतार। मेघमाला। घटा।
कानन-संज्ञा पुं० वन, जंगल, घर।
काना-वि० जिसकी एक आँख फूट गयी हो।
कानाफूसी-संज्ञा स्त्री० गुप्त बात, कान में धीरे से कही हुई बात।
कानि-संज्ञा स्त्री० लोकलज्जा या मर्यादा का ख्याल। लिहाज, संकोच।
कानून-संज्ञा पुं० वे नियम जिनके सहारे राज्य कार्य करता है, विधि।
कानूनदाँ-संज्ञा पुं० (फा०) कानून जाननेवाला।
कापालिक-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्रकार के शैव साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिए रहते हैं और मांस आदि खाते हैं।
कापुरुष-संज्ञा पुं० डरपोक, कायर।
काफिया-संज्ञा पुं० (अ०) कविता में पहली-दूसरी या दूसरी-चौथी पंक्तियों के मेल खानेवाले अन्तिम शब्द। तुक।

काफिर-वि० (अ०) मुसलमानों में उनके धर्म को न माननेवाला। ईश्वर को न माननेवाला। बुरा।

काफिला-संज्ञा पुं० (अ०) यात्रा करनेवालों का समूह।

काफूर-संज्ञा पुं० कपूर।

काबा-संज्ञा पुं० (अ०) अरब के मक्का शहर में मुसलमानों की प्रसिद्ध मसजिद या इमारत।

काबिल-वि० (अ०) लायक, योग्य। विद्वान्, पढ़ा-लिखा।

काबुली-वि० काबुल का रहनेवाला।

काम-संज्ञा पुं० सहवास की इच्छा। कामदेव। महादेव। संज्ञा पुं० वह जो किया जाय।

कामदेव-संज्ञा पुं० कन्दर्प, स्त्री-पुरुष के सम्भोग को उत्तेजित करनेवाला देवता।

कामधेनु-संज्ञा स्त्री०(सं०) पुराणों के अनुसार एक गाय जिससे इच्छा किया हुआ सभी कुछ प्राप्त हो जाता है। स्वर्ग की गाय।

कामना-संज्ञा स्त्री० (सं०) इच्छा, मनोरथ।

कामयाब-वि०(फा०) जो अपने काम में सफल हो गया हो। कृतकार्य।

कामयाबी-संज्ञा स्त्री० (फा०) काम में सफल होना, कृतकार्यता।

कामरिपु-संज्ञा पुं० (सं०) काम के शत्रु, महादेव, शिव।

कामसखा-संज्ञा पुं० कामदेव का मित्र, वसन्त ऋतु, आम का वृक्ष।

कामिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) सुन्दर स्त्री। कामवती स्त्री।

कामिल-वि०(अ०)पूरा। पूर्ण योग्य।

कामी-वि० कामना या वासना रखनेवाला, कामुक। अभिलाषी।

कामुक-वि० (सं०) कामी या इच्छुक, चाहनेवाला, विषयी।

कामोद्दीपक-वि० (सं०) वह जिससे मैथुन की इच्छा जगे।

काम्य-वि० (सं०) जिसकी इच्छा हो। कामना की सिद्धि के लिए किया जानेवाला कर्म।

काय-संज्ञा स्त्री० (सं०) शरीर, देह। समुदाय, झुण्ड।

कायम-वि० अपनी जगह पर रुका हुआ, स्थिर, स्थायी।

कायर-वि० तकलीफों से भागनेवाला। डरपोक।

कायरता-संज्ञा स्त्री० डरपोकपन। भीरुता।

कायापलट-संज्ञा स्त्री० बहुत बड़ा परिवर्तन होना। रूप या आकृति का बिलकुल बदल जाना।

कारक-वि० (सं०) करनेवाला, जैसे लाभकारक।

कारकुन-संज्ञा पुं० (फा०) इन्तजाम या काम करनेवाला।

कारगर-वि० (फा०) असर करनेवाला, उपयोगी।

कारण-संज्ञा पुं० उद्देश्य, वजह, वह चीज जिसके होने से कोई काम हो।

कारनिस-संज्ञा स्त्री० (अं०) दीवार का उभरा किनारा, कगर।
कारबार-संज्ञा पुं० (फा०) काम-काज। व्यापार, पेशा।
कारवाँ-संज्ञा पुं० (फा०) यात्रा करनेवालों का झुण्ड।
कारसाज-वि० (फा०) बिगड़े हुए, काम को ठीक कर लेनेवाला या काम को ठीक करने की तरकीब ढूंढ़ लेनेवाला।
कारा-संज्ञा स्त्री० जल।. बन्धन।
कारिंदा-संज्ञा पुं० (फा०) दूसरे की तरफ से किसी काम का प्रबन्ध करनेवाला।
कारिका-संज्ञा स्त्री०अभिनेत्री, नट की स्त्री, नटी।
कारी-संज्ञा पुं० करनेवाला। वि० हृदय पर प्रभाव डालनेवाला, घातक।
कारुणिक-वि० (सं०)करुणा करनेवाला, दयावान्।
कारुण्य-संज्ञा पुं० (सं०) करुणा का होना, दया, मेहरबानी।
कारूँ-संज्ञा पुं० (अ०) बहुत अधिक धन रखनेवाला पर किसी को दे न सकनेवाला।
कार्त्तिकेय-संज्ञा पुं०(सं०) कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होनेवाला।
कार्मुक-संज्ञा पुं० धन राशि।
कार्य-संज्ञा पुं० कर्म, काम।
कार्य-कारण-भाव-संज्ञा पुं० (सं०) किसी कारण के और परिणाम के होने का सम्बन्ध।
कार्रवाई-संज्ञा स्त्री० किया हुआ काम, करतूत। छिपी हुई चाल।
काल-संज्ञा पुं० (सं०) अकाल। समय। मृत्यु। शनि ग्रह। यम।
कालकूट-संज्ञा पुं० (सं०) एक बहुत भयंकर विष। काला बच्छ-नाग। एक पर्वत का नाम।
कालकोठरी-संज्ञा स्त्री० जेल की तंग कोठरी जिसमें कैदी अकेले रखे जाते हैं।
कालक्षेप-संज्ञा पुं० (सं०) दिन बिताना। समय नष्ट करना।
कालचक्र-संज्ञा पुं० (सं०) समय का फेरा। एक अस्त्र विशेष।
कालदंड-संज्ञा पुं० (सं०) यम देवता द्वारा दिया मृत्युदण्ड।
कालधर्म-संज्ञा पुं० मृत्यु, विनाश।
कालनिशा-संज्ञा स्त्री०(सं०) अँधेरी डर पैदा करनेवाली रात। दीवाली की रात।
कालपाश-संज्ञा पुं० (सं०) यमराज का बन्धन। समय का बन्धन।
कालरात्रि-संज्ञा स्त्री० (सं०)अँधेरी और भयंकर रात। प्रलय की रात। मृत्युसूचक की रात।
कालाग्नि-संज्ञा पुं० (सं०) प्रलय काल की अग्नि।
कालापानी-संज्ञा पुं० देश निकाले का दण्ड। मद्य।
कालिंदी-संज्ञा स्त्री० (सं०) कलिंद पर्वत से निकली हुई एक नदी, यमुना नदी।
कालिक-वि० (सं०) समय में

सम्बन्धी, सामयिक।
कालिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुर्गा, चण्डी। आँख की काली पुतली।
कालिख-संज्ञा स्त्री० तेल के जलने पर निकलनेवाला धुआँ, स्याही।
कालिय-संज्ञा पु० (सं०) एक साँप जिसे कृष्ण ने नाथा था।
काली-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुर्गा।
कालीन-वि० (सं०) काल या समय से सम्बन्ध रखनेवाला।
काल्पनिक-संज्ञा वि० (सं०) कल्पना किया हुआ, कल्पित, माना हुआ।
काव्य-संज्ञा पुं० (सं०) पद्य में लिखे हृदय के भाव, कविता।
काश्त, काश्तकारी-खेती। किसानी। जमीदार की भूमि पर खेती करने का लिया हुआ हक।
काश्मीरा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र।
काषाय-वि० (सं०) गेरुआ।
कास-संज्ञा पुं० कफ, खाँसी।
कासार-संज्ञा पुं० झील।
कासिद-संज्ञा पुं० (अ०) संदेश को एक जगह से दूसरी जगह ले जानेवाला, हरकारा।
काहिल-वि० (अ०) आलसी।
किंकर-संज्ञा पुं० नौकर, दास।
किंकर्त्तव्य-विमूढ़-वि० (सं०) यह निश्चय करने में असमर्थ कि क्या किया जाय, भौचक्का।
किंकिणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) कमर में पहनने का एक गहना, करधनी।
किंचित्-वि० (सं०) कुछ, थोड़ा।
किंजल्क-संज्ञा पुं० (सं०) कमल के अन्दर का केसर।
किंवदंती-संज्ञा स्त्री० (सं०) कही गयी खबर। अफ़वाह।
किंवा-अ० य० (सं०) यानी, अथवा।
किंशुक-संज्ञा पुं० पलास का वृक्ष।
किटकिटाना-क्रि० अ० गुस्से में दाँत पीसना।
कितव-संज्ञा पुं० (सं०) जुआरी।
किताब-संज्ञा स्त्री० (अ०) पुस्तक, पोथी, हिसाब की बही।
किताबी-वि० किताब से सम्बन्ध रखनेवाला।
किन्नरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) किन्नर की स्त्री। एक प्रकार का तम्बूरा।
किफ़ायत-संज्ञा स्त्री० (अ०) कम खर्च करना। मितव्यय।
किमाम-संज्ञा पुं० शहद के समान गाढ़ा किया हुआ शरबत। खमीर।
किरकिरा-वि० कंकड़दार। बुरा।
किरच-संज्ञा स्त्री० नोकदार छोटा टुकड़ा। एक प्रकार की नोकदार तलवार।
किरण, किरन-संज्ञा स्त्री० (सं०) किरन, झालर, ज्योति।
किरणमाली-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य।
किरात-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्राचीन समय की जंगली जाति।
किरासन-संज्ञा पुं० मिट्टी का तेल।
किरीट-संज्ञा पुं० (सं०) मुकुट।
किलक-संज्ञा स्त्री० खुश होकर

ध्वनि करना, किलकार।

किलकिला-संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि, प्रसन्नता की ध्वनि, किलकारी।

किलनी-संज्ञा स्त्री० पशुओं के शरीर से चिपट जानेवाला एक प्रकार का कीड़ा जो लोहू चूसता है।

किलवाना-क्रि० स० कील लगवाना। किसी विघ्न करनेवाली शक्ति को मंत्र आदि के द्वारा रोकना।

किशलय-संज्ञा पुं० (सं०) नया निकला हुआ पत्ता, कोंपल।

किशोर-संज्ञा पुं० (सं०) ग्यारह से पंद्रह वर्ष की अवस्था।

किसलय-संज्ञा पुं० देखिए 'किशलय'।

किस्त-संज्ञा स्त्री० (अ०) उधार लिये हुए धन को कई बार में बराबर-बराबर करके चुकाना।

किस्म-संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रकार। भेद। ढंग। तरह।

किस्मत-संज्ञा स्त्री० (अ०) भाग्य।

कीच-संज्ञा पुं० पानी मिली मिट्टी, कर्दम, कीचड़।

कीचड़-संज्ञा पुं० 'कीच'।

कीट-संज्ञा पुं० (सं०) रेंगने या उड़नेवाले छोटे-छोटे कीड़े।

कीमिया-संज्ञा स्त्री० (फा०) रसायन पदार्थों की क्रियाएं। रसायन।

कीर-संज्ञा पुं० मांस, तोता।

कीर्तन-संज्ञा पुं० वर्णन, कहना। गुण कहना। कृष्ण, राम आदि से संबद्ध संगीत और भजन।

कीर्त्ति-संज्ञा स्त्री० यश। बड़ाई।

कीर्तिमान्-वि० (सं०) यशस्वी।

कीर्त्तिस्तंभ-संज्ञा पुं० (सं०) किसी की स्मृति या यश के लिए बनाया स्तंभ आदि। कीर्त्ति या यश स्थापित करने का कार्य।

कीली-संज्ञा स्त्री० वह कील जिस पर कोई चक्र घूमता है।

कीश-संज्ञा पुं० वानर, बंदर।

कुँअर-संज्ञा पुं० पुत्र। राजकुमार।

कुँआरा-वि० जिसका विवाह न हुआ हो।

कुँवर-संज्ञा पुं० राजकुमार। पुत्र।

कुंकुम-संज्ञा पुं० (सं०) केसर।

कुंचन-संज्ञा पुं० (सं०) सिकुड़ना या फैले हुए का सिमटना।

कुंचित-वि० (सं०) घुँघराला, टेढ़ा। सिकुड़ा हुआ।

कुंज-संज्ञा पुं० (सं०) वृक्ष, लता आदि से ढँका हुआ स्थान।

कुंजगली-संज्ञा स्त्री० वृक्ष, लता आदि से ढँका हुआ रास्ता।

कुंजर-संज्ञा पुं० (सं०) हाथी।

कुंजविहारी-संज्ञा पुं० (सं०) कुंज में विहार करनेवाले, श्रीकृष्ण।

कुंजी-संज्ञा स्त्री० वह जिससे ताला खोला जाय, ताली।

कुंड-संज्ञा पुं० (सं०) चौड़े मुँह का गहरा बरतन। छोटा तालाब।

कुंडल-संज्ञा पुं० (सं०) कान में पहना जानेवाला एक गोल गहना। एक प्रकार का साँप।

कुंतल-संज्ञा पुं० (सं०) सिर के बाल। १०० किलोग्राम की तौल।

कुंती-संज्ञा स्त्री० (सं०) युधिष्ठिर अर्जुन और भीम की माता का नाम। वसुदेव की बहिन।
कुंद-संज्ञा पुं० (सं०) एक सफेद फूलों का छोटा पौदा। कमल।
कुंदन-संज्ञा पुं० शुद्ध सोना; -साज-१पुं० नगीना जड़नेवाला।
कुंदा-संज्ञा पुं० लकड़ी का मोटा लटठा। बन्दूक के पीछे का चौड़ा चपटा भाग।
कुंभ-संज्ञा पुं० (सं०) मिट्टी का घड़ा। कलश। ग्यारहवीं राशि।
कुंभज, कुंभजात-संज्ञा पुं० (सं०) घड़े से पैदा हुआ, अगस्त्य मुनि। वशिष्ठ। द्रोणाचार्य।
कुंभीपाक-संज्ञा पुं० (सं०) पुराणों में वर्णित एक नरक।
कुआर-संज्ञा पुं० भारतीय महीनों में आश्विन मास।
कुकर्म-संज्ञा पुं० (सं०) खराब काम।
कुकर्मी-वि० कुत्सित काम करनेवाला, पापी।
कुकुरखाँसी-संज्ञा स्त्री० बिना कफ वाली सूखी खाँसी।
कुकुरमुत्ता-संज्ञा पुं० एक प्रकार का सफेद छाते की भाँति का फूल जो बरसात में भूमि से उगता है।
कुक्ष-संज्ञा पुं० कोख। पेट।
कुक्षि-संज्ञा स्त्री० जठर,पेट, कोख।
कुख्यात-वि० (सं०) बुरे नाम या यशवाला, बदनाम।
कुच-संज्ञा पुं० (सं०) स्त्रियों की छाती, स्तन।
कुचाल-संज्ञा स्त्री० खराब चाल, बदमाशी, कुत्सित आचरण।
कुचाली-संज्ञा पुं० बुरी चाल चलनेवाला, दुष्ट, कुमार्गी।
कुचेष्टा-संज्ञा स्त्री० नुकसान पहुँचाने के लिए खराब चाल।
कुटनी-संज्ञा स्त्री० स्त्रियों को बहकाकर दूसरे पुरुषों से सम्भोग करवानेवाली स्त्री।
कुटाई-संज्ञा स्त्री० कूटने का काम। मारना।
कुटिल-वि० (सं०) टेढ़ा, कुंचित। बुरी नीयत का। कपटी
कुटिलता-संज्ञा स्त्री० तिरछापन। कपट।
कुटी-संज्ञा स्त्री० घास-फूस आदि से बनाया हुआ रहने का स्थान, झोंपड़ी, पर्णशाला, कुटनी।
कुटीर-संज्ञा पुं० देखिए 'कुटी'।
कुटुंब-संज्ञा पुं० परिवार।
कुटुंबी-संज्ञा पुं० परिवारवाला।
कुटेव-संज्ञा स्त्री० खराब आदत।
कुठाँव-संज्ञा स्त्री० बुरी जगह।
कुठार-संज्ञा पुं० फरसा, कुल्हाड़ी।
कुठौर-संज्ञा पुं० अनुचित अवसर।
कुडौल-वि० खराब डौल या शरीर का भद्दा।
कुढंग-संज्ञा पुं० बुरा ढंग या चाल, कुचाल। वि० बुरे ढंग का, बेढंगा, भद्दा, अनभिज्ञ, असभ्य।
कुढंगा-वि० खराब ढंग का, बेढंगा।
कुढ़न-संज्ञा स्त्री० मन में ही रहनेवाला क्रोध या दुःख, चिढ़।

कुढ़ाना-क्रि० स० गुस्सा दिलाना।

कुतर्क-संज्ञा पुं० बेकार तर्क, बेढंगी दलील। निन्दनीय तर्क।

कुतर्की-संज्ञा पुं० बेकार के तर्क या दलील देनेवाला। बकवादी।

कुतुब-संज्ञा पुं० (अ०) ध्रुव तारा।

कुतुबनुमा-संज्ञा पुं० (अ०) डिबिया जैसा छोटा यंत्र जिससे ध्रुवतारे की उत्तर दिशा ज्ञात होती है।

कुतूहल-संज्ञा पुं० (सं०) किसी बात को जानने की तीव्र इच्छा।

कुतूहली-वि० वह व्यक्ति जिसे वस्तुओं को देखने की बड़ी लालसा हो।

कुत्सा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बुराई। निन्दा। जुगुप्सा। अपवाद।

कुत्सित-वि० (सं०) बुरा या नीच व्यक्ति, गर्हित, अधम, नीच।

कुदरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) ईश्वर की शक्ति। प्रकृति। कारीगरी।

कुदरती-वि० (अ०) ईश्वर या प्रकृति के द्वारा बनाया हुआ, ईश्वरीय, प्राकृतिक।

कुदर्शन-वि० (सं०) देखने में बुरा।

कुदाल-संज्ञा स्त्री० भूमि खोदने का एक औजार।

कुदिन-संज्ञा पुं० (सं०) बुरे दिन।

कुधातु-संज्ञा स्त्री० (सं०) बुरी धातु। कुत्सित धातु। लोहा।

कुनकुना-वि० हलका गरम, गुनगुना।

कुनबा-संज्ञा पुं० कुटुम्ब, घराना।

कुनाम-संज्ञा पुं० (सं०) बदनामी।

[illegible]

कुपंथ-संज्ञा पुं० बुरा रास्ता।

कुपथ्य-संज्ञा पुं० स्वास्थ्य को हानि पहुँचानेवाला खान-पान।

कुपाठ-संज्ञा पुं० बुरी मंत्रणा या सलाह।

कुपात्र-वि० (सं०) दान देने के लिए अनुचित व्यक्ति।

कुपित-वि० नाराज, अप्रसन्न।

कुपुत्र-संज्ञा पुं० (सं०) नालायक पुत्र, कपूत।

कुफ्र-संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानी धर्म के विरुद्ध मत या विचार।

कुबड़ा-संज्ञा पुं० टेढ़ी या झुकी पीठवाला पुरुष।

कुबड़ी-संज्ञा स्त्री० टेढ़ी या झुकी पीठवाली स्त्री।

कुबानि-संज्ञा स्त्री० बुरी आदत।

कुबुद्धि-वि० (सं०) बुरी बुद्धि, मन्दबुद्धि, मूर्ख।

कुब्ज-वि० (सं०) टेढ़ी या झुकी पीठवाला।

कुमकुम, कुमकुमा-संज्ञा पुं० काँच के बने पोले गोले।

कुमार-संज्ञा पुं० (सं०) पाँच वर्ष की अवस्था का बालक। राजकुमार। वि० पुं० (सं०) जिसका विवाह न हुआ हो।

कुमारग-संज्ञा पुं० (ग्रा०) देखिए 'कुमार्ग'।

कुमारी-संज्ञा स्त्री० (सं०) बारह वर्ष तक की अवस्था की लड़की। वि० स्त्री० जिसका विवाह न हुआ हो।

कुमार्ग-संज्ञा पुं० (सं०) बुरा रास्ता।

कुमार्गी-वि० बुरे या कुपथ रास्ते पर चलनेवाला।
कुमुद-संज्ञा पुं० (सं०) लाल कमल।
कुमुदबंधु-संज्ञा पुं० (सं०) चन्द्रमा।
कुमुदिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक फूल। कुईं। कोईं। चाँदनी।
कुमोदिनी-संज्ञा स्त्री० देखिए 'कुमुदिनी'।
कुम्हलाना-क्रि० अ० पौदे का सूखना। तेजहीन होना।
कुम्हार-संज्ञा पुं० मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्भकार।
कुरंग-संज्ञा पुं० एक प्रकार का हिरन। बुरा रंग।
कुरबान-वि० (अ०) निछावर।
कुरबानी-संज्ञा स्त्री० बलिदान।
कुररी-संज्ञा स्त्री० (सं०) मादा टिटिहरी।
कुरान-संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानों की अरबी में लिखी धर्म-पुस्तक।
कुराह-संज्ञा स्त्री० बुरा रास्ता, कुमार्ग, बुरा मार्ग, बुरा आचरण।
कुरीति-संज्ञा स्त्री० कुप्रथा, कुचाल।
कुरुक्षेत्र-संज्ञा पुं० (सं०) दिल्ली के पास एक प्राचीन स्थान जहां महाभारत का युद्ध हुआ था।
कुरूपता-संज्ञा स्त्री० बदसूरती।
कुर्क-वि० जब्त होना।
कुर्क-अमीन-संज्ञा पुं० वह सरकारी व्यक्ति जो सरकार की आज्ञा से किसी की जायदाद जब्त करे।
कुर्की-संज्ञा स्त्री० किसी व्यक्ति के धन का अपराध या कर्ज के कारण सरकार की ओर से जब्त किया जाना।
कुलकलंक-संज्ञा पुं० (सं०) वंश के बड़प्पन में धब्बा लगानेवाला।
कुलकानि-संज्ञा स्त्री० कुल का बड़प्पन या कुल की लज्जा।
कुलक्षण-संज्ञा पुं० खराब लक्षण या ढंग, बदचलनी। वि० खराब लक्षणवाला, बदचलन, दुराचारी।
कुलच्छन-संज्ञा पुं० देखिए 'कुलक्षण'।
कुलच्छनी-संज्ञा स्त्री० बुरे लक्षण या चालवाली स्त्री।
कुलट-वि० पुं० (सं०) बहुत स्त्रियों के निकट जानेवाला, बदचलन। क्रीत पुत्र।
कुलटा-वि० स्त्री० (सं०) बहुत पुरुषों के निकट जानेवाली स्त्री।
कुलदेव-संज्ञा पुं० (सं०) वंश में हमेशा से पूजा किया जानेवाला देवता।
कुलदेवता-संज्ञा पुं० (सं०) देखिए 'कुलदेव'।
कुलधर्म-संज्ञा पुं० (सं०) वंश में हमेशा से किया जानेवाला कर्त्तव्य।
कुलपति-संज्ञा पुं० (सं०) घर का प्रधान या मालिक। विद्यार्थियों का भरण-पोषण करके उनको शिक्षा देनेवाला अध्यापक।
कुलबुलाना-क्रि० अ० छोटे जीवों का इधर-उधर हिलना। व्याकुल होना। चंचल होना, रेंगना।
कुलवधू-संज्ञा स्त्री० (सं०) कुल

की मर्य्यादा में रहनेवाली स्त्री। अच्छे घराने की स्त्री।

कुलवंत-वि० (सं०) ऊँचे कुल का, कुलवान्, कुलीन।

कुलह-संज्ञा स्त्री० (ग्रा०) अँधेरा। टोपी। ढक्कन।

कुलही-संज्ञा स्त्री० बच्चों के सिर पर लगायी जाने वाली टोपी।

कुलाल-संज्ञा पुं० (सं०) कुम्हार, उल्लू, कुम्भीर, घड़ियाल।

कुलिक-संज्ञा पुं० (सं०) कारीगर। ऊँचे कुल में पैदा। कुल का प्रधान।

कुलिश-संज्ञा पुं० (सं०) वज्र, बिजली। कुठार, कुल्हाड़ी।

कुली-संज्ञा पुं० बोझ उठानेवाला, मजदूर।

कुलीन-वि० (सं०) ऊँचे कुल में पैदा। पवित्र।

कुविचार-संज्ञा पुं० (सं०) बुरा विचार।

कुविचारी-वि० बुरे विचार करनेवाला।

कुबेर-संज्ञा पुं० (सं०) यक्षों के राजा तथा नौ निधियों के स्वामी एक देवता। धनी।

कुश-संज्ञा पुं० (सं०) यज्ञ में उपयोग की जानेवाली एक घास। जल।

कुशल-क्षेम-संज्ञा पुं० (सं०) राजी-खुशी। खैरियत।

कुशलता-संज्ञा स्त्री० (सं०) चतुराई। किसी कामको अच्छी तरह जानना, दक्षता। खैरियत।

कुशाग्र-वि० (सं०) कुश की नोक की तरह तीव्र। तेज बुद्धि वाला।

कुश्ता-संज्ञा पुं० (फा०) धातुओं को फूंककर बनायी जाने वाली भस्म।

कुश्तीबाज-वि० कुश्ती लड़ने वाला।

कुष्ठी-संज्ञा पुं० कोढ़ का रोगी, कुष्ठरोगयुक्त, कोढ़ी।

कुसंगति-संज्ञा स्त्री० (सं०) बुरे लोगों का साथ। कुसंग।

कुसमय-संज्ञा पुं० (सं०) बुरा वक्त। बुरा समय, दुःख के दिन।

कुसुंभा-संज्ञा पुं० कुसुम का रंग। एक मादक पदार्थ जो अफीम और भाँग से बनता है।

कुसुम-संज्ञा पुं० (सं०) फूल।

कुसुमबाण, कुसुमसर, कुसुमायुध-संज्ञा पुं० (सं०) फूलों के बाणोंवाला, कामदेव।

कुसुमावलि-संज्ञा स्त्री० (सं०) फूलों का गुच्छा।

कुसुमित-वि० (सं०) खिला हुआ।

कुहक-संज्ञा पुं० (सं०) धोखा। माया। मुर्गे की बोली। इन्द्रजाल या जादू जाननेवाला। मेढ़क।

कुहर-संज्ञा पुं० (सं०) गड्ढा, छेद।

कुहरा-संज्ञा पुं० हवा में जमे हुए जल-कणों का समूह जो धुआँ-सा दीखता है।

कुहराम-संज्ञा पुं० रोना-पीटना, उपद्रव, हाय हाय।

कुहुक-संज्ञा पुं० पक्षियों की कूक।

कुहुकना-क्रि० अ० पक्षियों का बोलना।
कुहू-संज्ञा स्त्री० (सं०) मोर या कोयल की ध्वनि। अमावस्या।
कूँचा-संज्ञा पुं० जिससे फर्श आदि साफ किया जाय, झाड़ू, बुहारी।
कूँची-संज्ञा स्त्री० छोटी झाड़ू। चित्रकार जिससे रंग भरता है।
कूँडी-संज्ञा स्त्री० पत्थर का छोटा गहरा बरतन, पथरी।
कूक-संज्ञा स्त्री० मोर या कोयल की बोली। लम्बी तेज ध्वनि।
कूकना-क्रि० अ० कोयल या मोर का बोलना।
कूकर-संज्ञा पुं० (ग्रा०) कुत्ता।
कूच-संज्ञा पुं० चला जाना, प्रस्थान।
कूचा-संज्ञा पुं० (फा०) छोटा रास्ता, गली।
कूज-संज्ञा स्त्री० आवाज, ध्वनि।
कूजन-संज्ञा पुं० (सं०) पक्षियों का मीठी ध्वनि करना।
कूजना-क्रि० अ० मीठी और कोमल ध्वनि करना।
कूजा-संज्ञा पुं० कुल्हड़। मिश्री की डली।
कूजित-वि० (सं०) जो कहा गया हो, ध्वनित।
कूट-संज्ञा पुं० (सं०) पहाड़ की ऊँची चोटी। बड़ा ढेर। धोखा, छल। गूढ़, छिपा हुआ। वि० छिपा हुआ भेद। झूठ, कपट या छल करनेवाला।
कूटनीति-संज्ञा स्त्री० (सं०) चालों की चाल। दाँव-पेंच।
कूटयुद्ध-संज्ञा पुं० (सं०) धोखा देकर युद्ध करना।
कूटसाक्षी-संज्ञा पुं० झूठ बोलनेवाला गवाह।
कूटस्थ-वि० (सं०) सबसे ऊँचा, अचल, गुप्त, अविनाशी।
कूढ़मग्ज-वि० कम बुद्धि का, कुंद-जिहन। बात न समझनेवाला।
कूतना-क्रि० स० मतलब निकालना। अनुमान इत्यादि बतलाना।
कूप-संज्ञा पुं० (सं०) कुआँ। गहरा गड्ढा, -दर्दुर- पुं० कुएँ का मेढक।
कूपमंडूक-संज्ञा पुं० (सं०) कुएं में ही रहनेवाला मेढक। बाहर की अधिक जानकारी न रखनेवाला व्यक्ति।
कूबड़-संज्ञा पुं० पीठ का टेढ़ापन।
कूबरी-संज्ञा स्त्री० कुब्जा, कुबड़ी।
कूर-वि० बिना दया का, निर्दय। मनहूस। बिना समझ का, मूर्ख।
कूरता-संज्ञा स्त्री० कठोरता, निर्दयता। मूर्खता। निकम्मापन।
कूर्म-संज्ञा पुं० (सं०) कछुआ।
कूर्म पुराण-संज्ञा पुं० (सं०) १८ पुराणों में से एक।
कूल-संज्ञा पुं० नदी का किनारा। तट। तालाब। नहर।
कृकलास-संज्ञा पुं० (सं०) गिरगिट।
कृच्छ्र-संज्ञा पुं० (सं०) कष्ट। दुःख। पाप। वि० मुश्किल।
कृत-वि० (सं०) बनाया हुआ। किया हुआ, रचित।
कृतकार्य-वि० (सं०) ...

में जो सफल हो चुका हो।

कृतकृत्य-वि० (सं०) जिसका काम पूरा या सफल हो चुका।

कृतघ्न-वि० (सं०) अपने लिए किये गये उपकार को न माननेवाला।

कृतघ्नता-संज्ञा स्त्री० (सं०) अपने लिए किये गये उपकार को न मानने की अवस्था।

कृतज्ञ-वि० अपने लिए किये गये उपकार को माननेवाला।

कृतज्ञता-संज्ञा स्त्री० (सं०) अपने लिए किये गये उपकार को मानना।

कृतयुग-संज्ञा पुं० (सं०) सतयुग।

कृतविद्य-वि० (सं०) ज्ञानी।

कृतांत-संज्ञा पुं० (सं०) खत्म करनेवाला। यम। मृत्यु।

कृतार्थ-वि० (सं०) अपने काम में सफल। कुशल।

कृति-संज्ञा स्त्री० (सं०) किया हुआ, करतूत। काम। भोजपत्र।

कृती-वि० (सं०) पुण्यवान्, प्रवीण, किसी काम को अच्छी प्रकार जाननेवाला, दक्ष। साधु व्यक्ति।

कृत्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) चमड़ा, मृगचर्म, भूर्जपत्र, भोजपत्र।

कृत्तिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) सत्ताइस नक्षत्रों में तीसरा नक्षत्र, भोजपत्र।

कृत्तिवास-संज्ञा पुं० (सं०) महादेव।

कृत्य-संज्ञा पुं० (सं०) कर्तव्य।

कृत्रिम-वि० (सं०) नकल किया हुआ, नकली। बनावटी।

कृपया-क्रि० वि० (सं०) कृपापूर्वक। मेहरबानी करके।

कृपा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बिना कुछ बदले में पाने की इच्छा किए किसी की भलाई करना। दया।

कृपाण-संज्ञा पुं० खड्ग, तलवार।

कृपापात्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह व्यक्ति जिस पर कृपा की जाय।

कृपालु-वि० (सं०) कृपा करनेवाला।

कृपालुता-संज्ञा स्त्री० (सं०) दया करना, मेहरबानी।

कृमि-संज्ञा पुं० कीट, छोटा कीड़ा।

कृमिरोग-संज्ञा पुं० (सं०) आमाशय तथा पक्वाशय में कीड़े उत्पन्न होने का रोग।

कृश-वि० (सं०) दुबला-पतला।

कृशानु-संज्ञा पुं० अग्नि, आग।

कृशोदरी-वि० स्त्री० (सं०) पतली कमरवाली स्त्री।

कृषक-संज्ञा पुं० (सं०) किसान।

कृषि-संज्ञा स्त्री० (सं०) खेती।

कृष्ण पक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) महीने के वे पंद्रह दिन जिनमें चन्द्रमा घटता जाता है। अँधेरा पाख।

कृष्णसार-संज्ञा पुं० थूहर, काला हिरन।

कृष्णा-संज्ञा स्त्री० (सं०) द्रौपदी। पीपल। एक नदी। काली देवी।

कृष्णाभिसारिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) अँधेरी रात में प्रेमी से मिलने जानेवाली नायिका।

चन्द्र के जन्म का भादों माह की अष्टमी का दिन।
कॅंचली-संज्ञा स्त्री० सर्प आदि के शरीर के ऊपर की झिल्लीदार अपने आप गिर जानेवाली खाल।
केंचुआ-संज्ञा पुं० बरसात का एक लम्बा पतला और मटमैले रंग का कीड़ा।
केंचुली-संज्ञा स्त्री० देखिए 'कॅंचली'।
केंद्र-संज्ञा पुं० ठीक बीच का बिन्दु, गोले के बीच का बिन्दु, नाभि।
केकड़ा-संज्ञा पुं० आठ टाँगों तथा दो पंजोंवाला एक पानी का कीडा।
केकय-संज्ञा पुं० (सं०) एक देश।
केका-संज्ञा स्त्री० मोर की बोली।
केकी-संज्ञा पुं० मयूर, मोर।
केतन-संज्ञा पुं० (सं०) बुलावा, चिह्न, ध्वजा, घर, स्थान।
केतु-संज्ञा पुं० (सं०) प्रकाश, चमक, पताका, पुच्छल तारा।
केदारनाथ-संज्ञा पुं० (सं०) हिमालय में एक पर्वत-शिखर, जिसपर 'केदारनाथ' शिवलिंग है।
केन-संज्ञा पुं० (सं०) एक उपनिषद्।
केयूर-संज्ञा पुं० बाँह में पहना जानेवाला आभूषण, अंगद।
केरोसिन-संज्ञा पुं० (अ०) मिट्टी का तेल।
केलि-संज्ञा स्त्री० (सं०) खेल, क्रीड़ा, मैथुन, स्त्री-प्रसंग, पृथ्वी।
केवट-संज्ञा पुं० नाव चलाने वाली एक जाति। मल्लाह।
केवड़ा-संज्ञा पुं० केतकी के पौधे से बड़ा सफेद पौदा। इसके फूल का निकाला सुगन्धित द्रव।
केवल-वि० (सं०) खाली, अकेला। शुद्ध। उत्तम। क्रि० वि० सिर्फ।
केवाँच-संज्ञा स्त्री० देखिए 'कौंच'।
केश-संज्ञा पुं० विष्णु, सिर के बाल, किरण।
केशकर्म-संज्ञा पुं० (सं०) बालों का झाड़ना और गूँथना।
केशपाश-संज्ञा पुं० (सं०) बालों की लट।
केशरी-संज्ञा पुं० घोड़ा, नाग-केसर।
केशव-संज्ञा पुं० (सं०) कृष्ण। ईश्वर। २४ मूर्ति भेदों में एक।
केशविन्यास-संज्ञा पुं० (सं०) बालों का सजाना और सँवारना।
केशी-संज्ञा पुं० घोड़ा। सिंह। एक राक्षस। वि० प्रकाश या किरण-युक्त।
केसर-संज्ञा पुं० (सं०) फूलों के बीच बाल की तरह पतले सींके। एक सुगन्धित पौदा। नागकेसर।
केसरिया-वि० केसर के रंग का, पीला, जर्द।
केसरी-संज्ञा पुं० सिंह। घोड़ा।
कैतव-संज्ञा पुं० धोखा। जुए का खेल। वि० धोखा करनेवाला छली। जुआरी। दुष्ट।
कैथी-संज्ञा स्त्री० एक जल्दी लिखी जा सकनेवाली लिखावट।
कैंब-संज्ञा स्त्री० (अ०) बन्द कर

देना। कारावास। बन्धन।
कैदी-संज्ञा पुं० (अ०) पहरे में बन्द किया हुआ व्यक्ति, बन्दी।
कैरव-संज्ञा पुं० (सं०) शत्रु, जुआरी, श्वेत कमल।
कैवर्त-संज्ञा पुं० (सं०) एक नाव चलानेवाली जाति, मल्लाह।
कैवल्य-संज्ञा पुं० (सं०) शुद्ध होना। निर्लिप्तता। छुटकारा, मोक्ष।
कैसर-संज्ञा पुं० बादशाह, सम्राट्।
कोंचना-क्रि० स० छेदना, गड़ाना।
कोंपल-संज्ञा स्त्री० नयी मुलायम पत्ती। अंकुर।
कोइली-संज्ञा स्त्री० काले दागवाला कच्चा आम। आम की गुठली।
कोक-संज्ञा पुं० (सं०) चकवा पक्षी, भेड़िया, छिपकली, कमल।
कोकनद-संज्ञा पुं०(सं०)लाल कमल।
कोकशास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) कामशास्त्र। रतिशास्त्र।
कोकिल, कोकिला-संज्ञा स्त्री०(सं०) कोयल। बहुत मधुर गायिका।
कोकीन, कोकेन-संज्ञा स्त्री० (अ०) कोका के वृक्ष से बनायी जानेवाली एक मादक दवा।
कोख-संज्ञा स्त्री० उदर, पेट। गर्भाशय; (मुहा.) उजड़ना गर्भपात होना।
कोच-संज्ञा पुं० (अ०) एक चार पहिए की बढ़िया घोड़ागाड़ी।
कोचवान-संज्ञा पुं० बग्गी हांकनेवाला।
कोट-संज्ञा पुं० (सं०) दुर्ग, गढ़। महल। संज्ञा पुं० समूह, झुण्ड। संज्ञा पुं० (अ०) एक अँग्रेजी पहनावा।
कोटपाल-संज्ञा पुं० (सं०) दुर्ग की रक्षा करनेवाला।
कोटर-संज्ञा पुं० (सं०) वृक्ष-गह्वर पेड़ का खोखला भाग।
कोटि-संज्ञा स्त्री० (सं०) दरजा। झुण्ड। वि० सौ लाख, करोड़।
कोटिक-क्रि० वि० (सं०) बहुत अधिक। अनगिनत।
कोटिशः-क्रि० वि० (सं०) अनेक प्रकार से। वि० बहुत अधिक।
कोठा-संज्ञा पुं० बड़ी कोठरी।
कोठार-संज्ञा पुं० घर का अन्न-धन आदि जहाँ रखा जाय। भंडार।
कोठारी-संज्ञा पुं० भंडार का सारा प्रबंध करनेवाला।
कोठी-संज्ञा स्त्री० बड़ा पक्का मकान।
कोढ़-संज्ञा पुं० एक रोग जिससे सम्पूर्ण शरीर से रक्त और मवाद निकलता है।
कोढ़ी-संज्ञा पुं० कोढ़ का रोगी।
कोण-संज्ञा पुं० नोक, कोना।
कोतवाल-संज्ञा पुं० पुलिस का एक प्रधान कर्मचारी।
कोताही-संज्ञा स्त्री० (फा०) कमी।
कोदो-संज्ञा पुं० एक अन्न।
कोप-संज्ञा पुं० (सं०) गुस्सा। क्रोध।
कोपभवन-संज्ञा पुं० (सं०) वह स्थान जहाँ गुस्सा करके कोई मनुष्य बैठता है।
कोपल-संज्ञा पुं० वृक्षों की नयी मुलायम पत्ती। अंकुर। कोंपल।

कोपि-सर्व० (सं०) कोई।
कोमल-वि० (सं०) मुलायम।
कोयल-संज्ञा स्त्री० एक काले रंग की छोटी मीठे स्वरवाली चिड़िया। संज्ञा स्त्री० एक लता, अपराजिता।
कोयला-संज्ञा पुं० लकड़ी का बुझा हुआ अंगारा। एक काला खनिज पदार्थ जो जलाया जाता है।
कोया-संज्ञा पुं० आँख का कोना।
कोर-संज्ञा स्त्री० किनारा, सिरा।
कोरक-संज्ञा पुं० फूल की कली।
कोर-कसर-संज्ञा स्त्री० न्यूनता। गलती। दोष। कमी-बेशी।
कोरा-वि० काम में न लाया गया हुआ। नया।
कोरी-संज्ञा पुं० एक जाति, जुलाहा।
कोल-संज्ञा पुं० शूकर, सुअर।
कोलाहल-संज्ञा पुं० हल्ला, शोर।
कोल्हू-संज्ञा पुं० वह यंत्र जिससे बीज आदि दबाकर तेल या गन्ने से रस निकाला जाय।
कोविद-वि० (सं०) बहुत जानकार विद्वान्।
कोश-संज्ञा पुं० अण्ड, अंडा, डिब्बा। तलवार, कटार आदि रखी जाने के लिए स्थान। थैली। कोया। खजाना। डिक्शनरी।
कोशागार-संज्ञा पुं० धनागार।
कोशिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) चेष्टा।
कोष्ठ-संज्ञा पुं० (सं०) पेट का भीतरी भाग। घर का भीतरी भाग। वह स्थान जहाँ अन्न इकट्ठा किया जाय।
कोष्ठक-संज्ञा पुं० (सं०) किसी वस्तु से घिरा स्थान, खाना। किसी प्रकार का चक्र जिसमें बहुत से खाने या घर हों। कुछ चिह्न जिनमें कुछ लिया जाय, ब्रेकेट्स जैसे [ ], { }, ( ) आदि।
कोस-संज्ञा पुं० दूरी की एक नाप, दो मील की। क्रोश।
कोसना-क्रि० स० किसी को शाप-रूप में गाली देना या बुरा-भला कहना। अभिशाप देना।
कोह-संज्ञा पुं० (फा०) पर्वत।
कोही-वि० गुस्सा करनेवाला,
कौंच-संज्ञा स्त्री० एक बेल जिसकी कलियों की तरकारी बनती है।
कौंध-संज्ञा स्त्री० बिजली की चमक।
कौंधना-क्रि० अ० बिजली का चमकना।
कौआ-संज्ञा पुं० धूर्त मनुष्य।
कौटिल्य-संज्ञा पुं० (सं०) कपट, टेढ़ापन, चाणक्य का एक नाम।
कौटुंबिक-वि० (सं०) कुटंब या परिवार का। कुटुंब संबंधी।
कौड़ी-संज्ञा स्त्री० कर्पादिका, रुपया-पैसा, कर, आँख का ढेला।
कौतुक-संज्ञा पुं० (सं०) कुतूहल, अचम्भा, हँसी-ठिठोली, तमाशा।
कौतुकी-वि० (सं०) मजाक, हँसी तमाशा दिखलानेवाला।
कौतूहल-संज्ञा पुं० विचित्रता।
कौपीन-संज्ञा पुं० (सं०) लँगोटी। जिसे साधु पहनते हैं। कफनी।

कौम-संज्ञा स्त्री० वंश, जाति।
कौमुदी-संज्ञा स्त्री० ज्योत्स्ना, चांद की रोशनी, चांदनी।
कौर-संज्ञा पुं० खाने के लिए एक बार मुंह में डाला जाने वाला भाग, ग्रास।
कौल-संज्ञा पुं० (अ०) कही हुई बात, कथन। वादा, प्रतिज्ञा।
कौवा-संज्ञा पुं० एक चालाक काला पक्षी, काक।
कौवाली-संज्ञा स्त्री० (अ०) सूफियों की मंडली में गाये जाने वाले ईश्वर के प्रेम के गीत।
कौशिक-संज्ञा पुं० (सं०) इन्द्र। विश्वामित्र।
कौशेय-वि० (सं०) रेशमी वस्त्र।
कौस्तुभ-संज्ञा पुं० (सं०) एक रत्न, जिसे विष्णु धारण करते हैं।
क्रत पशु-संज्ञा पुं० (सं०) घोड़ा।
क्रम-संज्ञा पुं० अनुक्रम, लगातार आगे पीछे होने की स्थिति।
क्रमशः-क्रि० वि० (सं०) सिलसिलेवार। धीरे-धीरे।
क्रमागत-वि० (सं०) हमेशा से होता आया हुआ, परंपरागत।
क्रमानुकूल, क्रमानुसार-वि० क्रि० वि० (सं०) सिलसिलेवार। क्रम के अनुसार।
क्रमिक-क्रि० वि० (सं०)परंपरा-प्राप्त, कुलक्रम से प्राप्त।
क्रमेल, क्रमेलक-संज्ञा पुं० ऊँट।
क्रय-संज्ञा पुं० (सं०) मोल लेने का काम, खरीदना।
क्रव्याद-संज्ञा पुं० (सं०) जो मांस खाए। चिता की आग।
क्रांति-संज्ञा स्त्री० परिवर्तन, भारी उलट-फेर होना, विशेषतः शासन और राजनीति में।
क्रिया-संज्ञा स्त्री० (सं०) कार्य, क्रम, निपटारा, ठहराव, शिक्षा। नित्य किये जानेवाले काम। श्राद्ध आदि काम। व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी काम का करना या होना पाया जाय।
क्रिया विशेषण-संज्ञा पुं० (सं०) व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी क्रिया शब्द का भाव ज्ञात हो।
क्रिस्तान-संज्ञा पुं० ईसाई।
क्रीड़ा-संज्ञा स्त्री० आमोद-प्रमोद।
क्रीत-वि० (सं०)मोल लिया हुआ।
क्रुद्ध-वि० (सं०) गुस्सा, नाराज।
क्रूर-वि० (सं०) दूसरे को कष्ट पहुँचानेवाला, निर्दय।
क्रूस-संज्ञा पुं० सूली। सूली का चिह्न जिसे ईसाई पवित्र मानते हैं।
क्रोड़-संज्ञा पुं० शूकर, गोद।
क्रोधी-वि० जल्दी क्रुद्ध होनेवाला।
क्रौंच-संज्ञा पुं०एक द्वीप का नाम। हिमालय के अन्तर्गत एक पर्वत।
क्लांत-वि० (सं०) थका हुआ।
क्लांति-संज्ञा स्त्री० (सं०) थकावट।
क्लिष्ट-वि० (सं०) दुःखी। कठिन, पीड़ित, रोगी, विरुद्ध, बेमेल।

क्लेद-संज्ञा पुं० (सं०) भीगा होना, गीलापन , कफ, मैल, सड़ाव ।
क्लेश-संज्ञा पुं० (सं०) कष्ट । परेशानी । दुःख । वेदना ।
क्लैब्य-संज्ञा पुं० (सं०) नपुंसकता , डरपोकपन, क्लीवता ।
क्वाथ-संज्ञा पुं० (सं०) औषधियों का उबालकर निकाला हुआ रस, काढ़ा ।
क्वारा-संज्ञा पुं० वि० जिसका विवाह न हुआ हो, कुआरा ।
क्वारापन-संज्ञा पुं० कुआरा होना, कुमारपन ।
क्षंतव्य-वि० (सं०) क्षमा या माफ किये जाने लायक ।
क्षण-संज्ञा पुं० छन, समय का सबसे छोटा भाग ।
क्षणप्रभा-संज्ञा स्त्री० (सं०)बिजली ।
क्षणभंगुर-वि० (सं०) जल्दी ही नष्ट हो जानेवाला, अनित्य ।
क्षणिक-वि० (सं०) क्षण भर ठहरनेवाला, क्षणभंगुर ।
क्षत-वि० (सं०) वह जिसे क्षति या चोट पहुँची हो ।
क्षत-विक्षत-वि० (सं०) बुरी तरह घायल लोहू लुहान ।
क्षति-संज्ञा स्त्री० हानि, नुकसान ।
क्षत्र-संज्ञा पुं० (सं०) बल । धन । राज्य, राष्ट्र ।
क्षत्रधर्म-संज्ञा पुं० (सं०) क्षत्रियों का कर्तव्य या धर्म ।
क्षत्रपति-संज्ञा पुं० (सं०) राजा ।
क्षत्रिय-संज्ञा पुं० द्विजातियों के अनुसार चार वर्णों में दूसरा । राजा ।
क्षत्री-संज्ञा पुं० देखिए 'क्षत्रिय' ।
क्षपशाक-वि० (सं०) बेशर्म ।
क्षपा-संज्ञा पुं० स्त्री० (सं०) रात ।
क्षपाचर-संज्ञा पुं० (सं०) रात में विचरनेवाला, राक्षस ।
क्षपानाथ-संज्ञा पुं० (सं०) चन्द्रमा ।
क्षम-वि० (सं०) शक्ति और योग्यतावाला ।
क्षमता-संज्ञा स्त्री० (सं०) योग्यता । शक्ति, सामर्थ्य ।
क्षमालु, क्षमावान, क्षमाशील, क्षमी-वि० माफ कर देनेवाला, क्षमाशील, सहिष्णु ।
क्षम्य-वि० (सं०) क्षमा या माफ कर दिये जाने योग्य ।
क्षयी-वि० (सं०) नष्ट या कम होनेवाला । यक्ष्मा का रोगी ।
क्षर-वि० (सं०) कम या नष्ट होनेवाला । संज्ञा पुं० (सं०) जल, जीवात्मा, देह, अज्ञान ।
क्षरण-संज्ञा पुं० (सं०) स्रवण, चूना, नाश, छुटकारा ।
क्षांत-वि० (सं०) क्षमा या माफ कर देनेवाला, क्षमाशील ।
क्षांति-संज्ञा स्त्री० (सं०) क्षमाशीलता । क्षमा । सहनशीलता ।
क्षात्र-वि० क्षत्रियों का ।
क्षाम-वि० (सं०) क्षीण, कमजोर ।
क्षार-संज्ञा पुं० (सं०) खार । नमक । जला हुआ, भस्म, राख ।
क्षिति-संज्ञा स्त्री० (सं०) पृथ्वी , दिशा, क्षय, नाश, महाप्रलय ।

क्षितिज-संज्ञा पुं० (सं०) वह रेखा जहाँ आकाश और पृथ्वी मिले दीख पड़ते हैं।
क्षिप्त-वि० (सं०) फेंका हुआ। गिरा हुआ। वात रोग। चंचल।
क्षिप्र-क्रि० वि० (सं०) जल्दी।
क्षीण-वि० (सं०) सूक्ष्म, निर्बल, कमजोर, जो घट गया हो।
क्षीणता-संज्ञा स्त्री० दुर्बलता, कमजोरी, निर्बलता।
क्षीर-संज्ञा पुं० (सं०) दूध।
क्षीरजा-संज्ञा स्त्री० (सं०) लक्ष्मी।
क्षीरधि, क्षीरनिधि-संज्ञा पु० (सं०) समुद्र। क्षीरसागर।
क्षीरसागर, क्षीरोद-संज्ञा पुं० (सं०) पुराणों के अनुसार दूध से भरा सागर, दूध का समुद्र।
क्षुद्र-वि० (सं०) धन खर्च न करके जमा करनेवाला, कंजूस, नीच।
क्षुद्रघंटिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) घुंघरूदार करधनी। घुंघरू।
क्षुद्रता-संज्ञा स्त्री० (सं०) छोटा-पन, नीचता, ओछापन।
क्षुद्रप्रकृति-वि० (सं०) छोटे, नीच या खोटे स्वभाव का।
क्षुद्रबुद्धि-वि० (सं०) छोटी या नीच बुद्धिवाला, मूर्ख।
क्षुधा-संज्ञा स्त्री० बुभुक्षा, भूख।
क्षुधातुर, क्षुधित-वि० (सं०) भूखा।
क्षुब्ध-वि० (सं०) परेशान, चंचल, भयभीत, डरा हुआ; पुं० भयानी।
क्षुर-संज्ञा पुं० (सं०) छुरा, जिससे कोई चीज काटी जाय। पशुओं के पैर का खुर।
क्षुरिका-संज्ञा स्त्री० पालक, छुरी।
क्षेत्र-संज्ञा पुं० (सं०) खेत। मैदान। स्थान, जगह। शरीर।
क्षेत्रज्ञ-संज्ञा पुं० (सं०) जीवात्मा। किसान।
क्षेत्रपति-संज्ञा पुं० (सं०) किसान। जीवात्मा।
क्षेत्रफल-संज्ञा पुं० (सं०) रकबा, किसी खेत की वर्ग के हिसाब से नाप।
क्षेप-संज्ञा पुं० निन्दा, फेंकना।
क्षेपण-संज्ञा पुं० विक्षेप। फेंकना। गिराना। बिताना।
क्षेम-संज्ञा पुं० सुरक्षा, हिफाजत, कुशल।
क्षोणि, क्षोणी-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
क्षोणिप-संज्ञा पुं० (सं०) राजा।
क्षोभ-संज्ञा पुं० (सं०) परेशानी। खलबली। घबराहट। गुस्सा।
क्षौद्र-संज्ञा पु० (सं०) छोटापन। छोटी मधुमक्खी का शहद।
क्षौम-संज्ञा पुं० रेशमी वस्त्र।
क्षौर-संज्ञा पुं० मुण्डन हजामत।
क्ष्मा-संज्ञा स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

ख

खँचिया-संज्ञा स्त्री० पतली टहनियों का छेददार बड़ा टोकरा।
खँजड़ी-संज्ञा स्त्री० देखिए 'खँजरी'।
खँजरी-संज्ञा स्त्री० छोटा डफली-सा एक बाजा। धारीदार कपड़ा।
खँडसाल-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ शक्कर बनायी जाय।
खँडहर-संज्ञा पुं० कोई गिरा हुआ या टूटा-फूटा मकान।
खंग-संज्ञा पुं० तलवार। गैंडा पशु।
खंजन-संज्ञा पुं० (सं०) एक पक्षी।
खंजर-संज्ञा पुं० (फा०) कटार।
खंड-संज्ञा पुं० टुकड़ा, हिस्सा, भाग, देश।
खंडकाव्य-संज्ञा पुं० (सं०) छोटा कथात्मक काव्य।
खंडन-संज्ञा पुं० (सं०) तोड़ना-फोड़ना।
खंडनीय-वि० (सं०) तोड़ा-फोड़ा जाने लायक। वह बात जो काटी जाने लायक हो।
खंडप्रलय-संज्ञा पुं० (सं०) एक चतुर्युगी बीत जाने पर होनेवाली छोटी प्रलय।
खंडित-वि० (सं०) टूटा-फूटा।
खखार-संज्ञा पुं० मुँह से निकला हुआ गाढ़ा कफ या थूक।
खखारना-क्रि० अ० वेग से कफ को निकालना।
खग-संज्ञा (सं०) जो आकाश में चले, सूर्य, ग्रह, चन्द्रमा, देवता। बाण, पक्षी, वायु, टिड्डी।
खगेश-संज्ञा पुं० गिद्ध, गरुड़।
खगोल-संज्ञा पुं० (सं०) आकाश का मण्डल।
खगोल-विद्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) आकाश के ग्रह, नक्षत्रों आदि के बारे में जानने की विद्या, गणित ज्योतिष।
खचाखच-क्रि० वि० बहुत भरा, ठसाठस।
खचित-वि० (सं०) खींचा हुआ। लिखा या बनाया हुआ।
खजानची-संज्ञा पुं० (फा०) खजाने का अफसर। कोशाध्यक्ष।
खजाना-संज्ञा पुं० धन-भंडार।
खटक-संज्ञा स्त्री० चिंता। 'खट' का शब्द। खटका।
खटकना-क्रि० अ० 'खट' की ध्वनि होना। रह-रहकर दुखना। पीड़ा होना। डरना। ठीक न जान पड़ना। अनिष्ट की आशंका होना।
खटका-संज्ञा पुं० डर। आनेवाली विपत्ति से डरना। फिक्र, चिंता। सिटकनी। कोई पेंच।
खटना-क्रि० स० (दे०) धन कमाना।
खटबुना-संज्ञा पुं० चारपाई बुनने-वाला।
खटमिट्ठा-वि० कुछ खट्टा और कुछ मीठा दोनों स्वादवाला।
खटराग-संज्ञा पुं० झंझट। व्यर्थ की चीजें।
खटाई-संज्ञा स्त्री० खट्टी वस्तु।

खट्टापन।

खटाखट-संज्ञा पुं० लगातार पीटने या चोट करने का शब्द। क्रि० वि० बिना बाधा के। झटपट।

खटिक-संज्ञा पुं० तरकारी आदि बेचनेवाली एक जाति।

खटिया-संज्ञा स्त्री० चारपाई।

खटोलना-संज्ञा पुं० छोटी चारपाई।

खट्टा-वि० कच्चे आम आदि के स्वाद की तरह का।

खड़क-संज्ञा स्त्री० धीमा शब्द।

खड़बड़, खड़बड़ी-संज्ञा पुं० खट खट चहल-पहल, हलचल।

खड़िया-संज्ञा स्त्री० एक सफेद रंग की मिट्टी।

खड्ग-संज्ञा पुं० (सं०) तलवार।

खड, खड्डा-संज्ञा पुं० गड्ढा।

खत-संज्ञा पुं० (अ०) पत्र, चिट्ठी।

खतना-संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानों में लिंग के आगे का चमड़ा काटने का संस्कार, सुन्नत।

खतर, खतरा-संज्ञा पुं० (अ०) भय। आनेवाली विपत्ति का डर, आशंका। जोखिम।

खता-संज्ञा स्त्री० (अ०) भूल, गलती, कसूर।

खतावार-वि० अपराध करनेवाला, दोषी।

खदेरना-क्रि० स० दूर भागना।

खद्दड़, खद्दर-संज्ञा पुं० हाथ के काते सूत का बुना कपड़ा।

खद्योत-संज्ञा पुं० (सं०) जुगनू।

खनक-संज्ञा पुं० चूहा, खान। संज्ञा स्त्री० धातुओं के टकराने का शब्द।

खप्पर-संज्ञा पुं० तसले की तरह का मिट्टी का पात्र। खोपड़ा।

खफगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) नाखुशी।

खफा-वि० (अ०) क्रुद्ध, नाराज।

खबर-संज्ञा स्त्री० (अ०) सूचना, जानकारी, पता, हाल, संदेश।

खबरदार-वि० (फा०) होशियार।

खमीर-संज्ञा पुं० (अ०) गूथे आटे का सड़ाव।

खयानत-संज्ञा स्त्री० (अ०) धरोहर रखी हुई चीज न देना। गबन।

खयाल-संज्ञा पुं० देखिए 'ख्याल'।

खर-संज्ञा पुं० (सं०) गधा।

खरगोश-संज्ञा पुं० (फा०) एक जानवर, खरहा।

खरचना-क्रि० स० खर्च करना। उपयोग में लाना।

खरधार-संज्ञा पुं० (सं०) तेज धारवाला (अस्त्र)।

खरब-संज्ञा पु० सौ अरबों की संख्या।

खरमस्ती-संज्ञा स्त्री० (फा०) शरारत, पाजीपन।

खरमास, खरवांस-संज्ञा पुं० पूस और चैत के महीने जब सूरज धन और मीन राशि में होता है।

खरल-संज्ञा पुं० पत्थर की कूंड़ी जिसमें दवाइयाँ कूटी जाती है।

खरहा-संज्ञा पुं० खरगोश।

खरा-वि० तीक्ष्ण, तीखा, विशुद्ध। स्पष्ट, साफ।

खरावना-क्रि० स० [illegible]

काट-छाँटकर सुडौल बनाना।
खराश-संज्ञा स्त्री० (फा०) छीलन। खरोंच।
खरीदना-क्रि० स० मोल लेना।
खरीदार-संज्ञा पुं० (फा०) मोल लेनेवाला व्यक्ति, खरीदनेवाला।
खरीफ-संज्ञा-स्त्री० अगहन में काटी जानेवाली फसल, धान, मकई।
खरोंचना-क्रि० स० खुरच देना। छीलना। वेग से खुजलाना।
खरोष्ट्री, खरोष्ठी-संज्ञा स्त्री० (सं०) गांधार लिपि जो फारसी की तरह दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
खर्चीला-वि० बहुत अधिक धन व्यय करनेवाला।
खर्पर-संज्ञा पुं० (सं०) तसले की तरह का मिट्टी का बरतन। काली देवी का खून पीने का बरतन, खप्पर। खोपड़ा।
खर्ब-वि० (सं०) छोटा। बौना। संज्ञा पुं० (सं०) सौ अरब की संख्या, खरब।
खल-वि० (सं०) नीच। दुष्ट।
खलना-क्रि० अ० बुरा लगना।
खलबल-संज्ञा स्त्री० शोर, हलचल।
खलबली-संज्ञा स्त्री० हलचल, आकुलता, घबड़ाहट, उबाल।
खलास-वि० (अ०) खतम।
खलासी-संज्ञा स्त्री० छुटकारा। संज्ञा पुं० (देश०) जहाज पर का नौकर। आग झोंकनेवाला मजदूर।
खलियान-संज्ञा पुं० फसल काटकर रखने का स्थान। ढेर।
खलिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) कष्ट।
खलीफ़ा-संज्ञा पु० (अ०) अधिकारी। बावर्ची। नाई। बूढ़ा व्यक्ति।
खल्वाट-संज्ञा पुं० (सं०) एक रोग जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं।
खस-संज्ञा स्त्री० एक सुगंधित जड़।
खसकना-क्रि० अ० धीरे-धीरे एक स्थान से दूसरे तक जाना, सरकना।
खसम-संज्ञा पुं० (अ०) पति।
खसलत-संज्ञा स्त्री० (अ०) आदत, स्वभाव।
खसी-संज्ञा पुं० बकरा।
खसीस-वि० (अ०) कंजूस।
खसोट-संज्ञा स्त्री० बुरी तरह नोचने या झटके की क्रिया।
खसोटना-क्रि० स० बुरी तरह नोचना या बलपूर्वक खींच लेना।
खस्ता-वि० जरा सा दबाने से टूटनेवाला। भुरभुरा।
खाँड़-संज्ञा स्त्री० कच्ची शक्कर।
खाँड़ा-संज्ञा पुं० खड्ग, तलवार। खण्ड, टुकड़ा।
खाई-संज्ञा स्त्री० खंदक, वह बड़ा गड्ढा जिसमें पानी भरा हो।
खाऊ-वि० अधिक खानेवाला, पेटू।
खाक-संज्ञा स्त्री० (फा०) मिट्टी।
खाका-संज्ञा पुं० मानचित्र।
खाट-संज्ञा स्त्री० खटोला, पलंग।
खाड़ी-संज्ञा स्त्री० तीन ओर पृथ्वी से घिरा समुद्र का भाग, आखात।

खातमा-संज्ञा पुं० (फा०) खत्म होना, अंत। मौत।

खातिर-संज्ञा स्त्री० (अ०) आदर। अव्य० के लिये, वास्ते।

खातिरदारी-संज्ञा स्त्री० खातिर। आदर करना, आवभगत।

खाद्य-वि० (सं०) जो खाने के लिए हो, आहार, खाने की वस्तु।

खान-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ से पृथ्वी खोदकर सोना, चाँदी, कोयला, पत्थर आदि निकाला जाय।

खानपान-संज्ञा पुं० (सं०) खाना-पीना। भोजन।

खानगी-वि० (फा०) आपस का घरेलू; स्त्री० वेश्या, रंडी।

खानदान-संज्ञा पुं० (फा०) परिवार, वंश।

खाना-संज्ञा पुं० (फा०) घर। तालिकाओं आदि में बने कोष्ठक। भोजन।

खानातलाशी-संज्ञा स्त्री० (फा०) कुछ खोया हुआ ढूंढने के लिए घर की चीजों को देखना।

खानापुरी-संज्ञा स्त्री० खाली जगह पर उचित शब्द या मानचित्र में यथास्थान नाम भरना।

खानाबदोश-वि० (फा०) इधर से उधर बिना घर के घूमनेवाला।

खानि-संज्ञा स्त्री० खान, ओर।

खामोश-वि० (फा०) चुपचाप। मौन। धैर्यवान्।

राख।

खार-संज्ञा पुं० (फा०) काँटा। मन की जलन।

खारा-वि० पुं० नमक के स्वाद का।

खालिस-वि० (अ०) साफ, शुद्ध।

खाली-वि० (अ०) जहाँ कुछ न हो, रिक्त।

खाविंद-संज्ञा पुं० (फा०) पति।

खास-वि० (अ०) मुख्य, प्रधान।

खासा-संज्ञा पुं० (अ०) एक पतला सफेद सूती कपड़ा।

खासियत-संज्ञा स्त्री० (अ०) स्वभाव, गुण, खास बात।

खिंचाव-संज्ञा पुं० खिचने की क्रिया। आकर्षण।

खिचड़ी-संज्ञा स्त्री० दाल और चावल का पकाया हुआ भोजन।

खिजलाना-क्रि० अ० गुस्सा होना, चिढ़ाना, छेड़ना।

खिजाब-संज्ञा पुं० (अ०) वह दवा जिसके लगाने से सफेद बाल काले हो जाते हैं।

खिझना-क्रि० अ० चिढ़ना, खीजना।

खिझाना-क्रि० स० तंग करना।

खिताब-संज्ञा पुं० (अ०) पदवी, उपाधि।

खिदमत-संज्ञा स्त्री० (फा०) सेवा।

खिदमतगार-संज्ञा पुं० (फा०) सेवा करनेवाला, सेवक।

खिन्न-वि० (सं०) उदास। गुस्सा। अप्रसन्न। असहाय।

खिलना-क्रि० अ० किसी कली का फूलना। प्रसन्न होना।

खिलवत, खिलवतखाना-संज्ञा पुं० (फा०) वह अकेला स्थान जहाँ कुछ सलाह की जाय।

खिलवाड़-संज्ञा पुं० खेल, मन-बहलाव, हँसी-खेल, ठट्ठा।

खिलाड़ी-संज्ञा पुं० खेल करने या खेलनेवाला, जादूगर।

खिलाफ-वि० (अ०) उलटा, विरुद्ध।

खिल्ली-संज्ञा स्त्री० हँसी। मजाक।

खिसकना-क्रि० अ० चुपचाप चले जाना, खसकना, हट जाना।

खिसियाना-क्रि० अ० नाराज होना; वि० लज्जित।

खींच-तान-संज्ञा स्त्री० दो व्यक्तियों की एक ही चीज को अपनी-अपनी ओर परस्पर छीना-छीनी।

खींचाखींची, खींचातानी-संज्ञा स्त्री० देखिए 'खींच-तान'।

खीज-संज्ञा स्त्री० झुंझलाना।

खीजना-क्रि० अ० नाराज होना।

खील-संज्ञा स्त्री० भुना हुआ धान।

खुजलाना-क्रि० स० नाखून से रगड़-कर खुजली मिटाना।

खुजलाहट, खुजली-संज्ञा स्त्री० शरीर का खुजलाना। खुजली, सुरसरी।

खुदकाश्त-संज्ञा स्त्री० (फा०) वह भूमि जिसे उसका मालिक खुद जोते-बोये।

खुदगरज़-वि० (फा०) अपने मतलब की ही कहनेवाला, मतलब साधनेवाला।

खुदमुख्तार-वि० (फा०) अपनी इच्छा से स्वतंत्रता-पूर्वक काम करनेवाला।

खुदा-संज्ञा पुं० (फा०) ईश्वर।

खुदाई-संज्ञा स्त्री० ईश्वर का बनाया हुआ, ईश्वरीय। दुनिया।

खुदावंद-संज्ञा पुं० (फा०) ईश्वर। मालिक। श्रीमान।

खुदी-संज्ञा पुं० (फा०) घमंड। दर्प।

खुमार, खुमारी-संज्ञा पुं०, स्त्री० नशा। आनेवाला आलस्य। रात में जगने के कारण थकावट।

खुरचना-क्रि० अ० करोचना।

खुराक-संज्ञा स्त्री० (फा०) भोजन।

खुराफात-संज्ञा स्त्री० बेकार की बातें। झगड़ा। बखेड़ा।

खुर्द-वि० (फा०) छोटा।

खुर्दबीन-संज्ञा पुं० छोटी वस्तु को बहुत बड़ा दिखलानेवाला यंत्र।

खुर्राट-वि० (देश०) बूढ़ा। बहुत अनुभवी। चालाक। काइयाँ।

खुलासा-संज्ञा पुं० (अ०) निचोड़, सारांश। वि० साफ-साफ, स्पष्ट।

खुल्लमखुल्ला-क्रि० वि० साफ-साफ सबके सामने किसी काम को करना।

खुश-वि० (फा०) प्रसन्न।

खुशखबरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) खुश करनेवाली अच्छी खबर।

खुशदिल-वि० (फा०) दिल से हमेशा खुश या प्रसन्न रहनेवाला, हँसमुख।

खुशनसीब-वि० (फा०) अच्छे भाग्यवाला, भाग्यवान्।

खुशबू-संज्ञा स्त्री० सुगन्ध।

खुशहाल-वि० (फा०) सुखी।

सुखी। संपन्न।
खुशामद-संज्ञा स्त्री० (फा०) किसी से काम निकालने के लिए उसकी झूठी प्रशंसा करना।
खुशामदी-वि० किसी की झूठी बड़ाई करनेवाला।
खुशी-संज्ञा स्त्री० (फा०) प्रसन्नता।
खुश्क-वि० सूखा हुआ। रूखे स्वभाव का।
खूंट-संज्ञा पुं० किनारा, छोर।
खूंटी-संज्ञा स्त्री० दीवाल आदि पर गड़ी छोटी लकड़ी।
खूंदना-क्रि० अ० पैरों से किसी चीज को रौंदना, कुचलना।
खूनखराबा-संज्ञा पुं० रक्तपात।
खूनी-वि० (फा०) दूसरों को मार डालनेवाला, हत्यारा।
खूब-वि० (फा०) अच्छा, उत्तम।
खूबसूरत-वि० (फा०) सुन्दर।
खूबी-संज्ञा स्त्री० (फा०) खास बात होना, विशेषता, गुण।
खेचरमुद्रा-संज्ञा स्त्री० (सं०) योग का एक आसन।
खेती, खेती-बारी-संज्ञा स्त्री० खेत में जोतने-बोने का काम, कृषि।
खेद-संज्ञा पुं० (सं०) दुःख, रंज।
खेमा-संज्ञा पुं० (अ०) तंबू, डेरा।
खेल-संज्ञा पुं० मन बहलाने के लिए किया जानेवाला काम। स्वाँग, अभिनय, विचित्र लीला।
खेलाड़ी-वि० उछल-कूद या खेल करनेवाला। खेलनेवाला।
खेवट-संज्ञा पुं० पटवारी का एक कागज। नाव खेनेवाला, माँझी।
खेस-संज्ञा पुं० (देश०) मोटे सूत का लंबा चदरा।
खैर-संज्ञा पुं० एक वृक्ष जिससे कत्था निकलता है। अव्य० कोई बात नहीं, कुशल, भलाई, नेकी।
खैर-आफियत-संज्ञा स्त्री० (फा०) कुशल-मंगल, कल्याण, भलाई।
खैरख्वाह-वि० (फा०) भलाई चाहनेवाला, शुभचिंतक।
खैरा-वि० कत्थे के रंग का, कत्थई।
खैरात-संज्ञा स्त्री० भिक्षादान।
खैरियत-संज्ञा स्त्री० (फा०) राजी-खुशी। भलाई। कुशल-मंगल।
खोंता-संज्ञा पुं० (देश०) चिड़ियों के रहने का घोंसला।
खोंसना-क्रि० स० घुसाना।
खोई-संज्ञा स्त्री० रस निकाले गन्ने के टुकड़े। धान का लावा।
खोज-संज्ञा स्त्री० तलाश। अन्वेषण।
खोजा-संज्ञा पुं० नौकर। मुसलमानों के अन्तःपुरों में रहनेवाला नपुंसक नौकर, सरदार, मुखिया।
खोट-संज्ञा स्त्री० दोष, बुराई।
खोटाई, खोटापन-संज्ञा स्त्री० पुं० बुराई, क्षुद्रता, ओछापन।
खोल-संज्ञा पुं० ऊपर से चढ़ा हुआ आवरण। मोटे कपड़े की चादर।
खौफ-संज्ञा पुं० (अ०) डर, भय।
खौलना-क्रि० अ० आग पर उबलना।
ख्यात-वि० (सं०) कथित, प्रसिद्ध।

ख्वाब-संज्ञा पुं० (फा०) नींद। सपना, स्वप्न।

ख्वाहिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) इच्छा, चाह;-मंद- वि० इच्छुक, आकांक्षी।

ख्याति-संज्ञा स्त्री० (सं०) प्रसिद्ध होना, शोहरत। प्रकाश, ज्ञान।

ख्याल-संज्ञा पुं० (अ०) ध्यान, विचार; -से उतरना-भूल जाना।

ख्वाजा-संज्ञा पुं० (फा०) मालिक। ऊंचे दरजे का मुसलमान फकीर।

ग

गंजेड़ी-वि० गांजा पीनेवाला।

गँड़ासा-संज्ञा पुं० जानवरों के लिए चारा या घास काटने का एक अस्त्र।

गंवई-संज्ञा स्त्री० गाँव की बस्ती।

गंवाना-क्रि०स० खो देना। बिताना।

गंवार-वि० गाँव का रहनेवाला, देहाती, मूर्ख, बेवकूफ, अनाड़ी।

गंगा-संज्ञा स्त्री० भारत की एक प्रसिद्ध नदी।

गंगा-जमुनी-वि० दो रंग का।

गंगाजली-संज्ञा स्त्री० गंगाजल भर लाने के लिए बरतन।

गंगाधर-संज्ञा पुं० शिव, गंगा को धारण करनेवाले, महादेव।

गंगालाभ-संज्ञा पुं गंगा-गति। मौत।

गंगासागर-संज्ञा पुं० एक तीर्थस्थान जहाँ गंगा का सागर-संगम होता है।

गंगोदक-संज्ञा पुं० (सं०) गंगाजल।

गंज-संज्ञा पुं० बाल गिरने का रोग।

गंजा-वि० जिसके बाल झड़ गए हों। संज्ञा पुं० गंज रोग।

गंड-संज्ञा पुं० कपोल, गाल।

गंडकी-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक नदी।

गंडमाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) गले का एक रोग।

गंडा-संज्ञा पुं० गाँठ।

गंडेरी-संज्ञा स्त्री० गन्ने के छोटे-छोटे टुकड़े।

गंदगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) मैला होना, मलिनता। अपवित्रता।

गंदा-वि० (फा०) घिनौना। अशुद्ध।

गंध-संज्ञा स्त्री० महक, सुगंध, खुशबू।

गंधक-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक पीला खनिज पदार्थ।

गंधर्व-संज्ञा पुं० (सं०) देवताओं का एक भेद जो गानविद्या में निपुण होते हैं। विधवा स्त्री का दूसरा पति;

गंधर्व-नगर-संज्ञा पुं० (सं०) गलत ज्ञान, भ्रम।

गंधर्व-विद्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) संगीत।

गंधर्व-विवाह-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्रकार का विवाह जिसमें वर-वधू अपने मन से सम्बन्ध कर लेते हैं। पसंद के द्वारा होनवाला विवाह।

गंधी-संज्ञा पुं० इत्र, तेल आदि बेचनेवाला, अत्तार, गँधिया कीड़ा।
गंभीर-वि० (सं०) गहरा, गहन।
गऊ-संज्ञा स्त्री० गाय।
गगन-संज्ञा पुं० शून्य। आकाश।
गगनचर-संज्ञा पुं० (सं०) पक्षी।
गगनभेदी, गगनस्पर्शी-वि० (सं०) आकाश को छूनेवाला, गगनचुंबी।
गज-संज्ञा पुं० हस्ति, हाथी।
गज-संज्ञा पुं० (फा०) लम्बाई नापने का एक पैमाना।
गजगामिनी-वि० स्त्री० (सं०) हाथी की-सी धीमी चाल से चलने-वाली स्त्री। सुन्दर स्त्री।
गजदंत-संज्ञा पुं० (सं०) हाथी का दाँत, गणेश, नागदन्त।
गजब-संज्ञा पुं० गुस्सा, आफत।
गजमुक्ता, गजमोती-संज्ञा स्त्री० (सं०) हाथी के मस्तक से निकलनेवाला मोती।
गजर-संज्ञा पुं० पहर-पहर पर घंटा बजने का शब्द।
गजरा-संज्ञा पुं० फूलों की घनी बनी माला।
गजल-संज्ञा स्त्री० (फा०) फारसी और उर्दू में एक प्रकार का प्रेम-विषयक काव्य या गीत।
गजवदन-संज्ञा पुं० (सं०) गज के से वदनवाले, गणेश।
गजशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) हाथी बाँधने का बाड़ा।
गजानन-संज्ञा पुं० (सं०) हाथी के-से मुखवाले, गणेश।

गजेन्द्र-संज्ञा पुं० (सं०) बड़ा हाथी। ऐरावत।
गट्ठर-संज्ञा पुं० बड़ी गठरी।
गट्ठा-संज्ञा पुं० घास आदि का बड़ा बोझा। बड़ी गठरी।
गठन-संज्ञा स्त्री० बनावट।
गठरी-संज्ञा स्त्री० गाँठ लगाकर बाँधा हुआ सामान, पोटली।
गठाव-संज्ञा पुं० देखिए 'गठन'।
गठित-वि० गठा हुआ।
गठिया-संज्ञा स्त्री० बोझा लादने का थैला। एक रोग।
गठीला-वि० बहुत-सी गाँठों वाला, प्रसिद्ध, सुडौल, गठा हुआ।
गड़गड़ाना-क्रि० अ० बादल का ध्वनि करना, गरजना।
गड़ना-क्रि० अ० धँसना, चुभना। दर्द करना।
गड़बड़ी-संज्ञा स्त्री० अव्यवस्था होना।
गड़ेरिया-संज्ञा पुं० भेंड़ पालनेवाली एक जाति।
गड्डबड्ड, गड्डमड्ड-संज्ञा पुं० बेमेल का मिलान। घपला।
गड्ढा-संज्ञा पुं० जमीन में गहरा स्थान।
गढ़ंत-वि० कल्पित, बनावटी।
गढ़-संज्ञा पुं० किला, खाई, कोट।
गढ़न-संज्ञा स्त्री० बनावट।
गढ़ना-क्रि० स० काट-छाँटकर ठीक करना, बनाना। मन की बात बना लेना। ठोंकना।
गढ़पति-संज्ञा पुं० किले या दुर्ग

का सरदार, राजा।
गण-संज्ञा पुं० (सं०) समूह, ढेर। अनुचरों का जत्था।
गणक-संज्ञा पुं० दैवज्ञ, ज्योतिषी।
गणना-संज्ञा स्त्री० (सं०) गिनती।
गणराज्य-संज्ञा पुं० जनता के चुने हुए मुखिया या सरदारों द्वारा चलाया जानेवाला राज्य।
गणिका-संज्ञा स्त्री० रंडी। वेश्या।
गणित-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें संख्याओं के सम्बन्धों का अध्ययन हो।
गण्य-वि० (सं०) गिनने लायक। —मान्य— वि० सम्मानित।
गत-वि० (सं०) बीता हुआ, गया हुआ, मरा हुआ।
गतांक-वि० (सं०) गया बीता। संज्ञा पुं० किसी पत्र का पिछला अंक।
गति-संज्ञा स्त्री० (सं०) चाल। दशा, अवस्था।
गद-संज्ञा पुं० (सं०) विष। रोग।
गदर-संज्ञा पुं० (अ०) भारी उलट-फेर, विद्रोह, बगावत, बलवा।
गदराना-क्रि० अ० फल आदि का पकना, जवानी में अंगों का भरना।
गदा-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक हथियार जिसमें एक छोटे डण्डे पर बड़ा लट्टू-सा होता है। बड़प्पन।
गदाधर-संज्ञा पुं० (सं०) विष्णु।
गद्गद्-वि० (सं०) बहुत प्रसन्न होना। अति अधिक हर्ष होना।
हो, अधिकारी। राजा।
गद्य-संज्ञा पुं० (सं०) वह लेख जिसमें मात्रा, वर्ण आदि का कोई नियम नहीं होता।
गधा-संज्ञा पुं० गदहा। गर्दभ।
गनीम-संज्ञा पुं० (अ०) लुटेरा।
गनीमत-संज्ञा स्त्री० (अ०) ऐसी बात जिसमें संतोष हो। मुफ्त का माल।
गप-संज्ञा स्त्री० गड़बड़ बात जिसे सच न माना जा सके, अफवाह।
गफ-वि० घना। गाढ़ा। ठोस।
गफ़लत-संज्ञा स्त्री० (अ०) बे-परवाही, भूल, असावधानी।
गबन-संज्ञा पुं० (अ०) किसी दूसरे के अपने पास रखे माल को हड़प लेने का अपराध।
गबरू-वि० उभरते यौवन का पट्ठा।
गम-संज्ञा पुं० (अ०) दुःख, रंज।
गमक-संज्ञा पुं० बोधक, बतलाने-वाला।
गमकना-क्रि० अ० महकना।
गमखोर-वि० कष्ट या दुःख सह लेनेवाला, सहनशील, धीर।
गमन-संज्ञा पुं० यात्रा करना।
गम्य-वि० (सं०) जाने लायक। पाया या पहुँचा जा सकने योग्य।
गयंद-संज्ञा पुं० (प्रा०) बड़ा हाथी।
गरज-संज्ञा स्त्री० गहरी भारी ध्वनि। बादल या शेर की आवाज।
गरज-संज्ञा स्त्री० (अ०) मतलब। इच्छा। जरूरत।
गरजना-क्रि० अ० गहरी और भारी

आवाज करना। बादल या सिंह का ध्वनि करना।
गरजमंद-वि० (फा०) जिसे जरूरत हो। जिसे इच्छा हो, इच्छुक।
गरदनियाँ-संज्ञा स्त्री० गरदन पकड़कर बाहर निकालना।
गरदा-संज्ञा पुं० गर्द, धूल।
गरदान-वि० (फा०) घूम-फिरकर उसी स्थान पर पहुँचनेवाला।
गरदानना-क्रि० स० बार-बार उसी बात को कहना, दोहराना।
गरल-संज्ञा पुं० (सं०) जहर, विष।
गरिमा-संज्ञा स्त्री० भार। बड़प्पन महिमा। घमण्ड।
गरिष्ठ-वि० (सं०) बहुत भारी। आसानी से न पचनेयोग्य।
गरी-संज्ञा स्त्री० नारियल के फल के अन्दर का गूदा। गिरी।
गरीब-वि० निर्धन, धनहीन।
गरीबनमाज-वि० गरीबों पर दया करनेवाला।
गरीब परवर-वि० (फा०) गरीबों का पालन या सहायता करनेवाला।
गरुआई-संज्ञा स्त्री० भारीपन।
गरूर-संज्ञा पुं० (अ०) अभिमान।
गर्जन-संज्ञा पुं० (सं०) भारी और भीषण आवाज, क्रोध, रोष।
गर्त्त-संज्ञा पुं० (सं०) गड्ढा, दरार, रथ, एक नरक का नाम।
गर्द-संज्ञा स्त्री० धूल, मिट्टी, राख।
गर्दभ-संज्ञा पुं० खर, गदहा।
गर्दिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) घुमाव।
मुसीबत, विपत्ति।
गर्भ-संज्ञा पुं० (सं०) स्त्री के पेट का बच्चा, गर्भाशय, कुक्षि।
गर्भपात-संज्ञा पुं० (सं०) समय से पहले ही गर्भ का अपरिपक्व अवस्था में गिर जाना।
गर्भवती-वि० स्त्री० वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो।
गर्भस्थ-वि० (सं०) जो गर्भ में हो।
गर्भाधान-संज्ञा पुं० (सं०) मनुष्य का प्रथम संस्कार, गर्भ में आना।
गर्भाशय-संज्ञा पुं० बच्चादानी।
गर्भिणी-वि० स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो।
गर्व-संज्ञा पुं० अहंकार, अभिमान।
गर्विता-संज्ञा स्त्री० (सं०) अपने रूप, गुण आदि पर घमण्ड करनेवाली स्त्री।
गर्हित-वि० (सं०) बुराई किया हुआ, बुरा, निंदित, दूषित।
गर्ह्य-वि० (सं०) लेने या ग्रहण करने लायक, निन्दनीय, नीच।
गलकंबल-संज्ञा पुं० (सं०) गाय के गले की लटकती हुई झालर।
गलगंड-संज्ञा पुं० (सं०) गला फूलकर लटक आने का रोग, घेघा।
गलगाजना-क्रि० अ० बड़ी बातें बनाना। गाल बजाना।
गलबाँही-संज्ञा स्त्री० गले में बाँह डालना।
गला-संज्ञा पुं० धड़ और सिर को जोड़नेवाला भाग, कंठ।
गलित-वि० (सं०) गला हुआ।

गलित कुष्ठ-संज्ञा पुं० वह कोढ़ जिसमें अंग गलगलकर गिरते हैं।
गली-संज्ञा स्त्री० छोटा और संकरा रास्ता, कूचा। पतला मार्ग।
गल्प-संज्ञा स्त्री० छोटी कहानी।
गल्ला-संज्ञा पुं० (अ०) अनाज।
गवय-संज्ञा पुं० (सं०) नील गाय।
गवाह-संज्ञा पुं० (फा०) अपनी आँखोंदेखी घटना का किसी के सामने बयान देनेवाला, साक्षी।
गवाही-संज्ञा स्त्री० (फा०) आँखों-देखी घटना का किसी के सामने बयान या कथन, साक्ष्य।
गवेषण-संज्ञा स्त्री० (सं०) छानबीन, खोज।
गवैया-वि० गानेवाला, गायक।
गव्य-वि० गाय से पाया जानेवाला, जैसे दूध, दही आदि।
गश-संज्ञा पुं० बेहोशी, मूर्च्छा।
गश्त-संज्ञा पुं० (फा०) फिरना। जाँच के लिए घूमना, भ्रमण।
गहगहा-वि० बहुत प्रसन्न। खूब आनन्द से भरा हुआ।
गहन-वि० (सं०) गहरा। घना।
गहना-संज्ञा पुं० आभूषण, बंधक।
गहरा-वि० बहुत नीचे चला गया हुआ। गंभीर।
गह्वर-संज्ञा पुं० (सं०) गड्ढा। गुफा। बिल, सूराख।
गाँजा-संज्ञा पुं० एक मादक पदार्थ।
गाँठ-संज्ञा स्त्री० एक से एक को खब फँसाना, गिरह।
गाँसी-संज्ञा स्त्री० अस्त्र की नोक। कपट, छल।
गांगेय-संज्ञा पुं० (सं०) भीष्म।
गांडीव-संज्ञा पुं० (सं०) अर्जुन के धनुष का नाम।
गांधर्व-वि० (सं०) गंधर्व संबंधी। गाने या संगीत की विद्या। एक प्रकार का विवाह जो वर-वधू की इच्छा से हो जाता है।
गांधार-संज्ञा पु० प्राचीन जनपद।
गांधी-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक हरा छोटा कीड़ा। इत्र बेचनेवाला। एक जाति। एक महापुरुष।
गांभीर्य-संज्ञा पुं० (सं०) गंभीरता। मन से गहरा होना, गूढ़ता।
गाछ-संज्ञा पुं० पौधा, वृक्ष।
गाज-संज्ञा स्त्री० गरज। बिजली,
गाजना-क्रि० अ० शब्द करना। गरजना। प्रफुल्ल होना।
गाजी-संज्ञा पुं० मुसलमान योद्धा।
गाड़ीवान-संज्ञा पुं० गाड़ी हाँकने-वाला। कोचवान।
गाढ़-वि० (सं०) मुश्किल, कठिन। कड़ा, घना, गाढ़ा, गहरा।
गाढ़ा-वि० वह द्रव जो पतला नहीं हो। घना, ठस, जैसे कपड़ा। मुश्किल। मोटा। गाढ़, गूढ़, गहरा।
गात, गात्र-संज्ञा पुं० शरीर। अंग।
गाथा-संज्ञा स्त्री० स्तुति, बड़ाई वर्णन करना या पूजा करना। किस्सा।
गाना-क्रि० स० ताल, लय आदि के साथ स्वर निकालना।

गाफिल-वि० (अ०) बिना चेतना या खबर के, बेसुध, असावधान।
गाभिन, गाभिनी-वि० स्त्री० मादा चौपाये जिनके पेट में बच्चा हो।
गायक-संज्ञा पुं० गवैया, गानेवाला।
गायत्री-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक वेद का मंत्र। गंगा।
गायन-संज्ञा पुं० (सं०) गाने की क्रिया, गाना। गाने का व्यवसाय।
गार-संज्ञा पुं० (अ०) गड्ढा।
गारुड़ी-संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जो मंत्र से साँप का विष उतारता हं।
गार्हस्थ्य-संज्ञा पुं० (सं०) वैदिक रीति से दूसरा आश्रम।
गाली-संज्ञा स्त्री० दूसरे को गंदा या बुरा शब्द कहना।
गाली-गलौज, गाली-गुफ्ता-संज्ञा स्त्री० एक दूसरे को गंदी या बुरी बातें कहना। परस्पर गाली देना।
गावतकिया-संज्ञा पुं० (फा०) सहारे से बैठने के लिए एक बड़ा तकिया।
गिजा-संज्ञा स्त्री० (अ०) भोजन।
गिड़गिड़ाना-क्रि० अ०विनती करना नम्रता से कोई प्रार्थना करना।
गिरजा-संज्ञा पुं० प्रार्थना-गृह जहाँ ईसाई अपनी प्रार्थना करते हैं।
गिरफ्तारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) कैद या बंदी किया जाना।
गिरवी-वि० (फा०) किसी चीज को किसी को देकर उससे धन लेना, बन्धक।
गिरह-संज्ञा स्त्री० (फा०) गाँठ। एक दूसरे से उलझा कर फँसाना।
गिरहकट-वि० जेब या गाँठ काट कर धन ले लेनेवाला।
गिराँ-वि० (फा०) अधिक दाम-वाला, महँगा, भारी, अप्रिय।
गिरा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बोलने की शक्ति। सरस्वती। वाणी। भाषा।
गिरानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) अधिक दाम होना, महँगापन, गिरावट।
गिरि-संज्ञा पुं० पर्वत, पहाड़।
गिरिजा-संज्ञा स्त्री० पार्वती, दुर्गा, गंगा।
गिरिधर, गिरधारी-संज्ञा पुं० पर्वत धरनेवाला, श्रीकृष्ण।
गिरिराज-संज्ञा पुं० (सं०) पर्वतों का राजा, हिमालय।
गिर्द-अव्य० (फा०) आस-पास।
गिलट-संज्ञा पुं० एक सफेद धातु।
गिला-संज्ञा पुं० (फा०) शिकायत।
गिलौरी-संज्ञा स्त्री० (देश०) पानों का बीड़ा।
गीत-संज्ञा पुं० स्वर-ताल के ढंग से गाये जा सकनेवाले वाक्य।
गीता-संज्ञा स्त्री० उपदेशात्मक ज्ञान। भगवद्गीता।
गीतिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) गीत, गाना। एक मात्रिक छंद।
गीदड़-संज्ञा पुं०सियार,एक जानवर।
गीर्वाण-संज्ञा पुं० (सं०) देवता।
गुंज-संज्ञा स्त्री० भौंरों की भन-भनाहट का शब्द। आनन्दध्वनि।
गुंजन-संज्ञा स्त्री० (सं०) भौंरों का गूँजना। मधुर ध्वनि।
गुंजा-संज्ञा स्त्री० (सं०) घुँघची।

गुंजान-वि० (फा०) घना, सघन।
गुंजायमान-वि० (सं०) गूंजता हुआ।
गुंजार-संज्ञा पुं० भौंरों की आवाज, भनभनाहट।
गुंडा-वि० खराब राह पर चलनेवाला, कुमार्गी, पापी, छैला।
गुंफन-संज्ञा पुं० (सं०) उलझाव।
गुंबज-संज्ञा पुं० एक प्रकार का छत की गोलाकार रचना।
गुंबजदार-वि० वह जिस पर गुंबज हो।
गुंबद-संज्ञा पुं० देखिए 'गुंबज'।
गुइयाँ-संज्ञा स्त्री० पुं० साथी। सखी।
गुच्छ, गुच्छक-संज्ञा पुं० (सं०) फूल या पत्तियों को एक में बांधकर बनाया गया गुच्छा।
गुच्छा-संज्ञा पुं० फूलों का झब्बा।
गुजर-संज्ञा पुं० (फा०) पहुँच, रहना, निर्वाह।
गुजर-बसर-संज्ञा पुं० (फा०) गुजारा, जीविका चलना, निर्वाह।
गुजरात-संज्ञा पुं० एक देश।
गुजारना-क्रि० स० (फा०) बिताना।
गुजारा-संज्ञा पुं० (फा०) रह सकना, निर्वाह। गुजर, गुजरान।
गुजारिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) निवेदन, प्रार्थना।
गुटका-संज्ञा पुं० छोटा टुकड़ा। छोटे आकार की पुस्तक।
गुट्ठ-संज्ञा पुं० झुंड, दल, जत्था।
गुड्डी-संज्ञा स्त्री० पतंग, कनकैया।
गुड्डा-संज्ञा पुं० कपड़े से बनाया हुआ पुतला। बड़ा पतंग, बड़ी गुड़िया।
गुड्डी-संज्ञा स्त्री० पतंग।
गुण-संज्ञा पुं० (सं०) वह बातें जिनके कारण कोई वस्तु जानी जाती है, धर्म। कला, हुनर।
गुणक-संज्ञा पुं० (सं०) गुण में जिस संख्या से गुणा किया जाय।
गुणकारक, गुणाकारी-वि० असर करनेवाला, लाभदायक।
गुणग्राहक-संज्ञा पुं० (सं०) गुण का तथा गुणी व्यक्तियों का आदर करनेवाला।
गुणनफल-संज्ञा पुं० (सं०) गणित में गुणा करने से निकली हुई संख्या।
गुणवंत-वि० देखिए 'गुणवान्'।
गुणवाचक-वि० (सं०) गुण को प्रगट करनेवाला।
गुणवान्-वि० जिसके पास गुण हों गुणी।
गुणी-वि० जिसके अन्दर गुण हों। संज्ञा पुं० कला जाननेवाला।
गुत्थमगुत्था-संज्ञा पुं० उलझन, गुथा होना, फँसाव। हाथापाई।
गुत्थी-संज्ञा स्त्री० गांठ, मन की परेशानी, गिरह, उलझन।
गुदगुदा-वि० गूदेदार, मांसयुक्त। मुलायम।
गुदगुदी-संज्ञा स्त्री० गुलगुले या मांस भरे स्थानों पर उँगली छू जाने से उत्पन्न सुरसुराहट उमंग, खुशी।
गुदड़ी-संज्ञा स्त्री० फटे-पुराने कपड़ों का बिछावन या ओढ़ना।

गुवड़ी-बाजार-संज्ञा पुं० फटे-पुराने कपड़े या टूटी-फूटी चीजें बेची जाने का स्थान।
गुवा-संज्ञा स्त्री० मलद्वार, गाँड़।
गुनगुना-वि० हलका गरम।
गुनगुनाना-क्रि० अ० धीरे-धीरे बोलना, गुन-गुन शब्द बोलना।
गुनना-क्रि० स० गुणा करना। गिनना। सोचना। रटना।
गुनहगार-वि० (फा०) दोषी, अपराधी।
गुनाह-संज्ञा पुं० (फा०) दोष। गलती। पाप।
गुप्त-वि० (सं०) छिपा हुआ। गूढ़।
गुप्तचर-संज्ञा पुं० भेदिया।
गुप्तदान-संज्ञा पुं० (सं०) किसी दूसरे के जाने बगैर दिया जानेवाला दान।
गुप्ती-संज्ञा स्त्री० वह छड़ी जिसमें छिपी हुई तलवार हो।
गुबार-संज्ञा पुं० (अ०) धूल, राख। मन में जमा हुआ क्रोध, आदि।
गुम-संज्ञा पु० (फा०) छिपा हुआ। खोया हुआ। लापता।
गुमनाम-वि० (फा०) बिना नाम का, अज्ञात।
गुमराह-वि० (फा०) रास्ता भूला हुआ।
गुमान-संज्ञा पुं० अनुमान। घमण्ड।
गुम्मट-संज्ञा पुं० मत्थे या सिर पर चोट लगने से फूल आना।
गुर-संज्ञा पुं० छिपी हुई बात साधन, मूलमन्त्र, युक्ति, भेद।
गुरदा-संज्ञा पुं० बड़े जीवों में कलेजे के पास एक अंग। साहस, हिम्मत।
गुरु-वि० (सं०) बड़ा। गरुआ, भारी। संज्ञा पुं० शिक्षा देनेवाला, अध्यापक।
गुरुकुल-संज्ञा पुं० (सं०) वह स्थान जहाँ स्वयं गुरु रहे और विद्यार्थियों को भी वहीं रखकर शिक्षा दे। गुरु का कुल।
गुरुजन-संज्ञा पुं० शिक्षा देनेवाले लोग, अध्यापक, माता, पिता, आचार्य इत्यादि।
गुरुता, गुरुत्व-संज्ञा पुं० महत्त्व, बड़प्पन, भारीपन, गरुआ होना।
गुरुत्व केन्द्र-किसी वस्तु का वह स्थान जहाँ पर उसका सारा भार इकट्ठा होता हो।
गुरुत्वाकर्षण-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी का वह आकर्षण जिसके कारण वस्तुएँ ऊपर से नीचे आती हैं।
गुरुदक्षिणा-संज्ञा स्त्री० (सं०) विद्या पाने के बाद गुरु को दिया जानेवाला धन।
गुरुद्वारा-संज्ञा पुं० जहाँ गुरु रहें। सिक्खों का मन्दिर।
गुरुभाई-संज्ञा पुं० एक ही गुरु से शिक्षा पानेवाला साथी।
गुरुमुखी-संज्ञा स्त्री० गुरु नानक को चलायी एक लिपि।
गुरुवार-संज्ञा पुं० (सं०) वृहस्पति का दिन।
गुरुघंटाल-संज्ञा पुं० चालबाज

आदमी। धूर्त व्यक्ति।
गुर्जर-संज्ञा पुं० (सं०) गुजरात देश। एक जाति, गूजर।
गुल-संज्ञा पुं० (फा०) गुलाब का फूल। फूल। चिराग की बत्ती का जला भाग। जली हुई तम्बाकू।
गुल-संज्ञा पुं० हल्ला-गुल्ला, शोर।
गुलगपाड़ा-संज्ञा पुं० शोर-गुल।
गुलदस्ता-संज्ञा पुं० (फा०) अच्छे फूल-पत्तियों का गुच्छा जो शोभा के लिए बनाया जाय।
गुलनार-संज्ञा पुं० (फा०) अनार का फूल। गहरा लाल रंग।
गुलशन-संज्ञा पुं० बाग। वाटिका।
गुलाब-संज्ञा पुं० (फा०) लाल फूल।
गुलाबपाश-संज्ञा पुं० एक लम्बा बरतन जिसमें गुलाब-जल भरकर छिड़का जाता है।
गुलाबी-वि० (फा०) गुलाब के रंग का। हलका।
गुलाम-संज्ञा पुं० (अ०) मोल लिया हुआ नौकर, दास।
गुलामी-संज्ञा स्त्री० गुलाम या दास होना, दासता। पराधीनता।
गुलाल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल चूर्ण जिससे होली खेलते हैं।
गुलेल-संज्ञा स्त्री० छोटी गोलियाँ फेंकने की एक कमान।
गुस्ताख-वि० (फा०) बड़ों से बुरी रीति से व्यवहार करनेवाला, उद्दंड, अशिष्ट।
गुस्ताखी-संज्ञा स्त्री० (फा०) बड़ों का आदर न करना, अशिष्टता।
गुस्ल-संज्ञा पुं० (अ०) स्नान।
गुस्लखाना-संज्ञा पुं० नहाने का घर। स्नानागार।
गुस्सा-संज्ञा पुं० (अ०) क्रोध।
गुह्य-वि० (सं०) छिपा हुआ।
गुह्यक-संज्ञा पुं० (सं०) यक्ष।
गूँज-संज्ञा स्त्री० भौंरों का शब्द, गुंजार।
गुंजना-क्रि० अ० भौंरों या मक्खियों का शब्द करना। प्रतिध्वनित होना।
गूँथना-क्रि० स० देखिए 'गूथना'।
गूँधना-क्रि० स० आटे आदि को पानी से सानकर हाथों से दबाना।
गूजर-संज्ञा स्त्री० एक जाति, ग्वाला।
गूढ़-वि० (सं०) छिपा हुआ। जो आसानी से न जाना जा सके। पुं० एक अलंकार, गुप्तांग, रहस्य।
गूथना-क्रि० स० कई चीजों का एक तागे में बाँधना, या पिरोना।
गूदड़-संज्ञा पुं० फटा हुआ कपड़ा।
गृध्र-संज्ञा पुं० (सं०) गिद्ध, एक जटायु पक्षी, वि० लोभी।
गृह-संज्ञा पुं० (सं०) कलत्र, भार्या। घर, कुटुम्ब, वंश।
गृहप, गृहपति-संज्ञा पुं० (सं०) घर का मालिक। आग। अग्निविशेष।
गृहयुद्ध-संज्ञा पुं० (सं०) अपने घर के ही लोगों में या देश के भीतर आपस में युद्ध होना।
गृहस्थ-संज्ञा पुं० (सं०) विवाह करके रहनेवाला व्यक्ति।
गृहस्थाश्रम-संज्ञा पुं० (सं०) वैदिक रीति से २५ वर्ष की अवस्था से

प्रारम्भ होनेवाला दूसरा आश्रम जिसमें व्यक्ति विवाह करके परिवार बसाता है।

गृहस्थी-संज्ञा स्त्री० घर का प्रबन्ध घर के लोग। गृहस्थ का कर्तव्य।

गृही-संज्ञा पुं० गृहस्थाश्रमी, गृहस्थ।

गेंदा-संज्ञा पुं० एक फूल।

गेय-वि० (सं०) गाने योग्य।

गेरुआ-वि० गेरू के रंग का या गेरू में रँगा हुआ, जोगिया।

गेरू-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी। गैरिक।

गेह-संज्ञा पुं० घर, मकान।

गेहुँआ-वि० गेहूँ के रंग का।

गैर-वि० दूसरा। कोई और।

गैरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) शर्म, लज्जा।

गैरमामूली-वि० (अ०) जो मामूली न हो, असाधारण।

गैरमुनासिब-वि० (अ०) अनुचित, बुरा काम।

गैरमुमकिन-वि० (अ०) जो हो सकनेवाला न हो, असंभव।

गैरहाजिर-वि० (अ०) जो मौजूद न हो, अनुपस्थित।

गैरहाजिरी-संज्ञा स्त्री० (अ०) मौजूद न होना, अनुपस्थिति।

गैरिक-संज्ञा पुं० गेरू मिट्टी। सोना।

गैल-संज्ञा स्त्री० रास्ता, गली।

गो-संज्ञा स्त्री० (सं०) गाय। इंद्रिय।

गोकुल-संज्ञा पुं० (सं०) जहाँ गायें रहें, गोशाला। गायों का समूह।

गोक्षुर, गोखरू-संज्ञा पुं० (सं०) एक वृक्ष जिसमें छोटे कँटीले फल होते हैं।

गोचर-संज्ञा पुं० (सं०) इन्द्रियों से जाना जा सकनेवाला ज्ञान। गौ के चरने का स्थान, चरागाह।

गोट-संज्ञा स्त्री० कपड़े के किनारे पर लगायी जानेवाली पट्टी या फीता। खेलने के मोहरे।

गोटा-संज्ञा पुं० बादले का बुना फीता, कंडी, सुद्दा।

गोत-संज्ञा पुं० गोत्र, कुल, समूह, जत्था।

गोतम-संज्ञा पुं० (सं०) एक ऋषि।

गोता-संज्ञा पुं० (अ०) पानी में डुबकी लेना।

गोत्र-संज्ञा पुं० वंश, सन्तति, कुल।

गोदान-संज्ञा पुं० (सं०) ब्राह्मण को गो या बैल का विधिवत् दान देना।

गोदाम-संज्ञा पुं० थोक का माल रखा जाने का स्थान।

गोदी-संज्ञा स्त्री० गोद।

गोधन-संज्ञा पुं० (सं०) गौओं का झुण्ड, गायें।

गोधूलि, गोधूली-संज्ञा स्त्री० (सं०) गायों के लौटने का समय जब उनके चलने से उड़ी धूल से धुंधला हो जाय, संध्या।

गोप-संज्ञा पुं० (सं०) गायों का पालने और उनकी रक्षा करने वाला, गाँव का मालिक, राजा।

गोपन-संज्ञा पुं० (सं०) छिपा हुआ,

घृणा, व्याकुलता, दीप्ति।
गोपनीय-वि० (सं०) छिपाने लायक। रक्षणीय।
गोपांगना-संज्ञा स्त्री० (सं०) गोप जाति की स्त्री।
गोपा-संज्ञा स्त्री० (सं०) गाय पालनेवाली स्त्री।
गोपाल-संज्ञा पुं० (सं०) गो का पालन करनेवाला, अहीर।
गोपिका, गोपी-संज्ञा स्त्री० (सं०) गोपपत्नी, अहिरिन, ग्वालिनियाँ।
गोपुर-संज्ञा पुं० (सं०) नगर या किले का फाटक। स्वर्ग।
गोबर-संज्ञा पुं० गाय का मल।
गोबर गणेश-वि० भद्दा, मूर्ख।
गोमय-संज्ञा पुं० (सं०) गोबर।
गोमेध-संज्ञा पुं० गोमांस से हवन किया जानेवाला एक यज्ञ।
गोरखधंधा-संज्ञा पुं० उलझन का काम।
गोरखनाथ-संज्ञा पुं० एक हठयोगी।
गोरखपंथी-वि० गोरखनाथ के सम्प्रदाय का।
गोरस-संज्ञा पुं० गाय का दूध। दही। इन्द्रियों से प्राप्त सुख।
गोरा-वि० गोरे रंग का व्यक्ति।
गोरिल्ला-संज्ञा पुं० एक बनमानुस।
गोरी-संज्ञा स्त्री० सुन्दर स्त्री।
गोरू-संज्ञा पुं० चौपाये, मवेशी।
गोरोचन-संज्ञा पुं० (सं०) गौ के पित्त से निकलनेवाला एक पीला सुगंधित पदार्थ।
गोल-वि० (सं०) पूरा वृत्त बनाता हुआ, सर्ववर्त्तुल, जैसे गेंद।
गोलक-संज्ञा पुं० माणिक, आँख की पुतली। गोल पिंड। वह सन्दूक जिसमें धन इकट्ठा किया जाय।
गोलमाल-संज्ञा पुं० गड़बड़, ठीक प्रबन्ध न होना।
गोला-संज्ञा पुं० बड़ा गोल पदार्थ। तोप से फेंका जानेवाला गोल लोहा। एक रोग, वायुगोला।
गोलाई-संज्ञा स्त्री० गोल आकार।
गोलाकार, गोलाकृति-वि० (सं०) गोल आकृतिवाला।
गोलार्ध-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी को बीचोबीच से काटने से बननेवाला आधा भाग।
गोली-संज्ञा स्त्री० छोटा गोल पिंड। औषध की वटिका। कांच आदि के खेलने के छोटे गोले। बंदूक आदि से चलाया जानेवाला छोटा गोला।
गोलोक-संज्ञा पुं० (सं०) भगवान् का लोक, परम-धाम।
गोशमाली-संज्ञा स्त्री० (फा०) कान उमेठना। डाटना।
गोशा-संज्ञा पुं० (फा०) कोना। छिपा और अकेला स्थान।
गोश्त-संज्ञा पुं० (फा०) मांस।
गोष्ठी-संज्ञा स्त्री० (सं०) सभा, बहुत से लोगों का समूह, वार्तालाप।
गोसाईं, गोस्वामी-संज्ञा पुं० गौवों का मालिक। इन्द्रियों को वश में रखनेवाला। संन्यासियों का एक सम्प्रदाय। साधु। मालिक।
गोसुत-संज्ञा पुं० (सं०) गाय का

वच्चा। वछड़ा।
गोहार-संज्ञा स्त्री० हल्लागुल्ला।
गौण-वि० (सं०) अप्रधान। गुणसंबंधी। सहायक।
गौतम-संज्ञा पुं० (सं०) एक आचार्य।
गौना-संज्ञा पुं० विवाह के बाद का एक रस्म जिसमें वर वधू को अपने साथ घर लाता है।
गौर-वि० (सं०) सफेद रंग का।
गौर-संज्ञा पुं० (अ०) सोच-विचार। ध्यान से देखना।
गौरव-संज्ञा पुं० (सं०) बड़प्पन। सम्मान। अभ्युत्थान। उत्कर्ष।
गौरांग-संज्ञा पुं० (सं०) चैतन्य महाप्रभु, विष्णु, श्रीकृष्ण।
ग्रंथ-संज्ञा पुं० (सं०) बड़ी किताब।
ग्रंथकर्त्ता, ग्रंथकार-संज्ञा पुं० (सं०) ग्रन्थ या पुस्तक लिखनेवाला।
ग्रंथ साहब-संज्ञा पुं० सिक्खों की धर्म-पुस्तक, शास्त्र, पुस्तक।
ग्रंथिबंधन-संज्ञा पुं० (सं०) विवाह।
ग्रसना-क्रि० स० बुरी तरह घेर-कष्ट देना, पकड़ना।
ग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) वे नक्षत्र जो सूर्य के चारों ओर घूमते हैं।
ग्रहण-संज्ञा पुं० (सं०) एक ग्रह पर दूसरे ग्रह की छाया पड़ना। स्वीकार, मंजूरी, ज्ञान।
ग्रहदशा-संज्ञा स्त्री० (सं०) ग्रहों की अच्छी या खराब अवस्था।
ग्राम-संज्ञा पुं० गाँव, छोटी बस्ती।
ग्रामीण-वि० (सं०) गाँव का रहने-वाला, देहाती, गँवार।
ग्रास-संज्ञा पुं० (सं०) एक बार में मुँह में रखा जाने वाला भोजन, कौर।
ग्राह-संज्ञा पुं० ग्रहण, घड़ियाल। पकड़ना, आग्रह, हठ, स्वीकार।
ग्राह्य-वि० (सं०) लेने या जानने योग्य।
ग्रीवा-संज्ञा स्त्री० कन्धा, गर्दन, गला।
ग्रीष्म-संज्ञा स्त्री० (सं०) गरमी की ऋतु।
ग्लानि-संज्ञा स्त्री० (सं०) मन से किसी काम को करने की इच्छा न होना, खेद।
ग्वाल, ग्वाला-संज्ञा पुं० एक जाति, गोप, ग्वाल, अहीर।
ग्वालिन-संज्ञा स्त्री० ग्वाले की स्त्री। एक बरसाती कीड़ा, गिजाई।

घ

घंटा-संज्ञा पुं० बड़ी घंटी, ठेंगा, घड़ियाल। साठ मिनट का समय।
घंटाघर-संज्ञा पुं० वह ऊँचा स्थान जहाँ बड़ी घड़ी लगी हो, जिसका घंटा-दूर तक सुनाई पड़ता हो।
घट-संज्ञा पुं० (सं०) घड़ा। शरीर।
घटती-संज्ञा स्त्री० कमी। कसर।

घटना-क्रि० अ० होना, किसी घटना का होना।
घटबढ़-संज्ञा स्त्री० कमी-बेशी।
घटा-संज्ञा स्त्री० झुण्ड, घने उमड़े मेघ। क्रि० हुआ। कम हुआ।
घटाकाश-संज्ञा पुं० (सं०) घड़ों के भीतर की खाली जगह।
घटाटोप-संज्ञा पुं० (सं०) चारों ओर से घिरी हुई बादलों की घटा।
घटाना-क्रि० स० गणित में एक संज्ञा से दूसरे की बाकी निकालना। कम करना। अप्रतिष्ठा करना।
घटाव-संज्ञा पुं० न्यूनता, कमी।
घटिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) घड़ी।
घटित-वि० (सं०) जो हो चुका, रचित, निर्मित, बनाया हुआ।
घटिया-वि० तुच्छ, नीच, अधम। छोटा, सस्ता।
घटी-संज्ञा स्त्री० (सं०) चौबीस मिनट का समय। घाटा, हानि।
घड़ियाल-संज्ञा पुं० पूजा आदि के समय बजाया जानेवाला घंटा।
घड़ी-संज्ञा स्त्री० २४ मिनट का समय। मौका, अवसर। समय बतलानेवाला एक यंत्र।
घड़ीसाज-संज्ञा पुं० घड़ी की मरम्मत करनेवाला।
घन-संज्ञा पुं० (सं०) बादल। लोहारों का हथौड़ा। वि० घना। मजबूत। गठा हुआ, अमेद्य।
घनघोर-संज्ञा पुं० बादल की आवाज बहुत भारी आवाज या ध्वनि
घनचक्कर-संज्ञा पुं० चंचल बुद्धि का मनुष्य। मूढ़, मूर्ख।
घनत्व-संज्ञा पुं० (सं०) घना होना।
घननाद-संज्ञा पुं० (सं०) मेघनाद।
घनश्याम-संज्ञा पुं० (सं०) काला बादल। श्रीकृष्ण।
घनसार-संज्ञा पुं० (सं०) कपूर।
घना-वि० एक-दूसरे से गुथा हुआ, या सटा हुआ। पास का।
घनाक्षरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक छन्द, कवित्त।
घनिष्ठ-वि० (सं०) गाढ़ा, घना। निकट का, समीप का, अंतरंग।
घपला-संज्ञा पुं० गड़बड़ गोलमाल।
घमंडी-वि० अहंकारी, अभिमानी।
घमसान, घमासान-संज्ञा पुं० बहुत भारी घोर लड़ाई।
घर-संज्ञा पुं० रहने की जगह, मकान।
घरघालन-वि० घर बिगाड़नेवाला। कुल का नाश करनेवाला।
घरद्वार-संज्ञा पुं० रहने का स्थान। घर का प्रबन्ध, गृहस्थी।
घरफोरी-संज्ञा स्त्री० घर या परिवार में झगड़ा फैलानेवाली स्त्री।
घरबारी-संज्ञा पुं० बाल-बच्चोंवाला। कुटुम्बी, गृहस्थ।
घराना-संज्ञा पुं० वंश, परिवार।
घरेलू-वि० घर का। घर से सम्बन्ध रखनेवाला। घर में ही रहनेवाला।
घरौंदा, घरौंधा-संज्ञा पुं० बच्चों का खेल में बनाया हुआ मिट्टी, कागज आदि का घर। छोटा घर।

घसियारा-संज्ञा पुं० घास छीलने तथा बेचनेवाला।

घाऊघप-वि० चुपचाप माल उड़ा जाने वाला।

घाट-संज्ञा पु० तालाब, नदी आदि के किनारे वह स्थान जहाँ लोग नहाते धोते हैं।

घाटा-संज्ञा पुं० हानि, नुकसान।

घाटी-संज्ञा स्त्री० पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग, दर्रा।

घात-संज्ञा पुं० धक्का, प्रहार, चोट, आघात। बुराई। गणित में गुणनफल।

घातिनी-वि० स्त्री० (सं०) दूसरे का वध कर डालनेवाली स्त्री।

घाती-वि० मारनेवाला; घातक।

घामड़-वि० धूप से परेशान जानवर। मूर्ख।

घायल-वि० चोट खाया हुआ, आहत।

घालक-संज्ञा पुं० मारने या नाश करनेवाला।

घाव-संज्ञा पुं० कटा या फटा हुआ शरीर का अंग, जख्म।

घिग्घी-संज्ञा स्त्री० साँस लेने में रुकावट होना। बोलने में रुकावट जो भय में होती है।

घिघियाना-क्रि० अ० रो-रोकर करुण स्वर से निवेदन करना।

घिचपिच-संज्ञा स्त्री० कम जगह होना। जरा-सी जगह में बहुत चीजें भरी होना।

घिन-संज्ञा स्त्री० कोई चीज अच्छी न लगना, घृणा। गन्दी चीज को देखकर जी मिचलाना।

घिनाना-क्रि० अ० घृणा होना।

घिनावना-वि० जिसे देखकर मन में घृणा उत्पन्न हो।

घिस्सा-संज्ञा पुं० रगड़ जाना, घिस जाना। लड़कों का एक खेल।

घुंघराले-वि० टेढ़े-मेढ़े बाल।

घुंघुवारे-वि० देखिए 'घुंघराले'।

घुंडी-संज्ञा स्त्री० किसी चीज का गोल गाँठदार सिरा।

घुग्घू-संज्ञा पु० उल्लू नामक पक्षी।

घुटना-संज्ञा पु० पैर के बीच की गाँठ, जोड़। क्रि० अ० अन्दर ही अन्दर साँस का दबना या रुकना।

घुटवाना-क्रि० स० किसी दूसरे व्यक्ति से घोटने का काम कराना।

घुटाई-संज्ञा स्त्री० घोटना या रगड़ना।

घुटाना-क्रि० स० देखिए 'घुटवाना'।

घुट्टी-संज्ञा स्त्री० बच्चों को पाचन के लिए पिलानेवाली दवा।

घुड़कना-क्रि० स० गुस्सा होकर किसी को डाँटना, डपटना।

घुड़की-संज्ञा स्त्री० डाँट-फटकार।

घुड़चढ़ी-संज्ञा स्त्री० एक रीति जिसमें विवाह से पूर्व वर घोड़े पर चढ़कर कन्या के घर आता है।

घुड़दौड़-संज्ञा स्त्री० घोड़ों को दौड़ाने का खेल।

घुड़साल-संज्ञा स्त्री० जहाँ घोड़े बाँधे जायँ, अस्तबल।

घुन-संज्ञा पुं० अनाज, लकड़ी आदि में लगनेवाला एक छोटा कीड़ा।

घुनना-क्रि० अ० किसी चीज में घुन का लगना। किसी बुराई से भीतर ही भीतर नष्ट होना।

घुन्ना-वि० अपने मन के भावों को किसी से न बतानेवाला,

घुमक्कड़-वि० बहुत घूमनेवाला।

घुमड़ना-क्रि० अ० इकट्ठा या घना होना। बादलों का इकट्ठा होना या छा जाना।

घुसपैठ-संज्ञा स्त्री० पहुँच।

घूँघट-संज्ञा पुं० वस्त्र का वह भाग जिससे स्त्री का मुँह ढँका रहे।

घूँघरवाले-वि० घुँघराले, झबरीले।

घूँटना-क्रि० स० किसी तरल पदार्थ को पीना।

घूँसा-संज्ञा पुं० मुक्का।

घूरना-क्रि० अ० ध्यान से एक वस्तु की ओर एकटक देखना।

घूस-संज्ञा स्त्री० एक चूहे का-सा जन्तु।

घृणा-संज्ञा स्त्री० घिन, नफरत।

घृणित-वि० (सं०) घृणा करने योग्य। जिससे घृणा हो।

घृत-संज्ञा पुं०(सं०) घी।

घेरा-संज्ञा पुं० किसी स्थान के चारों ओर बाँधी या बनायी हुई वस्तु। घिरा हुआ स्थान, हाता।

घोटना-क्रि० स० रगड़ना। महीन पीसना। रटना, याद करना। [illegible]

घोटाला-संज्ञा पुं० गड़बड़, उपद्रव।

घोड़ा-संज्ञा पुं० सवारी आदि के काम आनेवाला एक पशु।

घोड़ी-संज्ञा स्त्री० घोड़े की मादा।

घोर-वि० (सं०) बहुत डरावना, भयंकर। घना। कठिन।

घोल-संज्ञा पुं० पानी आदि में घोलकर बनाया हुआ।

घोष-संज्ञा पुं० शब्द, ध्वनि। गरजना।

घोषणा-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी बात को जनता में ऊँचे स्वर से कहना। राजाज्ञा का प्रचार।

घोसी-संज्ञा पुं० अहीर, ग्वाला।

घ्राण-संज्ञा स्त्री० (सं०) सूँघने की ताकत। सुगन्ध, नाक।

चँदवा-संज्ञा पुं० छोटा मंडप। गोल चकती।

चंक्रमण-संज्ञा पुं० (सं०) इधर-उधर बारम्बार घूमना।

चंगुल-संज्ञा पुं० पशुओं या चिड़ियों का टेढ़ा पंजा।

चंचल-वि० (सं०) एक स्थान पर न ठहरनेवाला, चलायमान। अधीर। घबराया हुआ। शैतान, [illegible]

चंचलता, चंचलताई-संज्ञा स्त्री० (सं०) स्थिर न रहने की दशा, अधीरता, चपलता। शरारत।
चंचु-संज्ञा स्त्री० (सं०) चिड़ियों की चोंच।
चंट-वि० धूर्त, सयाना, चतुर।
चंड-वि० (सं०) तेज, उग्र, तीक्ष्ण।
चंडकर-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य।
चंडालिनी-संज्ञा स्त्री० दुष्टा स्त्री।
चंडिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुर्गा। झगड़ालू और कर्कशा स्त्री।
चंडू-संज्ञा पुं० अफीम का किवाम।
चंडूखाना-संज्ञा पुं० जहाँ लोग चंडू पियें।
चंद-संज्ञा पुं० चंद्रमा, कपूर।
चंदनगिरि-संज्ञा पुं० (सं०) मलयाचल पर्वत।
चन्दनहार-संज्ञा पुं० गले का एक गहना।
चंदा-संज्ञा पुं० चन्द्रमा। किसी काम के लिए थोड़ा-थोड़ा हर व्यक्ति से लिया गया धन।
चंद्र-संज्ञा पुं० चंद्रमा, कपूर।
चंद्रक-संज्ञा पुं० चाँदनी, चंद्र-किरण।
चंद्रकांत-संज्ञा पुं० (सं०) एक रत्न या मणि जो चन्द्रमा की किरणों से छूकर पसीजता है।
चन्द्रग्रहण-संज्ञा पुं० चन्द्रमा का ग्रहण पड़ना।
चंद्रप्रभा-संज्ञा स्त्री० (सं०) चन्द्रमा की रोशनी, किरण या ज्योति।
चंद्रबिंदु-संज्ञा पुं० (सं०) अर्ध अनुस्वार या बिन्दु ँ
चंद्रबिंब-संज्ञा पुं० (सं०) चन्द्रमा का मंडल।
चंद्रमा-संज्ञा पुं० रात में आकाश में चमकनेवाला ग्रह, चाँद।
चंद्ररेखा, चंद्रलेखा-संज्ञा स्त्री० चाँदनी, चन्द्रमा की किरण।
चंद्रशेखर-संज्ञा पुं० (सं०) शिव।
चंद्रहास-संज्ञा पुं० (सं०) तलवार।
चंद्रिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) चन्द्रमा की रोशनी, चाँदनी।
चंद्रोदय-संज्ञा पुं० (सं०) चन्द्रमा का उदय।
चंपई-वि० चम्पा के रंग का, पीला।
चंपत-वि० (देश०) गायब, भागा हुआ।
चंपा-संज्ञा पुं० पीले फूलों का एक पौदा।
चकई-संज्ञा स्त्री० मादा चकवा।
चकचाल-संज्ञा पुं० (ग्रा०) चक्कर।
चकचौंध-संज्ञा स्त्री० चकाचौंध।
चकत्ता-संज्ञा पुं० शरीर पर किसी कारण हो गया हुआ दाग।
चकनाचूर-वि० बिलकुल टूटा हुआ, चूर-चूर, बहुत थका हुआ।
चकपकाना-क्रि० अ० आश्चर्य से इधर-उधर ताकना। चौंकना।
चकमक-संज्ञा पुं० एक पत्थर जिसे रगड़ने से आग निकलती है।
चकमा-संज्ञा पुं० धोखा। भुलावा।
चकराना-क्रि० अ० सिर घूमना। चकित होना, भूलना।
चकला-संज्ञा पुं० पीढ़ा, जिस पर रोटी आदि बेली जाती है।

रंडियों का मोहल्ला, वि० चौड़ा।
चकवा-संज्ञा पुं० एक जल-पक्षी।
चकाचक-वि० लथ-पथ। क्रि० वि० भरपूर, पेट भरकर।
चकाचौंध-संज्ञा स्त्री० प्रकाश के कारण आँखें झपकना।
चकित-वि० (सं०) आश्चर्य में पड़ा हुआ, हैरान। डरा हुआ।
चकोटना-क्रि० स० चुटकी काटना।
चकोर-संज्ञा पुं० (सं०) एक पहाड़ी तीतर।
चक्का-संज्ञा पुं० पहिया।
चक्र-संज्ञा पुं० पहिया, जाँता। कुम्हार का चाक। एक अस्त्र। पानी का भँवर, चक्कर।
चक्रधर, चक्रधारी-वि० (सं०) विष्णु। श्रीकृष्ण।
चक्रवर्ती-वि० सारे विश्व का सम्राट्।
चक्रवात-संज्ञा पुं० बवंडर।
चक्रव्यूह-संज्ञा पुं० (सं०) युद्ध में एक प्रकार का घेरा।
चक्री-संज्ञा पुं० तेली, चक्रवर्ती।
चक्षु, चक्षुरिन्द्रिय-संज्ञा पुं० स्त्री० देखने की इन्द्रिय, आँख।
चख-संज्ञा पुं० आँख, झगड़ा।
चटक-संज्ञा पुं० (सं०) चमकीला। वि० तीक्ष्ण स्वाद, चटपटा।
चटकनी-संज्ञा स्त्री० दरवाजे की सिटकनी।
चटक-मटक-संज्ञा स्त्री० शृंगार। आकर्षक वेशभूषा। सजावट।
चटकारा-वि० चटकीला। तेज।
चटकाली-संज्ञा स्त्री० चिड़ियों की कतार।
चटकीला-वि० तेज, भड़कीला। गहरे रंग का, चमकदार, चटपटा।
चटखना-क्रि० स० 'चट' से टूटना। कलियों का खिलना।
चटपट-क्रि० वि० तुरंत, फौरन।
चटपटा-वि० तेज। तीक्ष्ण स्वाद का।
चटपटी-संज्ञा स्त्री० जल्दबाजी। व्यग्रता, घबराहट, बेचैनी।
चटुल-वि० (सं०) चंचल। चालाक।
चटोरा- अच्छी-अच्छी वस्तुएँ खाने की लतवाला।
चट्टी-संज्ञा स्त्री० टिकान, पड़ाव।
चढ़ाई-संज्ञा स्त्री० ऊपर चढ़ना। ऊँचा होना। शत्रु के ऊपर आक्रमण करना, धावा।
चतुर-वि० पुं० फुरतीला। तेज। होशियार। चालाक।
चतुरई, चतुरता, चतुरपन, चतुराई-संज्ञा स्त्री० होशियारी, चालाकी।
चतुरानन-संज्ञा पुं० (सं०) चार मुखवाला, ब्रह्मा।
चतुर्गुण-वि० (सं०) चार गुणों-वाला। चौगुना।
चतुर्थ-वि० (सं०) चौथा।
चतुर्थाश्रम-संज्ञा पुं० (सं०) वैदिक रीति से चौथा आश्रम, संन्यास।
चतुर्थी-संज्ञा स्त्री० चौथ, चौथी तिथि।
चतुर्दशी-संज्ञा स्त्री० (सं०) चौदस, चौदहवीं तिथि।
चतुर्दिक-संज्ञा पुं० (सं०) चारों

दिशाएँ। क्रि० वि० चारों ओर।
चतुर्भुज-वि० (सं०) चार भुजाओं-वाला।
चतुर्भुजा-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक गायत्री-रूप-धारिणी देवी।
चतुर्मास-संज्ञा पुं० चौथा माह।
चतुर्युगी-संज्ञा स्त्री० (सं०) चारों युगों का समय।
चतुर्वर्ग-संज्ञा पुं० (सं०) अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष नाम के चार वर्ग।
चतुर्वर्ण-संज्ञा पुं० (सं०) चार वर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
चतुर्वेद-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर। परमेश्वर,चारों वेद।
चतुष्कोण-वि० (सं०) चार कोनों-वाला, चौकोर।
चतुष्टय-संज्ञा पुं० (सं०) चार चीजों का समुदाय।
चतुष्पथ-संज्ञा पुं० (सं०) चौराहा।
चतुष्पद-संज्ञा पुं० (सं०) चौपाया। वि० चार पैरोंवाला।
चपकन-संज्ञा स्त्री० एक वस्त्र, अचकन।
चपटा-वि० देखिए 'चिपटा'।
चपत-संज्ञा पुं० हाथ से मारना, थप्पड़। हानि, नुकसान।
चपरास-संज्ञा स्त्री० चौकीदारों की पेटी। मुलम्मा करने की कलम।
चपरासी-संज्ञा पुं० चपरास पहने हुए नौकर, अर्दली,प्यादा।
चपल-वि० (सं०) चंचल, स्थिर न रहनेवाला। चतुर।
चपलता-संज्ञा स्त्री० (सं०) स्थिर न होना, चंचलता। धृष्टता।
चपला-वि० स्त्री० (सं०) चंचल। तेज।
चपाती-संज्ञा स्त्री० पतली हाथ से बेलकर बनायी रोटी।
चपेट-संज्ञा स्त्री० धक्का, आघात, झोंका, दबाव, थप्पड़, संकट।
चप्पा-संज्ञा पुं० चौथाई भाग, थोड़ा भाग, थोड़ा स्थान।
चमक-संज्ञा स्त्री० प्रकाश, आभा।
चमक-दमक-संज्ञा स्त्री० रोशनी। तड़क-भड़क, ठाटबाट।
चमकाना-क्रि० अ० चमक लाना, दमकना। चौंकाना, भड़काना।
चमकाना-क्रि० स० प्रकाश करना। साफ करके चमक लाना। आश्चर्य में डालना। मटकाना।
चमकीला-वि० प्रकाश या चमक वाला। चमकदार। भड़कीला।
चमक्को-संज्ञा स्त्री० चमकने या दिखावेवाली स्त्री।
चमड़ा, चमड़ी-संज्ञा पुं० स्त्री० जीवों के शरीर का ऊपरी भाग, चर्म,त्वचा खाल,छाल,छिलका।
चमत्कार-संज्ञा पुं० (सं०) आश्चर्य, अचम्भा।
चमत्कारी-वि० (सं०) आश्चर्य पैदा करनेवाला व्यक्ति। अद्भुत।
चमत्कृत-वि० (सं०) आश्चर्य या आश्चर्ययुक्त,विस्मित।
चमत्कृति-संज्ञा स्त्री० आश्चर्य, [illegible]

चमन-संज्ञा पुं० (फा०) छोटा बाग। हरा-भरा मैदान।

चमर-संज्ञा पुं० (सं०) सुरागाय की पूंछ का बना चँवर।

चय-संज्ञा पुं० ढेर, समूह, झुण्ड।

चर-संज्ञा पुं० (सं०) राजा की ओर से चुपचाप भेद लेनेवाला व्यक्ति।

चरकटा-संज्ञा पुं० चारा काटनेवाला व्यक्ति। तुच्छ मनुष्य।

चरका-संज्ञा पुं० धोखा, छल।

चरखा-संज्ञा पुं० सूत कातनेवाला लकड़ी का हाथ से चलाने का छोटा यंत्र। झगड़े-बखेड़े का काम।

चरखी-संज्ञा स्त्री० कुएँ से पानी खींचने की गराड़ी। पतंग की डोर लपेटने की वस्तु।

चरण-संज्ञा पुं० पाँव, पैर, मूल।

चरण-चिह्न-संज्ञा पुं० पैर के तलवे का निशान।

चरण-पीठ-संज्ञा पुं० चरण-पादुका।

चरणामृत, चरणोदक-संज्ञा पुं० (सं०) चरणों को धोकर निकला हुआ जल। दूध, दही, घी, शक्कर आदि मिलाकर देव-मूर्ति को स्नान करा के प्राप्त हुआ पदार्थ।

चरबी-संज्ञा स्त्री० (फा०) जीवों के शरीर में पाया जानेवाला पीला गाढ़ा पदार्थ।

चरम-वि० (सं०) सबसे ऊँचा या बड़ा। अन्तिम। अन्त का।

चरवाहा-संज्ञा पुं० गाय, भैंस आदि चरानेवाला। चौपायों का रक्षक।

चरस-संज्ञा पुं० खत सींचने को चमड़े का बना बड़ा डोल, चरसा।

चरागाह-संज्ञा पुं० (फा०) वह घास का मैदान जिसमें गाय, भैंस आदि चराई जाती हैं।

चराचर-वि० (सं०) चर और अचर, जड़ और चेतन। संसार।

चरित-संज्ञा पुं० करतूत, चरित्र, आचरण, जीवनी।

चरितनायक-संज्ञा पुं० (सं०) किसी पुस्तक में वर्णित प्रधान व्यक्ति।

चरितार्थ-वि० (सं०) जिसका मतलब पूरा हो चुका हो।

चरित्र-संज्ञा पुं० (सं०) स्वभाव, करनी; **–हीन**– वि० दुश्चरित्र।

चरित्रनायक-संज्ञा पुं० देखिए 'चरितनायक'।

चरित्रवान्-वि० अच्छे या ऊँचे चरित्रवाला।

चर्चन-संज्ञा पुं० (सं०) लेपन।

चर्चा-संज्ञा स्त्री० वर्णन। जिक्र।

चर्चित-वि० (सं०) पोता या लेपा हुआ। चर्चा किया हुआ।

चर्म-संज्ञा पुं० चमड़ा, ढाल।

चर्मकार-संज्ञा पुं० (सं०) चमड़े का काम करनेवाला, चमार।

चर्मचक्षु-संज्ञा पुं० (सं०) साधारण दृष्टि का मनुष्य।

चर्वण-संज्ञा पुं० (सं०) चबाना।

चर्वित-वि० (सं०) चबाया हुआ।

चल-वि० (सं०) चंचल। संज्ञा पुं० पारा, धोखा, कपट, छल।

[illegible] गतिमान, चलता हुआ।

चलन-संज्ञा पुं० रीति, तरीका। गति, चाल।
चलाचली-संज्ञा स्त्री० चलने की तैयारी या क्रिया।
चलान-संज्ञा स्त्री० चलने का काम, चाल। अपराधी को पकड़कर न्यायालय ले जाना।
चलायमान-वि० (सं०) चलनेवाला, चंचल, विचलित।
चलित-वि० (सं०) चलता हुआ।
चवर्ग-संज्ञा पुं० (सं०) च से ञ तक के अक्षरों का समूह।
चवाई-संज्ञा पुं० दुर्नाम फैलानेवाला।
चवाव-संज्ञा पुं० इधर-उधर फैलनेवाली निन्दा की चर्चा।
चश्म-संज्ञा स्त्री० आँख, नेत्र।
चश्मदीद-वि० (फा०) आँखोंदेखा।
चहक-संज्ञा स्त्री० चिड़ियों की मधुर कलरव।
चहकना-क्रि० अ० चिड़ियों का चहचहाना। प्रसन्नता से बोलना।
चहलकदमी-संज्ञा स्त्री० धीरे-धीरे टहलना।
चहलपहल-संज्ञा स्त्री० बहुत से लोगों का होना, रौनक।
चहारदीवारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) चारों ओर की घेरे की दीवार।
चहुवान-संज्ञा पुं० एक वर्ग, चौहान।
चहेता-वि० चाहा जानेवाला, प्यारा।
चाँद-संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
चाँदनी-संज्ञा स्त्री० चन्द्रमा की
चाँपना-क्रि० स० दबाना।
चांडाल-संज्ञा पुं० (सं०) एक नीच जाति। पतित या पापी मनुष्य।
चांद्र-वि० (सं०) चाँद-संबंधी।
चांद्रमास-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी की परिक्रमा करने में लगनेवाला चाँद का समय।
चांद्रायण-संज्ञा पुं० (सं०) एक व्रत।
चाक-संज्ञा पुं० कुम्हार का बरतन बनाने का चक्का।
चाकचक्य-संज्ञा स्त्री० उज्ज्वलता। चमक-दमक। सुन्दरता।
चाकर-संज्ञा पुं० (फा०) नौकर।
चाकरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) नौकरी।
चाक्षुष-वि० (सं०) आँख से संबंधित।
चाट-संज्ञा स्त्री० चटपटी चीजें। स्वादिष्ठ चीजें खाने की इच्छा।
चाटु-संज्ञा पुं० (सं०) मीठी खुशामदी बात।
चाटुकार-संज्ञा पुं० (सं०) खुशामद या चापलूसी करनेवाला।
चाटुकारी-संज्ञा स्त्री० चापलूसी।
चातक-संज्ञा पुं० (सं०) एक पक्षी।
चातुरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) चालाकी।
चातुर्मासिक-वि० (सं०) चार माह पर होनेवाले यज्ञ कर्म आदि।
चातुर्मास्य-संज्ञा पुं० (सं०) चार माह का यज्ञ। चार माह का एक व्रत।
चातुर्य-संज्ञा पुं० (सं०) चतुराई।
चाप-संज्ञा पुं० (सं०) धनुष।
चापलूस-वि० (फा०) खुशामदी।

चाबी-संज्ञा स्त्री० जिससे ताला खोला जाय, कुंजी।
चाबुक-संज्ञा पुं० (फा०) कोड़ा।
चाभी-संज्ञा स्त्री० देखिए 'चाबी'।
चामुंडा-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक देवी।
चारण-संज्ञा पुं० (सं०) राजवंश की बड़ाई गानेवाला, भाट।
चारदीवारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) चारों ओर का दीवाल का घेरा।
चारपाई-संज्ञा स्त्री० खटिया।
चारित्र-संज्ञा पुं० (सं०) चाल-चलन, स्वभाव।
चारित्र्य-संज्ञा पुं० (सं०) चरित्र।
चारी-वि० चलनेवाला । संज्ञा पुं० पैदल सिपाही।
चारु-वि० (सं०) सुन्दर।
चारुता-संज्ञा स्त्री० (सं०) सुन्दरता।
चारुहासिनी-वि० स्त्री० (सं०) सुन्दर मुसकानवाली स्त्री।
चालक-वि० (सं०) चलानेवाला।
चालचलन-संज्ञा पुं० आचरण, शील, चरित्र।
चालढाल-संज्ञा स्त्री० तौर-तरीका।
चालन-संज्ञा पुं० (सं०) चलाने का काम। गति।
चालबाज-वि० धूर्त, कपटी।
चालाक-वि० (फा०) चतुर, चालबाज, धूर्त।
चालान-संज्ञा पुं० बीजक।
चासा-संज्ञा पुं० किसान, खेतिहर।
चाह-संज्ञा स्त्री० इच्छा, प्रीति, गुप्त भेद, चाय, चाव।
चाहत-संज्ञा स्त्री० चाह। प्रेम।
चाहना-क्रि० स० इच्छा या प्रेम करना, निहारना, ताकना, खोजना।
चिंघाड़-संज्ञा स्त्री० हाथी की बोली।
चिंतक-वि० (सं०) चिन्ता करने या मनन करनेवाला।
चिंतन-संज्ञा पुं० (सं०) ध्यान करना। सोचना, विचारना।
चिंतनीय-वि० (सं०) सोचने या चिंता करने योग्य।
चिंता-संज्ञा स्त्री० सोच, फिक्र।
चिंतामणि-संज्ञा पुं० (सं०) एक रत्न। सरस्वती का एक मंत्र।
चिंतित-वि० (सं०) सोच या ध्यान में लगा हुआ।
चिंत्य-वि० (सं०) चिंतन करने योग्य।
चिकित्सा-संज्ञा स्त्री० (सं०) दवा करना। इलाज करना।
चिकित्सालय-संज्ञा पुं० (सं०) जहाँ दवा की जाय, अस्पताल।
चिकोटी-संज्ञा स्त्री० नाखून से मांस दबाना, चुटकी। मुट्ठी भर।
चिक्कण-वि० (सं०) चिकना।
चिट-संज्ञा स्त्री० कागज, कपड़े आदि के छोटे टुकड़े।
चिट्टा-वि० सफेद।
चिट्ठा-संज्ञा पुं० लेखा-जोखा। खर्च का विवरण, ब्योरा। लेख।
चिट्ठी-संज्ञा स्त्री० समाचार लिखा हुआ कागज, पत्र।
चिट्ठी-पत्री-संज्ञा स्त्री० पत्र। पत्र-व्यवहार।
चिट्ठीरसाँ-संज्ञा पुं० डाकिया।

चिड़चिड़ा-संज्ञा पुं० एक पौदा। वि० जल्दी चिढ़ने या अप्रसन्न होनेवाला।
चिड़ा-संज्ञा पुं० गौरैया पक्षी।
चिड़ीमार-संज्ञा पुं० चिड़िया पकड़ने या मारनेवाला, बहेलिया।
चिढ़-संज्ञा स्त्री० चिढ़ना कुढ़न।
चितकबरा-वि० छिट्टीदार कई रंगों का। कबरा। चितला।
चितचोर-संज्ञा पुं० चित्त को चुरानेवाला, प्यारा, प्रिय, मनोहर।
चितवन-संज्ञा स्त्री० देखना, दृष्टि।
चिता-संज्ञा स्त्री० मुर्दा जलाने के लिए चुनी हुई लकड़ियाँ।
चिताना-क्रि० स० सचेत करना। याद दिलाना। आग जलाना।
चितावनी-संज्ञा स्त्री० सावधान किया जाना।
चिति-संज्ञा स्त्री० चिता, ढेर, संग्रह, ईंटों की जोड़ाई, चैतन्य, दुर्गा।
चितौन-संज्ञा स्त्री० देखिए 'चितवन'।
चित्त-संज्ञा पुं० जी, मन, हृदय।
चित्तविक्षेप, चित्तविभ्रम-संज्ञा पुं० (सं०) मन की ऐसी अवस्था जिसमें समझ काम न करे।
चित्ती-संज्ञा स्त्री० शरीर पर का छोटा दाग।
चित्रकला-संज्ञा स्त्री० (सं०) चित्र या तसवीर बनाने की विद्या।
चित्रकार-संज्ञा पुं० (सं०) चित्र बनानेवाला, चितेरा।
चित्रकारी-संज्ञा स्त्री० चित्र बना सकने की कला, चित्रविद्या।
चित्रगुप्त-संज्ञा पुं० (सं०) यमराज जो प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा-जोखा रखते हैं।
चित्रपट-संज्ञा पुं० (सं०) वह वस्तु जिस पर चित्र बनाया जाता है।
चित्रमृग-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्रकार का चितकबरा हिरन।
चित्रशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह स्थान जहाँ चित्र बनाए जायँ।
चित्रसारी-संज्ञा स्त्री० सजा हुआ कमरा, विलास-भवन।
चित्रिणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) स्त्रियों के चार भेदों में एक।
चित्रित-वि० चित्र में बनाया हुआ। चित्रों द्वारा सजा-सजाया।
चिदात्मा, चिदानंद-संज्ञा पुं० ब्रह्म।
चिनगारी-संज्ञा स्त्री० आग का छोटा कण, अग्निकण।
चिनगी-संज्ञा स्त्री० चिनगारी।
चिनिया बदाम-संज्ञा पुं० मूँगफली।
चिन्मय-वि० (सं०) ज्ञान-युक्त। संज्ञा पुं० परमेश्वर।
चिपटा-वि० चिपका या सटा हुआ।
चिबुक-संज्ञा पुं० ठुड्डी, ठोडी।
चिरंजीव-वि० (सं०) अशीर्वाद देने का शब्द।
चिरंतन-वि० (सं०) पुरातन।
चिर-वि० (सं०) बहुत दिनों तक रहनेवाला।
चिरकाल-संज्ञा पुं० (सं०) बहुत समय तक। दीर्घ काल।
चिरजीवी-वि० (सं०) बहुत दिनों

तक जीनेवाला, अमर।
चिरस्थायी-वि० बहुत दिनों तक रहनेवाला।
चिरस्मरणीय-वि० (सं०) बहुत दिनों तक याद रखा जाने योग्य। पूजनीय।
चिराग-संज्ञा पुं० (फा०) दीपक।
चिरायता-संज्ञा पुं० दवा के काम आनेवाला एक कड़वा पौधा।
चिरायु-वि० बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला।
चिलक-संज्ञा स्त्री० रहरहकर उठनेवाला दर्द। टीस। चमक।
चिलगोजा-संज्ञा पुं० (फा०) एक मेवा।
चिलमन-संज्ञा स्त्री० (फा०) बाँस की खपाचियों का बना परदा, चिक।
चिल्ला-संज्ञा पुं० (फा०) चालीस दिन का जाड़े का समय।
चिन्हित-वि० (सं०) निशान लगाया हुआ।
चीं खपड़-संज्ञा स्त्री० बीच में बोलना, विरोध में कुछ कहना या करना।
चीकट-वि० बहुत मैला।
चीता-संज्ञा पुं० एक हिंसक पशु। वि० सोचा-विचारा हुआ।
चीत्कार-संज्ञा पुं० (सं०) चिल्लाहट।
चीना बदाम-संज्ञा पुं० मूँगफली।
चीनी-संज्ञा स्त्री० शक्कर। वि० चीन देश का रहनेवाला।
चीर-संज्ञा पुं० (सं०) कपड़ा। फटा कपड़ा, चिथड़ा। एक वृक्ष। संज्ञा स्त्री० चीरना या फाड़ना। दरार, मल्ल-युद्ध की एक युक्ति।
चुंबक-संज्ञा पुं० (सं०) एक पत्थर जो लोहे को अपनी ओर घसीट लेता है। कामुक व्यक्ति।
चुंबन-संज्ञा पुं० (सं०) होठों से किसी व्यक्ति के अंगों को छूना।
चुंबित-वि० (सं०) चूमा हुआ।
चुआन-क्रि० स० बूँद-बूँद टपकना।
चुकता, चुकती-वि० लिया हुआ धन दे दिया गया, अदा।
चुकाना-क्रि० स० लिया हुआ धन लौटाना, ऋण निःशेष करना।
चुगद-संज्ञा पुं० (फा०) उल्लू पक्षी, मूर्ख व्यक्ति।
चुगलखोर-संज्ञा पुं० (फा०) पीछे से किसी व्यक्ति की बुराई या चुगली करनेवाला।
चुटकी-संज्ञा स्त्री० अँगूठे और एक उँगली को मिलाना।
चुटकुला-संज्ञा पुं० छोटी-सी मजेदार बात, लतीफा।
चुटीला-वि० चोट खाया हुआ।
चुनाव-संज्ञा पुं० कई में से किसी एक को लेना, चुनने का काम।
चुनिंदा-वि० चुना हुआ, सबसे अच्छा, बढ़िया, श्रेष्ठ, उत्तम।
चुनौती-संज्ञा स्त्री० बढ़ावा, उत्तेजना, ललकार, लड़ने के लिये पुकार।
चुप्पा-वि० चुप रहनेवाला, कम बोलनेवाला। घुन्ना।
चुप्पी-संज्ञा स्त्री० चुप रहना, मौन।
चुमकारना-क्रि० स० मुँह से चूमने

का शब्द निकाल कर प्यार करना।

चुरमुरा-वि० 'चुरमुर' कर के जल्दी टूटनेवाला, कुरकुरा।

चुल-संज्ञा स्त्री० अस्थिर, चंचल।

चुलबुला-वि० चंचल, नटखट।

चुलबुलापन-संज्ञा पुं० चंचलता। शोखी। चपलता।

चुस्त-वि० (फा०) कसा हुआ, 'फिट'। फुरतीला। मजबूत।

चुहल-संज्ञा स्त्री० हँसी-मजाक।

चुहलबाज-वि० हँसी-मजाक करनेवाला, मसखरा।

चूंकि-क्रि० वि० (फा०) इस कारण से, क्योंकि।

चूक-संज्ञा स्त्री० भूल। गलती।

चूकना-क्रि० अ० भूल जाना। गलती करना। अवसर गवाँ देना।

चूची-संज्ञा स्त्री० स्तन।

चूडांत-वि० (सं०) अन्तिम सीमा।

चूड़ा-संज्ञा स्त्री० शिखा। चोटी। बाँह में पहनने का हाथी-दाँत का कड़ा।

चूड़ाकरण, **चूड़ाकर्म**-संज्ञा पुं० (सं०) बच्चे का पहले-पहल सिर मुंड़वाकर चोटी रखवाने का संस्कार। मूड़न।

चूड़ामणि-संज्ञा पुं० (सं०) सिर का एक गहना। सबसे अच्छा।

चूतड़-संज्ञा पुं० नितम्ब।

चूरा-संज्ञा पुं० खूब पिसा हुआ बुरादा, चूर्ण।

चूर्ण-संज्ञा पुं० (सं) खूब पिसा हुआ। हजम के लिए बनाया हुआ चूरन।

चूर्णित-वि० (सं०) खूब पिसा हुआ। चूर्ण किया हुआ।

चूसना-क्रि० स० किसी पदार्थ को जीभ से दबाकर उसका रस पीना।

चेट-संज्ञा पुं० (सं०) सेवक, नौकर।

चेटी-संज्ञा स्त्री० दासी, लौंडी।

चेत-संज्ञा पुं० चित्तवृत्ति, चेतना, बोध, स्मरण, सुध, चौकसी, चित्त।

चेतन-संज्ञा पुं० चेतनावाला, जीव। आत्मा। ईश्वर।

चेतनता-संज्ञा स्त्री० (सं०) चेतना होना, चैतन्य।

चेतना-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह शक्ति जिससे कुछ बोध हो। बुद्धि। होश।

चेतावनी-संज्ञा स्त्री० सँभलने या सतर्क होने के लिए कही हुई बात।

चेदिराज-संज्ञा पुं० (सं०) शिशुपाल।

चेपदार-वि० लसदार, चिपचिपा।

चेष्टा-संज्ञा स्त्री० प्रयत्न, कोशिश।

चैतन्य-संज्ञा पुं० (सं०) जिसमें चेतना हो, सचेता, सावधानी।

चैन-संज्ञा पुं० आनन्द, सुख।

चोकर-संज्ञा पुं० पिसे गेहूं, जौ आदि अनाज के छानने के बाद बचा छिलका।

चोगा-संज्ञा पुं० एक ढीला पैरों तक लटकता हुआ पहनावा, लबादा।

चोचला-संज्ञा पुं० नखरा, नाज।

चोज-संज्ञा पुं० चुटकुला। व्यंग्य।

चोब-संज्ञा स्त्री० (फा०) सोने-चाँदी [illegible] डंडा।

चोरमहल-संज्ञा पुं० छिपा महल जहाँ राजा-रईस लोग अपनी बिना ब्याही प्रेमिका को रखते हैं।

चोला-संज्ञा पुं० शरीर, तन। एक ढीला लम्बा कुरता।

चोषणा-संज्ञा पुं० (सं०) चूसना।

चोष्य-वि० (सं०) चूसने लायक।

चौंधियाना-क्रि० अ० अधिक प्रकाश के कारण आँखों का न ठहरना।

चौंर-संज्ञा पुं० चंवर। फुंदना।

चौकड़ी-संज्ञा स्त्री० हिरन की दौड़, छलांग, कूद।

चौकस-वि० होशियार, सचेत। चौकन्ना, ठीक।

चौकसी-संज्ञा स्त्री० देखभाल, होशियारी।

चौगान-संज्ञा पुं० (फा०) एक खेल। पोलो खेल का मैदान।

चौतुका-वि० चारों चरणों की तुक-वाला छंद।

चौथ-संज्ञा स्त्री० चौथी तिथि।

चौधरी-संज्ञा पुं० मुखिया, प्रधान व्यक्ति।

चौपट-वि० बरबाद, नष्ट-भ्रष्ट।

चौपड़-संज्ञा स्त्री० चौसर का खेल।

चौपथ-संज्ञा पुं० चौराहा।

चौपाल-संज्ञा पुं० छप्पर से छाया और चारों ओर से खुला बैठने का स्थान, बैठक।

चौमासा-संज्ञा पुं० बरसात के चार माह, वर्षा ऋतु में गाया जानेवाला गीत।

चौमुखा-वि० चार मुँह वाला।

चौमुहानी-संज्ञा स्त्री० चौराहा।

चौर-संज्ञा पुं० चोर, तस्कर।

चौरस्ता-संज्ञा पुं० चौराहा।

चौर्य-संज्ञा पुं० स्तेय, चोरी।

चौसर-संज्ञा पुं० एक बिसात पर चार रंग की गोटों से खेला जाने-वाला खेल। चार लड़ों का हार।

चौहट्टा-संज्ञा पुं० चौक।

चौहद्दी-संज्ञा स्त्री० चारों ओर का घेरा या सीमा।

चौहान-संज्ञा पुं० क्षत्रिय वर्ण की एक शाखा।

च्यवन-संज्ञा पुं० रसना, चूना, टपकना। एक ऋषि का नाम।

च्युत-वि० (सं०) गिरा हुआ। भ्रष्ट।

छंटना-क्रि० अ० चुनकर अलग किया जाना, मल निकल जाना।

छंद-संज्ञा पुं० वर्ण या मात्रा की गिनती के हिसाब से लिखा हुआ किसी कविता का एक पद।

छकड़ा-संज्ञा पुं० बोझ लादने की बैलों की गाड़ी; वि० टूटा-फूटा।

छकना-क्रि० अ० मन भर जाना। तृप्त होना, खा-पीकर तृप्त होना।

छटपटाना-क्रि० अ० बंधन में छूटने की कोशिश करना। पड़े-

शान होना, व्याकुल होना।
छटा-संज्ञा स्त्री० (सं०) शोभा, प्रकाश, सौन्दर्य, छवि, बिजली।
छठी-संज्ञा स्त्री० जन्म से छठे दिन अथवा छठे मास का पूजन।
छतरी-संज्ञा स्त्री० ऊपर छाया हुआ, छाता। मंडप। कुकुरमुत्ता।
छत्र-संज्ञा पुं० (सं०) छाता। राजाओं के ऊपर ताने जानेवाला छाता, एक राजचिह्न।
छत्रधारी-वि० छत्र धारण करनेवाला, राजा।
छत्रपति-संज्ञा पुं० राजा।
छत्री-वि० छत्रवाला। संज्ञा पुं० नापित, क्षत्रिय।
छद-संज्ञा पुं० आवरण, ढपना, तमाल वृक्ष, तेजपत्ता।
छप-संज्ञा पुं० छिपा हुआ।
छमक-संज्ञा पुं० झनझनाहट, छनकार।
छनिक-वि० (ग्रा०) क्षण भर या थोड़ी देर रुकनेवाला।
छपरखट, छपरखाट-संज्ञा स्त्री० वह पलंग जिस पर मसहरी या मच्छरदानी लगी हो।
छपाका-संज्ञा पुं० पानी का छींटा। पानी पर जोर से पड़ने का शब्द।
छप्पय-संज्ञा पुं० एक छंद।
छबि-संज्ञा स्त्री० सुन्दरता।
छबीला-वि० छैला, बाँका, सुंदर।
छमाछम-क्रि० वि० लगातार छम-छम शब्द होना।
छत्री-वि० छत्रवाला। संज्ञा पुं० नापित, क्षत्रिय।
छर्रा-संज्ञा पुं० छोटी कंकड़ी। बंदूक से चलायी जानेवाली गोली।
छल-संज्ञा पुं० (सं०) धोखा, कपट।
छलकना-क्रि० अ० किसी बरतन की वस्तु का बाहर उछलकर गिरना।
छलछंद-संज्ञा पुं० छल-कपट।
छलछिद्र-संज्ञा पुं० कपटी।
छलना-क्रि० स० धोखा देना।
छलनी-संज्ञा स्त्री० जिससे आटा आदि छाना जाय, चलनी।
छलावा-संज्ञा पुं० धोखा। भ्रम।
छलिया, छली-वि० छल करने या धोखा देनेवाला, कपटी।
छवि-संज्ञा स्त्री० शोभा, सुन्दरता। कांति, चमक, प्रतिकृति, चित्र।
छाँगुर-संज्ञा पुं० छः उंगलियों-वाला।
छाँह-संज्ञा स्त्री० छाया, परछाहीं, भूत-प्रेत का स्थान, शरण।
छागल-संज्ञा पुं० (सं०) बकरा।
छाछ-संज्ञा स्त्री० घी या मक्खन निकाला हुआ दूध या दही।
छाजन-संज्ञा पुं० वस्त्र।
छजना-क्रि० अ० शोभा देना।
छात्र-संज्ञा पुं० विद्यार्थी, चेला।
छात्रवृत्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) विद्यार्थी को शिक्षा में सहायता के लिए दिया जानेवाला धन।
छात्रालय-संज्ञा पुं० (सं०) छात्रों या विद्यार्थियों के रहने का स्थान, बोर्डिंग।
छानबीन-संज्ञा स्त्री० गहरी खोज, जाँच-पड़ताल

छाप-संज्ञा स्त्री० छापने से पड़ा निशान। प्रभाव, असर।
छाम-वि० क्षाम, दुर्बल, कृश।
छायापथ-संज्ञा पुं० (सं०) आकाश-गंगा। देवपथ। आकाश।
छार-संज्ञा पुं० नमक। क्षार, भस्म। राख, खाक।
छाल-संज्ञा स्त्री० वृक्ष आदि के ऊपर का भाग, वल्कल।
छाला-संज्ञा पुं० छाल या चमड़ा।
छावनी-संज्ञा स्त्री० छप्पर, पड़ाव, सेना के ठहरने का स्थान।
छिगुनी-संज्ञा स्त्री० सबसे छोटी ऊँगली। कनिष्ठिका।
छिछला-वि० गहरे का उलटा। उथला।
छिछोरा-वि० ओछा। क्षुद्र। नीच।
छिटकना-क्रि० अ० किसी चीज को इधर-उधर फैलाना, छितराना।
छिटकाना-क्रि० सं० चारों ओर फैलाना, बिखराना।
छिड़काव-संज्ञा पुं० पानी को चारों ओर छिड़कने की क्रिया।
छिड़ना-क्रि० अ० शुरू होना।
छितराना-क्रि० अ० किसी वस्तु या कुछ टुकड़ों को इधर-उधर फैलाना।
छिद्र-संज्ञा पुं० (सं०) छेद, सूराख; -दर्शी- दूसरे का दोष ढूंढ़नेवाला।
छिद्रान्वेषण-संज्ञा पुं० जरा-जरा से दोषों को ढूंढना।
छिद्रान्वेषी-वि० जरा-जरा से दोष ढूंढना, खुचुर करना या निकालना।
छिन--संज्ञा पुं० क्षण।
छिनाल-वि० स्त्री० परपुरुष से सम्भोग करनेवाली स्त्री, कुलटा।
छिन्न-भिन्न-वि० (सं०) टूटा-फूटा। तितर-बितर। नष्ट-भ्रष्ट।
छींटा-संज्ञा पुं० द्रव का हाथ में लेकर फेंका जाना।
छीछालेदर-संज्ञा स्त्री० बुरी दशा।
छीज-संज्ञा स्त्री० कमी, घाटा।
छीजना-क्रि० अ० कम होना, घटना।
छीन-वि० (ग्रा०) देखिए 'क्षीण'।
छुआछूत-संज्ञा स्त्री० नीच जाति के व्यक्ति को न छूने का नियम।
छुईमुई-संज्ञा स्त्री० एक पौदा जो छूने से मुरझाता है। लज्जावन्ती।
छुटकारा-संज्ञा पुं० बंधन से मुक्ति पाना या चिन्ता से निस्तार।
छूंछा-वि० जिसमें कुछ न हो, रिक्त, पोला।
छूत-संज्ञा स्त्री० स्पर्श, संसर्ग। गंदी या निषिद्ध वस्तु का छूना।
छेड़-संज्ञा स्त्री० तंग या परेशान करनेवाली बात कहना। मजाक। चिढ़ानेवाली बात।
छेड़ना-क्रि० स० भड़काना। चुटकी लेना। मजाक करना। चिढ़ाना।
छेदन-संज्ञा पुं० (सं०) छेद करने का काम, चीरफाड़, नाश, विध्वंस।
छेना-संज्ञा पुं० फटा हुआ दूध।
छेरी-संज्ञा स्त्री० बकरी। अजा।
छैला-संज्ञा पुं० बना-ठना दिखावा करनेवाला मनुष्य, शौकीन।
छोकड़ा-संज्ञा पुं० लड़का, बालक।
छोनिप-संज्ञा पुं० भूपति, राजा।
छोभ-संज्ञा पुं० चित्त की खलबली।

छोर-संज्ञा पुं० हद, सीमा। नोक।
छोह-संज्ञा पुं० प्रेम। दया, कृपा।

ज

जँचना-क्रि० अ० देखा-भाला जाना। अच्छा लगना। भला दीखना।
जंग-संज्ञा स्त्री० (फा०) लड़ाई, युद्ध।
जंगली-वि० जंगल में होनेवाला।
जंगी-वि० (फा०) लड़ाई से मतलब रखनेवाला, सैनिक, वीर; –जहाज(पुं० युद्धपोत।
जंघा-संज्ञा स्त्री० पैर के ऊपर का भाग। जाँघ, रान।
जंजाल-संज्ञा पुं० झंझट। परेशानी।
जंतर-मंतर-संज्ञा पुं० यंत्र-मंत्र। वेधशाला।
जंतु-संज्ञा पुं० (सं०) जन्म लेने-वाला, पशु, प्राणी, जानवर, जीव।
जंतुघ्न-वि० (सं०) जंतुओं का नाशकरने वाला।
जंत्र-संज्ञा पुं० यंत्र, कल। तांत्रिक यंत्र।
जंबु-संज्ञा पुं० (सं०) जामुन।
जंबुक-संज्ञा पुं० जामुन का पेड़।
जंबुद्वीप-संज्ञा पुं० (सं०) पुराणों के अनुसार एक द्वीप, इसमें भारत है।
जंबूरची-संज्ञा पुं० (फा०) तोप चलानेवाला, तोपची। सिपाही।
जक-संज्ञा स्त्री० जिद्द, हठ।
जक-संज्ञा स्त्री० (फा०) हार। घाटा।
जकड़ना-क्रि० स० कसकर बांधना या पकड़ना।
जख्मी-वि० चोट खाया हुआ, घाव लगा हुआ, घायल।
जखीरा-संज्ञा पुं० (अ०) जहां कुछ इकट्ठा किया जाय, खजाना।
जग-संज्ञा पुं० दुनिया। संज्ञा पुं० (ग्रा०) यज्ञ।
जगड्वाल-संज्ञा पुं० (सं०) बेकार का आयोजन। व्यर्थ का आडम्बर।
जगत्-संज्ञा पुं० दुनिया। संसार।
जगत-संज्ञा स्त्री० कुएँ के चारों ओर बना चबूतरा।
जगदंबा, जगदंबिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुर्गा।
जगदाधार-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर।
जगदीश्वर-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर।
जगदीश्वरी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
जगद्गुरु-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर। शिव। बहुत आदरणीय या पूज्य आचार्य की उपाधि।
जगद्धात्री-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुर्गा।
जगद्वंद्य-वि० (सं०) सारे संसार द्वारा पूजित।
जगन्नियंता-संज्ञा पुं० परमात्मा।
जगन्माता-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुर्गा।
जगमगाना-क्रि० अ० खूब चमकना।

जगरमगर-वि० खूब चमकीला। प्रकाशयुक्त।
जघन-संज्ञा पुं० (सं०) कमर से नीचे का भाग। नितम्ब।
जघन्य-वि० (सं०) बहुत बुरा, नीच। छोड़ने लायक, त्याज्य।
जच्चा-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसने अभी बच्चा जना हो।
जटा-संज्ञा स्त्री० (सं०) सिर के उलझे बाल।
जटाजूट-संज्ञा पुं० (सं०) लम्बे बालों का समूह। शिव की जटा।
जटाधर-वि० (सं०) जो जटा रक्खे। संज्ञा पुं० महादेव, शिव।
जटित-वि० (सं०) जड़ा हुआ।
जटिल-वि० (सं०) जटावाला, अत्यन्त कठिन, दुरूह।
जठर-संज्ञा पुं० (सं०) पेट। एक पेट का रोग। वि० बूढ़ा। कठिन।
जठराग्नि-संज्ञा स्त्री० अन्न को पचानेवाली पेट की अग्नि।
जड़-वि० (सं०) जिसमें चेतना न हो। मूर्ख। संज्ञा स्त्री० वृक्ष का पृथ्वी में दबा भाग। नींव।
जड़ता-संज्ञा स्त्री० चेतना का न होना, अचेतनता। मूर्खता, बेवकूफी।
जतन-संज्ञा पु० काम करने की तरकीब। यत्न, कोशिश।
जती-संज्ञा पुं० यति, संन्यासी।
जतु-संज्ञा पुं० (सं०) लाख। गोंद, लाह, शिलाजीत।
जतुगृह-संज्ञा पुं० (सं०) घास-फूस का बना हुआ घर।
जत्था-संज्ञा पुं० झुंड। समूह।
जदपि-क्रि० अ० यद्यपि, हालाँ कि।
जदुपति-संज्ञा पुं० श्री कृष्ण, यदुपति।
जन-संज्ञा पुं० लोक, लोग, समूह, अनुयायी, गँवार, दास, अनुचर।
जनक-संज्ञा पुं० (सं०) जन्म देनेवाला, पिता। सीता के पिता का नाम।
जनकपुर-संज्ञा पुं० (सं०) मिथिला की प्राचीन राजधानी।
जनकौर-संज्ञा पुं० जनक नगर।
जनखा-वि० औरतों के-से हाव-भाववाला व्यक्ति। हिजड़ा।
जनन-संज्ञा पुं० (सं०) उत्पत्ति, संस्कार, कुल, वंश, पिता, ईश्वर।
जनना-क्रि० स० पैदा करना।
जननी-संज्ञा स्त्री० (सं०) जन्म देनेवाली, माँ, दया, कृपा, चमगादड़।
जननेंद्रिय-संज्ञा स्त्री० (सं०) जनन करनेवाली इन्द्रिय, योनि।
जनपद-संज्ञा पुं० देशवासी, प्रजा।
जनप्रिय-वि० (सं०) सबसे प्रेम रखनेवाला। सब का प्यारा।
जनम-संज्ञा पुं० जीवन धारण करना, जन्म। उत्पत्ति।
जनरव-संज्ञा पुं० जनश्रुति, शोर। किंवदंती, अफवाह, कोलाहल।
जनवास, जनवासा-संज्ञा पुं० बरातियों के ठहरने का स्थान। सभी लोगों के ठहरने का स्थान।
जनश्रुति-संज्ञा स्त्री० अफवाह।

जनसंख्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) रहने-वाले लोगों की गिनती, आबादी।

जनाजा-संज्ञा पुं० (अ०) लाश। अरथी।

जनानखाना-संज्ञा पुं० (फा०) स्त्रियों के रहने का घर का भीतरी भाग।

जनाना-वि० (फा०) स्त्रियों से मतलब रखनेवाला। हिजड़ा।

जनाव-संज्ञा पुं० सूचना।

जनित-वि० (सं०) जनमा हुआ, जन्मा।

जनु-क्रि० वि० मानो।

जन्म-संज्ञा पुं० जीवन, जीवन धारण करना, पैदा होना, उत्पत्ति।

जन्मकुण्डली-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह चक्र या नक्शा जिसमें किसी व्यक्ति के पैदा होने के समय ग्रहों की स्थिति दी रहती है।

जन्मतिथि, जन्मदिन-संज्ञा स्त्री० पुं० (सं०) पैदा होने का दिन। वर्षगाँठ।

जन्मना-क्रि० अ० पैदा होना, जन्म लेना। क्रि० वि० जन्म से।

जन्मभूमि, जन्मस्थान-संज्ञा स्त्री० पुं० (सं०) वह जगह जहाँ किसी व्यक्ति का जन्म हुआ हो।

जन्माना-क्रि० स० पैदा करना, जन्म देना।

जन्य-संज्ञा पुं० निन्दा, साधारण मनुष्य। वि० जो पैदा हुआ हो.

जप-संज्ञा पुं० (सं०) किसी मंत्र का धीरे धीरे बारबार उच्चार।

... स्त्री० (सं०) जप

करने के लिए गुरियोंदार एक प्रकार की माला।

जबह-संज्ञा पुं० (अ०) गला काट-कर मार डालने की क्रिया।

जबान-संज्ञा स्त्री० (फा०) जीभ।

जबानदराज-वि० (फा०) बड़े-छोटे का ख्याल न करके अनुचित बात कहनेवाला।

जबानी-वि० मौखिक।

जब्त-संज्ञा पुं० (अ०) सरकार द्वारा किसी अपराध के कारण कुछ छीना जाना।

जब्र-संज्ञा पुं० (अ०) अधिक कड़ाई, सख्ती।

जमा-वि० (अ०) इकट्ठा।

जमाई-संज्ञा पुं० बेटी का पति, दामाद।

जमाखर्च-संज्ञा पुं० आय-व्यय।

जमात-संज्ञा स्त्री० झुण्ड, समूह। दरजा, वर्ग।

जमानत-संज्ञा स्त्री० (अ०) लिख-कर या रुपया जमा करके ली हुई जिम्मेदारी।

जमाना-संज्ञा पुं० काल, समय, अवधि, दुनिया, संसार।

जमालगोटा-संज्ञा पुं० एक पौधा जिसके बीज बड़े दस्तावर होते हैं।

जमींदार-संज्ञा पुं० (फा०) भू-स्वामी या भूमि का मालिक।

जमीन-संज्ञा स्त्री० (फा०) भूमि, स्थल-भाग, खेत, चित्रकारी।

... वि० (सं०) ...

जयजीव-संज्ञा पुं० एक प्रकार का प्रणाम, जिससे मतलब है, जिओ।
जयमाल-संज्ञा स्त्री० जीतनेवाले पुरुष के गले में डाली जानेवाली माला। वधू के द्वारा वर के गले में डाली जानेवाली माला।
जयस्तंभ-संज्ञा पुं० (सं०) जय की यादगार में बनवाया हुआ स्तंभ।
जयी-वि० जीतनेवाला, विजयी।
जर-संज्ञा पुं० जरा, वृद्धावस्था।
जरखेज-वि० (फा०) उपजाऊ भूमि।
जरठ-वि० (सं०) कर्कश, कठोर, टूटा-फूटा, जीर्ण।
जरद-वि० पीला।
जरदा-संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकार का चावलों का बना भोजन। एक पान की सुरती।
जरदालू-संज्ञा पुं० (फा०) एक फल, खूबानी।
जरदी-संज्ञा स्त्री० (फा०) पीलापन।
जरा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बुढ़ापा।
जराग्रस्त-वि० वृद्ध, बुड्ढा।
जरायु-संज्ञा पुं० (सं०) गर्भ की झिल्ली। आँवल। गर्भाशय।
जरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) सोने के तार आदि से बुना काम।
जर्क बर्क-वि० (फा०) दिखावेवाला। शानदार। भड़कीला।
जर्जर-वि० टूटा-फूटा, पुराना, जीर्ण। बुड्ढा।
जर्द-वि० (फा०) पीला।
जर्दी-संज्ञा स्त्री० (फा०) पीलापन।
जर्रा-संज्ञा पुं० (अ०) बहुत छोटा टुकड़ा, कण।
जल-संज्ञा पुं० (सं०) पानी।
जल-अलि-संज्ञा पुं० पानी पर तैरनेवाला एक काला कीड़ा।
जलक्रीड़ा-संज्ञा स्त्री० जल में तैरने या जलाशय में किया जानेवाला खेल। जलविहार।
जलज, जलजात-वि० (सं०) पानी से पैदा हुआ, कमल। शंख। मोती।
जलतरंग-संज्ञा पुं० (सं०) एक बाजा, जल की तरंग, लहर।
जलद-संज्ञा पुं० बादल, कपूर, मोथा।
जलधर-संज्ञा पुं० बादल। समुद्र।
जलधि-संज्ञा पुं० (सं०) समुद्र।
जलन-संज्ञा स्त्री० जल जाने से कष्ट या पीड़ा। मन की ईर्ष्या।
जलनिधि-संज्ञा पुं० (सं०) समुद्र।
जलपान-संज्ञा पुं० (सं०) हलका थोड़ा भोजन, प्रातराश, कलेवा।
जलप्रपात-संज्ञा पुं० झरना।
जलप्रवाह-संज्ञा पुं० (सं०) पानी का बहाव।
जलप्लावन-संज्ञा पुं० (सं०) बाढ़।
जलयान-संज्ञा पुं० (सं०) जल की सवारी। पानी का जहाज।
जलराशि-संज्ञा पुं० (सं०) समुद्र।
जलसा-संज्ञा पुं० (अ०) अधिवेशन, बैठक, समारोह।
जलसेना-संज्ञा स्त्री० (सं०) पानी में नावों या जहाजों पर लड़नेवाली सेना।

जलाधिप-संज्ञा पुं० (सं०) वरुण ।
जलाल-संज्ञा पुं० (अ०) तेज । प्रभाव ।
जलावन-संज्ञा पुं० जलाने की लकड़ी, ईंधन ।
जलाशय-संज्ञा पुं० (सं०) पानी के इकट्ठा होने का स्थान, तालाब, नदी, आदि ।
जलूस-संज्ञा पुं० (अ०) किसी विशेष मतलब से कुछ लोगों का झुण्ड बनाकर चलना ।
जलोदर-संज्ञा पुं० (सं०) एक पेट फूलने का रोग।
जल्लाद-संज्ञा पुं० (अ०) प्राण-दण्ड पाए व्यक्ति के प्राण लेने-वाला । क्रूर या निष्ठुर व्यक्ति ।
जवाँमर्द-वि० (फा०) बहादुर ।
जवानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) यौवन।
जवाब-संज्ञा पुं० (अ०) किसी पत्र का उत्तर, सवाल का हल, उत्तर, बदला ।
जवाबदेह-वि० (फा०) उत्तरदायी ।
जवाहर-संज्ञा पुं० (अ०) मणि।
जवाहरात-संज्ञा पुं० रत्नों का भंडार।
जहन्नुम-संज्ञा पुं० (अ०) नरक ।
जहमत-संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसी-बत, कष्ट, तकलीफ ।
जहर-संज्ञा स्त्री० विष।
जहरबाद-संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकार का भयंकर जहरीला फोड़ा।
जहरमोहरा-संज्ञा पुं० एक विष दूर करनेवाला पत्थर ।
जहरीला-वि० जहरवाला, विषैला ।
जहाँपनाह-संज्ञा पुं० (फा०) संसार की रक्षा करनेवाला, बादशाह ।
जहान-संज्ञा पुं० (फा०) संसार ।
जहीन-वि० तेज बुद्धिवाला ।
जह्नु-संज्ञा पुं० (सं०) एक राजर्षि ।
जाँगलू-वि० गँवार, मूर्ख । जंगली ।
जागरित-संज्ञा पुं० (सं०) नींद न होना, जागरण ।
जागरूक-संज्ञा पुं० (सं०) जगा हुआ व्यक्ति ।
जागर्ति-संज्ञा स्त्री० जागरण, जगने की दशा, जाग्रति ।
जागीर-संज्ञा स्त्री० (फा०) राज्य की ओर से मिली भूमि ।
जागीरदार-संज्ञा पुं० (फा०) राज्य की ओर से मिली भूमि का स्वामी ।
जाग्रत-वि० (सं०) जागता हुआ ।
जाग्रति-संज्ञा स्त्री० जागने की क्रिया, जागरण, सचेतता ।
जाचक-संज्ञा पुं० (ग्रा०) भिक्षुक, भिखारी ।
जाज्वल्यमान-वि० (सं०) प्रकाश से युक्त, तेजस्वी, प्रज्वलित ।
जाड्य-संज्ञा पुं० मूर्खता, आलस्य।
जात-संज्ञा पुं० (सं०) पुत्र । जीव । वि० जन्मा या पैदा हुआ । संज्ञा स्त्री० देखिए 'जाति' ।
जातक-संज्ञा पुं० (सं०) बच्चा ।
जातिच्युत-वि० (सं०) जाति से निकाला हुआ, जाति-बहिष्कृत ।
जातीय-वि० (सं०) जाति संबंधी।
जातीयता-संज्ञा स्त्री० (सं०) जाति के प्रेम की भावना, जातीयता ।

जादूगरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) जादू करने का कौशल, इन्द्रजाल।
जानि-संज्ञा स्त्री० (सं०) भार्या, पत्नी। वि० जानकार।
जाप-संज्ञा पु० (सं०) नाम आदि का बार-बार कहना या जपना।
जाफरान-संज्ञा पुं० (अ०) केसर।
जामता-संज्ञा पुं० पुत्री का पति, दामाद।
जायका-संज्ञा पुं० (अ०) खाने-पीने का स्वाद, मजा, रसास्वादन।
जायज-वि० (अ०) उचित, न्याय्य।
जायजा-संज्ञा पुं० (अ०) जाँच। हाजिरी।
जायदाद-संज्ञा स्त्री० (फा०) भूमि, संपत्ति, भू-संपत्ति, जगह-जमीन।
जायफल-संज्ञा पुं० एक मसाला।
जाया-संज्ञा स्त्री० (सं०) पत्नी।
जाया-वि० (फा०) खराब।
जार-संज्ञा पुं० (सं०) अन्य स्त्री से प्रेम करनेवाला। वि० नाश करनेवाला। मारनेवाला।
जारज-संज्ञा पुं० (सं०) अन्य व्यक्ति से सम्बन्ध रखने से स्त्री की जनमी संतान।
जारी-वि० (अ०) बहता या चलता हुआ। प्रचलित।
जाल-संज्ञा पुं० (सं०) तार या सूत की बनी वह चीज जिसमें मछली आदि फाँसी जाती है। धोखा। समूह।
जालसाज-संज्ञा पुं० दूसरों को धोखा देनेवाला।
जालसाजी-संज्ञा स्त्री० (फा०) धोखा देने का काम, फरेब।
जाली-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु में बनाये गये छेदों का समूह।
जावित्री-संज्ञा स्त्री० जायफल के ऊपर का छिलका।
जासूस-संज्ञा पुं० (अ०) गुप्त रीति से किसी अपराध आदि का पता लगानेवाला, खुफिया पुलिस।
जाहिर-वि० (अ०) सबसे कहा हुआ, प्रकट, व्यक्त, खुला हुआ।
जाहिरा-क्रि० वि० (अ०) देखने में। खुले रूप से।
जिंदगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) जीवन। आयु।
जिंदा-दिल-वि० (फा०) प्रसन्न या खुश मिजाजवाला, हँसोड़।
जिक्र-संज्ञा पुं० (अ०) कहा हुआ, चर्चा, हवाला, संकेत।
जिगर-संज्ञा पुं० कलेजा। मन।
जिगरा-संज्ञा पुं० साहस, हिम्मत।
जिगरी-वि० (फा०) दिल का, भीतरी, बहुत गहरा, घनिष्ठ।
जिज्ञासा-संज्ञा स्त्री० (सं०) जानने की इच्छा।
जिज्ञासु-वि० (सं०) जानने की इच्छा रखनेवाला। खोजी।
जितेंद्रिय-वि० (सं०) अपनी इन्द्रियों को वश में रखनेवाला। कामना न करनेवाला।
जिद-संज्ञा स्त्री० हठ, वैर, शत्रुता।
जिद्दी-वि० (फा०) किसी बात पर अड़नेवाला, हठी। दूसरे

की बात न माननेवाला।
जिन-संज्ञा पुं० बुद्ध, विष्णु, जैनों के तीर्थंकर। संज्ञा पुं० (अ०) भूत।
जिना-संज्ञा पुं० (अ०) स्त्री-पुरुष का अनुचित संबंध। व्यभिचार।
जिनाकार-वि० (फा०) स्त्री या पुरुष से अनुचित संबंध रखनेवाला, व्यभिचारी।
जिम्मा-संज्ञा पुं० (अ०) जिम्मेदारी।
जिम्मावार, जिम्मावार-संज्ञा पुं० (फा०) जिम्मा लेनेवाला। उत्तर देनेवाला, उत्तरदायी।
जिम्मावारी-संज्ञा स्त्री० किसी बात के करने का भार लेना, उत्तरदायित्व।
जियारत-संज्ञा स्त्री० (अ०) तीर्थ-दर्शन। दर्शन।
जिरह-संज्ञा स्त्री० पूछताछ। बहस।
जिरह-संज्ञा स्त्री० (फा०) कवच।
जिलादार-संज्ञा पुं० (फा०) जिले का प्रवन्ध करनेवाला।
जिल्द-संज्ञा स्त्री० (अ०) ऊपर का चढ़ाव। खाल, चमड़ा। किताब की रक्षा के लिए चढ़ाई हुई दफ्ती।
जिल्दसाज-संज्ञा पुं० पुस्तकों की जिल्द मढ़नेवाला।
जिल्लत-संज्ञा स्त्री० अनादर, अपमान।
जिस्ता-संज्ञा पुं० एक धातु, जस्ता।
जिस्म-संज्ञा पुं० जिस्म, शरीर।
[illegible]-संज्ञा पुं० (अ०) समक्ष।
जिहाद-संज्ञा पुं० (अ०) मजहब या धर्म की रक्षा के लिए किया जानेवाला युद्ध।
जिह्वा-संज्ञा स्त्री० जीभ, जबान।
जिह्वाग्र-संज्ञा पुं० (सं०) जीभ की नोक। जीभ का अग्रभाग।
जी-संज्ञा पुं० मन, दम, जीवट।
जीजा-संज्ञा पुं० बड़ी बहिन का पति। बहनोई।
जीजी-संज्ञा स्त्री० बड़ी बहिन।
जीन-संज्ञा पुं० (फा०) घोड़े की पीठ की गद्दी, काठी।
जीनपोश-संज्ञा पुं० जीन को ढँकने का कपड़ा।
जीमना-क्रि० स० भोजन करना।
जीमूत-संज्ञा पु० पर्वत, पहाड़, मेघ।
जीर्ण-वि० (सं०) बुढ़ापे से कमजोर। टूटा-फूटा।
जीर्णज्वर-संज्ञा पु० (सं०) बारह दिन से अधिक से आनेवाला बुखार।
जीवंत-वि० (सं०) जीता-जागता।
जीव-संज्ञा पु० प्राणी, वह तत्त्व जिससे प्राणी जीवित है, आत्मा। जीव धारण करनेवाला।
जीवट-संज्ञा पुं० साहस। जिगरा।
जीवदान-संज्ञा पुं० (सं०) वश में आये अपराधी को दण्ड न देना, प्राणदान देना, प्राण-रक्षा।
जीवधारी-संज्ञा पुं० (सं०) जीव या प्राण रखनेवाला, प्राणी, जन्तु, जानवर।
[illegible]-संज्ञा पुं० जीविका, जीने का

भाव, जिन्दगी, जन्म से मरण तक का समय।

जीवन-चरित-संज्ञा पुं० जीवनी।

जीवनधन-संज्ञा पुं० (सं०) सबसे प्यारी वस्तु, प्राणाधार। पति।

जीवनबूटी, जीवनमूरि-संज्ञा स्त्री० एक बूटी जिसके बारे में कथन है कि वह मृत व्यक्ति को जिन्दा कर सकती है, संजीवनी।

जीवनवृत्त-संज्ञा पुं० जीवनचरित्र, जीवनी।

जीवनोपाय-वि० (सं०) जिससे जीवन चलें, जीविका।

जीवन्मुक्त-वि० (सं०) जो जीवित होते हुए भी संसार के मोह या बंधनों से छूट गया हो।

जीवन्मृत-वि० (सं०) जीवित होकर मृतक के समान हो, बुरी दशा।

जीवयोनि-संज्ञा स्त्री० (सं०) जीव।

जीवलोक-संज्ञा पुं० (सं) जहाँ जीव रहे, मर्त्यलोक, भूलोक, पृथ्वी।

जीवात्मा-संज्ञा पुं० (सं०) वह शक्ति जिससे व्यक्ति जीवित है। जीव।

जीविका-संज्ञा स्त्री० (सं०) वृत्ति, भरण-पोषण का साधन, रोजी।

जीवित-वि० (सं०) जीता हुआ। जिंदा।

जीवी-वि० जीनेवाला। रोजी करनेवाला, जीविका कमानेवाला।

जुंबिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) चाल। हिलना-डुलना, स्पंदन।

जुआ-संज्ञा पुं० रुपये-पैसे की बाजी लगाकर खेला जानेवाला खेल।

जुआरी-संज्ञा पुं० जुआ खेलनेवाला।

जुकाम-संज्ञा पुं० सरदी से होने वाली एक बीमारी।

जुग-संज्ञा पुं० युग। जोड़ा।

जुगत-संज्ञा स्त्री० उपाय, तरकीब।

जुगनू-संज्ञा पुं० एक कीड़ा जो आग की चिनगारी-सा चमकता है।

जुगाली-संज्ञा स्त्री० सींगवाले जानवरों की भोजन को पेट से निकाल कर चबाने की क्रिया, पागुर।

जुगुप्सा-संज्ञा स्त्री० (सं०) घृणा, निन्दा, बुराई।

जुज-संज्ञा पुं० कागज के ८ या १६ पृष्ठों का समूह।

जुझाऊ-वि० लड़ाई में काम आनेवाला। लड़ाका।

जुट-संज्ञा स्त्री० दो जुड़ी या मिली वस्तुओं का समूह, दल, जत्था।

जुटना-क्रि० अ० दो वस्तुओं का सटना।

जुठारना-क्रि० स० किसी वस्तु को थोड़ा खाकर छोड़ देना, जूठा।

जुड़वाँ-वि० एक ही साथ उत्पन्न दो बच्चे।

जुड़ाना-क्रि० अ० ठंडा लगना। शान्त होना।

जुतना-क्रि० अ० किसी वस्तु को घसीटने को गाड़ी में बैल आदि का लगना। कोई काम करने में मेहनत से लगना।

जुताई-संज्ञा स्त्री० जोतने का काम।

जुतियाना-क्रि० स० जूते मारना।

बहुत बेइज्जती करना।
जुदा-वि० (फा०) अलग, भिन्न।
जुदाई-संज्ञा स्त्री० (फा०) अलग होना, विदा, वियोग।
जुन्हाई-संज्ञा स्त्री० चाँद की रोशनी,
जुमा-संज्ञा पुं० (अ०) शुक्रवार।
जुरअत-संज्ञा स्त्री० (फा०) हिम्मत।
जुरमाना-संज्ञा पुं० (फा०) अपराध करने के कारण धन के रूप में दिया जानेवाला दण्ड।
जुर्म-संज्ञा पुं० (अ०) नियम के विरुद्ध काम, अपराध, कसूर।
जुर्राब-संज्ञा स्त्री० मोजा।
जुलाब-संज्ञा पुं० (फा०) दस्त। दस्त लानेवाली दवा।
जुल्फ-संज्ञा स्त्री० (फा०) सिर के दोनों ओर लटकनेवाले लम्बे बाल।
जुल्म-संज्ञा पु० (अ०) खराब और कठोर व्यवहार करना।
जुस्तजू-संज्ञा स्त्री० (फा०) खोज।
जुहार-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रणाम राजपूतों में प्रचलित।
जूआ-संज्ञा पुं० हल में बैलों के कंधों पर की लकड़ी। संज्ञा पुं० एक खेल, द्यूत।
जूट-संज्ञा पुं० (सं०) जटा की गाँठ, जटा।
जूठन-संज्ञा स्त्री० खाने से बचा भाग। काम में लाया हुआ।
जूड़ी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बुखार, जिसमें बुखार आने के पहले रोगी को जाड़ा लगता है।
जूती-पैजार-संज्ञा स्त्री० मारपीट, जूतों की मार।
जूंभ, जूंभा-संज्ञा पुं०, स्त्री० (सं०) जँभाई, जम्हाई, आलस्य।
जेंवना-क्रि० स० भोजन खाना।
जेठ-संज्ञा पुं० गर्मी का एक महीना। पति का बड़ा भाई।
जेठा-वि० बड़ा। सबसे अच्छा।
जेठानी-संज्ञा स्त्री० पति के बड़े भाई (जेठ) की स्त्री।
जेठी-मधु-संज्ञा स्त्री० मुलेठी।
जेठौत, जेठौता-संज्ञा पुं० पति के बड़े भाई (जेठ) का पुत्र।
जेता-संज्ञा पुं० जीतनेवाला, विजयी।
जेबखर्च-संज्ञा पुं० (फा०) निजी खर्च का धन।
जेय-वि० (सं०) जीतने योग्य।
जेर-संज्ञा स्त्री० (देश०) गर्भ के बालक के ऊपर की झिल्ली। वि० हराया हुआ, पराजित।
जेल, जेलखाना-संज्ञा पुं० (अ०) वह स्थान जहाँ अपराधी कैद की अवधि तक बंद रखे जाते हैं।
जेवर-संज्ञा पुं० (फा०) गहना।
जेवरी-संज्ञा स्त्री० डोरी, रस्सी।
जेहन-संज्ञा पुं० (अ०) दिमाग, बुद्धि।
जैन-संज्ञा पुं० (सं०) एक सम्प्रदाय।
जैनी-संज्ञा पुं० जैन मत को माननेवाला।
जोंक-संज्ञा स्त्री० खून चूसनेवाला एक पानी का कीड़ा। बेहद

पीछे पड़नेवाला व्यक्ति ।

जोखना-क्रि०स० तौलना। जांचना।

जोखा-संज्ञा पुं० हिसाब-किताब। लेखा ।

जोखिम-संज्ञा स्त्री० कोई आने-वाली भारी विपत्ति।

जोगड़ा-संज्ञा पुं० बना हुआ जोगी, पाखंडी, ढोंगी।

जोगानल-संज्ञा स्त्री० योग के द्वारा उत्पन्न अग्नि।

जोगिन-संज्ञा स्त्री० साधुनी, जोगी ।

जोगी-संज्ञा पुं० योग करनेवाला व्यक्ति। साधू।

जोड़-संज्ञा पुं० कई वस्तुओं के मिलने का स्थान। गणित में कई संख्याओं का जोड़ा हुआ मान, मीजान। शरीर का सन्धिस्थान।

जोड़न-संज्ञा स्त्री० जामन।

जोड़ना-क्रि० स० कई या दो वस्तुओं का मिलाकर एक करना। इकट्ठा करना।

जोड़वाँ-वि० एक साथ ही बच्चों का एक ही गर्भ से जन्म।

जोड़ा-संज्ञा पुं० दो एक तरह की वस्तुएं, नर-मादा, वर-कन्या ।

जोड़ी-संज्ञा स्त्री० एक-सी दो चीजें। बराबरी की। नर मादा।

जोतना-क्रि० स० किसी गाड़ी, कोल्हू आदि को चलाने के लिए बैल, घोड़े आदि उसमें बांधना, हल चलाकर खेत की भूमि खोदना।

जोताई-संज्ञा स्त्री० हल से भूमि खोदने या बैल, घोड़े आदि की गाड़ी आदि में लगाने का काम। जोताई की पारिश्रमिक।

जोबन-संज्ञा पुं० युवा होने की अवस्था। उभरा स्तन।

जोर-संज्ञा पुं० (फा०) ताकत, बल।

जोरदार-वि० (फा०) ताकत या बल-वाला। वेगवान्।

जोर-शोर-संज्ञा पुं० (फा०) बहुत अधिक जोर या बल।

जोरावर-वि० (फा०) ताकतवाला, बलवान।

जोरू-संज्ञा स्त्री० ब्याही स्त्री, पत्नी।

जोश-संज्ञा पुं० (फा०) उमंग, आवेग, मन की उत्तेजना, उत्साह।

जोशांदा-संज्ञा पुं० (फा०) जड़ी-बूटियों का पानी में उबाला हुआ रस। काढ़ा। क्वाथ।

जोशीला-वि० तेजी या उत्साह दिलानेवाला। उत्साह और जोश-वाला। आवेगपूर्ण।

जोहना-क्रि० स० प्रतीक्षा करना, ढूंढना, पता लगाना।

जोहार-संज्ञा स्त्री० प्रणाम ।

जौजा-संज्ञा स्त्री० ब्याही औरत, जोरू, पत्नी।

जौहर-संज्ञा पुं० खासियत, खूबी। अपनी हार के समय स्त्रियों के आग में जल मरने की राजपूती प्रथा। रत्न।

जौहरी-संज्ञा पुं० (फा०) रत्न

बेचने वाला। वस्तु की अच्छाईं बुराई को जाननेवाला, पारखी।
ज्ञप्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) जानकारी।
ज्ञात-वि० (सं०) जाना हुआ, पता।
ज्ञातव्य-वि० (सं०) जानने लायक।
ज्ञाता-वि० जानकार, जाननेवाला।
ज्ञाति-संज्ञा पुं० (सं०) एक ही वंश का मनुष्य। बान्धव, गोती।
ज्ञान-संज्ञा पुं० (सं०) बुद्धि, तत्वज्ञान, यथार्थ ज्ञान, परब्रह्म। जानकारी। बोध, विवेक।
ज्ञानकांड-संज्ञा पुं० (सं०) सूक्ष्म विषयों पर विचार करनेवाला वेद का भाग।
ज्ञानगम्य, ज्ञानगोचर--संज्ञा पुं० ज्ञानेन्द्रियों से जो जाना जा सके।
ज्ञानवान्-वि० (स०) जाननेवाला, ज्ञानी, जिसको ज्ञान हो।
ज्ञानवृद्ध-वि० (सं०) अधिक जानने-वाला।
ज्ञानी-वि० ज्ञानयुक्त। आत्मा और ब्रह्म को जाननेवाला।
ज्ञानेंद्रिय-संज्ञा स्त्री० (सं०) मनुष्य की पांच इन्द्रियां जिनसे जीवों को विषयों का ज्ञान होता है।
ज्ञापक-वि० (सं०) बतानेवाला।
ज्ञापन- संज्ञा पुं० सूचना। बताना।
ज्ञेय-वि० (सं०) जानने योग्य। जाना जा सकनेवाला।
ज्यादती-संज्ञा स्त्री० (फा०) अधि-कता। अत्याचार। जुल्म।
ज्याफत-संज्ञा स्त्री० दावत।
ज्येष्ठ-वि० (सं०) बड़ा। संज्ञा पुं० जेठ का महीना, प्राण।
ज्येष्ठता-संज्ञा स्त्री० श्रेष्ठता, बड़े होने का भाव, बड़ाई।
ज्योति-संज्ञा स्त्री० उजाला। लपट। चिराग की लौ। आग। दृष्टि।
ज्योतिर्मय-वि० उजाले या प्रकाश से भरा हुआ।
ज्योतिर्लोक-संज्ञा पुं० (स०) ध्रुव-लोक।
ज्योतिर्विद-संज्ञा पुं० ज्योतिषी।
ज्योतिश्चक्र-पुं० (सं०) ग्रहों, नक्षत्रों आदि का मंडल।
ज्योतिष-संज्ञा पु० (सं०) वह विद्या जिससे नक्षत्रों की गति-विधि जानी जाती है।
ज्योतिषी-संज्ञा पुं० नक्षत्रों की गति-विधि को जाननेवाला।
ज्योतिष्पथ-संज्ञा पुं० अंतरिक्ष। आकाश।
ज्योतिष्मती-संज्ञा स्त्री० रात्रि, रात।
ज्योतिष्मान्-वि० (सं०) प्रकाश से भरा हुआ। संज्ञा पुं० सूर्य।
ज्योत्स्ना-संज्ञा स्त्री० कौमुदी, चाँद की रोशनी; चाँदनी।
ज्योनार-संज्ञा स्त्री० पका भोजन। दावत। भोज।
ज्वर-संज्ञा पुं० (सं०) शरीर की अस्वस्थ होने की अवस्था मे गरमी, ताप।
ज्वलंत-वि० (सं०) प्रकाश से भरा हुआ, जलता हुआ, अत्यन्त स्पष्ट।
ज्वार भाटा-संज्ञा पुं० चन्द्रमा के आकर्षण के कारण समुद्र के पानी

का ज्वार के समय चढ़ना और भाटा के समय उतरना।
ज्वाल-संज्ञा पुं० आग, लपट।
ज्वाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) लपट, ताप, दाह, विष की गरमी।
ज्वालामुखी पर्वत-संज्ञा पुं० (सं०) धुआं राख और लावा फेंकनेवाला पर्वत।

झ

झंपना-क्रि० अ० झेंपना। शर्माना।
झंकार-संज्ञा स्त्री० (सं०) झींगुर आदि के बोलने या तार के बजने की आवाज। झनझन की आवाज, झनझनाहट।
झंखाड़-संज्ञा पुं० कांटेदार पौधा, कूड़ा-करकट का ढेर।
झंझट-संज्ञा स्त्री० बेकार का झगड़ा, परेशानी, टंटा, बखेड़ा।
झंझर-संज्ञा स्त्री० मिट्टी का पात्र।
झंझा-संज्ञा पुं० (सं०) पानी की बौछार के साथ चलनेवाली तीव्र आंधी।
झंप-संज्ञा पुं० (सं०) उछाल।
झंपान-संज्ञा पुं० पहाड़ी सवारी के लिए एक प्रकार की खटोली।
झक-संज्ञा स्त्री० धुन, सनक, झख, वि० स्वच्छ, चमकीला।
झकझक-संज्ञा स्त्री० बेकार की बात-चीत, बकबक, किचकिच।
झकझका-वि० चमकीला।
झकझकाहट-संज्ञा स्त्री० चमक।
झकझोरना-क्रि० स० ओर में आगे-पीछे हिला देना।
झकझोरा-संज्ञा पुं० झटका, झोंका।
झकाझक-चमकीला। उज्ज्वल।
झकोरा-संज्ञा पुं० हवा का झोंका।
झक्की-वि० बहुत बकनेवाला।
झख-संज्ञा स्त्री० झींखना या परेशान होना।
झगड़ा-संज्ञा पुं० मारपीट।
झगड़ालू-वि० सबसे बात- बात में झगड़ा करनेवाला।
झगा-संज्ञा पुं० छोटे बच्चों का ढीला-सा कुछ ऊँचा कुरता।
झज्झर-संज्ञा स्त्री० पानी ठंडा रखने के लिए चौड़े मुँह का मिट्टी का बरतन।
झट-क्रि० वि० फौरन, उसी समय।
झटपट-अव्य० उसी समय, तुरंत।
झड़प-संज्ञा स्त्री० लड़ाई। बकबक।
झड़पना-क्रि० अ० हमला करना, झगड़ा करना, लड़ना, झगड़ना, डाँटना।
झड़बेरी-संज्ञा स्त्री० जंगली बेर।
झड़वाना-क्रि० स० साफ करवाना। भूत-प्रेत की बाधा हटवाना।
झड़ी-संज्ञा स्त्री० लगातार बूंदों का गिरना। वाक्-प्रवाह।
झनक-संज्ञा स्त्री० तार आदि का टकराने का शब्द, झंकार।

झनकना-क्रि० अ० झनकार का शब्द करना। गुस्सा होना या खीजना।
झनझनाना-क्रि० अ० झनझन होना।
झपक-संज्ञा स्त्री० पलक गिरने भर का यानी बहुत थोड़ा समय। हलकी नींद, झपकी, लज्जा।
झपकी-संज्ञा स्त्री० हलकी नींद। आँख झपकना। धोखा।
झपटना-क्रि० अ० तेजी से बढ़कर हमला करना। आगे तेजी से बढ़कर कोई वस्तु ले लेना।
झपताल-संज्ञा पुं० (देश०) संगीत में एक ताल।
झपना-क्रि० अ० पलकों का गिरना।
झपाना-क्रि० स० पलकों का गिराना। मूंदना।
झबरा-वि० लम्बे और बिखरे बालोंवाला।
झब्बा-संज्ञा पुं० एक में लगी कई चीजें, गुच्छा। समूह, गुच्छा।
झमक-संज्ञा स्त्री० उजेला। झम-झम शब्द। नखरे करते चलना।
झमकना-क्रि० अ० रुक-रुककर दमकना। झम-झम शब्द होना। नखरे या अकड़ दिखलाना।
झमझम-संज्ञा स्त्री० घुंघरू आदि के बजने का शब्द। पानी बरसने का शब्द।
झमाका-संज्ञा पुं० पानी बरसने या गहनों के बजने का शब्द। ठसक।
झमाझम-क्रि० वि० झमाझम शब्द के साथ। दमक के साथ।
झमेला-संज्ञा पुं० झंझट, झगड़ा।
झरन-संज्ञा स्त्री० झरने की क्रिया।
झरी-संज्ञा स्त्री० झरना। स्रोत।
झरोखा-संज्ञा पुं० जालीदार छोटी खिड़की।
झलक-संज्ञा स्त्री० चमक, दमक, आकृति का आभास, प्रतिबिम्ब।
झलकदार-वि० चमकीला।
झलकना-क्रि० अ० चमकना। साफ मालूम देना।
झलमला-वि० चमकीला।
झलाझल-वि० खूब झलमलाता हुआ
झल्लाना-क्रि० अ० चिढ़ना, नाराज होना, खिजलाना, चिढ़ाना।
झषकेतु-संज्ञा पुं० कामदेव।
झाँई-संज्ञा स्त्री० छाया। अंधेरा। धोखा। मुख पर छा जानेवाली कालिमा।
झाँकना-क्रि० अ० आड़ से देखना।
झाँकी-संज्ञा स्त्री० झाँकने की क्रिया, दृश्य, छाया, झरोखा, खिड़की।
झाँगला-वि० (देश०) ढीला-ढाला।
झाँझ-संज्ञा स्त्री० पूजा के समय बजाया जानेवाला एक बाजा।
झाँपना-क्रि० स० पकड़कर दबा लेना। छिपा लेना।
झाँसा-संज्ञा पुं० धोखा। जाल, फरेब; -पट्टी- स्त्री० धोखा-धड़ी।
झाग-संज्ञा पुं० जल आदि का फेन।
झाड़-खंड-संज्ञा पुं० जंगल।

झाड़-झंखाड़-संज्ञा पुं० काँटेदार अनेक झाड़ियाँ। बेकार चीजें।
झाड़न-संज्ञा स्त्री० जिससे झाड़ा या साफ किया जाय।
झाड़-फूँक-संज्ञा स्त्री० मंत्र आदि पढ़कर भूत-प्रेत आदि की बाधा को दूर करने की क्रिया।
झाड़ा-संज्ञा पुं० तलाशी। मल।
झाड़ी-संज्ञा स्त्री० काँटेदार छोटा झाड़।
झाबा-संज्ञा पुं० पतली टहनियों आदि का बुना बड़ा टोकरा।
झारना-क्रि० स० गर्द आदि दूर करना। बालों में कंघी करना।
झिड़कना-क्रि० स० ठीक से न बोलना या अनादर करना।
झिड़की-संज्ञा स्त्री० बिगड़कर कही गयी बात, डाँट-फटकार।
झिपना-क्रि० अ० लज्जित होना।
झिपाना-क्रि० स० शर्मिंदा या लज्जित करना।
झिलमिल-संज्ञा स्त्री० प्रकाश का घटना-बढ़ना या हिलना।
झिलमिलाना-क्रि० अ० प्रकाश का हिलना या रह-रहकर चमकना।
झिलमिली-संज्ञा स्त्री० जालीदार द्वार या बाँस की खपचियों का परदा। चिक।
झिल्ली-संज्ञा पुं० (सं०) झींगुर। संज्ञा स्त्री० किसी चीज के ऊपर की पतली तह।
झींकना-क्रि० अ० परेशान होना या पछतावा करना। खीजना, नाराज होना।
झींखना-क्रि० अ० खीजना। परेशान होना।
झीना-वि० बहुत महीन, छेददार, दुर्बल, दुबला, धीमा, मन्द।
झील-संज्ञा स्त्री० बहुत बड़ा तालाब।
झीलर-संज्ञा पुं० छोटी झील।
झुकाना-क्रि० स० नीचे की ओर टेढ़ा करके मोड़ना। नम्र करना।
झुकाव-संज्ञा पुं० नीचे की ओर मुड़ा होना, चित्त का किसी ओर लगना, प्रवृत्ति, ढाल, उतार।
झुटपुटा-संज्ञा पुं० कुछ अंधेरे और कुछ उजाले का समय।
झुठलाना, झुठाना-क्रि० स० झूठा सिद्ध करना या झूठा बनाना।
झुनझुनी-संज्ञा स्त्री० शरीर में एक ही अवस्था में रहने में उत्पन्न एक प्रकार की सनसनाहट।
झुरझुरी-संज्ञा स्त्री० कँपकँपी।
झुरमुट-संज्ञा पुं० घनी झाड़ी, मनुष्यों का समूह।
झुर्री-संज्ञा स्त्री० सिकुड़ने से पड़ी धारियाँ, बुढ़ापे में मस्तक पर की धारियाँ, सिकुड़न, शिकन।
झुलसना-क्रि० अ० गर्मी या आग के कारण ऊपर का भाग जल जाना। मन में द्वेष या जलन करना।
झुलाना-क्रि० स० किसी लटकती हुई वस्तु को हिलाना।
झूठ-संज्ञा पुं० जो सच न हो, गलत।

झूठमूठ-क्रि० वि० असत्य रूप में, निष्प्रयोजन, व्यर्थ, गलत, यों ही।
झूठा-वि० मिथ्या, झूठ कहनेवाला, नकली, जूठा।
झूमका-संज्ञा पुं० एक कान का गहना।
झूमना-क्रि० अ० बार-बार इधर-उधर सिर नीचे-ऊपर हिलाना।
झूमर-संज्ञा पुं० सिर का एक गहना। एक गीत।
झूल-संज्ञा स्त्री० ढीला-ढीला कपड़ा। चौपायों पर डाला जानेवाला कपड़ा।
झूलन-संज्ञा पुं० मूर्तियों को झूले में बिठाकर झुलाने का उत्सव।
झूलना-क्रि० अ० लटककर या लटकी वस्तु पकड़ कर आगे-पीछे जाना।
झूला-संज्ञा पुं० लटकते रस्सों का सहारा लेकर आगे-पीछे जाना या झूलना।
झेंपना -क्रि० अ० शरमाना।
झेलना-क्रि० स० सहना, ऊपर लेना। धक्का देना, ठेलना।
झोंक-संज्ञा स्त्री० बोझ। झुकाव।
झोंकना-क्रि० स० किसी वस्तु को आग आदि में फेंकना।
झोंका-संज्ञा पुं० झटका। झकोरा। हवा का झकोरा।
झोंटा-संज्ञा पुं० बड़े-बड़े बालों का गुच्छा, झोंका, पग।
झोल-संज्ञा पुं० तरकारी आदि का गाढ़ा रसा। कपड़े का लटकनेवाला ढीला भाग। ढीलापन। वि० ढीला। बेकार, निकम्मा।
झोलदार-वि० रसेदार। ढीला-ढाला।
झोला-संज्ञा पुं० झोंका। कपड़े की ढीली बड़ी थैली।
झोली-संज्ञा स्त्री० कपड़े की ढीली छोटी थैली।

ट

टँगड़ी-संज्ञा स्त्री० टाँग, पैर।
टंकण-संज्ञा पुं० (सं०) धातु में या धनुष की डोरी पर उंगली मारने से पैदा टन-टन का शब्द। धातु पर चोट पड़ने का शब्द।
टंकारना-क्रि० स० धातु पर चोट करना। धनुष की डोरी या तार पर उँगली मारकर शब्द करना।
टंकी-संज्ञा स्त्री० पानी भरने को बनाया धातु का कुंड, टाँका।
टंटा-संज्ञा पुं० आडम्बर, गड़बड़झाला, खटराग, झगड़ा।
टक-संज्ञा स्त्री० बिना पलक झपकाए किसी ओर, देखना।
टकटकी-संज्ञा स्त्री० बिना पलक झपकाए ताकना। गड़ी नजर।
टकसाल-संज्ञा स्त्री० सिक्के बनाये जाने की जगह।
टकसाली-वि० टकसाल का, खरा, सही, चोखा, जँचा हुआ, परीक्षित।

टक्कर-संज्ञा स्त्री० तेजी से किसी अन्य वस्तु से परस्पर भिड़ना, भिड़न्त।

टखना-संज्ञा पुं० एड़ी के ऊपर हड्डी की गाँठ।

टटोलना-क्रि० स० उँगलियों से छूकर किसी चीज को पहचानना। किसी के मन की बात जानना।

टट्टी-संज्ञा स्त्री० चिक।

टट्टू-संज्ञा पुं० छोटे कद का घोड़ा।

टन-संज्ञा स्त्री० किसी धातु पर चोट होने से पैदा शब्द। टंकार।

टनकना-क्रि० अ० टन-टन शब्द होना। सिर में पीड़ा होना।

टनटन-संज्ञा स्त्री० घंटे का शब्द।

टनाटन-संज्ञा स्त्री० निरन्तर टन-टन शब्द होना।

टप-संज्ञा पुं० नाँद के आकर का एक बरतन।

टपकना-क्रि० अ० बूँद-बूँद करके गिरना। एक दम से उपस्थित हो जाना।

टपका-संज्ञा पुं० बूंद-बूंद गिरना। पककर आप गिरा हुआ फल।

टपका-टपकी-संज्ञा स्त्री० वर्षा की बूँदों का पड़ना। लगातार फलों आदि का टप-टप गिरना।

टपाना-क्रि० स० बेकार आसरे में रखना।

टब-संज्ञा पुं० (अं०) एक बड़ा चौड़े मुंह का पानी रखने का बरतन।

टर-संज्ञा स्त्री० कानों को बुरा लगनेवाला कड़ा शब्द। मेढक की बोली।

टरकाना-क्रि० स० हटा देना। खिसकाना, टाल देना।

टर्रा-वि० तेज और कड़ुवे शब्द बोलनेवाला।

टर्रापन-संज्ञा पुं० कड़ुवी बात करने की आदत। बहुत बोलने की आदत।

टलना-क्रि० अ० हटना, खिसकना।

टसर-संज्ञा पुं० एक घटिया मोटा रेशम।

टहनी-संज्ञा स्त्री० वृक्ष की पतली डाली।

टहल-संज्ञा स्त्री० सेवा, मदद।

टहलना-क्रि० अ० इधर-उधर धीरे-धीरे घूमना।

टाँका-संज्ञा पुं० जोड़ने के लिए कील आदि। सिलाई। जोड़ में अलग से चकती। धातुओं को जोड़ने का मसाला, कंडाल।

टाकी-संज्ञा स्त्री० छेनी, जिससे काटा जाय। बोलनेवाला सिनेमा।

टाट-संज्ञा पु० सन या पटुए का कपड़ा, बिरादरी।

टाप-संज्ञा स्त्री० घोड़े के पैर का सबसे नीचा भाग। घोड़े के चलने का शब्द।

टापना-क्रि० अ० इधर-उधर खोजना। हैरान फिरना।

टापू-संज्ञा पुं० चारों ओर जल से

घिरी पृथ्वी, द्वीप।

टाल-संज्ञा स्त्री० बड़ा ढेर। लकड़ी, भूसे आदि की दूकान। अटाला, टालने की क्रिया या भाव।

टालमटूल-संज्ञा स्त्री० बहाना।

टिकटिकी-संज्ञा स्त्री० शव ढोने की अरथी, ऊँची तिपाई।

टिकटी-संज्ञा स्त्री० शव ले जाने का बाँस का ढाँचा।

टिकना-क्रि० अ० कुछ समय तक रहना, ठहरना। तल में जमना।

टिकली-संज्ञा स्त्री० छोटी बिन्दी, सूत कातने का एक उपकरण, तकली।

टिकस-संज्ञा पुं० महसूल, कर।

टिकाऊ-वि० कुछ दिनों तक रहने या काम देनेवाला, टिकनेवाला।

टिकुली-संज्ञा स्त्री० तकली, बिंदी।

टिकैत-संज्ञा पुं० राजकुमार, युवराज, अधिष्ठाता, सरदार।

टिचन-वि० उद्यत, ठीक, तैयार।

टिड्डी-संज्ञा स्त्री० दल बाँधकर उड़नेवाला एक छोटा कीड़ा।

टिप्पणी-संज्ञा स्त्री० देखिए 'टिप्पनी'।

टिप्पन-संज्ञा पुं० (सं०) टीका, अर्थ करना। जन्मकुण्डली।

टिप्पनी-संज्ञा स्त्री० टीका, किया हुआ अर्थ।

टिमटिमाना-क्रि० अ० मन्द जलना। मरणासन्न होना।

टीका-संज्ञा पुं० मस्तक पर लगाया जानेवाला चन्दन, केसर, रोली आदि का चिह्न। विवाह में वर को तिलक लगाने की एक रीति। राजसिंहासन पर बैठने के समय राज्य-तिलक। धब्बा। सुई के द्वारा शरीर में चुभोकर रोग दूर करने के लिए दवा प्रविष्ट कराना, स्त्री० सं० किसी ग्रन्थ या पद का अर्थ समझाकर कहना।

टीकाकार-संज्ञा पुं० (सं०) किसी ग्रन्थ की टीका या अर्थ लिखनेवाला।

टीपन-संज्ञा स्त्री० जन्मपत्री।

टीमटाम-संज्ञा स्त्री० सजावट। दिखाव। आडंबर।

टीला-संज्ञा पु० पृथ्वी का थोड़ा-सा उठा हुआ भाग।

टीस-संज्ञा स्त्री० रुक-रुककर दर्द होना।

टुंटा, टुंडा-वि० जिसका हाथ कट गया हो।

टुक-वि० किंचित्, तनिक, थोड़ा।

टुकड़तोड़, टुकड़खोर-संज्ञा पुं० दूसरे के दिये अन्न पर जीवित रहनेवाला।

टुकड़ा-संज्ञा पुं० किसी चीज का भाग, हिस्सा, तोड़ा हुआ अंश।

टुटपुँजिया-वि० बहुत थोड़े धन वाला।

टुड्डी-संज्ञा स्त्री० नाभि। नोक।

टेंटर-संज्ञा पुं० रोग या चोट से आँख के डेले पर का उभरा भाग।

टेव-संज्ञा स्त्री० अभ्यास, बान।

टेसू-संज्ञा पुं० [illegible] फूल।

टोटका-संज्ञा पुं० रोग आदि दूर करने के लिए देवताओं के प्रति किये जानेवाले तान्त्रिक प्रयोग। टोना।

टोटा-संज्ञा पुं० हानि, कमी, घाटा।

टोना-संज्ञा पुं० मंत्र-तंत्र। टोटका।

टोप-संज्ञा पुं० बड़ी टोपी।

टोल-संज्ञा स्त्री० झुंड, मण्डली।

टोला-संज्ञा पुं० एक बड़ी बस्ती का भाग, मुहल्ला, बड़ी कौड़ी।

टोली-संज्ञा स्त्री० छोटा मुहल्ला। समूह, झुंड, मंडली, जत्था।

टोह-संज्ञा स्त्री० खोज। देखभाल।

ठंड-संज्ञा स्त्री० सरदी।

ठंडक-संज्ञा स्त्री० सरदी। मन की शान्ति, तृप्ति, सन्तोष, प्रसन्नता।

ठंडा-वि० शीत, जाड़ा, ठंडक।

ठकुरसुहाती-संज्ञा स्त्री० काम निकालने के लिए झूठी बड़ाई करना, चाटूक्ति, चापलूसी।

ठकुराइन-संज्ञा स्त्री० ठाकुर की स्त्री, क्षत्राणी, नाइन, नाउन।

ठकुराई-संज्ञा स्त्री० बड़े होने का भाव, बड़ाई, बड़प्पन, राज्य।

ठकुरानी-संज्ञा स्त्री० ठाकुर की स्त्री। मालकिन। रानी।

ठकुरायत-संज्ञा स्त्री० ठाकुर या सरदार के अधीन देश।

ठगनी-संज्ञा स्त्री० ठगी का काम करनेवाली धूर्त स्त्री, कुटनी।

ठगविद्या-संज्ञा स्त्री० धोखेबाजी। ठगने की कुशलता।

ठगी-संज्ञा स्त्री० धोखा देकर माल छीनने या ठगने का काम।

ठगोरी-संज्ञा स्त्री० टोना।

ठटनि-संज्ञा स्त्री० बनाव, निर्माण।

ठटरी-संज्ञा स्त्री० हड्डियों का ढाँचा। अरथी।

ठट्ठा-संज्ञा पुं० हँसी, दिल्लगी।

ठठाना-क्रि० स० पीटना। क्रि० अ० ठट्ठा मारकर हँसना।

ठठेरा-संज्ञा पुं० बरतन बनाने वाला।

ठनठनगोपाल-संज्ञा पुं० खाली और बेकार वस्तु। गरीब व्यक्ति।

ठप्पा-संज्ञा पुं० वह लकड़ी, धातु आदि का टुकड़ा जिस पर बने बेल-बूटे किसी अन्य वस्तु पर छप सकें। साँचा।

ठमकना-क्रि० अ० चलते-चलते रुकना, ठिठकना। शान दिखाना।

ठस-वि० ठोस। मजबूत। घना। आलसी। कंजूस।

ठसक-संज्ञा स्त्री० गर्व, अहंकार।

ठसकदार-वि० घमण्डी।

ठस्सा-संज्ञा पुं० (देश०) घमण्ड। ठाटबाट, शान, अभिमान।

ठहराना-क्रि० स० चलने में रोक देना। टिका देना। निश्चित या

विवाह सम्बन्ध पक्का करना।

ठाँयें-संज्ञा पुं०, स्त्री० जगह। पास। बंदूक छूटने का शब्द।

ठाँयें ठाँयें-संज्ञा स्त्री० बंदूक छूटने का शब्द। झगड़ा।

ठाकुर-संज्ञा ईश्वर, देवता। किसी प्रदेश का मालिक, सरदार।

ठाकुरद्वारा-संज्ञा पुं० मन्दिर।

ठाकुरवाड़ी-संज्ञा स्त्री० मंदिर।

ठाकुरी-संज्ञा स्त्री० ठकुराई। बड़प्पन। स्वामित्व।

ठाट-संज्ञा पुं० ढांचा। सजाव, बनाव।

ठाट-बाट-संज्ञा पुं० सजधज, सजावट।

ठाटर-संज्ञा पुं० टट्टर, बांस का जंगला। पंजर।

ठान-संज्ञा स्त्री० कार्य का आयोजन। आरंभ। पक्का इरादा।

ठाम-संज्ञा पुं० (ग्रा०) जगह, स्थान।

ठार-संज्ञा पुं० गहरा जाड़ा, पाला।

ठाला-संज्ञा पुं० बेकार। विना काम-काज का।

ठिगना-वि० कम ऊँचा व्यक्ति, नाटा।

ठिकाना-संज्ञा पुं० सहारे या ठहरने की जगह, निवासस्थान, पता।

ठिठकना-क्रि० अ० चलते-चलते या करते-करते रुक जाना। भौचक रह जाना, स्तम्भित।

ठिठरना, ठिठुरना-क्रि० अ० सरदी से काँपना या सिकुड़ जाना।

ठिरना-क्रि० स० सरदी से ठिठुर जाना।

ठिलना-क्रि० अ० ठेला जाना।

घुसना, धँसना, जमना।

ठिलुआ-वि० कुछ काम न करनेवाला, निकम्मा, निठल्ला।

ठीकठाक-संज्ञा पुं० पक्का इंतजाम। पक्की बात।

ठीकरा-संज्ञा पुं० मिट्टी के बरतन का टूटा टुकड़ा। भीख माँगने का पात्र।

ठीका-संज्ञा पुं० कुछ धन के आधार पर किसी काम को पूरा करने का अधिकार देना, पट्टा।

ठीकेदार-संज्ञा पुं० ठीका या पट्टा लेनेवाला मनुष्य।

ठुंठ-संज्ञा पुं० सूखा हुआ पेड़। कटे हुए हाथवाला मनुष्य, लूला।

ठुकराना-क्रि० स० लात मारना। तिरस्कार करना, उपेक्षा करना।

ठुड्डी-संज्ञा स्त्री० चेहरे में होंठ के नीचे की जड़, ठोडी।

ठुमकना-क्रि० अ० बच्चों का पैर पटकते हुए चलना। किसी चीज की जिद करना।

ठुमरी-संज्ञा स्त्री० (देश०) एक दो बोलों का छोटा गीत।

ठूँठ-संज्ञा पुं० सूखा हुआ पेड़।

ठेंगना-वि० छोटे डील का, नाटा।

ठेंठी-संज्ञा स्त्री० (देश०) कान का मैल। डाट, जिससे छेद बन्द किया जाय।

ठेका-संज्ञा पुं० केवल ताल देकर ही तबले आदि को बजाना।

ठेठ-वि० बिलकुल, निरा। शुद्ध। संज्ञा स्त्री० सीधी-सादी बोली।

ठेला-संज्ञा पुं० धक्का । आदमी द्वारा ठेलकर चलायी जानेवाली एक गाड़ी । धक्कमधक्का ।

ठेलाठेल-संज्ञा स्त्री० धक्कम धक्का ।

ठेस-संज्ञा स्त्री० हृदय की चोट ।

ठोंकना-क्रि० स० जोर से मारना, पीटना, आघात करना ।

ठोकर-संज्ञा स्त्री० चलने में पैर में लगनेवाला धक्का । ठेस ।

ठोड़ी-संज्ञा स्त्री० चेहेरे में होठों के नीचे चिबुक, ठुड्डी, दाढ़ी ।

ठौर-संज्ञा पुं० जगह, स्थान ।

ड

डंक-संज्ञा पुं० बिच्छू, मधुमक्खियों आदि का जहरीला कांटा ।

डंका-संज्ञा पुं० एक प्रकार का नगाड़ा ।

डंगर-संज्ञा पुं० (देश०) चौपाया ।

डंठल-संज्ञा पुं० छोटे पौधे की पेड़ी और शाखा ।

डंड-संज्ञा पुं० डंडा । एक भारतीय कसरत ।

डंडपेल-संज्ञा पुं० व्यायाम करनेवाला । बलवान् ।

डकराना-क्रि० अ० बैल भैंस आदि जैसा बोलना ।

डकारना-क्रि० अ० पेट की वायु मुँह से निकालना । दूसरे के धन को हजम कर जाना ।

डकैती-संज्ञा स्त्री० डाका डालने का काम ।

डग-संज्ञा पुं० एक जगह से पैर उठाकर आगे रखना, कदम ।

डगडगाना, डगडोलना-क्रि० अ० इधर-उधर हिलना, डोलना, कांपना ।

डटना-क्रि० अ० जमकर किसी काम में लगना । ठहरा रहना ।

डफ-संज्ञा पुं० एक चमड़े का मढा बाजा ।

डफली-संज्ञा स्त्री० छोटा डफ, खँजरी ।

डबडौहाँ-वि० आँसू भरा, डबडबाया ।

डबडबाना-क्रि० अ० आँखों में आँसू भर आना ।

डबरा-संज्ञा पुं० छिछला पानी भरा गड्ढा ।

डबल-वि० (अ) दोहरा । संज्ञा पुं० पैसा; —रोटी— स्त्री० पावरोटी ।

डबोना-क्रि० स० बोरना, डुबाना ।

डब्बा-संज्ञा पुं० ढपनेदार छोटा बरतन । रेलगाड़ी का एक भाग ।

डरपोक-वि० बहुत डरनेवाला, भीरु ।

डरावना-वि० जिसे देखकर डर लगे ।

डला-संज्ञा पुं० टुकड़ा । टोकरा ।

डली-संज्ञा स्त्री० छोटा टुकड़ा या छोटा ढेला, सुपारी, डलिया ।

डहडहा-वि० हराभरा । प्रसन्न ।

डहडहाना-क्रि० अ० पौधे का हराभरा होना । प्रसन्न होना ।

डाँगर-वि० चौपाए, एक नीच जाति, दुबला-पतला, मूर्ख, जड़।
डाँट-संज्ञा स्त्री० नाराजी में चिल्लाना, डपटना, घुड़कना।
डाँटना-क्रि० स० क्रोध में जोर जोर से बोलना, डपटना।
डाँड़-संज्ञा पुं० डंडा, सीधी लकड़ी, जुरमाना, जो धन के रूप में लिया जाय।
डाँड़ी-संज्ञा स्त्री० तराजू का डंडा।
डाँवाँडोल-वि० एक जगह स्थिर न रहनेवाला। चंचल। अस्थिर।
डाँस-संज्ञा पुं० बड़ा मच्छड़, दंश, डंक।
डाइन-संज्ञा स्त्री० चुड़ैल, भूतनी।
डाक-संज्ञा पुं० डाक से आनेवाले कागज-पत्र।
डाकखाना-संज्ञा पुं० वह सरकारी स्थान जहाँ चिट्ठियाँ इकट्ठी की जाती हैं और जहाँ से वे घर घर भेजी जाती हैं।
डाकना-क्रि० अ० फाँदना, कूदना, उलटी करना, वमन करना।
डाक-बँगला-सरकारी मकान जिसमें परदेसी ठहरते हैं।
डाका-संज्ञा पुं० जबरदस्ती किसी का माल, धन छीन लेना।
डाकाजनी-संज्ञा स्त्री० डाका मारने का काम, बटमारी।
डाकिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक पिशाची। डायन।
डाकू-संज्ञा पुं० डाका डालनेवाला।
डाढ़-संज्ञा स्त्री० चबाने के मोटे दाँत, वृक्षों की जटा, बरोह।
डायन-संज्ञा स्त्री० चुड़ैल, पिशाचिनी। कुरूपा और भयंकर स्त्री।
डार-संज्ञा स्त्री० (ग्रा०) शाखा, डाल।
डाल-संज्ञा स्त्री० पेड़ से इधर उधर निकली लंबी लकड़ियाँ, शाखा।
डासन-संज्ञा पुं० बिछाने का कपड़ा, बिस्तरा, बिछावन, बिछौना।
डाह-संज्ञा स्त्री० मन की जलन, ईर्ष्या।
डाहना-क्रि० स० सताना, जलाना।
डिंगर-संज्ञा पुं० (सं०) बदमाश आदमी।
डिंभ-संज्ञा पुं० (सं०) मूर्ख व्यक्ति। छोटा बच्चा। संज्ञा पुं० घमण्ड। अभिमान। दिखावा।
डिगना-क्रि० अ० अपनी जगह से हटना।
डिगाना-क्रि० स० किसी को उसके उद्देश्य या रास्ते से हटा देना।
डिब्बा-संज्ञा पुं० छोटा पात्र।
डिमडिमी-संज्ञा स्त्री० एक बाजा।
डीठ-संज्ञा स्त्री० देखने की शक्ति, दृष्टि, समझ, सूझ।
डील-संज्ञा पुं० शरीर का कद। स्वास्थ्य, व्यक्ति, प्राणी, मनुष्य।
डुगडुगी-संज्ञा स्त्री० एक छोटा बाजा।
डुबकी-संज्ञा स्त्री० कुछ देर के लिए पानी में डूबा रहना, गोता।
डुबाना-क्रि० स० पानी में किसी वस्तु को अन्दर कर देना। बरबाद

या नष्ट कर देना ।
डेरा-संज्ञा पुं० ठहराव, पड़ाव,
डेला-संज्ञा पुं० आँख का आगे का उभरा सफेद भाग ।
डैना-संज्ञा पुं० चिड़ियों आदि के पंख, पाँख ।
डोंगा-संज्ञा स्त्री० वह नाव जिसमें पाल नहीं लगाई जाती ।
डोंगी-संज्ञा स्त्री० छोटी नौका ।
डोकरा-संज्ञा पुं० बुड्ढा और कमजोर । पिता ।
डोम-संज्ञा पुं० श्मशान पर आग देनेवाली एक नीच जाति ।
डोमनी-संज्ञा स्त्री० डोम जाति की स्त्री ।
डोर-संज्ञा स्त्री० (सं०) मोटा तागा, सूत्र, डोरा ।
डोरा-संज्ञा पुं० रुई, रेशम आदि का बटा हुआ सूत, तागा, धारी, लकीर । आँखों की लाल नसें ।
डोरी-संज्ञा स्त्री० रज्जु, पाश, मजबूत तागा, रस्सी ।
डोलना-क्रि० स० हिलना, चलना । गति में होना, स्थिर न रहना,
डोली-संज्ञा स्त्री० सवारी, पालकी ।
डौंड़ी-संज्ञा स्त्री० ढिंढोरा ।
डौल-संज्ञा पुं० ढाँचा । तरीका, ढब, भाँति, प्रकार, उपाय ।
ड्योढ़ी-संज्ञा स्त्री० दरवाजे की नीचे की लकड़ी । मकान में घुसने में सबसे पहले पड़नेवाला बाहरी कमरा, पौरी ।
ड्योढ़ीवान-संज्ञा पुं० चौकीदार ।

ढ

ढँढोरा-संज्ञा पुं० किसी बात को जनता में कहने या घोषित करने के लिए बजाया जानेवाला ढोल ।
ढँपना-क्रि० अ० ढकना ।
ढंग-संज्ञा, पुं० तरकीब । प्रणाली ।
ढकनी-संज्ञा स्त्री० वह वस्तु जिससे कुछ ढाँका जाय ।
ढकोसला-संज्ञा पुं० पाखंड ।
ढचर-संज्ञा पुं० बखेड़ा, आडम्बर ।
ढरकाना-क्रि० स० पानी आदि को गिराना या फैलाना ।
ढर्रा-संज्ञा पुं० रास्ता । तरीका ।
ढलकना-क्रि० अ० तरल पदार्थ का बहना या बहाना ।
ढलना-क्रि० अ० नीचे की ओर बहना । उम्र अधिक होना । बीतना । किसी ओर झुक जाना ।
ढलवाँ-वि० साँचे में ढालकर बनाया जा सकनेवाला ।
ढलवाना-क्रि० स० ढालने का काम करवाना ।
ढलाई-संज्ञा स्त्री० ढलने का काम ढालने की मजदूरी ।
ढहना-क्रि० अ० मकान आदि का गिर जाना । नष्ट होना ।
ढहाना-क्रि० स० मकान आदि गिराना । बरबाद करना ।
ढाँचा-संज्ञा पुं० किसी चीज को बनाने के पहले उसकी रेखा बनाना

ढाक-संज्ञा पुं० पलाश का वृक्ष ।
ढाढ़स-संज्ञा पुं० हिम्मत। तसल्ली।
ढारस-संज्ञा पुं०आश्वासन।साहस।
ढाल-तलवार आदि का वार रोकने का अस्त्र ।
ढालना-क्रि० स० तरल पदार्थ को गिराना । मदिरा पीना । साँचे में ढालकर बनाया जाना ।
ढालवाँ, ढालू-वि० लगातार नीचे गया हुआ रास्ता, ढाल, ढालुवाँ।
ढिंढोरा-संज्ञा पुं० घोषणा ।
ढिठाई-संज्ञा स्त्री० निर्लज्जता, अनुचित व्यवहार, गुस्ताखी ।
ढीठ-वि० बड़ों का आदर न करने या डर न माननेवाला । साहसी।
ढील-संज्ञा स्त्री० सुस्ती । बंधन का ढीलापन।
ढीलना-क्रि० स० ढीला करना ।
ढीलापन-संज्ञा पुं० ढीला या शिथिल होने का भाव, शिथिलता ।
ढुलना-क्रि० अ० तरल पदार्थ का नीचे की ओर बहना । लुढ़कना।
ढूँढ़ना-क्रि० स० खोज या तलाश करना । अन्वेषण करना।
ढेंढर-संज्ञा पुं० आँख के ढेले के ऊपर का उभरा मांस । टेंटर।
ढेर-संज्ञा पुं० बहुत सी इकट्ठी चीजें । समूह, राशि ।
ढेरी-संज्ञा स्त्री०समूह, टाल, राशि।
ढेलबाँस-संज्ञा स्त्री० ढेला फेंकने का रस्सी का फंदा ।
ढेला-संज्ञा पुं० ईंट, मिट्टी आदि का टुकड़ा । एक प्रकार का धान ।
ढोंग-संज्ञा पुं०दिखावा करना ।
ढोटा-संज्ञा पुं० पुत्र, बेटा।
ढोना-क्रि० स० किसी वस्तु या बोझ को लादकर ले जाना ।
ढोर-संज्ञा पुं० चौपाया, मवेशी ।
ढोल-संज्ञा पुं० (सं०) एक लकड़ी का बड़ा चमड़े से मढ़ा बाजा ।
ढोलक-संज्ञा स्त्री० छोटा ढोल ।
ढोली-संज्ञा स्त्री० दो सौ पानों की गड्डी । हँसी-मजाक ।
ढौंचा-संज्ञा पुं० साढ़े चार का पहाड़ा ।

त

तँबोली-संज्ञा पुं० पान आदि बेचने-वाला, बरई।
तंग-वि० कसा हुआ, सँकरा । संकुचित । परेशान ।
तंगदस्त-वि० (फा०) निर्धन, कम धनवाला ,गरीब।
तंजेब-संज्ञा स्त्री० (फा०) बढ़िया मलमल ।
तंडुल-संज्ञा स्त्री० (सं०) चावल।
ततु-संज्ञा पुं० सूत, तागा, रस्सी ।
तंत्र-संज्ञा पुं० (सं०) चमड़े की डोरी, ताँत। डोरी, तागा । पक्का सिद्धान्त । झाड़ने-फूँकने का मंत्र । ढाँचा ।

तंदुरुस्ती-संज्ञा स्त्री० (फा०) शरीर का ठीक होना । स्वास्थ्य ।
तंदूर-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा मिट्टी का रोटी पकाने का चूल्हा ।
तंद्रालु-वि० (सं०) ऊँघता हुआ । नींद से भरा ।
तंबू-संज्ञा पुं० कपड़े टाट आदि का घर, खेमा, डेरा, शिविर ।
तंबूरा-संज्ञा पुं० बीन की तरह एक बाजा, तानपूरा ।
तअज्जुब-संज्ञा पुं० (अ०) आश्चर्य, अचंभा ।
तअल्लुक-संज्ञा पुं० (अ०) बहुत से गाँवों की जमींदारी ।
तअल्लुकःदार-संज्ञा पुं० (अ०) इलाके या जमींदारी का मालिक ।
तअल्लुक-संज्ञा पुं० (अ०) सम्बन्ध, मतलब ।
तकदीर-संज्ञा स्त्री० (अ०) भाग्य ।
तकमील-संज्ञा स्त्री० (अ०) पूरा होना, पूर्णता ।
तकरार-संज्ञा स्त्री० झगड़ा, हुज्जत ।
तकरीर-संज्ञा स्त्री० (अ०) बात-चीत । भाषण ।
तकलीफ-संज्ञा स्त्री० (अ०) कष्ट, परेशानी । मुसीबत ।
तकल्लुफ-संज्ञा पुं० (अ०) अपने ऊपर लेकर किसी का काम करना ।
तकसीम-संज्ञा स्त्री० (अ०) बाँटना, हिस्सों में करना । भाग ।
तकाजा-संज्ञा पुं० तगादा, पावना, अधिकार की चीज माँगना ।
तकावी-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसानों को अकाल आदि विपत्ति के समय कर्ज दिया जानेवाला धन ।
तकिया-कलाम-संज्ञा पुं० वह बात जो लोग अक्सर कहा करते हैं ।
तक्र-संज्ञा पुं० (सं०) घी निकाल-कर दूध का बचा भाग, मट्ठा ।
तक्षण-संज्ञा पुं० (सं०) लकड़ी, पत्थर आदि की मूर्त्तियाँ बनाना ।
तख्त ताऊस-संज्ञा पुं० शाहजहाँ का बनवाया मोर के आकार का प्रसिद्ध रत्नजटित सिंहासन ।
तख्तनशीन-वि० राज्यसिंहासन पर बैठा हुआ । सिंहासनारूढ़ ।
तख्तपोश-संज्ञा पुं० (फा०) तख्त पर डाली जानेवाली चादर ।
तख्ती-संज्ञा स्त्री० लकड़ी का छोटा पटरा । खड़िया से लकड़ी की जिस पट्टी पर बच्चे लिखते हैं।
तगड़ा-वि० बलवाला, पुष्ट, बड़ा ।
तजकिरा-संज्ञा पुं० (अ०) कही हुई बात, चर्चा, जिक्र ।
तजवीज-संज्ञा स्त्री० (अ०) राय ।
तट-संज्ञा पुं० (सं०) किनारा । प्रदेश । क्रि० वि० नजदीक, पास-पास, निकट ।
तटनी-संज्ञा स्त्री० नदी । सरिता ।
तटस्थ-वि० (सं०) किनारे पर रहनेवाला । किसी झगड़े के बीच में न बोलने वाला, उदासीन ।
तड़का-संज्ञा पुं० बहुत सबेरा ।
तड़प-संज्ञा स्त्री० बंधन से छुटने की कोशिश करना । कष्ट में

तड़पना-क्रि० अ० कष्ट में तिलमिलाना, व्याकुल होना।

तड़ाग-संज्ञा पुं० (सं०) तालाब।

तड़ातड़-क्रि० वि० तड़-तड़ का लगातार शब्द।

तड़ित-संज्ञा स्त्री० बिजली।

तत्काल-वि० क्रि० उसी समय, फौरन, तुरंत।

तत्कालीन-क्रि० (सं०) उस समय का।

तत्क्षण-क्रि० वि० (सं०) उसी समय, फौरन, तत्काल, तुरत।

तत्त्व-संज्ञा पुं० (सं०) पक्की या सही बात, असलियत। सांख्य के अनुसार पच्चीस तत्त्व। पाँच तत्त्व, पंचभूत। ईश्वर। सार, निचोड़।

तत्त्वज्ञ-संज्ञा पुं० (सं०) तत्त्व या असलियत को जाननेवाला ब्रह्मज्ञानी। दार्शनिक।

तत्त्वज्ञान-संज्ञा पुं० (सं०) तत्त्व या सार वस्तु को जानना, ब्रह्मज्ञान।

तत्त्वज्ञानी-संज्ञा पुं० दार्शनिक।

तत्त्वदर्शी-संज्ञा पुं० तत्त्वज्ञानी।

तत्त्वदृष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) तत्त्व को देखना, ज्ञान दृष्टि।

तत्त्ववाद-संज्ञा पुं० दर्शनशास्त्र के विचार, तत्त्व को जानने के विचार। फिलासफी।

तत्त्ववादी-संज्ञा पुं० (सं०) साफ बात करनेवाला या तत्त्ववाद

तत्त्वविद्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) तत्त्व

[illegible]

दर्शन शास्त्र।

तत्ववेत्ता-संज्ञा पुं० (सं०) दार्शनिक।

तत्त्वावधान-संज्ञा पुं० (सं०) देखरेख, निरीक्षण, जाँच-पड़ताल।

तत्पर-वि० (सं०) काम में लगा हुआ, उद्यत, उन्नद्ध, तैयार।

तत्परता-संज्ञा स्त्री० (सं०) तैयारी। चालाकी। लगा होना। होशियारी।

तत्पुरुष-संज्ञा पुं० ईश्वर।

तथा-अव्य० (सं०) और। इसी तरह।

तथापि-अव्य० (सं०) फिर भी। तब भी। तिस पर भी, तौभी।

तथैव-अव्य० (सं०) वैसा ही।

तथ्य-वि० (सं०) सत्य, सचाई।

तद्-वि० (सं०) वह। क्रि० वि० उसी समय।

तदंतर, तदनंतर-क्रि० वि० (सं०) उसके बाद, फिर।

तदनुरूप-वि० (सं०) उसी प्रकार का। उसके अनुसार।

तदनुसार-वि० (सं०) उसी के अनुसार या हिसाब से, मुताबिक।

तदबीर-संज्ञा स्त्री० (अ०) वह युक्ति जिससे कोई मतलब पूरा हो, तरकीब, उपाय, प्रबंध।

तदाकार-वि० (सं०) उसी आकार का, उसी तरह का। तद्रूप।

तदुपरांत-क्रि० वि० (सं०) उसके बाद।

तद्गत-वि० (सं०) उससे मतलब रखनेवाला। उसके अन्तर्गत।

तद्रूप-वि० (सं०) उसी रूप का,

समान ।
तद्रूपता-संज्ञा स्त्री० (सं०) वैसा ही होना, सादृश्य ।
तद्वत्-वि० उसी प्रकार का । ज्यों का त्यों ।
तन-संज्ञा पुं० शरीर, देह ।
तनज्जुल-वि० (अ०) गिरा हुआ।
तनज्जुली-संज्ञा स्त्री० (फा०) नीचे गिरना, अवनति ।
तनय-संज्ञा पुं० लड़का, पुत्र, बेटा ।
तनया-संज्ञा स्त्री० (सं०) पुत्री, बेटी, काली तुलसी ।
तनहा-वि० (फा०) अकेला ।
तनहाई-संज्ञा स्त्री० (फा०) अकेले रहने की दशा, एकांत ।
तनाव-संज्ञा पुं० तनने का काम । धोबी की कपड़े सुखाने की रस्सी।
तनु-वि० (सं०) दुबला-पतला, कमजोर, सुन्दर, कोमल ।
तनुता-संज्ञा स्त्री० कृशता, छोटा होना, लघुता । दुर्बलता. कमजोरी ।
तन्मय-वि० (सं०) किसी काम में ध्यान से लगा हुआ, दत्तचित ।
तन्मयता-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी काम में ध्यान से लगे रहने की दशा, एकाग्रता, लीनता, लगन ।
तप-संज्ञा पुं० इन्द्रियों को वश में करने के लिए शरीर को कष्ट देकर चित्त को एकाग्र करने की क्रिया, तपस्या, अग्नि, नियम ।
तपन-संज्ञा पुं० दाह, ताप, गर्मी ।
तपसी-संज्ञा पुं० तपस्या करनेवाला, तपस्वी ।
तपस्विनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) तपस्या करनेवाली स्त्री । तपस्वी की स्त्री।
तपस्वी-संज्ञा पुं० तपस्या करने-वाला, दुखिया, घीकुआर, नारद ।
तपाक-संज्ञा पुं० (फा०) तेजी । उत्साह, आवेश, जोश ।
तपाना-क्रि० स० गरम करना । दुःख देना ।
तपिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) गरमी, तपन ।
तपेदिक-संज्ञा पुं० फेफड़े सड़ जाने की एक बीमारी, क्षयी।
तपोबल-संज्ञा पुं० (सं०) तप की शक्ति ।
तपोवन-संज्ञा पुं० (सं०) तपस्वियों के रहने का वन ।
तपोवृद्ध-वि० (सं०) तपस्या द्वारा श्रेष्ठ ।
तप्त-वि० (सं०) दग्ध, तपा हुआ, दुःखित ।
तप्तकुंड-संज्ञा पुं० (सं०) गरम जलवाली प्राकृतिक धारा ।
तफरीह-संज्ञा स्त्री० (अ०) खुशी, सैर, दिल्लगी, हँसी ।
तफसील-संज्ञा स्त्री० (अ०) पूरा साफ वर्णन, सफाई । ब्योरा ।
तबदील-वि० (अ०) बदला हुआ, परिवर्तित ।
तबलची-संज्ञा पुं० तबला बजाने-वाला ।
तबाह-वि० (फा०) बिलकुल बरबाद, नष्ट ।
तबाही-संज्ञा स्त्री० (फा०) बरबाद

हो जाना, नाश, बरबादी ।
तबिअत-संज्ञा स्त्री० (अ०) मन, जी।
तबीअतदार-वि० समझदार। रसिक।
तम-संज्ञा पुं० अँधेरा । कालिख ।
तमक-संज्ञा पुं० जोश । तेजी ।
तमगा-संज्ञा पुं० सम्मान के लिए दिया सोने या चाँदी का पदक।
तमचुर-संज्ञा पुं० मुरगा ।
तमस-संज्ञा पुं० (सं०) अँधेरा । पाप । तमसा नदी ।
तमाचा-संज्ञा पुं० उँगलियों की गाल पर चोट, थप्पड़ ।
तमाम-वि० (अ०) कुल, सब ।
तमारि-संज्ञा पुं० अँधेरे का शत्रु, दिनकर, सूर्य ।
तमाल-संज्ञा पुं० (सं०) एक ऊँचा वृक्ष ।
तमाशबीन-संज्ञा पुं० तमाशा देखने-वाला । ऐयाश । वेश्यागामी ।
तमाशा-संज्ञा पुं० (अ०) मन बह-लानेवाला काम । अनोखी बात ।
तमिस्र-संज्ञा पुं० अन्धकार, क्रोध ।
तमी-संज्ञा स्त्री० रात्रि रात ।
तमीचर-संज्ञा पुं० (सं०) राक्षस ।
तमीज-संज्ञा स्त्री० (अ०) अदब । अच्छे-बुरे और ठीक-गलत की पहचान । शिष्टता ।
तमोगुण-संज्ञा पुं० (सं०) एक सबसे नीचा गुण जिससे बुरे कामों की ओर प्रवृत्ति होती है।
तमोगुणी-वि० (सं०) तमोगुण से युक्त व्यक्ति । बुरी प्रवृत्तिवाला ।
तमोली-संज्ञा पुं० पान बेचनेवाला ।
तरंग-संज्ञा स्त्री० (सं०) पानी की लहर । मन की मौज ।
तरंगी-वि० लहरवाला । मन-मौजी ।
तर-वि० (फा०) भीगा हुआ । ठंडा । हरा। मालदार ।
तरकश-संज्ञा पुं० (फा०) वह चोंगा जिसमें तीर रखे जाते हैं ।
तरकीब-संज्ञा स्त्री० (अ०) ढंग, उपाय, तरीका, ढंग ।
तरक्की-संज्ञा स्त्री० (अ०) ऊँचे उठना, उन्नति, पद-वृद्धि, बढ़ती।
तरजना-क्रि० अ० डाँटना ।
तरजुमा-संज्ञा पुं० (अ०) एक भाषा से दूसरी भाषा में बदलना,
तरणिजा-संज्ञा स्त्री० (सं०) सूर्य की पुत्री, यमुना ।
तरणिसुत-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य का पुत्र, कर्ण, शनि ।
तरणी-संज्ञा स्त्री० नौका, नाव ।
तरतीब-संज्ञा स्त्री० (अ०) ठीक मे या क्रम से वस्तुओं को लगाना। सिलसिला ।
तरनतार-संज्ञा पुं० छुटकारा, मुक्ति।
तरनतारन-संज्ञा पुं० संसार-सागर से पार लगानेवाला ।
तरना-क्रि० स० पार करना । क्रि० अ० संसार के कष्टों से मुक्ति पाना ।
तरनी-संज्ञा स्त्री० नाव, तरणी ।
तर-बतर-वि० (फा०) बिलकुल

भीगा हुआ ।
तरल-वि० हिलता हुआ, चंचल । वहनेवाला पदार्थ । चमकीला ।
तरलता-संज्ञा स्त्री० (सं०) चंचलता चपलता, बहनेवाला, द्रवत्व ।
तरवर-संज्ञा पुं० बड़ा वृक्ष ।
तरवार-संज्ञा स्त्री० तलवार, खड्ग ।
तरस-संज्ञा पुं० दया, करुणा ।
तरसना-क्रि० अ० किसी चीज के अभाव का दुःख सहना ।
तरसाना-क्रि० स० किसी चीज को न देकर दूसरे को परेशान करना ।
तराई-संज्ञा स्त्री० पहाड़ के नीचे का मैदान । घाटी ।
तरावट-संज्ञा स्त्री० गीलापन । ठंडक ।
तराश-संज्ञा स्त्री० (फा०) काट-छाँट । बनावट, ढंग ।
तराशना-क्रि० स० (फा०) काटना ।
तरी-संज्ञा स्त्री० नौका, नाव । गीलापन, शीतलता ।
तरुण-वि० (सं०) जवान । नया ।
तरुनई, तरुनाई-संज्ञा स्त्री० जवानी की दशा, युवावस्था, जवानी ।
तरेटी-संज्ञा स्त्री० तराई, घाटी ।
तरेरना-क्रि० स० गुस्से से देखना ।
तरौंस-संज्ञा पुं० किनारा, तट ।
तर्क-संज्ञा पुं० (सं०) किसी बात को सिद्ध करने के लिए कही हुई युक्ति । दलील ।
तर्क-वितर्क-संज्ञा पुं० (सं०) सोच-विचार । वाद-विवाद ।
तर्कश-संज्ञा पुं० (फा०) तीर रखने का चोंगा ।
तर्कशास्त्र-संज्ञा पुं० न्यायशास्त्र ।
तर्काभास-संज्ञा पुं० (सं०) गलत तर्क, कुतर्क ।
तर्ज-संज्ञा पुं० (अ०) ढंग, प्रकार ।
तर्जना-क्रि० अ० धमकाना, डाटना ।
तर्जनी-संज्ञा स्त्री० अँगूठे और मध्यमा के बीच की उँगली ।
तर्जुमा-संज्ञा पुं० (अ०) एक भाषा से दूसरे में करना, अनुवाद ।
तर्पण-संज्ञा पुं० (सं०) तृप्त करना । कर्मकांड की क्रिया ।
तल-संज्ञा पुं० अधोभाग, नीचे का भाग, पेंदा । सतह । पानी के नीचे की भूमि ।
तलछट-संज्ञा स्त्री० द्रव पदार्थ से छनकर नीचे जमी मैल ।
तलब-संज्ञा स्त्री० (अ०) चाह, इच्छा, माँग, बुलाना, वेतन ।
तलबगार-वि० (फा०) चाहनेवाला ।
तलबाना-संज्ञा पुं० (फा०) अदालत में जमा किया हुआ गवाहों को तलब करने का खर्च ।
तलबी-संज्ञा स्त्री० (अ०) बुलावा ।
तलवार-संज्ञा स्त्री० खड्ग, कृपाण ।
तलहटी-संज्ञा स्त्री० पहाड़ के नीचे तराई, घाटी ।
तलाक-संज्ञा पुं० (अ०) पति-पत्नी का एक दूसरे से सम्बन्ध तोड़ लेना ।
तलाश-संज्ञा स्त्री० खोज । चाह ।

तलाशी-संज्ञा स्त्री० (फा०) खोयी वस्तु की खोज । अच्छी तरह जाँच-पड़ताल ।
तले-क्रि० वि० नीचे की ओर ।
तलेटी-संज्ञा स्त्री० पेंदी, तलहटी ।
तलौंछ-संज्ञा स्त्री० जमा हुआ मैल ।
तल्ख-वि० (सं०) कड़ुवा ।
तवज्जह-संज्ञा स्त्री० (अ०) ध्यान ।
तवा-संज्ञा पुं० रोटी सेंकने का लोहे का चपटा गोल बरतन ।
तवाजा-संज्ञा स्त्री० (अ०) आदर ।
तवायफ-संज्ञा स्त्री० (अ०) वेश्या, रंडी ।
तवारीख-संज्ञा स्त्री० (अ०) इतिहास ।
तशखीश-संज्ञा स्त्री० (अ०) पक्का करना, निश्चय । रोग की पहचान ।
तशरीफ-संज्ञा स्त्री० (अ०) बड़प्पन, इज्जत, आदर, सम्मान ।
तश्तरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) एक छोटी थाली या रकाबी ।
तसकीन-संज्ञा स्त्री० (अ०) तसल्ली ।
तसबीम-संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसलमानों की नाम जपने की माला ।
तसल्ली-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी काम के पूरा हो जाने पर उत्पन्न भाव, शान्ति ।
तस्कर-संज्ञा पुं० चोर, चोट्टा, डाकू ।
तह-संज्ञा स्त्री० (फा०) एक के ऊपर एक, परत । तला । पेंदा ।
तहजीब-संज्ञा स्त्री० (अ०) अच्छा-बुरा समझते हुए काम करना, सभ्यता ।
तहरीर-संज्ञा स्त्री० (अ०) लिखा हुआ । लिखावट । लेख ।
तहरीरी-वि० (फा०) लिखी हुई बात । लिपिबद्ध ।
तहलका-संज्ञा पुं० (अ०) बरबादी, उपद्रव, खलबली, हलचल ।
तहसील-संज्ञा स्त्री० (अ०) एक जिले का भाग । उगाही ।
तहसीलदार-संज्ञा पुं० तहसील में लगान वसूल करनेवाला ।
तांडव-संज्ञा पुं० शिव का प्रसिद्ध नृत्य । उपद्रव ।
तांत-संज्ञा स्त्री० डोरी ।
ताँता-संज्ञा पुं० पंक्ति, लाइन ।
तांत्रिक-वि० (सं०) तंत्र-सम्बन्धी । संज्ञा पुं० एक प्रकार के साधु ।
ताई-संज्ञा स्त्री० पिता के बड़े भाई की स्त्री, छिछली कड़ाही ।
ताईद-संज्ञा स्त्री० (अ०) पक्ष लेना, अनुमोदन करना ।
ताऊ-संज्ञा पुं० बाप का बड़ा भाई ।
ताऊन-संज्ञा पुं० (अ०) प्लेग ।
ताऊस-संज्ञा पुं० (अ०) मोर ।
ताक-संज्ञा स्त्री० टकटकी लगाकर देखना । मौका ढूंढना ।
ताक-संज्ञा पु० (अ०) आला ।
ताक-झाँक-संज्ञा स्त्री० खोज । छिपकर देखने की क्रिया ।
ताकत-संज्ञा स्त्री० (अ०) बल, शक्ति ।
ताकतवर-वि० (फा०) शक्तिशाली बलवान् ।

ताकना-क्रि० स० समझ जाना। बात को भाँप लेना। निगरानी रखना। विचारना, चाहना।
ताकीद-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी बात की आज्ञा देना। चेतावनी।
तागा-संज्ञा पुं० सूत, डोरा, धागा।
ताज-संज्ञा पुं० राजाओं के पहनने की बहुमूल्य मुकुट, कलगी।
ताजगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) ताजा होना, ताजापन, प्रसन्नता।
ताजदार-संज्ञा पुं० (फा०) ताज-वाला, बादशाह, राजा।
ताजपोशी-संज्ञा स्त्री० (फा०) ताज पहनकर सिंहासन पर बैठना, राजमुकुट धारण करने का उत्सव।
ताजा-वि० (फा०) बिलकुल नया। हरा-भरा। स्वस्थ, प्रसन्न।
ताजिया-संज्ञा पुं० (अ०) मकबरे की शक्ल का कागज।
ताजीम-संज्ञा स्त्री० (अ०) बड़ों को झुककर सम्मान देना।
ताटंक-संज्ञा पुं० (सं०) कान में पहनने का एक गहना। एक छंद।
ताड़न-संज्ञा पुं० आघात, प्रहार, चोट। दण्ड, सजा।
ताड़ना-संज्ञा स्त्री० मार, प्रहार, ताड़न। क्रि०स०मारना। डाटना।
ताड़ित-वि० (सं०) मार खाया हुआ। पीटा हुआ।
तात-संज्ञा पुं० (स०) प्यारा व्यक्ति, पिता।
तातार्थई-संज्ञा स्त्री० नाचने में पैरों की गति।
तातील-संज्ञा स्त्री० (अ०) छुट्टी।
तात्कालिक-वि० (सं०) उसी समय का।
तात्पर्य-संज्ञा पुं० (सं०) मतलब, आशय, तत्परता।
तात्त्विक-वि० सही, यथार्थ।
तादृश-वि० (सं०) उसके समान, वैसा, तत्तुल्य।
तान-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक सिरे से दूसरे तक खिंचाव। संगीत में स्वरों की खींच, आलाप।
तानना-क्रि० स० एक छोर से दूसरे छोर तक खींचना। फैलाना।
तानपूरा-संज्ञा पुं० एक बाजा।
ताना-संज्ञा पुं० कपड़े की बुनाई में लम्बाई के तार। पिघलाना, गरम करना। संज्ञा पुं० (अ०) टेढ़ी या बुरी लगनेवाली बात, व्यंग्य, चुटीली बात।
तापत्रय-संज्ञा पुं० (सं०) तीन तरह के दुःख, आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।
तापमान यंत्र-संज्ञा पुं० (सं०) गर्मी नापने का यंत्र, थरमामीटर।
तापस-संज्ञा पुं० तपस्वी।
तापित-वि० (सं०) तपाया या गरम किया हुआ। दुःखित।
ताब-संज्ञा स्त्री० (फा०) गरमी। हिम्मत, सामर्थ्य, धैर्य।
ताबड़तोड़-क्रि० वि० लगातार, बिना रुके, बराबर।
ताबूत-संज्ञा पुं० (अ०) लाश रखकर गाड़ने की संदूक।

ताबे-वि० अधीन, मातहत ।
ताबेदार-वि० हुक्म माननेवाला ।
तामरस-संज्ञा पुं० (सं०) कमल । धतूरा । सोना । ताँबा ।
तामस-वि० (सं०) तमोगुणवाला ।
तामसी-वि० स्त्री० (सं०) तमोगुण-वाली । संज्ञा स्त्री० अँधेरी रात, महाकाली, जटामासी ।
तामिस्र-संज्ञा पुं० (सं०) एक अँधेरा नरक । क्रोध ।
तामील-संज्ञा स्त्री० (अ०) आज्ञा मानना । अमल करना ।
ताम्र-संज्ञा पुं० ताँबा नामक धातु ।
ताम्रचूड़-संज्ञा पुं० (सं०) मुर्गा ।
ताम्रपत्र-संज्ञा पुं० (सं०) प्राचीन काल में ताँबे का पत्र जिस पर अक्षर खोदकर लिखे जाते थे ।
तायदाद-संज्ञा स्त्री० गिनती, तादाद ।
तारक-संज्ञा पुं० चक्षु, आँख, तारा, नक्षत्र । भवसागर से पार करनेवाला ।
तारका-संज्ञा स्त्री० (सं०) नक्षत्र । आँख की पुतली ताड़का ।
तारकेश्वर-संज्ञा पुं० महादेव, शिव ।
तारघर-संज्ञा पुं० जहाँ से तार द्वारा खबर भेजी जाय ।
तारण-संज्ञा पुं० (सं०) पार उतारने का काम । उद्धार, मुक्ति ।
तारतम्य-संज्ञा पुं० (सं०) सिलसिला, क्रम । कम ज्यादा की तरतीब ।
तारना-क्रि० स० पार लगाना । संसार के कष्टों से पार करना, सब क्लेशों से निवृत्त करना ।
तारपीन-संज्ञा पुं० चीड़ के पेड़ से निकाला तेल ।
तारा-संज्ञा पुं० (सं०) नक्षत्र । आँख की पुतली । भाग्य ।
तारापथ-संज्ञा पुं० आसमान ।
तारामंडल-संज्ञा पुं० नक्षत्र-मण्डल, एक प्रकार की अग्नि क्रीड़ा ।
तारिका-संज्ञा स्त्री० ताड़ी नामक मदिरा ।
तारिणी-वि० स्त्री० (सं०) तारने या पार करनेवाली ।
तारीक-वि० (फा०) काला । अँधेरा ।
तारीख-संज्ञा स्त्री० (फा०) २४ घण्टे का समय, दिन । तिथि ।
तारीफ-संज्ञा स्त्री० (अ०) बड़ाई । वर्णन, गुण, विशेषता ।
तारुण्य-संज्ञा पुं० यौवन, जवानी ।
तार्किक-संज्ञा पुं० (सं०) तर्क शास्त्र जाननेवाला, तर्क करनेवाला ।
ताल-संज्ञा पुं० करतल, हथेली ।
तालरस-संज्ञा पुं० (सं०) ताड़ के पेड़ का रस, ताड़ी ।
ताला-संज्ञा पुं० किसी मकान या बक्स के कुंडे में लगाया हुआ वह यंत्र जो बिना चाभी के नहीं खुलता ।
तालाब-संज्ञा पुं० पानी भरा बड़ा गड्ढा, जलाशय, सरोवर ।
तालिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) कुंजी । चीजों का लिखा क्रम, सूची ।
तालिब-संज्ञा पुं० (अ०) ढूँढ़ने या

चाहनेवाला, खोजी ।
तालिबइल्म-संज्ञा पुं० (अ०) इल्म या विद्या को चाहनेवाला, विद्यार्थी ।
तालीम-संज्ञा स्त्री० (अ०) शिक्षा, विद्या ।
तालु, तालू-संज्ञा पुं० (सं०) मुख के भीतर ऊपर का भाग ।
ताव-संज्ञा पुं० पहुँचाई हुई गरमी। जोश ।
तावीज-संज्ञा पुं० गले या बाजू में पहना जानेवाला मंत्र, जन्तर ।
तिकोन, तिकोना-वि० तीन कोने-वाला, नमकीन पकवान, समोसा।
तिक्त-वि० (सं०) कड़वा। कटु, बुरा।
तिक्तता-संज्ञा स्त्री० (सं०) कड़ुवा-पन । तेजी । कटुता ।
तिखूंटा-वि० तिकोना ।
तिग्मता-संज्ञा स्त्री० तीक्ष्णता।
तिजारत-संज्ञा स्त्री० (अ०) व्यापार, रोजगार।
तितर-बितर-वि० बिखरा हुआ,
तितिक्ष-वि० (सं०) सहनशील।
तितिक्षा-संज्ञा स्त्री० (सं०) सहने की ताकत, क्षमा, शान्ति ।
तितिक्षु-वि० (सं०) क्षमा करने-वाला, क्षमाशील।
तिथिक्षय-संज्ञा पुं० (सं०) ज्योतिष में किसी तिथि की हानि ।
तिदरी-संज्ञा स्त्री० तीन दरवाजों-वाला कमरा।
तिनकना-क्रि० अ० चिढ़ना, क्रुद्ध-होना, नाराज होना।

तिनका-संज्ञा पुं० सूखी घास का टुकड़ा। बहुत छोटा टुकड़ा।
तिपल्ला-वि० तीन पल्लोंवाला।
तिपाई-संज्ञा स्त्री० तीन पायोंवाली बैठने की ऊँची चौकी।
तिबारा-वि० तीसरी बार।
तिबासी-वि० तीन दिन का बासी खाना।
तिमंजिला-वि० एक के ऊपर एक तीन खंडों का मकान।
तिमि-संज्ञा पुं० (सं०) बड़ी समुद्री मछली। अव्य० वैसे।
तिमिर-संज्ञा पुं० (सं०) अँधेरा।
तिमिरहर-संज्ञा पुं० (सं०) अंधेरा दूर करनेवाला, सूर्य, दीपक।
तिमिरारि-संज्ञा पुं० अन्धकार का शत्रु, सूर्य।
तिमुहानी-संज्ञा स्त्री० तीन रास्तों के मिलने का स्थान।
तिय, तिया-संज्ञा स्त्री० स्त्री, पत्नी।
तिरछापन-संज्ञा पुं० टेढ़ापन।
तिरछौहाँ-वि० तिरछापन लिए हुए।
तिरछौहें-क्रि० वि० तिरछेपन के साथ।
तिरना-क्रि० अ० पानी के ऊपर उतराना, तैरना, उद्धार होना।
तिरस्कार-संज्ञा पुं० (सं०) अपमान, बेइज्जती।
तिरस्कृत-वि० (सं०) अपमान किया हुआ।
तिरहुत-संज्ञा पुं० एक प्रदेश, मिथिला, अपमानपूर्वक त्याग।

तिराहा-संज्ञा पुं० जिस स्थान से तीन मार्ग मिले हों, तिरमुहानी।
तिरिया-संज्ञा स्त्री० स्त्री, औरत।
तिरोधान-संज्ञा पुं० (सं०) गायब होना, अन्तर्धान।
तिरोभाव-संज्ञा पुं० अदर्शन, गायब होना, अन्तर्धान, छिपाव।
तिरोहित, तिरोभूत-वि० अदृश्य।
तिर्यक्-वि० (सं०) तिरछा। संज्ञा पुं० पशु-पक्षी आदि जीव।
तिर्यग्गति-संज्ञा स्त्री० (सं०) तिरछी चाल। पशु योनि में जाना।
तिलक-संज्ञा पुं० (सं०) मस्तक पर चन्दन, केसर आदि का लगाया जानेवाला चिह्न, टीका। राजतिलक। विवाह में एक रीति।
तिलकुट-संज्ञा पुं० कूटे और शक्कर में पगे तिल।
तिलमिल-संज्ञा स्त्री० आँखें न ठहरना, चकाचौंध।
तिलमिलाना-क्रि० अ० आँखें झपकाना, चकाचौंध होना, छटपटाना।
तिलस्म-संज्ञा पुं० जादू, करामात, चमत्कार।
तिलस्मी-वि० तिलस्म या जादू से संबंधित।
तिलांजली-संज्ञा स्त्री० (सं०) शव को जलाने में तिल और जल छोड़ने की एक क्रिया। त्याग देना।
तिलोकपति-संज्ञा पुं० तीनों लोकों के मालिक, विष्णु।
तिलोकी-संज्ञा पुं० तीनों लोक।
तिलोदक-संज्ञा पुं० तिल मिला हुआ जल।
तिलौंछा-वि० तेल के स्वादवाला या जिसमें तेल लगा हो।
तिल्ली-संज्ञा स्त्री० पेट के भीतर बाईं ओर पसली के नीचे एक अंग, प्लीहा, तिल नामक अन्न।
तिहरा-वि० तीन परतों का। तीन गुना।
तिहाई-संज्ञा स्त्री० तीसरा भाग।
तीछण, तीछन-वि० तीक्ष्ण, तेज।
तीक्ष्ण-वि० (सं०) तीव्रता, उष्णता, विष, युद्ध, तेज। तेज स्वाद का। गुस्सेवर। सुनने में बुरा लगनेवाला, कटु।
तीक्ष्ण दृष्टि-वि० (सं०) तेज दृष्टिवाला। छोटी से छोटी गलती को भी देख लेनेवाला। तेज निगाह होना, सूक्ष्म दृष्टि।
तीक्ष्णबुद्धि-वि० (सं०) तेज बुद्धिवाला, बुद्धिमान्।
तीखा-वि० पैनी नोक या धारवाला। सुनने में बुरा, कटु।
तीजा-वि० मुसलमानों में मरने से तीसरे दिन का क्रिया-कर्म।
तीमारदारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) देखभाल, सेवा।
तीय, तीया-संज्ञा स्त्री० स्त्री, औरत।
तीरंदाज-संज्ञा पुं० (फा०) तीर चलानेवाला।
तीरंदाजी-संज्ञा स्त्री० (फा०) तीर चलाने की कला।
तीर-संज्ञा पुं० (सं०) नदी का

किनारा। छोर। पास, समीप। (फा०) नुकीला अस्त्र, बाण।
तीरवर्ती-वि० (सं०) किनारे रहने-वाला। निकट का, पड़ोसी।
तीर्थंकर-संज्ञा पुं० (सं०) जैनियों के चौबीस महापुरुष।
तीर्थ-संज्ञा पुं० (सं०) धर्म भाव से कोई पवित्र स्थान। किसी धार्मिक घटना से संबंधित स्थान।
तीर्थयात्रा-संज्ञा स्त्री० टीर्थाटन, तीर्थों को जाना।
तीर्थराज-संज्ञा पुं० (सं०) प्रयाग।
तीली-संज्ञा स्त्री० सींक।
तीव्र-वि० (सं०) तेज। बहुत
तुंग-वि० (सं०) ऊँचा। तेज।
तुंगता-संज्ञा स्त्री० उच्चता, ऊँचाई।
तुंब-संज्ञा पुं० उदर, पेट। वि० तेज, घोर।
तुंबिल-वि० (सं०) बड़े पेटवाला।
तुक--संज्ञा स्त्री० किसी पद्य की लाइनों के अन्तिम अक्षरों का मेल। अन्त्यानुप्रास। काफिया।
तुकबन्दी-संज्ञा स्त्री० भद्दी कविता करना।
तुख्म-संज्ञा पुं० (अ०) बीज।
तुच्छ-वि० क्षुद्र, छोटा, हीन।
तुच्छता-संज्ञा स्त्री० अल्पता, ओछा-पन, नीचता। कमी।
तुच्छातितुच्छ-वि० (सं०) छोटे से छोटा, अत्यन्त क्षुद्र।
तुतलाना-क्रि० अ० अस्पष्ट शब्दों का उच्चारण करना।
तुफंग-संज्ञा स्त्री० हवाई बन्दूक।
तुमुल-संज्ञा पुं० (सं०) सेना का हुल्लड़। वि० शोरगुल से भरा; **-युद्ध**- पुं० घमासान लड़ाई।
तुरंत-क्रि० वि० अत्यन्त शीघ्र, फौरन।
तुरग-संज्ञा पुं० (सं०) घोड़ा। चित्त; **-रक्षक**- पुं० अश्वरक्षक।
तुरही-संज्ञा स्त्री० एक बाजा।
तुरीय-वि० (सं०) चौथा। संज्ञा स्त्री० प्राणियों की चौथी अवस्था।
तुर्श-वि० (फा०) खट्टा।
तुलवाना-क्रि० स० तौल कराना, तौलवाना।
तुलसी-संज्ञा स्त्री० एक छोटा पवित्र पौदा।
तुलसीदल-संज्ञा पुं० (सं०) तुलसी की पत्ती।
तुला-संज्ञा स्त्री० काँटा, मान,तौल का यंत्र, तराजू। मिलान, तुलना।
तुलादान-संज्ञा पुं० (सं०) दाता व्यक्ति की तौल के बराबर किसी द्रव्य का दान।
तुलायंत्र-संज्ञा पुं० तराजू।
तुल्य-वि० (सं०) समान, बराबर।
तुल्यता-संज्ञा स्त्री० सादृश्य, बरा-बरी, समानता।
तुव-सर्वनाम तेरा।
तुषार-संज्ञा पुं० (सं०) सरदी से हवा में जमी भाप का गिरना। पाला। हिम।

तुष्टता-संज्ञा स्त्री० (सं०) संतोष। तृप्ति।
तुष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) संतोष। राजी या प्रसन्न होना।
तुहिन-संज्ञा पुं० हिम, पाला, कुहरा, बर्फ।
तूंबा, तूंबी-संज्ञा पुं० स्त्री० कड़वा गोल कद्दू।
तूफान-संज्ञा पुं० (अ०) बहुत भयंकर आंधी। आपत्ति, झगड़ा-बखेड़ा। उत्पात, उपद्रव।
तूफानी-वि० (फा०) भयंकर, बहुत तेज। उपद्रवी।
तूर्ण-क्रि० वि० (सं०) शीघ्र, जल्दी।
तूल-संज्ञा पुं० आकाश, कपास। गहरा लाल रंग।
तूलिका-संज्ञा स्त्री० ब्रुश, कूची।
तूष्णी-वि० चुपचाप, मौन।
तृण-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी से अपने आप उगनेवाली एक वनस्पति, घास, कुश, सरपत आदि। सबसे छोटा टुकड़ा।
तृणमय-वि० (सं०) घास का बना हुआ। तृणपूर्ण।
तृणशय्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) चटाई।
तृतीय-वि० (सं०) तीसरा।
तृतीया-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक पक्ष का तीसरा दिन, तीज।
तृप्त-वि० (सं०) अपनी इच्छाओं को पूरा कर लेनेवाला, पूर्णकाम।
तृप्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) इच्छा पूरी होने से प्राप्त संतोष।
तृषा-संज्ञा स्त्री० वासना, प्यास, इच्छा।
तृषित-वि० (सं०) प्यासा, लोभी, अभिलाषी, इच्छायुक्त।
तृष्णा-संज्ञा स्त्री० लिप्सा, प्यास, इच्छा, लोभ, लालच।
तेंदुआ-संज्ञा पुं० (देश०) एक हिंसक पशु चीते की जाति का।
तेग-संज्ञा स्त्री० (अ०) तलवार।
तेज-संज्ञा पुं० दीप्ति। चमक। आभा। कान्ति, बल, शक्ति।
तेज-वि० (फा०) तीक्ष्ण, महीन धार का। जल्दी काम करनेवाला। अधिक मूल्य का, महँगा।
तेजवान्-वि० तेज या प्रताप से युक्त, वीर्यवान्, बली, चमकीला।
तेजस्विता-संज्ञा स्त्री० (सं०) तेज या आभा से युक्त होना।
तेजस्वी-वि० तेज या कान्तिवाला। प्रभाववाला, प्रभावशाली।
तेजाब-संज्ञा पुं० (फा०) किसी पदार्थ का निकाला हुआ अम्ल क्षार।
तेजी-संज्ञा स्त्री० (फा०) तेज होना। जल्दी काम कर सकना। जोर होना। महँगी।
तेजोमय-वि० (सं०) बहुत तेज या कान्तिवाला, आभामय।
तेरही-संज्ञा स्त्री० मरने के दिन से तेरहवाँ दिन।
तेली-संज्ञा पुं० सरसों आदि का तेल निकालने का काम करने-

वाली जाति।

तेवर-संज्ञा पुं० क्रोध से देखना, क्रोधपूर्ण दृष्टि, चितवन।

तेहा-संज्ञा पुं० क्रोध, गुस्सा। घमण्ड।

तैजस-संज्ञा पुं० (सं०) तेज या चमकवाला पदार्थ। पराक्रमी।

तोतला-वि० तुतलाकर या अस्पष्ट शब्दों से बोलनेवाला।

तोताचश्म-संज्ञा पुं० (फा०) तोते की तरह आँखें फेर लेनेवाला, बेमुरौवत।

तोप-संज्ञा स्त्री० लोहे के गोले शत्रु पर फेंकने वाला एक यंत्र।

तोपखाना-संज्ञा पुं० तोपों और उसके सामान को रखने का स्थान आयुधागार।

तोपची-संज्ञा पुं० तोप चलानेवाला।

तोबड़ा-संज्ञा पुं० घोड़े को दाना खिलाने के लिए उसके गले में लटकायी जानेवाली टाट आदि की थैली।

तोबा-संज्ञा स्त्री० आगे उस प्रकार का काम न करने का प्रण।

तोम-संज्ञा पुं० समूह, ढेर।

तोय-संज्ञा पुं० जल, पानी।

तोयधर, तोयधार-संज्ञा पुं० (सं०) मेघ। बादल।

तोयधि-संज्ञा पुं० समुद्र।

तोरण-संज्ञा पुं० नगर का बाहरी फाटक।

तोलन-संज्ञा पुं० (सं०) तौलने का काम।

तोशक-संज्ञा स्त्री० कपड़े के खोल में रूई आदि भरकर बनाया गद्दा या बिछौना।

तोशा-संज्ञा पुं० (फा०) रास्ते में यात्रा के लिए साथ रखा गया भोजन।

तोष-संज्ञा पुं० (सं०) मन का भर जाना, अघाना। तृप्ति, संतोष।

तोषक-वि० (सं०) तृप्त करनेवाला।

तोषित-वि० (सं०) तृप्त हुआ, सन्तुष्ट।

तोहफा-संज्ञा पुं० (अ०) उपहार, भेंट। वि० सुंदर, बढ़िया।

तौक-संज्ञा पुं० (अ०) एक गहना, हँसुली।

तौल-संज्ञा पुं० तुला, तराजू। संज्ञा स्त्री० वजन।

तौलना-क्रि० स० किसी भार को नाप लेना।

तौलाई-संज्ञा स्त्री० तौलने का कार्य, तौलने की मजदूरी।

तौलिया-संज्ञा स्त्री० पुं० एक मोटा अँगोछा।

तौहीन-संज्ञा स्त्री० (अ०) अपमान बेइज्जती।

त्याग-संज्ञा पुं० (सं०) अपने अधिकार की चीज को छोड़ देना। छोड़ना। कन्यादान।

त्यागना-क्रि० स० छोड़ना, त्याग करना।

त्यागपत्र-संज्ञा पुं० (सं०) अपने पद को छोड़ने का प्रार्थनापत्र देना, इस्तीफा।

त्यागी-वि० सांसारिक सुखों को छोड़नेवाला, विरक्त, दाता, दानी।
त्याज्य-वि० (सं०) छोड़ने लायक।
त्योरी-संज्ञा स्त्री० टेढ़ी दृष्टि से देखना। निगाह, दृष्टि।
त्योहार-संज्ञा पुं० धर्म या जाति का कोई उत्सव मनाने का दिन।
त्रपा-संज्ञा स्त्री० लज्जा, लाज, शर्म। यश, प्रसिद्धि।
त्रय-वि० (सं०) त्रि, तीन, तीसरा।
त्रयोदशी-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक पक्ष की तेरहवीं तिथि, तेरस।
त्रसित-वि० डरा हुआ। सताया हुआ।
त्रस्त-वि० (सं०) डरा हुआ, भयभीत। सताया हुआ।
त्राण-संज्ञा पुं० छुटकारा, मुक्ति।
त्राता, त्रातार-संज्ञा पुं० रक्षा करने-वाला।
त्रास-संज्ञा पुं० डर, भय, कष्ट।
त्रासित-वि० त्रस्त, भयभीत।
त्रिकाल-संज्ञा पुं० (सं०) तीनों काल, भूत, वर्तमान और भविष्य। तीनों समय प्रातः, मध्याह्न और सायं।
त्रिकालज्ञ, त्रिकालदर्शक, त्रिकाल-दर्शी-संज्ञा पुं० तीनों कालों की सारी बातों को जाननेवाला।
त्रिकुटी-संज्ञा स्त्री० दोनों भौहों के बीच से कुछ ऊपर का स्थान।
त्रिकोण-संज्ञा पुं० योनि, भग, तीन कोनोंवाला।
त्रिगुण-संज्ञा पुं० (सं०) तीन गुण सत, रज और तम। वि० तीन गुना।
त्रिगुणात्मक-वि० पुं० (सं०) सत, रज, तम इन तीनों गुणोंवाला।
त्रिदंडी-संज्ञा पुं० (सं०) संन्यासी।
त्रिदश-संज्ञा पुं० (सं०) देवता।
त्रिदशालय-संज्ञा पुं० (सं०) स्वर्ग, देवताओं के रहने का स्थान।
त्रिदेव-संज्ञा पुं० (सं०) तीनों देवता, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
त्रिदोष-संज्ञा पुं० (सं०) तीन दोष, वात, पित्त और कफ।
त्रिनयन, त्रिनेत्र-संज्ञा पुं० शिव।
त्रिपथ-संज्ञा पुं० (सं०) तीन पथ कर्म, ज्ञान और उपासना।
त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी-संज्ञा स्त्री० तीनों लोकों में बहनेवाली गंगा।
त्रिपिटक-संज्ञा पुं० (सं०) गौतम-बुद्ध के उपदेशों का संग्रह।
त्रिपुर-संज्ञा पुं० (सं०) तीनों लोक।
त्रिपुरा-संज्ञा स्त्री० (सं०) कामा-क्षादेवी की एक मूर्ति का नाम।
त्रिपुरारि-संज्ञा पुं० (सं०) शिव।
त्रिफला-संज्ञा स्त्री० (सं०) आँवला, हड़ और बहेड़ा का फल।
त्रिबली-संज्ञा स्त्री० (सं०) पेट में पड़नेवाले तीन तरह के बल या रेखाएँ।
त्रिभंग-वि० (सं०) तीन जगह से मुड़ा होना।
त्रिभुज-संज्ञा पुं० (सं०) तीन भुजाओंवाला।
त्रिभुवन-संज्ञा पुं० (सं०) तीनों लोक, स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।

सुंदरी– स्त्री० दुर्गा, पार्वती।
त्रिमूर्ति-संज्ञा पुं० (सं०) तीनों देवता, ब्रह्मा, विष्णु और शिव।
त्रिया-संज्ञा स्त्री० औरत।
त्रियामा-संज्ञा स्त्री० निशा, रात।
त्रियुग-संज्ञा पुं० विष्णु, तीन युग, सतयुग, द्वापर, त्रेता।
त्रिलोक-संज्ञा पुं० (सं०) तीनों लोक, स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।
त्रिलोकनाथ, त्रिलोकपति-संज्ञा पुं० परमेश्वर। राम। कृष्ण।
त्रिलोकी-संज्ञा पुं० ईश्वर।
त्रिलोचन-संज्ञा पुं० (सं०) तीन नेत्रोंवाले, महादेव।
त्रिवर्ग-संज्ञा पुं० (सं०) तीन वस्तुओं का वर्ग। अर्थ, धर्म और काम। त्रिफला। सत, रज, तम। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य।
त्रिविध-वि० तीन प्रकार का।
त्रिवेणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का संगम।
त्रिवेद-संज्ञा पुं० (सं०) तीन वेद ऋक्, यजुः और साम।
त्रिशक्ति-संज्ञा स्त्री० (स०) तीन शक्तियाँ, इच्छा, ज्ञान और क्रिया। गायत्री। तीन गुणोंवाला सबसे ऊंचा तत्त्व। काली, तारा और त्रिपुरा–ये तीन देवियाँ।
त्रिशिर-संज्ञा पुं० रावण का एक भाई। वि० तीन सिरोंवाला।
त्रिशूल-संज्ञा पुं० (सं०) तीन नोकों-वाला एक अस्त्र। तीन शूल या कष्ट, दैहिक, दैविक और भौतिक।
त्रिसंध्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) तीन संध्यायें, प्रातः, मध्याह्न और सायं।
त्रुटि-संज्ञा स्त्री० भूलचूक। कमी। कमजोरी। गलती। वचनभंग।
त्रैगुण्य-संज्ञा पुं० (सं०) तीनों गुण, सत, रज और तम का धर्म या भाव।
त्रैमासिक-वि० (सं०) हर तीसरे माह में प्रकाशित होनेवाला।
त्रैलोक्य-संज्ञा पुं० (सं०) तीन लोक, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।
त्रैवार्षिक-वि० (सं०) हर तीसरे साल होनेवाला।
त्वक्-संज्ञा पुं० छिलका, शरीर के ऊपर की खाल। एक ज्ञानेन्द्रिय, जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है।
त्वचा-संज्ञा स्त्री० छाल, चमड़ा। ऊपर की खाल। केंचुली।
त्वदीय-सर्वनाम (सं०) तुम्हारा।
त्वरित-वि० (सं०) तेज। क्रि० वि० जल्दी से।
त्वरितगति-संज्ञा पुं० (सं०) अमृत-गति।

थंभन-संज्ञा पुं० रुकावट, ठहराव, स्तंभन ।
थकान-संज्ञा स्त्री० शरीर की शिथिलता, थकावट।
थका-माँदा-वि० मेहनत करने या चलते रहने के कारण श्रान्त।
थकित-वि० थका हुआ, शिथिल।
थन-संज्ञा पुं० गाय-भैंस आदि के स्तन। चौपायों का स्तन।
थनेला-संज्ञा पुं० स्त्रियों के स्तन पर होनेवाला फोड़ा।
थपकना-क्रि० स० पुचकारना।
थपकी-संज्ञा स्त्री० शरीर पर हलकी चोट। धीरे-धीरे ठोंकना।
थपेड़ा-संज्ञा पुं० जोर से हाथ की चोट, थप्पड़, ठोकर, टक्कर।
थरथर-संज्ञा स्त्री० भय से काँपना।
थरथरी-संज्ञा स्त्री० कंपने की दशा, कँपकँपी।
थर्राना-क्रि० अ० भय से काँपना।
थल-संज्ञा पुं० ठिकाना, स्थान, भूमि।
थलचर-संज्ञा पुं० पृथ्वी पर रहनेवाले प्राणी।
थान-संज्ञा पुं० जगह। चौपायों के बाँधे जाने की जगह। निश्चित लम्बाई का लपेटा हुआ कपड़ा।
थाना-संज्ञा पुं० ठहरने या रहने का स्थान। सिपाहियों की बड़ी चौकी। बाँस की कोठी।
थानेदार-संज्ञा पुं० पुलिस के एक थाने का सबसे प्रधान।
थाम-संज्ञा पुं० स्तम्भ। खम्भा। संज्ञा स्त्री० रोकने की क्रिया,
थाल-संज्ञा पुं० बड़ी थाली।
थाली-संज्ञा स्त्री० धातु का एक छिछला बरतन जिसमें खाने को भोजन रखते हैं।
थाह-संज्ञा स्त्री० गहराई की संतह। गहराई की नाप या अन्दाज। किसी के मन की बात जानना।
थाहना-क्रि० स० गहराई का अंदाज या पता लेना। किसी के मन की बात जान लेना, अनुमान करना।
थिगली-संज्ञा स्त्री० फटे कपड़े पर दूसरा कपड़ा लगाकर सिल देना। पैबंद।
थिति-संज्ञा स्त्री० ठहराव। रहने की जगह, अवस्था, दशा, सुरक्षा।
थिर-वि० ठहरा हुआ, स्थिर।
थिरक-संज्ञा पुं० नृत्य में पैरों का जल्दी-जल्दी चलना। उछलना।
थिरकना-क्रि० अ० जल्दी-जल्दी पैरों को इधर-उधर फेंकते चलना। ठमक-ठमककर नाचना।
थुड़ी-संज्ञा स्त्री० घृणा और अनादर का शब्द, थू! थू! धिक्कार।
थू-अव्य० थूकने का शब्द। घृणा दिखलानेवाला शब्द। छि:!
थूक-संज्ञा पुं० मुँह की गिल्टियों से निकलनेवाला गाढ़ा रसदार, सफेद पदार्थ; (मुहा.)—देना—निन्दा करना।

थूकना-क्रि० अ० मुँह से थूक निकालना । धिक्कारना ।

थूथन-संज्ञा पुं० (देश०) लम्बा मुँह, ऊँट, सुअर आदि का ।

थैला-संज्ञा पुं० कपड़े का सिलकर बनाया हुआ झोला जिसमें सामान रखा जाता है।

थैली-संज्ञा स्त्री० छोटा थैला ।

थोक-संज्ञा पुं० ढेर। झुंड। इकट्ठी बेचने की चीज ।

थोपना-क्रि० स० गीली मिट्टी का भीत पर मोटा लेप चढाना,आरोपित करना, छोपना ।

द

दँतिया-संज्ञा स्त्री० छोटे दाँत ।

दंग-वि० (फा०) आश्चर्य में पड़ा हुआ, विस्मित, हैरान ।

दंगई-वि० झगड़ालू ।

दंगल-संज्ञा पुं० (फा०) कुश्ती की प्रतिद्वंद्विता।जमा हुआ अखाड़ा।

दंगा-संज्ञा पुं० झगड़ा। उपद्रव । शोर ।

दंड-संज्ञा पुं० लाठी, डंडा, सोंटा। एक भारतीय कसरत । एक प्रणाम। अपराधी से लिया हुआ जुर्माना ;—सहना—घाटा सहना ।

दंडधर-संज्ञा पुं० राजा। यमराज।

दंडनायक-संज्ञा पुं० सेनापति, सजा का नियम बनानेवाला राजा या अधिकारी, सूर्य का एक अनुचर।

दंडनीति-संज्ञा स्त्री० (सं०) शासन में दंड के नियम और सिद्धांत ।

दंडनीय-वि० (सं०) दंड दिया जाने योग्य।

दंडपाणि-संज्ञा पुं० यमराज ।

दंडप्रणाम-संज्ञा पुं० साष्टांग लेटकर प्रणाम करना।

दंडवत्-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक प्रकार का पृथ्वी पर लेटकर किया जानेवाला प्रणाम ।

दंडायमान-वि० (सं०) डंडे की तरह सीधा खड़ा हो ।

दंडित-वि० पुं० (सं०) दण्ड पाया हुआ । जिसको दंड मिला हो।

दंडी-संज्ञा पुं० दण्ड रखनेवाला । राजा । यमराज ।

दंड्य-वि० (सं०) दंड पाने लायक।

दंत-संज्ञा पुं० (सं०) दाँत ।

दंतच्छद-संज्ञा पुं० (सं०) दाँतों का आवरण, होंठ ।

दंतधावन-संज्ञा पुं० (सं०) दाँत साफ करने का काम, दातौन ।

दंत्य-वि० (सं०) दाँत से कहे जानेवाले वर्ण । दांत सम्बन्धी ।

दंदानेदार-वि० (फा०) दाँत की तरह काँटेदार ।

दंपति, दंपती-संज्ञा पुं० (सं०) स्त्री पुरुष का जोड़ा, पति और पत्नी।

दंभ-संज्ञा पुं० ढकोसला, पाखंड।

दंभी-वि० झूठा दिखावा करने-वाला । घमण्डी ।
दंश-संज्ञा पुं० (सं०) दाँत से काटा हुआ । दाँत से काटना । दाँत । विषैले कीड़ों का डंक । एक विषैली मक्खी ।
दंशक-संज्ञा पुं० (सं०) दाँत से काटने या डंक मारनेवाला ।
दंशन-संज्ञा पुं० डंक मारना ।
दक्ष-वि० (सं०) निपुण, होशियार ।
दक्षकन्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) शिव की पत्नी, सती ।
दक्षता-संज्ञा स्त्री० योग्यता, काम में निपुणता, कमाल ।
दक्षिण-वि० (सं०) दाहिना । उत्तर के सामने की दिशा ।
दक्षिणा-संज्ञा स्त्री० (सं०) ब्राह्मणों को दिया जानेवाला दान । भेंट । दक्षिण दिशा ।
दक्षिणायन-वि० (सं०) दक्षिण की ओर ।
दखल-संज्ञा पुं० (अ०) किसी के काम में हाथ डालना । बीच में बोलना, हस्तक्षेप, प्रवेश ।
दगना-क्रि० अ० बन्दूक आदि का छूटना, दग्ध होना, जलना ।
दगवाना-क्रि० स० दागने का काम करवाना ।
दगा-संज्ञा स्त्री० (अ०) छल । धोखा । विश्वासघात ।
दगाबार, दगाबाज-वि० (फा०) धोखा देनेवाला, कपटी ।
दग्ध-वि० (सं०) जला या जलाया हुआ। जिसे कष्ट पहुँचाया गया हो।
दग्धा-संज्ञा स्त्री० (सं०) पश्चिम दिशा ।
दढ़ियल-वि० दाढ़ीवाला ।
दतुअन, दतुवन, दतौन-संज्ञा स्त्री० नीम या बबूल की छोटी टहनी जिसकी कूची बनाकर दाँत साफ करते हैं ।
दत्तक-संज्ञा पुं० (सं०) मान लिया गया पुत्र, गोद लिया हुआ ।
दत्तचित्त-वि० (सं०) खूब ध्यान से किसी काम में लगा हुआ ।
दधि-संज्ञा पुं० (सं०) जमाया हुआ दूध, दही । समुद्र, सागर ।
दधिजात-संज्ञा पुं० (सं०) मक्खन । संज्ञा पुं० चन्द्रमा ।
दधिसुत-संज्ञा पुं० चन्द्रमा । मोती । कमल । नवनीत। मक्खन ।
दनादन-क्रि० वि० दनदन शब्द के साथ । जल्दी-जल्दी ।
दनुज-संज्ञा पुं० (सं०) दनु से उत्पन्न, असुर, राक्षस ।
दनुजदलनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) असुरों का नाश करनेवाली, दुर्गा।
दनुजेंद्र-संज्ञा पुं० (सं०) दनुजों का इन्द्र । दानवों का राजा रावण।
दफन-संज्ञा पुं० (अ०) मुर्दे या किसी अन्य वस्तु का भूमि में गाड़ा जाना ।
दफनाना-क्रि० स० भूमि में गाड़ना ।
दफा-संज्ञा स्त्री० बार । कानूनी

बतलानेवाला भाग । धारा।
दफ्तर-संज्ञा पुं० (फा०) जहाँ किसी विभाग की सारी लिखापढ़ी हो।
दबदबा-संज्ञा पुं० (अ०) दबाव, रोबदाब ।
दबाव-संज्ञा पुं० दबाने की क्रिया। रोब ।
दबीज-वि० (फा०) मोटे दलवाला, गाढ़ा, गफ, ठस ।
दम-संज्ञा पुं० (सं०) सजा । संज्ञा पुं० (फा०) साँस, श्वास, जान।
दमक-संज्ञा स्त्री० चमक, आभा ।
दमकना-क्रि० अ० चमकना ।
दमखम-संज्ञा पुं० (फा०) मजबूती। दृढ़ता ।
दमदार-वि० (फा०) मजबूत । अधिक देर तक दम या साँस रोक सकनेवाला ।
दमन-संज्ञा पुं० (सं०) किसी उपद्रव या काम को रोकना । सजा । इन्द्रियों को वश में करना ।
दमनशील-वि० (सं०) दमन करने या दबाने का काम करनेवाला ।
दमनीय-वि० (सं०) दबाया जा सकनेवाला । दमन करने योग्य।
दमा-संज्ञा पुं० (फा०) एक साँस और खाँसी का कठिन रोग ।
दमाद-संज्ञा पुं० कन्या का पति ।
दया-संज्ञा स्त्री० (सं०) दूसरे के कष्ट या दुःख को देखकर मन में सहानुभूति उत्पन्न करनेवाला भाव । रहम ।
दयादृष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) करुणा या रहम का भाव ।
दयानतदार-वि० ईमानदार ।
दयानिधान-संज्ञा पुं० (सं०) दया का भण्डार । बहुत दया करनेवाला पुरुष ।
दयानिधि-संज्ञा पुं० ईश्वर का एक नाम । बहुत दया करने वाला ।
दयापात्र-संज्ञा पुं० (सं०) जिस पर दया की जाय ।
दयामय-संज्ञा पुं० (सं०) दया से भरा, दयालु ।
दयार्द्र, दयाल, दयालु-वि० (सं०) दयापूर्ण, दयायुक्त, बहुत दया करनेवाला ।
दयालुता-संज्ञा स्त्री० (सं०) दया करने का भाव ।
दयासागर-संज्ञा पुं० (सं०) दया का समुद्र, अत्यन्त दयालु मनुष्य।
दर-संज्ञा पुं० (सं०) चिटकी जगह।
दरकना-क्रि० अ० चिटकना ।
दरका-संज्ञा पुं० चिटकी जगह, दरार ।
दरकार-वि० (फा०) जरूरत, आवश्यकता ।
दर-किनार-क्रि० वि० (फा०) अलग । एक ओर ।
दरखास्त-संज्ञा स्त्री० प्रार्थना, निवेदन ।
दरख्त-संज्ञा पुं० (फा०) पेड़ ।
दरगाह-संज्ञा स्त्री० (फा०) दरबार। किसी प्रसिद्ध फकीर की समाधि । मकबरा ।

दरज-संज्ञा स्त्री० चिटका हुआ, दरार।

दरदर-क्रि० वि० द्वार-द्वार। जगह-जगह पर।

दरबान-संज्ञा पुं० दरवाजे का चौकीदार, द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।

दरबार-संज्ञा पुं० (फा०) राजाओं का अपने मंत्रियों के साथ बैठने का बैठकखाना।

दरबारी-संज्ञा पुं० (फा०) दरबार में बैठनेवाला व्यक्ति।

दरमाहा-संज्ञा पुं० (फा०) एक माह का वेतन, तनख्वाह।

दरमियान-संज्ञा पुं० (फा०) बीच। क्रि० वि० बीच में।

दरमियानी-वि० (फा०) बीच का।

दरवाजा-संज्ञा पुं० (फा०) घर का प्रवेश करने का मार्ग। द्वार। किवाड़। फाटक।

दरवेश-संज्ञा पुं० (फा०) फकीर।

दरस-संज्ञा पुं० दिखायी देना, दर्शन।

दरसन-संज्ञा पुं० दर्शन, भेंट।

दरसाना-क्रि० स० दिखलाना। प्रकट करना, समझाना।

दराज-संज्ञा स्त्री० चिटका स्थान, दरार। मेज में लगा खाना।

दरार-संज्ञा स्त्री० चिटकने से गड्ढे की बनी रेखा। दराज।

दरिंदा-संज्ञा पुं० (फा०) मांस खानेवाला जीव।

दरिद्र-वि० (सं०) बिना धन का, कंगाल।

दरिद्रता-संज्ञा स्त्री० (सं०) धन का न होना, कंगाली, निर्धनता।

दरिया-संज्ञा पुं० (फा०) नदी।

दरियाई-वि० (फा०) नदी-सम्बन्धी, नदी का।

दरियादिल-वि० (फा०) उदार हृदयवाला, दानी।

दरियाफ्त-वि० (फा०) ज्ञात, मालूम, पूछ-ताँछ।

दरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) गुफा। संज्ञा स्त्री० मोटे सूत का एक बिछौना।

दरीबा-संज्ञा पुं० पान का बाजार।

दर्जन-संज्ञा पुं० बारह वस्तुओं का समूह।

दर्जा-संज्ञा पुं० (अ०) ऊँचा-नीचा ओहदा, कक्षा, वर्ग।

दर्द-संज्ञा पुं० (फा०) पीड़ा, कष्ट। तकलीफ, सहानुभूति, अनुकंपा।

दर्दमंद-वि० (फा०) पीड़ा से युक्त, पीड़ित। दयावान, दयावाला।

दर्प-संज्ञा पुं० अभिमान, घमण्ड।

दर्पण-संज्ञा पुं० चक्षु, मुँह देखने का शीशा।

दर्रा-संज्ञा पुं० (फा०) पहाड़ों के बीच का सँकरा रास्ता।

दर्शक-संज्ञा पुं० (सं०) देखनेवाला।

दर्शन-संज्ञा पुं० (सं०) आँखों द्वारा अनुभव होना, देखना। भेंट। एक शास्त्र।

दर्शनीय-वि० (सं०) देखने योग्य।

दर्शाना-क्रि० स० दिखलाना।

दर्शी-वि० देखनेवाला।

दल-संज्ञा पुं० आधा भाग, दो ऐसे जुड़े भाग जो आसानी से अलग

हो जायें, जैसे दाल के दल
दलक-संज्ञा स्त्री० चोट से काँपना धमक । दर्द, कसक ।
दलकन-संज्ञा स्त्री० धमकना । आघात । टीस ।
दलदल-संज्ञा स्त्री० कीचड़ । गीली भूमि ।
दलन-संज्ञा पुं० (सं०) पीसना । नष्ट करना, संहार, नाश ।
दलना-क्रि० स० पीसकर चूर-चूर करना । कुचलना ।
दलपति-संज्ञा पुं० (सं०) दल का प्रधान नेता, सरदार, सेनापति ।
दलबल-संज्ञा पुं० (सं०) भारी फौज । सैन्य-समूह ।
दलबादल-संज्ञा पुं० बादलों का झुंड । भारी सेना । बड़ा खेमा ।
दलमलना-क्रि० स० मसल डालना ।
दलाल-संज्ञा पुं० सौदा मोल लेने या बेचने में मदद देनेवाला ।
दलाली-संज्ञा स्त्री० (फा०) दलाल का काम । दलाल के काम से मिला धन, कमीशन आदि ।
दलित-वि० (सं०) मसला या कुचला हुआ । नष्ट किया हुआ ।
दलील-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी युक्ति के उत्तर में कही बात ।
दव-संज्ञा पुं० वन, जंगल । जंगल में लगनेवाली आग । आग ।
दवा-संज्ञा स्त्री० (फा०) शरीर के रोगों को दूर करने को सेवन किए जानेवाले पदार्थ, औषधि ।
दवाखाना-संज्ञा पुं० (फा०) जहाँ से दवा मिलती है, औषधालय ।
दशकंठ, दशकंधर-संज्ञा पुं० (सं०) जिसके दस कंठ हों, रावण ।
दशन-संज्ञा पुं० शिखर, दाँत ।
दशमलव-संज्ञा पुं० (सं०) गणित में एक प्रकार की भिन्न ।
दशमुख-संज्ञा पुं० (सं०) दस मुख-वाला, रावण ।
दशा-संज्ञा स्त्री० (सं०) हालत, अवस्था ।
दशानन-संज्ञा पुं० (सं०) दस आनन-वाला, रावण ।
दशाह-संज्ञा पुं० (सं०) मृत व्यक्ति के मरने से दसवाँ दिन ।
दस्तंदाजी-संज्ञा स्त्री० (फा०) किसी काम में हाथ डालना, हस्तक्षेप ।
दस्त-संज्ञा पुं० (फा०) हाथ । पतला पाखाना ।
दस्तक-संज्ञा स्त्री० (फा०) बुलाने के लिए दरवाजे परदी गयी हाथ की थपथपाहट । कर ।
दस्तकार-संज्ञा पुं० (फा०) हाथ से काम करनेवाला ।
दस्तकारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) हाथ से चीजें बनाने का काम ।
दस्तखत-संज्ञा पुं० हस्ताक्षर ।
दस्तयाब-वि० (फा०) पाया हुआ ।
दस्तरखान-संज्ञा पुं० (फा०) मुस-लमानों के यहाँ वह चादर जिस पर खाना रखा जाता है ।
दस्ता-संज्ञा पुं० किसी औजार की

मूठ । फूलों का गुच्छा । सिपाहियों का छोटा दल । कागज के चौबीस या पचीस तावों का समूह ।

दस्तावेज-संज्ञा स्त्री० (फा०) लेन-देन आदि व्यवहार की बात जिस कागज पर लिखी हो ।

दस्तूर-संज्ञा पुं० (फा०) कायदा, रीति, नियम, रवाज, चाल, प्रथा।

दस्यु-संज्ञा पुं० डकैत, डाकू ।

दस्युवृत्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) डाकूपने का काम, डकैती । चोरी ।

दहकना-क्रि० अ० आग में जलना । शरीर का तपना ।

दहकाना-क्रि० स० आग की लपट ऊपर उठाना । गुस्सा दिलाना ।

दहन-संज्ञा पुं० अग्नि, जलने का काम ।

दहना-क्रि० अ० जलना, जल कर नष्ट होना, क्रोध दिलाना, कुढ़ना ।

दहलना-क्रि० अ० डर से कांप उठना ।

दहलाना-क्रि० स० बहुत अधिक डरा देना । डराकर कँपाना ।

दहशत-संज्ञा स्त्री० (फा०) डर, भय ।

दहाड़-संज्ञा स्त्री० किसी भयंकर जीव की आवाज, गरज ।

दहाड़ना-क्रि० अ० जोर से आवाज करना। गरजना ।

दहिने-क्रि० वि० दाहिनी ओर को ।

दहेज-संज्ञा पुं० कन्या पक्ष की ओर से विवाह में वर की ओर दिया जानेवाला धन, यौतुक ।

दाँत-संज्ञा पुं० जीवों के मुँह में निकलने वाली छोटी-छोटी हड्डियाँ जिनसे भोजन चबाया जाता है। दांत के आकार की वस्तु, दांता ।

दांत-वि० (सं०) जिसने इन्द्रियों पर विजय पा ली हो । संयमी ।

दांपत्य-वि० (सं०) पति-पत्नी का । दंपति-संबंधी ।

दांभिक-वि० (सं०) घमण्डी । धोखेबाज । ढोंगी ।

दाईं-वि० स्त्री० दाहिनी ओर ।

दाई-संज्ञा स्त्री० प्रसव करानेवाली ।

दाऊ-संज्ञा पुं० बड़ा भाई ।

दाक्षिण्य-संज्ञा पुं० (सं०) अनुकूल बनाने की योग्यता या भाव । कुशलता, दक्षता । वि० दक्षिण सम्बन्धी ।

दाख-संज्ञा स्त्री० अंगूर । मुनक्का । किशमिश ।

दाखिल-वि० (फा०) अन्दर आ गया हुआ, प्रविष्ट ।

दाखिला-संज्ञा पुं० (फा०) अन्दर कर लेना । किसी संस्था में प्रविष्ट किया जाना ।

दाग-संज्ञा पुं० (फा०) धब्बा ।

दागदार-वि० (फा०) धब्बा लगा हुआ, जिसपर दाग हो, धब्बेदार ।

दागना-क्रि० स० शरीर पर तपे लोहे से चिह्न बनाना । तोप, बन्दूक आदि चलाना ।

दाढ़ीजार-संज्ञा पुं० स्त्रियों द्वारा पुरुषों को दी जानेवाली एक गाली ।
दातव्य-वि० (सं०) देने लायक ।
दाता-संज्ञा पुं० (सं०) दान देने-वाला । देनेवाला ।
दातार-संज्ञा पुं० कुछ देनेवाला, दाता ।
दाद-संज्ञा स्त्री० एक चर्मरोग । संज्ञा स्त्री० (फा०) न्याय ।
दादरा-संज्ञा पुं० एक ताल ।
दान-संज्ञा पुं० (सं०) देने का काम । धर्म समझकर दी हुई वस्तु ।
दानपत्र-संज्ञा पुं० दान में दी हुई संपत्ति के बारे में प्रामाणिक लेख ।
दानपात्र-संज्ञा पुं० (सं०) दान पाने के लायक व्यक्ति ।
दानवीर-संज्ञा पुं० बहुत दान देनेवाला । बहुत दानी ।
दाना-संज्ञा पुं० अनाज का एक कण । फल आदि का बीज ।
दानाई-संज्ञा स्त्री० (फा०) बुद्धि-मानी ।
दानाध्यक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) राजाओं के यहाँ दान का प्रबन्ध करनेवाला कर्मचारी ।
दाना-पानी-संज्ञा पुं० खान-पान ।
दानी-संज्ञा पुं० दान करनेवाला । वि० उदार ।
दाब-संज्ञा स्त्री० ऊपर से भार डालना, अधिकार, भार, बोझा, शासन ।
दाबदार-वि० रोब रखनेवाला ।
दाम-संज्ञा पुं० (सं०) रस्सी । संज्ञा पु० धन, रुपया-पैसा, मूल्य, किसी मोल ली वस्तु का दिया हुआ धन ।
दामन-संज्ञा पुं० (फा०) कुरते, धोती का निचला भाग, आँचल । पहाड़ों के नीचे की भूमि ।
दामाद-संज्ञा पुं० पुत्री का पति, दमाद, जामाता ।
दामिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) बिजली ।
दामोदर-संज्ञा पु० (सं०) श्री कृष्ण ।
दाय-संज्ञा पुं० खंडन, विभाग, दान ।
दायभाग-संज्ञा पुं० (सं०) पिता के धन का पुत्रों में विभाग ।
दायरा-संज्ञा पुं० (अ०) गोल घेरा । गोला । घेरा ।
दायाँ-वि० दाहिना ।
दायाद-वि० (सं०) किसी जायदाद में हिस्सा के अधिकारी । संज्ञा पुं० हिस्सा पानेवाला, हिस्सेदार ।
दायित्व-संज्ञा पुं० (सं०) भार । दायी होने का भाव, जिम्मेदारी ।
दायी-वि० दानी, देनदार ।
दार-संज्ञा स्त्री० (सं०) पत्नी ।
दारक-संज्ञा पुं० बेटा, बच्चा ।
दारकर्म-संज्ञा पुं० (सं०) विवाह ।
दारण-संज्ञा पुं० (सं०) चीरने-फाड़ने का काम ।
दारिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) बालिका । पुत्री ।
दारीजार-संज्ञा पुं० एक गाली । दासी का पुत्र ।
दारु-संज्ञा पुं० (सं०) काठ । लकड़ी ।

दारुण-वि० (सं०) भयंकर । घोर, बहुत अधिक । कठिन ।

दारुयोषित-संज्ञा स्त्री० (सं०) कठ-पुतली ।

दारू-संज्ञा स्त्री० (फा०) दवा । शराब ।

दार्शनिक-वि० (सं०) दर्शन शास्त्र का जाननेवाला । तत्त्वज्ञानी ।

दाँव-संज्ञा पुं० मौका । बारी । चाल ।

दावत-संज्ञा स्त्री० खाने का बुलावा, ज्योनार, सहभोज ।

दावा-संज्ञा स्त्री० जंगल में लगने-वाली आग । संज्ञा पुं० (अ०) किसी चीज पर अधिकार करना । हक । किसी रुपये पैसे आदि के झगड़े में चलाया गया मुकदमा । दृढ़ता से कही बात ।

दावागीर-संज्ञा पुं० दावा करने या अपना हक जतानेवाला । वादी ।

दास-संज्ञा पुं० (सं०) दूसरे की सेवा करनेवाला, नौकर ।

दासता, दासत्व-संज्ञा स्त्री० पुं० (सं०) दास का काम, सेवावृत्ति ।

दासानुदास-संज्ञा पुं० (सं०) सेवक का सेवक, अति तुच्छ सेवक ।

दासी-संज्ञा स्त्री० लौंड़ी, सेवा करनेवाली स्त्री, नौकरानी ।

दास्तान-संज्ञा स्त्री० (फा०) कथा, किस्सा ।

दास्य-संज्ञा पुं० दासत्व, दास का काम, सेवा ।

दाह-संज्ञा पुं० (सं०) जलाने का काम । शव जलाने का काम । एक रोग । रंज । जलन । दुःख ।

दाहक-वि० (सं०) जलानेवाला ।

दाहकता-संज्ञा स्त्री० (सं०) जलाने का भाव ।

दाहकर्म, दाहक्रिया-संज्ञा पुं० स्त्री० (सं०) शव को फूंकने का काम ।

दिअली-संज्ञा स्त्री० मिट्टी का बहुत छोटा सा दीया । दली हुई दाल ।

दिक्-संज्ञा स्त्री० (सं०) दिशा, ओर ।

दिक-वि० (अ०) परेशान किया गया हुआ । हैरान । बीमार । संज्ञा पुं० तपेदिक रोग ।

दिक्पाल-संज्ञा पुं० (सं०) पुराणों के अनुसार दसों दिशाओं की रक्षा करनेवाले देवता ।

दिखाऊ-वि० देखने लायक । केवल देखने योग्य पर काम में न लाया जा सकनेवाला, बनावटी ।

दिखावटी-वि० दिखौवा ।

दिगंत-संज्ञा पुं० दस दिशाएँ ।

दिगंतर-संज्ञा पुं० (सं०) दो दिशाओं के बीच की जगह ।

दिगंबर-संज्ञा पुं० (सं०) शिव । नंगा रहनेवाला व्यक्ति । एक जैन सम्प्रदाय ।

दिग्गज-संज्ञा पुं० (सं०) पुराणों के अनुसार आठ दिशाओं को रोके रहनेवाले आठ हाथी । वि० बहुत भारी या बड़ा ।

दिग्दर्शक यंत्र-संज्ञा पुं० (सं०) एक

डिबिया-सा यंत्र जिससे दिशाएँ मालूम होती हैं, कुतुबनुमा।
दिग्दर्शन-संज्ञा पुं० (सं०) दिखलाया जाना। नमूना दिखाना।
दिग्भ्रम-संज्ञा पुं० (सं०) दिशा भूल जाना।
दिग्मंडल-संज्ञा पुं० सारी दिशाएं।
दिग्वस्त्र, दिग्वास-संज्ञा पुं० (सं०) नंगा रहनेवाला। जैनी। शिव।
दिग्विजय-संज्ञा स्त्री० (सं०) सम्पूर्ण विश्व को जीतना या उस पर अपनी धाक जमाना।
दिग्विजयी-वि० पुं० (सं०) सम्पूर्ण विश्व को जीतने या उस पर अपनी धाक जमानेवाला।
दिङ्मण्डल-संज्ञा पुं० (सं०) सभी दिशाएं।
दिठौना-संज्ञा पुं० नजर से बचने के लिए बच्चों के मस्तक पर लगायी जानेवाली काजल की बिन्दी।
दिनकंत-संज्ञा पुं० दिनकर, सूर्य।
दिनकर-संज्ञा पुं० सूर्य, मदार का वृक्ष।
दिनचर्य्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) दिन भर में किया जानेवाला काम।
दिननाथ, दिनपति, दिनमणि-संज्ञा पुं० (सं०) सूरज।
दिनांध-संज्ञा पुं० दिवांध। जिस व्यक्ति को दिन में न दीख पड़े।
दिनेश-संज्ञा पुं० (सं०) दिन का ईश, सूरज।
दिपना-क्रि० अ० (प्रा०) चमकना।
दिमाग-संज्ञा पुं० बुद्धि, सिर के अन्दर का भाग, मस्तिष्क। गर्व।
दिमागदार-वि० अच्छे दिमागवाला, समझदार। घमण्डी।
दिल-संज्ञा पुं० (फा०) कलेजा, हृदय। मन, तबियत, जी।
दिलगीर-वि० (फा०) उदास, दुःखी।
दिलचस्प-वि० (फा०) जो दिल को अच्छा जान पड़े, मनोरंजक।
दिलजमई-संज्ञा स्त्री० मन पड़ना, इतमीनान, तसल्ली।
दिलजला-वि० दिल को जलाने या कष्ट पहुँचानेवाला।
दिलदार-वि० (फा०) ऊँचे दिल-वाला, उदार। रसिक। प्रेमी।
दिलबर-वि० (फा०) दिलदार।
दिलरुबा-संज्ञा पुं० (फा०) प्रेमी।
दिलावर-वि० (फा०) बहादुर। साहसी। दिलेर।
दिलासा-संज्ञा पुं० तसल्ली। सांत्वना।
दिली-वि० हार्दिक, प्यारा।
दिलेर-वि० (फा०) दिलावर। साहसी।
दिल्लगी-संज्ञा स्त्री० हँसी-मजाक।
दिल्लगीबाज-संज्ञा पुं० हँसी-मजाक करनेवाला। परिहासी।
दिव-संज्ञा पुं० (सं०) दिन। स्वर्ग।
दिवराज-संज्ञा पुं० (सं०) इन्द्र।
दिवस-संज्ञा पुं० वासर, दिन।
दिवांध-वि० (सं०) दिन में जिसे न सूझता हो। संज्ञा पुं० उल्लू।
दिवाकर-संज्ञा पुं० (सं०) सूरज।
दिवाला-संज्ञा पुं० अपने पास कुछ भी धन न रह जाना।

दिवालिया-वि० जिसके पास बिलकुल धन न रह गया हो ।
दिव्य-वि० (सं०) स्वर्ग का । देवताओं का । अलौकिक ।
दिव्यचक्षु-संज्ञा पुं० ज्ञान की आँखों वाला, सुन्दर आँख, उपनेत्र ।
दिव्यदृष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) छिपी हुई या अनजानी वस्तुओं को देख सकनेवाली ज्ञान-दृष्टि ।
दिव्यांगना-संज्ञा स्त्री० अप्सरा ।
दिव्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) स्वर्गीय गुणोंवाली नायिका । बडा जीरा।
दिशाभ्रम-संज्ञा पुं० (सं०) दिशाओं का भूल जाना, दिक्‌भ्रम ।
दिसावर-संज्ञा पुं०अन्य देश, परदेश।
दिसावरी-वि० विदेश से आया हुआ सामान ।
दिहंदा-वि० (फा०) देनेवाला, दाता।
दीक्षांत-संज्ञा पुं० (सं०) किसी यज्ञ या उत्सव के अन्त में उसके दोषों की शान्ति के लिए किया जानेवाला यज्ञ ।
दीक्षा-संज्ञा स्त्री० (सं०) गुरु की मंत्र आदि की दी शिक्षा ।
दीक्षागुरु-संज्ञा पुं० (सं०) मंत्र आदि का उपदेश और शिक्षा देनेवाला गुरु ।
दीक्षित-वि० (सं०) गुरु से मंत्रों का उपदेश या शिक्षा पाया हुआ ।
दीठ-संज्ञा स्त्री० देखने की शक्ति, दृष्टि । बुरी दृष्टि लगना, नजर।
दीठबंत-वि० जिसको दिखलाई पड़े ।
दीदार-संज्ञा पुं० (फा०) देखा-देखा, दर्शन, साक्षात्कार ।
दीदी-संज्ञा स्त्री० बड़ी बहन ।
दीधिति-संज्ञा स्त्री० (सं०) सूर्य, चन्द्र आदि की किरणें ।
दीन-वि० (सं०) दुःखित, दरिद्र, उदास, विनीत, नम्र ।
दीनता-संज्ञा स्त्री० (सं०) गरीबी। दुःख । नम्रता ।
दीनदयालु-वि० (सं०) दुखियों पर दया करनेवाला । संज्ञा पुं० ईश्वर ।
दीनदार-वि० अपने धर्म पर विश्वास रखनेवाला ।
दीन-दुनिया-संज्ञा स्त्री० यह संसार और परलोक या स्वर्ग ।
दीनबंधु, दीनानाथ-संज्ञा पुं० (सं०) दीनोंका रक्षक, मालिक, ईश्वर।
दीनार-संज्ञा पुं० मोहर, सोने का गहना, आठ रत्ती की तौल ।
दीप-संज्ञा पुं० बत्ती, दिया, चिराग।
दीपक-संज्ञा पुं० (सं०) दिया, चिराग।
दीपन-संज्ञा पुं० केसर, प्याज, जलाने का काम। तेज करना, उभारना ।
दीपमाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) जलते चिरागों की पंक्ति ।
दीपमालिका-संज्ञा स्त्री० जलते दीपों की लाइन, दीवाली ।
दीपशिखा-संज्ञा स्त्री० काजल, दीपक की जलती हुई लौ ।
दीपावलि-संज्ञा स्त्री० दीपकों की पंक्ति, दीवाली

दीपिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) छोटा दिया ।
दीपोत्सव-संज्ञा पुं० दीपावली, दीपों का उत्सव, दीवाली ।
दीप्त-वि० (सं०) जलता हुआ । प्रकाश से भरा, चमकीला ।
दीप्ति-संज्ञा स्त्री० द्युति, उजाला, चमक ।
दीप्तिमान-वि० उजाले या चमक से भरा । तेज या कान्तिवाला ।
दीप्यमान-वि० (सं०) चमकता हुआ ।
दीमक-संज्ञा स्त्री० (फा०) एक छोटा सफेद कीड़ा, वल्मीक ।
दीया-संज्ञा पुं० चिराग, दीपक ।
दीर्घ-वि० (सं०) लम्बा । बड़ा ।
दीर्घकाय-वि० (सं०) बड़े लंबे-चौड़े शरीरवाला ।
दीर्घजीवी-वि० बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला ।
दीर्घदर्शिता-संज्ञा स्त्री० (सं०) परिणाम आदि को ध्यान में रखना ।
दीर्घदर्शी-वि० भविष्य में दूर तक की बात सोचनेवाला, दूरदर्शी ।
दीर्घनिद्रा-संज्ञा स्त्री० (सं०) लम्बी नींद, मौत ।
दीर्घबाहु-वि० (सं०) लम्बी भुजाओं-वाला ।
दीर्घलोचन-वि० (सं०) बड़ी-बड़ी आँखों वाला ।
दीर्घश्रुत-वि० (सं०) दूर तक सुनायी पड़नेवाला । प्रसिद्ध ।
दीर्घसूत्रता-संज्ञा स्त्री० (सं०) हर काम में देर करने की आदत ।
दीर्घसूत्री-वि० हर काम में देर करनेवाला ।
दीर्घायु-वि० (सं०) बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला, दीर्घजीवी ।
दीर्घिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) छोटा तालाब, बावली ।
दीवान-संज्ञा पु० (अ०) राज्य का प्रबंध करनेवाला, मंत्री । प्रधान । राजा के बैठने की जगह, दरबार ।
दीवानआम-संज्ञा पुं० (अ०) वह दरबार जो सर्वसाधारण के लिए खुला हो ।
दीवानखाना-संज्ञा पुं० (फा०) घर का वह बाहर का कमरा जिसमें पुरुष बैठते तथा मिलते हैं, बैठक ।
दीवानखास-संज्ञा पुं० वह दरबार जिसमें राजा और उसके कुछ विशिष्ट लोग ही प्रवेश पा सकें ।
दीवाना-वि० (फा०) पागल ।
दीवानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) दीवान का पद । धन-संबंधी या आर्थिक मामलों का निर्णय करनेवाली अदालत या कचहरी ।
दीवाली-संज्ञा स्त्री० कार्तिक की अमावस्या की रात जिसमें दीये जलाकर लक्ष्मी की पूजा करते हैं ।
दुःख-संज्ञा पुं० कष्ट, ऐसी अवस्था जो मन को बुरी लगे, तकलीफ ।
दुःखद, दुःखदाता, दुःखदायक, दुखदायी-वि० क्लेश या कष्ट पहुँचानेवाला ।

दुःखप्रद-संज्ञा पुं० (सं०) कष्ट देनेवाला, दुःखद ।
दुःखमय-वि० (सं०) दुःखवाला ।
दुःखांत-वि० (सं०) अन्त में दुःख से युक्त।
दुःखित-वि० (सं०) दुःख या कष्ट से भरा हुआ, जिसको दुःख हो ।
दुःशील-वि० (सं०) बुरे स्वभाव का।
दुःशीलता-संज्ञा स्त्री० (सं०) बुरा स्वभाव होना, दुष्टता ।
दुःसह-वि० (सं०) सही न जा सकनेवाली तकलीफ ।
दुःसाध्य-वि० (सं०) जो मुश्किल से हो सके ।
दुःसाहस-संज्ञा पुं० (सं०) बेकार का या बुरा नतीजा लानेवाला साहस ।
दुःसाहसी-वि० (सं०) दुःसाहस करनेवाला ।
दुःस्वप्न-संज्ञा पुं० अशुभसूचक फल लानेवाला स्वप्न ।
दुःस्वभाव-संज्ञा पुं० दुःशीलता, बुरी आदत । वि० बुरी अदतवाला ।
दुआ-संज्ञा स्त्री० (आ०) प्रार्थना । विनती ।
दुकेला-वि० किसी अन्य व्यक्ति के साथ । अकेला न होना ।
दुक्का-वि० जिसके साथ दूसरा भी हो । एक साथ दो ।
दुखड़ा-संज्ञा पु० दुःख की कथा, या कष्ट का वर्णन ।
दुखना-क्रि० अ० दर्द होना ।
दुखाना-क्रि० स० दर्द या कष्ट

पहुँचाना ।
दुखियारा-वि० दुःख से भरा, दुःखी।
दुखी-वि० कष्ट या दुःख से युक्त ।
दुग्ध-संज्ञा पुं० दूध ।
दुचित-वि० अस्थिर-चित्तवाला।
दुचिताई-संज्ञा स्त्री० द्विविधा ।
दुतकारना-क्रि० स० दुत-दुत कह-कर पास से किसी को हटाना ।
दुतर्फा-वि० दोनों तरफ से या का ।
दुतिवंत-वि० आभा या चमकवाला। सुन्दर।
दुदल-संज्ञा पुं० दाल । एक पौदा ।
दुदिला-वि० चिन्ता या दुबिधा में पड़ा ।
दुधार-वि० दूध देनेवाली ।
दुधारा-वि० दोनों ओर धारवाला खाँड़ा ।
दुधारी-वि० स्त्री० दूध देनेवाली । दोनों ओर धारवाली कृपाण ।
दुनियाँ-संज्ञा स्त्री० जगत संसार।
दुनियाई-वि० सांसारिक ।
दुनियादार-संज्ञा पुं० (फा०) दुनिया के कामों में लगा हुआ व्यक्ति, व्यवहार-कुशल ।
दुनियादारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) दुनिया के कामों या जंजालो में फँसा होना । स्वार्थसाधन ।
दुपट्टा-संज्ञा पुं० ऊपर से ओढ़ने का कपड़ा ।
दुपहरिया-संज्ञा स्त्री० मध्याह्न का या दोपहर का समय । एक पौदा ।
दुबला-वि० दुर्बल, कृश, क्षीण शरीर-वाला ।

दुबारा-क्रि० वि० फिर से, दूसरी बार ।
दुबिध, दुबिधा-संज्ञा स्त्री० दो बातों में किसी एक पर मन न जमना, अनिश्चय, संशय ।
दुम-संज्ञा स्त्री० (फा०) पूँछ ।
दुमदार-वि० (फा०) पूँछवाला ।
दुरंगा-वि० दो रंगों का । दो चालें चलनेवाला ।
दुरंत-वि० (सं०) बहुत कड़ा । भीषण । बुरे नतीजेवाला ।
दुरतिक्रम-वि० (सं०) जिसे पार न किया जा सके जिसको कोई जीत न सके ।
दुरभिसंधि-संज्ञा स्त्री० (सं०) गुट बाँधकर किया हुआ परामर्श ।
दुरवस्था-संज्ञा स्त्री० (सं०) बुरी अवस्था या हीन दशा।
दुराग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) बेकार ही या बुरे ढंग से किसी बात पर अड़ा रहना।
दुराचरण-संज्ञा पुं० (सं०) बुरा व्यवहार या चाल-चलन ।
दुराचार-संज्ञा पुं० (सं०) बुरा आचरण या चाल-चलन ।
दुराज-संज्ञा पुं० दुष्ट राज्य या शासन ।
दुरात्मा-वि० बुरी आत्मावाला, नीच।
दुराधर्ष-वि० (सं०) प्रबल ।
दुराव-संज्ञा पुं० छिपाव । छल ।
दुराशय-संज्ञा पुं० दुष्ट विचार, बुरा आशय या नियत ।
दुराशा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बुरी या बेकार की आशा ।
दुरित-संज्ञा पुं० पातक, पाप वि० पापी ।
दुरुखा-वि० दो मुँहोंवाला । दो तरफ ध्यान रखनेवाला ।
दुरुपयोग-संज्ञा पुं० अनुपयुक्त तरीके से काम में लाना, बुरा उपयोग ।
दुरुस्त-वि० (फा०) अच्छी दशा में, ठीक-ठाक । उचित ।
दुरूह-वि० (सं०) गूढ़ ।
दुर्गंध-संज्ञा स्त्री० (सं०) बुरी गंध, बदबू ।
दुर्ग-संज्ञा पुं० राजा और उसकी सेना के रहने का पत्थर की दीवारों से घिरा स्थान ।
दुर्गति-संज्ञा स्त्री० नरक, बुरी गति या दशा, कठिन मार्ग।
दुर्गपाल-संज्ञा पुं० (सं०) दुर्ग या किले का रक्षक, किलेदार।
दुर्गम-वि० (सं०) जहाँ कठिनता से पहुँचा या चला जा सके ।
दुर्गा-संज्ञा स्त्री० (सं०) आदि शक्ति । एक देवी, चण्डी ।
दुर्गुण-संज्ञा पु० दोष, बुरा गुण, बुराई ।
दुर्गोत्सव-संज्ञा पुं० (सं०) दुर्गा-पूजा का उत्सव ।
दुर्घटना-संज्ञा स्त्री० विपत्ति, खराब घटी हुई बात, आपत् ।
दुर्जन-संज्ञा पुं० (सं०) बुरा आदमी।
दुर्जनता-संज्ञा स्त्री० खोटापन, बुरा काम करना, दुष्टता ।

दुर्जय-वि० (सं०) कठिनता से जीता जा सकनेवाला।
दुर्ज्ञेय-वि० (सं०) कठिनता से समझ में आ सकनेवाला, दुर्बोध।
दुर्दमनीय, दुर्दम्य-वि० कठिनता से जीता जा सकनेवाला, प्रबल।
दुर्दशा-संज्ञा स्त्री० दुर्गति। बुरी दशा या हालत।
दुर्दिन-संज्ञा पुं० दूषित दिन, दुःख-कष्ट के बुरे दिन, कष्ट का समय, दुर्दशा का दिन।
दुर्दैव-संज्ञा पुं० दुर्भाग्य, पाप, बुरे दिन।
दुर्नाम-संज्ञा पुं० बुरा नाम, बदनामी।
दुर्नीति-संज्ञा स्त्री० अन्याय बुरी नीति या विचार। बुरा आचरण।
दुर्बल-वि० (सं०) कम बल का, बलहीन, दुबला-पतला।
दुर्बोध-वि० (सं०) कठिनता से समझ में आनेवाला, गूढ़।
दुर्भाग्य-संज्ञा पुं० पाप, बुरा भाग्य।
दुर्भाव-संज्ञा पुं० द्वेष, बुरा भाव या विचार, जलन, मन-मुटाव।
दुर्भावना-संज्ञा स्त्री० चिन्ता, बुरी भावना, अंदेशा, आनेवाली विपत्ति की चिन्ता, खटका।
दुर्भिक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) अन्न न मिलने की दशा, अकाल।
दुर्भेद्य-वि० जिसे कठिनता से भेदा या जीता या छेदा जा सके।
दुर्मति-संज्ञा स्त्री० दुर्बुद्धि, बुरी बुद्धि। वि० खराब इच्छावाला, दुष्ट। नीच।

दुर्मुख-वि० बुरी बात कहनेवाला, कटुभाषी।
दुर्लक्ष्य-वि० (सं०) कठिनता से देखा जा सकनेवाला।
दुर्वचन-संज्ञा पुं० (सं०) बुरे शब्द, गाली गलौज।
दुर्वह-वि० (सं०) कठिनाई से उठाया जा सकनेवाला भार।
दुर्वाद-संज्ञा पुं० (सं०) बुरी कही बात, निन्दा, अनुचित वचन।
दुर्वासा-संज्ञा पुं० एक क्रोधी ऋषि।
दुर्विनीत-वि० (सं०) नम्र न होनेवाला, अक्खड़। बुरे व्यवहारवाला।
दुर्विपाक-संज्ञा पुं० दुर्घटना, बुरा नतीजा, बुरी घटना।
दुर्वृत्त-वि० (सं०) दुराचारी।
दुर्व्यवहार-संज्ञा पुं० (सं०) बुरा वर्ताव। बुरा चाल-चलन।
दुलत्ती-संज्ञा स्त्री० चौपायों का पीछे के दोनों पैर फेंककर मारना।
दुलराना-क्रि० स० बच्चों को प्यार करना, बहलाना, इठराना।
दुलहन-संज्ञा स्त्री० ब्याही हुई स्त्री।
दुलहा-संज्ञा पुं० ब्याहा हुआ पुरुष।
दुलार-संज्ञा पुं० बच्चों को प्यार करने की क्रिया।
दुलारना-क्रि० स० बच्चों आदि को प्यार करना, प्रेम, लाड़-प्यार।
दुलारा-वि० बहुत प्यारा, लाड़ला।
दुविधा-संज्ञा स्त्री० दो चीजों में किसे लिया या किया जाय, यह न समझ पाना। संशय।

दुश्चर-वि० (सं०) दुष्कर, जिसका करना कठिन हो, दुर्गम।
दुश्चरित्र-वि० (सं०) बुरे चाल-चलनवाला, बदचलन।
दुश्चेष्टा-संज्ञा स्त्री० किसी काम को करने की बुरी कोशिश, कुचेष्टा। बुरा काम।
दुश्मन-संज्ञा पुं० (फा०) शत्रु।
दुश्मनी-संज्ञा स्त्री० (फा०) शत्रुता।
दुष्कर-वि० (सं०) मुश्किल से किया जा सकनेवाला, दुःसाध्य।
दुष्कर्म-संज्ञा पुं० बुरा काम, पाप।
दुष्काल-संज्ञा पुं० आपाद् काल, कुसमय, अकाल।
दुष्ट-वि० (सं०) अधम, नीच, बुरा काम करनेवाला, दुर्जन।
दुष्टता, दुष्टपना-संज्ञा स्त्री०, पुं० दुर्जनता, दोष, बुराई, बुरा काम करना।
दुष्टाचार-संज्ञा पुं० कुचाल, बुरा चाल-चलन, कुकर्म।
दुष्टात्मा-वि० (सं०) बुरी आत्मा या प्रकृतिवाला, दुराशय।
दुष्प्राप्य-वि० (सं०) कठिनाई से मिलनेवाला।
दुसह-वि० जो सहन न हो सके।
दुहनी-संज्ञा स्त्री० दूध दुहने का पात्र।
दुहाई-संज्ञा स्त्री० सहायता के लिए किसी का नाम लेकर पुकारना।
दुहिता-संज्ञा स्त्री० लड़की, कन्या।
दूज-संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की दूसरी तिथि। द्वितीया।

दूत-संज्ञा पुं० परराष्ट्र में राज्य का प्रतिनिधि, राजदूत।
दूधमुँहा-वि० अभी भी माता का दूध पीनेवाला शिशु, बालक।
दूधिया-वि० दूध के रंग का, सफेद।
दूतावास-संज्ञा पुं० (सं०) राज्य के भेजे गए दूत के रहने का स्थान।
दूब-संज्ञा स्त्री० एक मुलायम घास।
दूभर-वि० दुःसाध्य, कठिन।
दूरंदेश-वि० (फा०) दूर तक भविष्य का ध्यान रखनेवाला, दूरदर्शी।
दूरत्व-संज्ञा पुं० (सं०) दूर होना। दूरी।
दूरदर्शक-वि० (सं०) दूर तक देखनेवाला।
दूरदर्शिता-संज्ञा स्त्री० (सं०) दूर तक देखना।
दूरदर्शी-वि० (सं०) दूर तक भविष्य की बात सोचनेवाला, दूरंदेश।
दूरवर्ती-वि० (सं०) दूर का।
दूरवीक्षण-संज्ञा पुं० (सं०) दूरबीन।
दूरस्थ-वि० (सं०) जो दूर हो।
दूरी-संज्ञा स्त्री० दो चीजों के बीच का फासला। दूरत्व।
दूर्वा-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक घास, दूब।
दूल्ह, दूल्हा-संज्ञा पुं० नया ब्याहा पुरुष, दुलहा, पति, स्वामी।
दूषण-संज्ञा पुं० (सं०) बुराई, दोष।
दूषणीय-वि० (सं०) दोष लगाने लायक।
दूषित-वि० दोष या बुराईवाला, जिसमें विकार हो।

दृक्क्षेप-संज्ञा पुं० (सं०) देखना, दृष्टिपात, अवलोकन।

दृक्पथ-संज्ञा पुं० (सं०) देखने या दृष्टि का रास्ता।

दृग्गोचर-वि० (सं०) आंखों से दीख पड़नेवाला।

दृढ़-वि० (सं०) मजबूत। अड़ा हुआ। पक्का।

दृढ़ता, दृढ़त्व-संज्ञा स्त्री० पुं० (सं०) दृढ़ या मजबूत होना। स्थिरता।

दृढ़प्रतिज्ञ-वि० (सं०) अपनी कही हुई बात पर अटल रहनेवाला।

दृढ़ांग-वि० (सं०) दृढ़ या मजबूत अंगोंवाला, हट्टा-कट्टा।

दृश्य-वि० (सं०) दिखायी पड़नेवाला, देखने योग्य। संज्ञा पुं० आंखों के सामने का वातावरण, नजारा, गणित में ज्ञात राशि।

दृश्यमान-वि० (सं०) दिखायी देनेवाला। सुन्दर। चमकीला।

दृष्ट-वि० (सं०) देखा या जाना हुआ।

दृष्टांत-संज्ञा पुं० (सं०) किसी बात को समझाने के लिए दिया हुआ उदाहरण।

दृष्टि-संज्ञा स्त्री० नजर, देखने की ताकत, आंखों की ज्योति।

दृष्टिगत-वि० (सं०) दिखायी देनेवाला।

दृष्टिगोचर-वि० (सं०) दिखायी पड़नेवाला।

दृष्टिपात-संज्ञा पुं० ताकना, दृष्टि डालना, देखना।

दृष्टिवंत-वि० दृष्टिवाला। ज्ञानी।

देख-भाल-संज्ञा स्त्री० दृष्टि रखना, निरीक्षण, जांच-पड़ताल।

देख-रेख-संज्ञा स्त्री० निरीक्षण। जांच। देखभाल।

देखाऊ-वि० केवल देखने का, काम में न लाया जा सकनेवाला।

देखा-देखी-क्रि० वि० दूसरों को करते देखकर वैसा ही करना।

देदीप्यमान-वि० (सं०) चमकता हुआ। अत्यन्त प्रकाशयुक्त।

देनदार-संज्ञा पुं० ऋणी, दानी।

देय-वि० (सं०) देने योग्य।

देव-संज्ञा पुं० अमर। देवता। आदर का शब्द। ऋत्विक्।

देवऋण-संज्ञा पुं० (सं०) देवताओं के लिए किये जानेवाले कर्तव्य।

देवकार्य-संज्ञा पुं० (सं०) देवताओं को प्रसन्न करने को किया जानेवाला कर्म, यज्ञादि।

देवगण-संज्ञा पुं० (सं०) देवता लोग।

देवगति-संज्ञा स्त्री० (सं०) मरकर देवता की योनि पाना, स्वर्ग पाना।

देवगुरु-संज्ञा पुं० (सं०) देवताओं के गुरु, बृहस्पति।

देवता-संज्ञा पुं० (सं०) स्वर्ग में रहनेवाले प्राणी, सुर, निर्जर।

देवत्व-संज्ञा पुं० (सं०) देवता के गुण होना।

देवदासी-संज्ञा स्त्री० वेश्या, देवमूर्ति के सामने नृत्य करनेवाली।

देवनदी-संज्ञा स्त्री० (सं०) गंगा

सरस्वती और दृषद्वती।
देवपथ-संज्ञा पुं० (सं०) आकाश।
देवभाषा-संज्ञा स्त्री० (सं०) संस्कृत भाषा।
देवभूमि-संज्ञा स्त्री० (सं०) स्वर्ग।
देवमंदिर-संज्ञा पुं० (सं०) देवता की मूर्ति के लिए घर, देवालय।
देवमाया-संज्ञा स्त्री० परमेश्वर की माया।
देवमुनि-संज्ञा पुं० नारदादि ऋषि।
देवर-संज्ञा पुं० (सं०) पति का छोटा भाई।
देवरानी-संज्ञा स्त्री० पति के छोटे भाई की पत्नी। शची।
देवर्षि-संज्ञा पुं० (सं०) देवताओं में ऋषि, नारद आदि।
देवलोक-संज्ञा पुं० (सं०) स्वर्ग।
देवस्थान-संज्ञा पुं० (सं०) देवताओं के रहने का स्थान, मंदिर।
देवांगना-संज्ञा स्त्री० (सं०) देवताओं की स्त्री, अप्सरा।
देवानां-प्रिय-संज्ञा पुं० (सं०) मूर्ख।
देवालय-संज्ञा पुं० (सं०) स्वर्ग। मंदिर।
देवी-संज्ञा स्त्री० (सं०) देवता की की स्त्री। आदर का शब्द।
देश-संज्ञा पुं० (सं०) एक राजा के अधीन रहनेवाला भूभाग।
देशभाषा-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी प्रान्त में बोली जानेवाली भाषा।
देशांतर-संज्ञा पुं० देशभेद, परदेस।
देशी, देशीय-वि० देश का। अपने देश में बना हुआ।
देसावर-संज्ञा पुं० परदेश, विदेश।
देहत्याग-संज्ञा पुं० प्राणनाश, मरना।
देहधारण-संज्ञा पुं० प्राण-धारण पैदा होना।
देहधारी-संज्ञा पुं० शरीर रखने-वाला, जीव, शरीरी।
देहपात-संज्ञा पुं० (सं०) मृत्यु।
देहरा-संज्ञा पुं० मंदिर। ठाकुरद्वारा।
देहली-संज्ञा स्त्री० (सं०) दरवाजे की नीचे की लकड़ी, चौखट।
देहवंत, देहवान्-संज्ञा पुं० शरीर-वाला, जीव, प्राणी।
देहात-संज्ञा पुं० (फा०) गाँव।
देहाती-वि० गाँव में रहनेवाला, गँवार, देहात का, देहात-संबंधी।
देही-संज्ञा पुं० आत्मा, शरीरी. जीव।
दैत्य-संज्ञा पुं० (सं०) कश्यप के पुत्र, राक्षस। दुराचारी व्यक्ति।
दैत्यगुरु-संज्ञा पुं० (सं०) शुक्राचार्य्य।
दैनंदिन-वि० (सं०) रोज का। क्रि० वि० रोज-रोज।
दैनिक-वि० (सं०) रोज-रोज का।
दैर्घ्य-संज्ञा पुं० (सं०) बड़ा होता। लम्बाई।
दैव-संज्ञा पुं० भाग्य ईश्वर।
दैवगति-संज्ञा स्त्री० प्रारब्ध, ईश्वरीय घटना, भाग्य।
दैवज्ञ-संज्ञा पुं० गणक, ज्योतिषी।
दैवी-वि० (सं०) देवता-संबंधी। देवताओं की की हुई चीज। अचानक होनेवाली।
दैहिक-वि० (सं०) देह की, शारी-

रिक, शरीर से उत्पन्न ।
दोआब-संज्ञा पुं० (फा०) दो नदियों के बीच का भू-भाग ।
दोगला-संज्ञा पुं० भिन्न जाति के माता-पिता से उत्पन्न बालक ।
दोचित्ता-वि० जिसका ध्यान इधर-उधर बँटा हो ।
दोचित्ती-संज्ञा स्त्री० इधर-उधर ध्यान बँटा होना, उद्विग्नता।
दोजख-संज्ञा पुं० (फा०) नरक ।
दोजखी-वि० (फा०) बहुत बड़ा पापी, दोजख- संबंधी।
दोना-संज्ञा पुं० पत्तों का बना कटोरा ।
दोपहर-संज्ञा स्त्री० वह समय जब सूरज बीच आकाश में होता है।
दोरंगा-वि० दो रंगोंवाला ।
दोरंगी-संज्ञा स्त्री० दो विचार रखना, कपट, छल ।
दोराहा-संज्ञा पुं० जहाँ से दो रास्ते कट गए हों ।
दोल-संज्ञा पुं० हिंडोला, झूला, डोली ।
दोष-संज्ञा पुं० पाप । बुराई । खराबी ।
दोषी-संज्ञा पुं० दोष या बुराई करनेवाला अभियुक्त, पापी।
दोस्त-संज्ञा पुं० (फा०) मित्र ।
दोस्ताना, दोस्ती-संज्ञा पुं०, स्त्री० (फा०) दोस्त होना, मित्रता।
दोहन-संज्ञा पुं० (सं०) गाय, भैंस आदि के थन से दूध निकालना, दुहना, दुहने का पात्र, दोहनी।
दोहनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) दूध दुहने का बरतन । दूध दुहने का काम।
दोहराना-क्रि० स० बार-बार किसी बात को कहना।
दौड़-धूप-संज्ञा स्त्री० मेहनत । कोशिश ।
दौड़ादौड़ी-संज्ञा स्त्री० व्यग्रता । हड़बडी । आतुरता ।
दौर-संज्ञा पुं० (अ०) चक्कर, फेरा।
दौरा-संज्ञा पुं० चक्कर । इधर-उधर फेरा लगाना । अफसर का जाँच के लिए घूमते फिरना ।
दौरात्म्य-संज्ञा पुं० दुर्जनता, बुराई, दुष्टता ।
दौरान-संज्ञा पुं० (फा०) दौरा, फेरा । सिलसिला ।
दौर्जन्य-संज्ञा पुं० (सं०) दुर्जनता, दुष्टता, बुरा व्यवहार ।
दौर्बल्य-संज्ञा पुं० (सं०) दुर्बलता, कमजोरी।
दौर्मनस्य-संज्ञा पुं० (सं०) बुरा मन होना, दुर्जनता, दुष्टता ।
दौलत-संज्ञा स्त्री० (अ०) धन, सम्पत्ति ।
दौलतखाना-संज्ञा पुं० (फा०) घर।
दौलतमंद-वि० (फा०) धनवाला, धनी, मालदार ।
दौवारिक-संज्ञा पुं० चौकीदार ।
दौहित्र-संज्ञा पुं० लड़की का पुत्र, नाती ।
द्युति-संज्ञा स्त्री० दीप्ति । चमक । शोभा । किरण ।
द्युतिमंत-वि० चमक

द्युतिमान-वि० चमक या आभा-वाला ।
द्यूत-संज्ञा पुं० (सं०) एक खेल, जुआ ।
द्रव-संज्ञा पुं० बहाव. बहनेवाला पदार्थ । वि० पिघला हुआ, तरल ।
द्रवण-संज्ञा पुं० गमन, दौड़, बहाव । चाल । पिघलना ।
द्रवता, द्रवत्व-संज्ञा स्त्री० पु० (सं०) पतला बहनेवाला होना ।
द्रवीभूत-वि० (सं०) पिघला हुआ । कृपालु । दयालु ।
द्रव्य-संज्ञा पुं० वित्त, चीज, वस्तु । वह जिसमें कोई दूसरी वस्तु न मिली हो । धन, सम्पत्ति ।
द्रव्यवान्-वि० धनवान, धनी ।
द्रष्टव्य-वि० (सं०) देखने लायक ।
द्रष्टा-वि० (सं०) देखनेवाला ।
द्राक्षा-संज्ञा स्त्री० दाख, अंगूर ।
द्रावक-वि० (सं०) पतला करने या पिघलानेवाला ।
द्रुत-वि० (सं०) तेज ।
द्रुतगामी-वि० तेज चलनेवाला ।
द्रुतपद-संज्ञा पुं० (सं०) एक छंद । वि० द्रुतगामी, द्रुतचारी ।
द्रुपद-संज्ञा पुं० (सं०) एक राजा ।
द्रोह-संज्ञा पुं० (सं०) दूसरे का बुरा चाहना, बैर, जलन ।
द्रोही-वि० दूसरे का बुरा चाहने-वाला ।
द्वंद-संज्ञा पुं० मिथुन, जोड़ा, दो विरुद्ध चीजें, झगड़ा, कलह ।
द्वंद्व-संज्ञा पुं० युग्म, जोड़ा, दो विरुद्ध चीजें, रहस्य, झगड़ा, लड़ाई, एक समास ।
द्वंद्वयुद्ध-संज्ञा पुं० (सं०) दो पुरुषों के बीच होनेवाली लड़ाई, मल्लयुद्ध ।
द्वय-वि० (सं०) दो ।
द्वादश-वि० (सं०) दो और दस, बारह ।
द्वापर-संज्ञा पुं० (सं०) चार युगों में तीसरा ।
द्वार-संज्ञा पुं० (सं०) दरवाजा । इन्द्रियों के रास्ते । उपाय ।
द्वारका-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक प्राचीन नगरी ।
द्वारपूजा-संज्ञा स्त्री० (सं०) विवाह में वर का कन्या के घर आने पर किया जानेवाला कृत्य, द्वारचार ।
द्वारवती-संज्ञा स्त्री० द्वारकापुरी ।
द्वारा-संज्ञा पुं० दरवाजा । अव्य० से, साधन से ।
द्विकर्मक-वि० (सं०) दो कर्मों वाली (क्रिया) ।
द्विगुण-वि० (सं०) दूना, दुगना ।
द्विगुणित-वि० (सं०) दो से गुणा किया, दुगना, दूना ।
द्विज-संज्ञा पुं० (सं०) जिसका दो बार जन्म हुआ हो ।
द्विजिह्व-वि० (सं०) दो जीभवाला । चुगलखोर । संज्ञा पुं० साँप ।
द्वितीय-वि० (सं०) दूसरा ।
द्वितीया-संज्ञा स्त्री० (सं०) प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि ।
द्विदल-वि० (सं०) दो दलोंवाला ।

द्विपाद-वि० (सं०) दो पैरोंवाले जीव । जिसके दो पैर हों ।

द्विभाषी-संज्ञा पुं० दो भाषाएँ जानने-वाला ।

द्विरद-संज्ञा पुं० (सं०) हाथी । वि० दो दाँतोंवाला ।

द्विरागमन-संज्ञा पुं० (सं०) वधू का पति के घर दुबारा लौटना ।

द्विरेफ-संज्ञा पुं० भ्रमर, भौंरा ।

द्विविधा-संज्ञा पुं० (सं०) दुविधा ।

द्विशिर-वि० दो सिरोंवाला ।

द्वीप-संज्ञा पुं० (सं०) चारों ओर जल से घिरा पृथ्वी का छोटा-सा भाग, टापू, बाघ का चमड़ा ।

द्वेष-संज्ञा पुं० शत्रुता । जलन । वैर ।

द्वेष्टा-वि० वैर या जलन करने-वाला ।

द्वैत-संज्ञा पुं० युगल । दो का भाव । दूसरा । भेद-भाव ।

द्वैतवाद-संज्ञा पुं० (सं०) एक दार्श-निक सिद्धान्त जिसमें आत्मा और परमात्मा अथवा जड़ और चेतन दो भिन्न पदार्थ माने जाते हैं ।

द्वैतवादी-वि० द्वैतवाद के सिद्धांत का माननेवाला ।

द्वैमातुर-वि० (सं०) दो माताओं-वाला । संज्ञा पुं० गणेश । जरासंध ।

ध

धँसन-संज्ञा स्त्री० नीचे धँसना ।

धँसना-क्रि० अ० किसी वस्तु का किसी नरम वस्तु के अन्दर जाना ।

धंधकधोरी-संज्ञा पुं० हर वक्त काम करते रहनेवाला व्यक्ति ।

धंधा-संज्ञा पुं० काम-काज । व्यव-साय । उद्यम ।

धकधकाना-वि० अ० हृदय का जल्दी-जल्दी चलना । आग का लपट के साथ जलना ।

धकधकी-संज्ञा स्त्री० हृदय का जल्दी-जल्दी चलना, धड़कना ।

धकपकाना-क्रि० अ० जी में डरना ।

धकेलना-क्रि० स० धक्का देकर जगह से हटा देना । धक्का देना ।

धक्कमधक्का-संज्ञा पुं० बहुत अधिक भीड़ । एक दूसरे को धक्का देना ।

धक्का-मुक्की-संज्ञा स्त्री० एक दूसरे से मुठभेड़, मारपीट ।

धज-संज्ञा स्त्री० सजावट । शोभा ।

धजीला-वि० बहुत सुन्दर ।

धड़ंग-वि० वस्त्रहीन, नंगा ।

धड़-संज्ञा पुं० शरीर में गर्दन से नीचे का भाग । वृक्ष का तना ।

धड़कन-क्रि० अ० कलेजे का जल्दी-जल्दी चलकर धक-धक करना ।

धड़का-संज्ञा पुं० दिल का धड़कना । आशंका, खटका । भय ।

धड़धड़ाना-क्रि० अ० किसी भारी चीज का गिरना ।

धड़ाधड़-क्रि० वि० धड़धड़ शब्द के साथ । लगातार । जल्दी-जल्दी ।
धड़ाम-संज्ञा पुं० ऊपर से एक दम किसी वस्तु के गिरने का शब्द ।
धत्-अव्य० अनादर से डाटना ।
धतकारना-क्रि० स० अनादर करना, दुतकारना । धिक्कारना ।
धतूरा-संज्ञा पुं० विषैले फलों का एक पौदा ।
धधक-संज्ञा स्त्री० आग की लपट उठना, लौ, आँच की भड़क ।
धधकना-क्रि० अ० आग का तेजी से जलना । भड़कना । दहकना ।
धन-संज्ञा पुं० (सं०) रुपया, सोना, चाँदी, भूमि आदि । सम्पत्ति ।
धनकुबेर-संज्ञा पुं० कुबेर के समान धनी ।
धनतेरस-संज्ञा स्त्री० दीवाली से दो दिन पहले लक्ष्मी की पूजा का दिन, कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी ।
धनधान्य-संज्ञा पुं० (सं०) धन, अन्न आदि सामग्री, सम्पत्ति ।
धनधाम-संज्ञा पुं० धन, जायदाद आदि । सम्पत्ति ।
धनपति-संज्ञा पुं० (सं०) धन के देवता, कुबेर ।
धनवंत, धनवान्-वि० (सं०) धन-वाला, जिसके पास धन हो ।
धनहीन-वि० (सं०) निर्धन, कंगाल, गरीब ।
धनाढ्य, धनिक, धनी-वि० (सं०) धनवान्, अमीर ।
धनुर्विद्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) धनुष चलाने की विद्या या गुण ।
धन्नासेठ-संज्ञा पुं० बहुत धनवाला, धनी, धनाढ्य मनुष्य ।
धन्य-वि० (सं०) प्रशंसा करने योग्य । बहुत पुण्य के काम करने वाला ।
धन्यवाद-संज्ञा पुं० साधुवाद, किसी उपकार के बदले कहा गया शब्द ।
धन्वंतरि-संज्ञा पुं० (सं०) देवताओं के वैद्य ।
धन्वा-संज्ञा पुं० धनुष, मरुभूमि ।
धन्वाकार-वि० (सं०) धनुष की तरह झुका हुआ । टेढ़ा ।
धन्वी-वि० चतुर ।
धमकाना-क्रि० स० भय दिखाना, डराना, घुड़कना, डाँटना ।
धमकी-संज्ञा स्त्री० भय दिखाने के लिए कही हुई बात । डाँट ।
धमनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) शरीर की साफ खून बहानेवाली नाड़ियाँ ।
धमाका-संज्ञा पुं० भारी वस्तु के गिरने, पैर के पटकने या बन्दूक के चलने का शब्द । धक्का ।
धमाचौकड़ी-संज्ञा स्त्री० उछल-कूद, उपद्रव, ऊधम, मारपीट ।
धर-वि० (सं०) धारक या धारण करनेवाला ।
धरणि-संज्ञा स्त्री० (सं०) पृथ्वी ।
धरणिधर-संज्ञा पुं० पहाड़, पृथ्वी को धारण करनेवाला, शेषनाग ।
धरणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) पृथ्वी ।
धरणीसुता-संज्ञा स्त्री० (सं०) पृथ्वी

की पुत्री, सीताजी ।
धरती-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।
धराऊ-वि० कभी-कभी उपयोग में लाया जानेवाला ।
धरातल-संज्ञा पुं० पृथ्वी । किसी वस्तु के ऊपर का भाग, सतह ।
धराधर-संज्ञा पुं० पर्वत, पृथ्वी को धारण करनेवाला, शेषनाग ।
धराधार-संज्ञा पुं० (सं०) धरा का आधार, शेषनाग ।
धरित्री-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी, भूमि ।
धरोहर-संज्ञा स्त्री० किसी दूसरे के पास कुछ दिनों के लिए रखायी हुई सम्पत्ति ।
धर्म-संज्ञा पुं० (सं०) नियम । गुण । कर्तव्य । पुण्य । विशेष मत, मजहब ।
धर्मक्षेत्र-संज्ञा पुं० (सं०) भारतवर्ष ।
धर्मग्रंथ-संज्ञा पुं० (सं०) किसी खास मत के माननेवालों की पवित्र पुस्तक ।
धर्मचक्र-संज्ञा पुं० धर्मसमूह, धर्म का ढर, बुद्ध की धर्म-शिक्षा ।
धर्मज्ञ-वि० (सं०) धर्म को जानने-वाला ।
धर्मतः-अव्य० (सं०) धर्म से ।
धर्मध्वजी-संज्ञा पुं० पाखण्डी ।
धर्मनिष्ठ-वि० (सं०) धर्म में विश्वास रखनेवाला, धार्मिक ।
धर्मनिष्ठा-संज्ञा स्त्री० (सं०) धर्म में विश्वास और श्रद्धा होना ।
धर्मपत्नी-संज्ञा स्त्री० (सं०) विवाहिता स्त्री ।
धर्मबुद्धि-संज्ञा स्त्री० (सं०) धर्म अधर्म का ज्ञान । धर्म की ओर रुचि ।
धर्मभीरु-वि० (सं०) अधर्म से डरनेवाला या जिसको धर्म का भय हो।
धर्मयुग-संज्ञा पुं० (सं०) सत्ययुग ।
धर्मयुद्ध-संज्ञा पुं० (सं०) धर्म या नियमों से किया जानेवाला युद्ध ।
धर्मराज-संज्ञा पुं० राजा, न्यायाधीश, युधिष्ठिर, न्यायकर्ता, यम ।
धर्मवीर-संज्ञा पुं० (सं०) धर्म या कर्तव्य पालनेवाला ।
धर्मशास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) नीति तथा सदाचार के नियमों की पुस्तक ।
धर्मशील-वि० (सं०) धर्म के अनुसार कार्य करनेवाला, धार्मिक ।
धर्माचार्य-संज्ञा पुं० धर्मशिक्षक, धर्म-की शिक्षा देनेवाला, गुरु ।
धर्मात्मा-वि० धर्म का आचरण करनेवाला ।
धर्माधिकारी-संज्ञा पुं० (सं०) धर्म-अधर्म या अच्छे-बुरे की नीति देनेवाला, विचारक, दानाध्यक्ष ।
धर्मार्थ-क्रि० वि० (सं०) धर्म या केवल कर्तव्य और परोपकार के लिए ।
धर्मावतार-संज्ञा पुं० साक्षात् धर्म स्वरूप, न्याय करनेवाला ।
धर्मिष्ठ-वि० (सं०) धर्म करने-वाला, पुण्यात्मा, अत्यन्त धार्मिक ।
धर्मी-वि० गुणोंवाला । धार्मिक ।
धर्मोपदेशक-संज्ञा पुं० गुरु । धर्म

का उपदेश या शिक्षा देनेवाला।
धर्षण-संज्ञा पुं० हमला। दबाना।
धर्षणा-संज्ञा स्त्री० (सं०) अपमान।
धव-संज्ञा पुं० स्वामी, पति।
धवलता-संज्ञा स्त्री० उजलापन।
धाँधली-संज्ञा स्त्री० अनीति। धोखेबाजी। बहुत जल्दी।
धाक-संज्ञा स्त्री० रोब-दाब। प्रसिद्धि।
धाता-संज्ञा पुं० विधाता, शेषनाग। वि० पालन करनेवाला।
धातु-संज्ञा स्त्री० (सं०) कड़े ठोस चमकदार खनिज पदार्थ, जैसे सोना, चाँदी आदि। शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ।
धातुपुष्ट-वि० (सं०) वीर्य को गाढ़ा करने की औषधि।
धातुवर्द्धक-वि० (सं०) वीर्य को बढ़ाने की औषधि।
धात्री-संज्ञा स्त्री० माता, माँ।
धात्री-विद्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) बच्चे को जनाने और पालने की विद्या।
धात्वर्थ-संज्ञा पुं० (सं०) मूल अर्थ।
धानी-संज्ञा स्त्री० धान के रंग का, हलका हरा।
धान्य-संज्ञा पुं० धन्याक, धनिया, धान।
धाम-संज्ञा पुं० घर। देह। स्वर्ग।
धायँ-संज्ञा स्त्री० तोप, बंदूक आदि के छूटने का शब्द।
धाय-संज्ञा स्त्री० दूसरे लड़के को दूध पिलाने और पालने का कार्य करनेवाली स्त्री, दाई।
धार-संज्ञा पुं० (सं०) वेग से पानी बरसना। संज्ञा स्त्री० द्रव या पानी आदि का गिरना। किसी हथियार का पैना किनारा।
धारणा-संज्ञा पुं० (सं०) अपने ऊपर लेना। पहनना। उठाना।
धारण-संज्ञा स्त्री० स्मरणशक्ति, संकल्प, पक्का विचार।
धारा-संज्ञा स्त्री० बाढ़। पानी आदि का बहाव।
धाराधर-संज्ञा पुं० मेघ, बादल।
धारावाही-वि० (सं०) बिना रुके धारा की तरह चलनेवाला।
धारासभा-संज्ञा स्त्री० (सं०) कानून बनानेवाली सभा। लेजिस्लेचर।
धारोष्ण-संज्ञा पुं० (सं०) थन से दुहा हुआ ताजा दूध।
धार्मिक-वि० (सं०) धर्मा चरण करनेवाला। धर्मसंबंधी।
धार्मिकता-संज्ञा स्त्री० (सं०) धर्म का काम करना, धर्मशीलता।
धावा-संज्ञा पुं० शत्रु पर हमला करना। कार्य के निमित्त दौड़।
धिक्-अव्य० (सं०) अनादर और घृणासूचक शब्द। तिरस्कार।
धिक्कारना-क्रि० स० तिरस्कार या अनादर करना, फटकारना।
धींगाधींगी-संज्ञा स्त्री० जबरदस्ती। शरारत।
धींगामश्ती-संज्ञा स्त्री० उपद्रव, हाथाबाँही, लड़ना।
धी-संज्ञा स्त्री० (सं०) बुद्धि। मन।
धीमान्-संज्ञा स्त्री० बुद्धिमान्।

धीर-वि० (सं०) धैर्यचित्त और दृढ़तावाला। नम्र। धीमा, मंद। संज्ञा पुं० सन्तोष। सब्र।
धीरता-संज्ञा स्त्री० (सं०) मन की स्थिरता, सब्र, सन्तोष।
धीरललित-संज्ञा पुं० (सं०) खूब बना-ठना और प्रसन्न रहनेवाला नायक।
धीरशांत-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छे गुणों और दयावाला नायक।
धीरा-वि० धीमा, मंद। संज्ञा पुं० धैर्य, धीरज।
धीरोदात्त-संज्ञा पुं० (सं०) धीरता, दयालुता और क्षमावाला व्यक्ति।
धुंध-संज्ञा स्त्री० धुंधला, हलका अँधेरा।
धुंधकार-संज्ञा पुं० धुंकार, अँधेरा।
धुंधला-वि० कुछ काला। धुएँ के रंग का। थोड़ा-थोड़ा अँधेरा।
धुंधलापन-संज्ञा पुं० धुंधला या हलका अँधेरा होने का भाव।
धुआँकश-संज्ञा पुं० भाप के जोर से चलनेवाली नाव, स्टीमर।
धुआँधार-वि० धुएं से भरा। अँधेरा। बहुत जोर का। क्रि० वि० बहुत जोर से।
धुकड़-धुकड़-संज्ञा पुं० घबड़ाहट।
धुकधुकी-संज्ञा स्त्री० हृदय। हृदय की धड़कन।
धुन-संज्ञा स्त्री० खूब परिश्रम से काम करते रहना। मन की मौज। गाने का ढंग। आवाज, ध्वनि।
धुनना-क्रि० स० रुई से बिनौले आदि धुनकी से निकालना। खूब मारना, बारंबार कहना।
धुरंधर-वि० (सं०) सबसे बड़ा और बली, श्रेष्ठ, प्रधान।
धुर-संज्ञा पुं० गाड़ी या रथ के पहिए का बीच का भाग। भार।
धुरा-संज्ञा पुं० पहिए के बीच का छेददार भाग, अक्ष।
धुरीण-वि० (सं०) बोझ सँभालने-वाला। प्रधान। धुरं,र।
धुस्सा-संज्ञा पुं० मोटे ऊन की ओढ़ने की लोई।
धूआँ-संज्ञा पुं० जलती हुई चीजों से निकलनेवाली काली भाप।
धूत-वि० (सं०) काँपता हुआ, त्यक्त, धूर्त।
धूनी-संज्ञा स्त्री० गुग्गल, धूप आदि को जलाकर उठाया हुआ धुआँ।
धूपदानी-संज्ञा स्त्री० वह जिसमें धूप आदि जलायी जाती है।
धूपबत्ती-संज्ञा स्त्री० मसाला लगा-कर बनायी सींक जिसे सुगंधि के लिए जलाया जाता है।
धूम-संज्ञा पुं० धुआँ। संज्ञा स्त्री० बहुत से लोगों का इकट्ठा होकर शोर मचाना। हलचल।
धूमकेतु-संज्ञा पुं० (सं०) पुच्छल तारा, अग्नि, महादेव।
धूमधाम-संज्ञा स्त्री० ठाटबाट।
धूमपान-संज्ञा पुं० (सं०) तम्बाकू, सिगरेट आदि को पीना।

धूमिल-वि० धुंधला, धुएँ के रंग का।
धूम्र-संज्ञा पुं० धुआँ।
धूर्त-वि० (सं०) छली। धोखेबाज।
धूर्तता-संज्ञा स्त्री० शठता, चाल-बाजी, ठगपना।
धूल-संज्ञा स्त्री० मिट्टी के कण, गर्द (मुहा.) —उड़ना—नष्ट होना।
धूसर-वि० (सं०) धूल के रंग का। धूल लगा हुआ, मैला।
धूसरित-वि० (सं०) धूल से भरा हुआ। मटमैला किया हुआ।
धृत-वि० (सं०) धारण किया हुआ, उठाया या लिया हुआ।
धृष्ट-वि० (सं०) बड़े-छोटे का विचार न करनेवाला, ढीठ।
धृष्टता-संज्ञा स्त्री० (सं०) बड़े-छोटे का विचार न रखना, ढिठाई। अनुचित साहस करना।
धेन-संज्ञा स्त्री० बच्चेवाली गाय।
धैर्य-संज्ञा पुं० (सं०) मुसीबत में भी न हिलना, धीरज। मन में उतावली न होना।
धोका, धोखा-संज्ञा पुं० झूठी बात कह कर किसी को भ्रम में डालना, छल, भुलावा। भूल।
धोखेबाज-वि० धोखा देनेवाला, छली, वंचक।
धोखेबाजी-संज्ञा स्त्री० धोखा देना, छल, धूर्तता।
धोरे-क्रि० वि० (ग्रा०) पास में। निकट।
धौंकना-क्रि० स० आग को तेज करने के लिए हवा के झोंके देना।
धौंकनी-संज्ञा स्त्री० आग तेज करने के लिए बांस की सोनार की पोली नली, माथी।
धौंस-संज्ञा स्त्री० घुड़की, धमकी, धाक, अधिकार।
धौंसा-संज्ञा पुं० बड़ा नगाड़ा।
धौति-संज्ञा स्त्री० विशुद्धि साफ। आंत साफ करने के लिए एक योग की क्रिया।
धौल-संज्ञा स्त्री० थप्पड़। नुकसान।
धौल-धक्का-संज्ञा पुं० आघात।
धौल-धप्पा-संज्ञा पुं० मार-पीट, उपद्रव।
ध्यान-संज्ञा पुं० चित्त की एकाग्रता, धारणा,स्मृति, बुद्धि, सोच-विचार, ख्याल, मन।
ध्यानयोग-संज्ञा पुं० (सं०) ध्यान रखने का योग।
ध्यानी-वि० ध्यान करनेवाला।
ध्येय-वि० (सं०) ध्यान करने लायक। सं० लक्ष्य, उद्देश्य।
ध्रुव-वि० (सं०) स्थिर, पक्का, अपने स्थान से हटनेवाला, एक तारा।
ध्रुवतारा-संज्ञा पुं० एक नक्षत्र जो राजा उत्तानपाद का पुत्र माना जाता है।
ध्वंस-संज्ञा पुं० विनाश, सब नष्ट हो जाना, नाश, क्षति, हानि।
ध्वंसक-वि० (सं०) नाश करनेवाला।
ध्वंसन-संज्ञा पुं० ध्वंश, नाश करना, अधःपतन, क्षय।

ध्वंसी-वि० नाश करनेवाला।
ध्वज-संज्ञा पुं० (सं०) निशान। झंडा।
ध्वजी-वि० चिह्न या झंडा लिये हुए।
ध्वनि-संज्ञा स्त्री० (सं०) शब्द, आवाज।
ध्वनित-वि० शब्द किया हुआ, कहा हुआ। गूंजा हुआ। व्यंजित।
ध्वस्त-वि० (सं०) पराजित। नष्ट। गिरा हुआ। टूटा हुआ।
ध्वांत-संज्ञा पुं० अन्धकार, अँधेरा।

न

नंग-धड़ंग-वि० बिना वस्त्र पहने, नंगा, दिगम्बर।
नंगा-वि० जो कपड़ा न पहिने हो। वस्त्रहीन। निर्लज्ज। बदमाश।
नंगाबुच्चा, नंगाबूचा-वि० जिसके पास कुछ भी न हो, दरिद्र।
नंगा-लुच्चा-वि० नीच, पाजी।
नंद-संज्ञा पुं० आनन्द, हर्ष, खुशी। ईश्वर।
नंदक-संज्ञा पुं० (सं०) विष्णु का खड्ग। नंद। वि० आनन्द देनेवाला।
नंदन-संज्ञा पुं० (सं०) इन्द्र का उपवन। शिव। पुत्र। वि० आनन्द देनेवाला।
नंदित-वि० (सं०) सुखी, प्रसन्न।
नंदिनी-संज्ञा स्त्री० कन्या, पुत्री। पति की बहिन, ननद।
नंदीमुख-संज्ञा पु० एक श्राद्ध जो विवाह आदि शुभ अवसरों पर किया जाता है।
नंदोई-संज्ञा पुं० ननद का पति।
नंबर-वि० (अं०) संख्या, गिनती। संज्ञा पुं० गिनती, संख्या, अंक।
नंबरदार-संज्ञा पुं० मालगुजारी लेने में मदद देनेवाला गाँव का जमींदार।
नंबरवार-क्रि० वि० एक-एक करके, सिलसिलेवार।
नंबरी-वि० नंबर लगा हुआ। मशहूर। प्रसिद्ध।
नककटा-वि० जिसकी नाक कटी हो। निर्लज्ज। अप्रतिष्ठित।
नकटा-संज्ञा पुं०, वि० निर्लज्ज, जिसकी बड़ी दुर्दशा हुई हो।
नकदी-संज्ञा स्त्री० रुपया-पैसा। क्रि० वि० किसी मोल ली चीज का उसी समय दिया गया दाम।
नकफूल-संज्ञा पुं० नाक की लौंग। कील।
नकब-संज्ञा स्त्री० (अ०) चोरी से दीवाल में किया गया छेद, सेंध।
नकबेसर-संज्ञा स्त्री० नथनी।
नकमोती-संज्ञा पुं० नाक में पहनने का मोती। नथ का लटकन।
नकलनवीस-संज्ञा पुं० दूसरों के लेखों की नकल करके रोजी कमानेवाला मुहर्रिर।

नकली-वि० (अ०) नकल करके बनाया हुआ, खोटा, जाली।
नकशा-संज्ञा पुं० मानचित्र।
नकसीर-संज्ञा स्त्री० अपने-आप गर्मी के कारण नाक से लोहू बहना।
नकाब-संज्ञा स्त्री० पुं० (अ०) मुंह छिपाने के लिए डाला गया रंगीन या जालीदार कपड़ा।
नकार-संज्ञा पुं० 'न' स्वरूप वर्ण, न मानना।
नकुल-संज्ञा पुं० (सं०) नेवला। पांडु राजा के चौथे पुत्र।
नकेल-संज्ञा स्त्री० ऊंट की नाक में बंधी रस्सी।
नक्का-संज्ञा पुं० सुई का छेद, नाका, कौड़ी।
नक्कारखाना-संज्ञा पुं० (फा०) जहां नक्कारा बजे। नौबतखाना
नक्कारची-संज्ञा पुं० (फा०) नक्कारा बजानेवाला।
नक्कारा-संज्ञा पुं० (फा०) नगाड़ा। नौबत।
नक्काल-संज्ञा पुं० (अ०) नकल करनेवाला, भाँड़।
नक्काश-संज्ञा पुं० (अ०) नक्काशी करनेवाला। रंगसाज।
नक्काशी-संज्ञा स्त्री० (अ०) धातु लकड़ी आदि पर खोदकर बेल-बूटे बनाने की कला।
नक्कू-वि० बड़ी नाकवाला।
नक्श-वि० (अ०) बनाया या चित्रित किया हुआ। मोहर, छाप।
नक्शा-संज्ञा पुं० (अ०) रेखाओं से बनायी हुई कोई आकृति, मानचित्र, ढाँचा, तसवीर चित्र।
नक्षत्र-संज्ञा पुं० (सं०) सितारे। २७ तरह के तारों के समूह।
नक्षत्रलोक-संज्ञा पुं० (सं०) नक्षत्रों के रहने का लोक।
नख-संज्ञा पुं० (सं०) नाखून।
नखरा-संज्ञा पुं० (फा०) चोचला, हावभाव, नाज-अदा, बनना।
नखशिख-संज्ञा पुं० (सं०) पैर के नाखून से लेकर सिर तक सब अंग, शरीर का प्रत्येक अंग।
नखास-संज्ञा पुं० वह बाजार जिसमें पुरानी चीजें बिकती हैं।
नग-संज्ञा पुं० (सं०) पहाड़। पेड़। साँप। सूर्य। एक रत्न।
नगज-संज्ञा पुं० हस्ती, हाथी। वि० पहाड़ से पैदा हुआ।
नगण्य-वि० (सं०) न गिना जा सकने लायक, घृणा करने योग्य।
नगर-संज्ञा पुं० (सं०) बड़ी बस्ती, शहर।
नगरकीर्तन-संज्ञा पुं० (सं०) नगर की गलियों में घूम-घूम-कर किया जानेवाला कीर्तन।
नगरनारि-संज्ञा स्त्री० वेश्या।
नगर-पालिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) म्यूनिसिपैलिटी।
नगरवासी-संज्ञा पुं० (सं०) नगर में रहनेवाले लोग।
नगरी-संज्ञा स्त्री० छोटा नगर।
नगाड़ा-संज्ञा पुं० एक बड़ा

चमड़े का मढ़ा बाजा, नगारा, धौंसा।
नगीना-संज्ञा पुं० (फ़ा०) रत्न।
नगीनासाज-संज्ञा पुं० (फ़ा०) नगीना बनाने या जड़नेवाला।
नगेंद्र, नगेश-संज्ञा पुं० (सं०) हिमालय, पर्वतों का राजा।
नग्न-वि० (सं०) बिना कपड़े पहने, नंगा।
नचनी-वि० स्त्री० नाचनेवाली स्त्री।
नचाना-क्रि० स० दूसरे से नाचने का काम कराना। परेशान या तंग करना।
नज़म-संज्ञा स्त्री० कविता।
नज़र-संज्ञा स्त्री० (अ०) निगाह, आँख से देखने की शक्ति। निरीक्षण, निगरानी, किसी चीज का किसी की दृष्टि पड़ने या देखने से खराब होना, आँख, टोना, ध्यान, भेंट, उपहार।
नजरबंदी-संज्ञा स्त्री० राज्य की ओर से व्यक्ति को ऐसी जगह बन्द कर दिए जाने का दंड जहाँ वह किसी से न मिल सके।
नजराना-क्रि० अ० बुरी दृष्टि डालना। संज्ञा पुं० (अ०) भेंट, उपहार।
नजला-संज्ञा पुं० (अ०) जुकाम।
नजाकत- संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) नाजुक या बहुत कोमल होना, सुकुमारता।
नजात-संज्ञा स्त्री० (सं०) छुट-कारा। मुक्ति।
नजारा-संज्ञा पुं० (अ०) सामने का सुन्दर दृश्य, दृष्टि, देखना।
नजीर-संज्ञा स्त्री० (अ०) उदाहरण, मिसाल, दृष्टांत।
नजूम-संज्ञा पुं० (अ०) ज्योतिष की विद्या।
नट-संज्ञा पुं० (सं०) नाटक करने-वाला। एक गा-बजाकर पेट भरनेवाली जाति।
नटखट-वि० शैतान, उपद्रवी।
नटनी-संज्ञा स्त्री० नट की या नट जाति की स्त्री।
नटवर-संज्ञा पुं० (सं०) नाटक की कला जाननेवाला। श्री कृष्ण। वि० बहुत चतुर।
नदी-संज्ञा स्त्री० किसी पर्वत, झील आदि से बहकर आयी हुई पानी की भारी धारा, दरिया।
नदीश-संज्ञा पुं० सागर। समुद्र।
ननँद, ननद-संज्ञा स्त्री० पति की बहिन।
ननदोई-संज्ञा पुं० ननद का पति।
ननसार-संज्ञा स्त्री० नाना का घर, ननिहाल।
ननिया ससुर-संज्ञा पुं० स्त्री या पति का नाना।
ननिहाल-संज्ञा पुं० नाना का घर।
नन्हा-वि० छोटा।
नपुंसक-संज्ञा पुं० क्लीव, वह पुरुष जिसमें काम-शक्ति न हो, हिजड़ा।
नपुंसकता, नपुंसकत्व-संज्ञा स्त्री०, (सं०) नपुंसक होना।

नफरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) घृणा।
नफा-संज्ञा पुं० (अ०) फायदा।
नफीरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) तुरही बाजा।
नफीस-वि० (अ०) बढ़िया, उम्दा, सुन्दर।
नबी-संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वर का भेजा दूत, पैगम्बर।
नभ-संज्ञा पुं० आसमान, शून्य स्थान, पानी, मेघ, बादल, वर्षा।
नभगामी-संज्ञा पुं० आकाश में जानेवाले, पक्षी। सूर्य। देवता।
नम-वि० (फा०) भीगा हुआ, गीला। संज्ञा पुं० नमस्कार।
नमकहराम-संज्ञा पुं० किसी का दिया अन्न खाकर उसी के विरुद्ध काम करनेवाला व्यक्ति।
नमकहलाल-संज्ञा पुं० अपने अन्न देनेवाले व्यक्ति की हमेशा सेवा और भलाई करनेवाला। स्वामिभक्त।
नमन-संज्ञा पुं० प्रणाम, झुकाव।
नमस्कार-संज्ञा पुं० (सं०) झुककर आदर दिखलाना, प्रणाम।
नमस्ते-संज्ञा पुं० (सं०) अभिवादन का शब्द जिसका अर्थ है, 'आपको नमस्कार है'।
नमाज-संज्ञा स्त्री० मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना।
नमाजी-संज्ञा पुं० (फा०) नमाज पढ़नेवाला।
नमित-वि० (सं०) झुका हुआ।
नमूना-संज्ञा पुं० (फा०) बानगी, ठाट, ढाँचा, खाका।
नम्रता-संज्ञा स्त्री० विनय, झुकाव होना, मुलायमत।
नयन-संज्ञा पुं० चक्षु, नेत्र, आँख।
नयनगोचर-वि० (सं०) आँखों से जाना जा सकनेवाला।
नयनपट-संज्ञा पुं० (सं०) आँख की पलक।
नयनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) आँख की पुतली।
नरक-संज्ञा पुं० हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार वह स्थान जहाँ पापी लोग अपने कर्मों का फल भोगने को भेजे जाते हैं, दोजख। बहुत गंदा स्थान।
नरकगामी-वि० (सं०) नरक में जाने वाला, बहुत पापी।
नरगिस-संज्ञा स्त्री० (फा०) सफेद फूल का एक पौदा।
नरदेव, नरनाथ-संज्ञा पुं० नृपति, राजा, ब्राह्मण।
नर-नारायण-संज्ञा पुं० (सं०) विष्णु के अवतार दो ऋषि, नर और नारायण।
नरनाहर-संज्ञा पुं० नृसिंह भगवान।
नरपति, नरपाल-संज्ञा पुं० नृपति, राजा, मनुष्यों का रक्षक।
नरपिशाच-संज्ञा पुं० (सं०) मनुष्य होकर पिशाचों का-सा नीच काम करनेवाला। अति दुष्ट।
नरभक्षी-संज्ञा पुं० मनुष्य को खानेवाला दैत्य, दानव, राक्षस।

नरमेध-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्राचीन यज्ञ जिसमें मनुष्य के मांस की आहुति दी जाती थी।
नरलोक-संज्ञा पुं० पृथ्वीलोक। संसार। मृत्युलोक।
नराच-संज्ञा पुं० तीर।
नरेंद्र-संज्ञा पुं० नरेश, नृप, राजा।
नरेश-संज्ञा पुं० नरेन्द्र, राजा।
नरोत्तम-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर।
नर्तक-संज्ञा पुं० नट, नाचनेवाला, नृप, एक जाति।
नर्तकी-संज्ञा स्त्री० (सं०) नाचनेवाली स्त्री।
नर्द-संज्ञा स्त्री० (फा०) चौरस की गोट।
नर्म-वि० मुलायम।
नर्मदेश्वर-संज्ञा पुं० (सं०) नर्मदा नदी से निकलनेवाले शिवलिंग।
नर्मसचिव-संज्ञा पुं० मनुष्य मजाक करनेवाला, विदूषक।
नली-संज्ञा स्त्री० गोल पोपली और लम्बी धातु की छड़ी-सी।
नव-वि० (सं०) नवीन, नूतन, नौ की संख्या।
नवग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) ज्योतिष के अनुसार माने गए नौ ग्रह।
नवदुर्गा-संज्ञा स्त्री० (सं०) पुराणों के अनुसार नौ दुर्गाएँ।
नवधाभक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) नौ प्रकार की भक्ति, श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य, [illegible]

नवनीत-संज्ञा पुं० (सं०) मक्खन।
नवम-वि० (सं०) नवाँ, ९ वाँ।
नवमल्लिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) चमेली का फूल।
नवयुवक-संज्ञा पुं० (सं०) नौजवान।
नवयुवा-संज्ञा पुं० तरुण, नवयुवक।
नवयौवना-संज्ञा स्त्री० युवती, नये यौवनवाली स्त्री, तरुण स्त्री।
नवरत्न-संज्ञा पुं० (सं०) नौ प्रकार के रत्न। विक्रमादित्य की सभा के नौ पंडित।
नवरात्र-संज्ञा पुं० (सं०) चैत्र और आश्विन की शुक्ल पक्ष की नवमी तक के दिन, जिनमें नवदुर्गा की पूजा होती है।
नवल-वि० (सं०) नया। सुन्दर। साफ। उज्ज्वल।
नवला-संज्ञा स्त्री० तरुणी युवती।
नवशिक्षित-संज्ञा पुं० (सं०) अभी या हाल ही में सीखा हुआ, नौसिखुआ।
नवागत-वि० (सं०) नया आया हुआ।
नवाज-वि० (फा०) कृपा या दया करनेवाला।
नवाना-क्रि० स० झुकाना।
नवाब-संज्ञा पुं० मुगल सम्राटों में किसी प्रदेश के मालिक को दी गई उपाधि।
नवासा-संज्ञा पुं० (फा०) बेटी का पुत्र, नाती।
नवीन-वि० (सं०) नया। नूतन।
[illegible]

या ताजा होना, नूतनता।
नवीस-संज्ञा पुं० (फा०) लिखने-वाला, लेखक।
नवेला-वि० नया। तरुण।
नव्य-वि० (सं०) नूतन, नवीन।
नशा-संज्ञा पुं० शराब, अफीम आदि मादक पदार्थों का सेवन करने से होनेवाली अवस्था।
नशाखोर-संज्ञा पुं० (फा०) नशे या मादक पदार्थों का सेवन करनेवाला व्यक्ति।
नशीला-वि० नशा पैदा करनेवाला।
नशेबाज-संज्ञा पुं० (फा०) मादक पदार्थों का सेवन करनेवाला।
नश्तर-संज्ञा पुं० (फा०) छोटा तेज चाकू।
नश्वर-वि० (सं०) नाश या जो नष्ट हो जाय।
नश्वरता-संज्ञा स्त्री० नाश। नाश-वान् होने का भाव।
नष्ट-वि० (सं०) बरबाद हुआ। नीच व्यक्ति। बेकार।
नष्ट-बुद्धि-वि० (सं०) मूर्ख, मूढ़।
नष्ट-भ्रष्ट-वि० (सं०) टूटा-फूटा या जो बिलकुल नष्ट हो गया हो।
नस-संज्ञा स्त्री० शरीर के भीतर रक्तवाहिनी नलियाँ।
नसीब-संज्ञा पुं० (अ०) भाग्य।
नसीबवर-वि० (अ०) भाग्यवान।
नसीहत-संज्ञा स्त्री० (अ०) अच्छी बतायी हुई बात, सीख। उपदेश।
नसैनी-संज्ञा स्त्री० सीढ़ी।
नहर-संज्ञा स्त्री० (फा०) खेतों की सिंचाई के लिए किसी नदी से काटकर निकाली हुई पानी की छोटी धारा।
नहान-संज्ञा पुं० नहाने की क्रिया। एक त्यौहार। स्नान का पर्व।
नहूसत-संज्ञा स्त्री० (अ०) अशुभ होना। मनहूस होना।
नाइन-संज्ञा स्त्री० नाई जाति की स्त्री।
नाई-संज्ञा पुं० बाल काटने और हजामत बनाने का काम करने-वाली एक जाति, नाऊ।
नाउम्मेदी-संज्ञा स्त्री० (फा०) निराशा।
नाकाबंदी-संज्ञा स्त्री० प्रवेश-द्वार को बन्द करके किसी बाहरी व्यक्ति का अन्दर आना रोकना।
नाकिस-वि० अ० बुरा, खराब।
नाखुश-वि० (फा०) जो खुश न हो, अप्रसन्न।
नाग-संज्ञा पुं० (सं०) साँप।
नागकन्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) नाग जाति की सुन्दरी कन्या।
नागकेशर-संज्ञा पुं० एक सदाबहार पेड़।
नागमणि-संज्ञा पुं० (सं०) हाथी के मस्तक में रहनेवाला मुक्ता, गजमुक्ता।
नागपति-संज्ञा पुं० (सं०) साँपों का राजा। वासुकि।
नाग-पाश-संज्ञा पुं० (सं०) शत्रुओं को बाँध लेनेवाला एक अस्त्र।
नागफनी-संज्ञा स्त्री० एक पौदा।

नागबेल-संज्ञा स्त्री० पान की लता पान।
नागर-वि० (सं०) नगर-सम्बन्धी। चतुर।
नागरबेल-संज्ञा स्त्री० पान।
नागरिक-वि० (सं०) नगर में रहनेवाला। नगर-सम्बन्धी। संज्ञा पु० किसी राज्य की प्रजा, सिटीजेन।
नागरिकता-संज्ञा स्त्री० (सं०) नागरिक अधिकार तथा कर्तव्य।
नागरी-संज्ञा स्त्री० नागर ब्राह्मण की स्त्री, थूहर का पेड़ चतुर स्त्री।
नागलोक-संज्ञा पुं० (सं०) पाताल।
नागवल्ली-संज्ञा स्त्री० (सं०) पान।
नागवार-वि० (फा०) जो अच्छा या प्रिय न लगे। असह्य।
नागा-संज्ञा पुं० नंगे रहनेवाले शैव साधु। एक जंगली जाति। अपने काम या नौकरी पर न जाना।
नागिन-संज्ञा स्त्री० मादा सर्प, बेल।
नागेंद्र-संज्ञा पुं० बड़ा हाथी, बड़ा सर्प।
नाच-संज्ञा पुं० अंगों की विशेष गति के अनुसार थिरकन।
नाचघर-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ नाच-गाना आदि होता हो।
नाचरंग-संज्ञा पुं० आमोद-प्रमोद।
नाचीज-वि० (फा०) तुच्छ, छोटा।
नाज-संज्ञा पुं० (फा०) नखरा, गर्व, घमंड।
नाजनीं-संज्ञा स्त्री० (फा०) सुन्दर स्त्री।
नाजायज-वि० (अ०) जो उचित न हो, अनुचित।
नाजिम-वि० (अ०) इन्तजाम करनेवाला, प्रबंधकर्त्ता।
नाजिर-संज्ञा पुं० (अ०) देखभाल करनेवाला, निरीक्षक।
नाजुक-वि० (फा०) कोमल, मुलायम, महीन, बारीक।
नाटक-संज्ञा पुं० नर्तक, नट, नाट्य द्वारा अभिनय करना।
नाटकशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह स्थान जहाँ अभिनय होता है।
नाटकीय-वि० (सं०) नाटक सम्बन्धी।
नाटा-वि० छोटे कद का, बौना।
नाटिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) छोटा नाटक। एक रागिनी का नाम।
नाट्य-संज्ञा पुं० (सं०) नाच-गाना। अभिनय।
नाट्यकार-संज्ञा पुं० (सं०) नाटक करनेवाला, अभिनेता।
नाट्यशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) अभिनय करने का स्थान।
नाट्यशास्त्र-संज्ञा पुं० नृत्य, अभिनय की विद्या।
नाड़ी-संज्ञा स्त्री० (सं०) शरीर की रक्त प्रवाहित करनेवाली नलियाँ।
नाड़ीचक्र-संज्ञा पुं० (सं०) हठयोग के अनुसार एक कल्पित नाभि के पास की गाँठ।
नाता-संज्ञा पुं० सम्बन्ध, रिश्ता।
नाते-क्रि० वि० सम्बन्ध से।

लिए, वास्ते ।
नातेवार-वि० सम्बन्ध रखनेवाले, संबंधी ।
नाथ-संज्ञा पुं० अधिपति, मालिक, प्रभु । चौपायों की नाक छेदकर डाल दी जानेवाली रस्सी ।
नाथना-क्रि० स० चौपायों की नाक छेद कर उसमें रस्सी डालना । वश में करना ।
नाद-संज्ञा पुं० शब्द । आवाज । संगीत ।
नादान-वि० (फा०) कुछ न समझने-वाला, मूर्ख, नासमझ ।
नादिर-वि० (फा०) अद्‌भुत, आश्चर्यजनक ।
नादिरशाही-संज्ञा स्त्री० (फा०) मनमाना शासन, भारी अत्याचार संबंधी, नृशंस ।
नादिहंद-वि० (फा०) जो धन न दे या जिससे दिया हुआ ऋण न पाया जा सके ।
नानक-संज्ञा पुं० सिख-सम्प्रदाय के आदि गुरु ।
नानकपंथी-संज्ञा पुं० सिक्ख ।
नानकशाही-वि० नानक-सम्बन्धी, नानक-पंथ का अनुयायी ।
नानबाई-संज्ञा पुं० रोटियाँ पकाकर बेचनेवाला ।
नाना-वि० (सं०) अनेक प्रकार के, भिन्न-भिन्न । संज्ञा पुं० माता का पिता ।
नानी-संज्ञा स्त्री० (देश०) माता की माँ ।
नापाक-वि० (फा०) गंदा । अपवित्र ।
नाबालिग-वि० जो जवान न हो, अल्पवयस्क ।
नाबूद-वि० (फा०) नष्ट, बरबाद ।
नाभि-संज्ञा स्त्री० (सं०) पहिए आदि का बीच का भाग । केन्द्र, मध्य भाग । जरागुज जीवों के पेट के बीचोबीच का गड्ढा.
नामक-वि० (सं०) नाम का । नाम से प्रसिद्ध ।
नामकरण, नामकर्म-संज्ञा पु० (सं०) नाम करण का संस्कार ।
नामकीर्तन-संज्ञा पु० (सं०) ईश्वर के नाम का भजन ।
नामजद-वि० (फा०) जिसका नाम किसी काम के लिए चुना गया हो ।
नामधराई-संज्ञा स्त्री० निन्दा ।
नाम-धाम-संज्ञा पु० नाम और पता-ठिकाना ।
नामधारी-वि० (सं०) नामवाला नामक ।
नामनिशान-संज्ञा पु० (फा०) पता । निशान ।
नामर्द-वि० (फा०) नपुंसक, क्लीव ।
नामशेष-वि० (सं०) मृत, मरा हुआ, बरबाद ।
नामांकित-वि० (सं०) नाम लिखा हुआ ।
नामाकूल-वि० जो योग्य न हो, नालायक । ठीक न होना, अनुचित ।
नामावली-संज्ञा स्त्री० रामनामी । नामों की सूची ।

नामी-वि० नामवाला, मशहूर, प्रसिद्ध ।
नामुनासिब-वि० (फा०) जो मुनासिब या ठीक न हो, अनुचित ।
नामुमकिन-वि० जो हो न सके, असंभव ।
नायक-संज्ञा पुं० स्वामी, सरदार, नेता । मालिक । साहित्य में वर्णन किया गया मुख्य पात्र ।
नायिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) साहित्य में वर्णित मुख्य पात्री ।
नारंगी-संज्ञा स्त्री० नीबू की जाति का एक मीठे फलवाला वृक्ष ।
नार-संज्ञा स्त्री० गरदन । नाला । नारा । संज्ञा स्त्री० (ग्रा०) औरत, नारी ।
नारकी-वि० नरक में जाने योग्य बुरे कर्म करनेवाला, पापी ।
नारद-संज्ञा पुं० (सं०) एक देवर्षि ।
नारा-संज्ञा पुं० पायजामा आदि बाँधने की डोरी, इजारबंद । नाला । किसी दल या पार्टी का सिद्धान्त या युद्ध-सूत्र ।
नाराच-संज्ञा पुं० (सं०) बुरे दिन, दुर्दिन । लोहे का बाण ।
नाराज-वि० (फा०) अप्रसन्न, नाखुश, क्षुब्ध ।
नारिकेल-संज्ञा पुं० (सं०) नारियल ।
नारी-संज्ञा स्त्री० अबला, स्त्री, औरत ।
नाल-संज्ञा स्त्री० (सं०) फूलों की डंडी । गर्भस्थ बच्चे की नाभि से लगी हुई रस्सी-सी नली । संज्ञा पुं० (अ०) घोड़े की टाप में लगायी जानेवाली लोहे की नाल ।
नाला-संज्ञा पुं० गंदा पानी बहा ले जानेवाली बड़ी नाली ।
नालायक-वि० जो लायक या योग्य न हो, अयोग्य, निकम्मा ।
नालिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) मुकदमा चलाना । अपराधी के लिए राजा आदि के पास फरियाद करना ।
नाली-संज्ञा स्त्री० गंदा पानी बहा ले जाने का संकरा रास्ता ।
नाव-संज्ञा स्त्री० जल पर बहनेवाली लकड़ी की बनी हुई सवारी।
नावक-संज्ञा पुं० (फा०) एक छोटा वाण । संज्ञा पुं० माँझी, केवट ।
नाविका-संज्ञा पुं० माँझी, नाव चलानेवाला. मल्लाह ।
नाश-संज्ञा पुं० (सं०) बरबादी । ध्वंस । भाग जाना ।
नाशक-वि० (सं०) नाश या बरबादी करनेवाला । मिटा देनेवाला ।
नाशवान्-वि० नष्ट या समाप्त हो जानेवाला, नश्वर, अनित्य ।
नाशी-वि० नाश होनेवाला, नाशक । ईश्वर ।
नाश्ता-संज्ञा पुं० (फा०) हलका भोजन, जलपान ।
नासापुट-संज्ञा पुं० नाक की झिल्ली ।
नासिका-संज्ञा स्त्री० नासा, नाक का छेद ।
नासूर-संज्ञा पुं० (अ०) घाव या फोड़े की गहराई जिससे लगातार

मवाद बहता रहता है, नाड़ीव्रण ।
नास्तिक-संज्ञा पुं० वह जो ईश्वर, परलोक आदि का विश्वास नहीं मानता ।
नास्तिकता-संज्ञा स्त्री० (सं०) ईश्वर आदि में अविश्वास ।
नाहक-क्रि० वि० बेकार । बेफायदा ।
निंदराना-क्रि० स० निन्दा या बुराई करनेवाला व्यक्ति ।
निंदरिया-संज्ञा स्त्री० नींद ।
निंदक-संज्ञा पुं० (सं०) निन्दा या बुराई करनेवाला ।
निंदन-संज्ञा पुं० (सं०) निन्दा या बुराई करना ।
निंदनीय-वि० (सं०) निन्दा किया जाने लायक ।
निंदास्तुति-संज्ञा स्त्री० (सं०) निंदा के बहाने से स्तुति या बड़ाई ।
निंदित-वि० (सं०) जिसकी बुराई या निंदा की गई हो, बुरा ।
निंद्य-वि० (सं०) निन्दा करने योग्य, बुरा ।
निंब-संज्ञा स्त्री० (सं०) नीम का पेड़ ।
निःशंक-वि० (सं०) बिना शंका या डर का, निडर ।
निःशब्द-वि० (सं०) बिना शब्द के, जो शब्द न करता हो ।
निःशेष-वि० (सं०) कुछ भी न बचा हुआ, कुल । समाप्त ।
निःश्रेणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) सीढ़ी ।
निःश्वास-संज्ञा पुं० (सं०) नाक से निकली हुई साँस ।
निःसंकोच--क्रि० वि० (सं०) बिना संकोच या डर के । बेधड़क ।
निःसंग-वि० (सं०) बिना मेल या साथ के ।
निःसंतान-वि० (सं०) बिना संतान का, निपूता ।
निःसंदेह-वि० (सं०) बिना संदेह या संशयवाला, बेशक ।
निःसंशय-वि० (सं०) बिना संदेह के, जिसमें संशय न हो ।
निःसत्व-वि० (सं०) जिसमें कुछ सार या सत्व न हो, निःसार ।
निःसरण-संज्ञा पुं० (सं०) निकलना ।
निःसीम-वि० (सं०) बिना सीमा का, बेहद । बहुत अधिक ।
निःस्वार्थ-वि० (सं०) केवल अपने ही सुख, सुबीते का स्वार्थ न रखनेवाला ।
निआमत-संज्ञा स्त्री० (अ०) बहुत मूल्यवान् पदार्थ । अलभ्य वस्तु ।
निकंदन-संज्ञा पुं० नाश, बरबादी ।
निकट-वि० (सं०) समीप का ।
निकटवर्ती, निकटस्थ-वि० (सं०) पास का या पास रहनेवाला ।
निकम्मा-वि० कुछ भी काम-धाम न करनेवाला, व्यर्थ का ।
निकास-संज्ञा पुं० निकलने का भाव, क्रम, द्वार, आमदनी का ढंग । आय । वंश का मूल, युक्ति ।
निकासी-संज्ञा स्त्री० निकलना । माल की बिक्री, खपत, चुंगी ।
निकाह-संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानी रीति से सम्पन्न विवाह ।

निकुंज-संज्ञा पुं० (सं०) लता आदि से घिरा हुआ मंडप, लता-गृह ।
निकृष्ट-वि० (सं०) नीच, तुच्छ ।
निकृष्टता-संज्ञा स्त्री० (सं०) नीचता, अधमता ।
निकेत-संज्ञा पुं० (सं०) घर, मकान।
निक्षिप्त-वि० (सं०) रखा हुआ । छोड़ा हुआ ।
निक्षेप-संज्ञा पुं० (सं०) फेंकना या छोड़ना । धरोहर ।
निक्षेपण-संज्ञा पुं० (सं०) फेंकना छोड़ना, डालना, चलाना ।
निखट्टू-वि० जो कोई काम-धाम न करता हो, निकम्मा ।
निखरना-क्रि० अ० स्वच्छ होना ।
निखार-संज्ञा पुं० सफाई, स्वच्छता, शृंगार, सजावट ।
निखिल-वि० (सं०) सम्पूर्ण, सब ।
निगम-संज्ञा पुं० मार्ग, वेद ।
निगमन-संज्ञा पुं० (सं०) नतीजा, निष्कर्ष ।
निगरानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) देख-भाल, निरीक्षण देखरेख। रखनेवाला, रक्षक ।
निगहबानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) प्रतिपालन। रक्षा ।
निगाह-संज्ञा स्त्री० (फा०) दृष्टि। कृपा-दृष्टि ।
निगोड़ा-वि० अभागा । नीच, बुरा।
निग्रह-संज्ञा पुं० अवरोध, रोक।
निचय-संज्ञा पुं० समूह, संचय। निश्चय ।
निश्चिंत-वि० चिन्तारहित, बेफिक्र।
निचोड़-संज्ञा पुं० निचोड़ कर निकाला हुआ, मुख्य तात्पर्य, सारांश ।
निचोल-संज्ञा पुं० लहँगा, घाघरा ।
निछावर-संज्ञा स्त्री० किसी के सिर पर उतार करके उत्सर्ग करना ।
निज-वि० (सं०) अपना ।
निजाम-संज्ञा पुं० (अ०) प्रबन्ध, इन्तजाम ।
निठुर-वि० दूसरे के कष्ट को न समझनेवाला, निष्ठुर, क्रूर ।
निढाल-वि० शिथिल, सुस्त ।
नितंब-संज्ञा पुं० (सं०) चूतड़ ।
नितंबिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) सुन्दर नितम्बवाली।
नितांत-वि० (सं०) बिलकुल ।
नित्य-वि० (सं०) प्रतिदिन रहने-वाला । रोज का ।
नित्यकर्म-संज्ञा पुं० (सं०) रोज किया जानेवाला काम, शौचादि।
नित्यता-संज्ञा स्त्री० (सं०) कभी न नष्ट होना, अमरता ।
नित्यनियम-संज्ञा पुं० (सं०) रोज ही किया जानेवाला काम ।
नित्यप्रति-अव्य० (सं०) प्रतिदिन ।
निदर्शन-संज्ञा पुं० (सं०) दिखाना। उदाहरण । दृष्टान्त ।
निदाघ-संज्ञा पुं० ताप । गरमी ।
निदारुण-वि० (सं०) भयानक, डरावना।
निद्रा-संज्ञा स्त्री० स्वप्न, नींद, सोना ।
निद्रायमान-वि० (सं०) जो नींद में हो ।

निद्रालु-वि० (सं०) सोनेवाला ।
निद्रित-वि० (सं०) सोया हुआ ।
निधन-संज्ञा पुं० (सं०) नाश । मृत्यु । वि० गरीब ।
निधि-संज्ञा स्त्री० समुद्र, खजाना ।
निनाद-संज्ञा पुं० (सं०) आवाज, शब्द ।
निनादी-वि० शब्द करनेवाला ।
निपत्र-वि० बिना पत्तों का, पत्रहीन ।
निपट-अव्य० निरा, खाली, बिलकुल ।
निपटना-क्रि० अ० देखिए 'निबटना' ।
निपतन, निपात-संज्ञा पुं० गिराव । नीचे गिरना । अधःपतन । मृत्यु ।
निपाती-वि० गिरानेवाला, मारनेवाला ।
निपीड़न-संज्ञा पुं० (सं०) तकलीफ या कष्ट देने का कार्य, दलना ।
निपुण-वि० (सं०) किसी काम को भली प्रकार कर सकनेवाला, सिद्धहस्त ।
निपुणता-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी काम को भली प्रकार कर सकना, कुशलता ।
निपुत्री, निपूत, निपूता-वि० जिसके सन्तान न हो ।
निफाक-संज्ञा पुं० (अ०) विरोध ।
निबंध-संज्ञा पुं० (सं०) लिखा प्रबन्ध, लेख ।
निबटना-क्रि० अ० किसी काम से निवृत्त होना, अन्त होना ।
निबद्ध-वि० (सं०) बँधा हुआ, रुका हुआ, गुथा हुआ ।
निबल-वि० कमजोर, दुर्बल ।
निबाह-संज्ञा पुं० रहना, गुजारा । निर्वाह । पूरा करने का काम ।
निबाहना-क्रि० स० रहना, निर्वाह या गुजारा करना ।
निबेरा-संज्ञा पुं० छुटकारा । समाप्ति । निर्णय । निबटेरा ।
निभना-क्रि० अ० निर्वाह होना । जारी रहना । पूरा होना ।
निभाना-क्रि० स० रहना, निर्वाह करना । पुराने रिवाज को करते चले आना ।
निमंत्रण-संज्ञा पुं० न्योता, किसी पर्व, उत्सव आदि के समय किसी का बुलावा ।
निमंत्रित-वि० (सं०) बुलाया या न्योता हुआ ।
निमकी-संज्ञा स्त्री० नीबू का अचार ।
निमकौड़ी-संज्ञा स्त्री० नीम का बीज, निबकौड़ी ।
निमग्न-वि० (सं०) विचार में डूबा । डूबा हुआ, मग्न ।
निमित्त-संज्ञा पुं० चिह्न, कारण । उद्देश्य ।
निमित्तक-वि० (सं०) किसी कारण से होनेवाला ।
निमित्त कारण-संज्ञा पुं० (सं०) सहायक कारण । कर्त्ता ।
निमेष-संज्ञा पुं० (सं०) पलक मारने भर का समय, क्षण, पल ।
निम्न-वि० (सं०) नीचा, छोटा ।
निम्नगा-संज्ञा स्त्री० (सं०) नदी ।

नियंत्रण-संज्ञा पुं० (सं०) नियमों के अन्दर काम कराना ।
नियत-वि० (सं०) नियम से बँधा हुआ, ठहराया हुआ, निश्चित ।
नियति-संज्ञा स्त्री० नियम, भाग्य । अवश्य होनेवाली बात ।
नियम-संज्ञा पु० प्रतिज्ञा, खास तरह से काम करने का बनाया हुआ कानून, कायदा । शासन ।
नियमन-संज्ञा पुं० (सं०) कार्यों को नियमों में बांधना । शासन ।
नियमबद्ध-वि० (सं०) नियमों में बँधा हुआ, पाबंद ।
नियमित-वि० (सं०) नियम या कायदे के अनुसार चलनेवाला ।
नियुक्त-वि० (सं०) लगाया हुआ । तैनात किया हुआ ।
नियुक्ति-संज्ञा स्त्री० नियुक्त होने का भाव। तैनाती ।
नियोग-संज्ञा पुं० अयनानुसार नियुक्ति, अवधारण, आज्ञा, निश्चय ।
नियोजन-संज्ञा पुं० (सं०) किसी काम में तैनात करना । लगाना ।
निरंकुश-वि० (सं०) बिना अंकुश या दबाव का । स्वेच्छाचारी ।
निरंग-वि० (सं०) बिना अंग का । बदरंग, उदास, फीका ।
निरंजन-वि० (सं०) बिना काजल या अंजन-रहित, दोष-रहित । संज्ञा पुं० शिव । परमात्मा ।
निरंतर-वि० (सं०) लगातार । घना । क्रि० वि० बराबर ।
निरंश-वि० (सं०) जिसे अपना अंश या भाग न मिला हो । बिना अंश का, अंशहीन ।
निरक्षर-वि० (सं०) अक्षर न जाननेवाला, अपढ़, मूर्ख ।
निरगुन-वि० जिसमें गुण न हो ।
निरत-वि० (सं०) काम में लगा हुआ, लीन ।
निरन्न-वि० (सं०) बिना अन्न का, निराहार ।
निरपराध-वि० (सं०) बिना अपराध का, निर्दोषता, क्रि० वि० अपराधरहित, निर्दोष ।
निरपेक्ष-वि० (सं०) जिसे किसी वस्तु की इच्छा न हो, उदासीन ।
निरभिमान-वि० (सं०) बिना घमण्ड-वाला । अभिमानरहित ।
निरभिलाष-वि० (सं०) बिना किसी चाह या अभिलाषावाला ।
निरमोल-वि० बिना मूल्य का, अमूल्य । बहुत बढ़िया ।
निरय-संज्ञा पुं० (सं०) नरक ।
निरर्थक-वि० (सं०) बिना अर्थ का, बेकार । निष्फल ।
निरवारना-क्रि० स० रुकावट का हटाना, छुड़ाना, निर्णय करना ।
निरशन-संज्ञा पुं० उपवास ।
निरस-वि० (सं०) बिना रस का, सूखा, रूखा, विरक्त, असार।
निरस्त्र-वि० (सं०) बिना हथियार का ।
निरहंकार-वि० (सं०) अभिमान रहित ।

निरा-वि० विशुद्ध, बिना मिलावट का, एकमात्र, नितान्त, निपट।

निराकरण-संज्ञा पुं० मिटाना, हटाना, दूर करना, खंडन।

निराकार-वि० (सं०) बिना आकार का। संज्ञा पुं० परब्रह्म, आकाश।

निराकुल-वि० (सं०) जो घबराया हुआ न हो। अनुद्विग्न।

निरादर-संज्ञा पुं० (सं०) अपमान, बेइज्जती।

निराधार-वि० (सं०) बिना आधार या सहारे का। निराश्रय।

निरामय-वि० (सं०) बिना रोग-दोष का। स्वस्थ। शुद्ध।

निरामिष-वि० (सं०) मांस आदि न खानेवाला।

निरालंब-वि० (सं०) बिना सहारे का, निराधार, बिना ठिकाने का।

निरालस्य-वि० (सं०) बिना आलस-वाला, फुरतीला, चुस्त।

निराला-संज्ञा पुं० एकांत। वि० सब से भिन्न, अनोखा, अद्‌भुत।

निराश-वि० बिना किसी आशा या उम्मीदवाला, नाउम्मीद।

निराशा-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी प्रकार की आशा का अभाव। नाउम्मीदी।

निराश्रय-वि० (सं०) जिसे कहीं किसी प्रकार का सहारा न हो, असहाय।

निराहार-वि० (सं०) जिसने कुछ न खाया हो, भूखा।

[illegible]

का, ईश्वर।

निरीक्षक-संज्ञा पुं० दर्शक, देख-रेख करनेवाला।

निरीक्षण-संज्ञा पुं० दर्शन, देख-रेख रखना।

निरीश्वरवाद-संज्ञा पुं० (सं०) वह सिद्धान्त जिसके अनुसार ईश्वर नहीं हैं। नास्तिकता।

निरीह-वि० (सं०) उदासीन।

निरुक्त-वि० (सं०) ठहराया या व्याख्या किया हुआ।

निरुत्तर-वि० (सं०) जिसका कुछ उत्तर न दिया जा सके। जो कुछ भी उत्तर न दे सके।

निरुत्साह-वि० (सं०) बिना उत्साह का।

निरुद्ध-वि० (सं०) रुका या बँधा हुआ।

निरुद्यमी-संज्ञा पुं० कुछ भी उद्यम या काम-काज न करनेवाला व्यक्ति, बेकार।

निरुपद्रव-वि० (सं०) जहाँ कोई उत्पात या उपद्रव न हो।

निरुपम-वि० (सं०) जिसकी कोई उपमा न हो, बेजोड़।

निरुपयोगी-वि० (सं०) उपयोग या काम में न लाया जा सकनेवाला, निरर्थक, व्यर्थ।

निरुपाधि-वि० (सं०) जिसकी कोई उपाधि न हो, ईश्वर।

निरुपाय-वि० (सं०) जो कुछ उपाय या कोशिश न कर सके। जिसके लिए कोई उपाय न किया जा सके।

निरोध-संज्ञा पुं० रुकावट, बंधन, घेरा, नाश ।
निरोधक-वि० (सं०) रोकनेवाला।
निर्ख-संज्ञा पुं० (फा०) भाव, दर ।
निर्गंध-वि० (सं०) बिना गंध का, गंधरहित ।
निर्गत-वि० (सं०) बाहर निकला हुआ ।
निर्गम-संज्ञा पुं० निःसरण, निकलने का मार्ग, निकास ।
निर्गुण-संज्ञा पुं० (सं०) जिसमें कोई अच्छे-बुरे गुण न हों, परमेश्वर।
निर्गुणिया-वि० निर्गुण ब्रह्म में विश्वास रखनेवाला ।
निर्घृण-वि० (सं०) गंदी या बुरी वस्तुओं से घृणा न रखनेवाला । गंदा, नीच ।
निर्घोष-संज्ञा पुं० शब्द, आवाज ।
निर्जन-वि० (सं०) सुनसान ।
निर्जल-वि० (सं०) बिना जल का ।
निर्जीव-वि० (सं०) प्राणहीन, मृत, उत्साहहीन ।
निर्झर-संज्ञा पुं० झरना, सोता ।
निर्णय-संज्ञा पुं० (सं०) दो में से अपराधी को छाँटना, विचार करना, निबटारा ।
निर्णीत-वि० (सं०) निर्णय या फैसला किया हुआ ।
निर्दय-वि० (सं०) बिना दया का, बेरहम ।
निर्दयता-संज्ञा स्त्री० (सं०) बिना दया का होना, दयाहीन ।
निर्दिष्ट-वि० (सं०) बतलाया या ठहराया हुआ ।
निर्देश-संज्ञा पुं० उल्लेख, किसी चीज की ओर संकेत करना । आज्ञा। वर्णन, जिक्र ।
निर्दोष-वि० (सं०) दोषरहित, बेकसूर ।
निर्धन-वि० (सं०) धनरहित, गरीब ।
निर्धनता-संज्ञा स्त्री० दरिद्रता, धन का न होना, गरीबी ।
निर्धार, निर्धारण-संज्ञा पुं० (सं०) निश्चित करना या ठहराना ।
निर्धारित-वि० (सं०) ठहराया हुआ ।
निर्निमेष-क्रि० वि० (सं०) बिना पलक झपकाए ।
निर्बल-वि० बलहीन । कमजोर।
निर्बलता-संज्ञा स्त्री० (सं०) कमजोरी ।
निर्बुद्धि-वि० (सं०) बिना बुद्धि का, बुद्धिहीन, मूर्ख ।
निर्बोध-वि० (सं०) कुछ न समझनेवाला, अज्ञानी, मूर्ख ।
निर्भय-वि० (सं०) भयरहित, निडर ।
निर्भर-वि० (सं०) अवलंबित । किसी के सहारे टिका हुआ, आश्रित ।
निर्भीक-वि० (सं०) बिना डर का, निडर ।
निर्भीकता-संज्ञा स्त्री० (सं०) निर्भीक या निडर होना ।

निभ्रंम-वि० (सं०) बिना भ्रम या शंका का । क्रि० वि० बेखटके ।
निभ्रांत-वि० (सं०) बिना भ्रम या शंका का, भ्रम-रहित ।
निर्मम-वि० (सं०) बिना ममता या स्नेह का, कठोर ।
निर्मल-वि० (सं०) बिना गंदगी या बुराई का, पापरहित, निर्दोष ।
निर्मलता-संज्ञा स्त्री० शुद्धता, गंदगी न होना, विशुद्धता, स्वच्छता ।
निर्माण-संज्ञा पुं० बनाने का काम, रचना करना ।
निर्माता-संज्ञा पुं० (सं०) बनानेवाला ।
निर्मित-वि० (सं०) बनाया हुआ, रचित ।
निर्मूल-वि० (सं०) बिना जड़ या आधार का, नष्ट हो गया हो ।
निर्मूलन-संज्ञा पुं० (सं०) बिलकुल बरबाद होना या करना ।
निर्मोह-वि० (सं०) बिना मोह-ममता का, कठोर ।
निर्मोही-वि० निर्दय, कठोर हृदय का ।
निर्लज्ज-वि० (सं०) बिना लज्जा या शर्म का, लज्जाहीन ।
निर्लज्जता-संज्ञा स्त्री० (सं०) लज्जा या शर्म का न होना बेशर्मी।
निर्लिप्त-वि० (सं०) जो किसी चीज में आसक्त न हो, निःस्पृह ।
निर्लोभ-वि० (सं०) बिना लोभ या इच्छा का ।
निर्वंश-वि० (सं०) जिसका वंश नष्ट हो गया हो । अकेला ।
निर्वाचन-संज्ञा पुं० (सं०) चुनना ।
निर्वाचित-वि० (सं०) चुना हुआ ।
निर्वासन-संज्ञा पुं० मारण, देश या नगर से निकाल दिए जाने का दण्ड, निःसारण निकालना ।
निर्वाह-संज्ञा पुं० पालन, पुराने रिवाजों का पालन करते रहना । निर्वहण, समाप्ति, पूरा होना ।
निर्विकार-वि० (सं०) बिना बुराई या परिवर्तन का ।
निर्विघ्न-वि० (सं०) बिना विघ्न या बाधा का ।
निर्विवाद-वि० (सं०) बिना विवाद या झगड़े का, निश्चित ।
निर्विशेष-संज्ञा पुं० परमात्मा ।
निर्वीर्य-वि० (सं०) वीर्य्य-रहित, कमजोर ।
निलय-संज्ञा पुं० गृह, घर, मकान, जगह ।
निवह-संज्ञा पुं० (सं०) समूह, झुण्ड ।
निवारक-वि० (सं०) दूर करनेवाला, अवरोधक, मिटानेवाला ।
निवारण-संज्ञा पुं० (सं०) दूर करना या मिटाना । छुटकारा ।
निवाला-संज्ञा पुं० (फा०) कौर ।
निवास-संज्ञा पुं० (सं०) आश्रय। रहने का स्थान, घर ।
निवासस्थान-संज्ञा पुं० (सं०) रहने का स्थान,घर ।
निवासी-संज्ञा पुं० बसनेवाला ।
निवृत्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) छुटकारा, मुक्ति ।

निवेदक-संज्ञा पुं० निवेदन करनेवाला या प्रार्थना करनेवाला, प्रार्थी ।
निवेदन-संज्ञा पुं० विनती, प्रार्थना, विनय ।
निवेदित-वि० (सं०) निवेदन किया हुआ । दिया हुआ ।
निवेश-संज्ञा पुं० शिविर । डेरा । घर ।
निशंक-वि० बिना शंका या डरवाला, निडर ।
निशांत-संज्ञा पुं० (सं०) निशा का अंत, प्रभात; वि० अति शान्त ।
निशा-संज्ञा स्त्री० रात, हरिद्रा, हल्दी ।
निशाचर-संज्ञा पुं० सियार, रात को चलनेवाला, राक्षस । चोर ।
निशान-संज्ञा पुं० (फा०) चिह्न । लक्षण ।
निशापति-संज्ञा पुं० (सं०) चन्द्रमा ।
निशानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) यादगार के लिए दिया गया पदार्थ ।
निशि-संज्ञा स्त्री० रजनी, रात ।
निशिकर-संज्ञा पुं० शशि, चन्द्रमा ।
निश्चय-संज्ञा पुं० दृढ़संकल्प, संदेह न होना, पक्का होना, विश्वास ।
निश्चयात्मक-वि० (सं०) बिलकुल निश्चित या पक्का, ठीक ।
निश्चल-वि० (सं०) न चलनेवाला, अचल ।
निश्चलता-संज्ञा स्त्री० (सं०) न चलना, दृढ़ता स्थिरता ।
निश्चिंत-वि० (सं०) बिना चिंता का, चिन्तारहित ।
निश्चिंतता-संज्ञा स्त्री० (सं०) चिंता न होना, बेफिक्री ।
निश्चित-वि० (सं०) बिलकुल तय, पक्का, दृढ़ ।
निश्चेष्ट-वि० (सं०) बिना चेष्टा का, बेहोश ।
निश्छल-वि० (सं०) बिना छल का, सीधा ।
निश्रेयस-संज्ञा पुं० मोक्ष । कल्याण ।
निश्वास-संज्ञा पुं० दीर्घ निश्वास, आह भरना ।
निश्शंक-वि० (सं०) बिना शंका या संदेह का, निडर ।
निश्शेष-वि० (सं०) जिसमें कुछ भी बचा न हो ।
निषिद्ध-वि० (सं०) निषेध या जो करने योग्य न हो । बुरा ।
निषेध-संज्ञा पुं० वर्जन । मनाही । रुकावट ।
निषेधक-संज्ञा पुं० निवारक, मना करनेवाला ।
निषेधित-वि० मना किया हुआ ।
निष्कंटक-वि० (सं०) बिना बाधा या रुकावट का, निर्विघ्न ।
निष्कपट-वि० (सं०) बिना कपट या छल का, सरल ।
निष्कर्म-वि० कामों में लिप्त न होनेवाला, निर्लिप्त ।
निष्कर्ष-संज्ञा पुं० सारांश, निचोड़, सार, नतीजा ।
निष्कलंक-वि० (सं०) बिना कलंक या दोष का, बे-ऐब ।
निष्काम-वि० बिना किसी कामना या इच्छावाला, कामनारहित ।

निष्काशन-संज्ञा पुं० (सं०) बाहर निकालना।

निष्क्रिय-वि० (सं०) कुछ भी काम न करता हो।

निष्ठा-संज्ञा स्त्री० (सं०) ठहराव। भक्ति।

निष्ठावान्-वि० भक्ति और श्रद्धा-वाला। जिसमें श्रद्धा हो।

निष्ठुर-वि० बिना दया का, कठोर, क्रूर।

निष्ठुरता-संज्ञा स्त्री० (सं०) दया न होना, कठोरता, क्रूरता।

निष्णात-वि० (सं०) अच्छी तरह किसी विषय में निपुण, चतुर, प्रधान, जानकार।

निष्पंद-वि० (सं०) जिसमें किसी प्रकार का कंपन न हो, स्थिर।

निष्पक्ष-वि० (सं०) बिना किसी का पक्ष लिए, पक्षपात-रहित।

निष्पत्ति-संज्ञा स्त्री० सिद्धि, समाप्ति, अन्त, निश्चय।

निष्पन्न-वि० (सं०) पूरा हो चुका हुआ, समाप्त।

निष्प्रयोजन-वि० (सं०) बिना किसी मतलब का, व्यर्थ।

निष्फल-वि० (सं०) बिना किसी फल या फलशून्य, बेकार।

निसतारना-क्रि० स० मुक्त करना।

निसर्ग-संज्ञा पु० प्रकृति। स्वभाव। रूप। सृष्टि।

निसान-संज्ञा पुं० चिह्न। नगाड़ा।

निसार-संज्ञा पु० (अ०) न्योछावर। वि० बिना सार का, व्यर्थ।

निसि-संज्ञा स्त्री० रात।

निसूदन-संज्ञा पु० वध मारना या हिंसा करना।

निसेनी, निसैनी-संज्ञा स्त्री० सीढ़ी।

निसोच-वि० बिना सोच या चिन्ता का, निश्चिन्त।

निस्तत्त्व-वि० (सं०) बिना तत्त्व या सार का, व्यर्थ।

निस्तब्ध-वि० (सं०) न हिलने-डुलनेवाला। जड़-सा।

निस्तरण, निस्तार-संज्ञा पुं० निर्गम, पार होना, निस्तार, छुटकारा।

निस्तीर्ण-वि० (सं०) जो पार कर या हो चुका। मुक्त।

निस्तेज-वि० बिना तेज का, मलिन।

निस्पृह-वि० (सं०) बिना किसी लोभ या लालच का, निष्काम।

निस्संकोच-वि० (सं०) बिना संकोच या लज्जा के, बेधड़क।

निस्संतान-वि० (सं०) बिना संतान का, संततिरहित।

निस्संदेह-क्रि० वि० (सं०) बिना संदेह के, जरूर। वि० जिसमें संदेह न हो।

निस्सार-वि० (सं०) बिना सार का, साररहित।

निस्सीम-वि० (सं०) बिना सीमा का, बहुत अधिक, अपार।

निस्स्वार्थ-वि० (सं०) अपने ही हित और भलाई की चिन्ता न करनेवाला, परोपकारी।

निहंग-वि० अकेला, नंगा, निर्लज्ज।

निहंग-लाबला-वि० माता-पिता के अधिक प्यार के कारण बिगड़ा हुआ।

निहंता-वि० नाश या बरबाद करनेवाला। प्राणघातक।

निहत-वि० (सं०) जो मार डाला गया हो।

निहत्था-वि० जिसके पास कोई हथियार लड़ने को न हो।

निहायत-वि० (अ०) बहुत अधिक।

निहार-संज्ञा पुं० हिम। ओस।

निहारना-क्रि० स० ध्यान से देखना।

निहाल-वि० (फा०) सब तरह से संतुष्ट और तृप्त हो, पूर्णकाम।

निहोरा-संज्ञा पुं० उपकार, प्रार्थना।

नीक, नीका-वि० अच्छा। भला।

नीच-वि० (सं०) छोटा, तुच्छ।

नीचता-संज्ञा स्त्री० (सं०) नीच या तुच्छ होना। अधम या बुरा होना।

नीचा-वि० ऊँचे का उलटा। छोटा। तुच्छ, ओछा।

नीड़-वि० (सं०) पक्षियों का घोसला।

नीति-संज्ञा स्त्री० (सं०) व्यवहार करने का ढंग, आचार। नियम। उपाय।

नीतिज्ञ-वि० (सं०) नीति या आचार जाननेवाला, नीतिकुशल।

नीतिमान्-वि० नीति से चलनेवाला, सदाचारी।

नीतिशास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह शास्त्र जिसमें आचार-व्यवहार के नियम लिखे हों।

नीयत-संज्ञा स्त्री० (अ०) आशय, उद्देश्य, संकल्प, इच्छा।

नीर-संज्ञा पुं० जल, पानी।

नीरज-संज्ञा पुं० (सं०) पानी से पैदा हुआ, कमल।

नीरद-संज्ञा पुं० मेघ, बादल।

नीरधि-संज्ञा पुं० (सं०) समुद्र।

नीरस-वि० (सं०) बिना रस का, सूखा, स्वादरहित, मन न लगनेवाला।

नीरोग-वि० (सं०) बिना रोग का, स्वस्थ।

नील-वि० (सं०) नीले रंग का।

नीलकंठ-वि० (सं०) नीले कंठवाला। चटक, मयूर, मोर।

नीलगाय-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बड़ा हिरन।

नीलम, नीलमणि-संज्ञा पुं० (सं०) एक नीले रंग का रत्न।

नीललोहित-वि० (सं०) नीलापन लिए हुए लाल, बैंगनी। शिव।

नीलांबर-संज्ञा पुं० राक्षस, नीले रंग का कपड़ा।

नीला-वि० नीले रंग का।

नीलिमा-संज्ञा स्त्री० नीला होना, नीलापन, श्यामता।

नीलोफर-संज्ञा पुं० (फा०) नील कमल। कुमुद। कोई।

नीहार-संज्ञा पुं० तुषार, हिम, पाला. कुहरा।

नुकता-संज्ञा पुं० बिन्दु, सिफर।

नुकताचीनी-संज्ञा स्त्री० (फा०) दोष या ऐब निकालना। छिद्रान्वेषण।
नुकीला-वि० नोकदार। बाँका।
नुक्स-संज्ञा पुं० (अ०) दोष। बुराई। कसर।
नुमाइश-संज्ञा स्त्री० (फा०) दिखावा, वह स्थान जहाँ तरह-तरह की चीजें दिखायी जायें, प्रदर्शन, प्रदर्शनी।
नुमाइशी-वि० केवल देखने के लिए, दिखावटी।
नुसखा-संज्ञा पुं० (अ०) लिखी हुयी छोटी सी-बात। डॉक्टर आदि का औषधि के लिए लिखा हुआ कागज।
नूतन-वि० (सं०) नया। ताजा।
नूतनता-संज्ञा स्त्री० नवीनता, नया या ताजा होना, नयापन।
नूपुर-संज्ञा पुं० घुंघरू। पंजनी।
नूर-संज्ञा पुं० (अ०) ज्योति, प्रकाश। शोभा, कांति, छवि।
नूह-संज्ञा पुं० (अ०) एक पैगंबर।
नृ-संज्ञा पुं० मनुष्य पुरुष, नर।
नृत्त-संज्ञा पुं० (सं०) नाच।
नृत्य-संज्ञा पुं० (सं०) विशेष नियमों के अनुसार पैरों की थिरकन, नाच।
नृत्यशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) जहाँ नाच हो, नाचघर।
नृप-संज्ञा पुं० नरपति, राजा।
नृपति, नृपाल- पुं० (सं०) नृपति, राजा।
नृमेध-संज्ञा पुं० (सं०) मनुष्य की बलि देकर किया जानेवाला यज्ञ, नरमेध यज्ञ।
नृशंस-वि० (सं०) अनिष्टकारी, निर्दय, अत्याचारी।
नृशंसता-संज्ञा स्त्री० (सं०) निर्दयता। क्रूरता।
नेक-वि० (फा०) भला, अच्छा। क्रि० वि० थोड़ा, जरा।
नेकचलन-वि० अच्छे चाल-चलन का, सदाचारी।
नेकनाम-वि० (फा०) अच्छे नामवाला, नामी।
नेकनीयत-वि० अच्छी नीयत या विचारोंवाला।
नेकी-संज्ञा स्त्री० (फा०) उपकार, सज्जनता, भलाई।
नेता-संज्ञा पुं० सरदार, अगुआ। मालिक।
नेति-(सं०) एक वाक्य जिसका मतलब है, 'ऐसा नहीं'।
नेती-संज्ञा स्त्री० मथानी चलाने में उसमें लपेटी जानेवाली रस्सी।
नेती-धौती-संज्ञा स्त्री० योग की एक क्रिया।
नेत्र-संज्ञा पुं० चक्षुरिन्द्रिय, चक्षु, आँख, नयन, मथानी की रस्सी।
नेत्रजल-संज्ञा पुं० अश्रु, आँसू।
नेत्रस्राव-संज्ञा पुं० आँखों से आँसू बहना।
नेम-संज्ञा पुं० नियम। रीति।
नेमि-संज्ञा स्त्री० (सं०) पहिए का घेरा। संज्ञा पुं० वज्र।

नेवज-संज्ञा पुं० देवता पर चढ़ाई हुयी खाने-पीने की चीज।
नेवता-संज्ञा पुं० खाने के लिए बुलाना, न्योता।
नेवाज-वि० कृपा करनेवाला, निवाज।
नेस्ती-संज्ञा स्त्री० (फा०) न होना। नाश।
नेह-संज्ञा पुं० प्रेम। चिकना।
नेही-वि० (ग्रा०) प्रेम करनेवाला, स्नेह करनेवाला।
नैतिक-वि० (सं०) नीति या आचार-संबन्धी।
नैपुण्य-संज्ञा पुं० चतुराई। निपुणता। कमाल। होशियारी।
नैमित्तिक-वि० (सं०) जो किसी खास अवसर के लिए हो।
नैराश्य-संज्ञा पुं० आशाशून्यता। नाउम्मेदी।
नैवेद्य-संज्ञा पुं० भोग, देवता पर चढ़ायी जानेवाली सामग्री।
नैष्ठिक-वि० (सं०) निष्ठावाला।
नैसर्गिक-वि० (सं०) स्वाभाविक, प्राकृतिक।
नैहर-संज्ञा पुं० स्त्री के पिता का घर।
नोक-संज्ञा स्त्री० (फा०) आगे को ओर निकला हुआ बारीक सिरा।
नोक-झोंक-संज्ञा स्त्री० ठाट-बाट, लगनेवाली बात, व्यंग्य, ताना, परस्पर की छेड़-छाड़।
नोच-खसोट-संज्ञा स्त्री० छीना-झपटी।
नोचना-क्रि० स० नाखून से किसी चीज का कुछ भाग निकाल लेना। पीछे पड़ जाना।
नोट-संज्ञा पुं० (अं०) लिखा हुआ परचा। वह सरकारी कागज जो सिक्के की जगह इस्तेमाल किया जाता है।
नौकरीपेशा-संज्ञा पुं० (फा०) नौकरी करके जीविका चलानेवाला।
नौका-संज्ञा स्त्री० तरणि, नाव।
नौजवान-वि० (फा०) नवयुवक।
नौबत-संज्ञा स्त्री० (फा०) बारी, हालत, दशा, मांगलिक बाजा।
नौरोज-संज्ञा पुं० (फा०) पारसियों का नये वर्ष का पहला दिन।
नौशा-संज्ञा पुं० (फा०) दूल्हा।
नौसिखिया, नौसिखुआ-वि० नया सीखा हुआ, अनिपुण।
नौसेना-संज्ञा स्त्री० (स०) जलसेना।
न्यग्रोध-संज्ञा पुं० वट वृक्ष, बरगद।
न्यस्त-वि० (सं०) रखा हुआ।
न्याय-संज्ञा पु० उचित बात, नीति, नियमों के अनुसार गलत-सही का निर्णय, एक दर्शन।
न्यायकर्त्ता-संज्ञा पुं० (सं०) न्याय या फैसला करनेवाला।
न्यायतः-क्रि० वि० (सं०) न्याय से, ठीक तरह से।
न्यायपरता-संज्ञा स्त्री० उपयुक्तता न्यायी होना, न्यायशीलता।
न्यायाधीश-संज्ञा पुं० न्यायकर्ता।

न्यायालय-संज्ञा पुं० (सं०) जहाँ अभियोगों का न्याय किया जाय।
न्यायी-संज्ञा पुं० न्यायपर न्यायशील।
न्याय्य-वि० (सं०) उचित, न्याययुक्त।
न्यारा-वि० जो पास न हो, दूर। जैसा दूसरा न हो, अनोखा।
न्यास-संज्ञा पुं० (सं०) रखना। स्थापित करना। छोड़ देना।
न्यून-वि० (सं०) बहुत थोड़ा। नीचा।
न्यूनता-संज्ञा स्त्री० अल्पता, कमी।
न्योता-संज्ञा पुं० आनन्द के अवसर या उत्सव पर बुलाना, निमंत्रण। दावत।

प

पँचमेल-वि० पाँच प्रकार की चीजों का मिश्रण।
पंचरंग, पंचरंगा-वि० पाँच या अनेक रंगों का।
पँडुवा-संज्ञा पुं० भैंस का बच्चा।
पँवाड़ा-संज्ञा पुं० बहुत लम्बी उबानेवाली बात। एक प्रकार का गीत।
पंक-संज्ञा पुं० लेप, कीचड़।
पंकज, पंकजात-संज्ञा पुं० पंकज। कीचड़ से पैदा, कमल।
पंक्ति-संज्ञा स्त्री० श्रेणी, लाइन, कतार।
पंक्तिबद्ध-वि० (सं०) लाइन में रखा हुआ।
पंख-संज्ञा पुं० पर, डैना।
पंखड़ी-संज्ञा स्त्री० पुष्पदल।
पंगत, पंगति-संज्ञा स्त्री० भोजन करते समय खानेवालों की लाइन।
पंगु-वि० (सं०) लंगड़ा। लूला।
पंगुल-वि० लँगड़ा। पंगु।
पंच-वि० पाँच। गाँवों में न्याय करने को बिठलाए हुए पाँच या अधिक व्यक्ति।
पंचकोश-संज्ञा पुं० (सं०) आत्मा को ढँकनेवाले पाँच आवरण।
पंचकोस-संज्ञा पुं० काशी की पवित्र भूमि।
पंचतत्त्व-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश तत्त्व।
पंचत्व-संज्ञा पुं० (सं०) शरीर का पाँच तत्त्वों में मिल जाना। मृत्यु।
पंचदेव-संज्ञा पुं० (सं०) पाँच प्रधान देवता, आदित्य, गणेश, विष्णु, देवी, रुद्र।
पंचनद-संज्ञा पुं० (सं०) पंजाब की पाँच प्रधान नदियाँ, सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम।
पंचमहापातक-संज्ञा पुं० (सं०) मनु-स्मृति के अनुसार पाँच पाप।
पंचमहायज्ञ-संज्ञा पुं० (सं०) पाँच नित्य के कार्य या कर्तव्य, संध्या, हवन, अतिथि-सत्कार आदि।
पंचरत्न-संज्ञा पुं० (सं०) पाँच

प्रकार के रत्न, सोना, हीरा, नीलम, लाल, मोती।
पंचबाण-संज्ञा पुं० (सं०) कामदेव के पाँच बाण। कामदेव।
पंचांग-संज्ञा पुं० (सं०) ज्योतिष का तिथि-पत्र, पत्रा।
पंचामृत-संज्ञा पुं० (सं०) पांच चीजें दूध, दही, घी, चीनी, मधु मिलाकर भगवान् को स्नान कराने को बनाया हुआ पदार्थ।
पंचायत-संज्ञा स्त्री० किसी विवाद के निबटारे के लिए पांच या कुछ लोगों का इकट्ठा होना।
पंचायती-वि० पंचायत का किया हुआ, साझे का, सर्वसाधारण का।
पंचालिका-संज्ञा स्त्री० पुतली, गुड़िया।
पंछी-संज्ञा पुं० पक्षी. चिड़िया।
पंजर-संज्ञा पुं० (सं०) शरीर की हड्डियों का ढांचा। शरीर।
पंजारा-संज्ञा पुं० रुई धुनने का काम करनेवाला, धुनिया।
पंजिका-संज्ञा स्त्री० पंचांग, पत्रिका।
पंडा-संज्ञा पुं० तीर्थ या मंदिर का पुजारी।
पंडाल-संज्ञा पुं० उत्सव या अधिवेशन के लिए छाया गया मंडप।
पंडित-वि० (सं०) विद्वान्। कुशल। संज्ञा पुं० ब्राह्मण।
पंडिताई-संज्ञा स्त्री० विद्वत्ता, कुशलता।
पंडिताऊ-वि० पंडित-जैसा।
पंडितानी-संज्ञा स्त्री० पंडित की स्त्री।
पंथ-संज्ञा पुं० रास्ता। मत।
पंथी-संज्ञा पुं० रास्ते पर चलनेवाला। किसी मत को माननेवाला।
पंसेरी-संज्ञा स्त्री० पाँच सेर की तोल।
पकड़-संज्ञा स्त्री० ग्रहण। पकड़ना। दोष ढूँढ़ निकालना।
पकवान-संज्ञा पुं० घी, तेल आदि में पकाया हुआ खाद्य पदार्थ।
पक्व-वि० (सं०) पका हुआ। दृढ़।
पक्वता-संज्ञा स्त्री० पक्वावस्था, पका होना, पक्कापन।
पक्वान्न-संज्ञा पुं० (सं०) घी, तेल आदि में पकाया हुआ भोजन।
पक्वाशय-संज्ञा पुं० (सं०) पेट के भीतर का वह स्थान जहाँ भोजन पचता है।
पक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) तरफ, ओर। अनुकूल मत। लगाव। पंख। एक माह के पंद्रह-पंद्रह दिनों के दो पक्ष, पाख।
पक्षपात-संज्ञा पुं० (सं०) दो विरोधियों में किसी एक के पक्ष में अनुकूल प्रवृत्ति।
पक्षपाती-संज्ञा पुं० (सं०) अपने पक्ष के व्यक्ति को बढ़ावा देनेवाला।
पक्षी-संज्ञा पुं० खग, चिड़िया।
पखंडी-संज्ञा पुं० दिखावा करनेवाला, पाखंडी।

पख-संज्ञा स्त्री० व्यर्थ बढ़ायी हुई बात, अड़ंगा, झंझट, हानि।
पखवारा-संज्ञा पुं० पंद्रह दिन का समय।
पखाना-संज्ञा पुं० कथा, कहावत। पाखाना।
पखारना-क्रि० स० पानी से धोकर साफ करना।
पखेरू-संज्ञा पुं० पक्षी, चिड़िया।
पग-संज्ञा पुं० पैर, चलने में एक पैर से दूसरे पैर का अन्तर, डग।
पगडंडी-संज्ञा स्त्री० चलते-चलते बना हुआ पतला रास्ता।
पगड़ी-संज्ञा स्त्री० सिर पर लपेट-कर बाँधा जानेवाला लम्बा कपड़ा। साफा। मकान या दूकान किराये पर पाने को दी गयी रकम।
पगदासी-संज्ञा स्त्री० जूता। खड़ाऊँ।
पगला-वि० पुं० पागल।
पगुराना-क्रि० अ० चौपायों का निगला हुआ भोजन फिर निकाल-कर जुगाली करना, पचा जाना।
पचगुना-वि० पाँच गुना।
पचड़ा-संज्ञा पुं० बखेड़ा, झंझट।
पचरंगा-वि० पाँच रंगों से रँगा हुआ।
पचासा-संज्ञा पुं० एक ही तरह की पचास चीजों का समूह।
पचीसी-संज्ञा स्त्री० बिसात तथा सात कौड़ियों से खेला जानेवाला एक खेल। आयु के पहले पच्चीस वर्ष।
पच्चड़, पच्चर-संज्ञा पुं० काठ का जोड़। पैबंद। रुकावट।
पछताना-क्रि० अ० किसी किए हुए काम पर पीछे से दुखी होना।
पछतावा-संज्ञा पुं० किए हुए काम पर पीछे से दुखी होना, पश्चात्ताप।
पछाड़-संज्ञा स्त्री० अचेत या मूर्च्छित होना।
पछाड़ना-क्रि० स० कुश्ती आदि में हराना।
पछुवा-वि० पश्चिम की हवा।
पजारना-क्रि० स० जलाना।
पटंबर-संज्ञा पुं० रेशमी कपड़ा।
पट-संज्ञा पुं० वस्त्र, आड़, परदा। संज्ञा पुं० दरवाजों के किवाड़।
पटकनिया, पटकनी-संज्ञा स्त्री० पटक देना। भूमि पर गिरना।
पटका-संज्ञा पुं० कमर बाँधने का कपड़ा, कमरबंद।
पटतर-संज्ञा पुं० समानता। वि० चौरस, समतल।
पटतरना-क्रि० अ० उपमा देना।
पटपर-वि० समतल, बराबर। संज्ञा पुं० उजाड़ स्थान।
पटमंडप-संज्ञा पुं० तंबू, कपड़े का बना खेमा।
पटरानी-संज्ञा स्त्री० राजा के साथ सिंहासन पर बैठनेवाली रानी।
पटरी-संज्ञा स्त्री० लकड़ी की लम्बी और समतल तख्ती। सड़क या नगर के किनारे।
पटल-संज्ञा पुं० परिच्छेद। समूह। ओढ़ना। आवरण। तह। आँख का पर्दा। तख्ता। ढेर।
पटवारी-संज्ञा पुं० गाँव की जमीन और मालगुजारी का हिसाब

रखनेवाला सरकारी नौकर।
पटाका-संज्ञा पुं० पट का शब्द। एक पटाक से छूटनेवाली आतश-बाजी। थप्पड़। तमाचा।
पटु-वि० (सं०) चतुर, रोगरहित, स्वस्थ।
पटुआ-संज्ञा पुं० पटसन, करेमू, सूत में गहने गूँथनेवाला।
पटुता-संज्ञा स्त्री० प्रवीणता।
पटुवा-संज्ञा पुं० पटसन या जूट।
पटेबाज-संज्ञा पुं० तलवार की काट का खेल (पटा) खेलनेवाला। घूर्त्त।
पटेल-संज्ञा पुं० गाँव का मुखिया।
पट्ट-संज्ञा पुं० पीढ़ा, पाटा, सम-तल, दुपट्टा, ढाल, राजसिंहासन।
पट्टमहिषी-संज्ञा स्त्री० राजा की प्रधान रानी।
पट्टा-संज्ञा पुं० अधिकार लिखकर दिया जानेवाला कागज। भूमि का दिया हुआ अधिकार। कुत्तों बिल्ली आदि के गले में बाँधने की पट्टी।
पट्टिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) छोटी पटिया, चित्र-पट, छोटी पटरी।
पट्टी-संज्ञा स्त्री० लकड़ी की तख्ती। बहकावा। कागज या कपड़े का लम्बा टुकड़ा। एक मिठाई।
पट्टीदार-संज्ञा पुं० किसी सम्पत्ति में हिस्सा रखनेवाला व्यक्ति।
पट्टीदारी-संज्ञा स्त्री० किसी सम्पत्ति में हिस्सा होना।
पट्ठा-संज्ञा पुं० तरुण, नवयुवक, बलवान्, एक प्रकार का गोटा।
पठन-संज्ञा पुं० अध्ययन, पढ़ना।
पठनीय-वि० (सं०) पढ़ने लायक।
पठान-संज्ञा पुं० एक जाति।
पठित-वि० (सं०) पढ़ा हुआ।
पठिया-संज्ञा स्त्री० जवान स्त्री।
पड़ता-संज्ञा पुं० खरीदी वस्तु का दाम, सामान्य दर, लागत।
पड़ताल-संज्ञा स्त्री० खोज, छान-बीन।
पड़तालना-क्रि० स० जाँच करना।
पड़ती-संज्ञा स्त्री० बिना खेती की गयी भूमि।
पड़पोता-संज्ञा पुं० पुत्र के पुत्र का पुत्र, प्रपौत्र, पोते का पुत्र।
पड़ोस-संज्ञा पुं० घर के आसपास के घर या स्थान।
पड़ोसी-संज्ञा पुं० घर के आसपास रहनेवाले।
पढ़ना-क्रि० स० किसी लिखी बात को मुँह से कहना, बाँचना। अध्ययन करना।
पढ़ाई-संज्ञा स्त्री० विद्याभ्यास, अध्ययन। पढ़ाने का काम, अध्यापन।
पण-संज्ञा पुं० द्यूत, जुआ, दाम, धन, शर्त।
पण्य-वि० (सं०) प्रशंसा करने लायक। खरीदने लायक। संज्ञा पुं० व्यापार, माल।
पण्यभूमि-संज्ञा स्त्री० गोदाम।
पण्यशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुकान।
पतंग-संज्ञा पुं० एक प्रकार का वृक्ष पतंगा। सूर्य। संज्ञा पुं० कागज का

बना उड़ाया जानेवाला खिलौना।
पतंगा-संज्ञा पुं० एक छोटा बरसाती उड़नेवाला कीड़ा।
पतंचिका-संज्ञा स्त्री० चिल्ला।
पतंजलि-संज्ञा पुं० (सं०) एक विद्वान् महाभाष्य के प्रणेता।
पत-संज्ञा स्त्री० इज्जत, आबरू।
पतझड़-संज्ञा स्त्री० वह ऋतु जिसमें वृक्षों के पत्ते गिर जाते हैं।
पतझार-संज्ञा स्त्री० अवनतिकाल, नाश का समय।
पतन-संज्ञा पुं० (सं०) नीचे गिरना। नाश। चरित्रहीन होना।
पतवार, पतवारी-संज्ञा स्त्री० नाव को चलाने का बल्ला।
पता-संज्ञा पुं० ठिकाना, निश्चित जगह। खबर। भेद।
पताका-संज्ञा स्त्री० ध्वजा, झंडी।
पताकिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) सेना।
पतिंवरा-वि० स्त्री० (सं०) अपने-आप अपना पति चुननेवाली स्त्री। स्वयंवरा।
पति-संज्ञा पुं० अधिपति, मालिक, स्वामी। दूल्हा, शौहर। ईश्वर।
पतिआना-क्रि० स० मान लेना या विश्वास करना।
पतित-वि० (सं०) गया हुआ। आचार या चरित्र से गिरा हुआ। अपावन, अधम, अति नीच।
पतित-पावन-वि० (सं०) पतित या नीच का उद्धार कर देनेवाला। संज्ञा पुं० ईश्वर।
पतियाना-क्रि० स० सच मानना। विश्वास कर लेना।
पतिलोक-संज्ञा पुं० (सं०) पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला पति के ही रहने का स्वर्ग।
पतिवती-वि० स्त्री० सौभाग्यशालिनी।
पतिव्रत-संज्ञा पुं० (सं०) अपने पति के प्रति पूर्ण भक्ति रखना।
पतिव्रता-वि० (सं०) पति के प्रति अनन्य भक्ति रखनेवाली स्त्री, सती, साध्वी।
पतुरिया-संज्ञा स्त्री० वेश्या।
पत्तल-संज्ञा स्त्री० पत्तों को जोड़कर खाने के लिए बनाया गया चौड़ा पात्र।
पत्ती-संज्ञा स्त्री० छोटा पत्ता।
पत्तीदार-संज्ञा पुं० साझीदार।
पत्थर-संज्ञा पुं० पृथ्वीतल का कड़ा टुकड़ा।
पत्नी-संज्ञा स्त्री० (सं०) विवाहिता स्त्री, वधू।
पत्नीव्रत-संज्ञा पुं० (सं०) केवल अपनी ही पत्नी से सम्बन्ध रखनेवाला।
पत्र-संज्ञा पुं० (सं०) वृक्ष का पत्ता, चिट्ठी, धातु का पत्तर, पत्री, अखबार।
पत्रकार-संज्ञा पुं० समाचारपत्र का सम्पादक।
पत्र-पुष्प-संज्ञा पुं० (सं०) पूजा की सामग्री। छोटा उपहार।
पत्रवाहक-संज्ञा पुं० डाकिया।

पत्र-व्यवहार-संज्ञा पुं० (सं०) चिट्ठियों का आना-जाना।
पत्रा-संज्ञा पुं० जन्त्री, पंचांग, पृष्ठ।
पत्रिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) सब तरह के लेख, कविता आदि से युक्त मासिक, समाचार-पत्र।
पत्री-संज्ञा स्त्री० चिट्ठी, खत।
पथ-संज्ञा पुं० मार्ग, रास्ता।
पथदर्शक, पथप्रदर्शक-संज्ञा पुं० (सं०) रास्ता दिखलाने या बतलानेवाला।
पथराना-क्रि० अ० पत्थर की तरह निर्जीव या कठोर हो जाना।
पथरी-संज्ञा स्त्री० पत्थर का कटोरे आदि की तरह का पात्र।
पथरीला-वि० (सं०) पत्थरों से भरा हुआ।
पथिक-संज्ञा पुं० (सं०) मार्ग पर चलनेवाला, राहगीर।
पथी-संज्ञा पुं० पथिक।
पथ्य-संज्ञा पुं० (सं०) रोगी को दिया जानेवाला हलका भोजन।
पद-संज्ञा पुं० (सं०) योग्यता के अनुसार दर्जा। पैर। कविता का एक छंद। भजन।
पदचर-संज्ञा पुं० पैदल, प्यादा।
पदच्युत-वि० (सं०) अपने पद या अधिकार से दूर या वञ्चित।
पदतल-संज्ञा पुं० (सं०) पैर का तलवा।
पदत्राण-संज्ञा पुं० (सं०) जूता।
पददलित-वि० (सं०) पैरों से रौंदा हुआ। हीन, दलित।
पदन्यास-संज्ञा पुं० गोखरू, गमन करना, चलना। पद रचना या लिखना।
पदम-संज्ञा पुं० कमल, पद्म।
पदवी-संज्ञा स्त्री० पद्धति, राज्य आदि की ओर से दिया गया दर्जा, या सम्मान, ओहदा।
पदाधिकारी-संज्ञा पुं० (सं०) पद या ओहदेवाला, ओहदेदार।
पदाना-क्रि० स० बहुत परेशान करना, बहुत दिक करना, छकाना।
पदार्थ-संज्ञा पुं० सत्त्व, वस्तु। तत्त्व।
पदार्थवाद-संज्ञा पुं० (सं०) दर्शन का वह सिद्धान्त जिसके अनुसार पदार्थ ही सब कुछ है, ईश्वर आदि नहीं।
पदार्थविज्ञान-संज्ञा पुं० (सं०) भौतिक पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करनेवाली विद्या।
पदार्थ विद्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) पदार्थों के गुणावगण बतलानेवाली विद्या।
पदावली-संज्ञा स्त्री० (सं०) वाक्यों की श्रेणी। भजन-पुस्तक।
पद्धति-संज्ञा स्त्री० (सं०) राह। तरीका। रिवाज। विधि।
पद्म-संज्ञा पुं० (सं०) कमल का फूल। विष्णु का अस्त्र।
पद्मयोनि-संज्ञा पुं० (सं०) ब्रह्मा।
पद्मबीज-संज्ञा पुं० कमल का बीज, कमलगट्टा।
पद्मा-संज्ञा स्त्री० मनसादेवी, लक्ष्मी।

पद्माकर-संज्ञा पुं० बड़ा तालाब जहाँ कमल हों, बड़ा तालाब या झील।
पद्मासन-संज्ञा पुं० (सं०) योग में बैठने की एक विधि। शिव।
पद्मिनी-संज्ञा स्त्री० छोटा पद्म, कमलिनी।
पद्य-संज्ञा पुं० (सं०) मात्रा या वर्ण के नियमों के अनुसार लिखे हुए पद, कविता।
पद्यात्मक-वि० जो पद्यमय या छंद में लिखा हुआ हो।
पधारना-क्रि० अ० आ जाना। क्रि० स० आदरपूर्वक बिठलाना।
पन-संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा।
पनघट-संज्ञा पुं० वह घाट जहां लोग पानी भरते हैं।
पनचक्की-संज्ञा स्त्री० पानी के जोर से चलनेवाली चक्की या कल।
पनडुब्बी-संज्ञा स्त्री० पानी के अन्दर ही अन्दर चलनेवाली नाव।
पनपना-क्रि० अ० पाना पाकर फिर ताजा हो जाना। तंदुरुस्त होना।
पनवाड़ी-संज्ञा पुं० पान बेचने· वाला।
पनसारी-संज्ञा पुं० मसाले आदि बेचनेवाला, पंसारी।
पनसाल-संज्ञा स्त्री० जहां सभी को पानी पिलाया जाता हो।
पनाह-संज्ञा स्त्री० (फा०) संकट आदि से बचाव या रक्षा पाना।
पन्नगारि-संज्ञा पुं० (सं०) सांपों का शत्रु गरुड़।
पन्ना-संज्ञा पुं० एक रत्न, मरकत। संज्ञा पुं० वरक, पृष्ठ।
पन्नी-संज्ञा स्त्री० रांगे या पीतल के पतले चमकदार पत्तर।
पपड़ी-संज्ञा स्त्री० घाव पर खून सूख जाने से पड़ा परत। ऊपर का भाग। एक मिठाई।
पपीहा-संज्ञा पुं० (देश०) बसंत तथा वर्षा में बहुत सुन्दर बोलनेवाला एक पक्षी।
पपोटा-संज्ञा पुं० आंख के ऊपर का परदा, पलक।
पय-संज्ञा पुं० पानी। दूध। शक्ति
पयस्विनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) दूध देनेवाली गाय, बकरी।
पयोधर-संज्ञा पुं० स्त्री का स्तन। बादल। तालाब। पर्वत।
पयोनिधि-संज्ञा पुं० (सं०) समुद्र।
परंच-अव्य० (सं०) और भी। तो भी, परन्तु।
परंतप-वि० (सं०) अपनी इन्द्रियों को जीतनेवाला, जितेंद्रिय।
परंपरा-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक के पीछे एक का आना। बहुत पुराने समय से चला आना।
परंपरागत-वि० (सं०) परंपरा या बहुत पहले से लगातार होता चला आया हुआ।
परकटा-वि० (ग्रा०) जिसके पर कटे हों।
परकार-संज्ञा पुं० (फा०) वृत्त खींचने का एक औजार।
परकाला-संज्ञा पुं० सीढ़ी। चौखट। नापने का [illegible]

परकीया-संज्ञा स्त्री० (सं०) पति को छोड़ दूसरे पुरुष से सम्बन्ध रखनेवाली।
परख-संज्ञा स्त्री० गुण-दोष मालूम करना, जाँच। पहचान।
परखना-क्रि० स० प्रतीक्षा करना, भले-बुरे का पता लगाना, जाँच करना।
परचना-क्रि० अ० घनिष्ठता होना, हिलना-मिलना, चसका लगना।
परचाना-क्रि० स० हिलाना-मिलाना। संकोच हटाना।
परचून-संज्ञा पुं० मसाला, आटा, दाल आदि बेचनेवाला, पंसारी।
परजा-संज्ञा स्त्री० प्रजा, जनता। काम-धंधा करनेवाला।
परतंत्र-वि० (सं०) किसी के अधीन काम करनेवाला, परवश।
परतंत्रता-संज्ञा स्त्री० परवशता।
परदा-संज्ञा पुं० (स०) आड़ रखन को फैलाया हुआ कपड़ा या चिक। तह। स्त्रियों को सबके सामने न आने देने की प्रथा।
परदादा-संज्ञा पुं० दादा का पिता, प्रपितामह।
परदानशीन-वि० परदे में रहने-वाली स्त्री।
परदेश-संज्ञा पुं० (सं०) दूसरा देश, विदेश।
परदेशी-वि० (सं०) विदेशी।
परधाम-संज्ञा पुं० वैकुण्ठ, स्वर्ग।
परनाम-संज्ञा पुं० नमस्ते, प्रणाम।
परनाला-संज्ञा पुं० नाली। पनाला।
परपट-संज्ञा पुं० समतल मैदान।
परपीड़क-संज्ञा पुं० कष्ट देनेवाला, को पीड़ा या कष्ट पहुँचानेवाला।
परपोता-संज्ञा पुं० पोते का पुत्र।
परबसताई-संज्ञा स्त्री० दूसरे के अधीन काम करना, परवशता।
परम-वि० (सं०) सबसे बढ़ा-चढ़ा। प्रधान।
परमगति-संज्ञा स्त्री० मुक्ति, सबसे अच्छी अवस्था, मोक्ष।
परमतत्त्व-संज्ञा पुं० (सं०) विश्व को उत्पन्न करनेवाला प्रधान तत्त्व।
परमधाम-संज्ञा पुं० वैकुण्ठ, स्वर्ग।
परमपद-संज्ञा पुं० मुक्ति, मोक्ष।
परमहंस-संज्ञा पुं० (सं०) सब कुछ जान चुका हुआ संन्यासी। ईश्वर।
परमाणु-संज्ञा पुं० सूक्ष्म अणु, सबसे छोटा टुकड़ा।
परमात्मा-संज्ञा पुं० ईश्वर।
परमानंद-संज्ञा पुं० (सं०) पूर्ण, ब्रह्म को पाने के समय का आनन्द।
परमायु-संज्ञा स्त्री० अधिक से अधिक जीवित रहने की अवस्था।
परमार्थ-संज्ञा पुं० मोक्ष। सबसे उत्तम वस्तु। यथार्थ सच्चा सुख।
परमार्थवादी-संज्ञा पुं० सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वज्ञ।
परमार्थी-वि० यथार्थ तत्त्व को जानने की चाहवाला। मोक्ष चाहने-वाला।
परमेश, परमेश्वर-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर, ब्रह्म। [illegible]

परमेश्वरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुर्गा।
परला-वि० दूसरी ओरका । दूसरी तरफ का ।
परलोक-संज्ञा पुं० (सं०) मृत्यु के उपरान्त जहाँ आत्मा जाती है, स्वर्ग ।
परवरदिगार-संज्ञा पुं० ईश्वर ।
परवश, परवश्य-वि० (सं०) दूसरे के अधीन, पराधीन ।
परवा-संज्ञा स्त्री० (फा०) चिन्ता, सोच । आशंका, डर ।
परवाना-संज्ञा पुं० (फा०) वह कागज जिस पर कोई आज्ञा दी गयी हो, लिखित आज्ञापत्र ।
परवाह-संज्ञा स्त्री० चिन्ता, भरोसा ।
परशु-संज्ञा पुं० कुठार, कुल्हाड़ी ।
परशुराम-संज्ञा पुं० (सं०) जमदग्नि ऋषि के पुत्र ।
परस-संज्ञा पुं० छूना ।
परस्पर-क्रि० वि० (सं०) आपस में।
परहेज-संज्ञा पुं० (फा०) हानि पहुँचानेवाली वस्तुओं से दूर रहना ।
परहेजगार-संज्ञा पुं० (फा०) परहेज करनेवाला, संयमी ।
पराकाष्ठा-संज्ञा स्त्री० (सं०) हद ।
पराक्रम-संज्ञा पुं० शक्ति । बल । उद्योग ।
पराग-केसर-संज्ञा पुं० (सं०) फूलों के बीच में के लम्बे महीन सूत, जिन पर पराग लगा होता है।
पराङ् मुख-वि० (सं०) मुँह फेरे हुए, विरुद्ध, निवृत्त, उदासीन ।

पराजय-संज्ञा स्त्री० (सं०) हार ।
पराजित-वि० (सं०) हारा हुआ, परास्त ।
परात्पर-वि० (सं०) सबसे श्रेष्ठ ।
पराधीन-वि० (सं०) दूसरों के अधीन, परतंत्र, परवश ।
पराधीनता-संज्ञा स्त्री० (सं०) दूसरे के अधीन रहना, परतंत्रता ।
पराभव-संज्ञा पुं० (सं०) हार। नाश।
पराभूत-वि० (सं०) हारा हुआ । बरबाद । तिरस्कृत ।
परामर्श-संज्ञा पुं० (सं०) सलाह । विचार ।
परार्थ-वि० (सं०) दूसरे का काम। वि० दूसरे के लिए ।
परावर्तन-संज्ञा पुं० (सं०) पलटना, पीछे फिरना, लौटना ।
परास्त-वि० (सं०) हारा हुआ, पराजित ।
पराह्न-वि० (सं०) दोपहर के बाद, अपराह्न, तीसरा पहर।
परिकर-संज्ञा पुं० पर्यंक, पलँग । समूह, विवेक, एक अलंकार ।
परिक्रमण-संज्ञा पुं० (सं०) इधर-उधर घूमना या चक्कर देना।
परिक्रमा-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के चारों ओर घूमना ।
परिगणन-संज्ञा पुं० (सं०) गिनना।
परिगणित-वि० (सं०) गिना हुआ।
परिग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) दान लेना। धन का संग्रह । विवाह ।
परिघ-संज्ञा पुं० (सं०) दरवाजे के पीछे लगायी जानेवाली लकड़ी,

अर्गला । तीर । बाधा ।
परिचय-संज्ञा पुं० (सं०) जानकारी । जान-पहचान ।
परिचर-संज्ञा पुं० अनुचर, सेवक, नौकर ।
परिचरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) सेविका, दासी ।
परिचायक-संज्ञा पुं० (सं०) जान-पहचान करानेवाला । बतलानेवाला । सूचित करनेवाला ।
परिचारक-संज्ञा पुं० सेवक ।
परिचारिका-संज्ञा स्त्री० दासी ।
परिचालक-संज्ञा पुं० (सं०) चलानेवाला । हिलानेवाला ।
परिचित-वि० (सं०) जाना हुआ । जान-पहचान का, अभिज्ञ ।
परिच्छेद-संज्ञा पुं० (सं०) ढँकने का कपड़ा, अध्याय, प्रकरण ।
परिच्छन्न-वि० (सं०) सीमा में बँधा, परिमित । विभक्त ।
परिच्छेद-संज्ञा पुं० (सं०) टुकड़े करना, विभाजन ।
परिणति-संज्ञा स्त्री० (सं०) बदलना । अंत, प्रौढ़ता, पुष्टि, पक्वता ।
परिणयन-संज्ञा पुं० (सं०) ब्याहना ।
परिणाम-संज्ञा पुं० (सं०) बदलना, रूपांतर । नतीजा, फल ।
परिणामदर्शी-वि० परिणाम या नतीजे का विचार करके काम करनेवाला ।
परिणामी-वि० बराबर बदलता रहनेवाला ।
परिणीत-वि० (सं०) ब्याहा हुआ, विवाहित । समाप्त, पूरा हो चुका हुआ ।
परिताप-संज्ञा पुं० भय । गरमी । दुःख । पछतावा ।
परितुष्ट-वि० (सं०) खूब संतुष्ट ।
परितोष-संज्ञा पुं० तृप्ति, सन्तोष, खुशी ।
परित्यक्त-वि० (सं०) छोड़ा या त्यागा हुआ ।
परित्याग-संज्ञा पुं० अलग कर देना, छोड़ना ।
परित्याज्य-वि० (सं०) छोड़ने या त्यागने योग्य ।
परित्राण-संज्ञा पुं० आत्मरक्षा, रक्षा, बचाव ।
परिधि-संज्ञा स्त्री० (सं०) घेरा । गोला । गोल रेखा ।
परिपक्व-वि० (सं०) अच्छी तरह पका हुआ, प्रौढ़ । कुशल, होशियार ।
परिपाक-संज्ञा पुं० पकना या पकाया जाना । प्रौढ़ता, बहुदर्शिता ।
परिपालन-संज्ञा पुं० (सं०) बचाना, रक्षा, बचाव, पालन-पोषण ।
परिपुष्ट-वि० (सं०) अच्छी तरह जिसका पालन-पोषण हुआ हो ।
परिपूर्ण-वि० खूब भरा हुआ, तृप्त । समाप्त किया हुआ ।
परिपोषण-संज्ञा पुं० पालन-पोषण । पुष्ट करना, पोषण ।
परिभव, परीभाव-संज्ञा पुं० (सं०) अनादर, बेइज्जती ।

परिभाषा-संज्ञा स्त्री०स्पष्ट या बात को साफ-साफ कहना । पूर्ण विशेषता व्यक्त करते हुए किसी बात का अर्थ करना, लक्षण ।
परिभू-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर ।
परिभूत-वि० (सं०) अवमानित, पराजित ,हराया हुआ।
परिभ्रमण-संज्ञा पुं० (सं०) इधर-उधर घूमना । चारों ओर घूमना ।
परिमाण-संज्ञा पुं० माप, नाप या तोल द्वारा मान जानना, तादाद ।
परिमार्जन-संज्ञा पुं० मार्जन, धोना या माँजना । ठीक करना ।
परिमार्जित-वि० (सं०) धोया या माँजा हुआ । ठीक किया हुआ ।
परिमित-वि० (सं०)जिसकी सीमा, भार, नाप आदि मालूम हो ।
परिमेय-वि० (सं०) नापा या तोला जा सकनेवाला संकुचित, थोड़ा ।
परिरभ, परिरंभण-संज्ञा पुं० (सं०) गले से मिलना, आलिंगन ।
परिलेख-संज्ञा पुं० चित्र, उल्लेख, तसवीर, वर्णन ।
परिवर्तन-संज्ञा पुं० (स०) फेरा । उलट-फेर । विनिमय ।
परिवर्तित-वि० (सं०) बदला हुआ, रूपान्तरित ।
परिवाद-संज्ञा पुं० अपवाद, निन्दा, बुराई ।
परिवार-संज्ञा पुं० (सं०) माता-पिता और बच्चों का समूह, खानदान ।
परिवृत्त-संज्ञा स्त्री० (स०) घुमाव। फिर से लौटना, गरदिश । समाप्ति ।
परिवेश-संज्ञा पुं० परिधि, घेरा ।
परिवेष्टन-संज्ञा पुं० (सं०) चारों ओर से घेरना । ढँकना, आवरण ।
परिव्रज्या-संज्ञा स्त्री० (सं०)तपस्या।
परिव्राट्-संज्ञा पुं० यति, श्रमण ।
परिशिष्ट-वि० (सं०) छूटा हुआ । संज्ञा पुं० (सं०) किसी पुस्तक का वह भाग जिसमें रह गयी हुई महत्त्वपूर्ण बातें लिखी गई हों ।
परिशीलन-संज्ञा पुं० (सं०) खूब मनन करके पढ़ना । छूना ।
परिशेष-वि० (सं०) बचा हुआ ।
परिशोध-संज्ञा पुं० पूर्ण शुद्धि, पूरी सफाई ।
परिशोधन-संज्ञा पुं० (सं०) पूरी तरह शुद्ध कर देना ।
परिश्रम-संज्ञा पुं० श्रम, मेहनत ।
परिश्रमी-वि० बहुत मेहनत करने-वाला ।
परिश्रांत-वि० (सं०) थका हुआ ।
परिषत्, परिषद्-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह सभा जो राजाओं को शासन में सहायता देती है । सभा ।
परिष्कृत-वि० (सं०) शुद्ध किया हुआ । सजाया हुआ ।
परिस्फुट-वि० (सं०) बिलकुल खुला हुआ, व्यक्त, प्रकाशित, विकसित ।
परिहार-संज्ञा पुं० (सं०) दोष या विपत्ति दूर करने का उपाय । कर की छूट ।
परी-संज्ञा स्त्री० (फा०) बहुत सुन्दर और परोंवाली कल्पित

स्त्री. अप्सरा, सुंदरी स्त्री।
परीक्षक-संज्ञा पुं० (सं०) इम्तहान या परीक्षा लेनेवाला।
परीक्षा-संज्ञा स्त्री० (सं०) गुण-दोष ढूँढना। इम्तहान। जाँच।
परुष-वि० (सं०) कठोर, कड़ा। निर्दय, जिसको दया न हो।
परुषता-संज्ञा स्त्री० (सं०) कठोरता, कड़ाई। निर्दयता। निष्ठुरता।
परे-अव्य० उस ओर, उधर। अतीत, बाहर, ऊपर, पीछे, बाद।
परेवा-संज्ञा पुं० एक पक्षी। पूर्णिमा।
परेशान-वि० (फा०) व्याकुल, उतावला।
परेशानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) व्याकुलता, उतावलापन।
परोक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) सामने न होना, अभाव। वि० (सं०) गुप्त, छिपा हुआ।
परोपकार-संज्ञा पुं० (सं०) दूसरे का उपकार या भलाई करना।
परोपकारी-संज्ञा पुं० दूसरों का उपकार या भलाई करनेवाला।
परोसना-क्रि० स० भोजन थाली आदि में रखना, परसना।
पर्जन्य-संज्ञा पुं० मेघ, बादल।
पर्ण-संज्ञा पुं० पान, बड़ का पत्ता।
पर्त-संज्ञा स्त्री० सतह। एक के ऊपर एक फैलाया हुआ, परत।
पर्यंत-अव्य० (सं०) तक। लौं।
पर्यटन-संज्ञा पुं० (सं०) घूमना-फिरना, भ्रमण।
पर्यवसान-संज्ञा पुं० अन्त, समाप्ति, खातमा, शामिल हो जाना।
पर्याप्त-वि० (सं०) काफी। पूरा।
पर्याय-संज्ञा पुं० (सं०) किसी शब्द का-सा ही अर्थ देनेवाला दूसरा शब्द।
पर्व-संज्ञा पुं० उत्सव या धर्म-कार्य का दिन। दिन।
पर्वत-संज्ञा पुं० गिरि, पहाड़।
पर्वती-वि० पर्वत-संबंधी, पहाड़ी।
पर्वतीय-वि० (सं०) पहाड़ का, पहाड़ी।
पर्वाह-संज्ञा स्त्री० चिन्ता, परवाह।
पलंग-संज्ञा पुं० बड़ी चारपाई।
पलंगपोश-संज्ञा पुं० पलँग पर बिछाने की चादर।
पल-संज्ञा पुं० (सं०) क्षण, सबसे छोटा समय।
पलक-संज्ञा स्त्री० आँख के ऊपर का परदा। क्षण।
पलका-संज्ञा पुं० पलंग, चारपाई।
पलटन-संज्ञा स्त्री० सेना। दल।
पलटना-क्रि० अ० उलटना। मुकर जाना। मुड़ना।
पलटा-संज्ञा पुं० उलटा होना। बदलना, फेर।
पलटाना-क्रि० स० लौटाना, वापस करना। बदलना।
पलथी-संज्ञा स्त्री० एक साथ बैठने का आसन।
पलना-क्रि० अ० पाला-पोसा जाना, परवरिश पाना; पुं० पालना।
पलस्तर-संज्ञा पुं० दीवाल आदि पर सीमेंट चूने आदि का लेप।

पलांडु-संज्ञा पुं० (सं०) प्याज।
पलायमान-वि० (सं०) भागता हुआ।
पलाश-संज्ञा पुं० पत्र, पत्ता, ढाक, टेसू।
पलास-संज्ञा पुं० एक वृक्ष।
पलित-वि० (सं०) बुड्ढा। पके बालों का। संज्ञा पुं० बालों का पकना।
पली-संज्ञा स्त्री० तेल, घी आदि निकालने की लोहे की एक प्रकार की करछी।
पलेथन-संज्ञा पुं० रोटी बनाते समय लोई में लगाया जानेवाला सूखा आटा, परथन।
पलोटना-क्रि० स० पैर दबाना। क्रि० स० कष्ट से तड़फड़ाना।
पल्लवित-वि० (सं०) हरा-भरा।
पल्ला-संज्ञा पुं० वस्त्र का छोर, आँचल। तराजू की एक ओर का पलड़ा।
पल्लेदार-संज्ञा पुं० अनाज तोलने तथा ढोनेवाला आदमी।
पल्लेदारी-संज्ञा स्त्री० अन्न तौलने का काम।
पवन-संज्ञा पुं० वायु, हवा।
पवन-चक्र-संज्ञा पुं० चक्रवात, बवंडर, आँधी।
पवन-सुत-संज्ञा पुं० (सं०) हनुमान्।
पवि-संज्ञा पु० (सं०) वज्र। बिजली।
पवित्र-वि० शुद्ध, पावन।
पवित्रता-संज्ञा स्त्री० शुद्धि, साफ होना, स्वच्छता, पावनता।
पवित्रात्मा-वि० पवित्र आत्मावाला।
पवित्री-संज्ञा स्त्री० कुश का यज्ञादि के समय पहना जानेवाला छल्ला।
पशु-संज्ञा पुं० (सं०) चार पैरों से चलनेवाला पूँछयुक्त प्राणी। ज्ञान-हीन।
पशुता, पशुत्व-संज्ञा स्त्री० पुं० (सं०) पशु का भाव, जानवरपन। मूर्खता।
पशुधर्म-संज्ञा पुं० (सं०) पशुओं का-सा व्यवहार।
पशुपाल-संज्ञा पु० (सं०) पशुओं को पालनेवाला।
पशुराज-संज्ञा पुं० (सं०) पशुओं का राजा, शेर।
पश्चात्-अव्य० (सं०) पीछे से। फिर, अनन्तर।
पश्चात्ताप-संज्ञा पुं० (सं०) पछतावा।
पश्चिम-संज्ञा पुं० प्रतीची, सूर्य के अस्त होने की दिशा, पच्छिम।
पसंद-वि० (फा०) जो मन को अच्छा लगे। संज्ञा स्त्री० अच्छा लगने की वृत्ति, अभिरुचि।
पसरना-क्रि० अ० विस्तृत होना। बढ़ना। पैर फैलाकर लेटना।
पसली-संज्ञा स्त्री० मनुष्यों और पशुओं आदि की छाती पर का गोलाकार हड्डियों का पिंजर।
पसार-संज्ञा पुं० फैलाव, विस्तार।
पसारना-क्रि० स० आगे को बढ़ाना। फैलाना।
पसेरी-संज्ञा स्त्री० पाँच सेर का बाँट, पंसेरी।

पसोपेश-संज्ञा पुं० सोच-विचार, हिचक ।
पस्त-वि० (फा०) थका हुआ । हारा हुआ ।
पहचान-संज्ञा स्त्री० जानकारी । निशानी, लक्षण । परिचय ।
पहनावा-संज्ञा पुं० पहनने के वस्त्र, पोशाक । पहनने का ढंग ।
पहर-संज्ञा पुं० एक दिन का चौथा भाग । समय । युग ।
पहरा-संज्ञा पुं० किसी व्यक्ति को भागने न देने के लिए कुछ आदमियों को बिठला देना ।
पहरी-संज्ञा पुं० पहरा देनेवाला, चौकीदार, प्रहरी ।
पहरू-संज्ञा पुं० पहरा देनेवाला, पहरेदार, संतरी, चौकीदार ।
पहलवान-संज्ञा पुं० बलवाला तथा कुश्ती लड़नेवाला ।
पहलू-संज्ञा पुं० (फा०) बगल से कमर के बीच का भाग । बाजू, दिशा, ओर, तरफ, करवट, पक्ष ।
पहले-अव्य० आरंभ में, आदि में । बीते समय में । आगे ।
पहलौठा-वि० पहला उत्पन्न पुत्र ।
पहाड़-संज्ञा पुं० पर्वत ।
पहाड़ी-वि० पहाड़ पर रहनेवाला या पहाड़ की वस्तु, पर्वतीय । संज्ञा स्त्री० छोटा पहाड़ ।
पहुँच-संज्ञा स्त्री० किसी स्थान पर जाना, पैठ, प्रवेश, समाई,फैलाव, समझने की शक्ति ।
पहुनाई-संज्ञा स्त्री० मेहमान बनकर रहना । अतिथि-सत्कार ।
पहेली-संज्ञा स्त्री० घुमाव-फिराव की मुश्किल से जानी जा सकनेवाली बात, समस्या, बुझौवल ।
पाँड़े-संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक शाखा ।
पाँसा-संज्ञा पुं० चौरस खेलने के चार-पाँच अंगुल के चौपहल टुकड़े ।
पाँचजन्य-संज्ञा पुं० (सं०) श्रीकृष्ण का शंख ।
पांचभौतिक-संज्ञा पुं० (सं०) पाँच भूत या तत्त्व जिनसे शरीर बना है ।
पांडव-संज्ञा पुं० पाण्डु राजा के पाँच पुत्र, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव ।
पांडवनगर-संज्ञा पुं० (सं०) दिल्ली ।
पांडित्य-संज्ञा पुं० (सं०) पंडित या ज्ञानी होना, विद्वत्ता, पंडिताई ।
पांडु-संज्ञा पुं० पटोल, एक रोग ।
पांडुता-संज्ञा स्त्री० (सं०) पीलापन । पांडु रोग का रोगी होना ।
पांडुर-वि० (सं०) पीला । सफेद ।
पांडुलिपि-संज्ञा स्त्री० (स०) वह लेख जो संशोधन के लिए हो ।
पांथ-वि० (सं०) पांथक ।
पांथनिवास-संज्ञा पुं० (सं०) राह में ठहरने का स्थान, सराय ।
पाक-संज्ञा पुं० (सं०) पकाना । वि० (फा०) पवित्र, विशुद्ध, खालिश ।

पाकदामन-वि० (फा०) सती स्त्री।
पाकशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) भोजन पकाने की जगह, रसोई-घर।
पाखंड-संज्ञा पुं० ढकोसला, ढोंग। धोखा, नीचता।
पाख-संज्ञा पुं० पंद्रह दिन, पक्ष।
पाखाना-संज्ञा पुं० (फा०) वह स्थान जहाँ मल त्याग किया जाय। मल।
पाग-संज्ञा स्त्री० पगड़ी। संज्ञा पुं० शक्कर की बनायी चाशनी।
पागल-वि० जिसका दिमाग ठीक से कार्य न करता हो, सिड़ी। मूर्ख।
पागलखाना-संज्ञा पुं० जहाँ पागलों का इलाज किया जाता है।
पागलपन-संज्ञा पुं० दिमाग का खराब हो जाना, चित्तविभ्रम।
पाचक-वि० (सं०) पचनेवाला।
पाचन-संज्ञा पुं० (सं०) पचाना या हजम करना।
पाचन-शक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) भोजन हजम कर लेने की शक्ति।
पाचिका-संज्ञा स्त्री० रसोई बनाने वाली स्त्री, रसोईदारिन।
पाजी-वि० दुष्ट, शैतान।
पाजीपन-संज्ञा पुं० दुष्टता, नीचता।
पाजेब-संज्ञा स्त्री० (फा०) पैरों में पहनने का एक गहना, नूपुर।
पाट-संज्ञा पुं० रेशम। चौड़ाई, फैलाव। पीढ़ा। धोबी जिस पर कपड़े पटकता है।
पाटना-क्रि० स० किसी खाली जगह को भर देना। छत बनाना।
पाटल-संज्ञा पुं० गुलाबी रंग, पाडर का वृक्ष।
पाटलिपुत्र, पाटलीपुत्र-मगध का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर।
पाटव-संज्ञा पुं० पटुता, निपुणता, होशियारी, मजबूती।
पाटी-संज्ञा स्त्री० अनुक्रम, रीति, परंपरा, परिपाटी। संज्ञा पुं० लकड़ी की तख्ती।
पाठ-संज्ञा पुं० (सं०) पढ़ना। जो कुछ पढ़ा जाय, सबक।
पाठक-संज्ञा पुं० (सं०) पढ़नेवाला।
पाठन-संज्ञा पुं० अध्यापन, पढ़ाना।
पाठशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) जहाँ शिक्षा दी जाती है, विद्यालय।
पाठी-संज्ञा पुं० पढ़नेवाला।
पाठ्य-वि० (सं०) पढ़ने लायक। जो पढ़ाया जाय।
पाणि-संज्ञा पुं० हस्त, हाथ।
पाणिग्रहण-संज्ञा पुं० (सं०) विवाह की एक रस्म।
पाणिग्राहक-संज्ञा पुं० (सं०) पति।
पाणिपीड़न-संज्ञा पुं० (सं०) विवाह। क्रोध या पछतावे में हाथ मलना।
पात-संज्ञा पुं० (सं०) गिरना। पतन। नाश। मृत्यु। संज्ञा पुं० पत्ता।
पातक-संज्ञा पुं० पाप, बुरा काम, दुष्कृत।
पाताबा-संज्ञा पुं० (फा०) पैर का मोजा।

पाताल-संज्ञा पुं० पृथ्वीतल के नीचे सातवाँ लोक ।

पात्र-संज्ञा पुं० (सं०) बरतन। किसी नाटक में अभिनेता, नायक या नायिका, नट।

पात्रता, पात्रत्व-संज्ञा स्त्री०, पुं० (सं०) पात्र होना । योग्यता ।

पात्री-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी काम या अधिकार के लायक स्त्री।

पाथ-संज्ञा पुं० जल, पानी। आकाश।

पाद-संज्ञा पुं० चरण, पैर । नीचे का भाग, तल। संज्ञा पुं० गुदा मार्ग से निकलनेवाली वायु।

पादग्रहण-संज्ञा पुं० (सं०) पैर छूना, प्रणाम ।

पादप-संज्ञा पुं० पेड़, वृक्ष ।

पादरी-संज्ञा पुं० ईसाइयों के पुरोहित।

पादबंदन-संज्ञा पुं० (सं०) पैर पकड़कर प्रणाम करना ।

पादशाह-संज्ञा पुं० बादशाह ।

पादाक्रांत-वि० (सं०) पैरों से कुचला हुआ, बरबाद किया हुआ ।

पादाति, पादातिक-संज्ञा पुं० (सं०) पैदल सिपाही ।

पादुका संज्ञा स्त्री० (सं०) खड़ाऊँ, जूता ।

पान-संज्ञा पुं० (सं०) पीना । शराब पीना। संज्ञा पुं० एक लता जिसके पत्तों के बीड़े बनाकर लोग खाते हैं, तांबूल ।

पानगोष्ठिका– स्त्री० (सं०) शराब [illegible]

पानदान संज्ञा पुं० वह डिब्बा जिसमें पान खैर, चूना आदि रखा जाता है।

पानागार-संज्ञा पुं० (सं०) बहुत से लोगों का मिलकर शराब पीने का स्थान ।

पानिप-संज्ञा पुं० चमक । पानी।

पानी-संज्ञा पुं० पानीय, जल, चमक, फीका ।

पानीदार-वि० चमकदार। साहसी।

पानीदेवा-वि० पिण्डदान देनेवाला।

पानीय-संज्ञा पुं० (सं०) जल, पानी। वि० पीने योग्य ।

पाप-संज्ञा पुं० अधर्म, बुरा काम, दुष्कृत, अपराध ।

पापकर्म-संज्ञा पुं० (सं०) वह कार्य जिसके करने से पाप हो, बुरा काम, पातक ।

पापकर्मा-वि० पाप करनेवाला, पापी, पातकी ।

पापघ्न-वि० (सं०) पाप का नाश करनेवाला ।

पापदृष्टि-वि० (सं०) बुरी नजर।

पापनाशन-संज्ञा (सं०) पाप का नाश या पाप को दूर करनेवाला।

पापयोनि-संज्ञा स्त्री० (सं०) पाप करने के कारण मिलनेवाली नीच योनियाँ ।

पापरोग-संज्ञा पुं० घोर पाप करने के कारण उत्पन्न रोग ।

पापलोक-संज्ञा पुं० (सं०) नरक ।

पापाचार-संज्ञा पुं० पाप-कर्म, पाप-आचरण, दुराचार, बुरा काम ।

पापात्मा, पापी-वि० पाप या बुरे [illegible]

काम करनेवाला । निर्दय ।
पापोश-संज्ञा स्त्री० (फा०) जूता ।
पाबंद-वि० (फा०) बँधा हुआ, बद्ध ।
पामरी-संज्ञा स्त्री० उपरना, दुपट्टा, जूता ।
पामाल-वि० पैर से रौंदा हुआ, बरबाद ।
पायँता, पायँती-संज्ञा पुं० पलँग का पैर की ओर का भाग, पैताना ।
पायक-संज्ञा पुं० दूत, हरकारा, सेवक ।
पायताबा-संज्ञा पुं० (फा०) मोजा ।
पायदार-वि० (फा०) बहुत दिनों तक रहनेवाला, टिकाऊ ।
पायल-संज्ञा स्त्री० पैर का एक गहना, नूपुर ।
पायस-संज्ञा स्त्री० (सं०) खीर ।
पारंगत-वि० (सं०) पार पहुँचा हुआ । पूरा जानकार ।
पार-संज्ञा पुं० भाग, छोर, ओर, पारद, दूसरा किनारा, हद, अन्त ।
पारखी-संज्ञा पुं० पहिचान सकनेवाला, परीक्षक, परखनेवाला ।
पारद-संज्ञा पुं० (सं०) पारा ।
पारमार्थिक-वि० (सं०) परमार्थवाला । वास्तविक, सही ।
पारलौकिक-वि० (सं०) परलोक या स्वर्ग का ।
पारसी-वि० एक जाति ।
पारस्परिक-वि० (सं०) आपस का ।
पारा-संज्ञा पुं० सफेद और चमकीली एक तरल धातु ।
पारायण-संज्ञा पुं० सम्पूर्णता, पूरा करना, समाप्ति ।
पारावत-संज्ञा पुं० कबूतर ।
पारावार-संज्ञा पुं० (सं०) आर-पार, सीमा, हद, समुद्र ।
पारितोषिक-संज्ञा पुं० पुरस्कार ।
पारिपार्श्विक-संज्ञा पुं० सेवक ।
पारिभाषिक-वि० (सं०) किसी विशेष अर्थ में जिसका प्रयोग किया जाय ।
पारिषद-संज्ञा पुं० सभ्य, परिषद् में बैठनेवाला, सभासद ।
पारी-संज्ञा स्त्री० बारी ।
पारुष्य-संज्ञा पुं० रुखाई, बात की कठोरता । इन्द्र का वन ।
पार्थ-संज्ञा पुं० पृथिवीपति, अर्जुन ।
पार्थक्य-संज्ञा पुं० अंतर, अलग-अलग होना, जुदाई, वियोग ।
पार्श्व-संज्ञा पुं० (सं०) बगल । पास ।
पार्श्वनाथ-संज्ञा पुं० (सं०) जैनों के तेईसवें तीर्थंकर ।
पार्श्ववर्त्ती-संज्ञा पुं० पास-पास रहनेवाला ।
पार्श्वस्थ-वि० (सं०) पास खड़ा रहनेवाला ।
पार्षद-संज्ञा पुं० (सं०) पास रहनेवाला, नौकर । मंत्री, मुसाहब ।
पाल-संज्ञा पुं० (सं०) पालन करनेवाला, पालक ।
पालक-संज्ञा पुं० (सं०) पालन करनेवाला, पालन-कर्त्ता । संज्ञा पुं० एक साग ।
पालकी-संज्ञा स्त्री० एक सवारी

मनुष्यों द्वारा उठा कर ले जायी जानेवाली ढँकी सवारी ।
पालतू-वि० पाला-पोसा हुआ ।
पालन-संज्ञा पुं० (सं०) भोजन, वस्त्र आदि देकर जीवित रखना । कही बात को पूरा करना, निर्वाह ।
पाली-वि० पालन करनेवाला ।
पालू-वि० पाला हुआ, पालतू ।
पावड़ा-संज्ञा पुं० आदर के लिए किसी के मार्ग में बिछाया जानेवाला कपड़ा ।
पाव-संज्ञा पुं० चौथाई, चौथा भाग ।
पावक-संज्ञा पुं० अग्नि, सदाचार, सूर्य । वि० शुद्ध या पवित्र करनेवाला ।
पावदान-संज्ञा पुं० पैर रखने का स्थान ।
पावन-वि० (सं०) शुद्ध पवित्र ।
पाश-संज्ञा पुं० डोरी । फंदा । जाल । बंधन ।
पाशव-वि० (सं०) पशु के समान ।
पाशुपत-वि० (सं०) शिव का । संज्ञा पुं० शैव मत । अथर्ववेद का एक उपनिषद् ।
पाशुपतास्त्र-पुं० (सं०) शिव का अस्त्र जो बहुत प्रचण्ड था ।
पाश्चात्य-वि० (सं०) पश्चिम का । पिछला ।
पाषंड-संज्ञा पुं० पाखंड़ी, झूठा मत फैलानेवाला । दिखावा या ढोंग करनेवाला साधू ।
पाषाण-संज्ञा पुं० शिला, पत्थर ।
पासा-संज्ञा पुं० छ. पहलोंवाला टुकड़ा जिस पर बिन्दियाँ होती हैं और जिससे चौसर खेलते हैं ।
पासी-संज्ञा पुं० एक नीच जाति ।
पाहन-संज्ञा पुं० पाषाण, पत्थर ।
पाहुना-संज्ञा पुं० मेहमान । दामाद ।
पिंजरा-संज्ञा पुं० पक्षियों को बंद कर रखने का बाँस आदि का बना झाबा, पिंजरा ।
पिंगल-वि० (सं०) पीला । संज्ञा पुं० कविता का छंद-शास्त्र ।
पिंगला-संज्ञा स्त्री० (सं०) हठयोग के अनुसार तीन नाड़ियों में एक ।
पिंजर-संज्ञा पुं० पिंजड़ा । शरीर में हड्डियों का ढाँचा ।
पिंड-संज्ञा पुं० (सं०) गोल-सा टुकड़ा ।
पिंडदान-संज्ञा पुं० (सं०) श्राद्ध में पितरों को पिंड देने की रस्म ।
पिंडालू-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का शकरकंद ।
पिंडी-संज्ञा स्त्री० कद्दू, लौकी, छोटा ढेला । पिंडखजूर । लुगदी ।
पिउ-संज्ञा पुं० पति ।
पिक-संज्ञा पुं० कोकिल, कोयल ।
पिचकारी-संज्ञा स्त्री० एक यंत्र जिससे पानी आदि जोर से धार में फेंका जाता है ।
पिच्छ-संज्ञा पुं० पशु की पूँछ ।
पिच्छल-संज्ञा पुं० (सं०) शीशम । वि० पीछे का, पिछला ।
पिछवाड़ा-संज्ञा पुं० मकान आदि के पीछे का स्थान या भाग ।
पिछाड़ी-संज्ञा स्त्री० पीछे का भाग ।

पिटंत-संज्ञा स्त्री० पीटना ।
पिटाई-संज्ञा स्त्री० पीटना, मार ।
पिट्ठू-संज्ञा पुं० पीछे चलनेवाला । सहायक ।
पितर-संज्ञा पुं० मृत पुरखे ।
पिता-संज्ञा पुं० बाप ।
पितामह-संज्ञा पुं० दादा, पिता का पिता, बाबा ।
पितृ-संज्ञा पुं० (सं०) पिता ।
पितृऋण-संज्ञा पुं० (सं०) धर्मशास्त्र के तीन ऋणों में से एक ।
पितृकर्म-संज्ञा पुं० पितरों के लिए किए गए श्राद्ध तर्पण आदि काम ।
पितृकुल-संज्ञा पुं० (सं०) बाप-दादों का वंश ।
पितृगृह-संज्ञा पुं० श्मशान, बाप का घर ।
पितृतर्पण-संज्ञा पुं० (सं०) पितरों के लिए किया जानेवाला जलदान ।
पितृपक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) पिता के सम्बन्धी । आश्विन का पहला पक्ष ।
पितृलोक-संज्ञा पुं० (सं०) जहाँ मृत पितर रहते हैं ।
पितृव्य-संज्ञा पुं० (सं०) चाचा ।
पित्त-संज्ञा पुं० (सं०) शरीर के भीतर यकृत बनानेवाला एक पाचक पदार्थ ।
पित्तघ्न-वि० (सं०) पित्त नाश करनेवाला ।
पित्तज्वर-संज्ञा पुं० (सं०) पित्त के प्रकोप से होनेवाला ज्वर ।
पित्तप्रकृति-वि० (सं०) जिसके शरीर में पित्त अधिक हो ।

पिद्दी-संज्ञा स्त्री० एक छोटी चिड़िया । फुदकी, अति तुच्छ प्राणी ।
पिनाक-संज्ञा पुं० त्रिशूल, शिव का धनुष । एक प्रकार का अभ्रक ।
पिपासु-वि० प्यासा । लालची ।
पिपीलिका-संज्ञा स्त्री० च्यूँटी । चींटी ।
पिप्पल-संज्ञा पुं० पीपल का पेड़ ।
पिल्ला-संज्ञा पुं० (देश०) कुत्ते का बच्चा ।
पिशुन-संज्ञा पुं० (सं०) चुगलखोर ।
पिष्ट-वि० (सं०) पिसा हुआ ।
पिसान-संज्ञा पुं० महीन पीसा हुआ चूर्ण, आटा ।
पिस्ता-संज्ञा पुं० एक फल का वृक्ष ।
पिहित-वि० (सं०) छिपा हुआ ।
पीक-संज्ञा स्त्री० पान का रस मिला थूक ।
पीकदान-संज्ञा पुं० एक बरतन जिसमें थूका जाता है ।
पीठ-संज्ञा पुं० पीढ़ा, चौकी, आसन, देवस्थान, सिंहासन । संज्ञा स्त्री० शरीर में पेट के दूसरी ओर का भाग ।
पीड़क-संज्ञा पुं० (सं०) दुःखदायी, पीड़ा देनेवाला ।
पीड़न-संज्ञा पुं० (सं०) दुःख या पीड़ा देना । नाश ।
पीड़ा-संज्ञा स्त्री० व्यथा, व्याधि, रोग दुःख ।
पीड़ित-वि० (सं०) दुःख या पीड़ा से युक्त । रोगी । नष्ट किया हुआ ।
पीढ़ी-संज्ञा स्त्री० एक के बाद एक

के द्वारा चली आयी हुई वंश-परम्परा। चली आयी हुई संतति।
पीतांबर-संज्ञा पुं० कृष्ण, पीला कपड़ा।
पीनस-संज्ञा पुं० (सं०) नाक का एक रोग, जुकाम। संज्ञा स्त्री० पालकी।
पीर-संज्ञा स्त्री० पीड़ा, कष्ट। वि० (फा०) मुसलमानों के धर्मगुरु।
पीरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) बुढ़ापा।
पीलवान-संज्ञा पुं० महावत।
पीव-संज्ञा पुं० पिय, पति।
पीवर-वि० (सं०) मोटा। भारी।
पीहर-संज्ञा पुं० विवाहित स्त्रियों के पिता का घर, मायका।
पुंगीफल-संज्ञा पु० सुपारी।
पुंज-संज्ञा पुं० समूह, ढेर।
पुंडरीकाक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) विष्णु। वि० कमल के-से नेत्रोंवाला।
पुंलिंग-संज्ञा पुं० शिश्न, पुरुष वाचक शब्द।
पुंश्चली-वि० स्त्री० कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री, स्वैरिणी।
पुंसवन-संज्ञा पुं० दुग्ध, सोलह संस्कारों में दूसरा।
पुंस्त्व-संज्ञा पुं० शुक्र, पुरुष की शक्ति, पुरुषत्व, वीर्य।
पुखराज-संज्ञा पुं० एक पीला रत्न।
पुचकार-संज्ञा स्त्री० प्यार में ओठों से निकाला हुआ चूमने का शब्द चुमकार।
पुचकारना-क्रि० स० प्यार करना।
पुच्छ-संज्ञा स्त्री० लांगुल, पूँछ।
पुच्छल-वि० पूंछवाला।
पुजारी-संज्ञा पुं० पूजा करनेवाला।
पुण्य-वि० (सं०) धर्म का कार्य। पवित्र।
पुण्यकाल-संज्ञा पुं० (सं०) दान आदि करने का पवित्र या शुभ समय।
पुण्यक्षेत्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह स्थान जहाँ पुण्य किया जाय, तीर्थस्थान।
पुण्यभूमि-संज्ञा स्त्री० (सं०) आर्यावर्त्त देश, पुत्रवती स्त्री।
पुण्यश्लोक-वि० (सं०) पवित्र आचारण करनेवाला, चरित्रवान्।
पुण्यस्थान-संज्ञा पुं० पवित्र स्थान, तीर्थस्थान।
पुण्यात्मा-वि० पवित्र कार्य करनेवाला, धर्मात्मा।
पुतला-संज्ञा पुं० कपड़े, लकड़ी आदि की बनायी हुई आकृति, खिलौना।
पुतली-संज्ञा स्त्री० कपड़े, लकड़ी आदि की बनायी गयी स्त्री आकृति, गुड़िया। आँख के बीच का काला भाग।
पुत्रवती-संज्ञा स्त्री० (सं०) पुत्रवाली स्त्री।
पुत्रवधू-संज्ञा स्त्री० पतोहू, पुत्र की पत्नी।
पुत्री-संज्ञा स्त्री० सुता, कन्या, बेटी, लड़की।
पुत्रेष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) पुत्र की इच्छा से किया जानेवाला एक यज्ञ।

पुद्गल-संज्ञा पुं० देह, शरीर। आत्मा।

पुनः-अव्य० फिर। दुबारा।

पुनरपि-क्रि० वि० (सं०) फिर भी।

पुनरागमन-संज्ञा पुं० (सं०) फिर से आना। फिर से जन्म लेना, अवतार।

पुनरावृत्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) फिर से किए हुए काम को करना।

पुनरुक्ति-संज्ञा स्त्री० एक बार कही बात को फिर से कहना।

पुनर्जन्म-संज्ञा पुं० (सं०) मरने के बाद फिर जन्म लेना।

पुनीत-वि० (सं०) पवित्र, पाक।

पुमान्-संज्ञा पुं० मर्द, पुरुष, नर।

पुरः-अव्य० आगे। पहले।

पुरःसर-वि० (सं०) आगे चलनेवाला, अगुआ। साथी।

पुर-संज्ञा पुं० नगर, गृह, घर, किला, दुर्ग। संज्ञा पुं० (देश०) सींचने के लिए कुएँ से पानी निकालने का चमड़े का ढोल, चरसा।

पुरखा-संज्ञा पुं० बाप, दादा आदि, पूर्वज।

पुरजा-संज्ञा पुं० (फा०) टुकड़ा।

पुरबला, पुरबुला-वि० पहले का। पूर्व जन्म संबंधी।

पुरबिया-वि० पूर्व की ओर का रहनेवाला, पूरब का।

पुरवाई, पुरवैया-संज्ञा स्त्री० पूर्व की ओर से चलनेवाली हवा।

पुरस्कार-संज्ञा पुं० आदर, इनाम।

पुरस्कृत-वि० इनाम पाया हुआ।

पुराण-वि० (सं०) बहुत पुराना, प्राचीन। संज्ञा पुं० हिन्दुओं की वे अठारह पुस्तकें जिनमें धर्म-सम्बन्धी कहानियाँ लिखी हैं।

पुरातत्व-संज्ञा पुं० (सं०) प्राचीन काल के सम्बन्ध में ज्ञान।

पुरातन-वि० (सं०) बहुत पुराना, प्राचीन।

पुरीष-संज्ञा पुं० विष्ठा, मल, गू।

पुरुष-संज्ञा पुं० मनुष्य, आदमी, नर।

पुरुषत्व-संज्ञा पुं० पुरुषपन, पुरुष की शक्ति, पुंसत्व।

पुरुषमेध-संज्ञा पुं० अश्वमेध, मनुष्य का बलि दे कर किया जानेवाला यज्ञ।

पुरुषार्थ-संज्ञा पुं० (सं०) पुरुष का उद्योग या कार्य, पौरुष, उद्यम, पुंस्त्व, सामर्थ्य, शक्ति, बल।

पुरुषार्थी-वि० उद्योग करनेवाला व्यक्ति, उद्योगी, सामर्थ्यवान्, पराक्रमी, बली।

पुरुषोत्तम-संज्ञा पुं० विष्णु, पुरुषों में श्रेष्ठ, ईश्वर।

पुरुहूत-संज्ञा पुं० इन्द्रयव। इंद्र।

पुरोधा-संज्ञा पुं० पुरोहित।

पुरोहित-संज्ञा पुं० (सं०) गृह-कर्म तथा संस्कार आदि करवानेवाला ब्राह्मण।

पुल-संज्ञा पुं० (फा०) नदी, तालाब आदि के आर-पार जाने के लिए

बनाया गया रास्ता, सेतु।

पुलकित-वि० (सं०) हर्ष आदि कारण रोमाञ्चित हो गया हुआ व्यक्ति।

पुलाव-संज्ञा पुं० मांस और चावल को पकाकर बनाया जानेवाला एक व्यंजन।

पुलिंदा-संज्ञा पुं० लपेटे हुए कागज या कपड़े, गट्ठर, बंडल।

पुलिन-संज्ञा पुं० (सं०) नदी आदि का किनारा।

पुश्त-संज्ञा स्त्री० (फा०) पीठ। वंश-परम्परा, पीढ़ी।

पुश्तनामा-संज्ञा पुं० (फा०) पुश्तों का जिसमें वर्णन हो, वंशावली।

पुश्तैनी-वि० बाप-दादों से चली आयी हुई बात।

पुष्कर-संज्ञा पुं० (सं०) पानी। तालाब। कमल। बाण।

पुष्कल-वि० बहुत अधिक।

पुष्ट-वि० पालन-पोषण किया हुआ। मजबूत, बलवाला।

पुष्टई-संज्ञा स्त्री० ताकत बढ़ाने-वाली दवा, बलवर्धक।

पुष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) ताकत, बलिष्ठता। दृढ़ता, मजबूती। बात का पक्कापन।

पुष्टिकर, पुष्टिकारक-वि० (सं०) पुष्टि या ताकत बढ़ानेवाला।

पुष्प-संज्ञा पुं० (सं०) फूल, आँख का एक रोग।

पुष्पक-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्राचीन विमान। कुबेर का विमान।

पुष्पधन्वा-संज्ञा पुं० कामदेव।

पुष्पध्वज-संज्ञा पुं० (सं०) कामदेव

पुष्पवाटिका-संज्ञा स्त्री० फूलों का बगीचा, उद्यान।

पुष्पवृष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) ऊपर से फूलों का गिरना।

पुष्पशर-संज्ञा पुं० (सं०) कामदेव।

पुष्पांजलि-संज्ञा स्त्री० (सं०) फूलों से भरी किसी को अर्पित करने की अञ्जलि।

पुष्पित-वि० फूलों से भरा हुआ।

पुष्पोद्यान-संज्ञा पुं० उद्यान।

पुस्तक-संज्ञा स्त्री० पोथी, किताब।

पुस्तकाकार-वि० (सं०) पुस्तक के रूप का।

पुस्तकालय-संज्ञा पुं० पुस्तकागार, भवन जहाँ पुस्तकें इकट्ठा की गयी हों।

पूँजी-संज्ञा स्त्री० जमा किया गया धन।

पूँजीपति-संज्ञा पुं० बहुत धन या पूँजीवाला।

पूछ-संज्ञा स्त्री० पूछने का भाव। खोज। आदर। जिज्ञासा। चाह।

पूजक-संज्ञा पुं० (सं०) पूजा करने-वाला, पुजारी।

पूजन-संज्ञा पुं० (सं०) पूजा करना, अर्चन। आदर। आराधना।

पूजना-क्रि० स० पूजा करना। घूस या रिश्वत देना।

पूजनीय-वि० (सं०) पूजा किया जाने योग्य। आदरणीय।

पूजा-संज्ञा स्त्री० पूजन, [illegible] ईश्वर।

पूज्य-वि० (सं०) पूजा किया जाने योग्य।
पूज्यपाद-वि० (सं०) जिसके पैर पूजा करने योग्य हों, आदरणीय।
पूड़ी-संज्ञा स्त्री० देखिए 'पूरी'।
पूत-वि० (सं०) पवित्र, शुद्ध। संज्ञा पुं० बेटा, पुत्र।
पूनो-संज्ञा स्त्री० पूर्णमासी, पूर्णिमा।
पूप-संज्ञा पुं० (सं०) मालपुआ। पूआ।
पूर-वि० पूरा। किसी पकवान के भीतर भरे जानेवाले मसाले।
पूरक-वि० (सं०) जिस अंक से गुणा किया जाय। पूरा करनेवाला।
पूरण-संज्ञा पुं० (सं०) भरना, पूरा करना। गुणा करना।
पूरब-संज्ञा पुं० सूर्य के निकलने की दिशा, पूर्व दिशा।
पूरित-वि० (सं०) भरा हुआ। तृप्त। सन्तुष्ट।
पूरी-संज्ञा स्त्री० एक खौलते घी में डुबाकर पकाया जानेवाला पकवान।
पूर्ण-वि० (सं०) पूरा। भरा हुआ। जिसकी इच्छा पूरी हो चुकी हो, तृप्त। सारा। समाप्त।
पूर्णकाम-वि० (सं०) जिसकी सारी कामनायें या इच्छायें पूरी हो चुकी हों, निष्काम।
पूर्णचंद्र-संज्ञा पुं० (सं०) पूरा निकला हुआ चाँद।
पूर्णतः-क्रि० वि० (सं०) पूरी तरह से।
पूर्णता-संज्ञा स्त्री० (सं०) पूरा होने का भाव।
पूर्णमासी-संज्ञा स्त्री० (सं०) चान्द्र मास का अन्तिम दिन जब पूरा चन्द्रमा दीख पड़ता है, पूर्णिमा।
पूर्णविराम-संज्ञा पुं० (सं०) वाक्य के पूर्ण हो जाने पर लगाया जानेवाला चिह्न।
पूर्णायु-संज्ञा स्त्री० सौ वर्ष की पूरी आयु। वि० सौ वर्ष तक जीवित रहनेवाला।
पूर्णावतार-संज्ञा पुं० (सं०) सोलहों कलाओं के साथ देवता या ईश्वर का अवतार लेना।
पूर्णाहुति-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह आहुति जिसे देकर यज्ञ समाप्त करते हैं।
पूर्णिमा-संज्ञा स्त्री० पूर्णमासी, पूरनमासी।
पूर्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी काम का पूरा होना, पूर्णता। कमी को पूरा करना।
पूर्व-संज्ञा पुं० (सं०) वह दिशा जिधर से सूरज निकलता है। वि० (सं०) पहले का। पुराना। क्रि० वि० पहले का।
पूर्वकालिक-वि० (सं०) पूर्व काल का। पूर्व काल में पैदा हुआ।
पूर्वज-संज्ञा पुं० (सं०) हमसे पहले पैदा हुए, बाप-दादा आदि, पुरखा।
पूर्वजन्म-संज्ञा पुं० इस जन्म से पहले का जन्म

पूर्वपक्ष-संज्ञा पुं० कृष्ण-पक्ष, किसी शस्त्र के विषय पर उठाये हुए प्रश्न। दावा करनेवाला।
पूर्वमीमांसा-संज्ञा स्त्री० (सं०) जैमिनि ऋषि का दर्शन।
पूर्वराग-संज्ञा पुं०साहित्य में नायक, नायिका के संयोग के पूर्व ही दोनों में उत्पन्न होनेवाली अवस्थाएं।
पूर्ववत्-क्रि० वि० (सं०) पहले की तरह।
पूर्ववर्ती-वि० पहले का। जो पहले रहा था।
पूर्ववृत्त-संज्ञा पुं० (सं०) प्राचीन कहानी या वृत्तान्त, इतिहास।
पूर्वानुराग-संज्ञा पुं० (सं०)प्रेम का आरम्भ।
पूर्वापर-क्रि० वि० आगे-पीछे।
पूर्वाह्न-संज्ञा पुं० (सं०) दोपहर से पहले का समय।
पूर्वी-वि० पूर्व का।
पूर्वोक्ति-वि० (सं०) पहले कही हुई बात।
पूषण-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य।
पृच्छक-वि० (सं०) पूछनेवाला।
पृतना-संज्ञा स्त्री०सेना, संग्रामफ़ौज।
पृथक्-वि० अलग, भिन्न।
पृथक्करण-संज्ञा पुं० अलगाव,अलग करना।
पृथा-संज्ञा स्त्री० कुन्ती का दूसरा नाम।
पृथिवी-संज्ञा स्त्री० अचला, भूमि।
पृथु-वि० (सं०) चौड़ा। बड़ा।
पृथुता-संज्ञा स्त्री० विस्तार, मोटा, बड़ा होना, फैलाव।
पृथ्वी-संज्ञा स्त्री० धरती, जमीन, मिट्टी।
पृथ्वीतल-संज्ञा पुं० (सं०) जमीन की सतह, धरातल जिस पर हम लोग चलते-फिरते हैं।
पृथ्वीनाथ-संज्ञा पुं० राजा, नरेश।
पृष्ठ-संज्ञा पुं० (सं०) पीठ। पीछे का भाग। पुस्तक का पन्ना।
पृष्ठभाग-संज्ञा पुं० (सं०) पीठ पिछला भाग।
पेच-संज्ञा पुं० (फा०) घुमाव। चाल, चालाकी। मशीन का पुरजा। तरकीब।
पेचकश-संज्ञा पुं० (फा०) पेच लगाने या निकालने के औजार।
पेचदार-वि० (फा०) घुमावदार, जटिल।
पेचिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) आँव के कारण होनेवाली पेट की पीड़ा।
पेचीदा-वि० (फा०) घुमावदार, टेढ़ा, मुश्किल, जटिल।
पेटक-संज्ञा पुं०। मंजूषा, पिटारा।
पेटिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) छोटी पिटारी, पेटी।
पेटी-संज्ञा स्त्री० छोटा सदूक। कमर में बांधने का चौड़ा तसमा।
पेटू-वि० जो बहुत खाता हो,भुक्खड़।
पेड़ू-संज्ञा पुं० नाभि के नीचे का भाग।
पेय-वि० (सं०) पीने लायक। संज्ञा पुं० (सं०) पीने की वस्तु।

पेलना-क्रि० स० धक्के के साथ अन्दर घुसाना, ढकेलना, टालना, आगे बढ़ाना।
पेश-क्रि० वि० (फा०) सामने।
पेशगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) काम होने के पूर्व ही दिया गया धन, अगाऊ।
पेशबंदी-संज्ञा स्त्री० (फा०) पहले से किया हुआ इंतजाम।
पेशा-संज्ञा पुं० धंधा, रोजगार।
पेशानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) मत्था। भाग्य।
पेशी-संज्ञा स्त्री० (फा०) मुकदमे का न्यायकर्ता के सामने उपस्थित किया जाना। संज्ञा स्त्री० अंडा, शरीर के अन्दर मांस की गुल्थी।
पैंजनी-संज्ञा स्त्री० घुंघरू।
पैंठ-संज्ञा स्त्री० बाजार।
पैखाना-संज्ञा पुं० शौचालय।
पैगंबर-संज्ञा पुं० (फा०) ईश्वर का संदेशा लेकर आनेवाला देवदूत।
पैठ-संज्ञा स्त्री० प्रवेश, पहुँच।
पैठना-क्रि० अ० घुसना, प्रवेश करना।
पैतरा-संज्ञा पुं० तलवार चलाते समय की स्थिति।
पैतृक-वि० (सं०) पिता का। बाप-दादों या पुरखों का।
पैदाइश-संज्ञा स्त्री० (फा०) जन्म।
पैदाइशी-वि० (फा०) पैदा होने के समय से ही होनेवाला। स्वाभाविक।
पैदावार-संज्ञा स्त्री० (फा०) खेत में जो अन्न पैदा हो, उपज।
पैना-वि० तेज धारदार। तेज।
पैमाइश-संज्ञा स्त्री० (फा०) नाप।
पैमाना-संज्ञा पुं० (फा०) जिससे नाप ली जाय, मानदंड।
पैरवी-संज्ञा स्त्री० (फा०) किसी के पक्ष की ओर से बोलना। अनुगमन, मुकदमे की देखरेख।
पैराक-संज्ञा पुं० अच्छा तैरनेवाला, तैराक।
पैबंद-संज्ञा पुं० (फा०) किसी फटे कपड़े पर लगाकर सिला हुआ किसी दूसरे कपड़े का टुकड़ा।
पैशाचिक-वि० (सं०) पिशाचों का, राक्षसी, बीभत्स।
पोखरा-संज्ञा पुं० बनाया गया तालाब।
पोच-वि० नीच, क्षुद्र। हीन।
पोट-संज्ञा स्त्री० गठरी। ढेर।
पोटरी, पोटली-संज्ञा स्त्री० छोटी गठरी या बकुचा।
पोत-संज्ञा पुं० पशु आदि का छोटा बच्चा। नाव।
पोता-संज्ञा पुं० पुत्र का पुत्र। पोतने का कपड़ा। अंडकोष।
पोती-संज्ञा स्त्री० पुत्र की बेटी।
पोथा-संज्ञा पुं० बड़ी किताब। कागजों की गड्डी।
पोथी-संज्ञा स्त्री० पुस्तक। किताब।
पोना-क्रि० स० रोटी बनाना।
पोपला-वि० जिसके मुँह में दांत न हों। पिचका हुआ। खोखला।
पोर-संज्ञा स्त्री० उंगली के पोर।

पोल-संज्ञा पुं॰ जिसके अन्दर कुछ न हो, खोखलापन, प्रवेश-द्वार ।
पोला-वि॰ पोपला, खोखला।
पोशाक-संज्ञा स्त्री॰ पहनने के कपड़े, पहनावा, वस्त्र ।
पोशीदा-वि॰ (फा॰) छिपा हुआ।
पोषक-वि॰ (सं॰) पालन करनेवाला। सहायता देनेवाला।
पोषण-संज्ञा पुं॰ (सं॰) पालन करना।
पोषित-वि॰ (सं॰) पाला हुआ।
पोसना-क्रि॰ स॰ पालना। रक्षा करना।
पोस्त-संज्ञा पुं॰ (फा॰) अफीम का पौदा, पोस्ता। खाल।
पोस्ता-संज्ञा पुं॰ एक पौदा जिससे अफीम निकलती है।
पौ-संज्ञा स्त्री॰ प्याऊ। सुबह की किरणों का प्रकाश।
पौढ़ना-क्रि॰ अ॰ लेटना।
पौढ़ाना-क्रि॰ स॰ लिटाना।
पौधा-संज्ञा पुं॰ नया छोटा पेड़, क्षुप, गुल्म।
पौन-संज्ञा पु॰, स्त्री॰ हवा। आत्मा। वि॰ एक में चौथाई कम, तीन चौथाई।
पौर-वि॰ (सं॰) नगर का।
पौरव-संज्ञा पुं॰ (सं॰) पुरु का वंशज ; वि॰ पुरु वंश का।
पौराणिक-वि॰ (सं॰) पुराणों को समझनेवाला। प्राचीन काल का।
पौरिया-संज्ञा पुं॰ द्वारपाल, दरबान।
पौरी-संज्ञा स्त्री॰ दरवाजे की ड्योढ़ी। सीढ़ी। खड़ाऊँ।
पौरुष-संज्ञा पुं॰ पुरुषत्व, पुरुष की शक्ति, पराक्रम, उद्योग।
पौष-संज्ञा पुं॰ नवाँ महीना, पूस का महीना।
पौष्टिक-वि॰ (सं॰) पुष्टि या बलवीर्य को बढ़ानेवाला।
प्याऊ-संज्ञा पुं॰ जहाँ पानी पिलाया जाय, पौसरा।
प्याजी-वि॰ (फा॰) प्याज के रंग का।
प्यादा-संज्ञा पुं॰ (फा॰) पैदल चलनेवाला सिपाही। हरकारा, डाकिया।
प्यार-संज्ञा पुं॰ प्रेम, मुहब्बत।
प्यारा-वि॰ जिसे प्यार किया जाय, प्रीतिपात्र, प्रिय।
प्याला-संज्ञा पुं॰ (फा॰) छोटा कटोरा। पीने का पात्र।
प्रकंप-संज्ञा पुं॰ (सं॰) कँपकँपी।
प्रकट-वि॰ (सं॰) खुला हुआ, साफ, स्पष्ट।
प्रकटित-वि॰ (सं॰) साफ कहा हुआ, जो प्रकट हुआ हो।
प्रकरण-संज्ञा पुं॰ (सं॰) वृत्तांत, घटना।
प्रकर्ष-संज्ञा पुं॰ बहुतायत। बढ़ती।
प्रकांड-वि॰ (सं॰) बहुत बड़ा।
प्रकार-संज्ञा पुं॰ भाँति। तरह। भेद।
प्रकाश-संज्ञा पुं॰ ज्योति। उजाला।
प्रकाशक-संज्ञा पुं॰ (सं॰) प्रकाश में लानेवाला।

प्रकाशन-संज्ञा पुं० (सं०) प्रकाशित या प्रकट करना।

प्रकुपित-वि० (सं०) बहुत गुस्से में।

प्रकृत-वि० (सं०) यथार्थ, सही।

प्रकृति-संज्ञा स्त्री० (सं०) स्वभाव, आदत। वह शक्ति जिससे जगत् का विकास हुआ है, कुदरत।

प्रकृतिसिद्ध-वि० (सं०) स्वभाव से होनेवाला, स्वाभाविक। प्राकृतिक, कुदरती।

प्रकृतिस्थ-वि० (सं०) अपनी प्रकृति में ही रहनेवाला, स्वाभाविक।

प्रकोप-संज्ञा पुं० अधिक क्रोध। क्षोभ। बीमारी का तेज होना।

प्रक्रिया-संज्ञा स्त्री० विधि, तरीका।

प्रक्षालन-संज्ञा पुं० मार्जन, धोना।

प्रक्षिप्त-संज्ञा पुं० (सं०) फेंका हुआ। निविष्ट किया हुआ।

प्रक्षेप, प्रक्षेपण-संज्ञा पुं० (सं०) फेंकना। छितराना। पीछे से मिलाना।

प्रखर-वि० (सं०) तेज। धारदार।

प्रख्यात-वि० (सं०) मशहूर।

प्रगल्भ-वि० (सं०) फौरन प्रश्न का उत्तर देनेवाला। चतुर।

प्रगाढ़-वि० (सं०) बहुत अधिक। गाढ़ा, घना, कठोर, कड़ा।

प्रचंड-वि० (सं०) अधिक तीव्र। भयंकर। बहुत भारी। बलवान्

प्रचलन-संज्ञा पुं० प्रवतन, जिसका बहुत उपयोग होता हो, प्रचार।

प्रचलित-वि० (सं०) बहुत अधिक उपयोग में लाया जानेवाला, जारी। प्रसिद्ध।

प्रचार-संज्ञा पुं० प्रसिद्धि, किसी चीज आदि को प्रसिद्ध करने का कार्य।

प्रचारक-वि० (सं०) किसी बात का प्रचार करने या फैलानेवाला।

प्रचारित-वि० (सं०) प्रचार किया या फैलाया हुआ।

प्रचुर-वि० (सं०) बहुत। काफी।

प्रचुरता-संज्ञा स्त्री० बहुलता, अधिकता।

प्रच्छक-वि० (सं०) पूछनेवाला।

प्रच्छन्न-वि० (सं०) ढँका या छिपा हुआ।

प्रजनन-संज्ञा पुं० (सं०) संतान पैदा करना, जन्म देना।

प्रजा-संज्ञा स्त्री० प्रजनन, किसी राज्य में रहनेवाले लोग, रिआया।

प्रजातंत्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह शासन-प्रणाली जिसमें प्रजा स्वयं ही राजा चुन लेती या राज्य करती है।

प्रजापति-संज्ञा पुं० (सं०) सृष्टि करनेवाला, ब्रह्मा। राजा, इन्द्र, सूर्य, अग्नि, विश्वकर्मा, पिता, बाप।

प्रज्ञाचक्षु-संज्ञा पुं० ज्ञानी, विद्वान्। अंधा।

प्रज्वलन-संज्ञा पुं० (सं०) जलना।

प्रज्वलित-वि० (सं०) जलता हुआ।

प्रणत-वि० (सं०) झुका हुआ। नम्र।

प्रणतपाल-संज्ञा पुं० (सं०) दीनों और दासों आदि का पालन करने-वाला, ईश्वर। राजा।

प्रणति-संज्ञा स्त्री० विनय. प्रणाम। विनती, दण्डवत्।
प्रणमन-संज्ञा पुं० (सं०) झुकना। प्रणाम करना।
प्रणय-संज्ञा पुं० (सं०) प्रेम।
प्रणयन-संज्ञा पुं० रचना, बनाना।
प्रणयिनी-संज्ञा स्त्री० प्रियतमा, जिस स्त्री से प्रेम किया जाय, प्रेमिका।
प्रणयी-संज्ञा पुं० प्रेम करनेवाला, प्रेमी, पति, स्वामी।
प्रणव-संज्ञा पु० (सं०) ओंकार। परमेश्वर।
प्रणाली-संज्ञा स्त्री० पद्धति. ढंग। रवाज, रीति।
प्रणीत-संज्ञा पुं० निर्मित, बनाया हुआ।
प्रणेता-संज्ञा पुं० बनाने या रचने-वाला।
प्रतप्त-वि० (सं०) तपा हुआ।
प्रताप-संज्ञा पुं० पराक्रम, पौरुष, वीरता। तेज। गरमी।
प्रतापी-वि० प्रताप या, तेजवाला।
प्रतारक-संज्ञा पुं० वंचक। ठग।
प्रतारण-संज्ञा स्त्री० वंचन। ठगी।
प्रतिकार-सज्ञा पु० (स०) बदला।
प्रतिकूल-वि० (सं०) विरुद्ध, उलटा।
प्रतिकृति-संज्ञा स्त्री० प्रतिमा, वैसी ही आकृति की नकल, तसवीर। मूर्त्ति, बदला, प्रतिबिम्ब, छाया।
प्रतिक्रिया-संज्ञा स्त्री० प्रतिकार, बदला।
प्रतिग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) ग्रहण करना। अधिकार में करना।
प्रतिघात-संज्ञा पुं० प्रतिबन्ध, बदले में किया गया आघात, मारना।
प्रतिच्छाया-संज्ञा स्त्री० प्रतिबिम्ब, परछाई।
प्रतिज्ञा-संज्ञा स्त्री० सौगन्ध, पक्का विचार, प्रण। वादा, शपथ।
प्रतिज्ञापत्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह पत्र जिस पर वादे या शर्तें लिख वायी गयी हों।
प्रतिदान-संज्ञा पुं० (सं०) लौटाना। बदला।
प्रतिध्वनि-संज्ञा स्त्री० (सं०) कही हुयी बात का बाद में कुछ देर तक सुन पड़ना, गूँज।
प्रतिनिधि-संज्ञा पुं० (सं०) किसी की ओर से काम करने के लिये नियुक्त या निर्वाचित सदस्य।
प्रतिपक्षी-संज्ञा पुं० दूसरे पक्ष का, विरोधी। शत्रु, दुश्मन।
प्रतिपत्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) पाना। ज्ञान। काम में लाना।
प्रतिपादन-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छी तरह समझाना। प्रणाम, सबूत।
प्रतिपाल, प्रतिपालक-संज्ञा पुं० पालन करनेवाला। ईश्वर।
प्रतिपालन-संज्ञा पु० पालन-पोषण करना, निर्वाह, रक्षा।
प्रतिफल-संज्ञा पुं० (सं०) नतीजा।
प्रतिबंध-संज्ञा पुं० (सं०) रुकावट, बाधा। अवरोध।
प्रतिबिंब-संज्ञा पुं० मूर्ति, परछाईं।
प्रतिभा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बुद्धि

समझ, असाधारण बुद्धिमत्ता।
प्रतिभावान्, प्रतिभाशाली-वि० (सं०) जिसमें प्रतिभा हो।
प्रतिभू-संज्ञा पुं० (सं०) जमानत लेनेवाला। जामिन।
प्रतिम-अव्य० (सं०) समान।
प्रतिमा-संज्ञा स्त्री० (सं०) मूर्ति। किसी आकार की नकल।
प्रतिमान-संज्ञा पुं० (सं०) बराबरी, समानता। उदाहरण, प्रतिनिधि।
प्रतिमूर्ति-संज्ञा स्त्री० प्रतिमा, देवतादि की मूर्ति।
प्रतियोगिता-संज्ञा स्त्री० (सं०) मुकाबला, शत्रुता, होड़।
प्रतिरूप-संज्ञा पुं० (सं०) मूर्ति।
प्रतिरोध-संज्ञा पुं० विरोध, रुकावट, प्रतिबिम्ब।
प्रतिलिपि-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी लिखी चीज की नकल।
प्रतिलोम-वि० (सं०) विरुद्ध, विपरीत। उलटा।
प्रतिवाद-संज्ञा पुं० खण्डन, किसी की कही बात का विरोध करना, विवाद, विरोध, उत्तर।
प्रतिवेश-संज्ञा पुं० (सं०) पड़ोस।
प्रतिवेशी-संज्ञा पुं० पड़ोस में रहनेवाला, पड़ोसी।
प्रतिशब्द-संज्ञा पुं० (सं०) गूंज। प्रतिध्वनि।
प्रतिशोध-संज्ञा पुं० बदला।
प्रतिषेध-संज्ञा पुं० खण्डन, मनाही।
प्रतिष्ठा-संज्ञा स्त्री० (सं०) मान, गौरव। आदर।
प्रतिष्ठान-संज्ञा पुं० (सं०) स्थापित करना, बैठाना। पदवी, प्रसिद्धि।
प्रतिष्ठापत्र-संज्ञा पुं० (सं०) सम्मान में लिखकर दिया जानेवाला कागज, मान-पत्र।
प्रतिष्ठित-वि० (सं०) जिसकी प्रतिष्ठा या आदर हो, इज्जतदार।
प्रतिस्पर्द्धा-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी व्यक्ति की बढ़ती से अधिक हो जाने का उद्योग, लाग-डाँट।
प्रतिहार-संज्ञा पुं० द्वारपाल, दरबान।
प्रतिहारी-संज्ञा पुं० द्वारपाल, दरबान।
प्रतिहिंसा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बदला लेना। वैर चुकाना।
प्रतीक-संज्ञा पुं० अवयव चिह्न, प्रतिरूप, मूर्त्ति, प्रतिमा।
प्रतीकार-संज्ञा पुं० (सं०) बदला।
प्रतीक्षा-संज्ञा स्त्री० प्रतीक्षण, रास्ता देखना, इंतजार, बाट।
प्रतीत-वि० (सं०) जाना हुआ, प्रसन्न, विदित, विश्वस्त।
प्रतीति-संज्ञा स्त्री० ज्ञान।
प्रतीयमान-वि० (सं०) जान पड़ता हुआ।
प्रतीहार, प्रतीहारी-संज्ञा पुं० ड्योढ़ीदार।
प्रत्यक्ष-वि० (सं०) बिलकुल सामने। क्रि० वि० आँखों के आगे।
प्रत्यय-संज्ञा पुं० (सं०) विश्वास। विचार। कारण। चिह्न।
प्रत्यागत-वि० (सं०) लौट आया हुआ।

प्रत्यागमन-संज्ञा पुं० वापसी। लौट आना।
प्रत्याशा-संज्ञा स्त्री० (सं०) आशा, भरोसा।
प्रत्युत-अव्य० (सं०) बल्कि, वरन्।
प्रत्युत्तर-संज्ञा पुं० (सं०) उत्तर का उत्तर।
प्रत्युपकार-संज्ञा पुं० (सं०) उपकार के बदले में किया गया उपकार।
प्रत्यूष-संज्ञा पुं० (सं०) प्रभात, सुबह, सूर्य, एक वसु का नाम।
प्रत्येक-वि० (सं०) हर एक, अलग-अलग।
प्रथम-वि० (सं०) पहला। सब से अच्छा। क्रि० वि० पहले ही।
प्रथा-संज्ञा स्त्री० ख्याति, प्रसिद्धि, रीति, नियम।
प्रद-वि० (सं०) देनेवाला, दाता।
प्रदक्षिणा-संज्ञा स्त्री० देवमूर्त्ति के चारों ओर घूमना, परिक्रमा।
प्रदत्त-वि० (सं०) दिया हुआ।
प्रदर्शनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह स्थान जहां तरह-तरह की चीजें प्रदर्शन के लिए रखी जायें, नुमाइश।
प्रदर्शित-वि० (सं०) दिखलाया गया।
प्रदान-संज्ञा पुं० दान देना।
प्रदायक, प्रदायी-संज्ञा पुं० प्रदान देनेवाला।
प्रदीप-संज्ञा पुं० दीप, दीया, चिराग।
प्रदीप्त-वि० (सं०) प्रकाश से भरा हुआ, जगमगाता हुआ।
प्रदेश-संज्ञा पुं० (सं०) किसी बड़े देश का भाग, सूबा। स्थान।
प्रदोष-संज्ञा पुं० (सं०) संध्या का समय।
प्रधान-वि० (सं०) मुख्य, खास।
प्रपंच-संज्ञा पुं० विस्तार, झमेला, छल। दुनिया का बखेड़ा। संसार।
प्रपंची-वि० प्रपंच, छल करनेवाला।
प्रपात-संज्ञा पुं० पानी का झरना।
प्रपीड़न-संज्ञा पुं० सताना।
प्रफुल्ल-वि० (सं०) खिला हुआ, विकसित। प्रसन्न, आनंदित।
प्रबंध-संज्ञा पुं० योजना, बँधा हुआ सिलसिला।
प्रबल-वि० (सं०) तेज। जोर का।
प्रबुद्ध-वि० (सं०) जागा हुआ, पण्डित, ज्ञानी, सचेत।
प्रबोध-संज्ञा पुं० पूर्ण बोध। ज्ञान। चेतावनी। ढाढ़स।
प्रबोधन-संज्ञा पुं० जगाना, विकास। ज्ञान देना। चेतना, चेत।
प्रभंजन-संज्ञा पुं० (सं०) तेज हवा, आँधी।
प्रभा-संज्ञा स्त्री० दीप्ति, प्रकाश, चमक।
प्रभाकर-संज्ञा पुं० सूर्य, चन्द्रमा।
प्रभात-संज्ञा पुं० (सं०) सुबह।
प्रभाती-संज्ञा स्त्री० सुबह के समय गाया जानेवाला एक गीत।
प्रभाव-संज्ञा पुं० प्रताप, असर। महिमा। दबाव, रोब।

प्रभु-संज्ञा पुं० स्वामी, मालिक। ईश्वर।
प्रभुता-संज्ञा स्त्री० महत्त्व, बड़ाई। हुकूमत।
प्रभुताई-संज्ञा स्त्री० बड़ाई, वैभव।
प्रभूत-वि० (सं०) बहुत अधिक। निकला हुआ।
प्रभृति-अव्य० (सं०) इत्यादि, वगैरह, आदि।
प्रभेद-संज्ञा पुं० अन्तर, भेद।
प्रमत्त-वि० नशे में मस्त। पागल।
प्रमा-संज्ञा स्त्री० (सं०) सही ज्ञान। यथार्थ ज्ञान। शुद्ध बोध।
प्रमाण-संज्ञा पुं० (सं०) जिस बात से कोई बात सिद्ध की जाय, सबूत। निश्चय।
प्रमाणपत्र-संज्ञा पुं० (सं०) किसी बात के प्रमाण या सबूत के लिए लिखकर दिया गया कागज, सार्टिफिकेट।
प्रमाणित-वि० (सं०) प्रमाण से सिद्ध किया हुआ, साबित। पक्का।
प्रमाद-संज्ञा पुं० भ्रम, भूल, चूक।
प्रमुख-वि० (सं०) पहला। खास।
प्रमुदित-वि० (सं०) खुश, प्रसन्न। द्वारा जाना जा सके।
प्रमोद-संज्ञा पुं० हर्ष, प्रसन्नता, खुशी।
प्रयाण-संज्ञा पुं० (सं०) जाना। यात्रा। हमला करने को चलना।
प्रयास-संज्ञा पुं० गमन, कोशिश, उद्योग।
प्रयोग-संज्ञा पुं० (सं०) काम में लाना, व्यवहार, विधान।
प्रयोजन-संज्ञा पुं० उद्देश्य, मतलब, अभिप्राय, कार्य।
प्रयोजनीय-वि० (सं०) काम का। जिससे मतलब रखा जाय।
प्रलयंकर-वि० प्रलय या नाश करनेवाला।
प्रलय-संज्ञा पुं०संसार का नष्ट होकर प्रकृति में मिल जाना। नाश।
प्रलाप-संज्ञा पुं० (सं०) बेकार की बकवाद, पागलों की बकवास।
प्रलेप-संज्ञा पुं० लेप।
प्रलोभ, प्रलोभन-संज्ञा पुं० लालच। लालच दिखलाना।
प्रवंचना-संज्ञा स्त्री० धूर्तता, छल, धोखा।
प्रवक्ता-संज्ञा पुं०अच्छी तरह समझानेवाला, भाषण देनेवाला।
प्रवचन-संज्ञा पुं० वेदांग, अच्छी तरह समझाकर कहना।
प्रवर-वि० (सं०) श्रेष्ठ, उत्तम।
प्रवर्तक-संज्ञा पुं० (सं०) किसी काम के चलानेवाले, संचालक।
प्रवाद-संज्ञा पुं० अपवाद, अफवाह, फैली हुई बात, बदनामी।
प्रवाल-संज्ञा पुं० विद्रुम, मूँगा, नये पत्ते।
प्रवास-संज्ञा पुं० (सं०) अपना देश छोड़कर अन्य देश में रहना।
प्रवासी-वि० अपना देश छोड़कर अन्य देश में रहनेवाला।

प्रवाह-संज्ञा पुं० प्रवृत्ति, बहाव, धारा। काम का जारी रहना, सिलसिला।
प्रवाहित-वि० (सं०) बहता हुआ।
प्रविष्ट-वि० (सं०) घुसा हुआ।
प्रवीण-वि० (सं०) कुशल, चतुर, निपुण ।
प्रवृत्त-वि० किसी खास पक्ष की ओर लगा हुआ, उत्पन्न।
प्रवृत्ति-संज्ञा स्त्री० बहाव, मन का लगाव।
प्रवृद्ध-वि० (सं०) खूब बढ़ा-चढ़ा। प्रौढ़, पक्का।
प्रवेश-संज्ञा पुं० पहुँच, भीतर जाना, पैठ । किसी विषय को जानना, जानकारी।
प्रव्रज्या-संज्ञा स्त्री० (सं०)संन्यास।
प्रशंसक-वि०(सं०)प्रशंसा या बड़ाई करनेवाला।
प्रशंसनीय-वि० (सं०) प्रशंसा या बड़ाई करने योग्य, बहुत अच्छा।
प्रशंसा-संज्ञा स्त्री० प्रशंसन, बड़ाई, तारीफ।
प्रशस्त-वि० (सं०) श्रेष्ठ, उत्तम, बड़ा।
प्रशस्ति-संज्ञा स्त्री० स्तुति, बड़ाई, प्रशंसा।
प्रशांत-वि० (सं०)शान्त, चुपचाप। संज्ञा पुं० अमरीका और एशिया के बीच का महासागर।
प्रश्न-संज्ञा पुं० जिज्ञासा, सवाल। समस्या।
प्रश्नोत्तर-संज्ञा पुं० (सं०) सवाल-जवाब।
प्रश्रय-संज्ञा पुं० आश्रय, जहाँ सहारा मिल सके, आधार।
प्रश्वास-संज्ञा पुं० (सं०) नथने के सहारे निकलनेवाली श्वास।
प्रसंग-संज्ञा पुं० मैथुन, लगाव, संबंध। मौका, अवसर।
प्रसन्न-वि० (सं०) खुश।
प्रसरण-संज्ञा पुं० उत्पत्ति। आगे बढ़ना। फैलना। विस्तार।
प्रसव-संज्ञा पुं० प्रसूति, स्त्री का बच्चा जनने की क्रिया, आज्ञा।
प्रसाद-संज्ञा पुं० (सं०) कृपा, दया। भोजन। देवता पर चढ़ाया हुआ भोज्य पदार्थ।
प्रसादी-संज्ञा स्त्री० देवताओं पर चढाया गया पदार्थ।
प्रसार-संज्ञा पुं० विस्तार, फैलाव।
प्रसिद्ध-वि० (सं०) मशहूर।
प्रसिद्धि-संज्ञा स्त्री० (सं०) शोहरत, ख्याति।
प्रसुप्त-वि० (सं०) सोया हुआ।
प्रसूत-वि० (सं०) पैदा। संज्ञा पुं० एक रोग।
प्रसूता-संज्ञा स्त्री० (सं०) बच्चा पैदा करनेवाली स्त्री।
प्रसूति-संज्ञा स्त्री० (सं०) बच्चा पैदा करना, जनन।
प्रसून-संज्ञा पुं० पुष्प, फूल।
प्रस्तर-संज्ञा पुं० शिला, पत्थर।
प्रस्ताव-संज्ञा पुं० चर्चा, विचार

करने के लिए कुछ लोगों के सामने कही गयी बात।
प्रस्तावना-संज्ञा स्त्री० भूमिका।
प्रस्तुत-वि० (सं०) सामने, उपस्थित। तैयार, उद्यत।
प्रस्थान-संज्ञा पुं० मार्ग, जाना, गमन।
प्रस्थित-वि० (सं०) जो गया हो, स्थिर, ठहरा हुआ, दृढ़।
प्रस्रवण-संज्ञा पुं० पसीना, पानी आदि का बूंद-बूंद कर चूना।
प्रस्वेद-संज्ञा पुं० घर्म, पसीना।
प्रहर-संज्ञा पुं० (सं०) दिन-रात का आठवां भाग, पहर, तीन घंटे का समय।
प्रहरी-वि० पहरा देनेवाला।
प्रहसन-संज्ञा पुं० चुहल, खिल्ली मजाक, हास्य रस का रूपक।
प्रहार-संज्ञा पुं० वार, चोट, आघात।
प्रांगण-संज्ञा पुं० (सं०) मकान का आंगन।
प्रांजल-वि० (सं०) सीधा। सच्चा।
प्रांत-संज्ञा पुं० अन्त, किनारा। सूबा, देश का एक भाग।
प्राकृत-वि० (सं०) प्रकृति-संबंधी, स्वाभाविक।
प्राकृतिक-वि० (सं०) प्रकृति से पैदा हुआ। स्वाभाविक, संसारी।
प्राक्-वि० (सं०) पहले का। संज्ञा पुं० पूर्व दिशा।
प्राची-संज्ञा स्त्री० पूर्व दिशा।
प्राचीन-वि० (सं०) पुराना।
प्राचुर्य-संज्ञा पुं० प्रचुरता। अधिकता। बहुतायत।
प्राच्य-वि० (सं०) पूर्व का। पुराना।
प्राज्ञ-वि० (सं०) विद्वान्, बुद्धिमान्।
प्राण-संज्ञा पुं० वायु, हवा। शरीर की वह वायु जिससे मनुष्य जीवित रहता है। जीवन। जान।
प्राणदंड-संज्ञा पुं० (सं०) मार डाले जाने की सजा।
प्राणदान-संज्ञा पुं० जीवनदान, मरने या मार डालने से बचा लेना।
प्राणधन-वि० (सं०) अत्यन्त प्यारा।
प्राणधारी-वि० वह पदार्थ जिसमें प्राण हों, चेतन, जीवित।
प्राणनाथ-संज्ञा पुं० स्वामी। प्यारा। पति।
प्राणपति-संज्ञा पुं० स्वामी। पति। प्यारा।
प्राणप्यारा-संज्ञा पुं० प्यारा। पति।
प्राणप्रिय-वि० (सं०) प्राणों के समान प्यारा, प्रिय। पति।
प्राणवायु-संज्ञा स्त्री० प्राण, जीव।
प्राणी-वि० जिसमें प्राण हों।
प्राणेश, प्राणेश्वर-संज्ञा पुं० (सं०) बहुत प्यारा। पति।
प्रात, प्रातः, प्रातःकाल-संज्ञा पुं० (सं०) सुबह का समय। सुबह।
प्राथमिक-वि० (सं०) पहले का, आदिम, प्रारंभिक।
प्रादुर्भाव-संज्ञा पुं० उत्पत्ति, प्रकट या उत्पन्न होना, आविर्भाव।
प्रादुर्भूत-वि० (सं०) जो प्रकट या उत्पन्न हुआ हो, प्रकटित।

प्रावेशिक-वि० (सं०) एक प्रदेश का, प्रांतिक ; पुं० सूबेदार।
प्राधान्य-संज्ञा पुं० (सं०) प्रधानता, मुख्यता।
प्राप्त-वि० (सं०) पाया हुआ।
प्राप्ति-संज्ञा स्त्री० उदय, पाना। आय, लाभ, भाग्य, पहुँच।
प्राप्य-वि० (सं०) जो मिल सके।
प्राबल्य-संज्ञा पुं० (सं०) प्रबलता।
प्रामाणिक-वि० (सं०) प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया गया। माननीय।
प्राय-संज्ञा पुं० समान। लगभग।
प्रायः-वि० (सं०) बहुत, ज्यादातर, बहुधा, विशेषकर, लगभग।
प्रायशः-क्रि वि० अकसर।
प्रायश्चित्त-संज्ञा पुं० (सं०) पापों से छुटकारा पाने के लिए शास्त्रानुसार किये गये कृत्य या काम।
प्रारंभ-संज्ञा पुं० (सं०) शुरू, आदि।
प्रारंभिक-वि० (सं०) शुरू का, प्राथमिक, आरम्भ का।
प्रारब्ध-संज्ञा पुं० भाग्य, किस्मत।
प्रार्थना-संज्ञा स्त्री० (सं०) याचना। विनती।
प्रार्थनापत्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह कागज जिस पर लिखकर प्रार्थना की गयी हो।
प्रार्थी-वि० प्रार्थना करनेवाला।
प्रावृट्-संज्ञा पुं० (सं०) वर्षाऋतु।
प्राशन-संज्ञा पुं० भोजन, खाना, चखना।
प्रासंगिक-वि० (सं०) प्रसंग का।
प्रासाद-संज्ञा पुं० (स०) महल।
प्रियंवद-वि० (सं०) मीठा और प्रिय शब्द बोलनेवाला।
प्रिय-संज्ञा पुं० भर्ता, पति, प्यारा।
प्रियतम-वि० (सं०) प्राणों से भी अधिक प्यारा।
प्रियदर्शन-वि० (सं०) जो देखने में प्रिय लगे, सुंदर।
प्रियभाषी-वि० मधुर और प्रिय बोलनेवाला।
प्रिया-संज्ञा स्त्री० नारी, पत्नी। जिस स्त्री से प्रेम हो, प्रेमिका।
प्रीतम-संज्ञा पुं० स्वामी, प्यारा।
प्रीति-संज्ञा स्त्री० सन्तोष, प्रेम।
प्रीतिकर, —कारक-वि० (सं०) प्रेम पैदा करनेवाला।
प्रीतिपात्र-संज्ञा पुं० (सं०) जिससे प्रेम किया जाय, प्रेमी।
प्रीतिभोज-संज्ञा पुं० (सं०) मित्र, बंधुओं आदि को दी गयी दावत।
प्रेक्षक-संज्ञा पुं० (सं०) देखनेवाला, दर्शक।
प्रेक्षण-संज्ञा पुं० चक्षु, आँख। देखना, दर्शन।
प्रेत-संज्ञा पुं० (सं०) मरा हुआ मनुष्य। मरने के बाद मनुष्य की अवस्था।
प्रेतगृह-संज्ञा पुं० (सं०) श्मशान, मरघट।
प्रेतदाह-संज्ञा पुं० (सं०) मृत व्यक्ति को जलाने का कार्य।
प्रेतनी-संज्ञा स्त्री० प्रेत की स्त्री। भूतनी।
प्रेतलोक-संज्ञा पुं० (सं०) यमलोक।

प्रेतविधि-संज्ञा स्त्री० (सं०) मृत व्यक्ति को जलाना।
प्रेम-संज्ञा पुं० प्रियता, प्यार, स्नेह।
प्रेमपात्र-संज्ञा पुं० वह जिससे प्रेम किया जाय, माशूक।
प्रेमालाप-संज्ञा पुं० (सं०) प्रेम के साथ की गयी बातचीत।
प्रेमालिंगन-संज्ञा पुं० प्रेम से गले मिलना।
प्रेमाश्रु-संज्ञा पुं० (सं०) प्रेम के कारण निकलनेवाले आँसू।
प्रेमिक, प्रेमी-संज्ञा पुं० प्रेम करनेवाला, आशिक, आसक्त।
प्रेयसी-संज्ञा स्त्री० प्रियतमा, जिस स्त्री से प्रेम किया जाय, प्रेमिका।
प्रेरक-संज्ञा पुं० (सं०) किसी काम को करने की प्रेरणा देनेवाला।
प्रेरणा-संज्ञा स्त्री० (सं०) काम में लगाना, उत्तेजना देना।
प्रेषक-संज्ञा पुं० (सं०) भेजनेवाला।
प्रेषण-संज्ञा पुं० भेजने का काम।
प्रोत-वि० (सं०) किसी में अच्छी तरह मिला हुआ। गुथा हुआ।
प्रोत्साहन-संज्ञा पुं० (सं०) खूब उत्साह बढ़ाना।
प्रौढ़-वि० (सं०) अच्छी तरह बढ़ा हुआ, पक्का, दृढ़। चतुर।
प्रौढ़ता-संज्ञा स्त्री० प्रौढ़त्व, प्रौढ़ या पक्का होना, चतुरता।
प्रौढ़ा-संज्ञा स्त्री० (सं०) अधिक अवस्थावाली स्त्री।
प्लवन-संज्ञा पुं० उछलना कूदना। तैरना।
प्लावन-संज्ञा पुं० (सं०) नदी आदि की बाढ़। तैरना।
प्लावित-वि० (सं०) जल में बिल्कुल डूब गया हुआ।

फ

फंद-संज्ञा पुं० बन्धन, फंदा, धोखा।
फंदा-संज्ञा पुं० रस्सी आदि का वह घेरा जो किसी को फाँसने के लिए बनाया गया जाल, कष्ट।
फक-वि० सफेद। बदरंग।
फकत-वि० (अ०) केवल। बस।
फकीर-संज्ञा पुं० (अ०) साधु। भीख माँगनेवाला। भिखारी।
फकीरी-संज्ञा स्त्री० साधुता। भिखमंगापन। निर्धनता।
फगुआ-संज्ञा पुं० होली। फाग।
फजर-संज्ञा पुं० (अ०) सबेरा।
फजल-संज्ञा पुं० कृपा, दया।
फजीहत-संज्ञा स्त्री० (अ०) बुरी दशा, अपमान, दुर्दशा।
फजूल-वि० बेकार, व्यर्थ।
फजूलखर्च-वि० (फा०) बेकार में धन खर्च करनेवाला, अपव्ययी।
फटकार-संज्ञा स्त्री० डाँट, झिड़की।
फण-संज्ञा पुं० मुट्ठी, साँप का फन।
फणधर-संज्ञा पुं० सर्प, साँप।

फणिमुक्ता-संज्ञा स्त्री० (सं०) साँप की मणि।
फणींद्र-संज्ञा पुं० वासुकि, शेषनाग।
फणी-संज्ञा पुं० बड़ा साँप।
फणीश-संज्ञा पुं० शेषनाग।
फतह-संज्ञा स्त्री० (अ०) जीत। सफलता।
फन-संज्ञा पुं० साँप का पंखे के आकार का सिर, फण।
फन-संज्ञा पुं० (फा०) गुण, खूबी। विद्या। होशियारी। चालाकी।
फफोला-संज्ञा पुं० छाला।
फबन-संज्ञा स्त्री० सुन्दरता, शोभा।
फबना-क्रि० अ० शोभा देना, सोहना, खिलना।
फरजंद-संज्ञा पुं० (फा०) पुत्र, बेटा।
फरजी-वि० नकली।
फरमाइश-संज्ञा स्त्री० (फा०) किसी चीज को बनाने या लाने के लिए दी गयी आज्ञा।
फरमान-संज्ञा पुं० (फा०) राज्य की ओर से दी जानेवाली आज्ञा, अनुशासनपत्र।
फरमाना-क्रि० स० (फा०) कहना।
फरामोश-वि० भूला हुआ।
फरासीसी-वि० फ्रांस का रहनेवाला।
फरियाद-संज्ञा स्त्री० (फा०) दुःख-कष्ट में सहायता के लिए पुकार।
फरिश्ता-संज्ञा पुं० (फा०) ईश्वर की ओर से भेजा गया दूत, देवदूत।
फरेब-संज्ञा पुं० (फा०) धोखा, कपट, छल।
फरोख्त-संज्ञा स्त्री० (फा०) बेचना, बिक्री।
फर्ज-संज्ञा पुं० (अ०) कर्तव्य। मान लेना। कर्म।
फर्जी-वि० (फा०) माना हुआ, काल्पनिक।
फर्राटा-संज्ञा पुं० तेजी।
फल-संज्ञा पुं० (सं०) वृक्षों में लगनेवाली वनस्पति जिसके अन्दर बीज होता है। नतीजा, काम का परिणाम। छुरी आदि का आगे का धारदार भाग। हल का खोदनेवाला भाग, फाल।
फलक-संज्ञा पुं० (अ०) आकाश। स्वर्ग।
फलतः-अव्य० (सं०) फलस्वरूप, इसलिए।
फलाहार-संज्ञा पुं० (सं०) केवल फल खाना।
फसाद-संज्ञा पुं० (अ०) खराबी। गड़बड़। लड़ाई। उपद्रव।
फाँसी-संज्ञा स्त्री० फंदा। गले में फंदा कसकर मार डालने की क्रिया।
फाकामस्त, फाकेमस्त-वि० (फा०) भूखे रहने पर भी किसी प्रकार की चिन्ता न करनेवाला।
फाग-संज्ञा पुं० होली।
फाजिल-वि० (अ०) जरूरत से ज्यादा विद्वान्, ज्ञानी।
फातहा-संज्ञा पुं० (अ०) प्रार्थना। मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जानेवाला पदार्थ।
फानूस-संज्ञा पुं० (फा०) एक सुन्दर

से दण्ड में लगे शीशे के बहुत से कमल या गिलास जिसमें वत्तियाँ जलायी जाती हैं।
फायदा-संज्ञा पुं० (अ०) लाभ। अच्छा नतीजा। उपकार।
फालतू-वि० आवश्यकता से अधिक, बेकार।
फाश-वि० (फा०) खुला, साफ।
फासला-संज्ञा पुं० (अ०) दूरी।
फिकरा-संज्ञा पुं० (अ०) वाक्य। चुटीली बात, व्यंग्य।
फिक्र-संज्ञा स्त्री० (अ०) सोच, चिन्ता।
फिटकार-संज्ञा स्त्री० धिक्कार। शाप।
फिदवी-वि० आज्ञा माननेवाला।
फितना-संज्ञा पुं० (अ०) झगड़ा।
फितूर-संज्ञा पुं० खराबी, विकार।
फिरंगी-वि० फिरंग देश का, गोरा।
फिरका-संज्ञा पुं० (अ०) जाति। सम्प्रदाय।
फिरार-संज्ञा पुं० (अ०) भाग जाना।
फीरोजा-संज्ञा पुं० (फा०) हरापन लिये नीले रंग का एक रत्न।
फीरोजी-वि० (फा०) हरापन लिये नीला।
फील-संज्ञा पुं० (फा०) हाथी।
फुटकर, फुटकल-वि० भिन्न-भिन्न। कई तरह का।
फुफकार-संज्ञा पुं० साँप के मुँह से निकली हुई ध्वनि, फुंकार।
फुफकारना-क्रि० अ० साँप का मुँह से फुत्कार करना।
फुरती-संज्ञा स्त्री० शीघ्रता।
फुरतीला-वि० तेज।
फुरेरी-संज्ञा स्त्री० सिरे पर हलकी रूई लपेटी छोटी सींक।
फुलका-संज्ञा पुं० हलकी पतली रोटी। छोटी कड़ाही।
फुलझड़ी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की आतशबाजी। हँसी की बात।
फुलवारी-संज्ञा स्त्री० छोटा बाग, बगीचा।
फुलेल-संज्ञा पुं० खुशबू से बासा हुआ तेल।
फुसफुसाना-क्रि० स० धीमे स्वर से बोलना।
फुसलाना-क्रि० स० मीठी-मीठी बातें कहकर अपने पक्ष में कर लेना, बहकाना।
फुहार-संज्ञा स्त्री० महीन बूँदों का लगातार गिरना।
फुहारा-संज्ञा पुं० पानी का हलका छींटा। पानी का ऊपर की ओर उछाल, फव्वारा।
फूंक-संज्ञा स्त्री० मुँह से तेजी से छोड़ी हुई हवा।
फूँकना-क्रि० स० मुँह से तेजी से हवा छोड़ना। मंत्र पढ़कर किसी के ऊपर मुँह से हवा छोड़ना। जलाना, बरबाद करना। बेकार में खर्च करना।
फूट-संज्ञा स्त्री० विरोध, बैर, एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।
फूफा-संज्ञा पुं० पिता की बहिन का पति।

फूफी-संज्ञा स्त्री० पिता की बहिन, बूआ।

फूहड़-वि० जिसे काम करने को तमीज न हो। बेढंगा, भद्दा।

फेंट-संज्ञा स्त्री० कमर में लपेटा जानेवाला धोती का भाग।

फेंटा-संज्ञा पुं० छोटी पगड़ी।

फेन-संज्ञा पुं० झाग, नाक का मल।

फेफड़ा-संज्ञा पुं० छाती के अन्दर वह अंग जिससे साँस लेते हैं।

फेर-संज्ञा पुं० चक्कर। घूमना।

फेरफार-संज्ञा पुं० उलट-पुलट, परिवर्तन। चक्कर।

फेरा-संज्ञा पुं० चक्कर। घुमाव। बारंबार आना।

फेरीवाला-संज्ञा पुं० इधर-उधर घूम-घूमकर सौदा बेचनेवाला।

फोकट-वि० निःसार, पोला, बेकार।

फोता-संज्ञा पुं० (फा०) थैली। अंडकोष।

फौजदारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) मारपीट, लड़ाई।

फौरन-क्रि० वि० (अ०) उसी समय, तुरंत।

फ्रांसीसी-वि० फ्रांस का रहनेवाला।

ब

बंक-वि० टेढ़ा, तिरछा। संज्ञा पुं० वह थैला जिसमें ... जमा करती हैं।

बंचकता, बंचकताई-संज्ञा स्त्री० (ग्रा०) छल, चालबाजी कपट।

बंजर-संज्ञा पुं० ऊसर।

बंदगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) प्रणाम।

बंदन-संज्ञा पुं० ईंगुर, सिन्दूर।

बंदरगाह-संज्ञा पुं० (फा०) समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं।

बंदा-संज्ञा पुं० (फा०) दास, सेवक।

बंदिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) रोक, प्रतिबंध, उपाय, साजिश।

बंदी-संज्ञा पुं० (सं०) राजाओं की बड़ाई गानेवाली एक जाति, भाट। संज्ञा पुं० (फा०) कैदी।

बंदीखाना-संज्ञा पुं० (फा०) जहाँ कैदी रखे जाते हैं, कैदखाना।

बंदोबस्त-संज्ञा पुं० (फा०) इन्तजाम। खेती की भूमि नापकर कर लगाना।

बंध-संज्ञा पुं० बन्धन, गाँठ, शरीर, कैद।

बंधक-संज्ञा पुं० (सं०) धनी के यहाँ कर्ज के बदले में रखी गयी वस्तु, रेहन।

बंधन-संज्ञा पुं० बाँधने की क्रिया। जिससे कोई चीज बाँधी जाय। कैदखाना।

बंधु-संज्ञा पुं० भाई-बंद। साथी।

बंधुता, बंधुत्व-संज्ञा पुं० मित्रता, भाई होना, भाई-चारा। दोस्ती, बंधुता।

बंध्या-वि० स्त्री० (सं०) जिस स्त्री से संतान न होती हो, बाँझ।

बंध्यापुत्र-संज्ञा पुं० (सं०) असंभव चीज, जैसे बंध्या का पुत्र।

बंपुलिस-संज्ञा स्त्री० म्युनिसिपैलिटी का बनाया संडास।

बंबा-संज्ञा पुं० पानी की कल। नल।

बक-संज्ञा पुं० बगुला। संज्ञा स्त्री० बकवाद, बकबक।

बकध्यान-सं० पुं० किसी कुटिल काम के लिए साधु बनकर बैठना, जैसे बगला मछली के लिए ध्यान लगाता है।

बकवाद-संज्ञा स्त्री० बेकार की बात।

बखान-संज्ञा पुं० वर्णन। बड़ाई।

बखानना-क्रि० स० खोलकर कहना, वर्णन करना। प्रशंसा करना।

बखेड़ा-संज्ञा पुं० आडम्बर, विवाद, झगड़ा, मुश्किल, उलझन।

बख्शना-क्रि० स० दान करना। छोड़ना। माफ करना।

बगमेल-संज्ञा पुं० बराबर-बराबर चलना, समानता।

बगला-संज्ञा पुं० एक सफेद रंग का पानी का पक्षी।

बगलामुखी-संज्ञा स्त्री० (देश०) तांत्रिकों की एक देवी।

बगावत-संज्ञा स्त्री० (अ०) राज्य का विरोध करना, राज-विद्रोह, बदअमली।

बगीचा-संज्ञा पुं० उपवन, वाटिका।

बगूला-संज्ञा पुं० ... घूमनेवाली वायु का भँवर।

बचन-संज्ञा पुं० कहा हुआ, वाणी, वचन।

बजाय-अव्य० (फा०) बदले में।

बटखरा-संज्ञा पुं० तौलने के बाट।

बटमार-संज्ञा पुं० मारकर छीन लेनेवाला, डाकू, ठग।

बटोही-संज्ञा पुं० पथिक, राही।

बड़-संज्ञा पुं० बरगद का वृक्ष। वि० बड़ा।

बड़भाग, बड़भागी-वि० बड़े या अच्छे भाग्यवाला, भाग्यवान्।

बड़ाई-संज्ञा स्त्री० बड़ा होना, श्रेष्ठता। महिमा, प्रशंसा।

बड़ादिन-संज्ञा पुं० इसाइयों का २५ दिसम्बर का त्योहार, क्रिसमस।

बढ़ई-संज्ञा पुं० लकड़ी की चीजें बनानेवाला।

बणिक्-संज्ञा पुं० विक्रेता, व्यापार करनेवाला, बनिया।

बद-वि० (फा०) खराब, दुष्ट, नीच।

बदकिस्मत-वि० खराब किस्मत या भाग्यवाला, अभागा।

बदचलन-वि० (फा०) बुरे रास्ते पर चलनेवाला, कुमार्गी।

बदजात-वि० नीच, दुष्ट, बुरा।

बदतर-वि० (फा०) और भी बुरा।

बददुआ-संज्ञा स्त्री० शाप।

बदनसीब-वि० खराब नसीब या भाग्यवाला, अभागा।

बदनाम-वि० (फा०) जिसकी निंदा

हो, कलंकित।
बदनामी-संज्ञा स्त्री० (फा०) किसी की बुरी ख्याति, लोकनिन्दा।
बदबू-संज्ञा स्त्री० (फा०) खराब गंध।
बदमाश-वि० बुरे काम करनेवाला, नीच।
बदमिजाज-वि० (फा०) बुरे स्वभाववाला।
बदला-संज्ञा पुं० लेनदेन, विनिमय। किसी के व्यवहार के समान ही उससे व्यवहार, प्रतिकार।
बद्धकोष्ठ-संज्ञा पुं० (सं०) एक रोग, कब्ज।
बद्धपरिकर-वि० (सं०) कमर बाँधे हुए, तैयार, प्रस्तुत।
बधाई-संज्ञा स्त्री० बढ़ती। शुभ मौके का गाना। शुभ अवसर पर कहा जानेवाला शब्द, मुबारकबाद।
बधावा-संज्ञा पुं० बधाई।
बधिक-संज्ञा पुं० वध करनेवाला, हत्यारा, व्याध, बहेलिया।
बधिर-संज्ञा पुं० (सं०) जो सुन न सके, बहरा।
बन-संज्ञा पुं० जंगल। बाग।
बनचर-संज्ञा पुं० जंगल के जानवर। वन्य पशु, जंगली मनुष्य।
बनजारा-संज्ञा पुं० बैलों पर अन्न लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान परले जानेवाला। व्यापारी।
बनज्योत्स्ना-संज्ञा स्त्री० एक लता, माधवी लता।
बनवास-संज्ञा पुं० जंगल में रहना। देश से निकाले जाने का दंड।
बनवासी-संज्ञा पुं० जंगल में रहनेवाला। जंगली।
बनमानुष-संज्ञा पुं० मनुष्यसे मिलता-जुलता एक जंगली जानवर।
बनमाला-संज्ञा स्त्री० तुलसी, कुंद, मंदार, पारिजात और कमल की बनी माला।
बनाव-संज्ञा पुं० बनावट। सजावट।
बनावट-संज्ञा स्त्री० बनाना, रचना। बनने या बनाने का भाव, ऊपरी दिखावा।
बनावटी-वि० कृत्रिम, दिखौवा।
बपतिस्मा-संज्ञा पुं० किसी व्यक्ति को ईसाई बनाने के समय किया जानेवाला संस्कार।
बमूजिब-क्रि० वि० (फा०) अनुसार, तरह।
बया-संज्ञा पुं० एक पक्षी।
बयाना-संज्ञा पुं० किसी काम के कराने में पक्की बात के लिए पहले ही दिया जानेवाला धन, पेशगी।
बरखास्त-वि० (फा०) नौकरी से हटा दिया गया हुआ।
बरखिलाफ-क्रि० वि० बिलकुल उलटा, विरुद्ध।
बरताव-संज्ञा पुं० पेश आने का ढंग, व्यवहार।
बरदाश्त-संज्ञा स्त्री० (फा०) सहन करने की शक्ति, सहनशक्ति।
बरना-क्रि० स० ब्याहना। क्रि० अ० जलना।

बरबाद-वि० (फा०) नष्ट, चौपट।
बरबादी-संज्ञा स्त्री० (फा०) नाश।
बरसगाँठ-संज्ञा स्त्री० जन्म-दिन।
बरसात-संज्ञा स्त्री० पानी बरसने के दिन, वर्षाऋतु, वर्षाकाल।
बरसाती-वि० वर्षा-सम्बन्धी, संज्ञा पुं० एक कपड़ा जिसे पहन लेने से शरीर नहीं भीगता।
बरुनी-संज्ञा स्त्री० पलक के किनारे के बाल।
बर्बर-संज्ञा पुं० अनार्य, असभ्य मनुष्य। वि० असभ्य, जंगली।
बल-संज्ञा पुं० सामर्थ्य, ताकत, रुधिर, कौवा, कोंपल, वीर्य।
बलबीर-संज्ञा पुं० श्री कृष्ण।
बलराम-संज्ञा पुं० (सं०) कृष्णचन्द्र के बड़े भाई।
बलवा-संज्ञा पुं० (फा०) गड़बड़, विप्लव, बगावत, उपद्रव।
बलवाई-संज्ञा पुं० बलवा करनेवाला, विद्रोही, उपद्रवी।
बलवान्-वि० (सं०) बलिष्ठ, दृढ़, ताकतवर।
बलशाली-वि० बलवान्।
बला-संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसीबत, आपत्ति। भूत-प्रेत की बाधा। रोग।
बलाका-संज्ञा स्त्री० (सं०) बगलों की लाइन।
बलाढ्य-वि० (सं०) शक्तिशाली, बली, बलवान्।
बलात्-क्रि० वि० (सं०) बल से [illegible]
बलात्कार-संज्ञा पुं० (सं०) जबरदस्ती कोई कार्य करना। किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध संभोग करना।
बलाय-संज्ञा स्त्री० (ग्रा०) आपत्ति, बहुत कष्ट देनेवाला मनुष्य।
बलि-संज्ञा पुं० (सं०) भूमि का कर, भेंट, चँवर का डंडा, देवता पर चढ़ाने के लिए मारा गया पशु, मार डालना।
बलिदान-संज्ञा पुं० (सं०) देवता पर चढ़ाने को पशुओं को मारना।
बलिपशु-संज्ञा पुं० देवता के लिए मारा जानेवाला पशु।
बलिष्ठ-वि० (सं०) बहुत बलवान्।
बलिहारी-संज्ञा स्त्री० प्रेम आदि के कारण अपने को उत्सर्ग करना, निछावर।
बली-वि० बलवाला, पराक्रमी।
बलैया-संज्ञा स्त्री० बलाय।
बल्कि-अव्य० (फा०) इसके खिलाफ, प्रत्युत।
बवंडर-संज्ञा पुं० घूमती हुई चलनेवाली हवा, चक्रवात। आँधी।
बवासीर-संज्ञा स्त्री० (अ०) एक गुदा का रोग।
बसंत-वि० वसंत ऋतु का।
बसीठ-संज्ञा पुं० संदेशा ले जानेवाला, दूत।
बस्ती-संज्ञा स्त्री० बहुत से घरों का समूह जिसमें लोग बसते हों।
बहरा-वि० जो कान से सुन न सके,

बधिर।

बहलाव-संज्ञा पुं० मन को हलके काम में लगाना, मनोरंजन।

बहस-संज्ञा स्त्री० (अ०) बातचीत। दलील, तर्क। वाद-विवाद, हुज्जत। बाजी।

बहादुर-वि० (फा०) बड़ा वीर, वीरता, शूरता।

बहार-संज्ञा स्त्री० (फा०) वसंत ऋतु। आनन्द, मौज। रौनक।

बहाल-वि० पहले की तरह, ज्यों का त्यों। अच्छा-भला, स्वस्थ।

बहाली-संज्ञा स्त्री० फिर उसी स्थान पर रखना।

बहिरंग-वि० (सं०) बाहर का, बाहरवाला। जो अतरंग न हो।

बहिर्गत-वि० (सं०) बाहर निकला हुआ।

बहिष्कार-संज्ञा पुं० (सं०) बाहर निकालना। हटाना।

बहिष्कृत-वि० बाहर निकाला या बहिष्कार किया हुआ।

बही-संज्ञा स्त्री० हिसाब-किताब लिखने की पुस्तक।

बहुज्ञ-वि० (सं०) बहुत जानने-वाला।

बहुत्व-संज्ञा पुं० (सं०) आधिक्य, अधिकता।

बहुदर्शिता-संज्ञा स्त्री० (सं०) बहुत सी बातों की जानकारी।

बहुदर्शी-संज्ञा पुं० जो बहुत कुछ देख चुका हो, अनुभवी।

बहुधा-क्रि० वि० ज्यादातर, अधिक-तर, अकसर।

बहुमत-संज्ञा पुं० (सं०) किसी झुण्ड के बहुत से लोगों की एक राय, बहुत-संख्यक लोगों का मत।

बहुमूत्र-संज्ञा पुं० (सं०) बहुत मूत्र आने का एक रोग।

बहुमूल्य-वि० सं० अधिक दाम का, कीमती।

बहुरूपिया-संज्ञा पुं० तरह-तरह के रूप बनाकर दिखाकर अपनी जीविका चलानेवाला।

बहुल-वि० (सं०) बहुत, अधिक।

बहुलता-संज्ञा स्त्री० (सं०) अधि-कता।

बहुवचन-संज्ञा पुं० (सं०) व्याकरण में वह शब्द जिससे कई चीजों का बोध होता है।

बहुव्रीहि-संज्ञा पुं० (सं०) एक समास।

बहुश्रुत-वि० (सं०) जो बहुत सी बातें सुन चुका हो, जानकार।

बहुसंख्यक-वि० (सं०) गिनती में बहुत।

बहू-संज्ञा स्त्री० पुत्र की स्त्री। पतोहू, दुलहिन, पत्नी, स्त्री।

बहेलिया-संज्ञा पुं० पक्षियों को पकड़ने तथा मारनेवाला, व्याध।

बाँक-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छुरी। सज्ञा पुं० टेढ़ापन।

बाँकड़ी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सुनहला या रुपहला फीता।

बाँकपन-संज्ञा पुं० टेढ़ापन, शोभा, बनाव, छैलापन।

बांका-वि० तिरछा । बहादुर । बना-ठना, छैला ।
बाँकुर, बाँकुरा-वि० (ग्रा०) टेढ़ा । पैनी धार का । बांका, चालाक, चतुर ।
बाँग-संज्ञा स्त्री० (फा०) पुकार । नमाज के समय मुल्ला के द्वारा पुकारा जानेवाला मंत्र । मुरगे का शब्द ।
बाँचना-क्रि० स० पढ़ना ।
बाँझ-संज्ञा स्त्री० जिस स्त्री से संतान न उत्पन्न हो सके, बंध्या ।
बाँदी-संज्ञा स्त्री० लौंड़ी । दासी ।
बाँध-संज्ञा पुं० नदी आदि के पानी को रोकने के लिए बनायी गयी दीवाल ।
बाँसुरी-संज्ञा स्त्री० बाँस का बना मुंह से फूंककर बजाया जानेवाला एक बाजा, वंशी ।
बाँह-संज्ञा स्त्री० बाहु, हाथ, भुजा ।
बांछा-संज्ञा स्त्री० (ग्रा०) इच्छा ।
बांछित-वि० जिसकी इच्छा की जाय, इच्छित ।
बांधव-संज्ञा पुं० भाई-बन्धु । रिश्तेदार । मित्र ।
बाकी-वि० बचा हुआ, शेष ।
बाग-संज्ञा पुं० (अ०) जहां बहुत से वृक्ष, पौधे, फूल आदि लगे हों, उद्यान ।
बागडोर-संज्ञा स्त्री० लगाम ।
बागबान-संज्ञा पुं० (फा०) माली ।
बागबानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) माली का काम ।
बागी-संज्ञा पुं० (अ०) राज्य के खिलाफ कार्य करनेवाला, विद्रोही ।
बाघ-संज्ञा पु० एक भयकर जगली जीव सिंह, शेर ।
बाचा-संज्ञा स्त्री० बोलने की शक्ति ।
बाज-संज्ञा पुं० एक शिकारी पक्षी ।
बाजरा-संज्ञा पुं० एक मोटा अन्न ।
बाजा-संज्ञा पुं० बजाने का यंत्र, जैसे तबला आदि ।
बाजाब्ता-क्रि० वि० (फा०) नियम से, नियमानुकूल ।
बाजार-संज्ञा पुं० (फा०) जहाँ बेचने-खरीदने का काम होता हो, हाट ।
बाजारू-वि० बाजार का । मामूली ।
बाजी-संज्ञा स्त्री० (फा०) लेन-देनवाली शर्त । दाँव, खेल ।
बाजीगर-संज्ञा पुं० (फा०) जादूगर ।
बाजू-संज्ञा पुं० बाँह, भुजा ।
बाजूबंद-संज्ञा पुं० (फा०) बाँह पर पहिनने का एक गहना ।
बाट-संज्ञा पुं० रास्ता । तौलने का बाँट ।
बाटिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) फुलवारी, उद्यान, बगीचा ।
बाड़व-संज्ञा पुं० (सं०) समुद्र के अन्दर की आग ।
बाड़ा-संज्ञा पु० पशुओं के रहने का चारों ओर से घिरा स्थान ।
बाढ़-संज्ञा स्त्री० नदी आदि में पानी का बढ़कर किनारों को डुबा देना । बढ़ाव ।
बाण-संज्ञा पुं० अग्नि, तीर ।

बाणिज्य-संज्ञा पुं० (सं०) व्यापार।
बातुल-वि० पागल, सनकी ।
बातूनिया, बातूनी-बहुत बात करने-वाला, बकवादी।
बादशाह-संज्ञा पुं० (फा०) राजा, सम्राट् । ताश का एक पत्ता।
बादामी-वि० बादाम के छिलके के रंग का ।
बाध-संज्ञा पुं० प्रतिबन्ध, रुकावट ।
बाधक-संज्ञा पुं० (सं०) रुकावट करनेवाला ।
बाधना-क्रि० स० अड़चन डालना, रोकना ।
बाध्य-वि० (सं०) दबाकर मजबूर किया गया । जिससे जबरदस्ती काम लिया जाय ।
बान-संज्ञा पुं० तीर, एक आतश-बाजी, अभ्यास, बनावट, कान्ति ।
बानक-संज्ञा स्त्री० सज-धज ।
बानगी-संज्ञा स्त्री० नमूना ।
बानर-संज्ञा पुं० बंदर ।
बानी-संज्ञा स्त्री० कहा हुआ, वचन। कबीर की बानी ।
बापुरा-वि० बहुत छोटा, तुच्छ । दीन, बेचारा।
बापू-संज्ञा पुं० पिता, बाप ।
बाबत-संज्ञा स्त्री० (अ०) सम्बन्ध।
बाबा-संज्ञा पुं० पिता, बाप, दादा, पितामह । बूढ़ा व्यक्ति । संज्ञा पुं० (अ०) बच्चों के लिए प्यार का शब्द ।
बाबुल-संज्ञा पुं० पिता, बाप ।
बाबू-संज्ञा पुं० आदर-सूचक शब्द । पिता ।
बाम-वि० सिर का अगला भाग।
बारंबार-क्रि० वि० लगातार । पुनः-पुनः । बार- बार।
बार-संज्ञा पुं० दरवाजा । संज्ञा स्त्री० काल, समय, देर । दफा, मरतबा ।
बारना-क्रि० अ० मना करना, रोकना । क्रि० स० जलाना ।
बारबधू-संज्ञा स्त्री० (कवि०) वेश्या, रंडी ।
बारहदरी-संज्ञा स्त्री० बारह दरवाजों-वाला हवादार कमरा ।
बारहमासी-वि० सभी ऋतुओं में रहनेवाला, सदाबहार ।
बारहसिंहा-संज्ञा पुं० एक बड़े सींगों-वाला हिरन की जाति का पशु ।
बारा-वि० जो सयाना न हो, पुं० लड़का ।
बारात-संज्ञा स्त्री० विवाह में वर के साथ उसके इष्ट-मित्रों का वधू के घर जाना ।
बारिधर-संज्ञा पुं० बादल ।
बारिश-संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) बरसात, वर्षा ।
बारी-संज्ञा स्त्री० बगीचा । घर । एक के बाद एक का नम्बर, पारी । संज्ञा पुं० एक जाति । संज्ञा स्त्री० लड़की जो सयानी न हो ।
बारीक-वि० (फा०) महीन । बहुत पतला । बहुत ध्यान देकर समझ में आनेवाला ।

बारीकी-संज्ञा स्त्री० (फा०) महीनपन, बारीकपन, सूक्ष्मता।
बारूद-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का चूर्ण जिसमें आग लगाकर बंदूक या तोप आदि चलायी जाती है।
बारे में-अव्य० संबंध में।
बाल-संज्ञा पुं० (सं०) बच्चा, बालक। बहुत महीन काली वस्तु जो चमड़े के ऊपर उगती है।
बालक-संज्ञा पुं० पुत्र। बच्चा।
बालकपन-संज्ञा पुं० (काव०) बालक होना, लड़कपन।
बालतंत्र संज्ञा पुं० (सं०) बच्चों को पालने-पोसने की विद्या।
बालतोड़-संज्ञा पुं० एक फोड़ा जो बाल टूटने से होता है।
बालपन-संज्ञा पुं० बाल्यावस्था, बचपन।
बालबच्चे-संज्ञा पुं० संतान, लड़के-बच्चे।
बालम-संज्ञा पुं० पति। प्रेमी।
बालमुकुंद-संज्ञा पुं० बाल्यावस्था के कृष्ण।
बाललीला-संज्ञा स्त्री० (सं०) बच्चों के खेल।
बालसूर्य-संज्ञा पुं० प्रातःकाल का सूरज।
बाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) जवान स्त्री। स्त्री।
बालाई-संज्ञा स्त्री० मलाई।
बालार्क-संज्ञा पुं० उदय-काल का सूर्य।
बालिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) छोटी लड़की, कन्या।
बालिग-संज्ञा पुं० (अ०) जवान।
बालिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) तकिया। वि० (सं०) मूर्ख, अबोध।
बाली-संज्ञा स्त्री० कान का एक गहना। जौ, गेहूँ, धान आदि की बाल।
बालुका-संज्ञा स्त्री० ककड़ी, रेत, बालू।
बालू-संज्ञा पुं० पत्थरों के बहुत ही महीन टुकड़े जो नदियों के किनारे या रेगिस्तानों में फैले रहते हैं।
बाल्यावस्था-संज्ञा स्त्री० (सं०) बचपन की सोलह-सत्रह तक की अवस्था, लड़कपन।
बावरची-संज्ञा पुं० (फा०) खाना पकानेवाला, रसोइया।
बावरचीखाना-संज्ञा पुं० (फा०) जहां खाना पकाया जाय, रसोई।
बावला-वि० पागल।
बावलापन-संज्ञा पुं० पागलपन।
बावली-संज्ञा स्त्री० छोटा गहरा तालाब या चौड़े मुंह का कुआं।
बाशिंदा-संज्ञा पुं० (फा०) रहनेवाला, निवासी।
बाष्प-संज्ञा पुं० भाप,लोहा,आंसू।
बास-संज्ञा पुं० निवास। रहने की जगह। महक, गंध।
बासन-संज्ञा पुं० पात्र, बरतन।
बाहम-क्रि० वि० (फा०) आपस में।
बाहुबल-संज्ञा पुं० पराक्रम, बहादुरी।
बाहुयुद्ध-संज्ञा पुं० मल्लयुद्ध, कुश्ती।

बाहुल्य-संज्ञा पुं० आधिक्य, अधिकता।
बाह्य-वि० (सं०) बाहर का, बाहरी।
बिंदी-संज्ञा स्त्री० सिफर, बिंदु। मत्थे पर लगाने की टिकुली।
बिंदुली-संज्ञा स्त्री० टिकुली।
बिंब-संज्ञा पुं० छाया, प्रतिबिंब। सूर्य या चन्द्रमा का मण्डल।
बिंबा-संज्ञा पुं० (सं०) एक फल, कुंदरू। छाया। चन्द्रमा या सूर्य का मण्डल।
बिआना-क्रि० स० पशुओं का बच्चा देना, जनना।
बिकसना-क्रि० अ० खिलना, फूलना।
बिक्री-संज्ञा स्त्री० किसी पदार्थ को बेचना। बेचने से मिला धन।
बिगड़ेदिल-संज्ञा पुं० हर बात पर लड़नेवाला। नाराज। बुरे रास्ते पर चलनेवाला।
बिगड़ैल-वि० बात-बात पर नाराज होनेवाला। जिद्दी।
बिगाड़-संज्ञा पुं० खराबी, लड़ाई-झगड़ा, दोष, बुराई।
बिचलना-क्रि० अ० हिम्मत हारना। किसी वादे से मुकर जाना।
बिचला-वि० बीच का।
बिछुड़ना-क्रि० अ० अलग होना। प्रेमियों का अलग होना, वियोग होना।
बिछोय, बिछोह-संज्ञा पुं० बिछुड़ जाना, वियोग, बिरह।
बिजली-संज्ञा स्त्री० एक शक्ति, विद्युत्। बादलों में पैदा होने-वाली चमक।
बिडंबना-क्रि० अ० नकल। उपहास, हँसी।
बिड़ौजा-संज्ञा पु० (सं०) इन्द्र।
बिताना-क्रि० स० काटना, गुजारना।
बित्त-संज्ञा पुं० धन-दौलत। हैसियत।
बित्ता-संज्ञा पुं० हाथ की उँगलियाँ फैलाने पर अँगूठे के सिरे से कानी उँगली के छोर तक की दूरी।
बिदा-संज्ञा स्त्री० चला जाना, प्रस्थान। विवाह की एक रस्म, गौना।
बिदाई-संज्ञा स्त्री० अलग-अलग होना, चला जाना। बिदा के समय दिया जानेवाला धन।
बिध-संज्ञा स्त्री० तरह, प्रकार।
बिनति, बिनती-संज्ञा स्त्री० निवेदन, प्रार्थना।
बिनसना-क्रि० अ० बरबाद होना। क्रि० स० बरबाद करना।
बिनसाना-क्रि० स० बरबाद कर डालना, बिगाड़ना, नष्ट होना।
बिना-अव्य० बगैर, छोड़कर।
बिनाई-संज्ञा स्त्री० चुनने का काम। बुनना, इस कार्य का शुल्क।
बिबाई-संज्ञा स्त्री० पैरों का तलवा फट जाने का रोग।
बिमोहना-क्रि० स० मोहित करना, लुभाना।
बियाबान-संज्ञा पुं० (फा०) उजाड़ और सुनसान जगह या जंगल।
बिरला-वि० सब में से कोई

एक, कोई-कोई, इक्का दुक्का ।
बिरही-संज्ञा पुं० प्रेमिका के वियोग से दुःखी व्यक्ति ।
बिराजना-क्रि० अ० बैठना ।
बिरादर-संज्ञा पुं० (फा०) भाई ।
बिरादरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) भाई चारा ।
बिल-संज्ञा पुं० छेद । जमीन के अन्दर खोदकर बनाया गया छेद।
बिलकुल-क्रि० वि० (अ०) पूरा-पूरा, सब ।
बिलखना-क्रि० अ० रोना, विलाप करना, दुःखी होना ।
बिलग-वि० पृथक्, जुदा ।
बिल्टी-संज्ञा स्त्री० रेल के द्वारा भेजे गये माल की रसीद ।
बिलबिलाना-क्रि० अ० प्रलाप करना, छोटे-छोटे कीड़ों का इधर-उधर रेंगना ।
बिला-अव्य० (अ०) बिना ।
बिलोकना-क्रि० स० देखना । जाँच करना ।
बिल्ला-संज्ञा पुं० पीतल की पट्टी जिस पर संस्था का चिह्न बना होता है।
बिल्लौर-संज्ञा पुं० एक बहुत स्वच्छ पत्थर, स्फटिक ।
बिल्लौरी-वि० बिल्लौर का ।
बिस-संज्ञा पुं० (सं०) कमल की नाल ।
बिसखपरा-संज्ञा पुं० एक विषैला जन्तु । एक जंगली बूटी ।
बिसराना-क्रि० स० भुलाना ।
बिसात-संज्ञा स्त्री० (अ०) है-सियत, फैलाव, समाई, शतरंज या चौपड़ आदि खेलने का कपड़ा ।
बिसाती-संज्ञा पुं० (अ०) सुई, तागा, खिलौने आदि बेचनेवाला ।
बिस्तुइया-संज्ञा स्त्री० गृहगोधा, छपकली ।
बिहाग-संज्ञा पुं० एक राग ।
बिहान-संज्ञा पुं० सबेरा । कल ।
बिहिश्त-संज्ञा पुं० (फा०) स्वर्ग ।
बिहीन-वि० बिना, रहित ।
बीघा-संज्ञा पुं० (ग्रा०) खेत नापने का मान ।
बीछी-संज्ञा स्त्री० (ग्रा०) एक कीड़ा, बिच्छू ।
बीज-संज्ञा पुं० (सं०) जिससे पेड़-पौदे उत्पन्न होते हैं । खास कारण ।
बीजक-संज्ञा पुं० (सं०) सूची । वह सूची जिसमें माल का ब्योरा रहता है । कबीर के पदों का एक संग्रह । असना का वृक्ष ।
बीजगणित-संज्ञा पुं० (सं०) अक्षरों को संख्या मानकर लगायी जाने-वाली गणित ।
बीजमंत्र-संज्ञा पुं० (सं०) मूल मंत्र, गुर ।
बीड़ा-संज्ञा पुं० पान की गिलौरी ।
बीड़ी-संज्ञा स्त्री० पत्ते में सुरती आदि लपेटकर बनाई जानेवाली, जिसे सुलगाकर पीते हैं ।
बीबी-संज्ञा स्त्री० (फा०) पत्नी, स्त्री, बेटी, छोटी ननद ।
बीभत्स-वि० (सं०) जिसे देखकर घृणा पैदा हो ।

बीमा-संज्ञा पुं० कुछ निश्चित धन लेकर आर्थिक हानि की पूरी करने की जिम्मेदारी लेना ।
बीमार-वि० (फा०) रोगी ।
बीरन-संज्ञा पुं० भ्राता, भाई।
बीहड़-वि० ऊँचा-नीचा, विषम । विकट, पृथक् ।
बुंदकी-संज्ञा स्त्री० छोटी गोल बिंदी, छोटा गोल चिह्न ।
बुंदेला-संज्ञा पुं० एक क्षत्रिय वंश । राजपूतों का एक भेद ।
बुंद-संज्ञा स्त्री० बूंद ।
बुंदा-संज्ञा पुं० कान का एक गहना ।
बुंदेलखंड-संज्ञा पुं० उत्तर प्रदेश का एक झांसी-जालौन की ओर का भाग ।
बुकचा-संज्ञा पुं० गठरी ।
बुकनी-संज्ञा स्त्री० महीन पिसा चूरा।
बुक्का-संज्ञा पुं० अभ्रक का पिसा चूर्ण।
बुखार-संज्ञा पुं० (अ०) ज्वर, शरीर की गरमी की तेजी । क्रोध या दुःख होना ।
बुजदिल-वि० (फा०) कायर, डरपोक ।
बुजुर्ग-वि० (फा०) वृद्ध, बड़ा । संज्ञा पुं० पुरखा, बाप-दादा ।
बुढ़ापा-संज्ञा पुं० बुड्ढे होने की अवस्था, वृद्धावस्था ।
बुत-संज्ञा पुं० पत्थर की मूर्ति, प्रतिमा । वि० मूर्ति की तरह जड़वत् ।
बुतपरस्त-संज्ञा पुं० (फा०) मूर्ति की पूजा करनेवाला ।
बुद्ध-वि० (सं०) ज्ञानी, विद्वान् । संज्ञा पुं० बौद्ध धर्म को चलानेवाले राजर्षि सिद्धार्थ ।
बुद्धि-संज्ञा स्त्री० (सं०) ज्ञान, अक्ल ।
बुद्धिमत्ता-संज्ञा स्त्री० बुद्धिमान होने का भाव ।
बुद्धिवंत-वि० बुद्धिमान् ।
बुद्धिहीन वि० (सं०) जिसके अक्ल न हो, मूर्ख, बेवकूफ ।
बुध-संज्ञा पुं० (सं०) एक ग्रह । विद्वान् और पण्डित आदमी ।
बुनावट-संज्ञा स्त्री० बुनने में सूतों की मिलावट का ढंग, बुनाई ।
बुनियाद-संज्ञा स्त्री० (फा०) जड़, मूल, नीवँ ।
बुभुक्षा-संज्ञा स्त्री० क्षुधा, भूख, खाने की इच्छा ।
बुभुक्षित-वि० (सं०) भूखा ।
बुर्ज-संज्ञा पुं० (अ०) मीनार या इमारतों मे ऊपर ऊँचे उठा हुआ गोल भाग, गुंबद ।
बुलंद-वि० भारी, खूब ऊँचा ।
बुलबुल-संज्ञा स्त्री० गानेवाली एक छोटी चिड़िया ।
बुलबुला-संज्ञा पुं० पानी का बुद-बुदा।
बुहारना-क्रि० स० झाड़ू से साफ करना।
बुहारी-संज्ञा स्त्री० जिससे झाड़ा जाता है, झाड़ू, बढ़नी, सोहनी।
बूँद-संज्ञा स्त्री० जल आदि का सबसे छोटा अंश ।

बूंदाबांदी-संज्ञा स्त्री० हलका पानी बरसना ।

बूचड़-संज्ञा पुं० जानवरों को मार-कर उनका मांस बेचनेवाला, कसाई ।

बूचड़खाना-संज्ञा पुं० जहां पशुओं को मारा जाता है, कसाईखाना ।

बूचा-वि० जिसका कान कटा हो ।

बूझना-क्रि० स० समझना, जान लेना, प्रश्न करना, पूछना ।

बूटा-संज्ञा पुं० छोटा पौदा । कपड़ों आदि पर बनाये जानेवाले फूल-पत्तियों के आकार । बड़ी बूटी ।

बूटी-संज्ञा स्त्री० जड़ी, जंगली वनस्पति । भांग । कपड़ों आदि पर बनाये जानेवाले फूलों आदि के छोटे चिह्न ।

बूड़ना-क्रि० स० डूबना । बरबाद होना । लीन होना ।

बूढ़ा-संज्ञा पुं० बुड्ढा ।

बूता-संज्ञा पुं० ताकत, शक्ति ।

बृहत्-वि० (सं०) बहुत बड़ा, विशाल । ऊँचा ।

बृहस्पति-संज्ञा पुं० (सं०) एक ग्रह । देवताओं के गुरु, एक देवता ।

बेंत-संज्ञा पुं० एक लता जिसके डंठल से टोकरी आदि बनती हैं । बेंत के डण्ठल से बनी छड़ी ।

बेंदी-संज्ञा स्त्री० माथे पर लगाने की टिकली, बिंदी । एक गहना ।

बेअकल-वि० बिना अक्ल या दिमाग-वाला, मूर्ख, बेवकूफ ।

बेअदब-वि० बड़ों का आदर या सम्मान न करनेवाला ।

बेआबरू-वि० (फा०) बिना इज्जत का, बेइज्जत, अनादृत ।

बेईमान-वि० (फा०) ईमान या धर्म का ध्यान न रखनेवाला, अधर्मी, कपटी, छली ।

बेकरार-वि० (फा०) बिना चैन या शान्ति के, व्याकुल, परेशान ।

बेकली-संज्ञा स्त्री० व्यग्रता । बेचैनी । घबड़ाहट ।

बेकाबू-वि० जो वश में न हो सके । जिस पर कोई वश न हो, लाचार ।

बेकाम-वि० बिना काम का, बेकार ।

बेकायदा-वि० बिना कायदा या नियम के, नियम-विरुद्ध ।

बेकुसूर वि० निरपराध ।

बेखटके-क्रि० वि० बिना किसी रुकावट या सोच-विचार के, निस्संकोच ।

बेखबर-वि० (फा०) बिना खबर के, अनजान । बेहोश ।

बेगम-संज्ञा स्त्री० रानी, पत्नी ।

बेगाना-वि० (फा०) दूसरा, पराया ।

बेगार-संज्ञा स्त्री० (फा०) बिना मूल्य दिये करवाया हुआ काम बिना मन लगाकर किया जाने-वाला काम ।

बेगारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) बेगार में काम करनेवाला ।

बेचारा-वि० (फा०) दीन, गरीब ।

बेजबान-वि० (फा०) जो बात-चीत न कर सके, गूंगा । गरीब, दीन ।

बेजाब्ता-वि० कायदा या नियम

बिना, नियम-विरुद्ध ।
बेजोड़-वि० जिसमें कोई जोड़ न हो । अपूर्व, अनन्य ।
बेठिकाने-वि० गलत जगह पर हो, बिना सिर-पैर का, बेमौके ।
बेड़ा-संज्ञा पुं० नदी पार करने को बनाया गया लट्ठों तथा तख्तों का बनाया गया ढाँचा । वि० तिरछा, आड़ा ।
बेड़ी-संज्ञा स्त्री० कैदियों को पहनायी जानेवाली लोहे की जंजीर।
बेढब-वि० बुरे ढब का। कुरूप, भद्दा। क्रि० वि० बुरी तरह से ।
बेतकल्लुफ–वि० जो तकल्लुफ न करता हो, बिलकुल साफ-साफ कहने-सुननेवाला । निस्संकोच ।
बेतहाशा-क्रि० वि० बहुत अधिक तेजी से । बिना सोचे-विचारे ।
बेताब-वि० (फा०) कमजोर । व्याकुल ।
बेतुका-वि० बिना तुक या मेल का, बेढंगा, बेमेल ।
बेदखली-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु पर से किसी के अधिकार का कब्जे से निकल जाना ।
बेदम-वि० (फा०) मरा। अधमरा ।
बेदाग-वि० (फा०) बिना दाग या दोष का, स्वच्छ, निर्दोष ।
बेधना-क्रि० स० नुकीली चीज का घुसाना, शरीर में घाव करना।
बेनु-संज्ञा पुं० बाँसुरी, मुरली ।
बेपरद-वि० बिना परदा या ओट का, नंगा, अनावृत ।
बेपरवा, बेपरवाह-वि० बिना किसी परवाह या फिक्र का। मनमौजी ।
बेपीर-वि० दूसरों के कष्टों को न समझनेवाला, निर्दय, बेरहम ।
बेफायदा-वि०, क्रि० वि० (फा०) बेकार ।
बेफिक्र-वि० (फा०) बिना किसी फिक्र या चिन्ता का, निश्चित ।
बेबस-वि० विवश, लाचार, परवश, जिसका कोई वस न चले, पराधीन।
बेमौका-वि० (फा०) गलत मौके पर, अनुचित समय पर ।
बेरहम-वि० बिना रहम या दया का. निर्दय ।
बेला-संज्ञा पुं० एक छोटा फूल । कटोरा । समय, वक्त ।
बेलौस-वि० सच्चा, खरा ।
बेवकूफ-वि० (फा०) बिना बुद्धि या समझ का, मूर्ख ।
बेवक्त-क्रि० वि० (फा०) खराब या गलत समय में, कुसमय में ।
बेवफा-वि० मित्रता आदि का विचार न रखनेवाला ।
बेशक-क्रि० वि० बिना शक के, जरूर ।
बेशी-संज्ञा स्त्री० (फा०) अधिकता।
बेशुमार-वि० (फा०) अनगिनती, अगणित ।
बेसबरा-वि० जो सब्र या धैर्य न रखता हो, अधीर ।
बेसर-संज्ञा पुं० नाक में पहिनने की नथनी, नथ ।
बेसुध-वि० बिना सुध या होश के

बेखबर, बेहोश ।
बेसुर, बेसुरा-वि० संगीत में जो लययुक्त स्वर में न हो।
बेहतर-वि० (फा०) अधिक अच्छा।
बेहद-वि० (फा०) जिसकी हद न हो, अपार, असीम। बहुत अधिक।
बेहया-वि० (फा०) बिना हया या शर्म का, निर्लज्ज ।
बेहाल-वि० बेचैन, परेशान ।
बेहूदा-वि० (फा०) बिना तमीज का, असभ्य ।
बेहोश-वि० (फा०) बिना होश का, मूर्छित ।
बैकुंठ-संज्ञा पुं० स्वर्ग ।
बैद-संज्ञा पुं० दवा-दारू या चिकित्सा करनेवाला व्यक्ति, वैद्य ।
बैन-संज्ञा पुं० (कवि०) वार्ता, बात।
बैर-संज्ञा पुं० दुश्मनी, शत्रुता ।
बैरागी-संज्ञा पुं० एक प्रकार के वैष्णव साधुओं का एक भेद ।
बैरी-वि० दुश्मन, विरोधी, शत्रु।
बैस-संज्ञा स्त्री० अवस्था, आयु । यौवन ।
बैसाखी-संज्ञा स्त्री० लँगड़े लोग जिस लाठी का सहारा लेकर चलते हैं।
बोझल, बोझिल-वि० भारवाला, भारी ।
बोटी-संज्ञा स्त्री० मांस का छोटा टुकड़ा ।
बोदा-वि० मूर्ख, मट्ठर, फुसफुसा ।
बोध-संज्ञा पुं० (सं०) समझ, ज्ञान।
बोधक-संज्ञा पुं० बोध करानेवाला या ज्ञान करानेवाला ।
बोधगम्य-वि० (सं०) समझ में आने योग्य ।
बोरा-संज्ञा पुं० टाट का बना हुआ थैला ।
बोरिया-संज्ञा पुं० (फा०) चटाई, बिछावन ।
बोरी-संज्ञा स्त्री० टाट का छोटा बोरा।
बोल-चाल-संज्ञा स्त्री० बातचीत । मेलमिलाप। प्रतिदिन बात करने की असाहित्यिक भाषा ।
बोहनी-संज्ञा स्त्री० किसी सौदे का दिन में सबसे पहले बिकना ।
बौखलाना-क्रि० अ० ऊटपटांग सोचना, क्रोध से पागल हो जाना, सनक जाना ।
बौछार-संज्ञा स्त्री० वर्षा की बूंदें ।
बौड़हा-वि० सनकी, बावला ।
बौद्ध-संज्ञा पुं० बौद्ध धर्म को माननेवाला ; वि० बुद्ध द्वारा प्रचारित।
बौद्धधर्म-संज्ञा पुं० (सं०) गौतम बुद्ध का चलाया हुआ मत ।
बौना-संज्ञा पुं० कम ऊँचान का आदमी, बहुत ठिगना आदमी।
बौरना-क्रि० अ० आम के पेड़ में बौर आना ।
ब्यारी-संज्ञा स्त्री० रात का भोजन ।
ब्याली-संज्ञा स्त्री० मादा साँप, सर्पिणी । वि० साँप रखनेवाला।
ब्यालू-संज्ञा पुं० रात का भोजन ।
ब्याह-संज्ञा पुं० वह रीति जिससे दो पुरुष स्त्री, पति-पत्नी बनते हैं, विवाह ।
ब्याहता-वि० जिसके साथ विवाह हुआ हो।

ब्योरा-संज्ञा पुं० किसी घटना की एक-एक बात का कहना, विवरण।
ब्रह्म-संज्ञा पुं० ईश्वर। आत्मा। ब्रह्मा।
ब्रह्मचर्य-संज्ञा पुं० (सं०) चार आश्रमों में प्रथम, जिसमें पुरुष को भौतिक व्यसनों से दूर रहना चाहिए।
ब्रह्मचारिणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) ब्रह्मचर्य अवस्था का पालन करनेवाली स्त्री, पार्वती।
ब्रह्मचारी-संज्ञा पुं० ब्रह्मचर्य की अवस्था का पालन करनेवाला पुरुष।
ब्रह्मज्ञान-संज्ञा पुं० (सं०) ब्रह्म को या ईश्वर को जानना।
ब्रह्मज्ञानी-वि० परमार्थ तत्त्व को ज्ञान रखनेवाला अद्वैतवादी।
ब्रह्मनिष्ठ-वि० (सं०) ब्रह्मज्ञान को जाननेवाला। ब्राह्मणों का भक्त।
ब्रह्मपद-संज्ञा पु० (सं०) मोक्ष, मुक्ति।
ब्रह्मभोज-संज्ञा पुं० (सं०) ब्राह्मणों को कराया गया भोजन।
ब्रह्ममुहूर्त्त-संज्ञा पुं० (सं०) सुबह, प्रभात।
ब्रह्मराक्षस-संज्ञा पुं० (सं०) मरकर भूत बना हुआ ब्राह्मण।
ब्रह्मरात्रि-संज्ञा स्त्री० (सं०) ब्रह्मा की एक कल्प की एक रात।
ब्रह्मर्षि-संज्ञा पुं० (सं०) ब्राह्मण ऋषि।
ब्रह्मलोक-संज्ञा पुं० सत्यलोक, जहाँ ब्रह्मा रहते हैं।
ब्रह्मवादी-वि० दर्शन के एक मत अद्वैतवाद को माननेवाला, वेदांती।
ब्रह्मविद्-वि० (सं०) ब्रह्म को समझनेवाला, ब्रह्मज्ञानी।
ब्रह्मविद्या-संज्ञा स्त्री० दुर्गा, ब्रह्म को जानने की विद्या।
ब्रह्मसूत्र-संज्ञा पुं० जनेऊ, व्यास का बनाया हुआ 'शारीरिक सूत्र'।
ब्रह्महत्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) ब्राह्मण को मार डालने का पाप।
ब्रह्मांड-संज्ञा पुं० (सं०) चौदहो भुवन का समूह, खोपड़ी।
ब्रह्मा-संज्ञा पुं० (सं०) ब्रह्म का सृष्टि को माननेवाला रूप, विधाता।
ब्रह्माणी-संज्ञा स्त्री० ब्रह्मा की स्त्री, सावित्री, सरस्वती।
ब्रह्मानंद-संज्ञा पुं० (सं०) ब्रह्म को जान लेने पर होनेवाला आनन्द।
ब्रह्मास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) मंत्र से चलाया जानेवाला एक अस्त्र।
ब्राह्मण-संज्ञा पुं० अग्रजन्मा, चार वर्णों में पहला, जिसका काम पढ़ना-पढ़ाना तथा यज्ञादि करना है। इस वर्ण का मनुष्य। वेद का एक भाग।
ब्राह्ममुहूर्त्त-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य निकलने के पहले दो घड़ी का समय।
ब्राह्मसमाज-संज्ञा पुं० (सं०) एक मत जिसमें केवल ब्रह्म की ही उपासना की जाती है।

भँगेड़ी-वि० अधिक भाँग पीनेवाला।
भँवर-संज्ञा पुं० पानी के बहाव के बीच में पड़नेवाले चक्कर। गर्त।
भँवरजाल-संज्ञा पुं० संसार के प्रपंच, भ्रमजाल।
भँवरी-संज्ञा स्त्री० पानी का भँवर।
भंगड़-वि० बहुत भाँग पीनेवाला।
भंगुर-वि० (सं०) बरबाद या नष्ट होनेवाला, नाशवान्, टेढ़ा।
भंजन-संज्ञा पुं० (सं०) तोड़ना-फोड़ना। बीच में भंग करना। नाश।
भंडार-संज्ञा पुं० खाने-पीने का सामान रखने की कोठरी। खजाना। उदर, पेट, अग्निकोण।
भंडारा-संज्ञा पुं० देखिए 'भंडार'। उदर, पेट, साधुओं का भोज।
भंडारी-संज्ञा स्त्री० छोटी कोठरी। खजाना। संज्ञा पुं० खजाने का प्रबंध करनेवाला, कोषाध्यक्ष, रसोई बनानेवाला।
भइया-संज्ञा पुं० भाई।
भक्त-वि० (सं०) बाँटा हुआ। भक्ति और सेवा करनेवाला।
भक्तता-संज्ञा स्त्री० (सं०) भक्ति।
भक्तवत्सल-वि० (सं०) भक्तों पर दया रखनेवाला। विष्णु।
भक्ति-संज्ञा स्त्री० स्नेह, पूजा, अर्चा, सेवा, ईश्वर से बहुत प्रेम होना।
भक्षक-वि० (सं०) खानेवाला।
भक्षण-संज्ञा पुं० (सं०) भोजन करना।
भक्ष्य-वि० (सं०) खाने योग्य। संज्ञा पुं० भोजन, खाद्य।
भगंदर-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्रकार का गुदा में व्रण होने का रोग।
भगत-वि० पूजा करनेवाला, उपासक। मांस आदि न खानेवाला।
भगदर-संज्ञा स्त्री० भागना, बहुत से लोगों का एक साथ भागना।
भगवती-संज्ञा स्त्री० (सं०) देवी। दुर्गा, गौरी, सरस्वती।
भगवत्-संज्ञा पुं० परमेश्वर, बुद्ध, शिव।
भगवद्गीता-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक काव्य में कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये गये उपदेशों का संग्रह।
भगवान्, भगवान-संज्ञा पुं० ईश्वर।
भगिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) बहिन।
भगोड़ा-वि० भागा हुआ। भागनेवाला, कायर।
भग्न-वि० (सं०) टूटा हुआ। पराजित।
भग्नावशेष-संज्ञा पुं० (सं०) किसी टूटी-फूटी वस्तु या इमारत के बचे हुए अंश। खँड़हर।
भजन-संज्ञा पुं० (सं०) किसी देवता का बार-बार नाम लेना। देवता की स्तुति के लिए गाया जानेवाला गीत, स्तोत्र, गुण-कीर्तन।
भजना-क्रि० स० देवता आदि का नाम लेना, प्राप्त होना, पहुँचना।
भजनी-संज्ञा पुं० भजन गानेवाला।

भट-संज्ञा पुं० योद्धा, युद्ध करने-वाला, सिपाही ।
भटकना-क्रि० अ० रास्ता भूल-कर इधर-उधर घूमते फिरना ।
भटू-संज्ञा स्त्री० सखी, स्त्रियों के सम्बन्ध में आदर-सूचक शब्द ।
भट्ट-संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक उपाधि, पण्डित, योद्धा, भाट, सूर ।
भट्ठा-संज्ञा पुं० जहाँ ईंटें आदि पकायी जाती हैं, पजावा ।
भठियारा-संज्ञा पुं० सराय का प्रबन्ध करनेवाला ।
भड़ंबा-संज्ञा पुं० दिखावा, आडम्बर।
भड़क-संज्ञा स्त्री० ऊपरी चमक-दमक । चौंकना या सहमना ।
भड़कदार-वि० खूब ऊपर से चमकीला, भड़कीला ।
भड़कना-क्रि० अ० डरकर पीछे हटना। तेजी से आग का जलना। क्रुद्ध होना ।
भड़कीला-वि० चमकीला भड़कदार।
भड़भूंजा-संज्ञा पुं० भाड़ में अन्न भूनने का काम करनेवाला ।
भड़ुआ-संज्ञा पुं० रंडियों की दलाली करनेवाला व्यक्ति ।
भणित-वि० (सं०) कहा हुआ ।
भत्ता-संज्ञा पुं० यात्रा के लिए किसी कर्मचारी को दिया जानेवाला धन ।
भद्दा-वि० पुं० देखने में खराब लगनेवाला, बदसूरत ।
भद्र-वि० (सं०) सभ्य, पढ़ा-लिखा।
भद्रता-संज्ञा स्त्री० सभ्यता, सभ्य या भला होना, शिष्टता, शराफत ।
भभकना-क्रि० अ० जोर से जलना। उबलना ।
भभकी-संज्ञा स्त्री० झूठी धमकी ।
भभूका-संज्ञा पुं० आग की ज्वाला ।
भयंकर-वि० (सं०) जिसे देखकर भय या डर लगे, डरावना, भयानक।
भयंकरता-संज्ञा स्त्री० (सं०) भय होने का भाव होना, भीषणता, भयानकता ।
भय-संज्ञा पुं० (सं०) डर ।
भयभीत-वि० (सं०) डरा हुआ ।
भयानक-वि० (सं०) जिसे देखने से डर लगे, भयंकर, डरावना; संज्ञा पुं० काव्य का एक रस ।
भयावह-वि० (सं०) भयंकर, डरावना ।
भर-वि० कुल, सब । संज्ञा पुं० भार, बोझ ।
भरण-संज्ञा पुं० (सं०) पालन-पोषण । भरती ।
भरतखंड-संज्ञा पुं० (सं०) भारत-वर्ष पृथ्वी के नव-खंडों में से एक ।
भरतार-संज्ञा पुं० पति ।
भरती-संज्ञा स्त्री० किसी में भरा जाना । दाखिल करना या ले लेना ।
भरपूर-वि० खूब भरा हुआ, पूरा-पूरा । क्रि० वि० पूरी तरह से ।
भरमाना-क्रि० सं० धोखे या भ्रम में डालना । बहकाना । क्रि० वि० हैरान होना ।
भरमार-संज्ञा स्त्री० बहुत अधिकता।

भरसक-क्रि० वि० पूरी ताकत भर।
भरोसा-संज्ञा पुं० आसरा। सहारा। आशा।
भर्त्ता-संज्ञा पुं० मालिक। पति।
भर्त्तार-संज्ञा पुं० पति। स्वामी।
भर्त्सना-संज्ञा स्त्री० (सं०) डाँट-फटकार। निंदा, बुराई।
भलमनसत, भलमनसी-सज्जनता।
भव-संज्ञा पुं० (सं०) जन्म, शिव, संसार, क्षम, कुशल, प्राप्ति।
भवदीय-सर्व० (सं०) आपका।
भवबंधन-संज्ञा पुं० (सं०) संसार के झंझट, बखेड़े।
भवभंजन-संज्ञा पुं० (सं०) परमेश्वर, संसार का नाश करनेवाला
भवभय-संज्ञा पुं० (सं०) संसार में बार-बार जन्म लेने और मरने का डर।
भवमोचन-वि० (सं०) संसार से छुटकारा दिलानेवाला, भगवान्।
भवबिलास-संज्ञा पुं० (सं०) संसार के सुख, माया।
भवानी-संज्ञा स्त्री० शिवपत्नी, दुर्गा।
भवितव्य-संज्ञा पुं० अवश्य आगे होनेवाला, होनहार।
भवितव्यता-संज्ञा स्त्री० भाग्य, आगे होने की अवस्था, होनहार। अदृष्ट, भावी।
भविष्य-वि० बाद में आनेवाला समय।
भविष्यत्-संज्ञा पुं० (सं०) भविष्य।
भव्य-वि० (सं०) बहुत भारी और सुन्दर, योग्य, श्रेष्ठ, बड़ा।
भव्यता-संज्ञा स्त्री० (सं०) भव्य होना।
भसम-संज्ञा पुं० देखिए 'भस्म'।
भस्म-संज्ञा पुं० लकड़ी के जल जाने पर बची राख।
भस्मक-संज्ञा पुं० (सं०) तुरंत भूख लग जाने का रोग।
भस्मीभूत-वि० जलकर राख हो गया।
भाँग-संज्ञा स्त्री० नशीली पत्तियों का एक पौदा, भंग।
भाँड़-संज्ञा पुं० मसखरा, विदूषक। महफिलों में नाच-गाकर तथा नकल उतारकर हँसानेवाले लोग। बेहया, नंगा, भाँड़ा।
भाँत, भाँति-संज्ञा स्त्री० प्रकार। किस्म।
भाँवर-संज्ञा स्त्री० विवाह में आग के चारों ओर परिक्रमा करना। चारों ओर घूमना।
भांडार-संज्ञा पुं० भंडार। जिस कमरे में घर का तमाम सामान रखा जाता है। खजाना।
भाईचारा-संज्ञा पुं० भाई की तरह का सम्बन्ध।
भाई-दूज-संज्ञा स्त्री० भाइयों को तिलक किये जाने का पर्व, भैया-दूज।
भाग-संज्ञा पुं० अंश. हिस्सा। तरफ, भाग्य, प्रारब्ध।
भागनेय-संज्ञा पुं० (सं०) भानजा।
भागफल-संज्ञा पुं० (सं०) भाग करने से निकली हुई संख्या, लब्धि।
भागवत-संज्ञा पुं० (सं०) एक

पुराण। ईश्वर का भक्त।
भागिनेय-संज्ञा पुं० (सं०) बहिन का पुत्र, भानजा।
भागी-संज्ञा पुं० हिस्सा लेनेवाला, अधिकारी, अंशधारी।
भागीरथी-संज्ञा स्त्री० (सं०) गंगा नदी।
भाग्य-संज्ञा पुं० (सं०) तकदीर, किस्मत।
भाजक-वि० (सं०) भाग करनेवाला।
भाजी-संज्ञा स्त्री० (सं०) तरकारी, साग आदि।
भाज्य-संज्ञा पुं० (सं०) गणित में वह अंक जिसे भाग दिया जाय।
भाट-संज्ञा पुं० राजाओं का यश गानेवाला, चारण।
भाटा-संज्ञा पुं० समुद्र आदि में ज्वार के पानी का उतरना।
भाड़-संज्ञा पुं० भड़भूंजे जिसमें अनाज भूनते हैं।
भाति-संज्ञा स्त्री० (सं०) शोभा।
भाथा-संज्ञा पुं० तरकश।
भानमती-संज्ञा स्त्री० जादूगरनी।
भानु-संज्ञा पु०(सं०)सूरज। राजा।
भाप-संज्ञा स्त्री० पानी के जल जाने पर होनेवाली अवस्था, वाष्प।
भाभी-संज्ञा स्त्री० बड़े भाई की पत्नी। भावज।
भाभा, भामिनी-संज्ञा स्त्री०(सं०) क्रुद्ध स्त्री, स्त्री।
भार-संज्ञा पुं० गुरुत्व, बोझ, किसी काम को करने का वादा या ठेका।
भारत-संज्ञा पुं० (सं०) महाभारत। भारतवर्ष देश।
भारतखंड-संज्ञा पुं० भारतवर्ष।
भारती-संज्ञा स्त्री० (सं०) देवी सरस्वती। वचन, वाणी।
भारतीय-वि० (सं०) भारत का। संज्ञा पुं० भारत में रहनेवाला।
भारवाहक-वि० (सं०) बोझ ढोनेवाला, मजदूर।
भार्गव-संज्ञा पुं० (सं०) भृगु के वंश में पैदा पुरुष। परशुराम।
भाललोचन-संज्ञा पुं० (सं०) मत्थे पर नेत्रवाला, शिव।
भाला-संज्ञा पुं० एक अस्त्र, बरछा।
भालाबरदार-संज्ञा पुं० बरछा चलानेवाला।
भालू-संज्ञा पुं० एक भयंकर जंगली जानवर, रीछ।
भाव-संज्ञा पुं०अभिप्राय, किसी वस्तु का होना, अस्तित्व। मन में पैदा होनेवाले विचार। मतलब।
भावगम्य-वि० (सं०) प्रेम तथा भक्ति के ही द्वारा जाना जा सकनेवाला।
भावज-संज्ञा स्त्री० भाई की स्त्री, भाभी, भौजाई।
भावता-वि० भला लगनेवाला, प्रिय।
भावन-वि० (ग्रा०) (कवि०) अच्छा या प्रिय लगनेवाला।
भावना-संज्ञा स्त्री० कल्पना,

विचार, ख्याल। चाह।
भाववाचक-संज्ञा पुं० (सं०) व्याकरण में वह संज्ञा जिससे कोई भाव मालूम हो।
भावार्थ-संज्ञा पु० (सं०) ऐसा अर्थ जिसमें विषय का केवल भाव आवे, अभिप्राय, तात्पर्य।
भावी-संज्ञा स्त्री० आगे आनेवाला समय, भविष्य। भविष्य में होनेवाली बात। भाग्य।
भावुक-वि० (सं०) सोचने या इच्छा करनेवाला। भावों से जल्दी प्रभावित हो जानेवाला।
भाषण-संज्ञा पुं० वक्तृता, कथन, व्याख्यान।
भाषांतर-संज्ञा पुं० अनुवाद, एक भाषा के लेख को दूसरी भाषा में बदलना, उलथा।
भाषा-संज्ञा स्त्री० वाक्य, बोली, वह संकेत जिसके द्वारा हम दूसरे की बात समझते तथा अपनी समझाते हैं। आधुनिक हिन्दी। वाणी।
भाषाबद्ध-वि० (सं०) लिखा हुआ।
भाषित-वि० (सं०) कहा हुआ, कथित।
भाषी-संज्ञा पुं० बोलनेवाला।
भाष्य-संज्ञा पुं० (सं०) सूत्रों की की हुई टीका। व्याख्या।
भाष्यकार-संज्ञा पुं० (सं०) सूत्रों की व्याख्या या टीका करनेवाला।
भास-संज्ञा पुं० प्रकाश, चमक, इच्छा।
भासना-क्रि० अ० चमकना। मालूम पड़ना, देख पड़ना।
भासमान-वि० (सं०) चमकता हुआ। मालूम या दिखाई पड़ना, फँसना।
भासित-वि० (सं०) चमकीला। प्रकाश से भरा हुआ, प्रकाशमान।
भास्कर-संज्ञा पुं० अग्नि, सूरज।
भास्वर-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य, दिन। वि० चमकदार।
भिक्षा-संज्ञा स्त्री० याचन, किसी चीज का माँगना, भीख। माँगने पर मिलनेवाली वस्तु, भीख।
भिक्षापात्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह बरतन जिसमें भीख माँगी जाती है।
भिक्षु-संज्ञा पुं० भिक्षुक, भिखारी, बौद्ध संन्यासी।
भिक्षुक-संज्ञा पुं० (सं०) भिखारी, भिक्षोपजीवी।
भिखारी-संज्ञा पुं० भीख माँगनेवाला।
भिज्ञ-वि० (सं०) जाननेवाला, जानकार।
भिड़ना-क्रि० अ० टकराना, लड़ना, झगड़ना, मैथुन करना, सटना।
भित्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) दीवाल।
भिन्नता-संज्ञा स्त्री० (सं०) अलगाव, भेद।
भिल्ल-संज्ञा पुं० भील जाति।।
भिश्ती-संज्ञा पुं० मशक द्वारा पानी ढोनेवाला व्यक्ति।
भिषक्-संज्ञा पुं० (सं०) वैद्य।
भीड़-संज्ञा स्त्री० बहुत से आदमियों

का जमाव, जमघट, जनसमूह ।
भीड़भाड़-संज्ञा स्त्री० बहुत से लोगों का इकट्ठा होना, जन-समूह।
भीत-संज्ञा स्त्री० दीवार। वि० (सं०) डरा हुआ ।
भीति-संज्ञा स्त्री० डर, भय। संज्ञा स्त्री० दीवार।
भीनना-क्रि० अ० बिलकुल समा जाना, मर जाना।
भीमसेन-संज्ञा पुं० (सं०) युधिष्ठिर के छोटे भाई, भीम।
भीरु-वि० (सं०) भयभीत, कायर।
भीरुता-संज्ञा स्त्री० भय, डरपोकपन, कायरता। डर।
भील-संज्ञा पुं० एक जंगली जाति।
भीषण-वि० (सं०) देखने से डर पैदा करनेवाला, भयानक।
भीषणता-संज्ञा स्त्री० डरावनापन, भीषण या डरावना होना, भयंकरता ।
भीष्म-संज्ञा पुं० महादेव, राजा शान्तनु के पुत्र, जो कौरवों की ओर थे। वि० भयंकर।
भुक्खड़-वि० भूखा। बहुत खानेवाला। कंगाल, दरिद्र।
भुक्ति-संज्ञा स्त्री० आहार, भोजन, दुनिया के भोग या सुख।
भुखमरा-वि० भूखों मरनेवाला। बहुत खानेवाला, पेटू।
भुगतना-क्रि० स० सहना, भोगना। क्रि० अ० पूरा होना। बीतना।
भुगतान-संज्ञा पुं० निबटारा, बाकी मूल्य चुकाना, देना।
भुज-संज्ञा पुं० भुजा, बाँह।
भुजग-संज्ञा पुं० (सं०) साँप।
भुजदंड-संज्ञा पुं० (सं०) बाहुदंड।
भुजपाश-संज्ञा पुं० (सं०) हाथों से घेर लेना, गले लगाना।
भुजबंद-संज्ञा पुं० एक गहना, बाजूबंद ।
भुजमूल-संज्ञा पुं० मोढ़ा। काँख।
भुजा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बाँह, हाथ।
भुजाली-संज्ञा स्त्री० एक बड़ी टेढ़ी छुरी, खुखरी, छोटी बरछी।
भुनगा-संज्ञा पुं० उड़नेवाला छोटा कीड़ा। अति दुर्बल मनुष्य।
भुरकुस-संज्ञा पुं० बिलकुल पिसा हुआ, चूरा, चूर्ण।
भुलक्कड़-वि० बहुत जल्दी सब कुछ भूल जानेवाला।
भुलावा-संज्ञा पुं० कपट, धोखा।
भुव-संज्ञा स्त्री० संसार, पृथ्वी। संज्ञा स्त्री० (ग्रा०) भौंह।
भुवन-संज्ञा पुं० (सं०) संसार, जगत, लोक।
भुवनकोश-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी, भूमंडल ।
भूँजा-संज्ञा पुं० (ग्रा०) भूना हुआ।
भूकंप-संज्ञा पुं० (सं०) कुछ प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी का हिल उठना, भूचाल, भूडोल।
भूख-संज्ञा स्त्री० खाने की इच्छा। जरूरत। आवश्यकता ।
भूखा-वि० पुं० जिसे भूख लगी हो। इच्छुक।
भूगर्भ-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी के

भीतर का भाग।
भूगर्भशास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी के ऊपर और नीचे के तत्त्वों का ज्ञान देनेवाला शास्त्र।
भूगोल-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी। वह शास्त्र जिसमें पृथ्वी और उसके प्राकृतिक विभागों का वर्णन रहता है।
भूचाल-संज्ञा पुं० भूकंप, भूडोल।
भूत-संज्ञा पुं० (सं०) वे मूल द्रव्य जिनसे सृष्टि बनी है, महाभूत। बीता हुआ समय। मृत व्यक्ति-का आत्मा। वि० बीता हुआ। जो हो चुका हो।
भूतपूर्व-वि० (सं०) इससे पहले का।
भूतभावन-संज्ञा पुं० (सं०) महादेव।
भूत-यज्ञ-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्रकार का यज्ञ।
भूतल-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी के ऊपर नीचे का भाग, पाताल।
भूति-संज्ञा स्त्री० (सं०) धन-सम्पत्ति, वैभव। राख, भस्म।
भूतेश्वर-संज्ञा पुं० शिव, महादेव।
भतोन्माद-संज्ञा पुं० (सं०) भूत लगने के कारण मनुष्य को होने-वाला उन्माद रोग।
भूधर-संज्ञा पुं० (सं०) पहाड़। शेषनाग।
भूप, भूपति, भूपाल-संज्ञा पुं० नृप, राजा।
भूमंडल-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी।
भूमि-संज्ञा स्त्री० वसुधा, पृथ्वी। जगह।
भूमिका-संज्ञा स्त्री० रचना, किसी ग्रन्थ के प्रारम्भ में दी गई उसके सम्बन्ध में खास बातें।
भूय-अव्य० फिर।
भूरि-संज्ञा पुं० सुवर्ण, सोना, ब्रह्मा। शिव। वि० बहुत अधिक। भारी।
भूर्जपत्र-संज्ञा पुं० भोजपत्र।
भूल- स्त्री० सं० दोष, अपराध।
भूलोक-संज्ञा पुं० पृथ्वीलोक, संसार, दुनिया।
भूषण-संज्ञा पुं० आभरण, गहना, अलंकार।
भूषा-संज्ञा स्त्री० गहना। सजाने की क्रिया।
भूषित-वि० (सं०) गहना पहने हुए। सजाया हुआ।
भृंग-संज्ञा पुं० भ्रमर, भौंरा।
भृंगराज-संज्ञा पुं० (सं०) भँगरा नामक पौदा। भीमराज।
भृकुटी-संज्ञा स्त्री० भ्रुकुटी, भौंह।
भृगु-संज्ञा पुं० (सं०) परशुराम।
भृगुनाथ-संज्ञा पुं० (सं०) परशुराम।
भृगुरेखा-संज्ञा स्त्री० (सं०) भृगु के लात मारने से विष्णु की छाती पर बना चिह्न।
भृत-संज्ञा पुं० भृत्य, दास। वि० (सं०) पाला हुआ।
भृति-संज्ञा स्त्री० (सं०) नौकरी। दासता। मजदूरी। वेतन।
भृत्य-संज्ञा पुं० सेवक, नौकर, दास।
भेंट-संज्ञा स्त्री० मिलना। उपहार।
भेक-संज्ञा पुं० मेंढक।

भेजा-संज्ञा पुं० खोपड़ी के भीतर का गूदा।
भेड़-संज्ञा स्त्री० एक चौपाया, गाडर।
भेड़ा-संज्ञा पुं० भेड़ जाति का नर, मेढ़ा।
भेड़िया-संज्ञा पुं० कुत्ते की तरह का मांसाहारी जानवर, सियार।
भेड़ी-संज्ञा स्त्री० मादा भेड़।
भेद-संज्ञा पुं० (सं०) छेदना। छिपा हुआ। हाल। फर्क। किस्म।
भेदक-वि० (सं०) छेद करनेवाला।
भेदभाव-संज्ञा पुं० (सं०) फर्क रखना। व्यवहार में अन्तर।
भेदिया-संज्ञा पुं० छिपा हुआ हाल मालूम करनेवाला, जासूस।
भेष-संज्ञा पुं० पहनावा।
भेषज-संज्ञा पुं० औषध, दवा।
भेस-संज्ञा पुं० ऊपर का पहनावा।
भैक्ष-संज्ञा पुं० भिक्षा, भीख मांगना, भीख।
भैरव-वि० (सं०) देखने में डर पैदा करनेवाला, भयानक। संज्ञा पुं० (सं०) महादेव। एक राग।
भैरवी-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक देवी। एक रागिनी।
भैषज-संज्ञा पुं० (सं०) दवा।
भोंडा-वि० बदसूरत, भद्दा।
भोंदू-वि० मूर्ख, बेवकूफ, सीधा।
भोंपू-संज्ञा पुं० एक प्रकार का फूंक-कर बजाया जानेवाला बाजा।
भोक्ता-वि० भोग करनेवाला, ऐयाश।
भोग-संज्ञा पुं० (सं०) दुनिया में सुख-दुःख के अनुभव। दुनिया के सुखों का उपभोग करना।
भोगी-संज्ञा पुं० जिसने दुनिया के सुख-दुःख का अनुभव किया है। वि० सांसारिक सुखों को चाहने-वाला।
भोज-संज्ञा पुं० बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर खाना, दावत।
भोजन-संज्ञा पुं० (सं०) खाने की वस्तु।
भोजनशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) जहाँ भोजन पके रसोईघर।
भोजपत्र-संज्ञा पुं० एक मझले आकार का वृक्ष, जिसकी छाल पर प्राचीन काल में लिखा जाता था।
भोजपुरी-संज्ञा स्त्री० भोजपुर की भाषा।
भोज्य-संज्ञा पुं० (सं०) खाने का सामान। वि० खाने लायक।
भोपा-संज्ञा पुं० एक तरह की तुरही, भोंपू, मूर्ख।
भोर-संज्ञा पुं० सुबह, तड़का। संज्ञा पुं० (ग्रा०) (कवि०) धोखा।
भोला-वि० सीधा-सादा, सरल, मूर्ख।
भोलानाथ-संज्ञा पुं० शिव।
भोलापन-संज्ञा पुं० सिधाई। मूर्खता।
भोला-भाला-वि० सीधा-सादा, सरल।
भौंर-संज्ञा पुं० भौंरा। बहते हुए पानी में पड़नेवाले चक्कर।
भौंरा-संज्ञा पुं० काले रंग का एक

उड़नवाला कीड़ा।

भौंरी-संज्ञा स्त्री० जीवों के शरीर पर बालों का एक केन्द्र पर घूमना। विवाह में वर-वधू का आग के चारों ओर घमना। भँवरी।

भौंह-संज्ञा स्त्री० आँख के ऊपर की हड्डी पर के बाल।

भौंचक-वि० हक्का-बक्का, स्तम्भित, चकित।

भौजाई-संज्ञा स्त्री० बड़े भाई की स्त्री, भावज।

भौतिक-वि० (सं०) पाँच भूतों से बना हुआ, संसार का। शरीर का।

भौम-वि० (सं०) भूमि से पैदा हुआ। भूमि का।

भ्रंश-संज्ञा पु० अधःपतन, नीचे गिरना। नाश, बरबादी। वि० खराब। भ्रष्ट।

भ्रकुटि-संज्ञा स्त्री० भ्रूकुटी, भौंह।

भ्रम-संज्ञा पु० भ्रान्ति, किसी चीज को कुछ और समझना, धोखा।

भ्रमण-संज्ञा पु० फेरी, घूमना-फिरना, यात्रा, चक्कर।

भ्रमना-क्रि० अ० घूमना। धोखा खाना। भूल करना। भूल जाना।

भ्रममूलक-वि० (सं०) भ्रम या धोखा पैदा करनेवाला।

भ्रमर-संज्ञा पु० (सं०) भौंरा।

भ्रष्ट-वि० (सं०) गिरा हुआ। बिगड़ा हुआ। दुराचारी।

भ्रष्टा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बदचलन स्त्री, छिनाल औरत।

भ्रांति-संज्ञा स्त्री० (सं०) धोखा। शक। पागलपन। मोह, चाह।

भ्राता-संज्ञा पु० सगा भाई।

भ्रातृत्व-संज्ञा पु० (सं०) भाई होने का भाव, भाईपन।

भ्रातृभाव-संज्ञा पु० (सं०) भाई के-से विचार, भाईचारा।

भ्रामक-वि० (सं०) भ्रम या धोखे में डालनेवाला। चक्कर दिलानेवाला।

भ्रूण-संज्ञा पु० (सं०) गर्भ का बालक।

भ्रूणहत्या-संज्ञा स्त्री० गर्भस्थ में ही बालक की हत्या करना।

भ्रूभंग-संज्ञा पु० (सं०) भौं चढ़ाना नाराज होना।

म

मँगनी-संज्ञा स्त्री० बाद में लौटाल देने के लिए माँगा हुआ पदार्थ। वर कन्या का सम्बन्ध पक्का करना, सगाई।

मंगल-संज्ञा पु० कुशल, कल्याण, भलाई। शुभ समय में गाया जानेवाला गीत। एक ग्रह। सप्ताह का एक दिन।

मंगलकलश, मंगलघट-संज्ञा पु० (सं०) शुभ मौकों पर पूजा के लिए रखा जानेवाला पानी से

भरा घड़ा।

मंगलसूत्र-संज्ञा पुं० (सं०) कलाई में देवता के प्रसाद-रूप में बांधा जानेवाला तागा।

मंगला-संज्ञा स्त्री० पार्वती, हल्दी।

मंगलाचरण-संज्ञा पुं० (सं०) शुभ कार्य या किसी ग्रन्थ के पूर्व में कहा या लिखा गया श्लोक।

मंगलामुखी-संज्ञा स्त्री० वेश्या।

मंच, मंचक-संज्ञा पुं० मचिया, ऊँचा बना मंडप जिस पर से कोई कार्य जनता के सामने किया जाय।

मंजरी-संज्ञा स्त्री० मोती। नयी निकली कोपल।

मंजिल-संज्ञा स्त्री० (अ०) यात्रा में ठहरने की जगह। मकान के खंड।

मंजीर-संज्ञा पुं० नूपुर, घुंघरू, पायल।

मंजुल-वि० (सं०) सुन्दर।

मंजूषा-संज्ञा स्त्री० पिटक, पिटारी।

मंडन-संज्ञा पुं० आभूषण, सजना, शृंगार करना, किसी बात को सिद्ध करना या पुष्ट करना।

मंडप-संज्ञा पुं० (सं०) उत्सव आदि में घास-फूस आदि से छाया हुआ पूजा का स्थान। मंदिर के ऊपर का गोल गुंबद। शामियाना।

मंडल-संज्ञा पुं० वृत्ताकार घेरा, परिधि। सूर्य और चन्द्रमा आदि का घेरा। समूह, विम्ब, छाया।

मंडलाकार-वि० (सं०) गोल।

[illegible] सभा,

समूह, जमघट।

मंडलीक-संज्ञा पुं० बारह राजाओं का अधिपति।

मंडित-वि० (सं०) सजाया हुआ। भरा हुआ।

मंडी-संज्ञा स्त्री० बहुत बड़ा बाजार।

मंडूक-संज्ञा पुं० भेक, मेढक, एक ऋषि।

मंतव्य-संज्ञा पुं० (सं०) मत, विचार।

मंत्र-संज्ञा पुं० परामर्श, छिपी या रहस्यपूर्ण बात। वेदों का एक भाग। देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किया जानेवाला खास शब्दों या वाक्यों का जाप।

मंत्रकार-संज्ञा पुं० (सं०) मंत्र लिखनेवाले ऋषि।

मंत्रणा-संज्ञा स्त्री० (सं०) सलाह।

मंत्री-संज्ञा पुं० सलाह देनेवाला। राज्य के कामों में राजा को सलाह देनेवाला, अमात्य।

मंथन-संज्ञा पुं० (सं०) मथना।

मंथर-संज्ञा पुं० क्रोध, एक ज्वर, मंथ; वि० मन्द, भारी, वक्र, नीच।

मंद-वि० (सं०) धीमा। सुस्त। आलसी। मूर्ख। दुष्ट।

मंदभाग्य-वि० (सं०) बुरे भाग्य-वाला।

मंदर-संज्ञा पुं० (सं०) पुराणों के अनुसार एक पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र मथा था। स्वर्ग।

मंदरगिरि-संज्ञा पुं० (स०) मंदर [illegible] जिससे देवताओं ने समु-

को मथा था।

मंदा-वि० मंद, धीमा, शिथिल, सस्ता, खराब।

मंदाकिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) स्वर्ग में बहनेवाली गंगा।

मंदाग्नि-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक रोग जिसमें भोजन नहीं पचता।

मंदार-संज्ञा पुं० अर्क वृक्ष, हाथी, एक विद्याधर का नाम, पर्वत मंदराचल।

मंदिर-संज्ञा पुं० (सं०) रहने की जगह, घर। जहाँ देवता की मूर्ति रखी जाती है, देवालय।

मंदोदरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) रावण की पत्नी का नाम।

मंद्र-संज्ञा पुं० (सं०) गंभीर और धीमी ध्वनि।

मंशा-संज्ञा स्त्री० इच्छा, चाहना। मतलब, आशय।

मंसूख-वि० (अ०) काटा या रद किया हुआ।

मकबरा संज्ञा पुं० (अ०) वह इमारत जिसमें किसी की लाश गड़ी हो।

मकरंद-संज्ञा पुं० (सं०) फूलों का रस। मंजरी, बौर।

मकर-संज्ञा पुं० (सं०) मगर। एक राशि। संज्ञा पु० (फा०) छल, कपट।

मकरध्वज संज्ञा पु० कन्दर्प, कामदेव।

मकर-संक्रांति-संज्ञा स्त्री० (सं०) सूर्य का मकर राशि में प्रवेश करने का समय।

मकराकृत-वि० (सं०) मगर या मछली के आकार का।

मक्का-संज्ञा पु० (अ०) अरब का एक नगर जो मुसलमानों का तीर्थ है। संज्ञा पुं० एक मोटा अन्न, ज्वार, मकई।

मक्कार-वि० (अ०) कपटी, छली।

मक्खन-संज्ञा पुं० दूध में से निकलनेवाला सार जिससे घी निकालते हैं।

मक्खीचूस-संज्ञा पुं० बहुत अधिक कंजूस।

मख-संज्ञा पु० याग, यज्ञ।

मखतूल-संज्ञा पुं० काला रेशम।

मखशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) जहाँ यज्ञ किया जाय, यज्ञशाला।

मखौल-संज्ञा पुं० दिल्लगी। हँसी-मजाक।

मग-संज्ञा पुं० रास्ता।

मगज-संज्ञा पुं० दिमाग।

मगजपच्ची-संज्ञा स्त्री० किसी काम में बहुत दिमाग लड़ाना।

मगन-वि० डूबा हुआ, विचार में डूबा हुआ, लीन।

मगर-संज्ञा पुं० एक पानी का जीव, घड़ियाल। अव्य० लेकिन, परन्तु।

मगरूर-वि० (अ०) घमंडी।

मग्न-वि० (सं०) डूबा हुआ। विचारों में खोया हुआ, लीन।

मचलना-क्रि० अ० किसी चीज के लिए हठ करना, अड़ना।

मच्छ-संज्ञा पुं० बड़ी मछली।

मछली-संज्ञा स्त्री० पानी का एक जीव, मीन।

मछुआ, मछुवा--संज्ञा पु० मछली पकड़नेवाला, धीवर, मल्लाह।

मजबूर-वि० लाचार, बिना बस का।

मजमून-संज्ञा पुं० (अ०) विषय जिस पर कुछ कहा या लिखा जाय। लेख।

मजलिस-संज्ञा स्त्री० (अ०) सभा, समाज।

मजहब-संज्ञा पुं० (अ०) मत, धर्म।

मजा-संज्ञा पुं० (फा०) स्वाद, सुख, मनोविनोद, तमाशा।

मजाक-संज्ञा पुं० (अ०) हँसी, ठट्ठा, दिल्लगी।

मजार-संज्ञा पुं० (अ०) किसी की लाश को गाड़कर उस पर बनाया गया चबूतरा, समाधि, कब्र।

मजारी-संज्ञा स्त्री० बिल्ली।

मजाल-संज्ञा स्त्री० शक्ति, ताकत।

मजीरा-संज्ञा पुं० काँसे की कटोरियों का जोड़ा जो बजाया जाता है।

मजेदार-वि० (फा०) अच्छे स्वाद का। बढ़िया। अच्छा लगने-वाला।

मज्जा-संज्ञा स्त्री० (सं०) नली की हड्डी के भीतर का गूदा।

मझधार-संज्ञा स्त्री० नदी का बीच। किसी कार्य का बीच।

मझला-वि० बीच का।

मझोला-वि० बीच का। न ज्यादा कम न [illegible], मध्यम।

मटकना-क्रि० अ० शरीर हिलाते हुए चलना, नखरा करना।

मटका-संज्ञा पुं० मिट्टी का बड़ा घड़ा।

मटमैला-वि० मिट्टी के रंग का, खाकी।

मटरगश्त-संज्ञा पुं० इधर-उधर घूमना, टहलना। सैर-सपाटा।

मटियामेट-वि० बिलकुल मिट्टी में मिला देना, बरबाद हो गया।

मट्ठा-संज्ञा पुं० मथा हुआ और मक्खन निकाला हुआ दही, छाछ।

मठ-संज्ञा पुं० देवगृह, रहने की जगह, साधुओं के रहने की जगह।

मठिया-संज्ञा स्त्री० छोटा मठ। छोटी कुटी।

मढ़ना-क्रि० स० चारों ओर से लपेट देना। किसी बाजे पर चमड़ा मढ़ना। किसी के ऊपर कोई भार डालना, थोपना।

मढ़ी-संज्ञा स्त्री० छोटा मठ। छोटा घर, छोटा मण्डप, झोपड़ी।

मतंग-संज्ञा पुं० (सं०) हाथी। बादल। एक ऋषि।

मत-संज्ञा पु० (सं०) विचार, राय। निश्चित सिद्धान्त। धर्म, पंथ। क्रि० वि० नहीं, न।

मतलब-संज्ञा पुं० (अ०) तात्पर्य, आशय। अर्थ। संबंध।

मतलबी-वि० अपने ही लिए कुछ करनेवाला, स्वार्थी।

मतली-संज्ञा स्त्री० खाये हुए भोजन का मुँह से [illegible] करना।

मतवाला-वि० पुं० नशे में डूबा हुआ। पागल।
मताधिकार-संज्ञा पुं० (सं०) अपना भी विचार या मत देने का अधिकार।
मतावलंबी-संज्ञा पुं० किसी एक मत या पंथ को माननेवाला।
मति संज्ञा स्त्री० बुद्धि, इच्छा, स्मृति, सम्मति: क्रि० वि० न, नहीं, मत।
मत्त-वि० (सं०) उन्मत्त, मतवाला। पागल।
मत्सर-संज्ञा पुं० ईर्ष्या, जलन, डाह, क्रोध।
मत्स्य-संज्ञा पुं० (सं०) मछली।
मत्स्यगंधा-संज्ञा स्त्री० जलपीपल, व्यास की माता।
मथना-क्रि० स० तरल पदार्थ को हिलाना, बिलोना। किसी काम को बहुत करना।
मथनी, मथानी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का लकड़ी का दण्ड जिससे दही आदि मथा जाता है।
मद-संज्ञा पुं० आनन्द, हर्ष, खुशी। मतवाले हाथियों के मस्तक से बहनेवाला गंधयुक्त द्रव्य। नशा।
मदकल-वि० (सं०) मतवाला, मस्त, उन्मत्त, बावला।
मदद-संज्ञा स्त्री० (अ०) सहारा, सहायता।
मददगार-वि० (फा०) मदद करनेवाला।
मदन-संज्ञा पुं० (सं०) कामदेव।
मदनोत्सव-संज्ञा पुं० उत्सव, मदन-महोत्सव।
मदरसा-संज्ञा पुं० (अ०) पाठशाला।
मदार-संज्ञा पुं० आक का वृक्ष।
मदारी-संज्ञा पुं० बंदर, भालू आदि का नाच दिखानेवाला, बाजीगर।
मदिरा-संज्ञा स्त्री० मद्य, शराब।
मदोन्मत्त-वि० (सं०) मद में पागल।
मद्य-संज्ञा पुं० मदिरा, शराब।
मद्यप-वि० (सं०) शराब पीनेवाला।
मधु-संज्ञा पुं० मद्य, जल, शहद। शराब। फूल का रस।
मधुकर-संज्ञा पुं० (सं०) भौंरा, भ्रमर।
मधुकरी-संज्ञा स्त्री० भीख।
मधुप-संज्ञा पुं० भ्रमर, भौंरा।
मधुपर्क-संज्ञा पुं० (सं०) देवताओं पर चढ़ाया जानेवाला दही, घी, जल, शहद, चीनी, पञ्चामृत।
मधुबन-संज्ञा पुं० ब्रज भूमि का एक जंगल।
मधुमक्खी, मधुमक्षिका-संज्ञा स्त्री० फूलों का रस चूसकर शहद बनानेवाली एक मक्खी।
मधुर-वि० (सं०) मधु के समान रस, महुए का पेड़, बिरोजा नीबू।
मधुरता-संज्ञा स्त्री० मिठास, मधुर होना, मीठा, सुन्दरता।
मधुरान्न-संज्ञा पुं० (सं०) मिठाई।
मधुरिमा-संज्ञा स्त्री० मिठास।

सौन्दर्य, सुन्दरता।
मधुसूदन-संज्ञा पुं० भौंरा, श्री कृष्ण।
मधूक-संज्ञा पुं० मुलेठी। महुआ।
मध्य-संज्ञा पुं०अवसान, विश्राम,बीच का भाग।
मध्यदेश-संज्ञा पुं० (सं०) भारत-वर्ष का एक प्रदेश।
मध्यम-वि० (सं०) बीच का। न बहुत छोटा न बहुत बड़ा।
मध्यमपुरुष-संज्ञा पुं० (सं०) व्याकरण में वह पुरुष जिससे बात की जाय।
मध्यमा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बीच की उँगली।
मध्यवर्त्ती-वि० (सं०) बीच का।
मध्यस्थ-संज्ञा पुं० (सं०) बीच में पड़कर किसी काम को कराने या निबटानेवाला।
मध्याह्न-संज्ञा पुं० (सं०) ठीक दोपहर। दोपहर का समय।
मन-संज्ञा पुं० चित्त, अन्तःकरण।
मनका-संज्ञा पुं० पत्थर या लकड़ी का ऐसा दाना जिसकी माला बनायी जाती है, गुरिया।
मनकामना-संज्ञा स्त्री० इच्छा।
मन-गढ़ंत-वि० झूठ-मूठ बनायी हुई बात। संज्ञा स्त्री० कोरी कल्पना।
मनचला-वि० साहसी,निडर,रसिक।
मनचीता-वि० मन में सोचा हुआ, इच्छित।
मनन-संज्ञा पुं०अनुचिन्तन, सोचना, विचार।
मननशील-वि० विचार करनेवाला, विचारशील।
मनवांछित-वि० मन का चाहा हुआ, इच्छित।
मनभावता-वि० मन को भला लगनेवाला।
मनभावन-वि० मन को अच्छा लगनेवाला।
मनमाना-वि० मन के अनुकूल, पसंद का।
मनमुटाव-संज्ञा पुं० मन में भेद पड़ना, वैमनस्य होना।
मनमोदक-संज्ञा पुं० मन के लड्डू, मन को अच्छी लगनेवाली सोची हुई असंभव बातें।
मनमोहन-वि० मन को अच्छा लगने-वाला,प्यारा। संज्ञा पुं० श्री कृष्ण।
मनमौजी-वि० मन की इच्छा के अनुसार काम करनेवाला।
मनशा-संज्ञा स्त्री० (अ०) इच्छा। इरादा। मतलब।
मनसा-संज्ञा स्त्री० इच्छा। इरादा। मतलब। मन। क्रि० वि० मन से।
मनस्ताप-संज्ञा पुं० (सं०) मन का दुःख या कष्ट। पछतावा।
मनस्वी-वि० बुद्धिमान्।
मनाही-संज्ञा स्त्री० न करने की आज्ञा,. निषेध, रोक।
मनीषा-संज्ञा स्त्री० बुद्धि, प्रशंसा, अक्ल।
मनुष्य-संज्ञा पुं० मानव, आदमी, नर।
मनुष्यता-संज्ञा स्त्री० (सं०) मनुष्य का भाव, इन्सानियत। तमीज।
मनुष्यत्व-संज्ञा पुं० मनुष्यता।

मनुष्यलोक-संज्ञा पुं० भूलोक, वह लोक जहां मनुष्य रहते हैं, मर्त्य लोक, पृथ्वी।
मनोकामना-संज्ञा स्त्री० इच्छा।
मनोगत-वि० (सं०) मन का भाव, दिली, अभीष्ट. इच्छा।
मनोज-संज्ञा पुं० कन्दर्प, कामदेव।
मनोज्ञ-वि० मनोहर, सुन्दर।
मनोनिग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) मन को वश में रखना।
मनोनीत-वि० इच्छा का। अपनी इच्छा से चुना गया।
मनोयोग-संज्ञा पुं० (सं०) मन को एक ही पदार्थ पर लगाये रखना।
मनोरञ्जक-वि० (सं०) मन को खुश करनेवाला।
मनोरंजन-संज्ञा पुं० (सं०) मन को खुश रखना, या बहलाना।
मनोरथ-संज्ञा पुं० (सं०) इच्छा, अभिलाषा।
मनोरम-वि० (सं०) सुन्दर।
मनोवांछित-वि० (सं०) इच्छा किया हुआ। चाहा हुआ।
मनोविकार-संज्ञा पुं० (सं०) मन में कोई भाव पैदा होने की अवस्था।
मनोविज्ञान-संज्ञा पुं० (सं०) वह शास्त्र जिसमें मन और उसकी अवस्थाओं का अध्ययन होता है।
मनोवृत्ति-संज्ञा स्त्री० मन का व्यापार या कार्य।
मनोवेग-संज्ञा पुं० (सं०) देखिए 'मनोविकार'।
मनोहर-वि० (सं०) चित्त को हरने वाला, सुन्दर।
मनोहरता-संज्ञा स्त्री० (सं०) सुन्दरता।
मनोहारी-वि० मनोहर, चित्ताकर्षक।
मन्नत-संज्ञा स्त्री० किसी इच्छा के पूरी हो जाने पर किसी देवता की पूजा करने की प्रतिज्ञा।
मन्वंतर-संज्ञा पुं० (सं०) ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग।
मम-सर्व० मेरी, मेरा।
ममता, ममत्व-संज्ञा स्त्री० पुं० (सं०) अपनापन। प्रेम। मोह।
मयंक-संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
मय-संज्ञा पुं० (सं०) एक देश का नाम। पुराणानुसार एक दानव।
मयन-संज्ञा पुं० कामदेव।
मयूख-संज्ञा पुं० रश्मि, किरण, प्रकाश।
मयूर-संज्ञा पुं० शिखी, मोर।
मरकत-संज्ञा पुं० (सं०) एक रत्न, पन्ना।
मरघट-संज्ञा पुं० (सं०) वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं।
मरजी-संज्ञा स्त्री० (अ०) इच्छा, रुचि।
मरण-संज्ञा पुं० मृत्यु, मौत।
मरतबा-संज्ञा पुं० (अ०) उपाधि, पदवी। बार, दफा।
मरदानगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) वीरता, पुरुषत्व। साहस।
मरदाना-वि० (फा०) पुरुष का। वीरोचित।
मरम्मत-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी

टूटी-फूटी चीज को बनवाना। मारना।
मरहम-संज्ञा पुं० (अ०) घाव आदि पर लगाया जानेवाला औषधियों का लेप।
मरहूम-वि० (अ०) मरा हुआ, मृत।
मरिच-संज्ञा पुं० गोलमिर्च। मिरचा।
मरीचि-संज्ञा पुं० (सं०) एक ऋषि। संज्ञा स्त्री० किरण, कान्ति, ज्योति, प्रकाश।
मरीचिका-संज्ञा स्त्री० मृगतृष्णा।
मरीज-वि० (अ०) रोगी, बीमार।
मरु-संज्ञा पुं० मरुभूमि, रेगिस्तान।
मरुत्-संज्ञा पुं० वायु। एक देवगण। हवा। प्राण।
मरुद्वीप-संज्ञा पुं० (सं०) रेगिस्तान के बीच में हरा-भरा उपजाऊ मैदान, नखलिस्तान।
मरुभूमि-संज्ञा स्त्री० (सं०) बालू से भरा मैदान, रेगिस्तान।
मरुस्थल-संज्ञा पुं० मरुभूमि।
मर्कट-संज्ञा पुं० मकड़ा, बन्दर।
मर्त्य-संज्ञा पुं० भूलोक, मरनेवाला, मनुष्य।
मर्त्यलोक-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी।
मर्द-संज्ञा पुं० आदमी। साहसी और वीर आदमी। पुरुष।
मर्दुमशुमारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) देश में रहनेवाले लोगों की गिनती।
मर्म-संज्ञा पुं० स्वरूप। तत्त्व, सार। मेल की जगह। कोमल स्थान, भेद।
मर्मज्ञ-वि० (सं०) किसी बात के सार को जाननेवाला, तत्त्वज्ञ।
मर्मभेदक, मर्मभेदी-वि० कोमल स्थान या हृदय पर चोट देनेवाला।
मर्मवचन-संज्ञा पुं० हृदय पर चोट करनेवाली बात।
मर्मवाक्य-संज्ञा पुं० (सं०) छिपी हुई या रहस्य की बात।
मर्मान्तक-वि० (सं०) मन में लगने या चोट पहुँचानेवाली बात, मर्मभेदक।
मर्मी-वि० मर्मविद्, मर्मज्ञ।
मर्यादा-संज्ञा स्त्री० (सं०) सीमा। हद। मान। सदाचार। धर्म।
मल-संज्ञा पुं० विष्ठा। मैल। शरीर से निकलनेवाले मैल। पाप।
मलद्वार-संज्ञा पुं० (सं०) शरीर के वे अंग जिनसे मल निकलता है। गुदा।
मलमल-संज्ञा स्त्री० एक महीन सफेद और पतला कपड़ा।
मलमास-संज्ञा पुं० (सं०) बिना संक्रांति का अमांत मास, अधिक मास।
मलयगिरि-संज्ञा पुं० (सं०) दक्षिण का एक पर्वत, मलय।
मलयज-संज्ञा पुं० (सं०) चंदन।
मलयाचल-संज्ञा पुं० (सं०) दक्षिण का मलय पर्वत।
मलयानिल-संज्ञा पुं० (सं०) मलय पर्वत से आनेवाली सुगंधित वायु।
मलामत-संज्ञा स्त्री० (अ०) फटकार, लानत। गंदगी।

मलार-संज्ञा पुं० वर्षा ऋतु में गाया जानेवाला एक राग।
मलाल-संज्ञा पुं० (अ०) दुःख, रंज। उदासी।
मलिंद-संज्ञा पुं० भौंरा।
मलिन-वि० (सं०) गंदा, मैला। खराब। पापी। उदास।
मलिनता-संज्ञा स्त्री० मैल, मैलापन।
मलियामेट-संज्ञा पुं० बिलकुल बरबाद, सत्यानास।
मलीदा-संज्ञा पुं० (फा०) गूदा। मुलायम ऊनी कपड़ा।
मल्लयुद्ध-संज्ञा पुं० बाहु-युद्ध, हाथों से लड़ा जानेवाला युद्ध, कुश्ती।
मल्लविद्या-संज्ञा स्त्री० मल्लयुद्ध की विद्या।
मल्लशाला-संज्ञा स्त्री० जिस स्थान पर कुश्ती लड़ी जाय, अखाड़ा।
मल्लाह-संज्ञा पुं० (अ०) नाव चलाने और मछली मारनेवाली जाति, केवट, माझी।
मल्लिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक प्रकार का बेला, मोतिया।
मवक्किल-संज्ञा पुं० मुकदमे में जो व्यक्ति अपने लिए वकील नियुक्त करे।
मवाद-संज्ञा पुं० (अ०) पीव।
मवेशी-संज्ञा पुं० पशु, ढोर।
मशक-संज्ञा पुं० (सं०) मच्छड़। संज्ञा स्त्री० (फा०) चमड़े का पानी भरने का थैला।
मशक्कत-संज्ञा स्त्री० (अ०) श्रम, मेहनत।
मशगूल-वि० (अ०) काम में लगा हुआ।
मशविरा-संज्ञा पुं० (अ०) सलाह।
मशहूर-वि० (अ०) प्रसिद्ध।
मशाल-संज्ञा स्त्री० (अ०) डंडे में लगी जलती हुई मोटी बत्ती।
मशालची-संज्ञा पुं० (फा०) मशाल जलानेवाला।
मसखरा-संज्ञा पुं० (अ०) हँसी-मजाक करनेवाला। मजाकिया।
मसल-संज्ञा स्त्री० (अ०) कहावत।
मसलन्-वि० (अ०) उदाहरण के के लिए, जैसे।
मसला-संज्ञा पुं० (अ०) सोचने या विचार करने का विषय।
मसा-संज्ञा पुं० मच्छड़। शरीर पर मांस का उभडा छोटा काला दाना।
मसान-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं, श्मशान।
मसि-संज्ञा स्त्री० लिखने की स्याही। कालिख।
मसिपात्र-संज्ञा पुं० (सं०) दावात।
मसी-संज्ञा स्त्री० काली स्याही।
मसीत, मसीद-संज्ञा स्त्री० (ग्रा०) मुसलमानों का इकट्ठे होकर पूजा करने का स्थान, मस्जिद।
मसूड़ा-संज्ञा पुं० मुंह के अन्दर का वह मांस जिस पर दाँत जमे होते हैं।
मसौदा-संज्ञा पुं० सोचने-विचारने के लिए पहली बार तैयार किया

हुआ लेख, मसविदा, ड्राफ्ट। तरकीब।
मस्त-वि० मतवाला। हमेशा बिना चिन्ता के प्रसन्न रहनेवाला। नशे से चूर।
मस्तक-संज्ञा पुं० सिर, माथा।
मस्तिष्क-संज्ञा पुं० (सं०) मस्तक के अन्दर का गूदा, भेजा। दिमाग।
मस्ती-संज्ञा स्त्री० (फा०) मतवालापन। नशा।
महत्त्व-संज्ञा पुं० अधिकता, बड़ाई। बहुत बड़ा होना, श्रेष्ठता।
महफिल-संज्ञा स्त्री० (अ०) सभा, मजलिस। जलसा।
महबूब-संज्ञा पुं० (अ०) प्रिय, प्यारा।
महरूम-वि० (अ०) जिसे न मिले, वंचित।
महर्षि-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा ऋषि, ऋषीश्वर।
महल-संज्ञा पुं० (अ०) बहुत बढ़िया, राजाओं आदि का मकान, प्रासाद।
महसूल-संज्ञा पुं० (अ०) राज्य की ओर से लिया जानेवाला खास कार्य के लिए धन। कर, टैक्स। लगान।
महा-वि० (सं०) बहुत अधिक।
महाकाल-संज्ञा पुं० (सं०) महादेव, शिव।
महाकाली-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुर्गा।
महाकाव्य-संज्ञा पुं० (सं०) एक बहुत बड़ी सर्गों में लिखी गयी कविता।
महाजन-संज्ञा पुं० साधु, श्रेष्ठ मनुष्य। रुपये-पैसे का लेन-देन करनेवाला धनी, कोठीवाल।
महात्मा-संज्ञा पुं० ऊँची आत्मा या विचारोंवाला, साधु, संन्यासी।
महाद्वीप-संज्ञा पुं० (सं०) पृथ्वी का एक भाग जिसमें कई देश हों।
महान्-वि० (सं०) बहुत बड़ा।
महानिद्रा-संज्ञा स्त्री० मृत्यु, मरण मौत।
मस्तूल-संज्ञा पुं० बड़ी नावों का शहतीर जिसमें पाल बांधते हैं।
महंत-संज्ञा पुं० मठ आदि का प्रधान। वि० प्रधान, श्रेष्ठ।
महक-संज्ञा स्त्री० गंध, वास।
महकमा-संज्ञा पुं० (अ०) किसी खास काम के लिए खास विभाग।
महत्-वि० (सं०) सबसे बढ़कर, महान। संज्ञा पुं० ब्रह्म।
महानिशा-संज्ञा स्त्री० (सं०) आधी रात, प्रलय की रात।
महानुभाव-संज्ञा पुं० महाशय, बड़ा और सम्मानवाला व्यक्ति, महापुरुष।
महापातक-संज्ञा पुं० (सं०) पाँच बहुत बड़े पाप, ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरुपत्नी से व्यभिचार तथा इन्हीं पापियों के साथ संसर्ग।
महापुरुष-संज्ञा पुं० महानुभाव, श्रेष्ठ व्यक्ति, महात्मा।
महाप्रलय-संज्ञा पुं० (सं०) वह प्रलय जब सब कुछ नष्ट हो जायगा केवल पानी बचेगा।

महाबाहु-वि० (सं०) लम्बी भुजा-वाला, बलवान्।
महाभूत-संज्ञा पुं० (सं०) पाँच तत्व, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश।
महामंत्र-संज्ञा पुं० बीज-मन्त्र, इष्ट मन्त्र, प्रभावशाली मन्त्र।
महामंत्री-संज्ञा पुं० राजा का प्रधान मंत्री।
महामांस-संज्ञा पु० (सं०) गाय या मनुष्य का मांस।
महामाई-संज्ञा स्त्री० दुर्गा। काली।
महामाया-संज्ञा स्त्री० गंगा, प्रकृति, कुदरत, दुर्गा।
महामारी-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह छूत का रोग जिसमें एक साथ बहुत से लोग मरते हैं।
महामृत्युंजय-संज्ञा पुं० (सं०) शिव।
महारथी-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा योद्धा।
महाराज-संज्ञा पुं० (सं०) बहुत बड़ा राजा। श्रेष्ठ पुरुषों के लिए संबोधन।
महाराजाधिराज-संज्ञा पुं० (सं०) बहुत बड़ा राजा।
महाराणा-संज्ञा पुं० मेवाड़, चित्तौड़ तथा उदयपुर के राजवंश की उपाधि।
महारुद्र-संज्ञा पुं० (सं०) शिव।
महावट-संज्ञा स्त्री० जाड़े में होने-वाली वर्षा। माघ-पूस की वर्षा।
महावत-संज्ञा पुं० हाथी चलाने-वाला, फीलवान।
महावर-संज्ञा पुं० एक लाल रंग जिसे विवाहित स्त्रियाँ पाँवों में लगाती हैं।
महावीर-संज्ञा पुं० (सं०) हनुमान्। वि० बहुत बड़ा वीर।
महाशय-संज्ञा पुं० (सं०) ऊँचे आशय या विचारोंवाला, महानु-भाव, सज्जन।
महिमा-संज्ञा स्त्री० प्रताप। गौरव। प्रभाव।
महिला-संज्ञा स्त्री० (सं०) अच्छी स्त्री
महिषमर्दिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) महिष राक्षस को मारनेवाली, दुर्गा।
महिषी-संज्ञा स्त्री० (सं०) भैंस। पटरानी।
मही-संज्ञा स्त्री० (सं०) जमीन, पृथ्वी, स्थान, समूह, सेना, झुंड।
महीतल-संज्ञा पुं० भूतल, संसार।
महीधर-संज्ञा पुं० विष्णु, पर्वत, शेषनाग।
महीप, महीपति-संज्ञा पुं० (सं०) राजा।
महीसुर-संज्ञा पुं० (सं०) ब्राह्मण।
महेंद्र-संज्ञा पुं० (सं०) विष्णु। इन्द्र। एक पर्वत का नाम।
महेश-संज्ञा पुं० शिव, महादेव, ईश्वर।
महेश्वर-संज्ञा पुं० परमेश्वर। शिव।
महोत्सव-संज्ञा पुं० कोई बड़ा जलसा।
महोदधि-संज्ञा पुं० सागर, समुद्र।
महोदय-संज्ञा पुं० (सं०) स्वामी।

महाशय।
मांग-संज्ञा स्त्री० मांगना। आवश्यकता। सिर के बालों को काढ़ने में बीच की रेखा।
मांगलिक-वि० (सं०) मंगल या भला करनेवाला।
मांझी-संज्ञा पुं० नाव खेनेवाला, केवट।
मांडलिक-संज्ञा पुं० शासक, छोटा राजा जो किसी के अधीन हो।
मांद-संज्ञा स्त्री० (देश०) जंगली और हिंसक जंतुओं की गुफा।
मांस-संज्ञा पुं० (सं०) शरीर में हड्डी के ऊपर का मुलायम लाल पदार्थ।
मांसपेशी-संज्ञा स्त्री० (सं०) शरीर में मांस के पिण्ड।
मांसभक्षी-संज्ञा पुं० पशुओं का मांस खानेवाले लोग।
मांसल-वि० (सं०) मांस से भरा हुआ, मोटाताजा।
मांसाहारी-संज्ञा पुं० मांस का भोजन खानेवाला।
माकूल-वि० (अ०) ठीक, उचित। योग्य।
माखन-संज्ञा पुं० मक्खन।
माणिक्य-संज्ञा पुं० (सं०) लाल रंग का एक रत्न।
मातंग-संज्ञा पुं० हस्ती, हाथी, एक ऋषि।
मातम-संज्ञा पुं० (अ०) किसी के मरने पर रो-पीटकर दुःख मनाना, शोक, गमी, स्यापा।
मातमपुर्सी-संज्ञा स्त्री० (फा०) मृत व्यक्ति के दुःख से दुःखी लोगों को ढारस बँधाना।
माता-संज्ञा स्त्री० जन्म देनेवाली स्त्री। माँ। चेचक। वि० मतवाला।
मातुल-संज्ञा पुं० माँ का भाई, मामा। धतूरा, मटर।
मातृभाषा-संज्ञा स्त्री० (सं०) माँ की गोद से ही जो भाषा बच्चा सीखता है।
मादक-वि० (सं०) नशा पैदा करनेवाला, नशीला।
मादकता-संज्ञा स्त्री० (सं०) नशीलापन। मादक होने का भाव।
मादा-संज्ञा स्त्री० (फा०) स्त्री जाति।
माधुरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) मिठास। सुंदरता। शराब।
माधुर्य-संज्ञा पुं० मधुरता। मिठास। सुन्दरता। काव्य का एक गुण।
मान-संज्ञा पुं० (सं०) वजन आदि की नाप, परिमाण। पैमाना, नापने का साधन। इज्जत।
मानमंदिर-संज्ञा पुं० वेधशाला, कोपभवन।
मान-मनौती-संज्ञा स्त्री० रूठे हुए को मनाना। परस्पर का प्रेम।
मानमोचन-संज्ञा पुं० (सं०) रूठे हुए को मनाना।
मानव-संज्ञा पुं० (सं०) मनुष्य, आदमी।
मानवशास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) मानव-जाति की उत्पत्ति, विकास आदि का अध्ययन करनेवाला

शास्त्र।
मानवी-संज्ञा स्त्री० नारी, स्त्री, औरत; वि० मनुष्य का।
मानस-संज्ञा पुं० (सं०) मन। मानसरोवर।
मानसपुत्र-संज्ञा पुं० (सं०) पुराण के अनुसार इच्छा से ही उत्पन्न होनेवाला पुत्र।
मानस-संज्ञा पुं० मानसरोवर।
मानसरोवर-संज्ञा पुं० हिमालय पर एक बडी झील।
मानसशास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह शास्त्र जिसमें मनुष्य के मन का अध्ययन किया जाता है, मनोविज्ञान।
मानसिक-वि० (सं०) मन का। मन से सोचा हुआ।
मानसी-संज्ञा स्त्री० (सं०) मन की मन में की जानेवाली पूजा।
मानहानि-संज्ञा स्त्री० अनादर, बेइज्जती, अप्रतिष्ठा, अपमान।
मानिंद-वि० (फा०) समान।
मानिक-संज्ञा पुं० लाल रंग की एक मणि।
मानिनी-वि० स्त्री० (सं०) मान या गर्व करनेवाली। रूठनेवाली।
मानी-वि० घमंडी। संज्ञा स्त्री० (अ०) मतलब, अर्थ।
मानुष-वि० (सं०) मनुष्य का।
मानुषिक-वि० (सं०) मनुष्य का।
मानुषी-वि० मनुष्य-संबंधी।
मानुस-संज्ञा पुं० आदमी।
मान्य-(सं०) सम्मान के लायक, माननीय, पूज्य, श्रेष्ठ।
माप-संज्ञा स्त्री० नाप। पैमाना।
मापक-संज्ञा पुं० मान, जिससे नापा जाय, पैमाना।
मापना-क्रि० स० तौल, घनत्व आदि मालूम करना, नापना।
माफ-वि० (अ०) क्षमा किया हुआ।
माफी-संज्ञा स्त्री० (अ०) क्षमा, किसी अपराध का बदला न लेकर छोड़ देना।
मामूली-वि० (अ०) साधारण, सामान्य।
मायका-संज्ञा पु० नैहर, पीहर।
माया-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी, धन, द्रव्य। भ्रम, धोखा। छल। जादू।
मायावाद-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर को छोड़ सब कुछ असत्य मानने का सिद्धान्त।
मायावादी-संज्ञा पुं० मायावाद के सिद्धान्त को माननेवाला।
मायाविनी-संज्ञा स्त्री० छल-कपट और धोखा करनेवाली स्त्री।
मायिक-वि० (सं०) माया से बना हुआ, जाली, छलवाला।
मारफत-अव्य० (अ०) जरिये से।
मारामार-क्रि० वि० बहुत जल्दी।
मारी-संज्ञा स्त्री० महामारी का रोग।
मारुत-संज्ञा पुं० वायु, हवा।
मारुति-संज्ञा पुं० (सं०) हनुमान्। भीम।
मारू-संज्ञा पुं० युद्ध के समय

गाया जानेवाला एक राग। बड़ा डंका, या नगाड़ा।
मार्कंडेय-संज्ञा पुं० (सं०) मृकंड ऋषि के पुत्र जो अपने तपोबल से सदैव जीवित रहते हैं।
मार्ग-संज्ञा पुं० पथ, रास्ता।
मार्गशीर्ष-संज्ञा पुं० (सं०) अगहन का महीना।
मार्जार-संज्ञा पुं० (सं०) बिल्ली।
मार्जित-वि० (सं०) साफ किया हुआ। स्वच्छ किया हुआ।
मार्तंड-संज्ञा पुं० शूकर, सूरज।
मार्फत-अव्य० (अ०) द्वारा, जरिये से।
मार्मिक-वि० (सं०) मर्म पर प्रभाव डालनेवाली बात, मर्मस्पर्शी।
मार्मिकता-संज्ञा स्त्री० (सं०) मर्म पर प्रभाव डाल सकनेवाला होना।
मालगुजारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) सरकार द्वारा जमींदार से लिया जानेवाला भूमि का कर।
माल-गोदाम-संज्ञा पुं० स्टेशन का वह स्थान जहाँ रेल से आया हुआ माल रखा जाता है।
मालती-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक लता। चाँदनी, ज्योत्स्ना।
मालदार-वि० (फा०) धनवाला, धनी।
माला-संज्ञा स्त्री० (सं०) फूलों का हार।
मालामाल-वि० (फा०) बहुत धनवाला। धन-धान्य से पूर्ण।
मालिक-संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वर। स्वामी।
मालिन्य-संज्ञा पुं० अँधेरा, मैलापन, गंदगी, बुरी वृत्ति।
मालिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) मलने का काम, मलाई।
माली-संज्ञा पुं० बाग और पौदों आदि की देख-भाल करनेवाली एक जाति। वि० माला पहिने हुए।
मासिक-वि० (सं०) महीने का। महीने होनेवाला, माहवारी।
मासी-संज्ञा स्त्री० माँ की बहिन, मौसी।
माहताब-संज्ञा पुं० (फा०) चन्द्रमा।
माहवार-क्रि० वि० (फा०) हर महीने। वि० हर महीने का।
माहवारी-वि० (फा०) हर महीने का।
माहुर-संज्ञा पुं० विष, गरल।
मिजराब-संज्ञा स्त्री० (अ०) एक छल्ला जिससे सितार आदि बजाया जाता है।
मिजाज-संज्ञा पुं० (अ०) शरीर की दशा। प्रकृति, स्वभाव। घमण्ड, अभिमान।
मिजाजदार-वि० जिसे बड़ा घमण्ड हो।
मिजाजशरीफ-(अ०) एक वाक्य जिसका अर्थ है, आप अच्छे तो हैं?
मिट्ठू-संज्ञा पुं० मीठा बोलनेवाला, तोता। वि० मीठा और प्रिय बोलनेवाला।
मिठाई-संज्ञा स्त्री० मिठास। मीठी

खाने की चीज ।
मिठास-संज्ञा स्त्री० मीठा होना, माधुर्य, मीठापन ।
मित-वि० (सं०) सीमा के अन्दर, थोड़ा ।
मितभाषी-संज्ञा पुं० थोड़ा ही बोलनेवाला ।
मितव्यय-संज्ञा पुं० (सं०) थोड़ा व्यय करना ।
मितव्ययी-संज्ञा पुं० कम व्यय करनेवाला ।
मिती-संज्ञा स्त्री० हिन्दी महीने की तिथि । दिन ।
मित्र-संज्ञा पुं० साथी, सखा, दोस्त । सूर्य ।
मित्रता-संज्ञा स्त्री० (सं०) मित्र होना, दोस्ती ।
मिथुन-संज्ञा पुं० (सं०) स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध, संभोग । एक राशि ।
मिथ्या-वि० (सं०) झूठ, असत्य ।
मिथ्यावादी-संज्ञा पुं० झूठ बोलनेवाला व्यक्ति, झूठा ।
मियाँ-संज्ञा पुं० (फा०) मालिक । पति । मुसलमान ।
मियाँमिट्ठू-संज्ञा पुं० मीठा बोलनेवाला । मूर्ख, बेवकूफ ।
मिरगी-संज्ञा स्त्री० मनका एक रोग ।
मिरचा-संज्ञा पुं० एक कड़ुवा पदार्थ, मिर्च ।
मिरजा-संज्ञा पुं० (फा०) मीर अमीर का पुत्र । राजकुमार । मुगलों की उपाधि ।
मिलन-संज्ञा पुं० समागम, भेंट, मिलाप, मिलावट ।
मिलनसार-वि० हर व्यक्ति से अच्छी तरह मिलनेवाला ।
मिलनी-संज्ञा स्त्री० विवाह में एक रस्म ।
मिल्कियत-संज्ञा स्त्री० (अ०) जमींदारी । जागीर । धन, सम्पत्ति ।
मिश्र-वि० (सं०) मिला हुआ । गणित में कई भिन्न प्रकार की संख्याओं से संबद्ध । संज्ञा पुं० रक्त, लोहू, ब्राह्मणों की एक उपाधि ।
मिश्रण-संज्ञा पुं० (सं०) मिलावट । गणित में संख्याओं का जोड़ना ।
मिश्रित-वि० (सं०) एक में मिला हुआ । मिलाया हुआ ।
मिष-संज्ञा पुं० छल, कपट, बहाना । जलन, डाह, स्पर्धा, होड़ ।
मिष्टभाषी-संज्ञा पुं० मीठी बोली बोलनेवाला, मधुरभाषी ।
मिष्टान्न-संज्ञा पुं० मिष्ट, मिठाई ।
मिस-संज्ञा पुं० बहाना, हीला ।
मिसरा-संज्ञा पुं० उर्दू या फारसी की कविता में एक चरण ।
मिस्तरी-संज्ञा पुं० हाथ का कुशल कारीगर ।
मिस्ल-वि० (अ०) समान ।
मिस्सी-संज्ञा स्त्री० दाँतों का एक प्रकार का मंजन ।
मिहिर-संज्ञा पुं० सूर्य, चन्द्रमा,

धादल, तांबा, अर्क वृक्ष ।
मीआद-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी काम के खत्म होने का निश्चित समय या काल, मियाद ।
मीआदी-वि० जिस काम का समय निश्चित हो ।
मीन-संज्ञा पुं० मत्स्य, मछली, एक राशि ।
मीनकेतन-संज्ञा पुं० (सं०) कामदेव।
मीना-संज्ञा पुं० (फा०) एक नीले रंग का कीमती पत्थर ।
मीनाकारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) सोने-चांदी पर किया जानेवाला रंगीन काम ।
मीनार-संज्ञा स्त्री० बहुत ऊँचे गोलाकार चली जानेवाली इमारत ।
मीमांसक-संज्ञा पुं० (सं०) किसी बात की मीमांसा करनेवाला ।
मीमांसा-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी बात को अनुमान और तर्क से समझना ।
मीलित-वि० (सं०) बन्द । बन्द किया हुआ ।
मुंड़ाई-संज्ञा स्त्री० मूड़ने का काम, मूंड़ने या मुड़ाने का शुल्क।
मुंदना-क्रि० अ० बन्द होना । छिपना ।
मुंदरी-संज्ञा स्त्री० एक गहना, चांदी आदि का छल्ला, अँगूठी।
मुँह-संज्ञा पुं० चेहरे का वह भाग जिससे बोला तथा भोजन किया जाता है, मुख-विवर । छेद ।
मुँहकाला-संज्ञा पुं० बदनामी,अपमान।
मुँहजोर-वि० बहुत बोलनेवाला । बोलने में बड़े-छोटे का ख्याल न करनेवाला, मुंहफट ।
मुँहदिखाई-संज्ञा स्त्री० नई वधू का मुंह देखने की रस्म, तथा उस समय दी जानेवाली भेंट ।
मुंहदेखा-वि० सामना हो जाने पर ही किया जानेवाला काम या व्यवहार ।
मुँहफट-वि० बिना संकोच के सब कुछ कह डालनेवाला ।
मुँहबोला-वि० केवल मुंह से कही हुई बात जो सही न हो ।
मुंहमांगा-वि० जैसा मांगा जाय वैसा ही, मनोनुकूल ।

मुंडन-संज्ञा पुं० (सं०) एक संस्कार जिसमें सिर के बाल बिलकुल काट डाले जाते हैं । सिर को बिलकुल मुड़ाना ।
मुंडमाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) शिव या दुर्गा की कटे हुए सिरों की माला।
मुंडमालिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) कटे हुए सिरों की माला पहिननेवाली, दुर्गा ।
मुंडमाली-संज्ञा पुं० कटे सिरों की माला पहिननेवाला, शिव ।
मुंशी-संज्ञा पुं० (अ०) निबंध या लेख लिखनेवाला, लेखक ।
मुंसिफ-संज्ञा पुं० (अ०) न्याय करनेवाला, न्यायाधीश ।
मुअत्तल-वि० (अ०) दंड-रूप में कुछ समय के लिए काम से अलग कर दिया जाना, पदच्युत ।

मुआफिक-वि० (अ०) अनुकूल, पक्ष की। समान। मन के अनुसार।
मुआयना-वि० (अ०) जांच, देख-भाल।
मुकदमा-संज्ञा पुं० (अ०) कचहरी में किसी धन आदि के मामले का रखा जाना। दावा।
मुकरना-क्रि० अ० किसी बात को कहकर फिर उसे पूरा न करना।
मुकरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कविता जिसमें एक बात कहकर उसकी उलटी बात स्थिर की जाती है।
मुकर्रर-क्रि० वि० (अ०) फिर से, दुबारा।
मुकर्रर-वि० (अ०) तैनात, ठहराया हुआ। निश्चित, पक्का।
मुकाबला-संज्ञा पुं० (अ०) आमना-सामना। मुठभेड़। तुलना। विरोध।
मुकाबिल-क्रि० वि० (अ०) सामने। संज्ञा पुं० विरोधी, प्रतिद्वन्दी। शत्रु।
मुकुट-संज्ञा पुं० किरीट, ताज।
मुकुर-संज्ञा पुं० दर्पण, शीशा, केला, कोरक, कली।
मुकुल-संज्ञा पुं० आत्मा, कली।
मुकुलित-वि० (सं०) कलियोंवाला। खिला हुआ। अधखुला।
मुक्तकंठ-वि० (सं०) साफ-साफ या चिल्लाकर बोलनेवाला।
मुक्तहस्त-वि० (सं०) खुले हाथ खूब दान करनेवाला।
मुक्ता-संज्ञा स्त्री० (सं०) मोती।
मुक्ताफल-संज्ञा पुं० (सं०) मोती।
मुख-संज्ञा पुं० मुंह, आनन, आगे या सामने का भाग, छेद; वि० मुख्य, खास।
मुखड़ा-संज्ञा पुं० चेहरा, मुख।
मुखतार-संज्ञा पुं० (अ०) कानूनी सलाह देने तथा काम करनेवाला।
मुखबिर-संज्ञा पुं० (अ०) जासूस। छिपे-छिपे खबर लेनेवाला।
मुखबिरी-संज्ञा स्त्री० खबर देने का काम। जासूसी।
मुखर-वि० (सं०) खूब बोलनेवाला, बकवादी।
मुखालिफ-वि० (अ०) खिलाफ, विरोधी। दुश्मन, शत्रु।
मुखिया-संज्ञा पुं० नेता, सरदार, अगुआ।
मुख्य-वि० (सं०) खास। सब में बड़ा, प्रधान।
मुग्ध-वि० मोह में पड़ा हुआ, मोहित। लीन, आसक्त।
मुछंदर-संज्ञा पुं० बड़ी-बड़ी मूंछों-वाला।
मुजरा-संज्ञा पुं० (अ०) किसी बड़ी रकम से काट लिया गया हुआ धन। बड़े या धनवान को प्रणाम करना, अभिवादन। वेश्या का गाना।
मुजरिम-संज्ञा पुं० (अ०) अपराधी, जिस पर मुकदमा चलाया जाय, अभियुक्त।
मुटाई-संज्ञा स्त्री० मोटापन,

पुष्टि, अभिमान, घमंड ।
मुट्ठी-संज्ञा स्त्री० बँधी हुई हथेली ।
मुठभेड़-संज्ञा स्त्री० टक्कर । लड़ाई । सामना ।
मुताबिक-क्रि० वि० (अ०) अनुसार । वि० अनुकूल ।
मुद-संज्ञा पुं० आनन्द खुशी, हर्ष ।
मुदित-वि० (सं०) खुश, प्रसन्न ।
मुद्दई-संज्ञा पुं० (अ०) दावा करनेवाला । दुश्मन ।
मुद्दत-संज्ञा स्त्री० किसी काम का निश्चित समय, अवधि । बहुत दिन ।
मुद्दाअलेह, मुद्दालेह-संज्ञा पुं० (अ०) जिस पर न्यायालय में मुकदमा चलाया जाय ।
मुद्रक-संज्ञा पुं० पुस्तक छापनेवाला ।
मुद्रण-संज्ञा पुं० छापना, मूँदना ।
मुद्रांकित-वि० (सं०) मुहर छापा हुआ । चिह्न लगाया हुआ ।
मुद्रा-संज्ञा स्त्री० (सं०) मोहर । सिक्का । अँगूठी । छाप । शरीर के चलने-फिरने आदि के ढंग ।
मुद्रिका-संज्ञा स्त्री० रुपया, अँगूठी, सिक्का ।
मुद्रित-वि० (सं०) छपा हुआ । बंद, मुँदा हुआ ।
मुनादी-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी बात की सारे शहर में घोषणा ।
मुनाफा-संज्ञा पुं० (अ०) लाभ, फायदा ।
मुनासिब-वि० (अ०) ठीक, उचित ।
मुनि-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर, धर्म आदि पर ही सोचनेवाला । तपस्वी, त्यागी, महात्मा, ऋषि ।
मुफीद-वि० (अ०) लाभ करनेवाला । लाभकारी ।
मुबारक-वि० (अ०) शुभ, मंगल ।
मुबारकबाद-संज्ञा पुं० शुभ अवसर पर कही हुई बात, बधाई ।
मुमकिन-वि० (अ०) हो सकनेवाला, संभव ।
मुमुक्षु-वि० (सं०) मुक्ति या छुटकारा पाने की कामना रखनेवाला ।
मुमूर्षु-वि० (सं०) मरने के निकट ।
मुरझाना-क्रि० अ० फूल-पत्ती आदि का बिना पानी के सूखना ।
मुरब्बा-संज्ञा पुं० फल या मेवों का चीनी आदि की चाशनी में रखा हुआ पाक ।
मुरीद-संज्ञा पुं० (अ०) शिष्य, चेला । माननेवाला, अनुयायी ।
मुरौवत-संज्ञा स्त्री० शील, लिहाज ।
मुलजिम-वि० (अ०) जिस पर कोई मुकदमा चलाया जाय, अभियुक्त ।
मुलम्मा-संज्ञा पुं० (अ०) किसी धातु पर सोने-चाँदी का चढ़वाया हुआ पानी । ऊपरी चमक-दमक ।
मुलाकात-संज्ञा स्त्री० (अ०) भेंट, मिलना-जुलना ।
मुलाकाती-संज्ञा पुं० जान-पहचान वाला, परिचित ।
मुलाजिम-संज्ञा पुं० (अ०) नौकर ।
मुल्क-संज्ञा पुं० (अ०) देश । प्रांत ।

मुल्ला-संज्ञा पुं० मौलवी ।
मुवक्किल-संज्ञा पुं० (अ०) जो अपने किसी मुकदमे के लिए वकील नियुक्त करे ।
मुश्क-संज्ञा पुं० (फा०) हिरन की नाभि में रहनेवाला पदार्थ, मुश्क ।
मुश्किल-वि० (अ०) कठिन । संज्ञा स्त्री० कठिनता । मुसीबत ।
मुश्त-संज्ञा पुं० (फा०) मुट्ठी ।
मुष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) मुट्ठी । घूंसा ।
मुसकराना-क्रि० अ० हलके-हलके हँसना ।
मुसकराहट, मुसकान, मुसक्यान-संज्ञा स्त्री० मुस्कराना, मंद हँसी ।
मुसना-क्रि० अ० चुराया जाना ।
मुसम्मात-वि० स्त्री० नामधारिणी । संज्ञा स्त्री० औरत ।
मुसव्विर-संज्ञा पुं० (अ०) चित्रकार ।
मुसाफिर-संज्ञा पुं० (अ०) यात्रा करनेवाला, पथिक ।
मुसाफिरखाना-संज्ञा पुं० स्टेशन पर यात्रियों के ठहरने की जगह ।
मुसाफिरी-संज्ञा स्त्री० (अ०) यात्री होना । यात्रा ।
मुसाहब-संज्ञा पुं० (अ०) धनवान् या राजा आदि के साथ रहनेवाला ।
मुसीबत-संज्ञा स्त्री० (अ०) आयी हुई परेशानी, तकलीफ । संकट ।
मुस्तकिल-वि० (अ०) पक्का, दृढ़ । अटल, स्थिर ।
मुस्तैद-वि० तैयार, तत्पर । चालाक ।

मुहताज-वि० (अ०) गरीब । दूसरे से कुछ माँगनेवाला ।
मुहब्बत-संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रेम । चाह । प्रीति ।
मुहम्मद-संज्ञा पुं० (अ०) इस्लाम धर्म को चलानेवाले ।
मुहर-संज्ञा स्त्री० अंकित प्रतीक ।
मुहरा-संज्ञा पुं० सामने का भाग, आगा । शतरंज आदि की गोटें ।
मुहर्रम-संज्ञा पुं० (अ०) अरबी वर्ष का पहला दिन जब इमाम हुसेन मरे थे ।
मुहर्रमी-वि० मुहर्रम का । हमेशा रंज में रहनेवाला । मनहूस ।
मुहर्रिर-संज्ञा पुं० (अ०) दूसरे के लेख आदि लिख देनेवाला, लेखक, मुंशी ।
मुहासिरा-संज्ञा पुं० (अ०) किले आदि को घेर लेना, घेरा ।
मुहूर्त-संज्ञा पुं० (सं०) फलित ज्योतिष के हिसाब से निकाला हुआ वह शुभ समय जिसमें कोई काम किया जाय ।
मूँगा-संज्ञा पुं० समुद्र में रहनेवाले एक प्रकार के कृमियों की लाल ठठरी जो रत्न कही जाती है ।
मूँछ-संज्ञा स्त्री० पुरुषों के ऊपरी ओंठ के ऊपर उगनेवाले बाल ।
मूँडन-संज्ञा पुं० (सं०) सिर के बाल मुँड़ा डालने का संस्कार, मुंडन ।
मूक-वि० (सं०) बोल न सकनेवाला, गूँगा । लाचार, वाक्यरहित, का ।
मूकता-संज्ञा स्त्री० (सं०) गूंगापन ।

विवशता ।
मूज़ी-संज्ञा पुं० (अ०) दुष्ट, शैतान।
मूढ़-वि० (सं०) मूर्ख, बेवकूफ।
मूढ़ता-संज्ञा स्त्री० (सं०) मूर्खता ।
मूत्र-संज्ञा पुं० (सं०) शरीर के गंदे पदार्थों को लेकर उपस्थ मार्ग से निकलनेवाला जल, पेशाब ।
मूत्राशय-संज्ञा पुं० (सं०) नाभि के नीचे का वह स्थान जहाँ मूत्र संचित होता है ।
मूर्ख-वि० (सं०) कुछ न समझने-वाला, मूढ़, अज्ञ ।
मूर्खता-संज्ञा स्त्री० (सं०) बेवकूफी, मूढ़ता ।
मूर्च्छा-संज्ञा स्त्री० बेहोशी, होश न होना,अचेत स्थिति,अचेतनता ।
मूर्छित, मूर्च्छित-वि० (सं०) जिसे होश न हो, मूर्छायुक्त, अचेत ।
मूर्त्त-वि० (सं०) रूप और आकार का, साकार ।
मूर्त्ति-संज्ञा स्त्री० देह । शरीर । पत्थर की बनायी हुई सूरत, आकार । प्रतिमा ।
मूर्त्तिकार-संज्ञा पुं० चित्रकार, मूर्त्ति बनानेवाला ।
मूर्त्तिपूजा-संज्ञा स्त्री० (सं०) मूर्त्ति को ही देवता आदि मानकर पूजा करना ।
मूर्त्तिमान्-वि० (सं०) शरीर धारण करके, आकार-प्रकार का, साक्षात् ।
मूर्धा-संज्ञा पुं० सिर ।
मूर्धाभिषेक-संज्ञा पुं० (सं०) सिर का अभिषेक करना या जल डालना।
मूल-संज्ञा पुं० (सं०) जड़ । बूटी। कंद । सबसे पहला या आदि कारण। असल धन । नींव ।
मूलक-संज्ञा पुं० मुरई। मूल-स्वरूप। वि० पैदा करनेवाला, जनक ।
मूलधन-संज्ञा पुं० (सं०) असल किसी व्यापार में लगाया हुआ धन, पूंजी।
मूलस्थान-संज्ञा पुं० (सं०) बाप-दादों की जगह ।
मूल्य-संज्ञा पुं० (सं०) किसी वस्तु को बेचने से मिलनेवाला धन या दाम ।
मूल्यवान्-वि० (सं०) अधिक दाम-वाला, कीमती ।
मूष, मूषक-संज्ञा पुं० (सं०) चूहा ।
मूसना-क्रि० स० चुराकर ले जाना।
मूसर, मूसल-संज्ञा पुं० धान कूटने को लम्बा-मोटा डंडा, मूसल ।
मूसा-संज्ञा पुं० चूहा । यहूदियों के एक पैगंबर ।
मृग-संज्ञा पुं० हिरन । मृगशिरा नक्षत्र ।
मृगचर्म-संज्ञा पुं० (सं०) हिरन का चमड़ा ।
मृगछाला-संज्ञा स्त्री० देखिए 'मृग-चर्म' ।
मृगजल-संज्ञा पुं० (सं०) रेगिस्तान में हिरन को दीख पड़नेवाला झूठा पानी ।
मृगतृषा, मृगतृष्णा-संज्ञा स्त्री० (सं०) रेत के या ऊसर मैदान में झूठी दीख पड़नेवाली पानी की

की सभा, दरबार।
राजसमाज-संज्ञा पुं० (सं०) राजाओं का दरबार, राजमंडली।
राजसिंहासन-संज्ञा पुं० (सं०) राजा के बैठने का सिंहासन राजगद्दी।
राजसी-वि० राजा के समान की तरह शान-शौकतवाला। वि० स्त्री० (सं०) रजोगुणवाला।
राजसूय-संज्ञा पुं० (सं०) एक यज्ञ जिसे करने का अधिकार केवल सम्राट् को होता है।
राजस्व-संज्ञा पुं० राज की ओर से लगाया जानेवाला कर, टैक्स।
राजहंस-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्रकार का हंस।
राजा-संज्ञा पुं० नरपति, अधिपति, प्रेमपात्र, शासक, बादशाह, मालिक, स्वामी।
राजाज्ञा-संज्ञा स्त्री० (सं०) राजा का हुक्म।
राजाधिराज-संज्ञा पुं० अधिराज, राजाओं का राजा, सम्राट्, शाहंशाह।
राजि-संज्ञा स्त्री० पंक्ति, श्रेणी, रेखा।
राजीनामा-संज्ञा पुं० (फा०) वह लिखा हुआ कागज जिसके अनुसार दो विरोधी मेल कर लें।
राजीव-संज्ञा पुं० पद्म, कमल।
राज्य-संज्ञा पुं० (सं०) राजा का काम, शासन-प्रबंध। वह भू-भाग जो किसी राजा के अधिकार में हो।
राज्यतंत्र-संज्ञा पुं० (सं०) राज्य का शासन करने का ढंग।
राज्यव्यवस्था-संज्ञा स्त्री० (सं०) राज्य के नियम या कानून।
राज्याभिषेक-संज्ञा पुं० नये राजा को गद्दी पर बिठलाना।
राठौर-संज्ञा पुं० एक राजवंश।
राणा-संज्ञा पुं० राजा।
रातिब-संज्ञा पुं० (अ०) पशुओं का खाना भूसा आदि।
रात्रि-संज्ञा स्त्री० हल्दी, रात।
रात्रिचारी-संज्ञा पुं० (सं०) राक्षस।
रान-संज्ञा स्त्री० (फा०) जाँघ।
रानी-संज्ञा स्त्री० राजा की पत्नी।
राम-संज्ञा पुं० (सं०) परशुराम। बलराम। रामचन्द्र। ईश्वर।
रामचन्द्र-संज्ञा पुं० (सं०) अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र।
रामबल-संज्ञा पुं० (सं०) रामचन्द्र की वानरी सेना।
रामदास-संज्ञा पुं० (सं०) शिवा जी के गुरु, एक महात्मा, हनुमान्।
रामदूत-संज्ञा पुं० हनुमान् जी।
रामधाम-संज्ञा पुं० (सं०) साकेत-लोक, अयोध्या।
रामनवमी-संज्ञा स्त्री० (सं०) जिस दिन राम का जन्म हुआ था।
रामनामी-संज्ञा पुं० 'राम राम' छपा ओढ़ने का कपड़ा।
रामरज-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक प्रकार की पीली मिट्टी।
रामराज्य-संज्ञा पुं० रामचन्द्र के राज्य की तरह बहुत अच्छा

शासन।
रामबाण-वि० (सं०) तुरन्त अपना प्रभाव डालनेवाली (औषधि)।
रामा-संज्ञा स्त्री० (सं०) लक्ष्मी। सुन्दर स्त्री। सीता।
रामानंद-संज्ञा पुं० (सं०) एक वैष्णव साधु (१३५६-१४६७)।
रामानंदी-वि० रामानंद के मत को माननेवाला।
रामानुज-संज्ञा पुं० (सं०) वैष्णव संप्रदाय को चलानेवाले।
रामायण-संज्ञा पुं० (सं०) वाल्मीकि तथा तुलसी के लिखे काव्य-ग्रन्थ जिनमें राम का चरित्र वर्णित है।
रामावत-संज्ञा पुं० (सं०) रामानन्द का चलाया हुआ मत।
रामेश्वर-संज्ञा पुं० दक्षिण भारत में समुद्र के किनारे का एक शिवलिंग।
रार-संज्ञा पुं० झगड़ा। बकवाद, तकरार।
राल-संज्ञा स्त्री० धूना का बड़ा पेड़। संज्ञा स्त्री० पतला थूक, लार।
राव-संज्ञा पुं० राजा, चारण, सरदार, श्रीमान्; धनिक।
रावटी-संज्ञा स्त्री० छोटा घर।
राशि-संज्ञा स्त्री० समुच्चय, ढेर, पंचांग की राशियाँ।
राशिचक्र-संज्ञा पुं० (सं०) पंचांग की मेष, मीन, वृष आदि राशियों का मंडल।
राष्ट्र-संज्ञा पुं० राज्य, देश, प्रजा।
राष्ट्रतंत्र-संज्ञा पुं० (सं०) राज्य में शासन करने का ढंग या प्रणाली।
राष्ट्रपति-संज्ञा पुं० (सं०) सब से बड़ा शासन करनेवाला।
राष्ट्रीय-वि० (सं०) राष्ट्र का। राष्ट्र-संबंधी।
रास-संज्ञा स्त्री० (सं०) नाच, खेल आदि, जो गोपों में प्रचलित था, जिसे कृष्ण करते थे।
रासभ-संज्ञा पुं० गधा। खच्चर।
रासमंडली-संज्ञा स्त्री० (सं०) रास का अभिनय करनेवालों की मंडली।
रासलीला-संज्ञा स्त्री० रासधारियों का अभिनय।
रासायनिक-वि० (सं०) रसायन-शास्त्र का। रासायन-शास्त्र को जाननेवाला।
राह-संज्ञा पुं० रास्ता। प्रथा।
राहगीर--संज्ञा पुं० (फा०) रास्ते पर चलनेवाला, पथिक।
राहचलता-संज्ञा पुं० राह में चलनेवाला, अनजाना, अजनबी।
राहत-संज्ञा स्त्री० (अ०) आराम। शांति, आनन्द, चैन।
राही-संज्ञा पुं० (फा०) राह पर चलनेवाला, यात्री, पथिक।
राहु-संज्ञा पुं० (सं०) एक ग्रह। संज्ञा पुं० रोहू मछली।
राहुल-संज्ञा पुं० (सं०) गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम।
रिंद-संज्ञा पुं० (फा०) धर्म, ईश्वर आदि को न माननेवाला, नास्तिक।
रिआया-संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रजा।

रिक्त-वि० (सं०) खाली, जिसके अन्दर कुछ न हो, निर्धन, गरीब।
रिक्ष-संज्ञा पुं० रीछ। भालू।
रिजाली-संज्ञा स्त्री० बेशरमी।
रिझाना-क्रि० स० किसी को प्रसन्न या मोहित कर लेना।
रिपु-संज्ञा पुं० शत्रु, दुश्मन, वैरी।
रिपुता-संज्ञा स्त्री० शत्रुता, दुश्मनी, वैर, वैमनस्य।
रियासत-संज्ञा स्त्री० (अ०) छोटा राज्य, अमीरी, विभव।
रिवाज-संज्ञा पुं० (अ०) पुराने समय से चली आयी हुई रस्म, प्रथा, चाल, रीति।
रिश्ता-संज्ञा पुं० (फा०) सम्बन्ध, नाता।
रिश्तेदार-संज्ञा पुं० (फा०) संबंधी, नातेदार।
रिश्वत-संज्ञा स्त्री० (अ०) अनुचित रीति से कोई काम कर देने के कारण लिया गया धन, घूस।
रिस-संज्ञा स्त्री० रोष। क्रोध।
रिसाना-क्रि० अ० नाराज होना। क्रि० स० किसी पर क्रुद्ध होना।
रिसौंहाँ-वि० नाराज। कुछ-कुछ नाराज। क्रोध से भरा हुआ।
रिहा-वि० (फा०) छूटा हुआ, मुक्त।
री-अव्य० समवयस्क स्त्रियों के लिए संबोधन का शब्द, अरी।
रीछ-संज्ञा पुं० भालू जंगली जन्तु।
रीझ-संज्ञा स्त्री० किसी की बात या गुण पर प्रसन्न या मोहित होना।
रीझना-क्रि० अ० किसी की बात या गुण पर मोहित या मुग्ध होना।
रीढ़-संज्ञा स्त्री० पीठ के बीचोबीच की मोटी लम्बी हड्डी, मेरुदंड।
रीता-वि० खाली, रिक्त।
रीति-संज्ञा स्त्री० नियम, ढंग, तरह, प्रकृति, स्तुति।
रुंड-संज्ञा पुं० (सं०) बिना सिर का शरीर, धड़।
रुक्का-संज्ञा पुं० छोटा लिखा हुआ परचा।
रुक्म-संज्ञा पुं० सुवर्ण, सोना, धतूरा।
रुक्ष-वि० खुरदुरा। रूखा-सूखा।
रुक्षता-संज्ञा स्त्री खुरदुरा होना। रुखाई, रूखापन।
रुख-संज्ञा पुं० (फा०) गाल। मुंह। मन की इच्छा के अनुसार मुंह की आकृति। मेहरबानी। क्रि० वि० तरफ, ओर।
रुखसत-संज्ञा स्त्री० (अ०) जाना, रवानगी। वि० जो चल पड़ा हो।
रुखाई-संज्ञा स्त्री० रूखा या सूखा होना। मेहरबानी या दया का न रहना।
रुखौंहाँ-वि० रुखाई के साथ, रूखा-सूखा।
रुचना-क्रि० अ० अच्छा लगना।
रुचि-संज्ञा स्त्री० अनुराग, इच्छा, प्रेम, प्रवृति, भूख, स्वाद।
रुचिकर-वि० जो अच्छा लगे, दिल-पसंद।
रुचिकारक-वि० स्वादिष्ट।

रुचिर-वि० (सं०) सुन्दर, बढ़िया।
रुज-संज्ञा पुं० (सं०) परेशानी, कष्ट। रोग।
रुदित-वि० (सं०) जो रोता हो।
रुद्र-संज्ञा पुं० (सं०) शिव का एक रूप। एक प्रकार के गण देवता। वि० डरावना, भयानक।
रुद्रतेज-संज्ञा पुं० कार्तिकेय, स्कंदजी।
रुधिर-संज्ञा पुं० (सं०) खून, रक्त।
रुनझुन-संज्ञा स्त्री० पायल या घुंघरू का शब्द, झनकार।
रुपया-संज्ञा पुं० भारत में चलने-वाला एक सिक्का।
रुपहला-वि० चाँदी-से सफेद रंग का।
रुमाली-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का लँगोट।
रुरु-संज्ञा पुं० (सं०) कस्तूरी-मृग।
रुलाई-संज्ञा स्त्री० रोने के पहले की दशा। रोने की दशा।
रुलाना-क्रि० स० दूसरे को रोने का काम कराना।
रुष्टता-संज्ञा स्त्री० (सं०) नाराजगी, अप्रसन्नता।
रुसवा-वि० (फा०) बदनाम, निन्दित।
रुस्तम-संज्ञा पुं० (अ०) फारस का एक प्रसिद्ध वीर। बड़ा वीर।
रूँधना-क्रि० स० किसी छेद को बन्द कर देना। छेंकना।
रूख-संज्ञा पुं० पेड़, वृक्ष।
रूखा-वि० सूखा, बिना रस का, नीरस। मन से उदास। कठोर, कड़ा।
रूखापन-संज्ञा पुं० रूखा होना, रुखाई।
रूठ, रूठन-संज्ञा स्त्री० नाराज होना, नाराजगी।
रूठना-क्रि० अं० नाराज होना।
रूढ़-वि० (सं०) कठोर। कठिन। वह संख्या जो किसी से कट न सके।
रूढ़ि-संज्ञा स्त्री० उत्पत्ति, चढ़ाई, चली आई हुई प्रथा।
रूप-संज्ञा पुं० (सं०) सूरत।
रूपमय-वि० बहुत सुन्दर।
रूपवंत-वि० रूपमय, सुन्दर, खूबसूरत।
रूपवती-वि० स्त्री० सुन्दर स्त्री।
रूपवान्, रूपवान-वि० सुन्दर रूप-वाला, खूबसूरत।
रूपा-संज्ञा पुं० चाँदी। घटिया चाँदी। सफेद रंग का बैल।
रूपी-वि० समान, तुल्य, सदृश।
रूप्यक-संज्ञा पुं० (सं०) रुपया।
रू-बरू-क्रि० वि० (फा०) आमने-सामने।
रूरा-वि० मनोहर। श्रेष्ठ। सुन्दर।
रूसना-क्रि० अ० क्रुद्ध होना।
रूसी-वि० रूस का रहनेवाला। संज्ञा स्त्री० (देश०) सिर पर जम जानेवाली भूसी, फिहास।
रूह-संज्ञा स्त्री० (अ०) आत्मा। सार, सत्व।
रेख-संज्ञा स्त्री० लकीर। निशान।

रघुवंशी-संज्ञा पुं० (सं०) रघु के कुल में जो पैदा हो।
रघुवर-संज्ञा पुं० (सं०) रामचन्द्र।
रचना-संज्ञा स्त्री० (सं०) बनाना। बनाने की क्रिया, निर्माण। क्रि० स० हाथ से बनाकर तैयार करना। ग्रन्थ लिखना। सजना। ठीक-ठीक क्रम से रखना।
रचयिता-संज्ञा पुं० रचनेवाला।
रचित-वि० (सं०) बनाया हुआ।
रज-संज्ञा पुं० स्त्रियों की योनि से प्रतिमास कुछ दिन निकलनेवाला रक्त।
रजक-संज्ञा पुं० धावक, धोबी।
रजत-संज्ञा स्त्री० चाँदी, हाथी-दाँत। वि० सफेद।
रजनी-संज्ञा स्त्री० रात्रि, रात।
रजनीचर-संज्ञा पुं० (सं०) राक्षस।
रजनीपति-संज्ञा पुं० (सं०) चन्द्रमा।
रजनीमुख-संज्ञा पुं० सन्ध्या, शाम।
रजनीश-संज्ञा पुं० (सं०) चन्द्रमा।
रजपूत-संज्ञा पुं० देखिए 'राजपूत'। वीर पुरुष।
रजपूती-संज्ञा स्त्री० वीरता।
रजवाड़ा-संज्ञा पुं० रियासत।
रजस्वला-वि० स्त्री० (सं०) जिस स्त्री के रजस्राव हो। ऋतुमती।
रजामंद-वि० (फा०) किसी बात को मान जानेवाला, सहमत।
रजोगुण-संज्ञा पुं० (सं०) जीवों का एक गुण या प्रवृत्ति जिसमें भोग-विलास की ज्यादा रुचि उत्पन्न होती है।
रजोधर्म-संज्ञा पुं० (सं०) स्त्रियों का मासिक रजस्राव।
रज्जु-संज्ञा स्त्री० (सं०) रस्सी, डोरी।
रण-संज्ञा पुं० (सं०) लड़ाई, युद्ध।
रणक्षेत्र-संज्ञा पुं० (सं०) लड़ाई का मैदान।
रणभूमि-संज्ञा स्त्री० (सं०) लड़ाई का मैदान।
रणरंग-संज्ञा पुं० (सं०) युद्ध का उत्साह। लड़ाई। लड़ाई का क्षेत्र।
रणसिंघा-संज्ञा पुं० तुरही बाजा।
रणस्थल-संज्ञा पुं० रणभूमि, लड़ाई का मैदान।
रणांगण-संज्ञा पुं० (सं०) युद्ध का मैदान।
रत-संज्ञा पुं० मैथुन, योनि; वि० लगा हुआ, अनुरक्त, लिप्त।
रतनार, रतनारा-वि० कुछ-कुछ लाल। लाल रंग लिये हुए।
रति-संज्ञा स्त्री० प्रेम, कामदेव की पत्नी, जो साक्षात् सौंदर्य है। प्रेम। स्त्री-पुरुष का संभोग।
रतिनायक-संज्ञा पुं० (सं०) कामदेव।
रतिभवन-संज्ञा पुं० (सं०) प्रेमी-प्रेमिका के रति करने का स्थान।
रतिमंदिर-संज्ञा पुं० योनि, भग, रतिभवन।
रतिरमण-संज्ञा पुं० मैथुन, कामदेव।
रतिराज-संज्ञा पुं० (सं०) कामदेव।
रत्ती-संज्ञा स्त्री० आठ चावल का मान।

रत्न-संज्ञा पुं० नगीना, बहुमूल्य चमकदार सुन्दर और छोटे खनिज पदार्थ।
रत्नगर्भा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी, भूमि।
रत्नाकर-संज्ञा पुं० (सं०) समुद्र।
रत्नावली-संज्ञा स्त्री० मोती की माला, मणियों की माला।
रथ-संज्ञा पुं० प्राचीन गाड़ी।
रथी-संज्ञा पुं० रथ पर से युद्ध करनेवाला। वि० रथ पर चढ़ा हुआ।
रद-संज्ञा पुं० दन्त, दाँत।
रदच्छद-संज्ञा पुं० (सं०) दाँतों को ढँकनेवाला, ओंठ।
रदन-संज्ञा पुं० दन्त, दाँत।
रदपट-संज्ञा पुं० ओष्ठ, ओंठ।
रद्द-वि० (अ०) जिसका स्वरूप बदल दिया गया हो।
रद्दी-वि० बेकार। खराब।
रनवास-संज्ञा पुं० रानियों के रहने का महल, या स्त्रियों के रहने का घर का भाग, अन्तःपुर।
रफू-संज्ञा पुं० (अ०) फटे कपड़े में इस तरह तागे डालना कि फटा न जान पड़े।
रफूगर-संज्ञा पुं० (फा०) रफू करनेवाला।
रफ्ता-रफ्ता-क्रि० वि० (फा०) धीरे-धीरे।
रमजान-संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानों का रोजा रखने का माह।
रमण-संज्ञा पुं० रति, सुरत, भोगविलास। स्त्री-पुरुष का संभोग। घूमना। वि० सुन्दर, मनोहर।
रमणी-संज्ञा स्त्री० सुन्दर नारी, सुगन्धवाला नामक गन्ध-द्रव्य।
रमणीक-वि० सुन्दर। मनोहर।
रमणीय-वि० (सं०) सुन्दर।
रमता-वि० इधर-उधर घूमता ही रहनेवाला। घूमता-फिरता।
रमल-संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकार का फलित ज्योतिष।
रमा-संज्ञा स्त्री० (सं०) लक्ष्मी।
रमाकांत-संज्ञा पुं० (सं०) विष्णु।
रम्य-वि० (सं०) सुन्दर, मनोहर।
रली-संज्ञा स्त्री० आनन्द, मनबहलाव, चेना नामक अन्न।
रव-संज्ञा पुं० शब्द, आवाज, ध्वनि, शोर।
रवा-संज्ञा पुं० छोटा दाना। सूजी। वि० (फा०) ठीक।
रवानगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) चला जाना, प्रस्थान।
रवि-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य। आग।
रविकुल-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्यवंश, एक वंश।
रवितनय-संज्ञा पुं० (सं०) यमराज। कर्ण।
रवितनया-संज्ञा स्त्री० (सं०) सूर्य की पुत्री। यमुना।
रविनंदन-संज्ञा पुं० शनि, यम, कर्ण, सुग्रीव।
रविनंदिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) यमुना।
रविमंडल-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य के चारों ओर प्रकाश का घेरा।

रविवार-संज्ञा पुं० (सं०) सप्ताह का एक दिन, इतवार।
रविश-संज्ञा स्त्री० (फा०) चाल। ढंग। पगडंडियाँ।
रश्मि-संज्ञा पुं० (सं०) किरण।
रस-संज्ञा पुं० (सं०) स्वाद। मन में किसी चीज को देख या पढ़कर उत्पन्न होनेवाला भाव। आनन्द।
रसद-संज्ञा स्त्री० (फा०) कच्चा अन्न।
रसना-संज्ञा स्त्री० जिह्वा, जीभ।
रसनेंद्रिय-संज्ञा स्त्री० (सं०) जीभ।
रसभीना-वि० रस या आनन्द में डूबा हुआ। गीला, श्रान्त।
रसराज-संज्ञा पुं० पारद, पारा, एक रस, शृंगार।
रसा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी, रसना, जीभ। संज्ञा पुं० पकी तरकारी का पानी, शोरबा।
रसायन-संज्ञा पुं० (सं०) वह दवा जिससे मनुष्य नीरोग रहता है। तांबे से सोना बनाने की विधि।
रसायन-शास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) पदार्थों के तत्वों, तथा उनके परमाणुओं का अध्ययन करनेवाला शास्त्र।
रसाल-संज्ञा पुं० (सं०) आम। गन्ना। वि० रसीला, मीठा।
रसिक-संज्ञा पुं० रसिया। खूब आनन्द मनानेवाला। भावुक।
रसिकता-संज्ञा स्त्री० (सं०) खूब आनन्द मनानेवाला होना।
रसिया-संज्ञा पुं० रस लेनेवाला।
रसीद-संज्ञा स्त्री० (फा०) किसी चीज के पाने के प्रमाण के लिए लिखा पत्र।
रसीला-वि० रस से भरा, रसदार। स्वादिष्ठ, आनन्द लेनेवाला।
रसूल-संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वर का दूत, देवदूत।
रसोइया-संज्ञा पुं० रसोई पकानेवाला।
रसोईघर-संज्ञा पुं० जहाँ खाना पकाया जाता है, पाकशाला।
रस्ता-संज्ञा पुं० मार्ग।
रहँट-संज्ञा पुं० सिंचाई के लिए कुएँ से पानी निकालने का एक यन्त्र।
रहन-सहन-संज्ञा स्त्री० जीवित रहने का ढंग। चाल-चलन।
रहम-संज्ञा पुं० (अ०) दया।
रहमत-संज्ञा स्त्री० (अ०) दया।
रहस्य-संज्ञा पुं० मर्म की बात या भेद की बात। गूढ़ बात, जो आसानी से समझ में न आ सके।
रहित-वि० (सं०) बिना, वर्जित।
रहीम-वि० (अ०) दयावान। संज्ञा पुं० (अ०) एक हिन्दी कवि। ईश्वर।
राक्षस-संज्ञा पुं० असुर, दानव, दैत्य। दुष्ट और बदमाश व्यक्ति।
राखी-संज्ञा स्त्री० रक्षा-बंधन के त्योहार में कलाई पर बांधा जानेवाला डोरा।
राग-संज्ञा पुं० मोह, इच्छा।
रागिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) संगीत में राग की पत्नियाँ।

राघव-संज्ञा पुं० (सं०) रघु के वंश में पैदा, रामचन्द्र।

राज-संज्ञा पुं० राज्य, शासन। जिस भू-भाग पर शासन हो, राज्य।

राज-संज्ञा पुं० (फा०) भेद, छिपी बात।

राजकर-संज्ञा पुं० (सं०) राज को प्रजा की ओर से दिया जानेवाला धन, टैक्स।

राजकुमार-संज्ञा पुं० (सं०) राजा का पुत्र।

राजकुल-संज्ञा पुं० राजा का परिवार, राजवंश।

राजगद्दी-संज्ञा स्त्री० वह कुर्सी जिस पर राजा बैठता है, राजसिंहासन।

राजगीर-संज्ञा पुं० मकान बनानेवाला, राज, थवई।

राजगृह-संज्ञा पुं० (सं०) राजा का महल। राजभवन।

राजदंड-संज्ञा पुं० राजा की आज्ञा के अनुसार दी जानेवाली सजा।

राजदूत-संज्ञा पुं० (सं०) किसी राज्य की ओर से संदेशा देकर भेजा हुआ व्यक्ति।

राजद्रोह-संज्ञा पुं० (सं०) राजा के खिलाफ होना, विद्रोह, बगावत।

राजधर्म–संज्ञा पुं० (सं०) राजा का कर्त्तव्य।

राजधानी-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह नगर जहाँ से राजा सम्पूर्ण देश का शासन करे। शासनकेन्द्र।

राजनीति-संज्ञा स्त्री० (सं०) जिस नीति या नियम से राजा शासन करता है।

राजनीतिक-वि० (सं०) राज्य की नीति से मतलब रखनेवाले।

राजन्य-संज्ञा पुं० राजपुत्र। राजा। क्षत्रिय।

राजपुत्र-संज्ञा पुं० (सं०) राजा का लड़का, युवराज।

राजपूत-संज्ञा पुं० राजा का लड़का। राजपूताने के क्षत्रिय।

राजभक्त-वि० अपने राज्य के प्रति भक्ति रखनेवाला।

राजभक्ति-संज्ञा स्त्री० राजा या राज्य के प्रति भक्ति।

राजयक्ष्मा-संज्ञा पुं० क्षय रोग, तपेदिक।

राजयोग-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्रकार का योग।

राजरोग-संज्ञा पुं० जो रोग दूर न किया जा सके।

राजर्षि-संज्ञा पुं० राजवंश या क्षत्रिय कुल का होकर भी ऋषि बन जानेवाला व्यक्ति।

राजलक्ष्मी-संज्ञा स्त्री० (सं०) राजा का वैभव या शोभा, राजश्री।

राजवंश-संज्ञा पुं० (सं०) राजा का कुल।

राजश्री-संज्ञा स्त्री० (सं०) राजा का वैभव या शोभा, राजलक्ष्मी।

राजस-वि० (सं०) रजोगुणवाला। संज्ञा पुं० आवेश, क्रोध।

राजसत्ता-संज्ञा स्त्री० (सं०) राजा की ताकत, राजशक्ति।

राजसभा-संज्ञा स्त्री० (सं०) राजा

यत्र-तत्र-क्रि० वि० जहाँ-तहाँ, इधर-उधर, कहीं-कहीं।
यथाक्रम-क्रि० वि० (सं०) लगातार, क्रमानुसार।
यथातथ्य-अव्य० (सं०) ज्यों का त्यों, ठीक वैसा ही।
यथामति-अव्य० (सं०) बुद्धि के अनुसार।
यथायोग्य-अव्य० (सं०) जैसा चाहिए, वैसा ही, बिलकुल ठीक, मुनासिब।
यथार्थ-अव्य० (सं०) ठीक, उचित। सत्य, जैसा का तैसा।
यथार्थता-संज्ञा स्त्री० (सं०) सचाई। सत्यता।
यथावत्-अव्य० (सं०) ज्यों का त्यों, वैसा ही। अच्छी या ठीक तरह।
यथाशक्ति-अव्य० (सं०) पूरी शक्ति भर, भरसक।
यथासंभव-अव्य० (सं०, जहाँ तक संभव हो। शक्ति के अनुसार।
यथासाध्य-अव्य० यथाशक्ति।
यथेच्छ-अव्य० (सं०) इच्छा के अनुसार, मनमाना।
यथेष्ट-वि० (सं०) काफी, पर्याप्त। पूरा।
यथोचित-वि० (सं०) बिलकुल ठीक, उचित।
यदपि-अव्य० देखिए 'यद्यपि'।
यदा-अव्य० (सं०) जब। जहाँ।
यदाकदा-अव्य० (सं०) कभी-कभी। इधर-उधर। जब-तब।
यदि-अव्य० (सं०) अगर।
यदुवंश-संज्ञा पुं० (सं०) राजा यदु का कुल।
यदुवंशी-संज्ञा पुं० राजा यदु के कुल में पैदा, यादव।
यद्यपि-अव्य० (सं०) हाँलाकि। अगरचे। यदि।
यम-संज्ञा पुं० (सं०) मृत्यु के देवता। मन को वश में करना।
यमद्वितीया-संज्ञा स्त्री० (सं०) कातिक शुक्ला द्वितीया, भाई-दूज।
यमपुर, यमपुरी-संज्ञा पुं० स्त्री० यमपुर, यमलोक।
यम-यातना-संज्ञा स्त्री० (सं०) नरक का कष्ट। मृत्यु-समय का कष्ट।
यमराज-संज्ञा पुं० (सं०) मृत्यु के देवता।
यमलोक, यमालय-संज्ञा पुं० (सं०) जिस लोक में मनुष्य मरकर जाते हैं, यमपुर।
यव-संज्ञा पुं० (सं०) जौ, एक मोटा अन्न।
यवनिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) नाटक का पर्दा।
यशस्वी-वि० खूब यश और प्रसिद्धि-वाला, कीर्तिमान्।
यहूद-संज्ञा पुं० एक देश, जहाँ ईसा उत्पन्न हुए थे।
यहूदी-संज्ञा पुं० यहूद देश का रहनेवाला।
याग-संज्ञा पुं० (सं०) यज्ञ।
याचक-संज्ञा पुं० भिखमंगा। माँगने-वाला। भिखारी।
याचना-क्रि० स० कुछ माँगना।

संज्ञा स्त्री० माँगना।
याजक-संज्ञा पुं० याज्ञिक, यज्ञ करनेवाला।
याज्ञिक-संज्ञा पुं० (सं०) यज्ञ करनेवाला।
यातना-संज्ञा स्त्री० बहुत अधिक तकलीफ या वेदना।
यातायात-संज्ञा पुं० आना-जाना।
यातिक- पुं० पथिक, यात्री।
यातुधान-संज्ञा पुं० (सं०) राक्षस।
यात्रा-संज्ञा स्त्री० प्रयाण, एक स्थान से दूसरे तक जाना। तीर्थ को जाना।
यात्री-संज्ञा पुं० यात्रा करने या तीर्थ को जानेवाला, मुसाफिर।
याददाश्त-संज्ञा स्त्री० (फा०) याद रखने या याद कर सकने की शक्ति।
यादव-संज्ञा पुं० (सं०) राजा यदु के वंशज, श्रीकृष्ण।
यानी, याने-अव्य० (अ०) अर्थात्।
यापन-संज्ञा पुं० समय बिताना। चलाना, निबटाना, बिताना।
याम-संज्ञा पुं० (सं०) तीन घंटे का समय, पहर। समय।
यामिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) रात।
यार-संज्ञा पुं० (फा०) दोस्त, मित्र। स्त्री का अनुचित पति।
याराना-संज्ञा पुं० (फा०) मित्रता, दोस्ती। वि० मित्र का-सा।
युक्त-वि० (सं०) मिला हुआ, उचित, ठीक।
युक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) उपाय, तरकीब। तर्क, दलील। सही तर्क।
युक्तियुक्त-वि० (सं०) तर्क या दलील से ठीक, उचित।
युग-संज्ञा पुं० युग्म, जोड़ा। समय। पुराण के अनुसार चार युग, सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग।
युगल-संज्ञा पुं० (सं०) जोड़ा।
युगांतर-संज्ञा पुं० (सं०) दूसरा युग। बदला हुआ। समय।
युद्ध-संज्ञा पुं० रण, लड़ाई, संग्राम।
युयुत्सा-संज्ञा स्त्री० विरोध। युद्ध करने की इच्छा। शत्रुता।
युयुत्सु-वि० (सं०) युद्ध करने की इच्छा रखनेवाला। शत्रु।
युवक-संज्ञा पुं० (सं०) जवान पुरुष।
युवति, युवती-संज्ञा स्त्री० (सं०) जवान स्त्री।
युवराज-संज्ञा पुं० (सं०) राजा का सबसे बड़ा लड़का।
युवा-वि० जवान। जवान पुरुष।
यूथ-संज्ञा पुं० समूह, झुण्ड, फौज।
यूथिका-संज्ञा स्त्री० पाठा, जूही का फूल।
यूप-संज्ञा पुं० (सं०) राजदंड। वह लकड़ी का खम्भा जिसमें बलि का पशु बांधा जाता है।
योग-संज्ञा पुं० संयोग, मिलना, मिलान। तरकीब, युक्ति। दवा। साथ। ध्यान, तपस्या। मन की वृत्तियों को रोकना। गणित में जोड़।
योगक्षेम-संज्ञा पुं० (सं०) नई चीज

को पाना तथा पायी हुई की रक्षा करना । गुजारा । खैरियत ।
योगफल-संज्ञा पुं० दो या अधिक संख्याओं को जोड़ने से निकली हुई संख्या ।
योगबल-संज्ञा पुं० (सं०) योग करने से प्राप्त बल, तपोबल ।
योगशास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) पतंजलि का लिखा योग दर्शन ।
योगसूत्र-संज्ञा पुं० महर्षि पतंजलि-लिखित योग के सूत्र ।
योगाभ्यास-संज्ञा पुं० (सं०) योग के आठ अंगों को पूरा करना ।
योगिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) तपस्या करनेवाली स्त्री, योगाभ्यासिनी । देवी ।
योग्यता-संज्ञा स्त्री० सामर्थ्य, किसी काम को कर सकने की शक्ति । बड़ाई । गुण । अनुकूलता ।
योजन-संज्ञा पुं० संयोग, दूरी की एक दो कोस, चार कोस या आठ कोस की नाप ।
योजना-संज्ञा स्त्री० (सं०) आगे किये जानेवाले काम की रूप-रेखा बनाना । जोड़ । मेल ।
योद्धा-संज्ञा पुं० युद्ध में लड़नेवाला, सिपाही ।
योनि-संज्ञा स्त्री० खान, जिस स्थान से कोई चीज पैदा हो या निकले । प्राणियों की जातियां ।
यौगिक-संज्ञा पुं० मिश्रित, प्रत्यय आदि से मिलकर बना शब्द । दो शब्दों से मिलकर बना शब्द ।
मिला हुआ ।
यौतक, यौतुक-संज्ञा पुं० यौतुक, विवाह के समय वर और कन्या को मिलनेवाला धन, दहेज ।
यौवन-संज्ञा पुं० (सं०) जवानी की अवस्था ।
यौवराज्य-संज्ञा पुं० (सं०) युवराज का पद । युवराज होना ।

र

रँगराता-वि० अनुराग या प्रेम से भरा ।
रँगरूट-संज्ञा पुं० सेना आदि में भरती नया सिपाही ।
रँगरेज-संज्ञा पु० (फा०) जो कपड़े रँगने का काम करे ।
रँगीला-वि० आनन्द, मनोहर । सुन्दर, खूबसूरत ।
रँडापा-संज्ञा पुं० विधवापन ।
रँडुआ, रँडुवा-संज्ञा पुं० वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गयी हो ।
रंक-वि० (सं०) बिना धन का, कृपण, कंजूस, मन्द, गरीब ।
रंग-संज्ञा पु० (सं०) नाच-गाना आदि । युद्ध का मैदान । आँखों से किसी वस्तु का मालूम होनेवाला गुण, वर्ण, जैसे लाल, काला । असर । हँसी-खुशी, आनन्द ।
रंगत-संज्ञा स्त्री० आनन्द, खुशी ।

रंगमहल-संज्ञा पुं० नाच, रंग, भोग विलास का स्थान ।

रंगरली-संज्ञा स्त्री० आमोद-प्रमोद, खेल ।

रंगशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) नाटक खेलने की जगह ।

रंगसाज-संज्ञा पुं० (फा०) रंगने का काम करनेवाला ।

रंगीन-वि० (फा०) रँगा हुआ । आमोद और मजा चाहनेवाला ।

रंच, रंचक-वि० थोड़ा, कुछ ।

रंज-संज्ञा पुं० (फा०) दुःख, शोक ।

रंजन-संज्ञा पुं० (सं०) रँगना । दूसरे को खुश करना ।

रंजित-वि० (सं०) रँगने का काम, खुश ।

रंडी-संज्ञा स्त्री० वेश्या । कुलटा ।

रंधन-संज्ञा पुं० (सं०) रसोई बनाना ।

रंध्र-संज्ञा पुं० (सं०) छेद ।

रंभा-संज्ञा स्त्री० कदली, केला, एक अप्सरा ।

रई-संज्ञा स्त्री० मथानी ।

रईस-संज्ञा पुं० (अ०) बहुत धनवान, सरदार, शाहजादा ।

रकम-संज्ञा स्त्री० (अ०) धन, दौलत, धन-संपत्ति, गहना ।

रकाबी-संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकार की छिछली तश्तरी ।

रक्त-संज्ञा पुं० रुधिर, शरीर की नसों में बहनेवाला लाल पदार्थ, खून । वि० (सं०) लाल ।

रक्तकमल-संज्ञा पुं० लाल रंग का कमल ।

रक्तपात-संज्ञा पुं० रक्तस्राव, बहुत रक्त बहना, घोर युद्ध ।

रक्तवृष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) आकाश से रक्त या लाल पानी बरसना ।

रक्तस्राव-संज्ञा पुं० (सं०) किसी अंग से खून बहना ।

रक्तातिसार-संज्ञा पुं० (सं०) एक रोग जिसमें रक्त के दस्त आते हैं ।

रक्षक-संज्ञा पुं० रक्षा करनेवाला या बचानेवाला ।

रक्षण-संज्ञा पुं० (सं०) रक्षा करना या बचाना ।

रक्षा-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी कष्ट या मुसीबत से बचाना ।

रक्षागृह-संज्ञा पुं० सूतिकागृह, जिस स्थान पर स्त्री बच्चा पैदा करे ।

रक्षा-बंधन-संज्ञा पुं० (सं०) एक हिन्दू त्योहार जिसमें बहिनें भाइयों को राखी बाँधती हैं ।

रक्षित-वि० (सं०) जिसकी रक्षा या हिफाजत की गयी हो । पाला-पोसा हुआ, रखा हुआ ।

रक्षी-संज्ञा पुं० रक्षा करनेवाला ।

रखवाला-संज्ञा पुं० चौकीदार, देखभाल करनेवाला, पहरेदार ।

रखवाली-संज्ञा स्त्री० रक्षा या देखभाल करना, हिफाजत ।

रखेली-संज्ञा स्त्री० बिना विवाह के रख ली गयी स्त्री ।

रग-संज्ञा स्त्री० (फा०) शरीर की नस, नाड़ी, नस्ल, हठ, जिद ।

रघुकुल-संज्ञा पुं० (सं०) राजा रघु के कुल का परिवार ।

रेखा ।
मृगनाथ-संज्ञा पु० (सं०) शेर ।
मृगनाभि-संज्ञा पु० (सं०) कस्तूरी ।
मृगनैनी-संज्ञा स्त्री० हिरन की-सी सुन्दर आँखोंवाली स्त्री ।
मृगमद-संज्ञा पुं० (सं०) कस्तूरी ।
मृगमरीचिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) मृगतृष्णा ।
मृगमेद-संज्ञा पुं० (सं०) कस्तूरी ।
मृगया-संज्ञा पु० (सं०) शिकार ।
मृगरोचन-संज्ञा पुं० मुश्क, कस्तूरी ।
मृगलोचनी-संज्ञा स्त्री० हरिण के समान नेत्रोंवाली स्त्री ।
मृगांक-संज्ञा पुं० चन्द्रमा, कपूर ।
मृगाक्षी-वि० स्त्री० (सं०) हिरन की-सी आँखोंवाली स्त्री ।
मृगाशन-संज्ञा पुं० सिंह, शेर ।
मृगी-संज्ञा स्त्री० (सं०) हिरनी, हरिणी, कस्तूरी, अपस्मार-रोग ।
मृगेन्द्र-संज्ञा पुं० (सं०) शेर ।
मृणालिनी-संज्ञा स्त्री० पद्मिनी, कमलिनी ।
मृत-वि० (सं०) मरा हुआ, मुर्दा ।
मृतक-संज्ञा पुं० शव, मरा हुआ ।
मृतक-कर्म-संज्ञा पुं० (सं०) मरे व्यक्ति के लिए श्राद्ध आदि किये जानेवाले काम ।
मृतसंजीवनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक बूटी जिसे खाने से मरा मनुष्य भी जी उठता है ।
मृत्तिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) मिट्टी ।
मृत्युंजय-संज्ञा पुं० (सं०) मृत्यु को जो जीत चुका है । शिव ।
मृत्यु-संज्ञा स्त्री० निधन, प्राण छूटना, मरना ।
मृत्युलोक-संज्ञा पुं० (सं०) जहाँ लोग मरते हैं, पृथ्वी, मर्त्यलोक ।
मृदंग-संज्ञा पुं० (सं०) एक बाजा ।
मृदु-वि० (सं०) मुलायम, कोमल । सुनने में प्रिय । धीमा ।
मृदुता-संज्ञा स्त्री० (सं०) कोमलता, धीमापन ।
मृदुल-वि० (सं०) मुलायम, नरम । कोमल, सुकुमार, दयालु ।
मृन्मय-वि० (सं०) मिट्टी का बना ।
मृषा-अव्य० (सं०) झूठमूठ । वि० असत्य, झूठ ।
मेघ-संज्ञा पुं० पर्जन्य, आकाश में इकट्ठा पानी की भाप, बादल ।
मेघनाद-संज्ञा पुं० (सं०) बादल की गरज । रावण का पुत्र ।
मेघमाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) बादलों की घटा ।
मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित-वि० (सं०) बादलों से ढँका या छाया हुआ ।
मेजबान-संज्ञा पुं० (फा०) अतिथि की खातिरदारी करनेवाला ।
मेध-संज्ञा पुं० (सं०) यज्ञ ।
मेधा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बात को याद रख सकना । बुद्धि ।
मेधावी-वि० तेज बुद्धिवाला । पंडित, विद्वान् ।
मेरु-संज्ञा पुं० (सं०) पुराणों के अनुसार एक सोने का पर्वत, सुमेर ।
मेरुदंड-संज्ञा पुं० (सं०) रीढ़ ।
मेला-संज्ञा पुं० भीड़-भाड़ । किसी

खास काम के लिए बहुत से लोगों का जमा होना ।
मेवा-संज्ञा पुं० (फा०) सुखाये हुए फल ।
मेवाड़-संज्ञा पुं० (देश०) राजपूताने का एक विस्तीर्ण प्रदेश ।
मेवाफरोश-संज्ञा पुं० (फा०) मेवा बेचनेवाला ।
मेह-संज्ञा पुं० (सं०) एक रोग, प्रमेह। संज्ञा पुं० बादल। वर्षा ।।
मेहनत-संज्ञा स्त्री० (अ०) श्रम, प्रयास ।
मेहनताना-संज्ञा पुं० पारिश्रमिक । काम करने पर दी गयी मजदूरी ।
मेहमान-संज्ञा पुं० (फा०) अतिथि ।
मेहमानदारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) मेहमान या अतिथि की खातिरदारी।
मेहमानी-संज्ञा स्त्री० मेहमानदारी ।
मेहर-संज्ञा स्त्री० (फा०) कृपा, दया ।
मेहरबान-वि० (सं०) दया रखनेवाला, कृपालु ।
मैत्री-संज्ञा स्त्री० (सं०) दोस्ती, मित्रता।
मैथिल-वि० (सं०) मिथला देश का। संज्ञा पुं० मिथला का रहनेवाला ।
मैथिली-संज्ञा स्त्री० (सं०) सीता ।
मैथुन-संज्ञा पुं० (सं०) स्त्री-पुरुष का संभोग । रति-क्रीड़ा ।
मैना-संज्ञा स्त्री० एक काला पक्षी, सारिका ।
मैनाक-संज्ञा पुं० (सं०) हिमालय की एक ऊँची चोटी ।
मैला-वि० मैल लगा हुआ, गंदा । संज्ञा पुं० मल, विष्ठा ।
मैला-कुचैला-वि० शरीर से जो गंदा हो ।
मोक्ष-संज्ञा पुं० मुक्ति, छुटकारा । संसार में बार-बार जन्म और मरण से छुटकारा ।
मोक्षद-संज्ञा पुं० (सं०) मोक्ष देनेवाला । मोक्षदाता ।
मोघ-वि० (सं०) चूक जानेवाला, बेकार, निरर्थक, निष्फल ।
मोच-संज्ञा स्त्री० शरीर में किसी जोड़ पर नस का अपनी जगह से हट जाना ।
मोचन-संज्ञा पुं० मोक्ष, छुटाना, बंधन से दूर करना ।
मोची-संज्ञा पुं० जूते बनाने का काम करनेवाला । वि० हटाने या दूर करनेवाला ।
मोट-संज्ञा स्त्री० गठरी । संज्ञा पुं० चमड़े का बड़ा ढोल जिससे कुयें से पानी भरकर खेत सींचते हैं, पुर, चरसा ।
मोटरी-संज्ञा स्त्री० गठरी ।
मोटापा-संज्ञा पुं० मोटाई, मोटापन ।
मोठ-संज्ञा स्त्री० एक मोटा अन्न, बनमूंठा ।
मोड़-संज्ञा पुं० रास्ते का घूम जाना। मुड़ना या घूमना । कागज मोड़ना
मोतियाबिंद-संज्ञा पुं० आँख का एक रोग ।
मोती-संज्ञा पुं० समुद्र में सीपियों से निकलनेवाले रत्न ।
मोतीचूर-संज्ञा पुं० छोटी बुंदियों का

लड्डू ।
मोद-संज्ञा पुं० आनन्द, खुशी, हर्ष ।
मोदक-संज्ञा पुं० (सं०) लड्डू ।
मोम-संज्ञा पुं० (फा०) शहद की मक्खियों द्वारा बनाया जानेवाला एक चिकना नरम पदार्थ ।
मोमजामा-संज्ञा पुं० (फा०) मोम का रोगन चढ़ा कपड़ा ।
मोमबत्ती-संज्ञा स्त्री० मोम की बनायी बत्ती जो जलाकर प्रकाश करने के काम आती है ।
मोमी-वि० (फा०) मोम का बना ।
मोरी-संज्ञा स्त्री० गंदे पानी की नाली ।
मोल-संज्ञा पुं० कीमत, दाम ।
मोषण-संज्ञा पुं० (सं०) लूटना । चोरी करना ।
मोह-संज्ञा पु० भ्रान्ति, भ्रम । प्रेम, चाह ।
मोहक-वि० (सं०) मोह या लुभा लेनेवाला, मनोहर ।
मोहन-संज्ञा पुं० (सं०) श्री कृष्ण । वि० मोह उत्पन्न करनेवाला ।
मोहनभोग-संज्ञा पुं० एक प्रकार का हलुआ ।
मोहना-क्रि० अ० मोह जाना, रीझना । क्रि० स० मोह या लुभा लेना ।
मोहनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक मंत्र जिसके द्वारा किसी को भी अपने वश में किया जा सकता है । वि० स्त्री० (सं०) मोह लेनेवाली, सुन्दर स्त्री ।
मोहर-संज्ञा स्त्री० (फा०) अक्षर या बेल-बूटों का ठप्पा, जो छापा जाता है । अशरफी । निशान ।
मोहर्रिर-संज्ञा पुं० (अ०) दूसरे के लेख आदि लिख देनेवाला, मुंशी ।
मोहित-वि० (सं०) मोह या भ्रम में पड़ा, आसक्त, मोहा हुआ ।
मोहिनी-वि० स्त्री० (सं०) मोह लेनेवाली स्त्री ।
मौका-संज्ञा पुं० (अ०) जिस जगह पर कोई घटना घटे । ठीक समय, अवसर ।
मौखिक-वि० (सं०) मुंह का, जबानी ।
मौज-संज्ञा स्त्री० (अ०) लहर । मन का जोश, विनोद ।
मौजा-संज्ञा पुं० (अ०) गाँव ।
मौजी-वि० अपने मन की करनेवाला । हमेशा प्रसन्न रहनेवाला ।
मौजूद-वि० (अ०) सामने, हाजिर । तैयार ।
मौजूदा-वि० (अ०) इस समय का, प्रस्तुत ।
मौत-संज्ञा स्त्री० (अ०) मरण । मरने का समय ।
मौन-संज्ञा पुं० (सं०) चुप रहना, चुप्पी ।
मौनव्रत-संज्ञा पुं० (सं०) चुप रहने का व्रत ।
मौनी-वि० चुप रहनेवाला । मुनि ।
मौरूसी-वि० (अ०) बाप-दादा के समय से चला आया हुआ ।
मौलवी-संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमान धर्म का पंडित ।

मौलसिरी-संज्ञा स्त्री० छोटे फूलों का एक सदाबहार पेड़, बकुल ।
मौलि-संज्ञा पुं० मस्तक या चोटी । ताज । जूड़ा । अशोक वृक्ष ।
मौसा-संज्ञा पुं० माता की बहिन का पति ।
मौसी-संज्ञा स्त्री० माता की बहिन ।
म्यान-संज्ञा पुं० तलवार आदि रखने का कोष ।
म्लान-वि० (सं०) कुम्हलाया हुआ । कमजोर । मैला ।
म्लेच्छ-संज्ञा पुं० (सं०) बिना वर्णाश्रम धर्म की मनुष्य-जातियाँ । वि० नीच, पापी ।

य

यंत्र-संज्ञा पुं० नियंत्रण, औजार, कल, मशीन ।
यंत्रणा-संज्ञा स्त्री० (सं०) तकलीफ । दर्द, यातना, कष्ट ।
यंत्र-मंत्र-संज्ञा पुं० (सं०) जादू-टोना ।
यंत्रविद्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) मशीनों के निर्माण तथा चलाने की विद्या ।
यंत्रालय-संज्ञा पुं० जहाँ मशीनें हों । छापाखाना । कारखाना ।
यक-बयक, यकबारगी-क्रि० वि० अचानक, एकदम, सहसा ।
यकसाँ-वि० (फा०) एक ही तरह का, समान ।
यकीन-संज्ञा पुं० (अ०) एतबार, विश्वास ।
यक्षिणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) यक्ष या कुबेर की पत्नी ।
यक्ष्मा-संज्ञा पुं० क्षय रोग, तपेदिक ।
यजन-संज्ञा पुं० (सं०) यज्ञ करना ।
यजमान-संज्ञा पुं० (सं०) यज्ञ करवाने, दान देनेवाला ।
यजमानी-संज्ञा स्त्री० यजमान के यहाँ पुरोहित की वृत्ति ।
यजुर्वेद-संज्ञा पुं० चार प्रसिद्ध वेदों में से एक ।
यजुर्वेदी-संज्ञा पुं० यजुर्वेद को जानने-वाला ।
यज्ञ-संज्ञा पुं० (सं०) आर्यों का हवन-पूजन का कृत्य ।
यज्ञपशु-संज्ञा पुं० (सं०) यज्ञ में जिस पशु का बलिदान किया जाय ।
यज्ञमंडप, यज्ञशाला-संज्ञा पुं०, स्त्री० (सं०) यज्ञ करने के लिए बनवाया गया स्थान ।
यज्ञसूत्र-संज्ञा पुं० (सं०) जनेऊ, यज्ञोपवीत ।
यज्ञोपवीत-संज्ञा पुं० ब्रह्मसूत्र, जनेऊ । ब्राह्मणों में जनेऊ का संस्कार, उपनयन ।
यति-संज्ञा पुं० संन्यासी, योगी, त्यागी ।
यती-संज्ञा पुं० जितेन्द्रिय ।
यतीम-संज्ञा पुं० (अ०) बिना माता-पिता का बालक, अनाथ ।
यत्न-संज्ञा पुं० (सं०) कोशिश । हिफाजत ।

को पूरा करनेवाला।
बबाल-संज्ञा पुं० (अ०) बोझ। परेशानी, आफत।
वयःसंधि-संज्ञा स्त्री० (सं०) बचपन और यौवन के बीच की काल।
वयस्क-वि० (सं०) युवावस्था पर पहुँचा, बालिग। सयाना।
वयोवृद्ध-वि० (सं०) बड़ा बूढ़ा।
वरंच-अव्य० (सं०) बल्कि। परन्तु।
वर-संज्ञा पुं० केसर, किसी देवता आदि से माँगी हुई इच्छा, पति।
वरजिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) व्यायाम।
वरण-संज्ञा पुं० चुनना, किसी काम के लिए किसी को चुनना। विवाह में एक रीति। पूजा, सत्कार।
वरद-वि० (सं०) वर देनेवाला।
वरदान-संज्ञा पुं० (सं०) देवता आदि के द्वारा दिया गया वर।
वरदी-संज्ञा स्त्री० (अ०) खास विभाग के लोगों के पहनने के खास कपड़े।
वरन्-अव्य० ऐसा न हो कि।
वरयात्रा-संज्ञा स्त्री० बारात।
वरुणालय-संज्ञा पु० (सं०) समुद्र।
वरूथिनी-संज्ञा स्त्री० सेना। फौज।
वर्ग-संज्ञा पुं० (सं०) एक ही तरह की कई वस्तुओं का समूह, कोटि। अध्याय। चार बराबर रेखाओं का एक चित्र।
वर्गलाना-क्रि० स० किसी काम को करने को चुपके-चुपके उकसाना।
वर्जन-संज्ञा पुं० मनाही, करने की आज्ञा न होना। छोड़ना।
वर्जित-वि० (सं०) जो छोड़ा गया हो, त्यक्त। जिसे करने मना हो, निषिद्ध।
वर्ण-संज्ञा पुं० जाति, रंग। मनुष्यों का चार विभाग, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। मात्राओं के चिह्न। अक्षर।
वर्णन-संज्ञा पुं० बयान, गुणकीर्तन, चित्रण, रँगना।
वर्णमाला-संज्ञा स्त्री० श्रेणी, अक्षरों की सूची।
वर्णवृत्त-संज्ञा पुं० (सं०) वर्णों तथा लघु-गुरु का ध्यान रखकर बनाया गया कविता का छंद।
वर्णसंकर-संज्ञा पुं० (सं०) दो विभिन्न जाति के स्त्री-पुरुष से उत्पन्न संतान, दोगला।
वर्णित-वि० वर्णन किया हुआ। कहा हुआ। प्रशंसित।
वर्त्तन-संज्ञा पुं० (सं०) बरताव, व्यवहार, रखना, परिवर्तन, फेरना। उलट-पुलट। बरतन।
वर्तमान-वि० (सं०) मौजूद। जारी। उपस्थित, आधुनिक, आजकल का।
वर्द्धक-वि० (सं०) बढ़ानेवाला।
वर्द्धन-संज्ञा पुं० उन्नति, बढ़ाना। छीलना, बढ़ती।
वर्द्धित-वि० (सं०) बढ़ा हुआ।
वर्म-संज्ञा पुं० कवच। घर।

वर्ग्य-वि० (सं०) श्रेष्ठ, बड़ा।
वर्ष-संज्ञा पुं० (सं०) समय का एक मान, साल।
वर्षगाँठ-संज्ञा स्त्री० जन्म-दिन का उत्सव।
वर्षण-संज्ञा पुं० वृष्टि, बरसना।
वर्षा-संज्ञा स्त्री० पानी बरसना। बरसात।
वर्षाकाल-संज्ञा पुं० (सं०) बरसात।
वर्हो-संज्ञा पुं० मोर।
वलय-संज्ञा पुं० गोल घेरा। कंकण।
वलाहक-संज्ञा पुं० (सं०) बादल, मेघ, एक दैत्य का नाम।
वलित-वि० (सं०) बल खाया हुआ, मुड़ा हुआ। ढँका हुआ, युक्त।
वल्दियत-संज्ञा स्त्री० (अ०) पिता का नाम आदि बताना।
वल्मीक-संज्ञा पुं० (सं०) दीमकों द्वारा लगाया गया मिट्टी का ढेर। बाँबी, वाल्मीकि ऋषि।
वल्लभ-वि० (सं०) प्यारा।
वल्लरि, वल्लरी-संज्ञा स्त्री० वल्ली, मंजरी, लता।
वल्ली-संज्ञा स्त्री० (सं०) लता।
वश-संज्ञा पुं० इच्छा, काबू, अधिकार। कर सकने की शक्ति, सामर्थ्य।
वशवर्त्ती-वि० वश में रहनेवाला अधीन।
वशी-वि० अपने को वश में रखनेवाला।
वशीकरण-संज्ञा पुं० (सं०) दूसरे को अपने वश में करने की विद्या।
वशीभूत-वि० (सं०) दूसरे के वश में लाया हुआ, अधीन।
वसंत-संज्ञा पुं० (सं०) चैत और वैसाख के महीनों की ऋतु। एक राग।
वसंतदूत-संज्ञा पुं० आम का वृक्ष। कोयल।
वसंतदूती-संज्ञा स्त्री० (सं०) कोयल।
वसंती-संज्ञा सरसों के फूलों का रंग।
वसंतोत्सव-संज्ञा पुं० (सं०) प्राचीन काल में वसंत के दूसरे दिन मनाया जानेवाला उत्सव।
वसन-संज्ञा पुं० (सं०) वस्त्र, कपड़े।
वसा-संज्ञा स्त्री० भेजा। चरबी।
वसिष्ठ-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्राचीन ऋषि।
वसीयत-संज्ञा स्त्री० (अ०) मरते समय अपनी धन-सम्पत्ति का लिख कर किया जानेवाला प्रबन्ध।
वसीयतनामा-संज्ञा पुं० वह पत्र जिस पर लिखकर कोई व्यक्ति अपने मरते समय अपनी धन-सम्पत्ति का प्रबन्ध कर जाय।
वसुंधरा-संज्ञा स्त्री० (सं०) पृथ्वी।
वसु-संज्ञा पुं० किरण, आठ देवताओं का एक गण। रत्न। धन।
वस्तु-संज्ञा स्त्री० (सं०) चीज। तत्त्व, सत्य।
वस्तुतः-अव्य० (सं०) वास्तव में, यथार्थ में, सचमुच।
वस्तुवाद-संज्ञा पुं० (सं०) जैसा जगत् है उसी प्रकार उसकी सत्ता माननेवाला

वाला एक दार्शनिक सिद्धान्त।
वस्त्र-संज्ञा पुं० कपड़ा, पोशाक।
वस्ल-संज्ञा पुं० (अ०) मेल, मिलाप।
वहम-संज्ञा पुं० (अ०) भ्रम, संशय, मिथ्या धारणा।
वहमी-वि० जल्दी और बेकार ही भ्रम या संदेह में पड़नेवाला।
वहशी-वि० (अ०) जंगली। असभ्य।
वहिः-अव्य० (सं०) बाहर।
वहिरंग-संज्ञा पुं० (सं०) बाहरी भाग। बाहर से आया आदमी।
वहिर्गत-वि० (सं०) बाहर निकला या गया हुआ। निकाला हुआ।
वहिर्द्वार-संज्ञा पुं० (सं०) बाहरी फाटक।
वहिर्मुख-वि० (सं०) बाहरी, विमुख।
वहिर्लापिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) पहेली, समस्या।
वहिष्कृत-वि० (सं०) जो बाहर निकाला गया हो, त्यक्त।
वह्नि-संज्ञा पुं० (सं०) आग।
वांछनीय-वि० (सं०) जिसकी इच्छा की जाय, चाहने योग्य।
वांछित-वि० (सं०) जिसकी इच्छा की गयी हो, चाहा हुआ।
वाक्-संज्ञा पुं० (सं०) वाणी। बोलने की इन्द्रिय।
वाकई-वि० (अ०) वास्तव में, सचमुच।
वाकया-संज्ञा पुं० (अ०) घटना।
वाकिफ-वि० (अ०) जानकार। अनुभवी।
वाक्पटु-वि० (सं०) बात करने में चतुर।
वाक्य-संज्ञा पुं० (सं०) शब्दों का वह समूह जिससे कोई मतलब निकले।
वागीश-संज्ञा पुं० (सं०) ब्रह्मा। कवि। वि० अच्छा बोलनेवाला, वक्ता।
वाग्जाल-संज्ञा पुं० (सं०) बातों का जाल। बातों में फाँसना।
वाग्दान-संज्ञा पुं० (सं०) पिता का अपनी कन्या को ब्याहने के लिए वचन देना।
वाग्मी-संज्ञा पुं० वाचाल, अच्छा भाषण करनेवाला, वक्ता।
वाङ्मय-संज्ञा पुं० साहित्य।
वाचक-वि० पढ़नेवाला, पाठक।
वाचस्पति-संज्ञा पुं० (सं०) देवताओं के गुरु, बृहस्पति।
वाचा-संज्ञा स्त्री० वचन, वाणी शब्द।
वाचाल-वि० (सं०) बहुत बोलनेवाला। बोलने में चतुर।
वाच्य-वि० (सं०) कहने लायक।
वाजिब-वि० (अ०) ठीक, उचित।
वाजी-संज्ञा पुं० घोड़ा।
वाटिका-संज्ञा स्त्री० बाग, बगीचा।
वाणी-संज्ञा स्त्री० वचन, सरस्वती, मुँह से निकले शब्द।
वात-संज्ञा पुं० वायु, हवा।
वातज-वि० (सं०) वायु से पैदा।

वातजात-संज्ञा पुं० वायु से पैदा, हनुमान्।
वात-प्रकोप-संज्ञा पुं० शरीर में वायु का बढ़ना, जिससे रोग फैलते हैं।
वातायन-संज्ञा पुं० झरोखा, खिड़की, गवाक्ष।
वातुल-संज्ञा पुं० वात-ग्रस्त, पागल, बावला।
वात्सल्य-संज्ञा पुं० स्नेह, माता-पिता का पुत्र के प्रति प्रेम।
वाद-संज्ञा पुं० तर्क, शास्त्रार्थ, झगड़ा, सिद्धान्त, बहस।
वादरायण-संज्ञा पुं० वेदव्यास।
वाद-विवाद-संज्ञा पुं० (सं०) बहस।
वादा-संज्ञा पुं० किसी काम को करने देने का पक्का वचन, प्रतिज्ञा।
वादी-संज्ञा पुं० मुकदमा चलानेवाला, वक्ता, बोलनेवाला।
वाद्य-संज्ञा पुं० (सं०) बाजा।
वानप्रस्थ-संज्ञा पुं० (सं०) मनुष्य-जीवन के चार विभागों में तीसरा।
वानर-संज्ञा पुं० (सं०) बन्दर।
वापस-वि० (फा०) लौटाया हुआ।
वापसी-संज्ञा स्त्री० लौटाना।
वाम-वि० (सं०) बायाँ, उलटा, विरुद्ध, दुष्ट, नीच, टेढ़ा, कुटिल।
वामन-वि० (सं०) बौना।
वामा-संज्ञा स्त्री० दुर्गा, स्त्री।
वायव्य-वि० (सं०) वायु का। संज्ञा पुं० उत्तर पश्चिम का कोना।
वायु-संज्ञा स्त्री० (सं०) हवा।
वायुमंडल-संज्ञा पुं० (सं०) आकाश।
वायुलोक-संज्ञा पुं० (सं०) पुराणों के अनुसार एक लोक। आकाश।
वारंवार-अव्य० बार-बार।
वारदात-संज्ञा स्त्री० (अ०) घटना।
वार-पार-संज्ञा पुं० इधर-उधर का छोर। अव्य० एक किनारे से दूसरे तक।
वारमुखी, वारांगना-संज्ञा स्त्री० (सं०) वेश्या, रंडी।
वाराणसी-संज्ञा स्त्री० (सं०) काशी नगरी।
वारा-न्यारा-संज्ञा पुं० फैसला।
वारिद-संज्ञा पुं० (सं०) बादल।
वारिधि-संज्ञा पुं० (सं०) समुद्र।
वारिस-संज्ञा पुं० (अ०) जो व्यक्ति किसी के मरने पर उसकी धन-सम्पत्ति का मालिक हो, उत्तराधिकारी।
वारुणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) शराब।
वार्त्ता-संज्ञा स्त्री० प्रसंग। विषय। बात। अफवाह। हाल। बातचीत।
वार्त्तालाप-संज्ञा पुं० (सं०) बातचीत।
वार्द्धक्य-संज्ञा पुं० (सं०) बुढ़ापा।
वार्षिक-वि० (सं०) सालाना, जो हर साल होता हो। वर्षा ऋतु का।
वालिद-संज्ञा पुं० (अ०) पिता।
वालिदा-संज्ञा स्त्री० (अ०) माता।
वाल्मीकि-संज्ञा पुं० (सं०) एक मुनि जिन्होंने रामायण लिखी।

लिहाफ-संज्ञा पुं० (अ०) जाड़ों में ओढ़ने का रुई भरा कपड़ा।

लीचड़-वि० (देश०) सुस्त, काहिल।

लीद-संज्ञा स्त्री० (देश०) घोड़े, गधे आदि पशुओं का मल।

लीन-वि० (सं०) किसी वस्तु में बिलकुल मिलकर खो गया हुआ। विचारों में डूबा हुआ, तत्पर।

लुंचन-संज्ञा पुं० उखाड़ना, नोचना। चुटकी से नोचना।

लुंज-वि० बिना हाथ-पैर का।

लुगाई-संज्ञा स्त्री० औरत।

लुच्चा-वि० दुराचारी, नीच।

लुटेरा-संज्ञा पुं० जो लोगों का सामान लूट लेता हो, डाकू।

लुत्फ-संज्ञा पुं० (अ०) मजा, आनन्द। खूबी। जायका।

लुप्त-वि० (सं०) छिपा हुआ। अदृश्य, गायब, नष्ट।

लुब्ध-वि० (सं०) सब कुछ भूला हुआ, मोहित। ललचाया हुआ।

लुभाना-क्रि० अ० मोहित होना। ललचाना, रिझाना।

लुहार-संज्ञा पुं० लोहे की चीजें बनानेवाला।

लू-संज्ञा स्त्री० गरमी की तपी हुई हवा।

लूट-संज्ञा स्त्री० किसी से उसका धन आदि छीन लेना।

लूला-वि० जिसका हाथ कटा हो।

लेंड़ी-संज्ञा स्त्री० (देश०) बकरी या ऊँट आदि का बँधा हुआ मल।

लेख-संज्ञा पुं० लिपि, लिखावट। लिखा हुआ। हिसाब-किताब।

लेखक-संज्ञा पुं० पुस्तक लिखनेवाला, ग्रन्थकार, लिपिक।

लेखन-संज्ञा पुं० (सं०) लिखने का काम कला या विद्या।

लेखनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) कलम।

लेखा-संज्ञा पुं० गिनती। अन्दाज।

लेखिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) पुस्तक लिखनेवाली स्त्री।

लेनदार-संज्ञा पुं० जिससे कुछ धन उधार लिया गया हो। महाजन

लेनहार-वि० उधार लेनेवाला।

लेप-संज्ञा पुं० (सं०) लेपने की गीली वस्तु उबटन।

लेश-संज्ञा पुं० कण, अणु सब से छोटा होना। वि० थोड़ा।

लेहाजा-क्रि० वि० (अ०) इसलिए।

लैस-वि० अपने हथियारों के साथ तैयार। संज्ञा पुं० एक प्रकार का फीता।

लोई-संज्ञा स्त्री० गुंधे आटे की एक रोटी बनाने भर का अंश। एक प्रकार का कंबल।

लोक-संज्ञा पुं० (सं०) संसार। लोग।

लोकधुनि-संज्ञा स्त्री० लोगों के मुँह से कही-सुनी खबर, अफवाह।

लोकप, लोकपति-संज्ञा पुं० विष्णु, ब्रह्मा, राजा।

लोकपाल-संज्ञा पुं० (सं०) एक दिशा का मालिक। राजा।

लोकलीक-संज्ञा स्त्री० लोग की मर्य्यादा, या हद।

लोकसंग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) सम्पूर्ण

संसार की भलाई करना।
लोकांतर-संज्ञा पुं० (सं०) मरने के बाद जिस लोक में जीव जाय।
लोकाचार-संज्ञा पुं० (सं०) दुनिया में जिस ढंग से व्यवहार किया जाय।
लोकोक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) कहावत।
लोकोत्तर-वि० (सं०) जो इस लोक का न हो। आश्चर्यजनक, अद्भुत्, विलक्षण।
लोग-संज्ञा पुं० बहुवचन, मनुष्य।
लोच-संज्ञा स्त्री० लचक कोमलता।
लोचन-संज्ञा पुं० आँख, झरोखा।
लोट-संज्ञा स्त्री० लोटना।
लोटना-क्रि० अ० लेटे-लेटे इधर-उधर करवटें बदलना।
लोटा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का गोल धातु का बरतन।
लोढ़ा-संज्ञा पुं० कुछ पीसने के लिए पत्थर का टुकड़ा, बट्टा।
लोथ-संज्ञा स्त्री० मरा शरीर, लाश। शव।
लोथड़ा-संज्ञा पुं० मांस के खण्ड, पिण्ड जिसमें हड्डी न हो।
लोना-वि० नमकीन। सुन्दर। संज्ञा पुं० एक नमकीन मिट्टी।
लोप-संज्ञा पुं० विच्छेद, नाश, बरबादी। गायब होना, छिपना।
लोभ-संज्ञा पुं० लालच, आकांक्षा।
लोभना, लोभाना-क्रि० स० मोहित करना। क्रि० अ० मोहित होना।

लोभी-वि० लालची।
लोम-संज्ञा पुं० (सं०) शरीर पर के छोटे-छोटे बाल, रोम।
लोमहर्षण-वि० (सं०) रोयें खड़े कर देनेवाला भय या प्रसन्नता।
लोरी-संज्ञा स्त्री० बच्चों को सुलाते समय गाया जानेवाला गीत।
लोल-वि० हिलता-डुलता।
लोलुप-वि० (सं०) लालची।
लोष्ट-संज्ञा पुं० ईंट या पत्थर। मिट्टी का ढेला।
लोह-संज्ञा पुं० लोहा नामक धातु। लोहा।
लोहसार-संज्ञा पुं० (सं०) फौलाद, एक प्रकार का पक्का लोहा।
लोहा-संज्ञा पुं० काले रंग की एक धातु।
लोहार-संज्ञा पुं० लोहे की चीजें बनानेवाली एक जाति।
लोहित-वि० (सं०) लाल।
लोहिया-संज्ञा पुं० लोहे का व्यापार करनेवाला।
लोहू-संज्ञा पुं० रक्त, रुधिर।
लौंडा-संज्ञा पुं० लड़का।
लौंडी-संज्ञा स्त्री० नौकरानी।
लौ-संज्ञा स्त्री० आग की लपट। दीपक की टेम, आशा, चाह, कामना।
लौकिक-वि० (सं०) दुनिया का, सांसारिक, लोक संबंधी।
लौट-फेर-संज्ञा पुं० उलट-पुलट, बड़ा परिवर्तन।
लौह-संज्ञा पुं० (सं०) लोहा।

वंक-वि० (सं०) वक्र, टेढ़ा।
वंकिम-वि० (सं०) झुका हुआ, टेढ़ा।
वंग-संज्ञा पुं० रांगा। बंगाल।
वंचक-वि० (सं०) धोखेबाज। ठग।
वंचना-संज्ञा स्त्री० (सं०) धोखा, छल।
वंचित-वि० (सं०) जिसे ठगा गया हो। जिसका किसी काम में अधिकार न हो। रहित, अलग।
वंदन-संज्ञा पुं० (सं०) पूजा, पाठ।
वंदना-संज्ञा स्त्री० स्तुति, पूजा, प्रणाम।
वंदनीय-वि० (सं०) पूजा या आदर करने योग्य।
वंदित-वि० (सं०) जिसकी पूजा या आदर किया जाय।
वंदी-संज्ञा पुं० कैदी।
वंद्य-वि० (सं०) पूजा और वंदना किया जाने लायक।
वंश-संज्ञा पुं० (सं०) बाँस। परिवार।
वंशज-संज्ञा पुं० (सं०) उच्च कुल में पैदा, संतान।
वंशधर-संज्ञा पुं० (सं०) परिवार की मर्यादा रखनेवाला।
वंशावली-संज्ञा स्त्री० (सं०) वंश में होनेवाले लोगों के नामों की सूची।
वक-संज्ञा पुं० बगुला नामक पक्षी। अगस्त्य का पेड़। एक दैत्य।

वकवृत्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) धोखे से काम निकालने की आदत।
वकालत-संज्ञा स्त्री० वकील का पेशा, शिक्षा आदि।
वकालतनामा-संज्ञा पुं० अपनी ओर से किसी वकील को किसी मुकदमे के लिए नियुक्त करने का पत्र।
वकील-संज्ञा पुं० (अ०) दूत। जो वकालत पास कर चुका हो और मुकदमे में किसी एक पक्ष की पैरवी करता हो।
वकुल-संज्ञा पुं० (सं०) अगस्त्य का पेड़। मौलसिरी।
वक्त-संज्ञा पुं० (अ०) समय। मौका। अवसर।
वक्तव्य-संज्ञा पुं० वचन, कहा हुआ, कथन।
वक्ता-सं० पुं० बोलनेवाला।
वक्तृता-संज्ञा स्त्री० व्याख्यान, कहा हुआ, भाषण, कथन।
वक्र-वि० (सं०) टेढ़ा। तिरछा।
वक्रगामी-वि० टेढ़ी चाल चलनेवाला। धूर्त, कुटिल।
वक्रतुंड-संज्ञा पुं० (सं०) गणेश।
वक्रदृष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) टेढ़ी क्रोध की दृष्टि।
वक्रोक्ति-संज्ञा स्त्री० कटूक्ति, टेढ़ी या बढ़िया उक्ति।
वक्ष-संज्ञा पुं० हृदय, छाती।
वक्षःस्थल-संज्ञा पुं० (सं०) छाती।
वचन-संज्ञा पुं० (सं०) मुँह से कहा हुआ। व्याकरण में एक या बहुत का बोध होना।

वजन-संज्ञा पुं० (अ०) भार, बोझ, गौरव, मान।
वजनी-वि० बहुत भार का, भारी।
वजह-संज्ञा स्त्री० (अ०) कारण।
वजीफा-संज्ञा पुं० (अ०) छात्रों, विद्वानों आदि को मिलनेवाली धन की सहायता। छात्रवृत्ति।
वजीर-संज्ञा पुं० (अ०) मंत्री। शतरंज में एक गोट।
वज्र-संज्ञा पुं० (सं०) इन्द्र का शस्त्र। बिजली। वि० बहुत कड़ा, कठोर। भीषण।
वज्री-संज्ञा पुं० वज्रधारी, इन्द्र, थूहर का पौधा।
वट-संज्ञा पुं० बरगद का पेड़।
वटिका, वटी-संज्ञा स्त्री० छोटी गोली या टिकिया, बटी
वटु-वटुक-संज्ञा पुं० ब्रह्मचारी, बालक।
वणिक्-संज्ञा पुं० व्यवसायी, बनिया, वैश्य।
वतन-संज्ञा पुं० (अ०) जन्मभूमि।
वत्-संज्ञा पुं० समान, तुल्य।
वत्स-संज्ञा पुं० शिशु, बालक, गाय का बच्चा।
वत्सर-संज्ञा पुं० (सं०) साल, वर्ष।
वत्सल-वि० (सं०) बच्चों या छोटों के प्रति प्रेम या दया करनेवाला।
वदन-संज्ञा पुं० मुख, अगला भाग। कथन।
वदान्य-वि० (सं०) बहुत उदार। मीठा बोलनेवाला।
वध-संज्ञा पुं० हत्या, मार डालना।
वधक-संज्ञा पुं० (सं०) वध करनेवाला, हिंसक। शिकारी। मृत्यु।
वधू-संज्ञा स्त्री० स्त्री, पुत्रवधू, पत्नी।
वधूटी-संज्ञा स्त्री० पुत्रवधू।
वध्य-वि० (सं०) मार डालने योग्य।
वन-संज्ञा पुं० (सं०) जंगल। वाटिका।
वनचर-वि० (सं०) जंगल में घूमनेवाला, जंगली पशु।
वनदेव-संज्ञा पुं० जंगल का देवता।
वनमाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) वन के फूलों की माला। एक माला जिसे कृष्ण पहिनते थे।
वनलक्ष्मी-संज्ञा स्त्री० (सं०) जंगल की शोभा, वनश्री।
वनवास-संज्ञा पुं० (सं०) बस्ती को छोड़कर जंगल में रहने लगना।
वनस्थली-संज्ञा स्त्री० (सं०) जंगल की भूमि।
वनस्पति-शास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह शास्त्र जिसमें पेड़-पौधों आदि का अध्ययन होता है।
वनिता-संज्ञा स्त्री० (सं०) प्रिया। औरत।
वनौषध-संज्ञा स्त्री० (सं०) जंगलों की जड़ी-बूटियाँ।
वन्य-वि० (सं०) जंगल में उत्पन्न होनेवाला, जंगली।
वपन-संज्ञा पुं० (सं०) बीज बोना।
वपु-संज्ञा पुं० शरीर। देह।
वफ़ादार-वि० कही बात या कर्तव्य

लड़खड़ाना-क्रि० अ० ठीक से खड़ा न हो पाना, डगमगाना। झोंका खाकर नीचे आ जाना।
लड़ाई-संज्ञा स्त्री० एक दूसरे से मार-पीट, युद्ध। झगड़ा। दुश्मनी, वैर, विरोध।
लड़ाका-वि० खूब लड़नेवाला। सैनिक, झगड़ालू।
लड़ैता-वि० प्रिय, प्यारा, लाड़ला। वि० लड़नेवाला, सिपाही।
लड्डू-संज्ञा पुं० एक गोल मिठाई।
लत-संज्ञा स्त्री० बुरी आदत, टेक।
लतखोर, लतखोरा-वि० लात की मार खानेवाला, नीच।
लता-संज्ञा स्त्री० वल्ली, खूब लम्बा फैलनेवाला पौदा, बेल।
लतामंडप-संज्ञा पुं० लतामंडल, लताकुंज।
लतिका-संज्ञा स्त्री० छोटी लता, बेल।
लतियाना-क्रि०स०लातों से मारना। अपमानित करना।
लथपथ-वि० भीगा या सना हुआ, तराबोर।
लथाड़-संज्ञा स्त्री० जमीन पर लोटा-लना या घसीटना, चपेट, हानि।
लथेड़ना-क्रि० सं० कीचड़ आदि में सान देना। किसी को उसकी गलती पर डाँटना, डपटना।
लदाव-संज्ञा पुं० लादना। बोझ। छत आदि का पटाव।
लदुवा, लद्दू-वि० बोझ ढोने वाला।
लद्धड़-वि० पीछे पड़ा रहनेवाला, आलसी।
लपक-संज्ञा स्त्री० ज्वाला, लपट, तेजी।
लपकना-क्रि० अ० झपटना, तेजी से बढ़ना।
लपट-संज्ञा स्त्री० अग्नि की ज्वाला, आग की गर्मी, आँच।
लपलपाना-क्रि० अ० पतली और कोमल वस्तु का हिलना। तलवार आदि अस्त्र का चमकना।
लफंगा-वि० बदमाश, व्यभिचारी। लंपट।
लफ्ज-संज्ञा पुं० (अ०) शब्द।
लबादा-संज्ञा पुं० (फा०) रुईदार लम्बा कोट-सा। चोगा।
लबार-वि० झूठा, गप्पी।
लबालब-क्रि० वि० (फा०) पात्र में ऊपर तक किसी तरल पदार्थ का भरा होना।
लब्धप्रतिष्ठ-वि० (सं०) जिसको मान-सम्मान मिला हो, प्रतिष्ठित।
लभ्य-वि० (सं०) पाने लायक। उचित। पानेयोग्य।
लय-संज्ञा पुं० (सं०) एक चीज का दूसरे में बिलकुल मिल जाना, मग्नता। प्रलय। बरबादी, विनाश। संज्ञा स्त्री० गाना गाने का ढंग, तर्ज।
लरजना-क्रि० अ० काँपना। डरना।
ललक-संज्ञा स्त्री० चाह, बहुत इच्छा।
ललकार-संज्ञा स्त्री० लड़ने या प्रतिद्वंद्विता के लिए ऊँचे स्वर से बुलाना, आह्वान।

ललचना-क्रि० अ० इच्छा करना। मोहित होना।
ललचाना-क्रि० स० दूसरे के मन में इच्छा या लालच पैदा करना।
लला-संज्ञा पुं० प्यारा लडका।
ललाई-संज्ञा स्त्री० कुछ-कुछ लाल, लाली।
ललाट-संज्ञा पुं० मस्तक, माथा, भाल।
ललाट-पटल-संज्ञा पुं० मस्तक का तल।
ललाट-रेखा-संज्ञा स्त्री० भाग्यलेख मस्तक पर की भाग्य की रेखा।
ललाम-वि० (सं०) सुन्दर। लाल। संज्ञा पुं० चिह्न, सींग।
ललित-वि० (सं०) सुन्दर। प्यारा, मनचाहा।
लली-संज्ञा स्त्री० प्यारी लडकी।
लल्ला-संज्ञा पुं० प्यारा लड़का लला।
लल्लोचप्पो-संज्ञा स्त्री० काम निकालने के लिए मीठी और झूठी बातें करना। ठकुरसुहाती।
लवंग-संज्ञा पुं० (सं०) एक लता, लौंग।
लव-संज्ञा पुं० (सं०) बहुत थोड़ा। अल्प समय। राम का एक पुत्र।
लवण-संज्ञा पुं० नोन। नमक।
लवलीन-वि० विचार में खोया हुआ, तन्मय।
लवलेश-संज्ञा पुं० (सं०) बहुत थोड़ी मात्रा, थोड़ा संबंध।
लवारा-संज्ञा पुं० गाय का बच्चा।
लशकर-संज्ञा पुं० (फा०) फौज। भीड़-भाड़। जहाँ सेना ठहरे, छावनी।
लस-संज्ञा पुं० (सं०) चिपचिपाहट।
लसदार-वि० जिस वस्तु में चिपचिपाहट हो, लस से युक्त।
लसना-क्रि० स० एक वस्तु से दूसरी वस्तु का मिल जाना।
लसीला-वि० लसदार। सुन्दर।
लहक-संज्ञा स्त्री० लहकना। आग की लपट। चमक।
लहकना-क्रि० अ० हवा का चलना। आग का दहकना। प्रसन्न होना।
लहजा-संज्ञा पु० ढंग, बातचीत करने या बोलने का ढग, स्वर।
लहजा-संज्ञा पुं० (अ०) पल, क्षण।
लहनदार-संज्ञा पुं० कर्ज पर रुपया देनेवाला, महाजन।
लहमा-संज्ञा पुं० पल, क्षण।
लहर-संज्ञा स्त्री० बहते पानी के बीच के चढ़ाव-उतार। मौज। जोश।
लहरदार-वि० लहर की तरह टेढ़ा-मेढ़ा गया हुआ।
लहराना-क्रि० अ० हवा के वेग से हिलना। मन का उमंग में होना।
लहरी-संज्ञा स्त्री० तरंग, लहर। वि० मन की मौज का काम करनेवाला, मनमौजी।
लहलहा-वि० हरा-भरा, लहलहाता हुआ। खूब प्रसन्न, हृष्टपुष्ट।
लहलहाना-क्रि० अ० हरा-भरा

होना। खुश होना।
लहू-संज्ञा पुं० खून।
लाँग-संज्ञा स्त्री० धोती में पीछे कमर में खोंसा जानेवाला भाग, काछ।
लांछन-संज्ञा पुं० (सं०) धब्बा, दोष, कलंक।
लाक्षा-संज्ञा स्त्री० लाह, लाख।
लाख-वि० सौ हजार। बहुत ज्यादा। संज्ञा स्त्री० (सं०) एक लाल पदार्थ जो एक प्रकार के कीड़ों द्वारा पेड़ों की टहनियों में लगा दिया जाता है।
लागत-संज्ञा स्त्री० किसी चीज के बनवाने में लगनेवाला खर्च।
लाघव-संज्ञा पुं० (सं०) छोटापन। कमी। तेजी। अव्य० (सं०) आसानी से, जल्दी से।
लाचार-वि० (फा०) जो कुछ न कर सके, विवश, मजबूर। क्रि० वि० बहुत विवश होकर।
लाचारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) मजबूरी।
लाज-संज्ञा स्त्री० शर्म। हया।
लाजवंती-संज्ञा स्त्री० एक लजालू पौदा, छुईमुई।
ला-जवाब-वि० (फा०) जैसा दूसरा न हो, बेजोड़। जिसे कुछ जवाब न सूझे, खामोश।
लाजिम-वि० जो किया ही जाना चाहिए। उचित।
लाजिमी-वि० जरूरी, आवश्यक।
लाट-संज्ञा स्त्री० मोटा ऊँचा खम्भा।
लाठी-संज्ञा स्त्री० लकड़ी, डंडा।
लाड़-संज्ञा पुं० बच्चों का दुलार। लालन।
लाड़ला-वि० बहुत प्यारा, दुलारा।
लात-संज्ञा स्त्री० पैर, पाँव।
लादना-क्रि० स० किसी पर बहुत सा बोझ रख देना।
लादी-संज्ञा स्त्री० किसी पशु पर लादी जानेवाली गठरी।
लानत-संज्ञा स्त्री० फटकार, भर्त्सना, धिक्कार।
लापता-वि० जिसका पता न हो, खोया हुआ, गुप्त।
लापरवा, लापरवाह-वि० जिसे किसी बात की परवाह या ख्याल न हो, बेफिक्र।
लापरवाही-संज्ञा स्त्री० बेफिक्री।
लाभ-संज्ञा पुं० प्राप्ति, पाना, मिलना, फायदा भलाई।
लाभकारी, लाभदायक-वि० फायदा करनेवाला। गुणकारी।
लामा-संज्ञा पुं० (सं०) तिब्बत आदि के बौद्धों का धर्माचार्य।
लायक-वि० (अ०) ठीक, उचित। योग्य। समर्थ, कर सकनेवाला।
लार-संज्ञा स्त्री० मुंह से निकलनेवाला पतला लसदार थूक।
लाल-संज्ञा पुं० प्यारा बच्चा। पुत्र। वि० लाल रंग का, अति क्रुद्ध।
लालच-संज्ञा पुं० किसी चीज को पाने की तीव्र लालसा, लोभ।
लालची-वि० बहुत लालच करनेवाला।
लालन-संज्ञा पुं० प्यार, लाड।

लाल-बुझक्कड़-संज्ञा पुं० बातों का ऊटपटांग मतलब लगानेवाला।
लालसा-संज्ञा स्त्री० (सं०) इच्छा, चाह।
ललित-वि० (सं०) प्यारा। पाला-पोसा गया।
लालित्य-संज्ञा पुं० (सं०) सुन्दरता। सरसता, अरुणाई, ललाई।
लालिमा-संज्ञा स्त्री० ललाई।
लावण्य-संज्ञा पुं० अत्यन्त सुन्दरता। सलोनापन। नमकीनपन।
लावल्द-वि० (फा०) जिसके संतान न हो, निःसंतान।
लावा-संज्ञा पुं० (सं०) एक पक्षी, लवा। संज्ञा पुं० भूनने से फूला हुआ, धान, रामदाना, मक्का आदि, खील लाई।
लावारिस-संज्ञा पु० (अ०) जिसका कोई वारिस या उत्तराधिकारी न हो। परित्यक्त।
लाश-संज्ञा स्त्री० (फा०) मरा हुआ जीव, मृत शरीर, शव।
लास-संज्ञा पुं० एक प्रकार का नाच।
लासानी-वि० (अ०) जैसा दूसरा न हो, बेजोड़।
लास्य-संज्ञा पुं० स्त्रियों का नाच।
लिंग-संज्ञा पुं० चिह्न, लक्षण। पुरुष या स्त्री की गुप्त इन्द्रिय। शिव की एक मूर्त्ति। व्याकरण में शब्दों का वह भेद जिससे पुरुष-स्त्री का पता चले।
लिंगशरीर-संज्ञा पुं० सूक्ष्म शरीर।
लिंगेन्द्रिय-संज्ञा पुं० (सं०) वह गुप्त इन्द्रिय जिससे पुरुष-स्त्री की पहिचान हो।
लिक्खाड़-संज्ञा पुं० लिखनेवाला। बहुत अधिक लिखनेवाला।
लिखत-संज्ञा स्त्री० लिखी हुई बात।
लिखापढ़ी-संज्ञा स्त्री० चिट्ठी आदि भेजना और मँगाना। किसी बात का लिखकर पक्का कर लेना।
लिखावट-संज्ञा स्त्री० लिखने का ढग या प्रणाली, लेख।
लिखित-वि० (सं०) लिखा हुआ।
लिपि-संज्ञा स्त्री० जिस प्रथा के वर्ण में कुछ लिखा जाय, जैसे नागरी लिपि।
लिपिबद्ध-वि० (सं०) लिखा हुआ।
लिप्त-वि० (सं०) लिपा हुआ। बिलकुल विचार में डूबा, लीन, अनुरक्त।
लिप्सा-संज्ञा स्त्री० इच्छा, लालच।
लिफाफा-संज्ञा पुं० (अ०) कागज की थैली-सी जिसमें पत्र आदि रखते हैं। ऊपरी दिखावा। बहुत हलका-फुलका।
लिबास-संज्ञा पुं० (अ०) पहनने के कपड़े, पोशाक।
लियाकत-संज्ञा स्त्री० (अ०) काम करने की सामर्थ्य, योग्यता। गुण। शील।
लिहाज-संज्ञा पुं० (अ०) किसी की बात या व्यवहार का ख्याल रखना। मेहरबानी। सम्मान। लज्जा।

नई निकलती मूँछें।
रेखता-संज्ञा पुं० (फा०) एक गजल।
रेखा-संज्ञा स्त्री० छद्म, लकीर। चिह्न।
रेखागणित-संज्ञा पुं० (सं०) रेखाओं द्वारा की जानेवाली एक गणित।
रेगिस्तान-संज्ञा पुं० (फा०) वह प्रदेश जहाँ बालू ही बालू फैली हो।
रेचक-वि० (सं०) दस्त लाने वाली दवा। संज्ञा पुं० प्राणायाम की एक क्रिया।
रेजा-संज्ञा पुं० (फा०) बहुत छोटा टुकड़ा।
रेणु-संज्ञा स्त्री० कणिका। धूल। बालू।
रेणुका-संज्ञा स्त्री० धूल बालू। रज, पृथ्वी। परशुराम की माँ।
रेत-संज्ञा स्त्री० बालू। मरुस्थल।
रेता-संज्ञा पुं० बालू, मिट्टी।
रेती-संज्ञा स्त्री० एक औजार जिसको धातु पर रगड़ने से धातु के कण टूटते हैं।
रेतीला-वि० बालू से भरा, बलुआ।
रेफ-संज्ञा पुं० (सं०) वर्णों में रकार (र)। 'र' का हलत।
रेलठेल-संज्ञा स्त्री० भीड़-भाड़, इसका सामूहिक विभाग।
रेलना-क्रि० स० आगे की ओर ढकेलना, धक्का देना। बहुत भोजन करना।
रेला-संज्ञा पुं० (देश०) धक्कम-धक्का। बहुत अधिक होना। जल का तेज प्रवाह।
रेवा-संज्ञा स्त्री० (सं०) नर्मदा नदी। दुर्गा। नील का पौधा।
रेशम-संज्ञा पुं० (फा०) महीन चिकना और चमकीला तार जो एक प्रकार के कीड़े बनाते हैं, और उसका कपड़ा बुना जाता है।
रेशमी-वि० (फा०) रेशम से बना।
रेशा-संज्ञा पुं० (फा०) पेड़ों की छालों से निकलनेवाला महीन सूत।
रेहन-संज्ञा पुं० (फा०) महाजन के पास कोई चीज रखकर रुपया उधार लेना, बंधक, गिरवी।
रेहननामा-संज्ञा पुं० (फा०) जिस कागज पर रेहन रखने की शर्तें लिखी जायें।
रैदास-संज्ञा पुं० एक चमार भक्त। चमार।
रैन-संज्ञा स्त्री० (कवि०) रात।
रैयत-संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रजा, जनता।
रोंगटा-संज्ञा पुं० शरीर पर के बाल, रोम।
रोक-संज्ञा स्त्री० बाधा, अटक। किसी काम के करने की आज्ञा न होना, अटकाव, निषेध।
रोकटोक-संज्ञा स्त्री० बाधा। किसी काम के करने की आज्ञा न होना, मनाही।
रोकड़-संज्ञा स्त्री० नकद रुपया पैसा, पूँजी।
रोग-संज्ञा पुं० (सं०) बीमारी, मर्ज।

रोगन-संज्ञा पुं० तेल। चीजों को चमकाने के लिए उन पर चढ़ाया जानेवाला लेप।
रोगी-वि० जिसे बीमारी हो, बीमार, व्याधिग्रस्त, रुग्ण।
रोचक-वि० मन को अच्छा लगनेवाला, रुचिकारक, मनोरंजक।
रोजगार-संज्ञा पुं० (फा०) धन कमाने को किया जानेवाला काम, व्यवसाय, पेशा, व्यापार।
रोजनामचा-संज्ञा पुं० (फा०) वह कापी जिसमें रोज का हिसाब-किताब लिखा रहता है।
रोजमर्रा-अव्य० (फा०) हर दिन या प्रतिदिन, अत्यह।
रोजा-संज्ञा पुं० (फा०) मुसलमानों का रमजान के मास में रखा जानेवाला व्रत, उपवास।
रोजी-संज्ञा स्त्री० (फा०) जिस काम को करने से हमारी रोज की रोटी चल सके, जीविका।
रोदन-संज्ञा पुं० क्रन्दन, रोना।
रोपना-क्रि० स० पौदों को उगाना। रोकना।
रोब-संज्ञा पुं० दूसरों के ऊपर धाक या प्रभाव होना, दबदबा।
रोम-संज्ञा पुं० देह के बाल, रोयाँ।
रोमकूप-संज्ञा पुं० (सं०) शरीर के छेद जिनसे रोयें निकलते हैं।
रोमांच-संज्ञा पुं० (सं०) प्रसन्नता में रोओं का उभर आना, पुलक।
रोमावलि, रोमावली-संज्ञा स्त्री० (सं०) पेट से छाती तक जानेवाली रोओं की पाँत।
रोयाँ-संज्ञा पुं० प्राणियों के शरीर पर उगनेवाले बाल, रोम।
रोर-संज्ञा स्त्री० शोर, हल्ला।
रोली-संज्ञा स्त्री० मिला हुआ चूना और हलदी जिसका तिलक लगाते हैं।
रोशनदान-संज्ञा पुं० (फा०) रोशनी आने के लिए कमरे में बना खिड़की, प्रकाशमान, चमकीला।
रोशनाई-संज्ञा स्त्री० (फा०) लिखने की स्याही। रोशनी।
रोशनी-संज्ञा स्त्री० (फा०) प्रकाश, उजाला।
रोष-संज्ञा पुं० गुस्सा, कोप। वैर।
रोहित-वि० (सं०) लाल रंग का।
रौंदना-क्रि० स० पैरों से कुचलना।
रौद्र-वि० (सं०) भयानक, डरावना। संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों में एक जिसको उग्र भी कहते हैं।
रौनक-संज्ञा स्त्री० (अ०) रूप। चमक-दमक। शोभा, सुन्दरता।
रौप्य-संज्ञा पुं० (सं०) चाँदी। वि० चाँदी का बना हुआ।
रौरव-वि० (सं०) डरावना। संज्ञा पुं० एक भयंकर नरक।

लंक-संज्ञा स्त्री० कटि, कमर। संज्ञा स्त्री० एक द्वीप।
लंका-संज्ञा स्त्री० (सं०) भारत के दक्षिण में एक द्वीप।
लंकापति-संज्ञा पुं० (सं०) लंका का राजा, विभीषण। रावण।
लंकेश, लंकेश्वर-संज्ञा पुं० रावण।
लंगड़ा-वि० जिसका एक पैर टूटा हो।
लंगूल-संज्ञा पुं० पूँछ, दुम।
लंगर-संज्ञा पुं० (फा०) लोहे का काँटा जिसे अटकाकर नाव या जहाज रोके जाते हैं। चौपायों के गले में बाँधा जानेवाला लकड़ी का कुंदा। जहाँ पर दरिद्रों को भोजन बाँटा जाता है।
लंगूर-संज्ञा पुं० बंदर। बंदर की एक जाति।
लंघन-संज्ञा पुं० (फा०) खाना न खाना, उपवास।लाँघना, फाँद जाना।
लंठ-वि० मूर्ख। उद्दण्ड।
लंपट-वि० (सं०) कामुक, व्यभिचारी।
लंबतड़ंग-वि० लंबे आकार का।
लंबा-वि० एक दिशा में काफी दूर तक चला गया हुआ।
लंबाई, लंबान-संज्ञा स्त्री० लंबा होना, लंबापन।
लंबोदर-संज्ञा पुं० गणेशजी।
लकड़बग्घा-संज्ञा पुं० एक जंगली जानवर। लग्घड़।
लकब-संज्ञा पुं० (अ०) पद, उपाधि।
लकवा-संज्ञा पुं० (अ०) एक रोग।
लकीर-संज्ञा स्त्री० सीधी रेखा, रेखा, धारी, पंक्ति।
लक्ष-वि० (सं०) एक लाख।
लक्षण-संज्ञा पुं० (सं०) वह गुण जिसके द्वारा किसी वस्तु की पहिचान हो। किसी होनेवाली बात के पहले दिखायी पड़नेवाले चिह्न, पूर्वाभास। चाल-ढाल।
लक्षित-वि० (सं०) देखा हुआ। विचारा हुआ।
लक्ष्मी-संज्ञा स्त्री० (सं०) विष्णु की पत्नी, एक देवी। धन, दौलत। सुन्दरता, शोभा। घर की मालकिन।
लक्ष्य-संज्ञा पुं० उद्देश्य। वह वस्तु जिस पर निशाना लगाया जाय। जिस तक पहुँचा जाय, या जिसे पाया जाय।
लक्ष्यभेद-संज्ञा पुं० (सं०) चलते या उड़ते जीव पर निशाना लगाना।
लखलखा-संज्ञा पुं० (फा०) बेहोशी दूर करनेवाला एक पदार्थ।
लगन-संज्ञा स्त्री० ध्यान से या मन लगाकर कोई काम करना। प्यार। संज्ञा पुं० ब्याह आदि का शुभ समय, साइत।
लगभग-क्रि० वि० प्राय:।
लगातार-क्रि० वि० एक के बाद

एक, सिलसिलेवार।
लगान-संज्ञा पुं० किसानों से लिया जानेवाला भूमि-कर।
लगालगी-संज्ञा स्त्री० लाग, मेल-जोल, प्रेम, स्नेह।
लगाव-संज्ञा पुं० लगा होना, संबंध। मेल।
लगावट-संज्ञा स्त्री० सम्बन्ध। प्रेम।
लगुड़-संज्ञा पुं० दण्ड, लाठी।
लग्न-संज्ञा पुं० (सं०) शुभ कार्य का समय, मुहूर्त, साइत। विवाह। वि० लगा हुआ, आसक्त।
लग्नपत्र-संज्ञा पुं० (सं०) विवाह के लग्न आदि लिखी जानेवाली पत्रिका।
लघिमा-संज्ञा स्त्री० एक सिद्धि। छोटा होना, छोटापन।
लघु-वि० (सं०) छोटा। थोड़ा। हलका।
लघुशंका-संज्ञा स्त्री० (सं०) पेशाब करना। मूत्रोत्सर्ग।
लचकना-क्रि० अ० दबाव से झुकना।
लच्छा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का गहना। महीन सूत या तार का समूह, झुप्पा, गुच्छा।
लच्छेदार-वि० जिसमें लच्छे हों।
लजना, लजाना-क्रि० अ० शर्मा जाना। क्रि० स० शर्मिंदा करना।
लजीला-वि० जल्दी शर्मा जाने-वाला। लज्जायुक्त।
लज्जत-संज्ञा स्त्री० (अ०) स्वाद।
लज्जा-संज्ञा स्त्री० (सं०) शर्म, हया।
लज्जावती-वि० स्त्री० (सं०) शर्म करनेवाली स्त्री, शर्मीली।
लज्जाशील-वि० (सं०) शर्म करने-वाला, शर्मीला।
लज्जित-वि० (सं०) शर्माया हुआ।
लट-संज्ञा स्त्री० बालों का गुच्छा, केशलता। एक प्रकार का बेंत।
लटका-संज्ञा पुं० बातचीत का बना-वटी चेष्टा, हावभाव, टोना-टटका।
लटना-क्रि० अ० लड़खड़ाना। कम-जोर होना। लुभाना, ललचाना।
लटपटा-वि० लड़खड़ा हुआ। ढीला-ढाला, अटपटा। वि० न बहुत पतला न बहुत गाढ़ा।
लट्टू-संज्ञा पुं० एक गोल खिलौना जिसे सूत से नचाते हैं।
लट्ठ-संज्ञा पुं० बड़ी और मोटी लाठी। सोंटा।
लट्ठबाज-वि० लाठी से लड़ने में कुशल, लठैत।
लट्ठमार-वि० लट्ठ मारनेवाला। कड़वी और कड़ी बात कहना।
लठैत-संज्ञा पुं० लाठी लड़नेवाला।
लड़ंत-संज्ञा स्त्री० लड़ाई। मुकाबला। सामना।
लड़-संज्ञा स्त्री० माला। लाइन। एक-एक जोड़कर बनाया हुआ।
लड़कपन-संज्ञा पुं० वह अवस्था जब मनुष्य बच्चा होता है, बचपन।
लड़कबुद्धि-संज्ञा स्त्री० बच्चों की-सी बुद्धि, बालकों के समान बुद्धि।
लड़का-संज्ञा पुं० छोटी अवस्था का, बालक, पुत्र, बेटा।

संबंधी।
बावेला-संज्ञा पुं० (अ०) शोर-गुल। रोना-धोना।
बासंती-संज्ञा स्त्री० माधवी लता, जूही।
बास-संज्ञा पुं० अवस्थान, गृह, घर।
बासना-संज्ञा स्त्री० (सं०) भावना। इच्छा। कामना।
बासर-संज्ञा पुं० दिवस, दिन।
बासव-संज्ञा पुं धनिष्ठा नक्षत्र, इन्द्र।
बासित--वि० (सं०) खुशबूदार किया गया।
बासी-संज्ञा पुं० जो रहता हो।
बासुकी-संज्ञा पुं० (सं०) आठ नागराजों में दूसरा।
बासुदेव-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण वसुदेव का पुत्र, पीपल का वृक्ष।
बास्तव-वि० (स०) सही, यथार्थ।
बास्तविक-वि० (सं०) प्राकृत, यथार्थ, सत्य, ठीक।
बास्ता-संज्ञा पुं० (सं०) सम्बन्ध। लगाव।
बास्तु-संज्ञा पुं० (सं०) मकान, इमारत।
बास्तुविद्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) इमारत आदि बनाना बताने-वाली विद्या। वास्तुशास्त्र।
बास्ते- अव्य० (अ०) लिए। हेतु।
बाहक-संज्ञा पुं० बोझ ढोने या ले जानेवाला, रथ हाँकनेवाला, सारथी।
बाहन-संज्ञा पुं० यान, सवारी।
बाह-वाही-संज्ञा स्त्री० (फा०) बड़ाई, प्रशंसा।
बाहिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) सेना।
बाहियात-वि० बेकार, बेकार, खराब।
बाह्य-क्रि० वि० (सं०) बाहर। अलग।
बाह्यांतर-वि० (सं०) भीतर-बाहर का।
बाह्येंद्रिय-संज्ञा स्त्री० (सं०) बाहर के आघातों को जाननेवाली पाँचो ज्ञानेंद्रियाँ।
बिंदु-बूंद। बिन्दी, शून्य।
विकट-वि० (सं०) भीषण, भयंकर। टेढ़ा। मुश्किल, कठिन।
विकराल-वि० (सं०) डरावना।
विकल-वि० (सं०) परेशान, बेचैन, व्याकुल, असमर्थ।
विकलांग-वि० (सं०) जिसका कोई अंग टूटा हो।
विकल्प-संज्ञा पुं० भ्रान्ति, धोखा, एक बात के खिलाफ सोच विचार।
विकसना-क्रि० (अ०) खिलना।
विकार-संज्ञा पुं० दोष, खराबी, बुराई।
विकाश-संज्ञा पुं० विस्तार, रोशनी, प्रकाश, फैलाव।
विकास-संज्ञा पुं० (सं०) फैलाव। खिलना। उन्नति करना।
विकीर्ण-वि० (सं०) फैलाया या छितराया हुआ।
विकृत-वि० (सं०) बिगड़ा हुआ, भद्दा।

विकृति-संज्ञा स्त्री० (सं०) खराबी। विगड़ा हुआ रूप। बीमारी। मूल शब्द से विगड़कर बना शब्द।

विक्रमाब्द-संज्ञा पुं० (सं०) विक्रमादित्य का चलाया संवत्, विक्रमी संवत्।

विक्रमी-संज्ञा पुं० बहादुर, पराक्रमी।

विक्रय-संज्ञा पुं० (सं०) बेचना।

विक्रांत-संज्ञा पुं० प्रतापी, वीर।

विक्षिप्त-वि० (सं०) पागल। फेंका या छितराया हुआ।

विक्षुब्ध-वि० (सं०) जिसमें क्षोभ या गुस्सा हो।

विक्षेप-संज्ञा पुं० (सं०) इधर-उधर फेंकना। बाधा। मन का भटकना।

विक्षोभ-संज्ञा पुं० (सं०) मन का क्षोभ या चंचलता।

विख्यात-वि० (सं०) मशहूर।

विगत-वि० (सं०) बीता हुआ।

विगर्हित-वि० (सं०) जिसे डाँटा गया हो। खराब, बुरा।

विगलित-वि० (सं०) डाला हुआ। शिथिल। बिगड़ा हुआ।

विगुण-वि० (सं०) बिना गुण का, निर्गुण।

विग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) व्याकरण में योगिक या समस्त पदों का अलग-अलग करना। टुकड़े करना। झगड़ा, आकृति, मूर्ति, सजावट।

विग्रही-संज्ञा पुं० लड़ाई-झगड़ा करनेवाला।

विघटन-संज्ञा पुं० (सं०) तोड़ना-फोड़ना, बरबाद करना।

विघ्न-संज्ञा पुं० बाधा, रुकावट।

विचक्षण-वि० (सं०) चमकता हुआ। विद्वान्। बुद्धिमान्।

विचरण-संज्ञा पुं० घूमना-फिरना।

विचलित-वि० (सं०) अपनी बात या स्थान से हटा हुआ। चंचल।

विचार-संज्ञा पुं० (सं०) मन में सोची हुई बात, ख्याल, भावना।

विचारक-संज्ञा पुं० न्यायाधीश. सोचने या विचार करनेवाला। फैसला करनेवाला।

विचारणीय-वि० (सं०) जिस पर कुछ सोचा जाना जरूरी हो।

विचारना-क्रि० अ० सोचना।

विचारवान्-संज्ञा पुं० वह जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो।

विचारशक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) सोचने-विचारने की शक्ति।

विचारशील-संज्ञा पुं० (सं०) जो खूब सोचने-विचारनेवाला हो।

विचारालय-संज्ञा पुं० न्यायालय, वह स्थान जहाँ विचार या फैसला किया जाय, विचारस्थल।

विचित्र-वि० (सं०) तमाम रंगों का अनोखा, अद्भुत।

विचित्रता-संज्ञा स्त्री० (सं०) अनोखा होना। रंग-बिरंगा होना।

विच्छिन्न-वि० (सं०) काट-कूटकर अलग किया गया, विभक्त।

विच्छेद-संज्ञा पुं० (सं०) काट-कूटकर अलग करना। नाश। विरह।

विजन-वि० (सं०) एकांत, जहाँ कोई व्यक्ति न हो।

विजय-संज्ञा स्त्री० जय, जीत।
विजय-पताका-संज्ञा स्त्री० (सं०) युद्ध में जीत के समय फहराया जानेवाला झंडा।
विजय-यात्रा-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी को जीतने के कारण की जानेवाली यात्रा।
विजयादशमी-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक आश्विन की शुक्ला दशमी को मनाया जानेवाला त्योहार।
विजयी-संज्ञा पुं० जो जीता हो, विजेता।
विजयोत्सव-संज्ञा पुं० (सं०) युद्ध में जीतने के कारण मनाया जानेवाला उत्सव।
विजातीय-वि० (सं०) भिन्न जाति का।
विजित-संज्ञा पुं० (सं०) जिसे जीता गया हो।
विजेता-संज्ञा पुं० विजय करनेवाला, जीतनेवाला, विजयी।
विज्ञ-वि० बुद्धिमान्। विद्वान्।
विज्ञप्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह पत्र जिससे कोई बात जनायी जाय, इश्तिहार।
विज्ञान-संज्ञा पुं० ज्ञान, जानकारी। किसी विषय की जानी हुई बातों का क्रमानुसार अध्ययन।
विज्ञानवाद-संज्ञा पुं० (सं०) वह सिद्धान्त जिसमें ब्रह्म और जीव की एकता बतायी गयी हो।
विज्ञापन-संज्ञा पुं० (सं०) वह पत्र जिससे किसी बात की जानकारी सब लोगों को करायी जाय।
विटप-संज्ञा पुं० झाड़ी, कोंपल, नई शाखा, पादप, पेड़।
विडंबना-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी की नकल करके उसकी हँसी उड़ाना, चिढ़ाना।
वितंडा-संज्ञा स्त्री० (सं०) दूसरे के पक्ष को दबाकर अपना पक्ष प्रबल करना। बेकारलड़ाई-झगड़ा।
वितरण-संज्ञा पुं० (सं०) बाँटना। देना।
वितरना-क्रि० स० (ग्रा०) बाँटना।
वितरित-वि० (सं०) बाँटा हुआ।
वितर्क-संज्ञा पु० दलील, एक तर्क के बाद दूसरा तर्क। शक।
वितल-संज्ञा पुं० (सं०) तीसरा पाताल।
वितस्ता-संज्ञा स्त्री० (सं०) झेलम नदी का प्राचीन नाम।
वितान-संज्ञा पुं० फैलाव, विस्तार, बड़ा चँदोवा।
वितुंड-संज्ञा पुं० गज, हाथी।
वित्त-संज्ञा पुं० (सं०) धन, सम्पत्ति।
वित्तपति-संज्ञा पुं० (सं०) कुबेर।
विथकित-वि० थका हुआ, शिथिल।
विथराना-क्रि० स० इधर-उधर छितराना।
विदग्ध-संज्ञा पुं० (सं०) चालाक। विद्वान्।
विदग्धता-संज्ञास्त्री० चतुराई।
बिदा-संज्ञा स्त्री० छोड़कर जाना। जाने की अनुमति लेना।
बिदाई-संज्ञा स्त्री० जाने का समय.

प्रस्थान । जाने की अनुमति ।
विदारक-वि० (सं०) फाड़ डालने-वाला ।
विदारण-संज्ञा पुं० फाड़ना, फाड़ डालना, समर, युद्ध, लड़ाई ।
विदारना-क्रि० स० फाड़ डालना ।
विदारी-वि० फाड़नेवाला ।
विदाही-संज्ञा पुं० जलन पैदा करने-वाला पदार्थ ।
विदित-वि० (सं०) जाना हुआ ।
विदीर्ण-वि० (सं०) जो फाड़ डाला गया हो । जो मार डाला गया हो ।
विदुषी-संज्ञा स्त्री० विद्वान् स्त्री ।
विदूषक-संज्ञा पुं० कामुक, लोगों की नकल करके हँसनेवाला व्यक्ति, मसखरा ।
विदेश-संज्ञा पुं० (सं०) दूसरा देश, परदेश ।
विद्ध-वि० (सं०) जिसमें छेद किया गया हो, वक्र, टेढ़ा, मिला हुआ ।
विद्यमान-वि० (सं०) सामने मौजूद ।
विद्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) शिक्षा से पाया हुआ ज्ञान, इल्म ।
विद्यागुरु-संज्ञा पुं० (सं०) विद्या देनेवाला, शिक्षक ।
विद्यादान-संज्ञा पुं० (सं०) विद्या पढ़ाना ।
विद्याधर-संज्ञा पुं० (सं०) एक देव-योनि । विद्वान, जानकार ।
विद्यारंभ-संज्ञा पुं० (सं०) विद्या शुरू करने के समय का संस्कार ।
विद्यार्थी-संज्ञा पुं० विद्या पढ़ने-वाला, छात्र, शिक्षार्थी ।
विद्यालय-संज्ञा पुं० जहाँ विद्या पढ़ायी जाती है, पाठशाला ।
विद्युत्-संज्ञा स्त्री० वज्र, बिजली ।
विद्रुम-संज्ञा पुं० प्रवाल, मूँगा ।
विद्रोह-संज्ञा पुं० द्वेष, राज्य के विरुद्ध बलवा करना, बगावत ।
विद्रोही-संज्ञा पुं० राज्य को हानि पहुँचानेवाला । बागी ।
विद्वत्ता-संज्ञा स्त्री० (सं०) खूब विद्वान् होना, पाण्डित्य, पंडिताई
विद्वान्-संज्ञा पुं० जो खूब पढ़ा-लिखा हो, पंडित ।
विद्वेष-संज्ञा पुं० (सं०) वैर, दुश्मनी ।
विधना-संज्ञा पुं० ब्रह्मा, विधि ।
विधर्मी-संज्ञा पुं० दूसरे धर्म को माननेवाला । अपने धर्म के सिद्धान्तों के खिलाफ काम करने-वाला ।
विधवा-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका पति मर गया हो ।
विधवाश्रम-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ विधवाओं का पालन-पोषण आदि का प्रबन्ध रहता है ।
विधाता-संज्ञा पुं० रचनेवाला । प्रबंध करनेवाला । ब्रह्मा, ईश्वर ।
विधान-संज्ञा पुं० (सं०) किसी कार्य का आयोजन । इन्तजाम । विधि, ढंग । बनाना, रचना । बताना, आज्ञा करना । कानून ।
विधि-संज्ञा स्त्री० कार्यक्रम, काम करने का ढंग, रीति । शास्त्रों में बताया हुआ किसी काम का

विधान। संज्ञा पुं० (सं०) ब्रह्मा।
विधिवत्-क्रि० वि० विधि से, सही ढंग से, जैसा चाहिए वैसा।
विधुर-संज्ञा पुं० व्यग्र, दुःखी, वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गयी हो।
विधुवदनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) सुन्दर स्त्री।
विधेय-वि० (सं०) जिसे करने का विधान हो, कर्तव्य।
विधेयक-संज्ञा पुं० कानून बनाने के लिए रखा गया प्रस्ताव, बिल।
विध्वंस-संज्ञा पुं० नाश, अनादर, बरबादी।
विध्वंसी-संज्ञा पुं० जो नाश या बरबाद करे।
विध्वस्त-वि० (सं०) जिसे नष्ट या बरबाद कर दिया गया हो।
विनत-वि० (सं०) विनीत, नम्र, झुका हुआ।
विनति, बिनती-संज्ञा स्त्री० (सं०) झुकाव। प्रार्थना। नम्रता।
विनम्र-वि० (सं०) अति विनीत, नम्र।
विनय-संज्ञा स्त्री० नम्रता, प्रार्थना।
विनयशील-वि० (सं०) नम्र, सुशील।
विनयी-वि० विनीत, नम्र।
विनश्वर-वि० (सं०) नष्ट हो जाने-वाला, अनित्य।
विनष्ट-वि० जो नष्ट या बरबाद हो गया हो। मरा हुआ।
विनायक-संज्ञा पुं० (सं०) गणेश।
विनाश-संज्ञा पुं० ध्वंस, नाश।
विनिमय-संज्ञा पुं० (सं०) एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेना, लेन-देन।
विनीत-वि० (सं०) विनयशील, सुशील, शिष्ट, नम्र।
विनोद-संज्ञा पुं० कौतूहल, खेलकूद, तमाशा, क्रीड़ा, प्रसन्नता, मजाक।
विनोदी-वि० हँसी-खेल या मजाक करनेवाला, क्रीड़ा करनेवाला, आनंदी।
विन्यास-संज्ञा पुं० (सं०) ठीक ढंग से रखना, सजाना। जड़ना।
विपंची-संज्ञा स्त्री० (सं०) वीणा।
विपक्ष-संज्ञा पुं० विरुद्ध पक्ष, दूसरा पक्ष, विरोधी।
विपक्षी-संज्ञा पुं० खिलाफ पक्ष का शत्रु, प्रतिवादी, विना पर का।
विपत्ति-संज्ञा स्त्री० आपत्ति, क्लेश, मुसीबत, बुरे दिन।
विपद्-संज्ञा स्त्री० आपत्ति, संकट।
विपदा-संज्ञा स्त्री० विपत्ति, संकट मुसीबत।
विपरीत-वि० (सं०) उलटा, विरुद्ध।
विपर्यय-संज्ञा पुं० (सं०) उलट-पलट। गलती। गड़बड़ी।
विपल-संज्ञा पुं० पल का साठवाँ भाग।
विपाक-संज्ञा पुं० (सं०) पकना। परिणाम, नतीजा। किये गये काम का फल। बुरी दशा, दुर्गति।
विपिन-संज्ञा पुं० (सं०) जंगल। उपवन।
विपुल-वि० (सं०) बहुत अधिक, अगाध।
विपुलता-संज्ञा स्त्री० (सं०) अधि-कता। बहुतायत।

विप्र-संज्ञा पुं० पुरोहित, ब्राह्मण ।
विप्रलंभ-संज्ञा पुं० (सं०) विरह, वियोग ।
विप्लव-संज्ञा पुं० (सं०) उपद्रव, विपत्ति, नदी की बाढ़, आफत ।
विफल-वि० बिना फल का, बेकार ।
विभक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) विभक्त होना, बाँट।
विभव-संज्ञा पुं० (सं०) धन-सम्पत्ति ऐश्वर्य ।
विभवशाली-वि० (सं०) धन-सम्पत्ति या वैभववाला, ऐश्वर्य-युक्त ।
विभाग-संज्ञा पुं० (सं०) बाँटना । हिस्सा, बँटवारा, बखरा, अध्याय । किसी खास काम के लिए हिस्सा, मुहकमा ।
विभाजित-वि० (सं०) जिसे बाँटा गया हो, विभक्त ।
विभाज्य-वि० (सं०) जो बाँटा जाने योग्य हो ।
विभावरी-संज्ञा स्त्री० रात्रि, रात ।
विभिन्न-वि० (सं०) अलग-अलग, जुदा, बहुत तरह का ।
विभु-वि० (सं०) जो सब जगह हो। संज्ञा पुं० ईश्वर, शिव, विष्णु ।
विभूति-संज्ञा स्त्री० वृद्धि, धन-सम्पत्ति, वैभव, ऐश्वर्य । लक्ष्मी ।
विभूषित-वि० (सं०) गहनों आदि से खूब सजाया हुआ ।
विभेद-संज्ञा पुं० अन्तर, फर्क, भेद ।
विभ्रम-संज्ञा पुं० भ्रम, धोखा । संशय, संदेह । घबराहट ।

विमंडित-वि० (सं०) सजाया हुआ। सुशोभित, सजा हुआ ।
विमन-वि० उदास । खिन्न ।
विमर्दन-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छी तरह कुचल डालना, बरबाद करना। मार डालना ।
विमर्श-संज्ञा पुं० (सं०) सोच-विचार । सलाह । परीक्षा ।
विमल-वि० स्वच्छ । निर्दोष ।
विमाता-संज्ञा स्त्री० सौतेली माँ ।
विमान-संज्ञा पुं० (सं०) वायु में उड़नेवाला यान, हवाई जहाज ।
विमुक्त-वि० (सं०) बिलकुल छुटा हुआ, स्वतंत्र । छोड़ा हुआ ।
विमुक्ति-संज्ञा स्त्री० स्वतंत्र, छुटकारा । दुनिया से छुटकारा, छोड़ा हुआ, अलग किया हुआ ।
विमुख-वि० (सं०) जिसने अपना मुँह फेर लिया हो, खिलाफ, विरुद्ध, नाराज ।
विमुद-वि० (सं०) आनन्दरहित, उदास ।
विमूढ़-वि० (सं०) धोखे में पड़ा हुआ, बेसुध, अचेत ।
विमोह-संज्ञा पुं० अज्ञान । मोह, लोभ । धोखा, भ्रम । आसक्ति ।
वियुक्त-वि० (सं०) बिछुड़ा हुआ, अलग । न होना, रहित ।
वियोगांत-वि० (सं०) जो कहानी दुःख के साथ खत्म हो ।
वियोगिनी-वि० स्त्री० (सं०) जो स्त्री अपने पति या प्रेमी से बिछुड़

गयो हो ।

वियोगी-वि० वह पुरुष जो अपनी पत्नी या प्रिया से बिछुड़ा हुआ हो ।

वियोजक-संज्ञा पुं० (सं०) दो मिली चीजों को अलग-अलग करना। गणित में एक संख्या से घटायी जानेवाली संख्या ।

विरंग-वि० (सं०) खराब रंग का, भद्दा । कई रंगों का ।

विरंचि-संज्ञा पुं० (सं०) ब्रह्मा ।

विरक्त-वि० (सं०) जिसका चित्त हटा हो, विमुख, अप्रसन्न ।

विरक्ति-संज्ञा स्त्री० विराग। किसी वस्तु के प्रति अनुराग न होना । उदासीनता ।

विरचित-वि० (सं०) बनाया हुआ।

विरत-वि० (सं०) जिसका किसी वस्तु से अनुराग न हो, विरागी । विमुख ।

विरति-संज्ञा स्त्री० (सं०) अनुराग या उदासीनता, वैराग्य, विराग ।

विरथ-संज्ञा वि० (सं०) जिसके पास रथ न हो, पैदल चलनेवाला ।

विरद-संज्ञा पुं० प्रसिद्धि, ख्याति ।

विरदावली-संज्ञा पुं० किसी की यश या प्रसिद्धि की कथा ।

विरल-वि० (सं०) दूर-दूर पर छितरा हुआ, जो घना न हो । पतला ।

विरस-वि० (सं०) बिना रस का, फीका, नीरस ।

विरह-संज्ञा पुं० (सं०) किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति का अपने पास से दूर हो जाना। वियोग ।

विरही-वि० जो व्यक्ति अपनी पत्नी या प्रिया से बिछुड़ गया हो।

विराग-संज्ञा पुं० (सं०) चाह या अनुराग का न होना । वैराग्य ।

विराजना-क्रि० अ० बैठना, मौजूद होना, उपस्थित रहना, शोभित होना ।

विराजमान-वि० (सं०) बैठा हुआ। मौजूद ।

विराट्-संज्ञा पुं० (सं०) ब्रह्म का बहुत बड़ा स्वरूप जिसमें सम्पूर्ण विश्व है । वि० बहुत बड़ा ।

विराम-संज्ञा पुं० ठहराव, रुकना । वाक्य के समाप्त होने पर लगाया जानेवाला चिह्न ।

विरुद्ध-वि० (सं०) दूसरे पक्ष में, खिलाफ। अनुचित, जो ठीक न हो।

विरूप-वि० (सं०) खराब रूप का, भद्दा, बदसूरत । उलटा ।

विरूपाक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) शिव ।

विरेचक-वि० (सं०) शौच लानेवाली दवा ।

विरोध-संज्ञा पुं० शत्रुता, वैर, दुश्मनी । उलटी स्थिति, व्याघात, खिलाफत ।

विरोधी-वि० विरोध करनेवाला, दुश्मन, बाधा डालनेवाला ।

विलंब-वि० दीर्घसूत्रता, देर ।

विलंबना-क्रि० अ० देर करना ।

विलंबित-वि० (सं०) लटकता हुआ । जिसमें देर हो गई हो ।

विलक्षण-वि० (सं०) जैसी बात साधारण रूप से न हो, अनोखी ।

बिलखना-क्रि० अ० दुःखी होना।
बिलपना-क्रि० अ० रोना।
बिलाप-संज्ञा पुं० क्रन्दन। रो-रो कर अपना दुःख बताना। रोना।
बिलायत-संज्ञा पुं० (अ०) परदेश। इंगलैंड पश्चिमी देश।
बिलायती-वि० (अ०) इंगलैंड का। विदेशी।
बिलास-संज्ञा पुं० हर्ष, प्रसन्न या खुश करने की क्रिया। मनबहलाव, मनोरंजन।
बिलासिनी-संज्ञा स्त्री० सुन्दर युवा स्त्री। वेश्या।
बिलासी-संज्ञा पुं० सुख-भोग में ही लगा रहनेवाला व्यक्ति। कामी पुरुष।
बिलीन-वि० (सं०) एक चीज का दूसरी चीज में मिलकर बिलकुल खो-सा जाना।
बिलोकना-क्रि० स० देखना।
बिलोचन-संज्ञा पुं० नयन, आँख।
बिलोम-वि० (सं०) उलटा।
बिलोल-वि० (सं०) चंचल, चपल।
बिल्व-संज्ञा पुं० (सं०) बेल का पेड़।
बिल्वपत्र-संज्ञा पुं० (सं०) शिव पर चढ़ाने का बेल का पत्ता।
बिवरण-संज्ञा पुं० व्याख्या, अच्छी तरह वर्णन किया गया हाल, भाष्य, टीका, वृत्तान्त।
बिवर्ण-वि० (सं०) बुरी जाति का, नीच। जिसके चेहरे का रंग या तेज चला गया हो, कांतिहीन।
विवर्तन-संज्ञा पुं० (सं०) घूमना, फिरना।
विवश-वि० (सं०) जिसका किसी काम के करने में वश न हो, पराधीन, परवश।
विवाद-संज्ञा पुं० वाग्युद्ध, बातों की लड़ाई, झगड़ा, कलह।
विवादास्पद-वि० (सं०) ऐसी बात जिस पर विवाद हो, या विवाद होने के योग्य हो।
विवाह-संज्ञा पुं० परिणय, ब्याह।
विवाहित-वि० पुं० (सं०) वह पुरुष जिसका ब्याह हो चुका हो।
विविध-वि० (सं०) तरह-तरह का, अनेक प्रकार का।
विवृत-वि० (सं०) खुला हुआ।
विवेक-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छी-बुरी वस्तु पहिचानने की शक्ति, बुद्धि।
विवेकी-संज्ञा पुं० जिस व्यक्ति को अच्छे-बुरे का ज्ञान हो, ज्ञानी, न्यायाधीश।
विवेचन-संज्ञा पुं० परीक्षा, जाँचना, निरीक्षण करना, व्याख्या।
विशद-वि० (सं०) साफ, स्वच्छ। सफेद। साफ तौर से कहा गया, स्पष्ट।
विशारद-संज्ञा पुं० (सं०) किसी विषय को जो अच्छी तरह जानता हो, विद्वान्। कुशल।
विशाल-वि० (सं०) बहुत बड़ा, लम्बा-चौड़ा।

युक्त। खास, विशेषता-सम्पन्न।
विशिष्टाद्वैत-संज्ञा पुं० (सं०) एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार जीवात्मा तथा जगत ब्रह्म से भिन्न होते हुए उससे अभिन्न हैं।
विशुद्ध-वि० बिना मिलावट का, बिलकुल साफ।
विशुद्धि-संज्ञा स्त्री० (सं०) शुद्धता। पवित्रता।
विशेष-संज्ञा पुं० (सं०) साधारण से कुछ ज्यादा, अधिकता। खास।
विशेषज्ञ-संज्ञा पुं० (सं०) किसी विषय का जिसे विशेष रूप से ज्ञान हो।
विशेषण-संज्ञा पुं० (सं०) जो किसी की विशेषता बतलावे। व्याकरण में किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता को बतानेवाला शब्द।
विशेषता-संज्ञा स्त्री० (सं०) कोई खास बात, खूबी।
विश्रांति-संज्ञा स्त्री० (सं०) आराम।
विश्राम-संज्ञा पुं० सुख, आराम।
विश्रुत-वि० (सं०) मशहूर।
विश्लेषण-संज्ञा पुं० (सं०) किसी पदार्थ के मिले हुए द्रव्यों को पृथक् करना।
विश्वंभर-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर।
विश्वंभरा-संज्ञा स्त्री० (सं०) पृथ्वी।
विश्व-संज्ञा पुं० (सं०) पूरा ब्रह्मांड। संसार।
विश्वकर्मा-संज्ञा पुं० ईश्वर। ब्रह्मा। लोहार। बढ़ई।
विश्वकोष-संज्ञा पुं० (सं०) जिस ग्रन्थ में सभी प्रकार के विषयों का वर्णन हो।
विश्वविद्यालय-संज्ञा पुं० वह संस्था जहाँ सभी विषयों की शिक्षा दी जाय, यूनिवर्सिटी।
विश्वव्यापी-वि० जो सारे संसार में फैला हो।
विश्वसनीय-वि० (सं०) जिस पर विश्वास किया जा सके।
विश्वस्त-वि० (सं०) विश्वसनीय।
विश्वास-संज्ञा पुं० भरोसा, बात मान लेना, एतबार।
विश्वासघात-संज्ञा पुं० (सं०) जिस व्यक्ति ने अपने पर विश्वास किया हो, उसके साथ धोखा करना। धोखा।
विश्वासी-संज्ञा पुं० विश्वास करनेवाला। जिस पर विश्वास किया जाय।
विष-संज्ञा पुं० (सं०) जहर, गरल।
विषकन्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसमें कुछ विष प्रविष्ट कर दिये गये हों और जिसके साथ संभोग करनेवाला पुरुष मर जाय।
विषण्ण-वि० (सं०) दुःखी।
विषधर-संज्ञा पुं० सर्प, साँप।
विषम-वि० (सं०) टेढ़ा। ऊँचा-नीचा। भीषण।
विषमवृत्त-संज्ञा पुं० (सं०) वह छंद जिसके चरण समान या बराबर न हों।
विषय-संज्ञा पुं० (सं०) जिस पर

कुछ सोचा या लिखा जाय ।
विषयक-अव्य० (सं०) विषय का।
विषयी-संज्ञा पुं० भोग-विलास में ही लगा रहनेवाला व्यक्ति ।
विषविद्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) मंत्र से विष उतारना !
विषवैद्य-संज्ञा पुं० (सं०) मंत्र आदि से विष उतारनेवाला व्यक्ति ।
विषाक्त-वि० (सं०) जिसमें विष मिला हो, विषयुक्त ।
विषाण-संज्ञा पुं० (सं०) पशु का सींग । सुअर का दांत ।
विषाद-संज्ञा पुं० (सं०) दुःख, खेद ।
विषुवतरेखा-संज्ञा स्त्री० (सं०) पृथ्वी के ठीक बीच में पूर्व से पश्चिम की ओर मानी हुई रेखा।
विष्टंभ-संज्ञा पुं० (सं०) बाधा, रुकावट, चढ़ाई।
विष्ठा-संज्ञा स्त्री० (सं०) मल. पाखाना ।
विष्णुपदी-संज्ञा स्त्री० (सं०) गंगा नदी ।
विष्णुलोक-संज्ञा पुं० (सं०) स्वर्ग, वैकुण्ठ ।
विसर्ग-संज्ञा पुं० त्याग, दान, मोक्ष । व्याकरण में वर्ण के आगे लगनेवाले दो बिन्दु (:)
विसर्जन-संज्ञा पुं० परित्याग, छोड़ देना । चला जाना । समाप्ति।
विसूचिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक रोग, हैजा ।
विस्तार-संज्ञा पुं० (सं०) फैलाव ।
विस्तीर्ण-वि० (सं०) खूब फैला हुआ, विस्तृत ।
विस्तृत-वि० (सं०) खूब लंबा-चौड़ा, विशाल ।
विस्फोट-संज्ञा पुं० (सं०) गरमी से किसी पदार्थ का फटना । विषैला फोड़ा ।
विस्फोटक-संज्ञा पुं० चेचक। जो पदार्थ गरमी से भभक उठे । शीतला रोग ।
विस्मय-संज्ञा पुं०अभिमान, ताज्जुब, आश्चर्य ।
विस्मरण-संज्ञा पुं० (सं०) भूल जाना ।
विस्मित-वि० (सं०) जो आश्चर्य में पड़ा हो, आश्चर्ययुक्त, चकित ।
विस्मृति-संज्ञा स्त्री० (सं०) भुलावा, विस्मरण ।
विहंग-संज्ञा पुं० (सं०) चिड़िया, तीर, मेघ, बादल, चन्द्रमा, सूर्य ।
विहग-संज्ञा पुं० चिड़िया, पक्षी ।
विहार-संज्ञा पुं० संभोग, घूमना । बौद्ध भिक्षुओं के रहने का स्थान ।
विहारी-संज्ञा पुं० (सं०) विहार का रहनेवाला । श्री कृष्ण ।
विहीन-वि० बिना, रहित ।
विह्वल-वि० (सं०)घबराया हुआ।
वीक्षण-संज्ञा पुं० निरीक्षण, देखना ।
वीचि-संज्ञा स्त्री० लहर, दीप्ति !
वीचिमाली-संज्ञा पुं० (सं०) समुद्र।
वीची-संज्ञा स्त्री० तरंग, लहर ।

जिससे कोई कार्य होता हो। तत्त्व। वह जिससे वृक्ष आदि वनस्पति पैदा होती है, बीआ।
बीजगणित-संज्ञा पुं० (सं०) वह गणित जिसमें चिह्नों या वर्णों की सहायता ली जाती है।
बीणा-संज्ञा स्त्री० सितार जैसा प्रसिद्ध बाजा, बीन।
बीतराग-संज्ञा पुं० (सं०) जिसने राग या मोह आदि को छोड़ दिया हो, विरक्त।
बीरकेशरी-संज्ञा पुं० वीरों में शेर के समान श्रेष्ठ।
बीरगति-संज्ञा स्त्री० (सं०) वीरों के रणक्षेत्र में मरने से प्राप्त होनेवाली अच्छी गति।
बीरता-संज्ञा स्त्री० शूरता, बहादुरी।
बीरमाता-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जो वीर पुत्र को जन्म दे।
बीरशय्या-संज्ञा स्त्री० रणभूमि, युद्ध का मैदान।
बीरान-वि० (फा०) उजड़ा हुआ।
बीरासन-संज्ञा पुं० (सं०) बैठने की एक मुद्रा।
बीर्य्य-संज्ञा पुं० शुक्र, शरीर की बल-कांति लानेवाली एक धातु, शक्ति।
वृंद-संज्ञा पुं० (सं०) समूह, झुण्ड।
वृंदा-संज्ञा स्त्री० (सं०) तुलसी। राधा।
वृंदावन-संज्ञा पुं० (सं०) मथुरा जिले का एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ कृष्ण रहे थे।
वृक-संज्ञा पुं० भेड़िया। हुँडार। गीदड़। कौवा।
वृकोदर-संज्ञा पुं० (सं०) भीमसेन।
वृक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) पेड़।
वृज-संज्ञा पुं० देखिए 'व्रज'।
वृत्त-संज्ञा पुं० (सं०) चरित्र। हाल, समाचार। वर्णिक छंद। घेरा, गोला।
वृत्तखंड-संज्ञा पुं० (सं०) गोलाई का कोई टुकड़ा।
वृत्तांत-संज्ञा पुं० (सं०) हाल। घटना।
वृत्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह कार्य जिसके धन से जीविका चले, रोजी। किसी छात्र या दीन व्यक्ति को दी गयी धन की मदद। मन की अवस्था। स्वभाव।
वृत्र-संज्ञा पुं० (सं०) अन्धकार। दुश्मन। एक असुर।
वृत्रासुर-संज्ञा पुं० एक असुर जिसे मारने को ही दधीचि की हड्डियों का वज्र बनाया गया था।
वृथा-वि० (सं०) बेकार, फजूल। क्रि० वि० बेमतलब के।
वृद्ध-संज्ञा पुं० जीर्ण, जर्जर, बुड्ढा बूढ़ा व्यक्ति।
वृद्धा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बूढ़ी स्त्री।
वृद्धि-संज्ञा स्त्री० अधिकता, बढ़ती, ज्यादती।
वृश्चिक-संज्ञा पुं० (सं०) बिच्छू। एक राशि।
वृष-संज्ञा पुं० (सं०) साँड, बैल।

एक राशि।
वृषण-संज्ञा पुं० अण्डकोष, विष्णु । सांड । इन्द्र ।
वृषल-संज्ञा पुं० (सं०) पापी । शूद्र, नीच ।
वृषली-संज्ञा स्त्री० (सं०) कुमारी अवस्था में ही रजस्वला हो जानेवाली स्त्री । कुलटा ।
वृष्टि-संज्ञा स्त्री० वर्षा । बरसात ।
वृष्णि-संज्ञा पुं० यादव, श्री कृष्ण ।
वृहत्-वि० (सं०) बहुत बड़ा, भारी ।
वृहस्पति-संज्ञा पुं० देवताओं के गुरु ।
वेग-संज्ञा पुं० प्रवाह, धारा, वृद्धि ।
वेगवान्-वि० (सं०) जो तेज चलता हो । वेग से चलनेवाला ।
वेणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) स्त्रियों के बालों की गूथी हुई चोटी ।
वेतन-संज्ञा पुं० वृत्ति, किसी को हर माह काम करने के बदले दिया जानेवाला धन ।
वेताल-संज्ञा पुं० संतरी, दरवाजे का पहरेदार, द्वारपाल ।
वेत्ता-वि० (सं०) जाननेवाला, ज्ञाता ।
वेत्र-संज्ञा पुं० (सं०) बेंत ।
वेद-संज्ञा पुं० विष्णु, किसी बात का मालूम होना, ज्ञान । आर्यों के प्रधान और मान्य ग्रन्थ, जो चार हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ।
वेदज्ञ-संज्ञा पुं० (सं०) जो वेदों को जानता हो ।
वेदना-संज्ञा स्त्री० व्यथा, पीड़ा, कष्ट ।
वेदनिंदक-संज्ञा पुं० (सं०) वेदों की बुराई करनेवाला, नास्तिक ।
वेदवाक्य-संज्ञा पुं० (सं०) ऐसी बात जिसे काटा न जा सके ।
वेदांग-संज्ञा पुं० (सं०) वेदों के अंग जो छः हैं, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद ।
वेदांत-संज्ञा पुं० (सं०) वेद के अन्तिम अंश उपनिषद् तथा आरण्यक । छः दर्शनों में एक दर्शन, अद्वैतवाद ।
वेदांती-संज्ञा पुं० वेदांत को जानने या माननेवाला, ब्रह्मवादी ।
वेदी-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी शुभ काम को करने के लिए तैयार की हुई भूमि ।
वेध-संज्ञा पुं० (सं०) छेदना । यंत्रों से नक्षत्र आदि को देखना ।
वेधशाला-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह स्थान जहाँ ग्रह, नक्षत्र आदि को देखने के लिए यंत्र रखे हों ।
वेला-संज्ञा स्त्री० क्षण, काल, समय, वाणी, भोजन का समय ।
वेश-संज्ञा पुं० वस्त्र, पहनने के कपड़े, पोशाक ।
वेशधारी-संज्ञा पुं० कपड़े पहिनने-वाला ।
वेश्म-संज्ञा पुं० (सं०) घर ।
वेश्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) गा-नाच

कर अपनी जीविका कमानेवाली स्त्री, गणिका, रंडी।

वैकल्पिक-वि० (सं०) एक पक्ष का। जो अनिवार्य न हो।

वैकुंठ-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण, स्वर्ग।

वैक्रमीय-वि० (सं०) विक्रम का।

वजयंती-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक पाँच रंग की माला। झंडा।

वैज्ञानिक-संज्ञा पुं० (सं०) विज्ञान विषय का ज्ञाता। वि० विज्ञान का।

वैतनिक-संज्ञा पुं० (सं०) जो वेतन लेकर कोई काम करे।

वैतरणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) पुराणानुसार यम के द्वार पर एक नदी।

वैतालिक-संज्ञा पुं० (सं०) राजाओं की स्तुति करके जगानेवाला व्यक्ति।

वैदर्भी-संज्ञा स्त्री० (सं०) दमयंती।

वैदिक-संज्ञा पुं० (सं०) वेद के विधान को माननेवाला।

वदूर्य-संज्ञा पुं० लहसुनिया रत्न।

वैदेशिक-वि० (सं०) विदेश का।

वैदेही-संज्ञा स्त्री० (सं०) सीता जी।

वैद्य-संज्ञा पुं० (सं०) आयुर्वेद के अनुसार रोगियों की दवा करनेवाला।

वैद्यक-संज्ञा पुं० आयुर्वेद, वह शास्त्र जिसमें रोग और उसकी चिकित्सा की बात लिखी हो।

वैधव्य-संज्ञा पुं० रँड़ापा। विधवा की अवस्था।

वैनतेय-संज्ञा पुं० (सं०) विनता की संतान। गरुड़, अरुण।

वैभव-संज्ञा पुं० (सं०) धन-दौलत। बड़प्पन।

वैभवशाली-संज्ञा पुं० (सं०) जो बहुत धन-दौलत या बड़प्पन-वाला हो; वि० जिसके पास बहुत धन हो।

वैमनस्य-संज्ञा पुं० द्वेष, शत्रुता।

वैयाकरण-संज्ञा पुं० (सं०) व्याकरण शास्त्र का ज्ञानी।

वैर-संज्ञा पुं० विरोध, दुश्मनी।

वैरशुद्धि-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुश्मनी का बदला चुकाना।

वैरागी-संज्ञा पुं० विरक्त, जिसके मन में दुनिया की वस्तुओं की चाह न रहे, उदासीन।

वैराग्य-संज्ञा पुं० (सं०) मन में दुनिया की वस्तुओं की चाह न रहना, विरक्ति।

वैवाहिक-वि० विवाह संबंधी।

वैश्य-संज्ञा पुं० बनिया, आर्यों के चार वर्णों में तीसरा, जिसका मुख्य काम व्यापार है।

वैषम्य-संज्ञा पुं० विषमता, विषम या टेढ़ा, होने का भाव। वैर, विरोध।

वैष्णव-संज्ञा पुं० (सं०) विष्णु की पूजा करनेवाला। एक सम्प्रदाय।

व्यंग-संज्ञा पुं० मेढक, टेढ़े ढंग मे चुभती हुई बात कहना, ताना।

व्यंजन-संज्ञा पुं० (सं०) प्रकट या स्पष्ट करना। पका हुआ भोजन। वे वर्ण जो बिना स्वर की सहायता

के न बोले जा सकें, 'क' से 'ह' तक के वर्ण व्यंजन हैं।
व्यंजना-संज्ञा स्त्री० (सं०) प्रकट या स्पष्ट करना।
व्यक्त-वि० (सं०) प्रकट, स्पष्ट, साफ, अनुमान किया हुआ।
व्यक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) व्यक्त या प्रकट होना। मनुष्य या अन्य जीव। वस्तु, पदार्थ।
व्यग्र-वि० (सं०) घबराया या डरा हुआ।
व्यतिक्रम-संज्ञा पुं० (सं०) उलट-फेर, गड़बड़। विघ्न, बाधा।
व्यतीत-वि० (सं०) जो बीत गया हो, बीता हुआ, गत, मृत।
व्यथा-संज्ञा स्त्री० पीड़ा, भय, क्लेश। दुःख।
व्यथित-वि० (सं०) जिसे तकलीफ या दुःख हो।
व्यभिचार-संज्ञा पुं० (सं०) स्त्री-पुरुष का अनुचित संबंध। बदचलनी।
व्यभिचारी-संज्ञा पुं० जो पर स्त्री से अनुचित संबंध रक्खे। बदचलन।
व्यय-संज्ञा पुं० (सं०) खर्च।
व्यर्थ-वि० (सं०) निरर्थक, क्रि० वि० बेकार ही। यों ही।
व्यवधान-संज्ञा पुं० (सं०) रुकावट। बीच की आड़, परदा।
व्यवसाय-संज्ञा पुं० (सं०) रोजगार।
व्यवसायी-संज्ञा पुं० व्यवसाय करनेवाला।
व्यवस्था-संज्ञा स्त्री० (सं०) इन्तजाम, प्रबन्ध। राज्य के नियम।
व्यवस्थापक-संज्ञा पुं० (सं०) प्रबंध या इन्तजाम करनेवाला।
व्यवस्थित-वि० (सं०) जिस काम में ठीक-ठीक व्यवस्था या प्रबंध हो, नियमित, संगठित।
व्यवहार-संज्ञा पुं० कार्य, झगड़ा। एक दूसरे के साथ बर्ताव। लेन-देन का काम।
व्यवहृत-वि० (सं०) जो व्यवहार या काम में लाया गया हो।
व्यष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक और अलग अस्तित्व, व्यक्तित्व।
व्यसन-संज्ञा पुं० (सं०) किसी खास बात का शौक या आदत।
व्यसनी-संज्ञा पुं० जो किसी प्रकार का शौक रखता है।
व्यस्त-वि० (सं०) घबराया हुआ। काम में लगा हुआ।
व्याकरण-संज्ञा पुं० (सं०) वह शास्त्र जिसमें शुद्ध भाषा के नियम रहते हैं।
व्याकुल-संज्ञा पुं० व्यग्र, घबराया हुआ, परेशान।
व्याख्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) अच्छी तरह समझाकर कहना। वर्णन।
व्याख्यान-संज्ञा पुं० (सं०) भाषण, लेक्चर, वक्तृता।
व्याघात-संज्ञा पुं० विघ्न, बाधा। बिलकुल विरोध होना।
व्याघ्र-संज्ञा पुं एक हिंस्र जंतु, शेर।
व्याजनिंदा-संज्ञा स्त्री० (सं०) इस तरह से निंदा या बुराई करना कि ऊपर से न जान पड़े।

व्याजस्तुति-संज्ञा स्त्री० (सं०) बहाने से की गयी बड़ाई कि ऊपर से न मालूम हो ।
व्याध-संज्ञा पुं० (सं०) जो जंगली पशुओं का शिकार करे, शिकारी, बहेलिया ।
व्याधि-संज्ञा स्त्री० रोग, बीमारी। पीड़ा,आपत्ति ।
व्यापक-वि० (सं०) सब जगह फैला हुआ ।
व्यापार-संज्ञा पुं० कार्य, काम, रोजगार, उद्योग, प्रयोग।
व्यापारी-संज्ञा पुं० जो रोजगार करे । व्यवसायी ।
व्याप्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) सब जगह फैला होना ।
व्यायाम-संज्ञा पुं० (सं०) कसरत ।
व्याल-संज्ञा पुं० सर्प, साँप, शेर।
व्यावहारिक-वि० (सं०) काम में लाया जानेवाला । व्यवहार का । व्यवहार-संबंधी ।।
व्यास-संज्ञा पुं० फैलाव, वृत्त या गोले में एक स्थान से सीधे चलकर दूसरे सिरे तक पहुँचनेवाली सीधी रेखा । एक ऋषि ।
व्यूह-संज्ञा पुं०समूह, निर्माण, रचना, बनावट, सेना, सेना का लड़ने का ढंग।
व्योम-संज्ञा पुं० आसमान।
व्योमचारी-संज्ञा पुं० आकाश में रहनेवाला, देवता, पक्षी ।
व्रजमंडल-संज्ञा पुं० व्रजभूमि, व्रज और उसके आसपास का प्रदेश।
व्रजराज-संज्ञा पुं० (सं०) श्री कृष्ण ।
व्रण-संज्ञा पुं० क्षत, शरीर का फोड़ा ।
व्रत-संज्ञा पुं० भक्षण, किसी पुण्य-तिथि को उपवास करना । संकल्प ।
व्रती-संज्ञा पुं० जो व्रत करता हो। ब्रह्मचारी ।
व्रीड़ा-संज्ञा स्त्री० (सं०) शर्म, लज्जा ।

श

शंका-संज्ञा स्त्री० (सं०) डर, भय। शक, संशय, आशंका ।
शंकित-वि० (सं०) डरा हुआ। जिसे शंका या शक हो।
शंकु-संज्ञा पुं० (सं०) नुकीली वस्तु। खूँटी, मेख, कील, शिव ।
शंख-संज्ञा पुं० (सं०) समुद्र में पाया जानेवाला एक प्रकार का घोंघा, जिसके कोष का बाजा बनाया जाता है।
शऊर-संज्ञा पुं० (अ०) काम करने की लियाकत, कौशल, बुद्धि।
शक-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्राचीन जाति। राजा शालिवाहन का चलाया संवत्। संज्ञा पुं० (अ०) संदेह, शंका, द्विविधा।
शकल-संज्ञा स्त्री० मुख की बनावट,

चेहरा। स्वरूप। मुखाकृति।
शकाब्द-संज्ञा पुं० (सं०) राजा शालिवाहन का चलाया शक-संवत्।
शकारि-संज्ञा पुं० (सं०) शकों के शत्रु, विक्रमादित्य।
शकुन-संज्ञा पुं० (सं०) किसी काम के समय होनेवाली शुभाशुभसूचक लक्षण, मुहूर्त।
शकुनि-संज्ञा पुं० (सं०) चिड़िया, पक्षी। कौरवों का मामा।
शक्की-वि० बहुत जल्दी और हर बात पर शक करनेवाला।
शक्त-संज्ञा पुं० (सं०) जो कर सके, समर्थ।
शक्ति-संज्ञा स्त्री० सामर्थ्य, बल, ताकत, दुर्गा।
शक्तिमान्-वि० बलवान्, ताकतवर।
शक्तिशाली-वि० बलवान्, ताकतवर।
शक्तिहीन-वि० (सं०) कमजोर। नपुंसक।
शक्य-वि० (सं०) किया जाने-वाला योग्य, सम्भव।
शक्ल-संज्ञा स्त्री० आकृति, स्वरूप।
शख्स-संज्ञा पुं० (अ०) आदमी, व्यक्ति।
शचि, शची-संज्ञा स्त्री० (सं०) इंद्र की पत्नी, इंद्राणी।
शठ-वि० (सं०) धोखेबाज। पाजी। मूर्ख।
शठता-संज्ञा स्त्री० धूर्तता, धोखे-बाजी, बदमाशी।

शत-वि० (सं०) सौ १००।
शतक-संज्ञा पुं० (सं०) सौ का समूह।
शतघ्नी-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक प्राचीन शस्त्र।
शतदल-संज्ञा पुं० पद्म, कमल।
शतपत्र-संज्ञा पुं० कमल, मयूर।
शतरंज-संज्ञा स्त्री० बिसात पर खेला जानेवाला एक प्रकार का खेल।
शताब्दी-संज्ञा स्त्री० (सं०) सौ साल का समय।
शतायु-संज्ञा पुं० सौ वर्ष की आयु-वाला।
शती-संज्ञा स्त्री० सौ का समूह, सैकड़ा, शताब्दी।
शत्रु-संज्ञा पुं० रिपु, वैरी, दुश्मन।
शत्रुता-संज्ञा स्त्री० (सं०) वैरभाव।
शनि-संज्ञा पुं० शनैश्चर ग्रह।
शनैः-अव्य० (सं०) धीरे-धीरे।
शनैश्चर-संज्ञा पुं० शनि ग्रह।
शपथ-संज्ञा स्त्री० सौगन्ध, कसम।
शफाखाना-संज्ञा पु० अस्पताल।
शब-संज्ञा स्त्री० (फा०) रात।
शबनम-संज्ञा स्त्री० (फा०) ओस।
शबीह-संज्ञा स्त्री० (अ०) तसवीर।
शब्द-संज्ञा पुं० आवाज, ध्वनि। अक्षरों का वह समूह जिससे कोई भाव मालूम हो।
शब्दचित्र-संज्ञा पुं० (सं०) शब्दों द्वारा खींची तसवीर।
शब्दप्रमाण-संज्ञा पुं० (सं०) किसी के कथन के आधार पर निश्चित किया गया प्रमाण।

शब्दब्रह्म-संज्ञा पुं० ॐकार, वेद ।
शब्दवेधी-संज्ञा पुं० बिना देखे केवल शब्द सुनकर ही निशाना मारनेवाला, अर्जुन, दशरथ ।
शब्दाडंबर-संज्ञा पुं० (सं०) बहुत बड़े-बड़े और कड़े शब्दों का प्रयोग, जिसमें भाव की कमी हो।
शब्दालंकार-संज्ञा पुं० (सं०) कविता में शब्दों के चयन से पैदा किये गये अलंकार।
शम-संज्ञा पुं० शान्ति । मोक्ष। क्षमा ।
शमन-संज्ञा पुं० शान्ति, हिंसा, यज्ञ में पशुओं का बलिदान, दमन।
शमा-संज्ञा स्त्री० मोमबत्ती ।
शयन-संज्ञा पुं० निद्रा, सोना, नींद लेना, स्त्री-प्रसंग ।
शयनगृह, शयनागार-संज्ञा पुं० (सं०) सोने का कमरा।
शय्या-संज्ञा स्त्री० सेज, बिस्तर, बिछावन ।
शर-संज्ञा पुं० (सं०) बाण, तीर।
शरण-संज्ञा स्त्री० (सं०) आश्रय, पनाह। अधीन ।
शरणागत- संज्ञा पुं० (सं०) आश्रय में आया हुआ व्यक्ति ।
शरत्-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक आश्विन और कार्तिक मास की ऋतु।
शरत्काल-संज्ञा पुं० शरत् का समय।
शरद-संज्ञा स्त्री० देखिए 'शरत्'।
शरदपूर्णिमा-संज्ञा स्त्री० (सं०) कुआर मास की पूर्णिमा।
शरदचंद्र-संज्ञा पुं० शरद् ऋतु का चाँद।
शरबत-संज्ञा पुं० (अ०) मीठा पीने का पदार्थ।
शरम-संज्ञा स्त्री० लज्जा। इज्जत।
शरमीला-वि० बहुत शरमानेवाला।
शराफत-संज्ञा स्त्री० (अ०) शरीफ होना, सज्जनता।
शराबखोरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) शराब पीना। मद्यपान ।
शराबी-संज्ञा पुं० बहुत शराब पीनेवाला।
शरारत-संज्ञा स्त्री० (अ०) पाजीपन। शैतानी । दुष्टता।
शरासन-संज्ञा पुं० धनुष, कमान ।
शरीक-वि० (अ०) शामिल, मिला हुआ। संज्ञा पुं० साझी ।
शरीफ-संज्ञा पुं० (अ०) ऊँचे कुल का व्यक्ति, सज्जन। भलामानुस।
शरीर-संज्ञा पुं० (अ०) देह। वि० (अ०) पाजी, शैतान।
शरीरत्याग-संज्ञा पुं० मृत्यु, मौत।
शरीरपात-संज्ञा पुं० शरीर का नाश।
शरीरशास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) शरीर के अंगों की बनावट और कार्य का अध्ययन करनेवाला शास्त्र।
शरीरांत-संज्ञा पुं० मृत्यु, शरीर का अंत, मौत।
शरीरी-संज्ञा पुं० जिसके शरीर हो, प्राणी, चेतन, जीवधारी ।
शर्करा-संज्ञा स्त्री० खाँड़, शक्कर, ठीकरा, बालू का कण ।
शर्त-संज्ञा स्त्री० (अ०) लेन-देन

स्थिर करके की गयी बाजी।
शर्तिया-क्रि० वि० (अ०) शर्त बद-कर। वि० जरूर ही, निश्चित।
शर्वरी-संज्ञा स्त्री० निशा, रात, शाम।
शलभ-संज्ञा पुं० टिड्डी। पतिंगा।
शलाका-संज्ञा स्त्री० (सं०) लोहे की सलाख।
शल्यक्रिया-संज्ञा स्त्री० (सं०) चीर-फाड़ की चिकित्सा।
शव-संज्ञा पुं० (सं०) मरा हुआ शरीर, लाश।
शवदाह-संज्ञा पुं० मृत शरीर को जलाना।
शशशृंग-संज्ञा पुं० (सं०) खरगोश के सींग की ही तरह असंभव बात।
शशि-संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
शशिकला-संज्ञा स्त्री० (सं०) चन्द्रमा की कलाएँ।
शस्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) जिसके द्वारा किसी को काटा-मारा जाय, हथियार।
शस्त्रक्रिया-संज्ञा स्त्री० (सं०) औजारों द्वारा चीर-फाड़ से की जानेवाली चिकित्सा।
शस्त्रधारी-वि० शस्त्र रखनेवाला, हथियारबंद।
शस्त्रशाला, शस्त्रागार-संज्ञा स्त्री०, पुं० (सं०) हथियार रखने की जगह। शस्त्रशाला।
शस्य-संज्ञा पुं० वृक्ष, नयी घास। खेती।
शहजोर-वि० (फा०) ताकतवर, बलवान्।
शहद-संज्ञा पुं० (अ०) मधु-मक्खियों द्वारा फूलों के रस से बनाया गया मीठा पदार्थ। मधु।
शहनाई-संज्ञा स्त्री० (फा०) एक बाजा, नफीरी।
शहर-संज्ञा पुं० (फा०) बड़ी बस्ती, नगर।
शहरपनाह-संज्ञा स्त्री० (फा०) शहर या नगर की चारदीवारी।
शहादत-संज्ञा स्त्री० (अ०) गवाही। सबूत।
शहीद-संज्ञा पुं० (अ०) धर्म या देश के लिए लड़ते-लड़ते मर जाने-वाला वीर।
शांत-वि० (सं०) थका हुआ। जिसमें चित्त-वृत्तियों की चंचलता न हो। चुप। मरा हुआ।, संज्ञा पुं० काव्य में एक रस।
शांति-संज्ञा स्त्री० (सं०) बिलकुल आवाज न होना, सन्नाटा। मन की स्वस्थता, गम्भीरता।
शाकाहार-संज्ञा पुं० (सं०) अनाज, वनस्पति आदि का भोजन।
शाखा-संज्ञा स्त्री० डाल, टहनी, हाथ। किसी वस्तु से निकले हुए भेद। हिस्सा, अंग।
शाखामृग-संज्ञा पुं० (सं०) बन्दर।
शाखोच्चार-संज्ञा पुं० (सं०) विवाह के समय वंशावली का वर्णन।
शागिर्द-संज्ञा पुं० (फा०) शिष्य।

शान-संज्ञा स्त्री० (अ०) ठाठ-बाट, सजावट। गर्व दिखाना। इज्जत।

शान-शौकत-संज्ञा स्त्री० (अ०) तड़क-भड़क, ठाट-बाट।

शाप-संज्ञा पुं० (सं०) बुरी दुआ देना, आक्रोश, भर्त्सना।

शापित-वि० (सं०) जिसे शाप दिया गया हो।

शाब्दिक-वि० (सं०) शब्द-संबंधी।

शाम-संज्ञा स्त्री० (फा०) संध्या।

शामियाना-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा तंबू। चँदवा।

शायक-संज्ञा पुं० (सं०) बाण, तीर।

शायर-संज्ञा पुं० (अ०) कवि।

शारंग-संज्ञा पुं० चातक, हरिण।

शारदा-संज्ञा स्त्री० सरस्वती, दुर्गा।

शारदीय-वि० (सं०) शरद् का।

शारिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) मैना।

शारीरिक-वि० (सं०) शरीर-सम्बन्धी।

शार्ङ्ग-संज्ञा पुं० (सं०) धनुष।

शार्दूल-संज्ञा पुं० व्याघ्र। चीता। बाघ। शेर। वि० सबसे अच्छा, सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

शाल-संज्ञा पुं० (सं०) एक वृक्ष। संज्ञा स्त्री० (फा०) दुशाला।

शाला-संज्ञा स्त्री० स्थान, गृह, घर।

शालीन-वि० (सं०) नम्र, विनीत। जो अच्छे विचार रखता हो।

शावक-संज्ञा पुं० शिशु, पशु या पक्षी का बच्चा।

शाश्वत-वि० (सं०) हमेशा रहने-वाला, नित्य, स्थायी।

शासक-संज्ञा पुं० राजा, शासन या राज्य करनेवाला।

शासन-संज्ञा पुं० आदेश, आज्ञा, अपने राज्य में प्रबन्ध।

शासित-वि० (सं०) जिसके ऊपर शासन या राज्य किया जाय।

शास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) धार्मिक ग्रंथ। किसी खास विषय का अध्ययन करनेवाला विज्ञान।

शास्त्रकार-संज्ञा पुं० (सं०) जो शास्त्रों को बनाये।

शास्त्रज्ञ-संज्ञा पुं० (सं०) जो शास्त्रों को जानता हो।

शास्त्रीय-वि० (सं०) शास्त्र का।

शास्त्रोक्त-वि० (सं०) शास्त्रों में कहा गया।

शाहंशाह-संज्ञा पुं० (फा०) बाद-शाहों का बादशाह, सम्राट्।

शाह-संज्ञा पुं० (फा०) बादशाह। मुसलमान फकीरों की उपाधि। वि० बहुत बड़ा, महान्।

शाहजादा-संज्ञा पुं० (फा०) बाद-शाह का लड़का, राजकुमार।

शिंशपा-संज्ञा स्त्री० (सं०) शीशम का वृक्ष। अशोक वृक्ष।

शिकायत-संज्ञा स्त्री० (अ०) बुराई करना, चुगली। उलाहना।

शिकार-संज्ञा पुं० (फा०) जंगली जानवरों को मारना। मारा गया जानवर। आखेट। मृगया।

शिकारगाह-संज्ञा स्त्री० (फा०) जिस जगह शिकार खेला जाय।

शिकारी-वि० (फा०) जो व्यक्ति

शिक्षक-संज्ञा पुं० (सं०) शिक्षा देनेवाला, गुरु।
शिक्षण-संज्ञा पुं० (सं०) शिक्षा देना। पढ़ाने का काम।
शिक्षा-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी विद्या को सीखना। गुरु की सीख। सबक।
शिक्षार्थी-संज्ञा पुं० जो शिक्षा ले, विद्यार्थी।
शिक्षालय-संज्ञा पुं० (सं०) जहाँ शिक्षा दी जाय, पाठशाला। विद्यालय।
शिक्षाविभाग-संज्ञा पुं० सरकार का वह विभाग जो शिक्षा के बारे में सारे प्रबन्ध करता है।
शिक्षित-वि० पुं० (सं०) जिसे शिक्षा मिल चुकी हो, पढ़ा-लिखा, विद्वान्, पंडित।
शिखंडी-संज्ञा पुं० मोर। कृष्ण। शिखा।
शिखर-संज्ञा पुं० (सं०) सिरा, चोटी। पहाड़ की चोटी। कँगूरा। गुंबद।
शिखा-संज्ञा स्त्री० (सं०) सिर की चोटी। आग की लपट। किरण।
शिखी-वि० जिसके चोटी हो। संज्ञा पुं० मोर। मुर्गा। तीन की संख्या।
शिथिल-वि० (सं०) ढीला-ढाला। सुस्त। थका हुआ। ढुलमुल।
शिद्दत-संज्ञा स्त्री० (अ०) तेजी।
शिनाख्त-संज्ञा स्त्री० (फा०) मनुष्य को पहिचान। परख।
शिया-संज्ञा पुं० एक मुसलमान संप्रदाय।
शिर-संज्ञा पुं० माथा, सिर, चोटी।
शिरमौर-संज्ञा पुं० मुकुट, ताज। प्रधान व्यक्ति या श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिरस्त्राण-संज्ञा पुं० (सं०) सिर की रक्षा के लिए युद्ध में पहनी जानेवाली लोहे की टोपी।
शिरा-संज्ञा स्त्री० (सं०) गंदे खून की वाहिनी नाड़ी।
शिरीष-संज्ञा पुं० सिरिस का पेड़।
शिरोधार्य-वि० (सं०) सिर पर धरने लायक, मानने लायक।
शिरोमणि-संज्ञा पुं चूड़ामणि। सिर का रत्न। श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिला-संज्ञा स्त्री० पाषाण, पत्थर की चट्टान।
शिलाजीत-संज्ञा पुं०,स्त्री० एक काले रंग की पौष्टिक औषधि।
शिलालेख-संज्ञा पुं० (सं०) पत्थर पर खोदकर लिखा हुआ लेख।
शिलीमुख-संज्ञा पुं० भ्रमर, भौंरा।
शिल्पकला-संज्ञा स्त्री० (सं०) हाथ से चीजें बना सकने की कला। दस्तकारी।
शिल्पविद्या-संज्ञा स्त्री० शिल्पविषयक विद्या।
शिल्पशास्त्र-संज्ञा पुं० (सं०) शिल्प का काम बतानेवाला शास्त्र।
शिल्पी-संज्ञा पुं० कारीगर।
शिव-संज्ञा पुं० मंगल, सुख, कल्याण, ईश्वर, महादेव।
शिवपुरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) काशी।
शिविका-संज्ञा स्त्री० पालकी, डोली।

शिविर-संज्ञा पुं० पड़ाव, डेरा। फौज के ठहरने का स्थान।

शिशिर-संज्ञा पुं० शीत-काल, हिम, फाल्गुन की ऋतु, जाड़ा।

शिशु-संज्ञा पुं० बालक, छोटा बच्चा।

शिशुता, शिशुपन-संज्ञा पुं० बचपन।

शिश्न-संज्ञा पुं० उपस्थ, पुरुष का लिंग।

शिष्ट-वि० पुं० सुशील। अच्छे स्वभाववाला। शांत। सज्जन।

शिष्टता-संज्ञा स्त्री० (सं०) अच्छे स्वभाव का होना, सज्जनता।

शिष्टाचार-संज्ञा पुं० (सं०) सभ्य पुरुषों का एक-दूसरे से व्यवहार।

शिष्य-संज्ञा पुं० (सं०) विद्यार्थी, चेला।

शीघ्र-क्रि० वि० (सं०) जल्द, फौरन।

शीघ्रगामी-वि० शीघ्र चलनेवाला।

शीघ्रता-संज्ञा स्त्री० (सं०) जल्दी।

शीत-वि० (सं०) ठंडा। संज्ञा पुं० जाड़ा। ठंडक।

शीतकाल-संज्ञा पुं० (सं०) जाड़े का मौसम।

शीतल-वि० (सं०) ठंडा। शांत।

शीतलता-संज्ञा स्त्री० ठंडापन।

शीतला-संज्ञा स्त्री० (सं०) चेचक।

शीरीं-वि० (फा०) मीठा। प्यारा।

शीर्ण-वि० (सं०) टूटा-फूटा। कमजोर।

शीर्ष-संज्ञा पुं० (सं०) सिर। सिरा।

शीर्षक-संज्ञा पुं० (सं०) किसी लेख के परिचय-रूप दिया गया सब से पहले शब्द या वाक्य।

शीर्षबिंदु-संज्ञा पुं० (सं०) सब से ऊपर का स्थान।

शील-संज्ञा पुं० (सं०) व्यवहार। चरित्र। अच्छी आदत।

शीलवान्-वि० अच्छे आचरण-वाला।

शीशमहल-संज्ञा पुं० जिस कोठरी की दीवालों में शीशे जड़े हों।

शुंभ-संज्ञा पुं० (सं०) एक राक्षस।

शुक-संज्ञा पुं० (सं०) तोता।

शुक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) सीप।

शुक्र-संज्ञा पुं० (सं०) एक ग्रह। वीर्य। सप्ताह में एक दिन।

शुक्रिया-संज्ञा पुं० (फा०) धन्यवाद।

शुक्ल-वि० (सं०) सफेद।

शुक्लपक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) अमावस्या के बाद से पूर्णिमा तक का पक्ष।

शुक्ला-संज्ञा स्त्री० (सं०) सरस्वती।

शुचि-वि० स्वच्छ। पवित्र।

शुतुरमुर्ग-संज्ञा पुं० (फा०) एक बड़ा पक्षी।

शुद्ध-वि० (सं०) साफ। पवित्र। बिना मिलावट का, खालिस।

शुद्धि-संज्ञा स्त्री० मार्जन, सफाई, वह संस्कार जिससे अहिन्दू को हिन्दू बनाया जाय।

शुद्धिपत्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह पत्र जिसमें गलतियाँ बतायी गयी हों।

शुभ-वि० (सं०) अच्छा, भला।

संज्ञा पुं० सुन्दर, कल्याण।
शुभचिंतक–वि० (सं०) जो किसी की भलाई चाहे, हितैषी।
शुभ्र–वि० (सं०) सफेद, उजला।
शुभ्रता–संज्ञा स्त्री० (सं०) सफेदी।
शुल्क–संज्ञा पुं० राजकर, दहेज, कीमत। किसी काम के बदले में लिया जानेवाला धन, फीस।
शुश्रूषा–संज्ञा स्त्री० सेवा, परिचर्या, देख-भाल।
शुष्क–वि० (सं०) सूखा, नीरस। रूखे मन का, निरर्थक।
शूद्र–संज्ञा पुं० (सं०) आर्यों के चार वर्णों में चौथा। नीच जाति।
शून्य–संज्ञा पुं० (सं०) रिक्त स्थान। आकाश। सिफर, बिन्दु। ईश्वर। वि० निर्जन, रहित, बिना।
शूर–संज्ञा पुं० वीर, योद्धा, बहादुर।
शूरता–संज्ञा स्त्री० वीरता, बहादुरी।
शूरवीर–संज्ञा पुं० (सं०) बहुत वीर।
शूल–संज्ञा पुं० मृत्यु, सूली, फाँसी। काँटा। कष्ट, पीड़ा।
शृंखला–संज्ञा स्त्री० क्रम, सिलसिला, जंजीर, कतार, लाइन।
शृंखलाबद्ध–वि० (सं०) एक के बाद एक, सिकड़ी से बँधा हुआ।
शृंग–संज्ञा पुं० (सं०) पहाड़ की चोटी। चौपायों के सींग।
शृंगार–संज्ञा पुं० सिन्दूर, काव्य का एक रस। सजावट, बनाव-सिंगार।
शृंगारिक–वि० (सं०) शृंगार-सम्बन्धी।
शृंगी–संज्ञा पुं० पर्वत। एक ऋषि। सींग का बना एक बाजा।
शृगाल–संज्ञा पुं० गीदड़, सियार।
शेख–संज्ञा पुं० (अ०) हजरत मुहम्मद के वंशज। मुसलमानों में पहला वर्ग।
शेखचिल्ली–संज्ञा पुं० एक माना हुआ मूर्खता के काम करनेवाला व्यक्ति।
शेखर–संज्ञा पुं० मुकुट, माथा, सिर। सब से श्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु।
शेखी–संज्ञा स्त्री० (फा०) घमण्ड। शान।
शेरवानी–संज्ञा स्त्री० (देश०) एक प्रकार का लम्बा अंगा।
शेष–संज्ञा पुं० (सं०) बची हुई चीज। गणित में घटाने से निकली हुई संख्या। सहस्र फनों का शेष-नाग जिस पर पृथ्वी स्थिर है। वि० बचा हुआ, बाकी।
शेषनाग–संज्ञा पुं० पुराणों के अनुसार सहस्र फनों का साँप जिस पर पृथ्वी स्थिर है।
शैतान–संज्ञा पुं० (अ०) वह कल्पित शक्ति जो मनुष्यों को बुरे कामों की ओर ले जाती है। भूत।
शैतानी–संज्ञा स्त्री० पाजीपन।
शैथिल्य–संज्ञा पुं० (सं०) शिथिल होना, शिथिलता, ढिलाई।
शैल–संज्ञा पुं० (सं०) पहाड़। चट्टान।
शैली–संज्ञा स्त्री० चाल-ढाल, ढंग। तरीका। वाक्य बनाने का ढंग।
शैलेंद्र–संज्ञा पुं० शैलराज, हिमालय

पर्वत।
शैव-संज्ञा पुं० शिव की पूजा करनेवाला।
शैवलिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) नदी।
शैशव-संज्ञा पुं० बचपन, लड़कपन।
शोख-वि० (फा०) शैतान, शरीर। चंचल। भड़कीला रंग।
शोच-संज्ञा पुं० दुःख, रंज। चिंता।
शोचनीय-वि० (सं०) जिसकी अवस्था देखकर दुःख हो, शोक करने योग्य, बहुत दीन।
शोण-संज्ञा पुं० सिन्दूर, लाल रंग।
शोणित-संज्ञा पुं० खून।
शोध-संज्ञा पुं० परीक्षा। शुद्धि का संस्कार। जाँच। खोज, ढूंढ़।
शोधक-संज्ञा पुं० (सं०) जो शोध करे। ढूंढ़नेवाला। सुधार करनेवाला।
शोभन-वि० (सं०) सुन्दर, शुभ, आभूषण, रमणीय, सुहावना।
शोभा-संज्ञा स्त्री दीप्ति, कांति, छवि, सुन्दरता, गोरोचन, चमेली।
शोभायमान-वि० (सं०) जो शोभित हो, सुन्दर।
शोर-संज्ञा पुं० (फा०) बहुत से लोगों का जोर-जोर से बोलना। हल्ला, कोलाहल।
शोला-संज्ञा पुं० (अ०) अंगारा।
शोषक-संज्ञा पुं० (सं०) सोखनेवाला। जो गरीबों की मेहनत से लाभ उठाये। नाश करनेवाला।
शोषण-संज्ञा पुं० सुखाना, सोखना।
शोहदा-संज्ञा पुं० (अ०) बदमाश, गुंडा।
शोहरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रसिद्धि, ख्याति।
शौक-संज्ञा पुं० (अ०) किसी बात की लत। इच्छा।
शौकत-संज्ञा स्त्री० शान।
शौच-संज्ञा पुं० शुचिता, सफाई, पवित्रता, पाखाने जाना।
शौर्य-संज्ञा पुं० शूरता, वीरता।
शौहर-संज्ञा पुं० (फा०) स्त्री का पति।
श्मशान-संज्ञा पुं० (सं०) जिस स्थान पर मुर्दे जलाये जाते हैं, मरघट।
श्याम-संज्ञा पुं० बादल, श्री कृष्ण। वि० साँवला।
श्यामकर्ण-संज्ञा पुं० (सं०) सफेद शरीर तथा काले कानवाला घोड़ा।
श्यामल-वि० श्याम रंग का, साँवला।
श्यामा-संज्ञा स्त्री० (सं०) राधा।
श्येन-संज्ञा पुं० बाज नामक पक्षी।
श्रद्धा-संज्ञा स्त्री० (सं०) अपने से बड़े या विद्वान् आदि के प्रति उत्पन्न होनेवाला आदर-भाव।
श्रद्धालु-वि० (सं०) जो श्रद्धा करता हो।
श्रद्धास्पद, श्रद्धेय-वि० श्रद्धा का पात्र, जिसको श्रद्धा की जाय।
श्रम-संज्ञा पुं० परिश्रम। मेहनत। परेशानी। कसरत।
श्रमकण, श्रमजल-संज्ञा पुं० (सं०) पसीने की बूंदें, पसीना।
श्रमजीवी-वि० जो परिश्रम करके पेट भरे।

श्रमण-संज्ञा पुं० (सं०) बौद्ध भिक्षु। मुनि। नीच कर्मजीवी।
श्रमबिंदु, श्रमवारि, श्रमशीकर-संज्ञा पुं० स्वेद, पसीना।
श्रमी-संज्ञा पुं० मेहनत करनेवाला, परिश्रमी, श्रमजीवी।
श्रवण-संज्ञा पुं० (सं०) कान। सुनना। एक नक्षत्र।
श्रव्य-वि० (सं०) सुनने लायक।
श्रांत-वि० (सं०) थका हुआ। दुःखी। श्रम से क्लान्त।
श्रांति-संज्ञा स्त्री० (सं०) थकावट।
श्राद्ध-संज्ञा पुं० (सं०) पितरों के लिए किया जानेवाला कृत्य।
श्रावण-संज्ञा पुं० (सं०) एक हिंदी माह, सावन।
श्रावणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) सावन की पूर्णिमा।
श्रीखंड-संज्ञा पुं० (सं०) हरिचंदन।
श्रीमती-संज्ञा स्त्री० (सं०) श्रीमान् का स्त्रीलिंग। राधा, लक्ष्मी।
श्रीमान्-संज्ञा पुं० पुरुषों के लिए आदरसूचक शब्द। धनी।
श्रीमुख-संज्ञा पुं० (सं०) सुन्दर मुख।
श्रीहत-वि० (सं०) बिना शोभा या कांति का, निष्प्रभ, मलिन।
श्रुति-संज्ञा स्त्री० वेद, कर्ण, कान। सुनी हुई बात, वार्ता, निगम।
श्रुतिकटु-संज्ञा पुं० (सं०) जो सुनने में बुरा और कठोर लगे।
श्रुतिपथ-संज्ञा पुं० (सं०) सुनने की इंद्रिय। वेद-विहित कार्य।
श्रेणी-संज्ञा स्त्री० शृंखला, लाइन, पंक्ति। जंजीर। जीना। दर्जा।
श्रेणीबद्ध-वि० (सं०) लाइन में रखे हुए। क्रमबद्ध।
श्रेय-वि० उत्तम, अच्छा। संज्ञा पुं० कल्याण। मुक्ति।
श्रेयस्कर-वि० (सं०) मंगलकारी, शुभ करनेवाला।
श्रेष्ठ-वि० (सं०) प्रशस्त, उत्तम। सबसे बड़ा, प्रधान।
श्रेष्ठता-संज्ञा स्त्री० प्रधानता, बड़ाई, उत्तमता।
श्रेष्ठी-संज्ञा पुं० सेठ, साहूकार।
श्रोता-संज्ञा पुं० सुननेवाला।
श्रोत्र-संज्ञा पुं० कर्ण, कान।
श्रोत्रिय-संज्ञा पुं० (सं०) वेद आदि को अच्छी प्रकार जाननेवाला।
श्लाघा-संज्ञा स्त्री० प्रशंसा, बड़ाई, तारीफ, इच्छा, चाह।
श्लाघ्य-वि० (सं०) तारीफ करने लायक, सराहने योग्य, श्रेष्ठ।
श्लेष-संज्ञा पुं० संयोग, मिलान। जोड़।
श्लेष्मा-संज्ञा पुं० शरीर की एक धातु, कफ। लिसोड़ा।
श्लोक-संज्ञा पुं० यश, प्रसिद्धि, कीर्ति, बड़ाई। संस्कृत का एक पद्य।
श्वसुर-संज्ञा पुं० (सं०) ससुर।
श्वश्रू-संज्ञा स्त्री० (सं०) सास।
श्वान-संज्ञा पुं० कुक्कुर, कुत्ता।
श्वास-संज्ञा पुं० प्राणवायु, नाक से हवा लेना और निकालना, साँस; **श्वासकास**-दमा खाँसी।

श्वेत-वि० (सं०) साफ। सफेद। गोरा। संज्ञा पुं० सफेद रंग।

श्वेतता-संज्ञा स्त्री० सफेदी।

श्वेतप्रदर-संज्ञा पुं० (सं०) वह प्रदर रोग जिसमें स्त्रियों को सफेद धातु गिरती है।

श्वेतांबर-संज्ञा पुं० (सं०) जैनियों के एक सम्प्रदाय का नाम।

ष

षंड-संज्ञा पुं० साँड़, क्लीव, हिंजड़ा, नपुंसक।

षट्-वि० (सं०) गिनती के ६। संज्ञा पुं० छः की संख्या।

षट्क-संज्ञा पुं० (सं०) छः वस्तुओं का समूह।

षट्पद-संज्ञा पुं० छः पैरोंवाला, भौंरा।

षट्मुख-संज्ञा पुं० (सं०) कार्तिकेय।

षट्रिपु-संज्ञा पुं० देखिए 'षड्रिपु'।

षट्शास्त्र-संज्ञा पुं० षड्दर्शन। छः भारतीय दर्शन।

षडंग-संज्ञा पुं० (सं०) वेद के छः अंग। शरीर के छः अंग। वि० छः अंगोंवाला।

षडानन-संज्ञा पुं० छः मुखवाला, कार्तिकेय।

षड्ज-संज्ञा पुं० (सं०) संगीत के सात स्वरों में चौथा।

षड्दर्शन-संज्ञा पुं० (सं०) भारतीय दर्शन।

षड्यंत्र-संज्ञा पुं० (सं०) छिपे-छिपे किसी के विरुद्ध काम करना। जाल, छल, कुचक्र।

षड्रस-संज्ञा पुं० (सं०) छः तरह के स्वाद।

षड्रिपु-संज्ञा पुं० (सं०) मनुष्य के मन के छः मनोविकार।

षष्ठ-वि० (सं०) छठा।

षष्ठी-संज्ञा स्त्री० (सं०) छठी तिथि। बालक के पैदा होने के छठे दिन का उत्सव। व्याकरण में संबंधकारक की विभक्ति।

षाण्मासिक-वि० (सं०) छः महीने का। हर छठे माह होने वाला, छमाही।

षोड़श-वि० (सं०) सोलहवाँ। वि० सोलह।

षोड़श शृंगार-संज्ञा पुं० (सं०) पूरा सोलह तरह का सिंगार करना।

षोड़शी-वि० स्त्री० (सं०) सोलह वर्ष की लड़की।

षोड़श संस्कार-संज्ञा पुं० (सं०) व्यक्ति के गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक के सोलह संस्कार।

सँदेसा-संज्ञा पुं० जबानी कहलाकर भेजा गया समाचार। हाल।
सँपेरा-संज्ञा पुं० साँप का तमाशा दिखानेवाला, मदारी।
सँपोला-संज्ञा पुं० साँप का बच्चा।
संकट-संज्ञा पुं० दुःख,कष्ट,तकलीफ।
संकर-संज्ञा पुं० मिश्रण, दो चीजों का मिला होना, भिन्न जाति के स्त्री-पुरुषों से उत्पन्न पुत्र, दोगला।
संकर्षण-संज्ञा पुं० आकर्षण, खिंचाव।
संकलन-संज्ञा पुं० संग्रह, ढेर, इकट्ठा या जमा करना।
संकलित-वि० चुनकर इकट्ठा किया गया।
संकल्प-संज्ञा पुं० विचार, पक्का इरादा, किसी देवकार्य करने के पहले पढ़ा गया मंत्र।
संकीर्ण-वि० (सं०) सँकरा। छोटा, तुच्छ। नीच, शूद्र।
संकुचित-वि० (सं०) सिकुड़ा हुआ। शरमाया हुआ।
संकोच-संज्ञा पुं० लज्जा। शर्म। सिकुड़ना। हिचकिचाहट।
संकोची-संज्ञा पुं० जो शर्म करे।
संक्रमण-संज्ञा पुं० संक्रांति, एक स्थिति से दूसरी में जाना।
संक्रांति-संज्ञा स्त्री० गमन, जिस समय सूर्य एक राशि से निकलकर दूसरी में प्रवेश करता है।
संक्रामक-वि० (सं०) छूने से या संसर्ग से फैलनेवाला (रोग)।
संक्षिप्त-वि० (सं०) थोड़े में। अल्प, थोड़ा।
संक्षेप-संज्ञा पुं० सारांश। थोड़े में कहना। कम करना।
संक्षेपतः-अव्य० (सं०) थोड़े में।
संखिया-संज्ञा पुं० एक धातु जो जहर है।
संख्यक-वि० (सं०) गिनतीवाला।
संख्या-संज्ञा स्त्री० गणना, गिनती
संग-संज्ञा पुं० साथ होना। मिलना। क्रि० वि० साथ। सहित।
संगठन-संज्ञा पुं० बिखरी लोगों को शक्ति को इकट्ठा करके मजबूत बनाना।
संगठित-क्रि० वि० इकट्ठा करके मजबूत बनाया गया।
संगति-संज्ञा स्त्री० संगम, मेल, मिलाप। संबंध, मिलान।
संगम-संज्ञा पुं० (सं०) मेल। दो या अधिक नदियों का एक स्थान पर आकर मिलना।
संगममर-संज्ञा पुं० एक बढ़िया सफेद मूल्यवान् पत्थर।
संगमूसा-संज्ञा पुं० (फा०) एक बढ़िया काला मूल्यवान पत्थर।
संगिनी-संज्ञा स्त्री० साथ रहनेवाली। सखी।
संगी-संज्ञा पुं० साथ रहनेवाला, साथी।
संगीत-संज्ञा पुं० (सं०) नाचना, गाना और बजाना।
संगृहीत-वि० (सं०) इकट्ठा किया गया। संग्रह किया हुआ।

संग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) इकट्ठा करना।
संग्राम-संज्ञा पुं० (सं०) युद्ध, लड़ाई।
संग्राह्य-वि० (सं०) इकट्ठा करने लायक।
संघ-संज्ञा पुं० (सं०) समूह। सभा। साधुओं या बौद्ध भिक्षुओं के रहने का स्थान।
संघटन-संज्ञा पुं० संयोग, मेल। रचना, बनाना।
संघर्ष, संघर्षण-संज्ञा पुं० (सं०) रगड़ खाना। लड़ाई, युद्ध।
संघात-संज्ञा पुं० समूह, जमाव, चोट।
संघाती-संज्ञा पुं० साथी, दोस्त।
संचय-संज्ञा पुं० संग्रह, चलना, गमन, एकत्र करना।
संचार-संज्ञा पुं० गमन, चलना, फैलना।
संचालक-संज्ञा पुं० (सं०) चलाने या फैलानेवाला। किसी काम को चलानेवाला।
संचालन-संज्ञा पुं० (सं०) चलाना। किसी काम को कराना।
संचित-वि० (सं०) जमा या इकट्ठा किया हुआ। ढेर लगाया हुआ।
संजीवनी-वि० स्त्री० (सं०) जीवन देनेवाली। संज्ञा स्त्री० एक दवा जिससे मरा हुआ व्यक्ति जी उठता है।
संज्ञक-वि० (सं०) जिसकी संज्ञा हो।
संज्ञा-संज्ञा स्त्री० चेतना, बुद्धि, संकेत, गायत्री, व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी वस्तु, जगह या व्यक्ति का बोध हो।
संज्ञाहीन-वि० (सं०) बेहोश, अचेत, बेसुध।
संडमुसंड-वि० हृष्टपुष्ट।
संत-संज्ञा पुं० साधू। महात्मा।
संतत-अव्य० (सं०) लगातार, बराबर।
संतति-संज्ञा स्त्री० संतान, बाल-बच्चे, औलाद। अविच्छिन्नता।
संतरी-संज्ञा पुं० जो पहरा दे, पहरेदार।
संतान-संज्ञा पुं० कल्प वृक्ष, बाल बच्चे, औलाद। प्रबन्ध, व्याप्ति।
संताप-संज्ञा पुं० धूप का ताप, मन की जलन, कष्ट, दुःख।
संतुष्ट-वि० (सं०) जिसे संतोष हो गया हो, तृप्त।
संतोष-संज्ञा पुं० (सं०) सब्र। इतमीनान।
संतोषी-संज्ञा पुं० हमेशा संतोष या सब्र रखनेवाला।
संदल-संज्ञा पुं० (फा०) चंदन।
संदिग्ध-वि० (सं०) जो बात निश्चित न हो, जिसमें संदेह हो।
संदीपन-संज्ञा पुं० (सं०) उद्दीपन, उत्तेजना। कामदेव का एक बाण। वि० उत्तेजना पैदा करनेवाला।
संदेश-संज्ञा पुं० संवाद, समाचार, हाल।
संदोह-संज्ञा पुं० समूह, झुण्ड।
संधान-संज्ञा पुं० (सं०) निशाना

लगाना। खोज, सन्धि, अन्वेषण।
संधि-संज्ञा स्त्री० आपस का मेल। जोड़। मित्रता, सुलह। दो अक्षरों का मेल। सेंध, दराज।
संध्या-संज्ञा स्त्री० सांझ, शाम। आर्यों में की जानेवाली सुबह, दुपहर और शाम की उपासना।
संयास-संज्ञा पुं० (सं०) आर्यों के अनुसार मनुष्य-जीवन का चौथा आश्रम।
संयासी-संज्ञा पुं० जिसने संन्यास आश्रम ग्रहण कर लिया हो।
संपत्ति-संज्ञा स्त्री० ऐश्वर्य, धन, दौलत, वैभव।
संपद्-संज्ञा स्त्री० (सं०) सिद्धि। धन, दौलत, वैभव, सौभाग्य, गौरव, अधिकता।
संपदा-संज्ञा स्त्री० धन, दौलत।
संपन्न-वि० (सं०) जो पूरा हो चुका हो, पूर्ण। सहित। धनी।
संपर्क-संज्ञा पुं० संयोग, साथ।
संपा-संज्ञा स्त्री० (सं०) बिजली।
संपादक-संज्ञा पुं० (सं०) किसी समाचारपत्र या पुस्तक का संशोधन, संकलन आदि करनेवाला।
संपादकीय-वि० (सं०) संपादक का।
संपादन-संज्ञा पुं० (सं०) काम को पूरा करना। ठीक करना। पुस्तक या समाचार-पत्र को ठीक करके प्रकाशित होने के योग्य बनाना।
संपादित-वि० (सं०) पूरा किया हुआ।
संपुट-संज्ञा पुं० डिब्बा, दोना, [illegible]
संपूर्ण-वि० (सं०) पूरा, बिलकुल, सब। संज्ञा पुं० एक राग।
संपूर्णतः, संपूर्णतया-क्रि० वि० (सं०) पूरी तरह से।
संप्रति-अव्य० (सं०) इसी समय, अभी। मुकाबले में।
संप्रदान-संज्ञा पुं० दीक्षा, दान देना। व्याकरण में एक कारक जिसका चिह्न 'को' है।
संबंध-संज्ञा पुं० (सं०) जुड़ना या मिलना। साथ, लगाव, नाता।
संबंधी-वि० सम्बन्ध रखनेवाला। संज्ञा पुं० रिश्तेदार।
संबद्ध-वि० (सं०) बँधा या जुड़ा हुआ। संबंधयुक्त।
संबल-संज्ञा पुं० (सं०) यात्रा में राह का भोजन-खर्च आदि। सहारा।
संबुद्ध-संज्ञा पुं० (सं०) ज्ञानी, बुद्ध।
संभव-संज्ञा पुं० हेतु कारण, जो हो सके, जो हो।
संभावना-संज्ञा स्त्री० अनुमान। हो सकना।
संभावित-वि० जो हो सके, संभव।
संभाव्य-वि० हो सकनेवाला।
संभाषण-संज्ञा पुं० कथोपकथन, बात-चीत।
संभूत-वि० उत्पन्न, निकला हुआ।
संभोग-संज्ञा पुं० रति-क्रीड़ा, मैथुन, साथ-साथ भोग।
संभ्रम-संज्ञा पुं० घबराहट, भूल, [illegible] उत्कंठा।

संभ्रांत-वि० ऊँचे कुल का, सम्मानित।
संयत-वि० (सं०) दमन किया गया। ठीक-ठाक, व्यवस्थित। जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो।
संयम-संज्ञा पुं० बन्धन, रोक, दबाव, इन्द्रियों को वश में करना।
संयमी-वि० आत्मनिग्रही, योगी। जो अपनी इन्द्रियों को वश में रखे।
संयुक्त-वि० (सं०) जुड़ा या मिला हुआ, सहित, संबद्ध।
संयुत-वि० (सं०) जुड़ा हुआ। साथ।
संयोग-संज्ञा पुं० मिलाप, समागम, मिलावट, जोड़।
संयोगी-संज्ञा पुं० संयोग या सहवास करनेवाला। मिलानेवाला।
संयोजक-संज्ञा पुं० (सं०) मिलानेवाला। किसी संस्था की बैठक बुलाने तथा उसका प्रबन्ध करनेवाला।
संरक्षक-संज्ञा पुं० सहायक, पालन-पोषण, रक्षा करनेवाला।
संरक्षण-संज्ञा पुं० देखरेख, प्रतिबन्ध, हिफाजत, अधिकार।
संलग्न-वि० (सं०) सटा या लगा हुआ।
संलाप-संज्ञा पुं० (सं०) बातचीत।
संवत्-संज्ञा पुं० संवत्सर, साल, वर्ष। राजा विक्रमादित्य के समय से की जानेवाली सालों की गिनती।
संवरण-संज्ञा पुं० छिपाव, दूर करना। ढँपना, रोकना।
संवर्द्धक-संज्ञा पुं० (सं०) बढ़ानेवाला।
संवाद-संज्ञा पुं० सन्देश, बातचीत। हाल, वृत्तान्त, नियुक्ति, व्यवहार।
संवादी-वि० बात करनेवाला। जो अनुकूल हो।
संवेदन-संज्ञा पुं० (सं०) अनुभव करना। इन्द्रियों द्वारा जानना।
संवेद्य-वि० (सं०) जानने लायक।
संशय-संज्ञा पुं० (सं०) संदेह, शक। डर।
संशयात्मक-वि० (सं०) जिसमें शक हो, सन्देहजनक।
संशोधक-संज्ञा पुं० (सं०) सुधारने या ठीक करनेवाला।
संशोधन-संज्ञा पुं० (सं०) साफ करना। ठीक करना, सुधारना।
संशोधित-वि० (सं०) ठीक किया हुआ, सुधारा हुआ।
संसर्ग-संज्ञा पुं० सम्बन्ध, साथ, लगाव, स्त्री-पुरुष का संभोग।
संसर्गदोष-संज्ञा पुं० (सं०) किसी के साथ रहने से आनेवाली बुराई।
संसार-संज्ञा पुं० जगत्, दुनिया।
संसारी-वि० संसार की माया में फँसा हुआ, गृहस्थ। जीव।
संसृष्ट-वि० (सं०) एक में मिला हुआ, अन्तर्गत, घनिष्ठ।
संस्करण-संज्ञा पुं० शुद्ध करना, सुधारना, पुस्तक की एक बार की छपाई।
संस्कर्ता-संज्ञा पुं० (सं०) संस्कार

करनेवाला।

संस्कार-संज्ञा पुं० (सं०) ठीक करना, सुधारना। मन के ऊपर माता-पिता के तथा शिक्षा-उपदेश आदि के पड़े प्रभाव।

संस्कारहीन-वि० (सं०) जिसका संस्कार न हुआ हो, व्रात्य।

संस्कृत-वि० (सं०) शुद्ध किया हुआ। परिमार्जित, सुधारा हुआ। संज्ञा स्त्री० एक प्राचीन भाषा।

संस्कृति-संज्ञा स्त्री० (सं०) संस्कार, सभ्यता, कल्चर।

संस्था-संज्ञा स्त्री० समाज, समुदाय, सभा।

संस्थापक-संज्ञा पुं० प्रवर्तक, किसी काम की स्थापना करनेवाला। कोई काम चलानेवाला।

संस्मरण-संज्ञा पुं० स्मरण, खूब याद।

संहार-संज्ञा पुं० संग्रह, नाश, बरबादी, अन्त, प्रलय।

सकपकाना-क्रि० अ० किसी बात को कहने में हिचकिचाना। डरना।

सकर्मक क्रिया-संज्ञा स्त्री० (सं०) व्याकरण में वह क्रिया जिसका काम उसके कर्म पर खत्म हो, जैसे, खाना, पीना।

सकल-वि० (सं०) सब, कुल।

सकाम-संज्ञा पुं० लब्धकाम, वह जो कोई काम किसी फल के लिए करे।

सकारना-क्रि० अ० मान लेना, स्वीकार करना।

सकुचना-क्रि० अ० शरमाना।

सकुचाना-क्रि० अ० संकोच करना, शरमाना, लज्जित करना।

सक्षम-वि० (सं०) जिसमें किसी काम को कर सकने की सामर्थ्य हो, समर्थ, क्षमायुक्त।

सखा-संज्ञा पुं० साथी, मित्र।

सखी-संज्ञा स्त्री० सहचरी, सहेली।

सख्य-संज्ञा पुं० मित्रता, दोस्ती।

सगा-वि० एक ही माँ से उत्पन्न, सहोदर। अपने ही परिवार का।

सगाई-संज्ञा स्त्री० विवाह का निश्चय, मँगनी। संबंध, नाता।

सगुण-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर का वह रूप जिसमें सत्, रज और तम् तीनों गुण हैं।

सगुनिया-संज्ञा पुं० अच्छा-बुरा शगुन बतलानेवाला।

सगोती, सगोत्र-संज्ञा पुं० भाई-बन्धु। एक ही गोत्र के लोग। कुल।

सघन-वि० (सं०) घना। ठोस।

सचराचर-संज्ञा पुं० (सं०) संसार की चर और अचर सभी वस्तुएं।

सचाई-संज्ञा स्त्री० सच्चापन। यथार्थता। ईमानदारी।

सचिव-संज्ञा पुं० मित्र। दोस्त। मंत्री।

सचेत-वि० चेतनायुक्त, सावधान।

सचेतन-संज्ञा पुं० (सं०) जिसमें चेतना या होश हो। होशियार।

सचेष्ट-वि० (सं०) कोशिश में लगा हुआ, प्रयत्नशील।

सच्चिदानंद-संज्ञा पुं० सत्, ईश्वर।

सजग-वि० सावधान, होशियार।

सजल-वि० (सं०) पानी से भरा, जलयुक्त, अश्रुपूर्ण।

सजातीय-वि० (सं०) एक ही जाति या गोत्र का।

सजीला-वि० सुन्दर। मनोहर। छैला। सुडौल।

सजीव-वि० (सं०) जिसमें प्राण हो। तेज।

सज्जन-संज्ञा पुं० अच्छा, भला आदमी।

सज्जनता-संज्ञा स्त्री० (सं०) भलमनसाहत।

सज्जा-संज्ञा स्त्री० (सं०) सजावट। वेश-भूषा, पोशाक। संज्ञा स्त्री० चारपाई, शय्या।

सज्जित-वि० (सं०) सजा हुआ। जरूरी चीजों को लिये हुए तैयार।

सटकना-क्रि० अ० चुपके से भाग जाना। चंपत होना।

सटीक-वि० (सं०) कोई मूल पुस्तक जिसमें उसकी टीका भी दी गयी हो।

सत-संज्ञा पुं० (सं०) ब्रह्म। वि० सच, सत्य। विद्वान्। पवित्र।

सतगुरु-संज्ञा पुं० अच्छा गुरु। ईश्वर। परमात्मा।

सतत-अव्य० (सं०) सर्वदा। लगातार।

सतर्क-वि० (सं०) सावधान।

सतवंती-वि० स्त्री० सती स्त्री।

सतसई-संज्ञा स्त्री० सात सौ पद्यों की कविता-पुस्तक।

सती-वि० स्त्री० (सं०) पतिव्रता स्त्री। दक्ष प्रजापति की कन्या। मृत पति के शव के साथ जलनेवाली स्त्री।

सतीत्व-संज्ञा पुं० (सं०) सती होना, पतिव्रता।

सत्कर्म-संज्ञा पुं० अच्छा काम, पुण्य।

सत्कार-संज्ञा पुं० (सं०) आदर, सम्मान, आतिथ्य।

सत्कुल-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छा और बड़ा परिवार।

सत्ता-संज्ञा स्त्री० विद्यमानता, अस्तित्व। अधिकार, हुकूमत।

सत्ताधारी-संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जिसके हाथ में अधिकार हो, अफसर।

सत्पथ-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छा रास्ता। उत्तम मार्ग।

सत्पुरुष-संज्ञा पुं० पूज्य पुरुष, अच्छा आदमी, सज्जन।

सत्य-वि० (सं०) ठीक, सही। असल। संज्ञा पुं० सही बात। यथार्थ, ठीक।

सत्यता-संज्ञा स्त्री० (सं०) सही होना, सचाई।

सत्ययुग-संज्ञा पुं० (सं०) चार युग में पहला जो सबसे उत्तम था।

सत्यवादी-वि० हमेशा सच बोलनेवाला। यथार्थ वक्ता।

सत्याग्रह-संज्ञा पुं० (सं०) किसी सही बात को पूरा कराने के लिए शान्ति के साथ हठ करना।

सत्यानास-संज्ञा पुं० बिलकुल

बरबादी, सर्वनाश, ध्वंस ।
सत्त्वगुण-संज्ञा पुं० (सं०) तीन गुणों में पहला जो अच्छे कामों में लगाता है ।
सत्वर-अव्य० (सं०) जल्दी, शीघ्र ।
सत्संग, सत्संगति-संज्ञा पुं० स्त्री० (सं०) अच्छे लोगों के साथ उठना-बैठना ।
सत्संगी-वि० अच्छे लोगों तथा साधुओं के साथ रहनेवाला ।
सदन-संज्ञा पुं० घर, जल, पानी ।
सदर-वि० (अ०) खास प्रमुख ।
सदसद्विवेक-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छे और बुरे की पहिचान ।
सदस्य-संज्ञा पुं० (सं०) किसी सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति ।
सदा-अव्य० (स०) हमेशा ।
सदाचरण, सदाचार-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छा चाल-चलन । रीति ।
सदाचारी-वि० संज्ञा पुं० अच्छे चाल-चलनवाला व्यक्ति ।
सदाशय-वि० (सं०) अच्छे आशय-वाला व्यक्ति, उदाराशय ।
सदी-संज्ञा स्त्री० (अ०) सौ वर्षों का समूह ।
सदुपदेश-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छा उपदेश, या अच्छी सलाह ।
सदृश-वि० (सं०) समान, अनुरूप ।
सद्गति-संज्ञा स्त्री० मुक्ति, मरने के उपरान्त अच्छे लोक को जाना ।
सद्गुरु-संज्ञा पुं० धर्म-गुरु, अच्छा गुरु, ईश्वर ।
सद्भाव-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छे भाव । प्रेम । मेल-जोल ।
सद्म-संज्ञा पुं० मकान ।
सद्य-अव्य० (सं०) अभी, फौरन ।
सद्यः-अव्य० अभी, तुरत ।
सधवा-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसका पति जीवित हो । सुहागिन ।
सनक-संज्ञा स्त्री० किसी बात की धुन ।
सनम-संज्ञा पुं० (अ०) प्यारा, प्रिय ।
सनातन-वि० बहुत पुराना, प्राचीन ।
सनाथ-वि० (सं०) जिसकी कोई सहायता करनेवाला हो ।
सनेही-वि० प्रेम करनेवाला, प्रेमी ।
सन्नद्ध-वि० (सं०) तैयार । कसा हुआ ।
सन्निकट-अव्य० (सं०) पास, निकट ।
सन्निधान-संज्ञा पुं० (सं०) निकटता, समीपता, इन्द्रिय-विषय, समागम ।
सन्निधि-संज्ञा स्त्री० (सं०) निकटता । आमने-सामने होना ।
सन्निपात-संज्ञा पुं० युद्ध, नाश, एक साथ गिरना, रोग ।
सन्निविष्ट-वि० (सं०) एक साथ बैठा हुआ । रखा हुआ, स्थापित ।
सन्निवेश-संज्ञा पुं० ठहराना । एक साथ बैठना । रखना । घर ।
सन्निहित-वि० (सं०) पास में या साथ-साथ रखा हुआ ।
सम्मान-संज्ञा पुं० सम्मान, आदर ।

सम्मुख-अव्य० सम्मुख, सामने ।
संन्यास-संज्ञा पुं० दुनिया को छोड़-देना, वैराग्य, त्याग ।
सपत्नी-संज्ञा स्त्री० (सं०) पुरुष की दूसरी पत्नी, सौत ।
सपत्नीक-वि० (सं०) पत्नी के साथ ।
सपूत-संज्ञा पुं० अच्छा पुत्र ।
सप्तक-संज्ञा पुं० (सं०) सात वस्तुओं का समूह। सात स्वरों का समूह।
सप्तपदी-संज्ञा स्त्री० (सं०) विवाह की सात परिक्रमाएँ करने की रीति ।
सप्तपाताल-संज्ञा पुं० (सं०) सात पाताल जो पृथ्वी के नीचे हैं।
सप्तम-वि० (सं०) सातवाँ ।
सप्तर्षि-संज्ञा पुं० ब्रह्मा के सात मानस ऋषि पुत्र । ध्रुव तारे के चारों ओर फिरनेवाले सात तारे ।
सप्ताह-संज्ञा पुं० (सं०) सात दिनों का समूह, हफ्ता ।
सफल-वि० (सं०) जिसका काम अच्छी तरह से पूरा हो गया हो । कामयाब ।
सफलता-संज्ञा स्त्री० पूर्णता, सफल होना, कामयाबी, सिद्धि ।
सफलीभूत-वि० (सं०) जो सफल हो चुका हो, सिद्ध ।
सबब-संज्ञा पुं० (अ०) कारण, वजह।
सबल-वि० (सं०) ताकतवर, बलवान्, सैन्ययुक्त ।
सब्जी-संज्ञा स्त्री० फा० भाजी । तरकारी ।
सभा-संज्ञा स्त्री० परिषद्, किसी विषय पर विचार करने को कुछ लोगों का इकट्ठा होना, मजलिस।
सभागृह-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ पर कोई सभा की जाय ।
सभापति-संज्ञा पुं० अध्यक्ष । सभा का प्रधान व्यक्ति या मुखिया ।
सभासद-संज्ञा पुं० (सं०) सभा में आनेवाले लोग ।
सभ्य-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छा, भला, शिष्ट आदमी ।
सभ्यता-संज्ञा स्त्री० शिष्टता, सभ्य या सज्जन होना । भलमनसाहत ।
सम-वि० (सं०) समान । बराबर, चौरस ।
समकक्ष-वि० (सं०) बराबर दर्जे तुल्य, समान ।
समकालीन-वि० (सं०) एक ही समय में होनेवाले कई काम ।
समकोण-वि० (सं०) वह चित्र जिसके आमने-सामने के कोण बराबर हों। ९० अंश का कोण ।
समक्ष-अव्य० (सं०) सामने ।
समग्र-वि० (सं०) कुल, पूरा।
समतल-वि० (सं०) बराबर सतह का, चौरस ।
समता-संज्ञा स्त्री० (सं०) बराबरी।
समदर्शी-संज्ञा पुं० सबको एक समान देखनेवाला ।
समधी-संज्ञा पुं० पुत्र या पुत्री का ससुर ।
समन्वय-संज्ञा पुं० संयोग, मेल,

मिलाप, भिन्न मतों का मेल।
समन्वित-वि० (सं०) मिला हुआ।
समय-संज्ञा पुं० (सं०) वक्त। मौका।
समर-संज्ञा पुं० संग्राम, युद्ध।
समरभूमि, समरांगण-संज्ञा स्त्री० पुं० (सं०) लड़ाई का मैदान।
समर्थ-वि० (सं०) काम कर सकने योग्य, अभिलषित, अनुकूल।
समर्थक-वि० (सं०) किसी के पक्ष का समर्थन करनेवाला।
समर्थन-संज्ञा पुं० (सं०) किसी के मत को ठीक बताना या उसका पुष्टि करना।
समर्पण-संज्ञा पुं० (सं०) आदर के साथ किसी वस्तु का किसी को भेंट करना, दान देना।
समर्पित-वि० (सं०) जो वस्तु किसी को दी गयी हो।
समवाय-संज्ञा पुं० (सं०) समूह, नित्य सम्बन्ध।
समष्टि-संज्ञा स्त्री० (सं०) सब का समूह, कुल, सब।
समस्त-वि० (सं०) सब, कुल। एक में मिलाया हुआ, संक्षिप्त।
समस्या-संज्ञा स्त्री० (सं०) कोई मुश्किल बात या अवसर। प्रश्न।
समस्यापूर्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी दी गयी समस्या पर छंद बनाना।
समागम-संज्ञा पुं० (सं०) आना। मैथुन।
समाचार-संज्ञा पुं० संवाद, खबर, हाल।
समाचार-पत्र-संज्ञा पुं० वह पत्र जिसमें तमाम प्रकार के समाचार हों। अखबार।
समाज-संज्ञा पुं० समूह, संघ, सभा। विशेष उद्देश्य से बनाया गयी जन-संस्था।
समादर-संज्ञा पुं० (सं०) आदर, सम्मान।
समाधान-संज्ञा पुं० समाधि, किसी के मन के संदेह या भ्रम को दूर कर देना।
समाधि-संज्ञा स्त्री० (सं०) ध्यान लगाना। योग का चरम फल। वह स्थान जहाँ किसी मृत व्यक्ति को मिट्टी में गाड़ना।
समाधिस्थ-वि० (सं०) जिसने समाधि या ध्यान लगाया हो।
समान-वि० (सं०) बराबर, सम।
समानता-संज्ञा स्त्री० तुल्यत्व, बराबरी।
समाप्त-वि० (सं०) खत्म।
समाप्ति-संज्ञा स्त्री० अवसान, खत्म होना, खात्मा।
समारोह-संज्ञा पुं० आडंबर, धूमधाम के साथ कोई उत्सव मनाना।
समालोचक-संज्ञा पुं० समालोचना करनेवाला।
समालोचना-संज्ञा स्त्री० विवेचना, किसी वस्तु के गुण-दोषों को ढूंढ़ना। आलोचना।
समाविष्ट-वि० (सं०) समाया हुआ।
समावेश-संज्ञा पुं० अंतर्भाव, एक वस्तु का दूसरी के अन्तर्गत होना

समास-संज्ञा पुं० संग्रह, संक्षेप । व्याकरण में कुछ शब्दों को मिलाकर एक कर देने का नियम ।
समिति-संज्ञा स्त्री० सभा, समाज, सन्निपात नामक रोग ।
समिधा-संज्ञा स्त्री० यज्ञ में जलाने की लकड़ी ।
समीक्षा-संज्ञा स्त्री आलोचना, समालोचना, आत्म-विद्या, यत्न ।
समीप-वि० (सं०) पास, नजदीक ।
समीपवर्ती-वि० पास का ।
समीर-संज्ञा पुं० हवा, शमी वृक्ष ।
समीरण-संज्ञा पुं० वायु, हवा ।
समुचित-वि० (सं०) बिलकुल ठीक, उपयुक्त, वाजिब ।
समुच्चय-संज्ञा पुं० समाहार, समूह, ढेर ।
समुवाय-संज्ञा पुं० ढेर, झुंड, युद्ध, समूह ।
समुद्र-संज्ञा पुं० अम्बुधि, सागर ।
समूह-संज्ञा पुं० समुदाय, झुंड, ढेर ।
समृद्ध-वि० (सं०) खूब भरा-पुरा, धनवान्, उन्नतिशील ।
समृद्धि-संज्ञा स्त्री० उन्नति, अमीरी, सम्पन्नता, प्रभाव, सम्पत्ति ।
सम्मत-वि० (सं०) जिसकी राय मिलती हो, सहमत ।
सम्मति-संज्ञा स्त्री० मत, सलाह, राय ।
सम्मान-संज्ञा पुं० प्रतिष्ठा, आदर, इज्जत ।
सम्मिलन-संज्ञा पुं० मिलन, मेल ।
सम्मिलित-वि० (सं०) मिला हुआ, मिश्रित ।
सम्मिश्रण-संज्ञा पुं० (सं०) मिलना । मिलावट ।
सम्मुख-अव्य० (सं०) सामने ।
सम्मेलन-संज्ञा पुं० जमघट, किसी खास उद्देश्य के लिए बनाया गया समाज । मिलाप, संगम ।
सम्मोहन-संज्ञा पुं० (सं०) मोह लेना । कामदेव का एक बाण ।
सम्यक्-वि० (सं०) पूरा, सब ।
सम्राज्ञी-संज्ञा स्त्री० (सं०) रानी, महारानी ।
सम्राट्-संज्ञा पुं० राजाधिराज ।
सयाना-संज्ञा पुं० अधिक अवस्थावाला । चालाक । होशियार ।
सर-संज्ञा पुं० तालाब । वि० जीता हुआ, पराजित ।
सरकार-संज्ञा स्त्री० (फा०) वह सत्ता जो राज्य का शासन करती है । हुकूमत ।
सरकारी-वि० (फा०) राजकीय । सरकार का ।
सरगम-संज्ञा पुं० संगीत के सातों स्वरों का उतार-चढ़ाव का क्रम ।
सरणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) रास्ता । लकीर ।
सरदार-संज्ञा पुं० (फा०) किसी समूह का प्रधान, अगुआ । शासक ।
सरनामा-संज्ञा पुं० (फा०) लेख का शीर्षक । पत्र में शुरू का संबोधन ।
सरपंच-संज्ञा पुं० पंचों का प्रधान ।
सर-परस्त-संज्ञा पुं० [illegible]

और रक्षा करनेवाला, अभिभावक।
सरल-वि० (सं०) सीधा। आसान।
सरलता-संज्ञा स्त्री० सिधाई, सीधापन, आसानी।
सरस-वि० (सं०) रसदार। गीला। ताजा। मीठा। सुन्दर।
सरसब्ज-वि० (फा०) हरा-भरा, लहलहाता हुआ।
सरसिज-संज्ञा पुं० पद्म, कमल।
सरसी-संज्ञा स्त्री० बावली, छोटा तालाब।
सरसीरुह-संज्ञा पुं० पद्म, कमल।
सरस्वती-संज्ञा स्त्री पंजाब की एक प्राचीन नदी। विद्या या वाणी की देवी; —व्रत-पुं० श्रीपंचमी-व्रत।
सरहद-संज्ञा स्त्री० किसी प्रदेश की सीमा।
सरहदी-वि० सरहद-संबंधी।
सराफ-संज्ञा पुं० सोने-चाँदी का व्यापार करनेवाला।
सरासर-अव्य० (फा०) बिलकुल, आद्योपान्त, पूर्णतया।
सराहना-क्रि० सं० प्रशंसा या तारीफ करना। संज्ञा स्त्री० तारीफ, बड़ाई।
सराहनीय-वि० बड़ाई या प्रशंसा करने लायक, अच्छा, बढ़िया।
सरिता-संज्ञा स्त्री० नदी।
सरीखा-वि० समान, तरह।
सरूप-वि० (सं०) रूपवाला। समान। सुन्दर।
सरूर-संज्ञा पुं० खुशी। हलका नशा।
सरोज-संज्ञा पुं० पद्म, कमल।
सरोजिनी-संज्ञा स्त्री० पद्म, कमलिनी।
सरोद-संज्ञा पुं० (फा०) एक बाजा।
सरोरुह-संज्ञा पुं० पद्म, कमल।
सरोवर-संज्ञा पुं० झील। तालाब।
सरोष-वि० (सं०) गुस्से से भरा, रोषपूर्ण, कुपित।
सर्ग-संज्ञा पुं आज्ञा, प्रकृति, स्वभाव, किसी ग्रन्थ का अध्याय।
सर्जन-संज्ञा पुं० त्याग। छोड़ना। सृष्टि।
सर्प-संज्ञा पुं० (सं०) साँप।
सर्पराज-संज्ञा पुं० (सं०) साँपों का राजा, शेषनाग।
सर्वगत-वि० (सं०) सब जगह फैला हुआ, सर्वव्यापक।
सर्वज्ञ-वि० जो सब कुछ जानता हो। संज्ञा पुं० ईश्वर।
सर्वत्र-अव्य० (सं०) सब कहीं।
सर्वथा-अव्य० (सं०) बिलकुल सब तरह से।
सर्वदा-अव्य० (सं०) सदा, हमेशा।
सर्वनाम-संज्ञा पुं० व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान पर लिखा जाता है।
सर्वनाश-संज्ञा पुं० (सं०) बिलकुल बरबादी। सत्यानास।
सर्वप्रिय-वि० (सं०) सबको प्यारा या अच्छा लगनेवाला।
सर्वभक्षी-संज्ञा पुं० सब कुछ खाने-

वाला। आग।
सर्वव्यापक-संज्ञा पुं० सब जगह रहनेवाला, सर्वव्यापी।
सर्वशक्तिमान्-वि० जो सब कुछ करने की शक्ति रखता हो। संज्ञा पुं० ईश्वर।
सर्व-साधारण-संज्ञा पुं० (सं०) साधारण लोग, आम जनता।
सर्वसामान्य-वि० (सं०) जो सब लोगों में पाया जाय, मामूली।
सर्वात्मा-संज्ञा पुं० सारे विश्व की आत्मा, ब्रह्मा, शिव।
सर्वेश, सर्वेश्वर-संज्ञा पुं० (सं०) सबका मालिक। ईश्वर। चक्रवर्ती राजा।
सलज्ज-वि० (सं०) जिसे लज्जा या शर्म आती हो, लज्जाशील।
सलाख-संज्ञा स्त्री० लोहे आदि धातु की बनी छड़।
सलामत-वि० (अ०) सब मुसीबतों से बचा हुआ, रक्षित।
सलामती-संज्ञा स्त्री० तंदुरुस्ती। कुशल, राजी-खुशी।
सलाह-संज्ञा स्त्री० (अ०) राय, मशविरा।
सलोना-वि० नमकीन। सुंदर।
सवाब-संज्ञा पुं० (अ०) शुभ और भले कामों का मिलनेवाला फल। पुण्य, भलाई।
सवार-संज्ञा पुं० (फा०) जो किसी घोड़े पर चढ़ा हो।
सवारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) जिस

सवाल-संज्ञा पुं० (अ०) प्रश्न। माँग। गणित का प्रश्न।
सविता-संज्ञा पुं० सूर्य। आक, मदार।
सशंक-वि० (सं०) डरा हुआ, भयभीत।
ससुराल-संज्ञा स्त्री० पति या पत्नी के पिता का घर, जेलखाना।
सहकारिता-संज्ञा स्त्री० (सं०) साथ-साथ कोई कार्य करना, सहयोग।
सहकारी-संज्ञा पुं० एक साथ काम करनेवाला, सहयोगी। सहायक।
सहगमन-संज्ञा पुं० (सं०) मृत पति के साथ पत्नी का भी चिता में जल जाना। सती होना।
सहगामिनी-संज्ञा स्त्री० सहचरी, पत्नी।
सहचर-संज्ञा पुं० (सं०) साथ चलनेवाला, भृत्य, दास, दोस्त, मित्र।
सहचरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) साथ चलनेवाली। पत्नी। सखी।
सहज-संज्ञा पुं० सगा भाई, स्वभाव। वि० आसान। साधारण।
सहन-संज्ञा पुं० क्षान्ति, बरदाश्त करना, सहना।
सहनशील-वि० (सं०) बरदाश्त करने या सहनेवाला, सन्तोषी।
सहभोग, सहभोजन-संज्ञा पुं० (सं०) बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर खाना।
सहमना-क्रि० अ० डर जाना।
सहयोग-संज्ञा पुं० साथ, किसी काम को साथ मिलकर करना, मदद।

काम करनेवाला ।
सहवास-संज्ञा पुं० एक साथ रहना, संग । स्त्री-पुरुष का संभोग, मैथुन ।
सहसा-अव्य० (सं०) एक दम से, एकाएक, अचानक, अकस्मात ।
सहस्र-संज्ञा पुं० (सं०) एक हजार, १००० ।
सहानुभूति-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी को दुःख में देखकर स्वयं दुःखी होना, हमदर्दी ।
सहायक-वि० (सं०) सहायता या मदद करनेवाला, मददगार । किसी काम में किसी के अधीन रहकर उसकी सहायता करना ।
सहायता-संज्ञा स्त्री० (सं०) मदद ।
सहित-अव्य० (सं०) साथ, समेत ।
सहिष्णु-वि० (सं०) सहनेवाला, सहनशील ।
सहिष्णुता-संज्ञा स्त्री० (सं०) सहन करने की शक्ति, सहनशीलता ।
सहूलियत-संज्ञा स्त्री० (फा०) आसानी ।
सहृदय-वि० (सं०) कोमल हृदय-वाला, समझदार, सज्जन ।
सहेली-संज्ञा स्त्री० सखी । दासी ।
सहोदर-संज्ञा पुं० (सं०) एक ही माता से पैदा पुत्र, सगा भाई ।
सह्य-वि० (सं०) सहने या बरदास्त करने योग्य ।
साँई-संज्ञा पुं० स्वामी, मालिक ।
साँझ-संज्ञा स्त्री० शाम, संध्या ।
साँड़नी-संज्ञा स्त्री० ऊँटनी, जो बहुत तेज चलती है ।
सांग-वि० पूरा ।
सांगोपांग-अव्य० बिलकुल पूरी तरह से ।
सांत्वना-संज्ञा स्त्री० (सं०) दुःखी व्यक्ति से ढाढ़स के शब्द कहना ।.सांत्वन ।
सांध्य-वि० (सं०) संध्या-संबंधी । शाम का ।
सांपत्तिक-वि० धन या संपत्ति-संबंधी, आर्थिक ।
सांप्रदायिक-वि० किसी संप्रदाय का ।
साँवला-वि० कुछ कालापन लिये हुए । श्याम वर्ण का ।
सांसारिक-वि० (सं०) इस संसार का, लौकिक ।
साइत-संज्ञा स्त्री० मुहूर्त । शुभ लग्न ।
साका-संज्ञा पुं० संवत् । कीर्त्ति, यश ।
साकार-वि० (सं०) जिसका कुछ आकार हो।
साकिन-वि० (अ०) रहनेवाला, निवासी ।
साकी-संज्ञा पुं० (अ०) जो शराब पिलाता हो । माशूक, प्रेमिका ।
साकेत-संज्ञा पुं० अयोध्या नगरी ।
साक्षर-वि० (सं०) लिखा-पढ़ा, शिक्षित ।
साक्षात्-अव्य० (सं०) सामने । वि० साकार । संज्ञा पुं० भेंट, मुलाकात ।
साक्षात्कार-संज्ञा पुं० (सं०) भेंट, मुलाकात । इन्द्रियों द्वारा होने

वाला अनुभव ।
साखी-संज्ञा पुं० साक्षी, गवाह, स्त्री० गवाही । ज्ञान से मतलब रखने-वाले पद ।
सागर-संज्ञा पुं० उदधि, समुद्र ।
साज-संज्ञा पुं० सामान, सजावट की, सामग्री । वि० मरम्मत करने-वाला जैसे घड़ीसाज ।
साजन-संज्ञा पुं० पति । प्रेमी ।
साजिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) सलाह । मेल । षड्यंत्र, जाल, छल ।
साझा-संज्ञा पुं० साझेदारी । हिस्सा ।
साझी, साझेदार-संज्ञा पुं० हिस्सेदार ।
साढ़साती, साढ़ेसाती-संज्ञा स्त्री० शनि ग्रह के साढ़े सात वर्ष, मास या दिन की दशा जो अशुभ मानी जाती है ।
सात्विक-वि० (सं०) भला, उत्तम । सत्त्वगुणयुक्त, सत्वगुण-संबंधी ।
सादगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) सादे ढंग से रहना, सादापन, सरलता ।
सादृश्य-संज्ञा पुं० (सं०) समानता । बराबरी ।
साध-संज्ञा पुं० साधु । संज्ञा स्त्री० अभिलाष, कामना ।
साधक-संज्ञा पुं० योगी, साधना करनेवाला, तपस्वी ।
साधन-संज्ञा पुं० हेतु, वे वस्तुएँ जिनसे कोई काम पूरा किया जाय, उपकरण, सामग्री, उपाय, कारण ।
साधना-संज्ञा स्त्री० (सं०) कोई काम पूरा करने की क्रिया । देवता आदि को प्रसन्न करने की क्रिया । क्रि० स० पूरा करना । निशाना लगाना । वश में करना । ठहरना ।
साधर्म्य-संज्ञा पुं० एकधर्मता ।
साधारण-वि० (सं०) सामान्य, आसान । सबके लिए, सार्वजनिक, आम ।
साधु-संज्ञा पुं० मुनि । महात्मा । सज्जन । वि० अच्छा । उचित ।
साधुवाद-संज्ञा पुं० (सं०) किसी के अच्छे काम पर उसकी बड़ाई करना, प्रशंसा करना ।
साध्य-वि० (सं०) जो सिद्ध किया जा सके । जिसे सिद्ध करना हो ।
साध्वी-वि० स्त्री० (सं०) पतिव्रता स्त्री । सच्चरित्रा नारी ।
सानंद-वि० (सं०) आनन्द से, खुशी से, आल्हादयुक्त ।
सान-संज्ञा पुं० वह पत्थर जिस पर औजारों की धार तेज की जाती है ।
सान्निध्य-संज्ञा पुं० (सं०) समीपता ।
साफल्य-संज्ञा पुं० सफलता ।
साबित-वि० (फा०) प्रमाणित, सिद्ध, समूचा । वि० पूरा । ठीक ।
सामंजस्य-संज्ञा पुं० (सं०) संगति, मेल ।
सामंत-संज्ञा पुं० (सं०) किसी प्रदेश का मालिक । योद्धा ।
सामग्री-संज्ञा स्त्री० (सं०) सामान । वह सामान जिससे कोई काम पूरा

सामरिक-वि० (सं०) समर या युद्ध का।

सामर्थ्य-संज्ञा पुं० स्त्री० किसी काम को कर सकने की शक्ति या योग्यता।

सामाजिक-वि० (सं०) समाज का।

सामाजिकता-स्त्री० लौकिकता। समाज में रहने का भाव।

सामान्य-वि० (सं०) मामूली, साधारण। संज्ञा पुं० समानता, सब में ही पाया जानेवाला गुण।

सामान्यतः, सामान्यतया-अव्य० (सं०) साधारण रूप या मामूली तरह से।

सामीप्य-संज्ञा पुं (सं०) निकटता।

सामुद्रिक-वि० (सं०) समुद्र का। संज्ञा पुं० हथेली की रेखाओं से जीवन के शुभाशुभ फल बताना।

साम्य-संज्ञा पुं० समता, समानता, समता, तुल्यता।

साम्यवाद-संज्ञा पुं० (सं०) एक पाश्चात्य सिद्धान्त, कम्युनिज्म।

साम्राज्यवाद-संज्ञा पुं० (सं०) अपने साम्राज्य को बढ़ाने का सिद्धान्त।

सायंकाल-संज्ञा पुं० (सं०) शाम।

सायक-संज्ञा पुं० बाण, तीर।

सायत-संज्ञा स्त्री० शुभ समय।

साया-संज्ञा पुं० छाया। एक जनाना पहनावा।

सारंग-संज्ञा पुं० (सं०) एक प्रकार का हिरन। कोयल, बाज पक्षी, पपीहा। कामदेव। वि० सुन्दर।

सारंगपाणि-संज्ञा पुं० (सं०) विष्णु।

सारंगी-संज्ञा स्त्री० एक बाजा।

सारथि-संज्ञा पुं० (सं०) रथ हाँकनेवाला, सूत।

सारांश-संज्ञा पुं० संक्षेप, सार, तात्पर्य। मतलब। नतीजा। परिणाम, उपसहार, परिशिष्ट।

सारिका-संज्ञा स्त्री० मैना पक्षी।

सारूप्य-संज्ञा पुं० (सं०) एक ही-सा होना, एकरूपता।

सार्थक-वि० (सं०) अर्थयुक्त, सफल।

सार्वकालिक-वि० (सं०) सब समयों में होनेवाला।

सार्वजनिक, सार्वजनीन-वि० (सं०) सर्व साधारण या मामूली जनता का।

सार्वत्रिक-वि० (सं०) सब जगह फैला हुआ, सर्वत्र-व्यापी।

सार्वदेशिक-वि० (सं०) सम्पूर्ण देशों का।

सार्वभौम-पुं० चक्रवर्ती राजा।

सालगिरह-संज्ञा स्त्री० (फा०) वर्ष-गाँठ।

साला-संज्ञा पुं० पत्नी का भाई।

सालाना-वि० (फा०) वार्षिक।

सालोक्य-संज्ञा पुं० (सं०) वह मुक्ति जिसमें जीव ईश्वर के साथ रहता है।

सावकाश-संज्ञा पुं० अवकाश, छुट्टी, फुरसत, मौका, अवसर।

सावधान-वि० (सं०) होशियार, सचेत, सतर्क।

सावित्री-संज्ञा स्त्री० (सं०) वेद-माता गायत्री । सत्यवान् की सती पत्नी ।
साष्टांग-वि० (सं०) आठों अग सहित ।
साहचर्य-संज्ञा पुं० सहगमन, साथ रहना, संग, साथ ।
साहब-संज्ञा पुं० मालिक, स्वामी, आदर जतानेवाला शब्द ।
साहबजादा-संज्ञा पुं० पुत्र, लड़का ।
साहस-संज्ञा पुं० (सं०) मन की दृढ़ता । हिम्मत । अत्याचार
साहसिक-संज्ञा पुं० झूठ बोलनेवाला, ठग । निडर, निर्भीक । डाकू, चोर । परस्त्रीगामी ।
साहसी-वि० साहसवाला, हिम्मती, दिलेर ।
साहाय्य-संज्ञा पुं० (सं०) सहायता ।
साहित्य-संज्ञा पुं० (सं०) गद्य-पद्य में व्यक्त किये गये विचार ।
साहित्यिक-वि० (सं०) साहित्य का । संज्ञा पुं० साहित्य लिखने-वाला, साहित्य का ज्ञाता ।
साहूकार-संज्ञा पुं० महाजन या व्यापारी ।
साहूकारा-संज्ञा पुं० रुपयों का लेन-देन । साहूकारों का बाजार ।
सिंगार-संज्ञा पुं० सजावट । शोभा ।
सिंघाड़ा-संज्ञा पुं० पानी में फैलने-वाली लता के तिकोने फल ।
सिंचन-संज्ञा पुं० (सं०) पानी से सींचना तर करना ।
सिंचाई-संज्ञा स्त्री० पानी छिड़क-कर सींचना । सींचने की मजदूरी ।
सिंदूर-संज्ञा पुं० (सं०) एक लाल चूर्ण जिसे सोहागिन स्त्रियाँ माँग में भरती हैं ।
सिंदूरी-वि० सिंदूर के रंग का ।
सिंधु-संज्ञा पुं० (सं०) नद । समुद्र ।
सिंधुजा-संज्ञा स्त्री० (सं०) लक्ष्मी ।
सिंधुपुत्र-संज्ञा पुं० (सं०) चन्द्रमा ।
सिंधुर-संज्ञा पुं० (सं०) हाथी ।
सिंधुरवदन-संज्ञा पुं० (सं०) गणेश ।
सिंधुसुता-संज्ञा स्त्री० (सं०) लक्ष्मी ।
सिंह-संज्ञा पुं० पशुराज, एक जंगली जीव, शेर । एक राशि ।
सिंहद्वार-संज्ञा पुं० (सं०) सदर फाटक ।
सिंहनाद-संज्ञा पुं० (सं०) सिंह की गरज । जोर से कहना । ललकार ।
सिंहवाहिनी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा देवी ।
सिंहावलोकन-संज्ञा पुं० (सं०) आगे-पीछे की सभी बातों को ध्यान से देखना ।
सिंहासन-संज्ञा पुं० (सं०) राजा या देवता के बैठने का आसन ।
सिंही-संज्ञा स्त्री० शेरनी, बैंगन ।
सिकता-संज्ञा स्त्री० रेत, बालू । बलुई जमीन । चीनी ।
सिक्ख-संज्ञा पुं० गुरु नानक के अनु-यायी, सिख ।
सिखावन-संज्ञा पुं० उपदेश, शिक्षा ।
सिजदा-संज्ञा पुं० (अ०) प्रणाम ।
सिड़-संज्ञा स्त्री० पागलपन । सनक ।

सिड़ी-वि० पागल, सनकी, उन्मत्त।

सित-वि० (सं०) सफेद। साफ।

सितकंठ-वि० (सं०) सफेद गर्दन-वाला। संज्ञा पुं० महादेव।

सितम-संज्ञा पुं० (फा०) जुल्म। अत्याचार।

सिता-संज्ञा स्त्री० शर्करा, चीनी। शराब; –खंड–पुं० मिस्री।

सितार-संज्ञा पुं० एक बाजा।

सितारा-संज्ञा पुं० आकाश के तारे। भाग्य, नसीब।

सिद्ध-वि० (सं०) प्रसिद्ध, सम्पन्न, प्राप्त, सफल, जो अपने काम में सफल हो चुका हो। जिसने योग या तप से सिद्धि पाई हो। साबित। संज्ञा पुं० महात्मा।

सिद्धहस्त-वि० (सं०) जो किसी काम को भली प्रकार कर सकता हो, मँजे हाथवाला।

सिद्धांत-संज्ञा पुं० (सं०) मत। किसी विद्वान् या वर्ग का स्थिर किया हुआ मत।

सिद्धा-संज्ञा स्त्री० (सं०) सिद्ध की स्त्री। आर्या छन्द का एक भेद।

सिद्धार्थ-संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध।

सिद्धि-संज्ञा स्त्री० (सं०) काम का पूरा या सफल होना। साबित होना। तप के पूरे होने पर मिलने-वाला फल। मोक्ष।

सिन-संज्ञा पुं० (अ०) अवस्था, उम्र।

सिपाही-संज्ञा पुं० (फा०) सैनिक।

सिफत-संज्ञा स्त्री० (अ०) खास बात, विशेषता।

सिफारिश-संज्ञा स्त्री० (फा०) किसी के अपराध या गलती को क्षमा कराने के लिए दूसरे से अनुमोदन करना।

सियापा-संज्ञा पुं० इकट्ठा होकर स्त्रियों का किसी मृत व्यक्ति के लिए रोना। मातम।

सिर-संज्ञा पुं० शरीर का ऊपरी गोल भाग खोपड़ी, चोटी।

सिरजनहार-संज्ञा पुं० बनानेवाला, ईश्वर। निर्माता, स्रष्टा।

सिरताज-संज्ञा पुं० ताज, मुकुट। प्रधान व्यक्ति, सरदार।

सिरनामा-संज्ञा पुं० लिफाफे पर लिखा पता। किसी लेख का शीर्षक।

सिरुह-संज्ञा पुं० बाल।

सिरहाना-संज्ञा पुं० चारपाई में सिर की ओर का भाग।

सिरा-संज्ञा पुं० छोर। आखिरी भाग। नोक।

सिरोही-संज्ञा स्त्री० (देश०) एक चिड़िया। संज्ञा पुं० तलवार।

सिलखड़ी-संज्ञा स्त्री० एक चिकना मुलायम पत्थर। खड़िया।

सिलवट-संज्ञा स्त्री० (सं०) शिकन, सिकुड़न।

सिलसिला-संज्ञा पुं० (अ०) बँधा हुआ क्रम। शृंखला, जंजीर। तरतीब। वि० गीला। चिकना।

सिलसिलेवार-वि० तरतीब से, क्रमानुसार।

सिलाजीत-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध औषधि लसदार निर्यास ।
सिसकना-क्रि० अ० रोने के बीच रुक-रुककर साँसें लेना ।
सिसकारी-संज्ञा स्त्री० सिसकने की ध्वनि ।
सिसकी-संज्ञा स्त्री० रुक-रुककर धीरे-धीरे रोना, सिसकारी ।
सिहरना-क्रि० अ० भयभीत होना, काँपना, रोंगटे खड़े होना ।
सींचना-क्रि० स० पानी छिड़ककर भिगोना ।
सीकर-संज्ञा पुं० छींटा, पसीना ।
सीख-संज्ञा स्त्री० सिखायी हुई बात, शिक्षा । सलाह ।
सीखचा-संज्ञा पुं० (फा०) लोहे की छड़ ।
सीटी-संज्ञा स्त्री० मुँह से निकलने-वाला तीव्र और महीन सी का शब्द । वह बाजा जिससे ऐसा शब्द निकलता है ।
सीठा-वि० नीरस, फीका ।
सीड़-संज्ञा स्त्री० सीलापन, नमी ।
सीतलपाटी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बढ़िया चटाई ।
सीताफल-संज्ञा पुं० शरीफा ।
सीत्कार-संज्ञा पुं० (सं०) मुँह से पीड़ा आदि के समय निकलनेवाला सी-सी शब्द, सिसकारी ।
सीधा-वि० जो टेढ़ा न हो । सरल, भोला । आसान । क्रि० वि० ठीक सामने । संज्ञा पुं० बिना पकाया ।
सीना-क्रि० स० कपड़े को सुई-तागे से जोड़ना । संज्ञा पुं० छाती ।
सीप-संज्ञा पुं० एक जल-जंतु, सीपी ।
सीपसुत-संज्ञा पुं० मुक्ता, मोती ।
सीपी-संज्ञा स्त्री० सीप ।
सीमंत-संज्ञा पुं० (सं०) स्त्रियों की माँग ।
सीमंतिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) स्त्री, नारी ।
सीमांत-संज्ञा पुं० सीमा, जहाँ सीमा खतम हो, सरहद ।
सीमा-संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी प्रदेश के फैलाव की अन्तिम रेखा, हद ।
सीमाबद्ध-संज्ञा पुं० (सं०) जो सीमा से घिरा हो ।
सीमोल्लंघन-संज्ञा पुं० (सं०) सीमा से बाहर चला जाना । कुल आदि की मर्य्यादा के विरुद्ध काम करना ।
सीरा-संज्ञा पुं० शक्कर का पकाकर गाढ़ा किया गया रस, चाशनी ।
सील-संज्ञा स्त्री० गीलापन, नमी । संज्ञा पुं० देखिए 'शील' ।
सीवन-संज्ञा पुं० सीने का काम, सिलाई ।
सुँघनी-संज्ञा स्त्री० तम्बाकू की बुकनी जो सूँघी जाती है ।
सुंदर-वि० जो देखने में अच्छा लगे । बढ़िया ।
सुंदरता-संज्ञा स्त्री० सौंदर्य, सुंदर होना, खूबसूरती ।
सुंदरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) सुन्दर स्त्री ।

सु-उपसर्ग (सं०) एक उपसर्ग जो संज्ञा के पहले लगकर 'अच्छा' का मतलब देता है। वि० उत्तम, अच्छा। भला। सर्व० वह। सो।
सुकंठ-वि० (सं०) जिसका कंठ अच्छा हो। सुरीला।
सुकर-वि० (सं०) सुसाध्य, सरल।
सुकर्म-संज्ञा पुं० सत्कर्म, अच्छा काम।
सुकर्मी-वि० जो अच्छा काम करे, सदाचारी, पुण्यवान्।
सुकी-संज्ञा स्त्री० तोते की मादा, तोती।
सुकुमार-वि० (सं०) बहुत कोमल, नाजुक।
सुकुमारता-संज्ञा स्त्री० कोमलता। कोमल होना। नजाकत।
सुकुमारी-वि० (सं०) कोमल अंगोंवाली।
सुकृत-संज्ञा पुं० सत्कार्य, पुण्य, दान।
सुकृती-वि० अच्छे काम करनेवाला, भाग्यवान्, बुद्धिमान्।
सुकेशी-संज्ञा स्त्री० (सं०) अच्छे, सुन्दर बालोंवाली स्त्री।
सुख-संज्ञा पुं० (सं०) आराम। दुःख का उलटा।
सुखकंद, सुखकंदन-वि० सुख देनेवाला, सुखद।
सुखकर, सुखकारक-वि० सुखदायक, सुख देनेवाला, सुखद।
सुखकारी- वि० सुख देनेवाला।
सुखद-वि० (सं०) सुख देनेवाला, [illegible]दायी।
सुखदाई, सु[illegible]ता-वि० आनन्द देनेवाला, सु[illegible]द।
सुखदायक, सुखदायी-वि० सुख देनेवाला, सुखद।
सुखधाम-संज्ञा पुं० (सं०) सुख का घर, स्वर्ग।
सुखपूर्वक-क्रि० वि० (सं०) सुख से। आराम के साथ।
सुखप्रद-वि० (सं०) सुख देनेवाला, सुखद।
सुखसाध्य-वि० (सं०) जो आसानी से किया जा सके, सहज।
सुखांत-संज्ञा पुं० (सं०) नाटक-उपन्यास आदि की ऐसी कहानी जो सुख की घटना से समाप्त हो।
सुखासन-संज्ञा पुं० पालकी, डोली। आराम देनेवाला आसन।
सुखी-वि० जिसे सुख हो। खुश।
सुख्याति-संज्ञा स्त्री० प्रशंसा, बड़ाई, यश।
सुगंध-संज्ञा स्त्री० खुशबूदार, अच्छी महक, खुशबू।
सुगंधित-वि० अच्छी महकवाला।
सुगत-संज्ञा पुं० बुद्ध भगवान्।
सुगति-संज्ञा स्त्री० (सं०) मरने के बाद मिलनेवाली अच्छी अवस्था, मोक्ष।
सुगम-वि० (सं०) जिसे आसानी से जाना जा सके, सरल, सहज।
सुगमता-संज्ञा स्त्री० सरलता। आसानी।
सुग्गा-संज्ञा पुं० तोता।

सुघटित-वि० अच्छी तरह से बना।
सुघड़-वि० सुन्दर। किसी काम को अच्छी तरह कर सकनेवाला, निपुण।
सुघड़ाई-संज्ञा स्त्री० सुंदरता। निपुणता।
सुघड़ता, सुघड़पन-संज्ञा स्त्री० पुं० सुडौलपन, निपुणता, कुशलता।
सुचारु-वि० (सं०) बहुत सुन्दर।
सुजन-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छा व्यक्ति, सज्जन। संज्ञा पुं० परिवार के लोग।
सुजात-वि० (सं०) अच्छे कुल का। सुन्दर।
सुजान-वि० सच्चरित्र। निपुण। सज्जन।
सुझाना-क्रि० स० दिखाना।
सुडौल-वि० अच्छे डील-डौल का, सुन्दर आकृति का।
सुत-संज्ञा पुं० (सं०) पुत्र, बेटा।
सुतनु-वि० (सं०) सुन्दर शरीर-वाला।
सुतरां-अव्य० इसलिए। और भी।
सुतली-संज्ञा स्त्री० डोरी। सुतरी।
सुता-संज्ञा स्त्री० (सं०) पुत्री, कन्या, बेटी।
सुथनी-संज्ञा स्त्री० (देश०) स्त्रियों का एक प्रकार का ढीला पायजामा, पिंडालू, रतालू।
सुथरा-वि० साफ, निर्मल।
सुथराई-संज्ञा स्त्री० सफाई।
सुथरापन-संज्ञा पुं० सफाई, स्वच्छता।
सुदर्शन-संज्ञा पुं० (सं०) विष्णु का चक्र। वि० देखने में अच्छा, सुंदर, मनोहर।
सुदिन-संज्ञा पुं० अच्छा दिन। शुभ दिन।
सुदी-संज्ञा स्त्री० किसी माह का शुक्ल पक्ष।
सुदूर-वि० (सं०) बहुत दूर।
सुदृढ़-वि० (सं०) बहुत मजबूत।
सुदेश-संज्ञा पुं० (सं०) सुन्दर देश।
सुध-संज्ञा स्त्री० ख्याल, याद। स्मरण, स्मृति, चेतना।
सुधन्वा-संज्ञा पुं० अच्छा तीर चलानेवाला।
सुधरना-क्रि० अ० बिगड़ी या गलत चीज को बनाना।
सुधांशु-संज्ञा पुं० कपूर, चन्द्रमा।
सुधा-संज्ञा स्त्री० अमृत, मकरंद। गंगा, दूध, जल, पृथ्वी।
सुधाकर-संज्ञा पुं० (सं०) चन्द्रमा।
सुधारक-संज्ञा पुं० जो गलतियों को ठीक करता हो। संशोधक।
सुधि-संज्ञा स्त्री० देखिए 'सुध'।
सुधी-संज्ञा पुं० पण्डित, विद्वान्। वि० बुद्धिमान्।
सुनहरा-वि० सोने का।
सुनहला-वि० सोने के रंग का।
सुनाम-संज्ञा पुं० यश, कीर्ति।
सुनीति-संज्ञा स्त्री० (सं०) अच्छी सलाह। ध्रुव की माता।
सुन्न-वि० बिना जीवन का, निर्जीव। संज्ञा पुं० शून्य, सिफर, सुन्ना।

सुन्नत-संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसलमानों में लड़के की लिंगेन्द्रिय के आगे का चमड़ा काट देने की रस्म।

सुन्नी-संज्ञा पुं० (अ०) एक मुसलमानी मत।

सुपक्व-वि० (सं०) जो अच्छी तरह पका हो।

सुपच-वि० जो शीघ्र पचे। संज्ञा पुं० श्वपच, चाण्डाल, डोम।

सुपथ-संज्ञा पुं० सन्मार्ग, अच्छा रास्ता।

सुपर्ण-संज्ञा पुं० पक्षी, चिड़िया, गरुड़।

सुपात्र-संज्ञा पुं० (सं०) किसी काम के लिए उपयुक्त व्यक्ति।

सुपास-संज्ञा पुं० देश० सुविधा। आराम।

सुपुर्द-संज्ञा पुं० किसी के अधिकार में दे देना।

सुपूत-संज्ञा पुं० अच्छा पुत्र।

सुप्त-वि० (सं०) सोया हुआ।

सुप्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) नींद। उँघाई।

सुप्रतिष्ठित-वि० (सं०) अच्छी प्रतिष्ठावाला, माननीय।

सुप्रसिद्ध-वि० (सं०) बहुत मशहूर। अति विख्यात।

सुबूत-संज्ञा पुं० (अ०) जिससे कोई बात साबित हो, प्रमाण।

सुबोध-वि० (सं०) आसानी से समझ में आनेवाली बात।

सुभग-वि० (सं०) सुंदर, मनोहर, प्रिय, भाग्यवान्।

सुभगा-वि० स्त्री० सुन्दर स्त्री। हल्दी, तुलसी, कस्तूरी, बेला।

सुभट-संज्ञा पुं० (सं०) बड़ा योद्धा।

सुभद्रा-संज्ञा स्त्री० (सं०) अर्जुन की पत्नी।

सुभाषित-वि० (सं०) अच्छी तरह कहा हुआ। सूक्ति।

सुभीता-संज्ञा पुं० (देश०) सुगमता, आसानी। ठीक समय, सुयोग।

सुमंत्र-संज्ञा पुं० (सं०) राजा दशरथ का मंत्री और सारथी।

सुमत-संज्ञा स्त्री० सुमति।

सुमति-संज्ञा स्त्री० सुबुद्धि, अच्छी बुद्धि, प्रार्थना, सारिका।

सुमन-संज्ञा पुं० फूल।

सुमनस-संज्ञा पुं० फूल। देवता। वि० प्रसन्न-चित्त, खुश।

सुमरनी-संज्ञा स्त्री० ईश्वर का नाम जपने की दानों की माला।

सुमुख-संज्ञा पुं० (सं०) शिव। वि० अच्छे मुखवाला, सुन्दर।

सुमुखी-संज्ञा स्त्री० (सं०) सुन्दर मुखवाली स्त्री, प्रसन्न, कृपालु।

सुमेर-संज्ञा पुं० सुमेरु पहाड़।

सुमेरु-संज्ञा पुं० (सं०) पुराणानुसार सोने का एक पर्वत। जपने की माला का सब से बड़ा और प्रधान दाना, शिव, उत्तरी ध्रुव।

सुयश-संज्ञा पुं० (सं०) कीर्ति, यश, शोहरत। सुकीर्ति, अच्छा यश।

सुयोग-संज्ञा पुं० संयोग, अच्छा मौका।

सुयोग्य-वि० (सं०) लायक।

सुयोधन-संज्ञा पुं० दुर्योधन ।

सुरंग-वि० (सं०) अच्छे रंग का, सुन्दर। संज्ञा स्त्री० जमीन के नीचे खोदकर बनाया गया गुप्त रास्ता। सेंध।

सुर-संज्ञा पुं० देवता, सूर्य । संज्ञा पुं० स्वर, ध्वनि ।

सुरक्षित-वि० (सं०) अच्छी तरह देख-भाल कर रखा हुआ ।

सुरखाब-संज्ञा पुं० (फा०) चकवा।

सुरगुरु-संज्ञा पुं० (सं०) देवताओं के गुरु, बृहस्पति।

सुरचाप-संज्ञा पुं० इन्द्रधनुष ।

सुरत-संज्ञा पुं० रतिक्रीड़ा, संभोग, मैथुन। संज्ञा स्त्री०ध्यान, याद।

सुरतरु-संज्ञा पुं० (सं०) कल्पवृक्ष।

सुरति-संज्ञा स्त्री० संभोग, मैथुन। संज्ञा स्त्री० स्मरण, सुध, चेत, सूरत ।

सुरदीर्घिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) आकाशगंगा । मन्दाकिनी ।

सुरद्रुम-संज्ञा पुं० (सं०) कल्पवृक्ष ।

सुरधाम-संज्ञा पुं० स्वर्ग।

सुरधुनी-संज्ञा स्त्री० मंदाकिनी, गंगा ।

सुरधेनु-संज्ञा स्त्री० कामधेनु ।

सुरनदी-संज्ञा स्त्री० (सं०) गंगा। आकाशगंगा ।

सुरपति-संज्ञा पुं० देवराज इन्द्र।

सुरपथ-संज्ञा पुं० (सं०) आकाश ।

सुरपुर-संज्ञा पुं० अमरावती ।

[illegible]-संज्ञा स्त्री० [illegible]

सुरभि-संज्ञा पुं० सुगन्ध, वसंत। संज्ञा स्त्री० खुशबू।

सुरभित-वि० (सं०) खुशबूदार, सुगंधित।

सुरभी-संज्ञा स्त्री० चन्दन, सुगन्ध, गाय ।

सुरमा-संज्ञा पुं० एक खनिज पदार्थ जिसका चूर्ण आँखों में लगाया जाता है।

सुरम्य-वि० (स०) बहुत सुंदर ।

सुरराज-संज्ञा पुं० सुरपति, इन्द्र ।

सुरलोक-संज्ञा पुं० (सं०) स्वर्ग।

सुरवधू-संज्ञा स्त्री० (सं०) अप्सरा।

सुरवृक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) कल्पतरु।

सुरसदन-संज्ञा पुं० (सं०) स्वर्ग।

सुरसर-संज्ञा पुं०(सं०) मानसरोवर। संज्ञा स्त्री० गंगा, सुरसरि।

सुरसरि, सुरसरी-संज्ञा स्त्री० गंगा ।

सुरांगना-संज्ञा स्त्री० (सं०) देवताओं की पत्नी। अप्सरा ।

सुरा-संज्ञा स्त्री० (सं०) शराब।

सुराग-संज्ञा पुं० बहुत प्रेम। अच्छा, सुन्दर राग। संज्ञा पुं० टोह, पता।

सुरापान-संज्ञा पुं० (सं०) शराब पीना।

सुरापात्र-संज्ञा पुं० (सं०) जिस बरतन में शराब पी जाय।

सुरारि-संज्ञा पुं० असुर, राक्षस, देवताओं के दुश्मन।

सुरासुर-संज्ञा पुं० (सं०) सुर और असुर। दानव और देवता।

सुरी-संज्ञा स्त्री० (सं०) देवपत्नी,

देवांगना ।
सुरीला-वि० मीठे और मधुर स्वर-वाला, सुस्वर।
सुरुचि-संज्ञा स्त्री० (सं०) ध्रुव की सौतेली माता। उत्तम रुचि या इच्छा।
सुरूप-वि० (सं०) अच्छे रूप का, सुन्दर। खूबसूरत। संज्ञा पुं० शिव, एक असुर का नाम।
सुर्ख़-वि० (फा०) लाल। संज्ञा पुं० गहरा लाल रंग।
सुर्ख़रू-वि० (फा०) तेजवान्।
सुलक्षण-वि० (सं०) जिसके लक्षण अच्छे हों। भाग्यवान्। संज्ञा पुं० शुभ लक्षण या चिह्न।
सुलक्षणा-वि० स्त्री० (सं०) अच्छे लक्षणोंवाली स्त्री। भाग्यवान्।
सुलतान-संज्ञा पुं० (फा०) सम्राट्, बादशाह, राजा।
सुलफा-संज्ञा पुं० चरस।
सुलभ-वि० जो आसानी से मिल सके, सुगम।
सुलह-संज्ञा स्त्री० (अ०) मेल। लड़ाई के बाद आपसी समझौता।
सुलहनामा-संज्ञा पुं० वह पत्र जिस पर लिखी शर्तों को मानकर सुलह की जाय, संधिपत्र।
सुलेखक-संज्ञा पुं० (सं०) जो अच्छा लेख लिखे।
सुलेमान-संज्ञा पुं० (फा०) यहूदियों का एक ज्ञानी बादशाह।
सुवर्ण-संज्ञा पुं० सोना। कांचन। धतूरा। वि० अच्छे रंग का।
सुवास-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छी गंध, खुशबू, सुंदर घर।
सुवासित-वि० (सं०) खुशबूदार।
सुविचार-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छा विचार। अच्छा फ़ैसला।
सुशिक्षित-वि० (सं०) खूब पढ़ा-लिखा। उत्तम रूप से शिक्षित।
सुशोभन-वि० (सं०) बहुत शोभा-वाला, सुन्दर।
सुशोभित-वि० (सं०) बहुत शोभा-वाला, अत्यन्त शोभायमान।
सुषुप्ति-संज्ञा स्त्री० गहरी नींद।
सुषुम्ना-संज्ञा स्त्री० (सं०) पीठ के बीच में स्थित नाड़ी।
सुष्ठु-क्रि० वि० (सं०) अच्छी तरह। वि० सुन्दर।
सुसज्जित-वि० (सं०) अच्छी तरह सजा-सजाया।
सुसताना-क्रि० अ० आराम करना।
सुसराल-संज्ञा स्त्री० ससुर का घर।
सुसाध्य-वि० (सं०) जो आसानी से किया जा सके।
सुस्त-वि० (फा०) ढीला। मंद। निस्तेज। उदास। आलसी।
सुस्ती-संज्ञा स्त्री० सुस्त होना। आलस। उदासी। कमजोरी।
सुस्थिर-वि० (सं०) अपनी जगह पर ठहरा हुआ, अविचल।
सुस्वादु-वि० (सं०) अच्छे स्वाद का।
सुहाग-संज्ञा पुं० स्त्री की विवाहित अवस्था।
सुहागिन, सुहागिनी-संज्ञा स्त्री०

वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा।
सुहावना-वि० जो देखने में भला लगे।
सुहृत, सुहृद्-संज्ञा पुं० बन्धु, सखा, मित्र।
सूंड़-संज्ञा स्त्री० हाथी की लटकती हुई लम्बी नाक। शुण्ड।
सूकर-संज्ञा पुं० शूकर, सुअर।
सूक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) अच्छा कथन।
सूक्ष्म-वि० (सं०) बहुत छोटा या महीन।
सूक्ष्मता-संज्ञा स्त्री० (सं०) बारीकी। छोटापन।
सूक्ष्मदर्शिता-संज्ञा स्त्री० (सं०) बहुत छोटी और बारीक बात को सोचने-समझने का गुण।
सूक्ष्मदर्शी-वि० जो किसी महीन या बारीक बातों को समझने वाला।
सूखा-वि० जिसका पानी निकल गया हो। संज्ञा पुं० पानी न बरसना। जलहीन स्थान।
सूचक-वि० (सं०) बताने या सूचना देनेवाला। संज्ञा पुं० दरजी।
सूचना-संज्ञा स्त्री० (सं०) बताने या जताने के लिए कही गयी बात, विज्ञापन। क्रि० अ० बतलाना।
सूचित-वि० (सं०) जो बताया या सूचित किया गया हो, विज्ञापित।
सूचि-संज्ञा स्त्री० सूई, केवड़ा, मेदिया, सफेद कुश, केतकी।
सूचीपत्र-संज्ञा पुं० (सं०) वह पत्र जिसमें बहुत सी चीजों की नामा-वली हो।
सूजाक-संज्ञा पुं० (फा०) मूत्रेन्द्रिय का एक रोग। प्रमेह रोग।
सूझ-संज्ञा स्त्री० दृष्टि, नजर। उद्भावना।
सूत-संज्ञा पुं० रेशम, रुई, ऊन आदि का महीन तार, तागा। संज्ञा पुं० सारथि, बढ़ई, सूत्रकार।
सूतक-संज्ञा पुं० (सं०) जन्म। अपवित्रता।
सूतपुत्र-संज्ञा पुं० (सं०) रथ हाँकने-वाला, सारथी। कर्ण।
सूतिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसने हाल ही पुत्र जना हो।
सूतिकागार, सूतिकागृह-संज्ञा पुं० (सं०) जहाँ स्त्री सन्तान उत्पन्न करे, प्रसवगृह, सौरी।
सूत्र-पुं० (सं०) सूत, तागा, जनेऊ। यज्ञोपवीत, व्यवस्था, कारण, मूल, पता। जिस जरिये से कोई पता लगे।
सूत्रकार-संज्ञा पुं० (सं०) जिसने सूत्र लिखे हों, बढ़ई, जुलाहा।
सूत्रपात-संज्ञा पुं० आरंभ, शुरू।
सूद-संज्ञा पुं० (फा०) ब्याज।
सूदन-वि० (सं०) नाश करने-वाला।
सूनापन-संज्ञा पुं० सूना होना, सन्नाटा।
सूनु-संज्ञा पुं० पुत्र, बेटा, छोटा भाई।
सूफी-संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वर और भक्त को एक माननेवाला एक मुसलमान संप्रदाय।

सूबा-संज्ञा पुं० (फा०) देश का कोई प्रदेश या प्रांत।
सूबेदार-संज्ञा पुं० किसी सूबे का मालिक।
सूम-वि० कंजूस। कृपण।
सूर-संज्ञा पुं० (सं०) सूरज। सूरदास कवि। अंधा। संज्ञा पुं० बहादुर।
सूरज-संज्ञा पुं० सूर्य।
सूरत-संज्ञा स्त्री० (फा०) शक्ल। दशा, अवस्था।
सूरदास-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध भक्त महाकवि जो कृष्ण-भक्त थे।
सूरमा-संज्ञा पुं० वीर, योद्धा।
सूर्य-संज्ञा पुं० (सं०) सूरज। आक।
सूर्यकान्त-संज्ञा पुं० सूर्यमणि।
सूर्य ग्रहण-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य का चन्द्रमा की छाया में आने के कारण छिपना।
सूर्यमुखी-संज्ञा पुं० एक पीले रंग का फूल।
सूर्य वंश-संज्ञा पुं० (सं०) क्षत्रियों के दो प्रधान कुलों में एक।
सूर्यास्त-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य का डूबना।
सूर्योदय-संज्ञा पुं० (सं०) सूर्य का निकलने का समय, प्रातःकाल।
सूली-संज्ञा स्त्री० प्राणदण्ड की एक प्राचीन प्रथा, शूली, फाँसी।
सृजन-संज्ञा पुं० बनाना, निर्माण। सृष्टि।
सृजनहार-संज्ञा पुं० बनानेवाला, सृष्टिकर्ता।
सृष्टि-संज्ञा स्त्री० निर्माण, रचना, बनावट। दुनिया का पैदा होना। उत्पत्ति।
सृष्टिकर्ता-संज्ञा पुं० संसार को बनानेवाला, ईश्वर।
सृष्टिविज्ञान-संज्ञा पुं० (सं०) वह विज्ञान जिसमें सृष्टि के बनने के बारे में अध्ययन हो।
सेंत-मेंत-क्रि० वि० योंही। मुफ्त में।
सेक-संज्ञा पुं० (सं०) सिचाई। छिड़काव, छींटा, अभिषेक।
सेठ-संज्ञा पुं० बड़ा महाजन। मालदार।
सेतु-संज्ञा पुं० मेंड़ पुल। बाँध।
सेनाध्यक्ष-संज्ञा पुं० (सं०) सेना का मालिक, सेनापति।
सेनानायक-संज्ञा पुं० (सं०) सेना का मालिक, सेनापति।
सेनानी-संज्ञा पुं० (सं०) सेनापति।
सेनापति-संज्ञा पुं० (सं०) सेना का अफसर, सेनानायक।
सेनापाल-संज्ञा पुं० सेनापति।
सेर-संज्ञा पुं० सोलह छटांक की तौल, मन का चालीसवाँ भाग।
सेवन-संज्ञा पुं० प्रयोग, देखभाल, खिदमत, सेवा। काम में लाना।
सेवा-संज्ञा स्त्री० टहल, दूसरों का काम करना, नौकरी।
सेविका-संज्ञा स्त्री० (सं०) सेवा करनेवाली, परिचारिका, दासी।
सेवित-वि० (सं०) जिसकी सेवा की जाय। जिसे काम में लाया जाय।

सेव्य-वि० (सं०) जिसकी सेवा करनी चाहिए।
सेश्वर-वि० (सं०) ईश्वर के साथ।
सेहत-संज्ञा स्त्री० (अ०) सुख। स्वास्थ्य। आरोग्य।
सेहरा-संज्ञा पुं० विवाह में दूल्हे को पहनाया जानेवाला मौर।
सैंधव-संज्ञा पुं० (सं०) सेंधा नमक। सिंध देश का घोड़ा।
सैद्धान्तिक-संज्ञा पुं० (सं०) सिद्धांत जाननेवाला। वि० सिद्धान्त-संबंधी।
सैन-संज्ञा स्त्री संकेत, इंगित, चिह्न।
सैनिक-संज्ञा पुं० फौजी, सिपाही।
सैन्य-संज्ञा पुं० (सं०) फौज। सिपाही। वि० फौज का।
सैर-संज्ञा स्त्री० (फा०) मन बहलाने को इधर-उधर घूमना। भ्रमण।
सैलानी-वि० मनमाना घूमनेवाला, आनन्दी, मनमौजी।
सैलाब-संज्ञा पुं० (फा०) बाढ़।
सोंटा-संज्ञा पुं० डंडा, लाठी।
सोंधा-वि० खुशबूदार।
सोऽहम्-एक वाक्य जिसका अर्थ है, वही मैं हूँ, अर्थात् मैं ब्रह्म हूँ। यह वेदान्तियों का सिद्धांत है।
सोख्ता-संज्ञा पुं० (फा०) स्याही सोखनेवाला कागज, ब्लाटिंग पेपर।
सोच-संज्ञा पुं० चिन्ता, फिक्र। रंज। दुःख, पश्चात्ताप।
सोच-विचार-संज्ञा पुं० मनन करना। किसी बात पर ध्यान से सोचना
गौर।
सोता-संज्ञा पुं० जहां से लगातार पानी बहे, झरना, नहर।
सोदर-संज्ञा पुं० सगा भाई।
सोपान-संज्ञा पुं० सीढ़ी।
सोम-संज्ञा पुं० स्वर्ग, एक लता जिसका मादक रस प्राचीन काल में पिया जाता था, चन्द्रमा।
सोमवंश-संज्ञा पुं० (सं०) क्षत्रियों का एक वंश, चंद्रवंश।
सोमसुत-संज्ञा पुं० (सं०) बुध।
सोहन-वि० शोभन, अच्छा लगनेवाला, सुन्दर।
सोहना-क्रि० अ० अच्छा लगना।
सोहबत-संज्ञा स्त्री० (अ०) साथ। संभोग।
सोहाग-संज्ञा पुं० सुहाग, सौभाग्य।
सोहनी-वि० स्त्री० सुहावनी। संज्ञा स्त्री० झाड़ू, बुहारी।
सौंदर्य-संज्ञा पुं० (सं०) सुन्दरता, खूबसूरती।
सौंह-संज्ञा स्त्री० कसम, शपथ।
सौकुमार्य-संज्ञा पुं० सुकुमारता, यौवन, कोमलता।
सौख्य-संज्ञा पुं० आनंद। सुख। सुखत्व।
सौगंध-संज्ञा स्त्री० कसम, शपथ।
सौजन्य-संज्ञा पुं० (सं०) सुजनता, भलमनसी।
सौत-संज्ञा स्त्री० किसी व्यक्ति की दूसरी पत्नी या प्रेमिका।
सौदागर-संज्ञा पुं० (फा०) व्यापार

करनेवाला, व्यापारी।
सौदामनी, सौदामिनी–संज्ञा स्त्री० बिजली, विद्युत।
सौभद्र-संज्ञा पुं० (सं०) सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु।
सौभाग्य-संज्ञा पुं० (सं०) अच्छा भाग्य, कुशल, क्षेम, अनुराग, सुख। सुहाग।
सौभाग्यवती-वि० स्त्री० (सं०) जिस स्त्री का पति जीवित हो, सधवा, सुहागिन।
सौम्य-वि० (सं०) शान्त, सुशील। सुंदर।
सौर-वि० (सं०) सूर्योपासक।
सौरभ-संज्ञा पुं० सुगन्ध। खुशबू। केसर। आम।
सौरी-संज्ञा स्त्री० जिस स्थान पर स्त्री बच्चा जनती है।
सौष्ठव-संज्ञा पुं० उपयुक्तता, सुडौलपन, सुन्दरता।
सौहार्द, सौहार्द्य-संज्ञा पुं० (सं०) सुहृद होना, मित्रता, मैत्री।
स्कंद-संज्ञा पुं० कार्तिकेय, शिव के पुत्र और देवताओं के सेनापति, उछलना।
स्कंध-संज्ञा पुं० कन्धा, वृक्ष का तना।
स्कंधावार-संज्ञा पुं० (सं०) राजा का डेरा। सेना का डेरा, छावनी।
स्खलित-वि० (सं०) गिरा हुआ। लड़खड़ाया हुआ। चूका हुआ।
स्तंभ-संज्ञा पुं० खंभा, रुकावट।
स्तंभित-वि० (सं०) जो जड़-सा क्रिया-शून्य हो जाय, निस्तब्ध।
स्तन-संज्ञा पुं० (सं०) स्त्रियों की छाती।
स्तनपान-संज्ञा पुं० (सं०) स्तन के दूध को पीना या पिलाना।
स्तनपायी-वि० जो माता के स्तन का दूध पीकर बढ़े।
स्तब्ध-वि० (सं०) जो जड़ की तरह क्रिया-शून्य हो जाय, स्तंभित।
स्तर-संज्ञा पुं० सतह, तह, परत, भूमि का धरातल।
स्तवन-संज्ञा पुं० (सं०) स्तुति या बड़ाई करना।
स्तुति-संज्ञा स्त्री० प्रशंसा, बड़ाई, तारीफ।
स्तुतिपाठक-संज्ञा पुं० चारण, राजाओं आदि की तारीफ पढ़नेवाला, भाट।
स्तुत्य-वि० (सं०) बड़ाई करने योग्य। प्रशंसनीय।
स्तूप-संज्ञा पुं० (सं०) ऊँचा टीला। वह टीला जिसके नीचे किसी बौद्ध महात्मा के स्मृति-चिह्न रखे हों।
स्तेय-संज्ञा पुं० चौर्य, चोरी।
स्त्री-संज्ञा स्त्री० नारी, पत्नी।
स्त्रीधन-संज्ञा पुं० (सं०) वह धन जिस पर स्त्रियों का अधिकार हो।
स्त्रीप्रसंग-संज्ञा पुं० (सं०) मैथुन, संभोग।
स्त्रैण-वि० (सं०) स्त्रियों जैसा व्यवहार करनेवाला।
स्थगित-वि० (सं०) कुछ देर के लिए किसी काम का रोक दिया [illegible]

स्थल-संज्ञा पुं० भूभाग, भूमि, जमीन।
स्थली-संज्ञा स्त्री० जलशून्य भूमि। जगह।
स्थविर-संज्ञा पुं० ब्रह्मा, बुड्ढा, बूढ़ा बौद्ध भिक्षु।
स्थान-संज्ञा पुं० स्थिति, ठहराव। जमीन। डेरा। मौका, अवसर।
स्थानच्युत-वि० (सं०) जो अपनी जगह या पद से हटा दिया गया हो।
स्थानांतर-संज्ञा पुं० (सं०) दूसरा स्थान।
स्थानांतरित-वि० जो एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान नियुक्त किया गया हो।
स्थानापन्न-वि० (सं०) कुछ समय के लिए दूसरे के पद पर अस थायी रूप से काम करनेवाला।
स्थानीय-वि० (सं०) स्थान का। स्थान के योग्य।
स्थापन-संज्ञा पुं० स्थापित करना। जमाना। साबित करना। नया काम शुरू करना। समाधि।
स्थापना-संज्ञा स्त्री० (सं०) बैठाना, जमाना। सिद्ध करना।
स्थायित्व-संज्ञा पुं० (सं०) मजबूती से एक जगह जमा रहना। दृढ़ता, टिकाव, ठहराव।
स्थायी-वि० स्थिर रहनेवाला। बहुत दिनों तक काम देनेवाला।
स्थावर-वि० (सं०) जो एक स्थान से दूसरे पर न आ सके, जड़, अचल। संज्ञा पुं० पहाड़।
स्थित-वि० (सं०) अपनी जगह पर ठहरा हुआ, डटा हुआ। मौजूद।
स्थिति-संज्ञा स्त्री० (सं०) दशा, अवस्था। ठहराव, टिकाव। दर्जा।
स्थिर-वि० (सं०) ठहरा रहने-वाला, निश्चल। अचल।
स्थिरचित्त-वि० (सं०) स्थिर मन-वाला।
स्थिरता-संज्ञा स्त्री० धैर्य, ठह-राव। दृढ़ता, मजबूती। धीरज।
स्थूल-वि० (सं०) मोटा।
स्नातक-संज्ञा पुं० वह जिसने अपना ब्रह्मचर्य-काल समाप्त कर गृह स्थाश्रम में प्रवेश किया हो।
स्नान-संज्ञा पुं० (सं०) नहाना।
स्नानागार-संज्ञा पुं० (सं०) जिस कमरे में नहाया जाय।
स्नायविक-वि० सं० स्नायु-संबंधी।
स्नायु-संज्ञा स्त्री० (सं०) शरीर की वे नसें जिनसे संवेदनाओं का अनु-भव होता है।
स्निग्ध-वि० (सं०) जो घी या तेल से युक्त हो। स्नेहपूर्ण
स्निग्धता-संज्ञा स्त्री० चिकनापन, शीतलता, मधुरता।
स्नेह-संज्ञा पुं० (सं०) प्रेम। तेल।
स्नेहपात्र-संज्ञा पुं०प्रेमपात्र, प्यारा।
स्नेही-संज्ञा पुं० जो स्नेह करे, प्रेमी।
स्पंदन-संज्ञा पुं० (सं०) अंगों का काँपना, फड़कना।
स्पर्धा-संज्ञा स्त्री० संघर्ष, किसी से आगे बढ़ जाने की कोशिश, होड़। बराबरी।

स्पर्श-संज्ञा पुं० (सं०) छूना।
स्पर्शेंद्रिय-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह इंद्रिय जिससे छूने का ज्ञान हो।
स्पष्ट-वि० (सं०) साफ।
स्पष्टतया-क्रि० वि० (सं०) साफ तरह से।
स्पष्टता-संज्ञा स्त्री० (सं०) सफाई।
स्पष्टवक्ता, स्पष्टवादी-संज्ञा पुं० (सं०) हर बात को साफ-साफ कह देनेवाला।
स्पष्टीकरण-संज्ञा पुं० (सं०) किसी छिपी या उलझी बात को साफ करने की क्रिया।
स्पृश्य-वि० (सं०) छूने लायक।
स्पृष्ट-वि० (सं०) छुआ हुआ।
स्पृहा-संज्ञा स्त्री० कामना, इच्छा, चाह।
स्फटिक-संज्ञा पुं० (सं०) एक बहुमूल्य पारदर्शी पत्थर। फिटकरी।
स्फुट-वि० (सं०) खिला हुआ। स्पष्ट, अलग-अलग, फुटकर।
स्फुटित-वि० (सं०) खिला हुआ। स्पष्ट। हँसता हुआ।
स्फुरण-संज्ञा पुं० (सं०) धीरे-धीरे हिलना, फड़कना।
स्फुलिंग-संज्ञा पुं० आग की चिनगारी।
स्फूर्ति-संज्ञा स्त्री० स्फुरण, फड़कना, आवेश, प्रेरणा, उत्तेजना। फुरती।
स्फोट-संज्ञा पुं० (सं०) फूटना।
स्फोटन-संज्ञा पुं० (सं०) फोड़ना।

स्मर-संज्ञा पुं० (सं०) कामदेव।
स्मरण-संज्ञा पुं० स्मृति, याद आना।
स्मरणशक्ति-संज्ञा स्त्री० (सं०) याद रखने की ताकत, याददाश्त।
स्मरणीय-वि० (सं०) याद रखने योग्य।
स्मरारि-संज्ञा पुं० (सं०) कामदेव, स्मर के शत्रु, महादेव।
स्मारक-वि० (सं०) यादगार में बनाई गई चीज।
स्मित-संज्ञा पुं० (सं०) धीमी हँसी।
स्मृति-संज्ञा स्त्री० (सं०) वह शक्ति जिससे कोई बात याद रहे, याददाश्त। हिन्दुओं के धर्मशास्त्र।
स्यंदन-संज्ञा पुं० (सं०) चूना, टपकना, पसीजना, निकलना।
स्यात्-अव्य० (सं०) कदाचित्।
स्याना-वि० चालाक, होशियार।
स्यापा-संज्ञा पुं शोक, रञ्ज।
स्याही-संज्ञा स्त्री० (फा०) काजल; रोशनाई, मषि।
स्रज-संज्ञा स्त्री० फूलों की माला।
स्रष्टा-संज्ञा पुं० सृष्टि को बनानेवाला, ब्रह्मा। वि० बनानेवाला।
स्राव-संज्ञा पुं० क्षरण। बहना। टपकना।
स्रोत-संज्ञा पुं० सोता, झरना।
स्व-वि० (सं०) अपना। आत्मीय।
स्वगत, स्वगतकथन-संज्ञा पुं० (सं०) नाटक में पात्र के बिना किसी को सुनाये बात कहना।
स्वच्छंद-वि० (सं०) [illegible]

किसी का अधिकार न हो, स्वतंत्र। मनमाना काम करनेवाला। क्रि० वि० मनमाना, बेधड़क।
स्वच्छ-वि० (सं०) साफ, स्पष्ट।
स्वच्छता-संज्ञा स्त्री० (सं०) सफाई।
स्वजन-संज्ञा पुं० संबंधी, अपने परिवार के लोग, आत्मीय जन। रिश्तेदार।
स्वजाति-संज्ञा स्त्री० (सं०) अपनी जाति। वि० अपनी जाति का।
स्वजातीय-वि० (सं०) अपनी जाति का। एक ही जाति का।
स्वतंत्र-वि० (सं०) जिस पर किसी का अधिकार न हो, मुक्त, स्वाधीन। बिना किसी बंधन या नियम का, भिन्न, पृथक्।
स्वतंत्रता-संज्ञा स्त्री० स्वाधीनता। आजादी।
स्वतः-अव्य० अपने आप।
स्वत्व-संज्ञा पुं० (सं०) अधिकार, हक, स्वामित्व।
स्वदेश-संज्ञा पुं० (सं०) अपना देश, मातृ-भूमि।
स्वदेशी-वि० अपने देश का।
स्वधर्म-संज्ञा पुं० अपना धर्म।
स्वप्न-संज्ञा पुं० निद्रा, सपना।
स्वभाव-संज्ञा पुं० (सं०) आदत।
स्वभावतः-अव्य० आदत से ही।
स्वभू-संज्ञा पु० (सं०) अपने-आप होनेवाला, ईश्वर, ब्रह्मा।
स्वयंभू-संज्ञा पुं० कामदेव, काल।
स्वयंवर-संज्ञा पुं० (सं०) विवाह में कन्या का स्वयं अपना पति चुन लेने की रीति।
स्वयंवरा-संज्ञा स्त्री० (सं०) जिस स्त्री ने अपनी इच्छा से पति चुन लिया हो।
स्वयंसिद्ध-वि० (सं०) वह बात जिसे सिद्ध करने के लिए किन्हीं तर्कों की जरूरत न हो।
स्वयंसेवक-संज्ञा पुं० (सं०) अपना काम खुद करनेवाला। बिना किसी इच्छा के दूसरे का काम कर देनेवाला।
स्वयमेव-क्रि० वि० (सं०) खुद ही।
स्वर-संज्ञा पुं० स्वर्ग, आवाज।
स्वरभंग-संज्ञा पु० (सं०) आवाज का बैठना, गला बैठना।
स्वराज्य-संज्ञा पुं० (सं०) अपना राज्य।
स्वरूप-संज्ञा पुं० आकृति, शक्ल, आकार।
स्वरूपवान्-वि० अच्छे रूप का, खूबसूरत।
स्वर्ग-संज्ञा पुं० (सं०) जिस लोक में देवता रहते हैं तथा जहाँ लोग मरने पर अच्छी गति पाने के कारण आते हैं। सुख।
स्वर्गगामी-वि० स्वर्ग जानेवाला। मरा हुआ।
स्वर्गलोक-संज्ञा पुं० देवलोक।
स्वर्गवास-संज्ञा पुं० (सं०) मरना।
स्वर्गीय-वि० स्वर्ग का। मरा हुआ।
स्वर्ण-संज्ञा पुं० सुवर्ण, सोना, धतूरा।
स्वर्णकार-संज्ञा पुं० (सं०) सुनार।

स्वर्णगिरि-संज्ञा पुं० (सं०) सुमेरु पहाड़।
स्वर्णमय-वि० (सं०) बिलकुल सोने का।
स्वर्धुनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) गंगा।
स्वर्नदी-संज्ञा स्त्री० स्वर्गंगा।
स्वर्लोक-संज्ञा पुं० (सं०) स्वर्ग।
स्वर्वैद्य-संज्ञा पुं० (सं०) स्वर्ग में देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार।
स्वस्ति-अव्य० (सं०) मंगल हो, शुभ हो। संज्ञा स्त्री० मंगल, शुभ। सुख।
स्वस्थ-वि० (सं०) भला, चंगा, रोगमुक्त, सावधान।
स्वाँग-संज्ञा स्त्री० तमाशा, मजाक। भेस बनाना, नकल करना।
स्वांत-संज्ञा पुं० (सं०) मन।
स्वागत-संज्ञा पुं० (सं०) किसी के आने पर उसका आदर करना।
स्वातंत्र्य-संज्ञा पुं० स्वतंत्रता, आजादी।
स्वाति-संज्ञा स्त्री० (सं०) एक नक्षत्र। सूर्य की पत्नी।
स्वाद-संज्ञा पुं० इच्छा, जायका, कामना, आनन्द।
स्वादिष्ट, स्वादिष्ठ-वि० अच्छे स्वाद का, जायकेदार।
स्वादु-संज्ञा पुं० (सं०) मीठा रस। गुड़। वि० मीठा। स्वादिष्ट।
स्वाधीन-वि० (सं०) अपने अधीन जिस पर किसी अन्य का अधिकार न हो, आजाद।
स्वाधीनता-संज्ञा [illegible] आजादी।
स्वाध्याय-संज्ञा पुं० (सं०) श्रेष्ठ ग्रंथों का अध्ययन, वेद।
स्वाभाविक-वि० (सं०) नैसर्गिक, प्राकृतिक, अपने आप होनेवाला।
स्वामिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) मालकिन, राधिका।
स्वामी-संज्ञा पुं० मालिक। पति। राजा।
स्वायत्त-वि० (सं०) जिस पर किसी का अधिकार न हो, जो अपने अधीन हो, आजाद।
स्वार्थ-संज्ञा पुं अपना उद्देश्य, अपना प्रयोजन, अपना हित या लाभ।
स्वार्थत्याग-संज्ञा पुं० (सं०) अपने लाभ की चिन्ता न करके दूसरे की भलाई करना।
स्वार्थपरता-संज्ञा स्त्री० (सं०) अपने भले के लिए काम करना, खुदगरजी।
स्वार्थी-वि० अपना ही अर्थ देखनेवाला
स्वास्थ्य-संज्ञा पुं० (सं०) तंदुरुस्ती।
स्वास्थ्यकर-वि० (सं०) तंदुरुस्त बनानेवाला। आरोग्यवर्धक।
स्वाहा-अव्य० (सं०) देवताओं के लिए हवन के समय कहा जानेवाला शब्द।
स्वीकार-संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा, ले लेना, ग्रहण करना, मान लेना।
स्वीकृत-वि० (सं०) स्वीकार किया हुआ, परिगृहीत।
स्वीकृति-संज्ञा स्त्री० सम्मति, स्वी- [illegible], रजामंदी।

स्वीय-वि० (सं०) अपना । संज्ञा पुं० आत्मीय, रिश्तेदार ।
स्वेच्छा-संज्ञा स्त्री० अपनी इच्छा ।
स्वेच्छाचार-संज्ञा पुं० (सं०) अपनी इच्छा के अनुसार काम करना, मनमानी ।
स्वेच्छाचारी-वि० अपनी इच्छा के अनुसार काम करनेवाला, मनमाना काम करनेवाला ।
स्वेद-संज्ञा पुं० पसीना, ताप, गरमी।
स्वेदज-वि० (सं०) पसीने से पैदा होनेवाला, जूँ आदि ।
स्वैरिणी-संज्ञा स्त्री० (सं०) व्यभिचारिणी स्त्री ।

हँकार-संज्ञा स्त्री० पुकार ।
हँकारना-क्रि० स० बुलाना, पुकारना, ललकारना, हुंकारना ।
हँसन-संज्ञा स्त्री० हँसना ।
हँसमुख-वि० जो हर समय हँसता हो या प्रसन्न रहनेवाला ।
हँसोड़-वि० जो सदा हँसता हो, मसखरा ।
हंगामा-संज्ञा पुं० शोरगुल, हल्ला । कोलाहल । दंगा ।
हंत-अव्य० (सं०) खेद या दुःख सूचित करनेवाला शब्द ।
हंस-संज्ञा पुं० (सं०) बत्तख का-सा एक जल-पक्षी । सूर्य । आत्मा ।
हंसगामिनी-वि० स्त्री० (सं०) हंस की तरह सुन्दर चालवाली स्त्री ।
हंसवंश-संज्ञा पुं० सूर्य का वंश ।
हंसवाहन-संज्ञा पुं० (सं०) हंस की सवारीवाले, ब्रह्मा ।
हंसवाहिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) हंस की सवारीवाली, सरस्वती ।
हंसिनी-संज्ञा स्त्री० हंस की मादा ।
हंसी-संज्ञा स्त्री० (सं०) हंस की मादा ।
हक-संज्ञा पुं० किसी वस्तु पर अपना कब्जा होना, अधिकार ।
हकदार-संज्ञा पुं० हकवाला या अधिकार रखनेवाला ।
हकीकत-संज्ञा स्त्री० (अ०) सच्चाई, वृत्तांत, हालत, सच बात ।
हकीम-संज्ञा पुं० (अ०) यूनानी रीति से दवा करनेवाला ।
हजम-संज्ञा पुं० (अ०) खाना पचना । वि० पचा हुआ । बेईमानी से ले लिया गया धन ।
हजरत-संज्ञा पुं० (अ०) दरबार । सज्जन । चालाक और खोटा आदमी ।
हज्ज-संज्ञा पुं० मुसलमानों का मक्का जाना, संकल्प ।
हज्जाम-संज्ञा पुं० (अ०) बाल बनानेवाला, नाई ।
हट्टा-कट्टा-वि० खूब मोटा-ताजा, तन्दुरुस्त ।
हठ-पुं० किसी बात के लिए अड़ना, जिद ।
हठधर्मी-संज्ञा स्त्री० बिना सोचे-

विचारे किसी बात के लिए जिद करना, दुराग्रह, कट्टरपन।
हठयोग-संज्ञा पुं० (सं०) योग की क्रियाएँ।
हठी-वि० बहुत हठ करनेवाला, जिद्दी।
हठीला-वि० दृढ़संकल्प। जिद्दी।
हड़ताल-संज्ञा स्त्री० माँग पूरी न करने के कारण काम छोड़ देना।
हड़पना-क्रि० स० खा जाना। किसी की चीज को छल से ले लेना।
हत-वि० (सं०) वध किया हुआ।
हतबुद्धि-वि० (सं०) बुद्धि-विहीन, मूर्ख।
हतभागा, हतभागी-वि० बुरे भाग्य-वाला, बदकिस्मत।
हतभाग्य-वि० (सं०) बुरे भाग्य-का, बदकिस्मत।
हताश-वि० (सं०) आशारहित, निराश।
हताहत-वि० (सं०) मारे तथा घायल किये गये।
हतोत्साह-वि० (सं०) जिसमें कुछ करने का उत्साह न रह गया हो।
हत्यारा-संज्ञा पुं० जिसने किसी को मार डाला हो, हिंसक।
हथकंडा-संज्ञा पुं० गुप्त चाल, चालाकी
हथकड़ी-संज्ञा स्त्री० कैदियों के हाथ में पहिनाया जानेवाला कड़ा।
हथियार-संज्ञा पुं० लड़ाई के औजार, अस्त्र-शस्त्र।

हद-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी चीज की लम्बाई-चौड़ाई और ऊँचाई की अन्तिम रेखा, सीमा।
हनन-संज्ञा पुं० वध, मारण, आघात।
हनु-संज्ञा स्त्री० ठुड्डी, चिबुक, ठोढ़ी।
हनुमंत, हनुमान्-संज्ञा पुं० पंपासर के एक वीर जिन्होंने रामचन्द्र की युद्ध में सहायता की थी।
हफ्ता-संज्ञा पुं० (फा०) सप्ताह।
हबशी-संज्ञा पुं० (फा०) निग्रो जाति का व्यक्ति।
हमजोली-संज्ञा पुं० साथी, मित्र।
हमदर्द-संज्ञा पुं० (फा०) कष्ट या दुःख में सहानुभूति दिखलाने-वाला।
हमदर्दी-संज्ञा स्त्री० (फा०) सहा-नुभूति।
हमल-संज्ञा पुं० (अ०) स्त्री के पेट का बालक, भ्रूण।
हमला-संज्ञा पुं० (अ०) लड़ाई के लिए सेना के साथ चढ़ना, आक्र-मण। वार।
हमवार-वि० (फा०) बराबर सतह का, समतल।
हमेल-संज्ञा स्त्री० सिक्कों की माला।
हम्माम-संज्ञा पुं० (अ०) नहाने का कमरा।
हय-संज्ञा पुं० अश्व, घोड़ा।
हयमेध-संज्ञा पुं० (सं०) एक अश्व-मेध यज्ञ।
हया-संज्ञा स्त्री० (अ०) शर्म, लज्जा।

वाला ।
हरकत-संज्ञा स्त्री० (अ०) हिलना-डोलना । चाल । पाजीपन ।
हरकारा-संज्ञा पुं० (फा०) डाकिया।
हरजाई-संज्ञा पुं० (फा०) आवारा। संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री ।
हरजाना-संज्ञा पुं० (फा०) नुकसान का बदला । क्षतिपूर्ति ।
हरण-संज्ञा पुं० संहार, छीनना, हटाना, लूटना ।
हरनौटा-संज्ञा पुं० हरिन का बच्चा।
हरफ-संज्ञा पुं० (अ०) अक्षर, वर्ण ।
हरम-संज्ञा पुं० (अ०) घर में स्त्रियों के रहने का भाग, अंतःपुर।
हरमजदगी-संज्ञा स्त्री० बदमाशी ।
हरषाना-क्रि० अ० खुश होना । क्रि० स० प्रसन्न करना।
हरसिंगार-संज्ञा पुं० एक प्रकार का फूलों का पेड़ ।
हरामखोर-संज्ञा पुं० हराम का माल खानेवाला । आलसी ।
हरामजादा-संज्ञा पुं० पाजी, दुष्ट । अनुचित संबंध से पैदा पुत्र ।
हरि-संज्ञा पुं० विष्णु । घोड़ा । श्री कृष्ण । वानर ।
हरिकथा-संज्ञा स्त्री० (सं०) ईश्वर की कथा कहना ।
हरिकीर्तन-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर की कीर्ति गाना ।
हरिजन-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर का भक्त । गांधीजी द्वारा दिया गया अछूतों के लिए नाम ।
हरिण-संज्ञा पुं० मृग, हिरन ।

हरिणाक्षी-वि० स्त्री० (सं०) हरिण के-से सुन्दर नेत्रोंवाली स्त्री ।
हरित-वि० (सं०) हरा ।
हरिप्रिया-संज्ञा स्त्री० (सं०) लक्ष्मी।
हरिभक्त-संज्ञा पुं० (सं०) ईश्वर का प्रेमी ।
हरियाली-संज्ञा स्त्री० चारों ओर खूब हरा-भरा होना ।
हरूफ-संज्ञा पुं० अक्षर ।
हर्ज-संज्ञा पुं० (अ०) काम में रुकावट । नुकसान ।
हर्ष-संज्ञा पुं० आनन्द, प्रफुल्लता।
हलकंप-संज्ञा पुं० हलचल। घबराहट ।
हलक-संज्ञा पुं० (अ०) गले की नली ।
हलका-वि० जो भारी न हो।
हलकापन-संज्ञा पुं० हलका होना । तुच्छता, ओछापन, नीचता।
हलचल-संज्ञा स्त्री० घबड़ाहट । गड़बड़, उपद्रव, खलबली, कंप।
हलफनामा-संज्ञा पुं० ईश्वर को साक्षी मानकर कागज पर लिखी गयी बात। शपथ-पत्र।
हलाहल-संज्ञा पुं० बहुत तीव्र विष।
हवन-संज्ञा पुं० होम, किसी देवता के लिए मंत्र पढ़कर अग्नि में सामग्री डालना, अग्निकुण्ड।
हवस-संज्ञा स्त्री० (अ०) लालसा, चाह ।
हवाई-वि० हवा का । हवा से संबद्ध ।

हवालात-संज्ञा स्त्री० (अ०) जहाँ कैदियों को पहरे में रखा जाय, जेल ।

हवास-संज्ञा पुं० (अ०) होश । मानसिक शक्तियाँ।

हवि-संज्ञा पुं० वह पदार्थ जिसकी हवन में आहुति दी जाय।

हसन-संज्ञा पुं० परिहास, हँसी, हसना ।

हसरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) रंज, शोक। भारी इच्छा।

हसीन-वि० (अ०) खूबसूरत ।

हस्त-संज्ञा पुं० (सं०) हाथ । हाथी ।

हस्तकौशल-संज्ञा पुं० (सं०) हाथ से काम करने की कुशलता ।

हस्तक्षेप-संज्ञा पुं० (सं०) किसी काम में हाथ डालना, दखल देना।

हस्तगत-वि० (सं०) हाथ में आया हुआ, प्राप्त ।

हस्तरेखा-संज्ञा स्त्री० (सं०) हाथ में पड़ी रेखाएँ, जिनसे शुभाशुभ विचार किया जाता है।

हस्तलाघव-संज्ञा पुं० (सं०) हाथ की सफाई या फुरती।

हस्तलिखित-वि० (सं०) हाथ का लिखा ।

हस्तलिपि-संज्ञा स्त्री० (सं०) हाथ की लिखावट।

हस्ताक्षर-संज्ञा पुं० (सं०) अपने हाथ से लिखा हुआ अपना नाम, दस्तखत।

हस्तिनी-संज्ञा स्त्री० (सं०) मादा हाथी ।

हस्ती-संज्ञा पुं० हाथी। संज्ञा स्त्री० (फा०) होना, अस्तित्व। ताकत, शक्ति ।

हहा-संज्ञा स्त्री० जोर से हँसना, गिड़गिड़ाने का शब्द, विनती ।

हाकिम-संज्ञा पुं० (अ०) हुकूमत या शासन करनेवाला, मालिक, अफसर ।

हाजमा-संज्ञा पुं० (अ०) भोजन पचाना, पाचन-शक्ति ।

हाजिम-वि० (अ०) भोजन पचानेवाला ।

हाजिर-वि० (अ०) उपस्थित । सामने । मौजूद।

हाजिर-जवाब-वि० (अ०) किसी बात का तत्काल उत्तर दे सकनेवाला, प्रत्युत्पन्न-मति ।

हाट-संज्ञा स्त्री० बाजार। दूकान।

हाटक-संज्ञा पुं० धतूरा, सोना, स्वर्ण ।

हाता-संज्ञा पुं० किसी चीज से घेरा हुआ स्थान ।

हाथापाई-संज्ञा स्त्री० हाथ-पैर की लड़ाई, मुठभेड़, धौलधप्पड़ ।

हाथीखाना-संज्ञा पुं० जहाँ हाथी रखा जाय, फीलखाना ।

हाथीवान-संज्ञा पुं० महावत।

हादसा-संज्ञा पुं० (अ०) बुरी घटना, दुर्घटना ।

हानि-संज्ञा स्त्री० नाश, नुकसान। [illegible] घाटा।

हानिकर, हानिकारक, हानिकारी-वि० (सं०) नुकसान पहुँचानेवाला ।
हाफिज-संज्ञा पुं० (अ०) जिस धार्मिक मुसलमान ने कुरान रटी हो । रक्षा करनेवाला, रक्षक ।
हार्दिक-वि० (सं०) हृदय से निकला हुआ, आंतरिक, सच्चा ।
हाव-संज्ञा पुं० (सं०) शरीर की चेष्टाएँ ।
हावभाव-संज्ञा पुं० (सं०) पुरुषों को आकर्षित करने के लिए बनायी गयी स्त्रियों की चेष्टा ।
हास-संज्ञा पुं० हँसी, उपहास, मजाक ।
हास्य-संज्ञा पुं० हँसना, हँसी ।
हास्यास्पद-संज्ञा पुं० (सं०) जिस का मजाक बनाया, या हँसी उड़ायी जाय ।
हा हंत-अव्य० (सं०) अफसोस ! अफसोस व्यक्त करने का शब्द ।
हिंडोला-संज्ञा पुं० एक प्रकार का लकड़ी का ऊपर-नीचे की ओर घूमनेवाला पालना, झूला ।
हिंदी-वि० (फा०) भारतवर्ष का । संज्ञा पुं० भारतवासी । संज्ञा स्त्री० भारत की राष्ट्र-भाषा, नागरी ।
हिंसक-संज्ञा पुं० (सं०) दूसरे को मार डालनेवाला, हत्यारा । हिंस्र पशु ।
हिंसा-संज्ञा स्त्री० हत्या, दूसरे को मार डालना या हानि पहुँचाना ।
हिंसालु-वि० (सं०) जो हिंसा करे । घातक ।
हिकमत-संज्ञा स्त्री० अ०बुद्धिमानी युक्ति । चाल, छल । हकीमी, वैद्यक ।
हिजड़ा-संज्ञा पुं० नपुंसक ।
हिजरी-संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानी संवत् जो मुहम्मद साहब के मक्के से भागने के दिन से लगता है ।
हिज्जे-संज्ञा पुं० किसी शब्द के प्रत्येक अक्षर को क्रमशः कहना, स्पेलिंग ।
हित-संज्ञा पुं० भलाई, लाभ । मित्र । रिश्तेदार । अव्य० के लिए, वास्ते ।
हितकर, हितकारक-संज्ञा पुं० (सं०) भलाई करनेवाला । फायदेमंद ।
हितकारी-वि० कल्याण करनेवाला ।
हितचिंतक-संज्ञा पुं० (सं०) जो भलाई चाहे, खैरख्वाह ।
हिताहित-संज्ञा पुं० (सं०) हित और अहित, भलाई-बुराई ।
हिती, हितू-संज्ञा पुं० भलाई चाहनेवाला, मित्र, सम्बन्धी, स्नेही ।
हितैषी-वि० भला चाहनेवाला, खैरख्वाह ।
हिदायत-संज्ञा स्त्री० (अ०) शिक्षा, सीख ।
हिफाजत-संज्ञा स्त्री० (अ०) रक्षा । देखभाल । रखवाली ।
हिम-संज्ञा पुं० पाला । बर्फ ।

चन्द्रमा । वि० ठंडा ।

हिम-उपल-संज्ञा पुं० (सं०) ओला।

हिमभानु-संज्ञा पुं० (सं०) चन्द्रमा ।

हिमवत्, हिमवान्-वि० बर्फवाला।

हिमांशु-संज्ञा पुं० कपूर, चन्द्रमा।

हिमा- संज्ञा स्त्री० छोटी इलायची, रेणुका, मूली ।

हिमायत-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी का पक्ष लेना, समर्थन।

हिमायती-वि० (फा०) किसी का पक्ष लेनेवाला, समर्थक ।

हिमालय-संज्ञा पुं० (सं०) भारत-वर्ष के उत्तर में दुनिया का सबसे ऊँचा पहाड़ ।

हिय-संज्ञा पुं० हृदय । छाती ।

हिरासत-संज्ञा स्त्री० (अ०) पहरा। कैद ।

हिर्स-संज्ञा स्त्री० (अ०) लालच, लोभ ।

हिलकोर,हिलकोरा-संज्ञा पुं० लहर।

हिलोरना-क्रि० स० पानी में लहर उठाना हिलाना, डुलाना, लहराना।

हिलोल-संज्ञा पुं० लहर ।

हिल्लोल-संज्ञा पुं० हिलोरा, लहर, खुशी ।

हिसाब-संज्ञा पुं० (अ०) गणित । आय-व्यय का ब्योरा ।

हिसाब-किताब-संज्ञा पुं० (अ०) आय-व्यय का ब्योरा । चाल, रीति ।

हींस-संज्ञा स्त्री० घोड़े या गधे की आवाज, रेंकना, हिनहिनाहट ।

हीन-वि० (सं०) छोड़ा हुआ ।

शून्य, वंचित । छोटा, तुच्छ ।

हीनता-संज्ञा स्त्री० क्षुद्रता, नीचता। तुच्छता, छोटापन । बुराई ।

हीनत्व-संज्ञा पुं० तुच्छता, हीनता ।

हीनवीर्य्य-संज्ञा पु० (सं०) शरीर से कमजोर ।

हीर-संज्ञा पुं० मोती की माला, बिजली ।

हीरक-संज्ञा पुं० (सं०) हीरा ।

हीरा-संज्ञा पु० एक बहुमूल्य पत्थर या रत्न, अति उत्तम वस्तु ।

हीरामन-संज्ञा पुं० एक कल्पित तोते की जाति जिसका रंग सोने का है ।

हुंकार-संज्ञा पुं० (सं०) गरज । ललकार ।

हुकूमत-संज्ञा स्त्री० (अ०) शासन, राज्य अधिकार ।

हुक्का-पानी-संज्ञा पुं० बिरादरी में खानपान, व्यवहार ।

हुक्काम-संज्ञा पुं० हाकिम लोग ।

हुक्म-संज्ञा पुं० (अ०) आज्ञा ।

हुजूम-संज्ञा पुं० (अ०) भीड़ ।

हुज्जत-संज्ञा स्त्री० (अ०) दलील, तकरार, बहस ।

हुज्जती-वि० हुज्जत करनेवाला ।

हुनर-संज्ञा पुं० (फा०) कारीगरी, करतब ।

हुनरमंद-वि० (फा०) जो कोई हुनर जानता हो, कला-कुशल ।

हुलसी-संज्ञा स्त्री० हुलास, खुशी । तुलसीदास की माँ ।

हुलास-संज्ञा पुं० उल्लास, आनंद ।

संज्ञा स्त्री० सुंघनी ।
हुलिया-संज्ञा पुं० किसी मनुष्य के शरीर की बनावट, शक्ल ।
हुल्लड़-संज्ञा पुं० उपद्रव ।
हूर-संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसलमानों के अनुसार स्वर्ग की अप्सरा ।
हूश-वि० अशिष्ट, असभ्य, गँवार ।
हृत्कंप-संज्ञा पुं० (सं०) हृदय की धड़कन । जी दहलना ।
हृत्पिंड-संज्ञा पुं० (सं०) कलेजा ।
हृद्-संज्ञा पुं० हृदय, दिल मन ।
हृदयंगम-वि० (सं०) अच्छी तरह समझा या याद किया हुआ ।
हृदय-संज्ञा पुं० मन, छाती के बाईं ओर वह भाग जहाँ रक्त साफ होता है, दिल, कलेजा ।
हृदयग्राही-संज्ञा पुं० मन को लुभा लेनेवाला ।
हृदयविदारक-वि० (सं०) हृदय में दुःख, शोक, दया आदि पैदा करनेवाला ।
हृदयवेधी-वि० मन पर प्रभाव डालनेवाला । बहुत बुरा लगनेवाला ।
हृदयस्पर्शी-वि० हृदय को छू लेने या उस पर प्रभाव डालनेवाला ।
हृदयहारी वि० मन को हरने या मोहनेवाला । जी को लुभानेवाला ।
हृदयेश, हृदयेश्वर-संज्ञा पुं० प्रेमी । पति । स्वामी ।
हृद्गत-वि० (सं०) हृदय का, भीतरी । प्रिय ।
हृद्य-वि० (सं०) सुन्दर । हृदय का, भीतरी ।
हृषीकेश-संज्ञा पुं० विष्णु, श्री कृष्ण ।
हृष्ट-वि० (सं०) खूब प्रसन्न, हर्षित ।
हृष्ट-पुष्ट-वि० (सं०) खूब मोटा-ताजा, स्वस्थ ।
हेठा-वि० नीचा, कम, छोटा ।
हेतु-संज्ञा पुं० (सं०) मतलब, उद्देश्य । वजह, कारण ।
हेत्वाभास-संज्ञा पुं हेतुदोष, गलत तर्क, झूठा हेतु या कारण, कुतर्क ।
हेमंत-संज्ञा पुं० (सं०) अगहन और पूस की एक ऋतु ।
हेमगिरि-संज्ञा पुं० (सं०) सुमेरु पर्वत ।
हेमाद्रि-संज्ञा पुं० (सं०) सुमेरु पर्वत ।
हेरंब-संज्ञा पुं० गणेश, भैंसा ।
हैजा-संज्ञा पुं० एक दस्त-कै की भयंकर बीमारी, विषूचिका ।
हैरान-वि० (अ०) आश्चर्य में पड़ा हुआ, चकित । परेशान ।
हैवान-संज्ञा पुं० (अ०) जानवर ।
हैसियत-संज्ञा स्त्री (अ०) किसी काम को कर सकने की शक्ति, सामर्थ्य, मालियत, निजी संपत्ति, बिसात, दरजा ।
होड़-संज्ञा स्त्री० एक दूसरे से बढ़ जाने की कोशिश, बाजी, शर्त ।
होतब, होतव्य-संज्ञा पुं० भवितव्यता, होनहार ।
होतव्यता-संज्ञा स्त्री० होनहार ।
होनहार-वि० जो होने को हो, भावी । शुरू ही से अच्छे लक्षणोंवाला ।
होनी-संज्ञा स्त्री० जो बात होने को हो, भावी, भवितव्यता ।
होम-संज्ञा पुं० ...

जिसमें हवनकी अग्नि जलायी जाय।

होलिका-संज्ञा स्त्री० (सं०) होली का त्योहार। हरिण्य-कशिपु की बहिन राक्षसी का नाम।

होली-संज्ञा स्त्री० फाल्गुन के अंत में मनाया जानेवाला हिन्दुओं का का एक बड़ा त्योहार ।

होश-संज्ञा पुं० (फा०) चेतना, चेत।

हौज-संज्ञा पुं० (अ०) वह कुंड जिसमें पानी जमा किया जाय, चहबच्चा ।

हौलनाक-वि० डर पैदा करनेवाला, भयानक ।

हौले-क्रि० वि० धीरे-धीरे। हलके-हलके ।

हौवा-संज्ञा स्त्री० (अ०) पैगम्बरी मतों के अनुसार सृष्टि में सबसे पहली स्त्री ।

हौस-संज्ञा स्त्री० हवस, चाह, इच्छा। कामना, उमंग, उत्साह, लालसा।

हौसला-संज्ञा पुं० (अ०) किसी काम को करने की तीव्र इच्छा, लालसा।

ह्रास-संज्ञा पुं० क्षीणता, कमी। घटाव। अवनति, पतन।

ह्री-संज्ञा स्त्री० (सं०) लज्जा, शर्म।

Idioms and Proverbs

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

अ

अँकवार देना-गले लगाना, भेंटना।
अँकवार भरना-गले मिलना, गोद में बच्चा रहना।
अंग लगना-लिपटना, छाती से लगना। (भोजन का) शरीर को पुष्ट करना।
अंग-अंग मुस्कुराना-बहुत प्रसन्न होना। बहुत खुश होना।
अंगारों पर पैर रखना-जान-बूझकर हानिकारक काम करके अपने को खतरे में डालना।
अंगार उगलना-कड़ुई बातें मुँह से निकालना।
अँगुलियाँ उठाना-बदनाम करना।
अँगुलियों पर नचाना-वश में रखना।
अंजर-पंजर ढीले करना-बहुत मारना पीटना।
अँगूठा दिखाना-किसी चीज को देने से अवहेलना-पूर्वक नाहीं करना। बात को न मानना।
अंटी करना-किसी के माल को उड़ा लेना। धोखा देकर ले जाना।
अंटी मारना-कम तोलना। जुआ खेलते समय कौड़ी को उँगलियों के बीच छिपा लेना।
अंडा सेना-बेकार बैठे रहना।
अंत बिगड़ना-नतीजा बुरा होना।
अंडे सेवे कोई, लेवे दूसरा कोई-मेहनत कोई करे और फायदा दूसरा कोई उठावे।
अंडा बच्चों को सिखावे चीं-चीं न करो-छोटा अपने से बड़ों को उपदेश दे।
अंधा बनना-धोखा खा जाना। वंचित किये जाना।
अंधा बनाना-बेवकूफ बनाना। धोखा देना।
अंधे की लकड़ी-एक मात्र आश्रय। अकेला लड़का।
अंधाधुन्ध उड़ाना-बिना सोचे-विचारे पैसा बरबाद करना।
अंधा बाटे रेवड़ी फिर फिर अपने को दे-घुमा-फिराकर अपनों को फायदा पहुँचाना। पक्षपात-पूर्ण व्यवहार करना।
अंधा क्या जाने बसंत की बहार-जो चीज देखी नहीं है, उसका महत्त्व नहीं जाना जा सकता।
अंधी पीसे कुत्ता खाय-परिश्रम का फल कोई दूसरा उड़ाये।
अंधेर मचाना-अन्याय करना।
अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा-जहाँ ...

प्रबंध होता है वहाँ भले-बुरे सब बराबर समझे जाते हैं।
अधजल गगरी छलकत जाय-ओछे आदमी अधिक दिखावा करते हैं।
अपना सा मुँह लेकर रह जाना-लज्जित होना। चुप रह जाना।
अपना उल्लू सीधा करना- अपना मतलब पूरा करना।
अपना ही राग अलापना-अपनी ही बात कहना।
अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना-डींग मारना। अपनी बड़ाई करना।
अपने पाँवों पर कुल्हाड़ी मारना-अपनी ही हानि करना।
अमर हो जाना-स्थायी प्रसिद्धि प्राप्त कर लेना। नाम कमाना।
अग्नि में घी डालना-बात बढ़ाना। क्रोधित कर देना।
अच्छे दिन देखना-आनन्द से जिन्दगी बिताना।
अच्छे घर बैना देना-अपने से अधिक शक्तिवाले से बैर करना।
अटका बनिया देय उधार-मजबूरी में मनुष्य सब कुछ कर सकता है। (सब तरह दब सकता है।)
अपना पैसा खोटा तो परखैया का क्या दोष-अपनी कमियों पर दूसरों को क्यों दोष देना ?
अपनी डफली अपना राग-एक साथ मिलकर काम नहीं करना।
अपनी गली में कुत्ता भी शेर-कमजोर आदमी भी अपने स्थान पर बलवान् होता है।

आ

आँख बचा जाना-सामने न आना।
आँख मिलाना-बराबर ताकना।
आँख न लगना-नींद न आना।
आँख का तारा-बहुत प्यारा व्यक्ति।
आँख खुलना-सावधान हो जाना।
आँख खोलना-सावधान करना।
आँखें चार होना-सामने आना, मुलाकात होना।
आँख चुराना-कतराना, सामने न होना।
आँखें तरेरना-क्रोध की दृष्टि से देखना।
आँख निकालना-घुड़की दिखाना, डाँटना, डपटना।
आँख का काँटा होना-खलना, बुरा लगना।
आँखों पर परदा पड़ना-भ्रम होना। असावधान हो जाना।
आँखें फिर जाना-बेमुरौवती आ जाना।
आँख बंद होना-मर जाना।
आँखें बिछाना-प्रेम से स्वागत करना।
आँख भर आना-आँसू आ जाना।
आँख भरकर देखना-जी भरकर देखना।
आँख मारना-इशारा करना।
आँखों में खून उतरना-क्रोध से आँखें लाल हो जाना। अति क्रुद्ध होना।
आँखों में गड़ना-बुरा लगना।
आँखों में चर्बी छाना-अभिमान हो जाना।

आँखों में धूल झोंकना-सरासर धोखा देना।

आँखों में फिरना-ध्यान आते रहना।

आँख लाल करना-क्रोध की दृष्टि से देखना।

आँख सेंकना-दर्शन कर सुख प्राप्त करना।

आँखों से लगाकर रखना-बड़े प्यार से पास रखना।

आँख के अंधे नाम नयनसुख-गुण के अभाव में भी गुणी कहलाना।

आँख न दीदा काढ़े कसीदा-काम में असमर्थ होते हुए भी उसे करने की चेष्टा करना।

आँख बची माल दोस्तों का-चीज सावधानी से न रखी जाने पर चोरी हो जाती है।

आँख से ओझल होना-नजर से छिप जाना। दिखायी न पड़ना।

आँखों से काजल चुराना-बड़ी चालाकी करना।

आँखों में जगह मिलना-सम्मान प्राप्त हो जाना।

आँखों में हल्का होना-प्रतिष्ठा कम हो जाना।

आँखों से काम करना-संकेतों या इशारों से काम निकालना।

आँखों में टेसू फूलना-सब ओर एक ही रंग दीखना।

आँखें नीली-पीली करना-गुस्सा होना।

आँखों का पानी गिर जाना-लाज-लिहाज का अभाव हो जाना।

आँखों तले न लाना-बहुत तुच्छ समझना।

आँख फड़कना-शकुन होना।

आँखें फिर जाना-बेमुरौवत हो जाना।

आँख रखना-किसी से प्रेम करना।

आग लगना-क्रोध आना।

आग लगाकर तमाशा देखना-झगड़ा कराके प्रसन्न होना।

आगबबूला होना-अत्यन्त उत्तेजित हो जाना।

आग में कूदना-आफत में पड़ना. मुसीबत का सामना करना।

आगपानी से गुजरना-सब तरह के कष्टों को सहन करना।

आग बरसना-तेज धूप पड़ना।

आगा-पीछा करना-हिचकना. दुबिधा में पड़ना।

आगे नाथ न पीछे पगहा-स्वतंत्र होना। बीबी-बच्चों की जिम्मेदारी से मुक्त होना।

आँच अधिक खा जाना-अधिक पक जाना।

आँच आना-हानि हो जाना।

आँच न आने देना-कष्ट को रोकना, रक्षा करना।

आजकल करना-टाल-मटूल करना।

आटे-दाल का भाव मालूम होना-सब प्रकार के कष्टों का पता चल जाना। कष्ट सहना।

आठ-आठ आँसू रोना-बहुत अधिक विलाप करना।

आठो पहर सूली पर रहना-सदा ... भोगना।

आड़े आना-सहारा देना।
आड़े हाथों लेना-भला-बुरा कहना।
आड़े समय काम आना-मुसीबत में मदद करना।
आदमी जाने बसे सोना जाने कसे-संगति से मनुष्य के स्वभाव का पता लगता है।
आदि अन्त सोचना-भला-बुरा अच्छी तरह सोचना।
आधा तीतर आधा बटेर-गड़बड़, असंबद्ध, अधूरा, अपूर्ण।
आधी छोड़ सारी को धावे आधी बचे न सारी पावे-अधिक के लालच में सर्वथा हानि होती है।
आन निभाना-बात पर अटल रहना।
आनाकानी करना-बहाना करना।
आप-आप करना-चापलूसी करना।
आप ही मियाँ माँगते द्वार खड़े दरवेश-जो खुद माँगता है वह दूसरों को क्या दे सकता है?
आपस में गिरह पड़ना वैर होना
आपा न संभालना-अपना निर्वाह न कर सकना।
आपा खोना-होश खो देना।
आपे से बाहर होना-क्रोधित हो गर्व से बोलना।
आपे में आना-सुध-बुध संभालना।
आबरू खाक में मिलना-इज्जत चली जाना। बेइज्जत होना।
आ बला गले लग-आपत्ति को जान-बूझकर बुलाना।
आम के आम गुठलियों के दाम-एक चीज से दुगुना फायदा होना।
[illegible] कि [illegible]

गिनने से-निरर्थक बात नहीं करनी चाहिए।
आयु का पट्टा लिखवाकर लाना-बहुत दिनों जीना।
आये की खुशी न गये का गम-हमेशा सन्तुष्ट रहना।
आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास-किसी महत्त्वपूर्ण काम के बजाय छोटे काम में लग पड़ना।
आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा-सामने सब लुट गया और तू देखता ही रह गया।
आरती उतारना-इज्जत करना।
आरे चलना-घोर दुःख होना।
आल्हा गाना-सब जगह बात फैलाते फिरना।
आव देखना न ताव-सोच-विचार न करना।
आव-भगत करना-स्वागत-सत्कार करना।
आवाज कसना-व्यंग्य कसना, हँसी उड़ाना।
आवें का आवाँ बिगड़ा होना-सारा परिवार दुश्चरित्र होना।
आसमान पर दिमाग चढ़ना-बड़ा घमंड होना।
आसमान से बातें करना-बहुत ऊँचा होना।
आसमान सिर पर उठाना-बहुत शोरगुल करना।
आस्तीन चढाना-लड़ने को तैयार हो जाना।
आस्तीन का सांप होना-ऐसा साथी जो संकट में मिला रहे और भीतर

से शत्रु हो।
आस्तीन में साँप पालना-अपने शत्रु को अपने पास अपने शुभ-चिन्तक के रूप में रखना।
आह पड़ना-शाप पड़ना। दुःख पहुँचाने का फल मिलना।
आहट लेना-चाप लेना, पता लगाना।

इ

इधर-उधर करना-टलना।
इधर-उधर देखना-हिचकिचाना।
इधर की उधर लगाना-चुगली करना।
इन तिलों तेल न होना-मिलने की आशा न होना।
इतनी सी जान और गज भर की जबान-छोटे मुंह बड़ी बात।
इन्हीं पावों आना-तुरत लौट आना।
इज्जत गँवाना-सम्मान खो देना।
इज्जत बिगाड़ना- अप्रतिष्ठित करना।
इज्जत उतारना-मर्यादा नष्ट करना।
इज्जत रखना-मर्यादा की रक्षा करना।
इधर का न उधर का-बेफायदा, व्यर्थ का।
इस कान से सुना उस कान से निकाल दिया-अनसुना कर दिया। बात पर ध्यान न देना।

ई

ईंट से ईंट बजा देना-किसी नगर को ध्वस्त करना।
ईंट की लेनी पत्थर की देनी-दुष्ट के साथ दुष्टता करना, बदला लेना।
ईंट का जवाब पत्थर से देना-सख्त बदला लेना।
ईंट का घर मिट्टी करना-घर बरबाद करना।
ईद का चाँद होना-दुर्लभ होना। कम दिखायी पड़ना।
ईमान की कहना-सच कहना।
ईमान में फर्क आना-नीयत खराब होना।
ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया-संसार में सब जगह भाग्य की विचित्रता देख पड़ती है।

उ

उखड़ी-पुखड़ी सुनाना-कठोर बातें कहना।
उगल देना-रहस्य को प्रकट कर देना।
उछल पड़ना-अति प्रसन्न होना।
उठ जाना-मृत्यु हो जाना।
उड़ती चिड़िया पहिचानना-भेद की बात को जान लेना।

उड़ती चिड़िया के पर काटना-बहुत चतुर होना।
उड़ा ले आना-चुरा लेना।
उतार-चढ़ाव देखना-सुख-दुख का अनुभव होना, तजुर्बा होना।
उतारू होना-तैय्यार होना।
उथल-पुथल मचाना-उलट-पुलट करना। गड़बड़ी करना।
उन्नीस-बीस का फर्क-बहुत थोड़ा भेद होना।
उन्नीस होना-थोड़ा कम होना।
उफ न करना- मुसीबत को चुपचाप सह लेना।
उबल पड़ना-क्रोधित हो जाना।
उखली में सर देकर मूसर का भय न होना-किसी साहसिक काम में लगकर मुसीबतों से न डरना।
उड़ती खबर पाना-अफवाह सुनना।
उधेड़-बुन में लगना-चिन्ता में पड़ना। फिक्र करना।
उलटा चोर कोतवाल को डाँटे-अपने आप दोष न मानकर दूसरे पर मढ़ना।
उलटा बाँस बरेली को-उलटा कार्य करना।
उलटी गंगा बहाना-विरोधी कार्य करना।
उलटी पट्टी पढ़ाना-बहका देना।
उलटी-सीधी सुनाना-डाँटना, भला-बुरा कहना।
उलटे पाँव जाना-तुरंत लौट जाना।
उलझ पड़ना-लड़ पड़ना।
उल्लू बनाना-बेवकूफ बनाना।
उल्लू सीधा करना-अपना काम निकालना।
उल्लू बोलना-उजाड़ हो जाना।
उलटे छुरे से मूड़ना-बवकूफ बनाना।

ऊ

ऊँचा सुनना-कम सुनना।
ऊँची जगह पाना-बड़ा पद प्राप्त करना।
ऊँचा-नीचा देखना-भले-बुरे की सोचना।
ऊँचा बोल बोलना-अभिमान की बात करना।
ऊँची दूकान फीका पकवान-बहुत बनावट होना और सत्य कम होना।
ऊँट के मुँह का जीरा देना-बहुत कम मात्रा देना।
ऊँट के गले बिल्ली बाँधना-बेमेल काम करना।
ऊँट किस करवट बैठता है-परिणाम क्या होता है।
ऊँट की चोरी झुके झुके-कोई बड़ा काम छिपकर करना।
ऊट-पटांग हाँकना-बिना अर्थ की बातें करना।
ऊधम मचाना-उपद्रव करना।
ऊधो का लेना, न माधो का देना-निश्चिन्त रहना।
ऊसर में बीज डालना-निरर्थक काम करना।

ऊपर का दम भरना-दिखावे की सहानुभूति करना।

ए

एक अनार और सौ बीमार- जरूरत से कम चीज होना।

एक और एक ग्यारह होना-एकता में बल होने का भाव।

एक आँख से देखना-बराबर का व्यवहार करना।

एकटक देखना-निगाह जमाना।

एक ईंट के लिए महल गिराना-छोटी सी बात के लिए बड़ा नुकसान कर लेना।

एक एक को खाए जाना-आपस में वैर-भाव होना।

एक तो चोरी दूसरे सीनाजोरी-काम बुरा करके भी डाँट दिखाना।

एक ही साँचे में ढलना- समान विचार का होना।

एक न चलना-कुछ न कर सकना।

एक तो कड़वी लौकी दूसरे नीम चढ़ी-एक बुराई के साथ ही दूसरी बुराई होना।

एक थैली के चट्टे बट्टे-एक समान, बराबर के होना।

एक दम में हजार दम-एक साहसी हजारों की रक्षा करता है।

एक-एक रग जानना-अच्छी तरह परिचित होना।

एक पंथ दो काज-एक काम से दो फल निकलना. दो फायदे होना।

एकादशी को खाया द्वादशी को निकालना-एक दिन की पायी वस्तु दूसरे दिन लौटाना।

एक मछली सारे ताल को गंदा करती है-एक बुरा सारे समाज में बुराई फैलाता है।

एक हाथ से ताली नहीं बजती-झगड़ा दोनों तरफ से होता है।

एक म्यान में दो तलवारें होना-एक साथ दो शक्तिशाली मनुष्य नहीं रह पाते। एक ही वस्तु पर दो का अधिकार नहीं हो पाता।

एड़ी-चोटी का पसीना एक करना-कठिन मेहनत करना।

ऐ

ऐंचातानी में पड़ना-झगड़े में पड़ना।

ऐंठ दिखाना-अभिमान दिखाना। रूठना दिखाना।

ऐंठ जाना-असन्तुष्ट होना।

ऐंठ लेना-ठग लेना, छल से ले लेना।

ऐंठ निकलना-घमंड चूर हो जाना।

ऐब करने को भी हुनर चाहिए-बुराई में भी चतुराई की जरूरत होती है।

ऐसा-वैसा समझना-बहुत तुच्छ मनुष्य जानना।

ओ

ओखली में सिर देना-जान-बूझकर खतरे में पड़ना।
ओछे की प्रीति बालू की भीति-छोटे आदमी की दोस्ती स्थायी नहीं होती।
ओठ काटना-क्रोध दिखाना।
ओठ तक न हिलाना-तनिक भी विरोध न करना।
ओठ हिलाना-बोलना।
ओठों में कहना-चुपके से बात कहना।
ओठों पर नाचना-खूब याद होना।
ओर छोर न मिलना-भेद का पता न चलना।
ओले पड़ना–आपत्तियाँ आना।
ओस चाटे प्यास नहीं जाती-जरूरत से कम चीज होने पर संतोष नहीं होता।
ओढ़नी की बतास लगना-स्त्री के प्रेम में फँसना।

औ

औकात पर आना-असलियत खोल देना।
औकात पर रहना-हैसियत के अनुसार काम करना।
औघट घाट बचाकर चलना-मुसीबतों से सावधान होकर चलना।
औन-पौन करना-छल-कपट का व्यवहार करना।

क

कंठ खुलना-आवाज निकलना।
कंठ बैठना-बेसुरा होना।
कंठ फूटना-आवाज खुलना।
कंठ करना-याद करना।
कंठ होना-याद होना।
कंठ सूखना-प्यास लगना, डर जाना।
कंठी लेना-विरक्त हो जाना।
कंधा डालना-साहस छोड़ देना।
कंधा देना-सहारा देना।
कंधे से कंधा रगड़ना-बहुत भीड़ होना।
कच्चा चिट्ठा खोलना-रहस्य को खोलना।
कच्ची गोली खेलना-अभ्यस्त न होना।
कच्चे घड़े पानी भरना-असंभव काम करना।
कटकर रह जाना-झेंपकर रह जाना।
कड़ी दृष्टि रखना-निगरानी रखना।
कटे पर नमक छिड़कना-दुखी को और भी दुखाना।
कमर कसना- तत्पर होना।
कमर टूटना-निराश हो जाना।
करम फूटना-भाग्यहीन होना।
कल पड़ना-चैन मिलना।
कलम तोड़ना-बहुत सुन्दर बातें लिखना।
कलई खुलना- गुप्त बातों का प्रकट हो जाना।

कलेजा मुंह में आना-दुःख में सन्न हो जाना। चित्त व्याकुल होना।
कलेजा उछलना-बड़ी उत्सुकता होना।
कलेजा काटकर देना-सब से प्रिय वस्तु दे डालना।
कलेजा चीरकर दिखाना-विश्वास दिलाना।
कलेजा छेदना-कटु बातें कहना।
कलेजा टूक-टूक होना-दिल पर चोट पहुंचना।
कलेजा टूटना-उत्साह टूटना।
कलेजा ठंडा होना-संतुष्ट होना। शांति प्राप्त होना।
कलेजे पर पत्थर रखना-दिल कड़ा कर लेना।
कलेजे पर सांप लोटना-किसी बात को याद करके जलन होना।
कसर निकालना-बदला लेना।
कसौटी पर कसना-परीक्षा करना, जाँचना।
कहा सुनी हो जाना-झगड़ा हो जाना।
(सूखकर) कांटा हो जाना-दुबला-पतला होना।
कांटे-सा खटकना-अच्छा न लगना।
कांटे बोना-हानि पहुँचाना।
कांटे से कांटा निकालना-शत्रु से शत्रु का नाश कराना।
कांटों पर लोटना-बेचैन होना।
कांटों में घसीटना-लज्जित करना (बड़ाई द्वारा)।
काट खाने दौड़ना-भयानक रूप धारण कर लेना।
काटो तो बदन में खून नहीं-अति भयभीत हो जाने की दशा।
कान करना-सुनना, ध्यान देना।
कान काटना-बड़ी चतुराई का काम करना।
कान खुलना-होश में आना।
कान का कच्चा होना-जल्दी ही सुनकर विश्वास करनेवाला होना।
कान गरम करना-कान उमेठना। दबाव डालना।
कान देना-ध्यान पूर्वक सुनना।
कान पर जूँ न रेंगना-तनिक भी परवाह न होना।
कान पड़ा शब्द सुनाई न देना-बड़ा शोर गुल होना।
कान भरना-उकसाना, चुगली करना।
कान लगाना-ध्यान देना।
कान से निकल जाना-बात भूल जाना।
कानी कौड़ी भी पास न होना-बहुत गरीब होना।
काम चमकना-रोजगार खूब चलना।
काम तमाम करना-जान से मार डालना।
काम बढ़ाना-रोजगार फैलाना।
कालिख लगना-बदनाम होना।
किनारा करना-तटस्थ हो जाना, अलग हो जाना।
किनारे लगाना-पार उतारना।
किनारे लगना-सफलता पा जाना।
किस खेत की मूली-बहुत तुच्छ व्यक्ति।

कीचड़ उछालना-झूठी बुराई करना
कुत्ते की नींद सोना-सावधान होकर रहना।
कुएँ में भाँग पड़ना-सब की अक्ल नष्ट हो जाना।
कूप मण्डूक बनना-थोड़ा ज्ञान होना।
कोख उजड़ना-सन्तान का मर जाना।
कोरा जवाब देना-निराशाजनक उत्तर देना।
कोरी पटिया पर लिखना-नया काम आरंभ करना।
कोसों दूर भागना-अरुचि होना।
कोल्हू का बैल होना-दिन रात परिश्रम करनेवाला मनुष्य।
कौड़ी का या कौड़ी काम का नहीं-किसी भी दाम में अच्छा न होना।
कौड़ी को न पूछना-मुफ्त भी न लेना। बिलकुल तुच्छ समझना।
कौड़ी-कौड़ी अदा करना-सारा ऋण चुका देना।
कौड़ी के तीन होना-मूल्यहीन होना।
क्रोध पी जाना-क्रोध को दबा लेना।

ख

खटपट होना-लड़ाई झगड़ा होना।
खटका लगा रहना-डर बना रहना।
खटाई में पड़ना-अनिश्चित अवस्था में होना।
खरी-खरी सुनाना-अप्रिय किन्तु सच्ची बातें कहना।
खरी-खोटी सुनाना-भला-बुरा कहना।
खाक छानना-भटकते फिरना।
खाक में मिलाना-बरबाद हो जाना।
खाना और गुर्राना-उपकार न मानना।
खाने के दांत और, दिखाने के और-भीतर-बाहर में अन्तर होना।
खार खाना-द्वेष करना, कुढ़ना।
खिसक जाना-चुपके से चले जाना।
खिसियानी बिल्ली खंबा नोचे-लज्जित हो जाने पर व्यर्थ का क्रोध दिखलाना।
खींचातानी में पड़ना-झगड़े में पड़ जाना।
खुले दिल का होना-साफ बातवाला होना।
खून के घूंट पीना-तेज क्रोध को दबा जाना। बड़ा कष्ट सहन करना।
खून का प्यासा होना-मार डालने को उद्यत होना।
खून उबलना-क्रोध आना।
खून एक होना-संबंधी होना।
खून गर्दन पर सवार होना-हत्या करने को उद्यत होना।
खून सूख जाना-बहुत ज्यादा डर जाना।
खेत रहना-युद्ध में मृत्यु होना।
खेल बिगड़ना-बनी-बनायी योजना बिगड़ जाना।
खोद-खोदकर पूछना-बात के कारण पर कारण पूछना।
खोपड़ी खाना-बातों से परेशान करना।

ग

गंगाजली उठाना-कसम खाना ।
गंगालाभ होना-देहान्त होना ।
गट कर जाना-जल्दी से पी जाना ।
गड़े मुरदे उखाड़ना-बीती बातें याद करके लड़ाई ठानना ।
गत बनाना- दुर्दशा करना ।
गधे पर चढ़ाना-बेइज्जती करना ।
गधे चराना-बेवकूफ बने रहना ।
गधों को हलवा खिलाना-अयोग्य का सत्कार करना ।
गम खाना-सह जाना ।
गरम होना-क्रुद्ध होना ।
गरदन नापना-गरदनियाँ देकर हटा देना ।
गरदन पर सवार होना-पीछे पड़ जाना । बहुत तंग करना ।
गरदन मारना-सिर काटना ।
गला छुड़ाना-पीछा छुटाना ।
गली गली मारे फिरना-इधर-उधर भटकना ।
गले का हार होना-बड़ा प्यारा बनना ।
गले मढ़ना-जबरदस्ती भार लादना ।
गहरी छानना-घुल-घुल कर बात-चीत होना ।
गाँठ काटना-जेब कतरना ।
गाँठ खुलना-समस्या का हल हो जाना । झंझट दूर होना ।
गाँठ में बाँधना-अच्छी तरह याद रखना ।
गाँठ लेना-अपने पक्ष में कर लेना ।
गाँठ पर गाँठ पड़ना- झंझटें बढ़ जाना ।
गाँठ का पूरा-धनी । बड़ा अमीर ।
गाढ़ी कमाई-परिश्रम का पैसा ।
गीत गाना-प्रशंसा करना ।
गुड़ गोबर कर देना-काम बिगाड़ देना ।
गुल खिलना-विचित्र घटना होना ।
गुल खिलाना-विचित्र घटना को उपस्थित करना ।
गुलछर्रे उड़ाना-मौज करना ।
गोरखधंधे में पड़ना-झंझट में पड़ना ।
गोद में लड़का शहर भर में ढिंढोरा-पास ही वस्तु रहते हुए दूर-दूर खोजना ।

घ

घड़ों पानी पड़ना-अत्यन्त लज्जित होना ।
घर उजड़ना-सम्पूर्ण विनाश होना ।
घर की खेती-सहज ही हो सकने-वाला काम ।
घर की मुर्गी साग बराबर-परिचित वस्तु का खास आदर नहीं होता ।
घर बैठे गंगा आना-बिना कोशिश के ही अनायास धन मिलना ।
घर का न घाट का-किसी का न होना । निकम्मा होना ।
घर के पीरों को तेल का मलीदा-अपनों के साथ बुरा व्यवहार और

दूसरों के साथ अच्छा।
घर फूंक तमाशा देखना-संपूर्ण विनाश करके सुख लूटना।
घर में चूहे कूदना-बहुत दरिद्र होना।
घर में दिया तो मस्जिद में दिया-पहिले अपनों की चिंता तब बाहर-वालों की चिंता करना।
घर का भेदी लंका ढावे-आपस की फूट का परिणाम बुरा होता है।
घाट-घाट का पानी पीना-तरह-तरह के अनुभव प्राप्त करना।
घात में रहना-अवसर ताकते रहना।
घाव हरा होना-बीती बात को याद करके दुख होना।
घाव पर नमक छिड़कना-दुःखी को और भी दुःख देना।
घास चरना-मूर्ख होना।
घिग्घी बंधना-बोल न फूटना, डर जाना।
घी के दिए जलाना-खुशी मनाना।
घी भी खाओ और पगड़ी भी रक्खो-इतना व्यय करो कि मर्यादा बनी रहे।
घुट-घुटकर मरना-बहुत कष्ट के साथ शरीर छूटना।
घोड़े बेचकर सोना-बेखबर होकर सोना।
घोड़ा घास से मुरौवत करे तो खाय क्या-व्यापार में मुनाफा लिये बगैर काम नहीं चल सकता।

च

चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भरा न काठ-अच्छी चीज थोड़ी भी कीमती होती है।
चंग पर चढ़ाना-उत्तेजित करना।
चंडूखाने की गप-बिल्कुल झूठी बात।
चकमा देना-धोखे में डालना।
चक्कर में पड़ना-धोखा खा जाना।
चक्की पीसना-बड़ा परिश्रम करना। जेल जाना।
चट कर जाना-जल्दी से खा जाना, हड़प जाना।
चढ़ा जाना-पी जाना।
चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय-बहुत कंजूस होना।
चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना-विघ्न डालना।
चल बसना-मर जाना।
चरका देना-धोखा देना।
चम्पत हो जाना-गायब हो जाना।
चलता करना-रवाना करना।
चांद पर थूकना-व्यर्थ की निन्दा करना।
चांदी का जूता मारना-घूस देना।
चांदी होना-अधिक लाभ होना।
चादर के बाहर पैर पसारना-हैसियत से ज्यादा व्यय करना।
चादर तानकर सोना-चिन्ता न रह जाना।
चादर देखकर पैर पसारना-हैसियत के अनुसार काम करना।

चाकरी में ना करी क्या-नौकरी करने पर किसी चीज पर नाहीं नहीं की जा सकती।

चार चाँद बढ़ाना-बहुत सुन्दर कर देना। इज्जत बढ़ाना।

चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात-सुख थोड़े दिन ही रहता है।

चारपाई से लग जाना-बीमार हो जाना।

चाल में आ जाना-धोखा खा जाना।

चिकना घड़ा होना-कोई प्रभाव न पड़ना।

चिकने घड़े पर पानी नहीं पड़ता-बेशर्म पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

चिउँटी के पर जम जाना-मौत समीप होना।

चिकनी चुपड़ी बातें करना-चापलूसी करना।

चिराग गुल होना-संतान की मृत्यु हो जाना।

चिराग तले अंधेरा होना-न्याय के केन्द्र में अन्याय किया जाना।

चुटकियों में-अति शीघ्र, तुरत।

चुटकियों में उड़ाना- दिल्लगी में टालना।

चुटकी लेना-चुभती बात कहना।

चूल्हा न जलना-फाके करना।

चेहरा उतरना-उदास होना।

चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना-बहुत परेशान होना।

चैन की बंसी बजाना-मौज करना।

चोचले दिखाना-इतराना।

चोटी का पसीना एड़ी तक बहाना-बहुत मेहनत करना।

चोटी हाथ में आना-अधिकार में आ जाना। वश में होना।

चोली-दामन का साथ होना-हमेशा का साथ होना।

चोर-चोर मौसेरे भाई-एक ही पेशे के लोग परस्पर मेल रखते हैं।

चोर की दाढ़ी में तिनका-गलती करनेवाले को अपने ऊपर संदेह बना रहता है।

चोरी का माल मोरी में-बुराई से कमाया धन बुरे कार्यों में ही खर्च हो जाता है।

चौकड़ी भूलना-कोई चाल न सूझना।

चौकस रहना-सावधान रहना।

चौकन्ना होना-सावधान होना।

छ

छक्के छुड़ाना-परास्त करना।

छक्के छूटना-निरुत्साह होना।

छठी का दूध याद आना-शेखी या हेकड़ी भूल जाना।

छत्रछाया में रहना-अधीन होकर रहना।

छप्पर पर फूस नहीं ड्योढ़ी पर नक्कारा-शेखी मारना।

छप्पर फाड़कर देना-बिना परिश्रम के देना।

छाती पर साँप लेटना-ईर्ष्या करना।

छाती पर पत्थर रखना-सहन कर लेना। कष्ट सहना।

छाती पर मूंग दलना-किसी का बहुत जी दुखाना।
छाती ठंडी करना-मन सन्तुष्ट करना।
छोटे मुंह बड़ी बात करना-बढ़बढ़ कर बातें करना।

ज

जंगल में मंगल होना-निर्जन जगह का आबाद होना।
जगह करना-मकान बनाना।
जड़ उखाड़ना-नष्ट करना।
जड़ जमाना-स्थायी होकर बैठना।
जबान देना-वचन देना।
जबरदस्त का ठेंगा सर पर-बली जो चाहता है करा लेता है।
जबानी जमा-खर्च करना-बहुत कहना थोड़ा करना।
जबान में लगाम न होना-शिष्टता के विरुद्ध वचन बोलना।
जमीन में गड़ जाना-बड़ा लज्जित होना।
जमीन पर पैर न रखना-अभिमान होना।
जल में रहकर मगर से बैर-किसी के आश्रय में रहकर उसी से बैर करना।
जबरा मारे रोने न दे-शक्तिवाला निर्बल को सदा कष्ट देता है।
जहर उगलना-ईर्ष्यापूर्ण बातें करना।
जहर का घूंट पीना-क्रोध सहन करना।
जागते को जगाना-समझदार को शिक्षा देना।
जाके पांव न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई-जिस पर कभी दुःख नहीं पड़ा, वह दूसरे का दुःख नहीं जान सकता।
जादू डालना-पूर्णतया अपने प्रभाव में फंसाना।
जान के लाले पड़ना-संकट में पड़ना।
जान में जान आना-जी ठिकाने होना, भय दूर होना।
जान लड़ाना-बहुत मेहनत करना।
जामे में फूला न समाना-बहुत खुश होना।
जान छुड़ाना-आपत्ति से छुटकारा पाना।
जान का गाहक बनना-मार डालने पर तुल जाना।
जान के लाले पड़ना-आपत्ति में फंस जाना।
जान डाल देना-उत्साहित करना।
जाल डालना-धोखा देना।
जाल फैलाना-कपट-पूर्ण आयोजन करना। षड्यन्त्र रचना।
जितने मुंह उतनी बातें-अलग-अलग व्यक्तियों के अलग-अलग विचार होते हैं।
जिस पत्तल में खाए उसी में छेद करे-जो हमारी भलाई करे, हम उसी के साथ बुराई करें।
जिसकी लाठी उसकी भैंस-शक्तिवाले की ही विजय होती है।

मूर्खता-पूर्ण आचरण करे, अपना ही अपकार करे।
जी का बुखार निकालना-हृदय की बातें कह डालना।
जी उचट जाना-मन न लगना।
जी छोटा करना-निराश होना।
जी का बोझ हल्का होना-चिन्ता कम होना ।
जी जलाना-दिल दुखाना ।
जी न भरना-तृप्त न होना ।
जीभ जली और स्वाद भी न आया-लाभ होने के बजाय उल्टे हानि हो गयी।
जीभ चलते रहना-बकते रहना।
जीभ पकड़ना-बोलने से रोकना।
जुए में कंधे डालना-परिश्रम का काम अपने ऊपर लेना।
जूता चाटना-चापलूसी करना।
जूतियाँ चटखाते फिरना-इधर-उधर बेकार फिरना।
जूते लगना-लज्जित होना।
जूते से बात करना-अपमानित करना।
जैसे साँपनाथ वैसे नागनाथ-एक समान होना ।
जैसे कंता घर रहे, तैसे रहे विदेस-निकम्मे का घर में रहना या विदेश में रहना बराबर है।
जोड़-तोड़ करना- उपाय सोचना।
जौहर खुलना-परीक्षा होना।
ज्यों-ज्यों भीजै कामरी त्यों-त्यों भारी होय-कर्ज चुकाये न जाने पर बढ़ता ही चला जाता है।

झ

झंडा गाड़ना-अधिकार जमा लेना।
झंडे तले आना-आश्रय स्वीकार करना।
झख मारना-विवश हो जाना।
झगड़ा मोल लेना-जान-बूझकर कलह पैदा कर लेना।
झटक लेना-ठग लेना।
झाँसा देना-धोखे में डालना।
झाँसे में आना-धोखा खा जाना।
झाड़ू फेरना-बरबाद कर देना।
झोपड़ी में रहें महलों के ख्वाब देखें-छोटे होकर बड़ी-बड़ी इच्छाएं करना।

ट

टकटकी बाँधना-पलकें झपकाये बिना देखना।
टका सा जवाब देना-साफ इनकार करना।
टक्कर का होना-समान होना ।
टका सा मुँह लेकर रह जाना-लज्जित हो जाना।
टट्टी की आड़ में शिकार खेलना-छिपे-छिपे काम पूरा करना। छल से मतलब गाँठना।
टपक पड़ना-अकस्मात् आ पहुँचना।
टस से मस न होना-विचलित न होना, न पिघलना।
टाँक लेना-लिख लेना।

टाँग पसारकर सोना-निश्चित होना।
टाँग तले से निकल जाना-हार मान लेना।
टाँगें रह जाना-चलते-चलते थक जाना।
टाल-मटोल करना-बहाने बनाना।
टुकड़ों पर पड़े रहना-दूसरों की कमाई खाना।
टुकड़ा माँगना-भिक्षा माँगना।
टूट पड़ना-हमला करना।
टेढ़ी खीर होना-कठिन काम होना।
टेढ़ी अँगुली से ही घी निकलता है-सिधाई से काम नहीं चलता।

ठ

ठंडा पड़ जाना-क्रोध खत्म हो जाना। शान्त होना।
ठंडा हो जाना-मर जाना।
ठंडी साँसें लेना-आहें भरना।
ठकुरसुहाती कहना-चापलूसी करना।
ठठरी होना-अति दुर्बल हो जाना।
ठिकाने लगाना-अन्त कर देना।
ठिकाने न रहना-स्थिर न रहना।
ठीक कर देना-सजा देना।
ठोंकना बजाना-परीक्षा करना, जाँचना।
ठोकरें खाना-कष्ट उठाना।

ड

डंका पीटना-प्रसिद्ध करना।
डंडी मारना-कम तौलना।
डकार जाना-हजम कर जाना।
डट जाना-स्थिर होना।
डाँवाडोल होना-अनिश्चित होना।
डुग्गी पीटना-ढिंढोरा पीटना।
डूबते को तिनके का सहारा-संकट में सहायता मिलना।
डेढ़ ईंट की मस्जिद-अलग रहना।
डेरा कूच करना-प्रस्थान करना।
डोर ढीली कर देना-देख-रेख कम कर देना।

ढ

ढब से बातें करना-मौका देखकर बात कहना।
ढाक के वही तीन पात-सदा एक ही दशा में रहना।
ढाई दिन की बादशाहत-थोड़े दिन की बादशाहत पाकर अधिकारी बन जाना।
ढिंढोरा पीटना-प्रचार करना।
ढील-ढाल करना-देर करना।
ढेर करना-मार डालना।

त

तकदीर आजमाना-भाग्य की परीक्षा करना।

जाना।
तकदीर चमकना-उन्नति करना।
तकदीर ठोंकना-भाग्य को दोष देना।
तकदीर सो जाना—बुरे समय का आना।
तल्ला उलटना-भाग्य का उलटा होना।
तन जाना-वैमनस्य हो जाना।
तन कर चलना-अभिमान करना।
तपस्या निष्फल होना-मेहनत व्यर्थ जाना।
तकाजे का हुक्का भी नहीं पिया जाता-उधार की चीज बुरी होती है।
तबेले की बला बन्दर के सिर-बदनाम पर ही दोष लगाना।
ताल ठोकना-लड़ने को उद्यत होना।
तालियाँ बजाना-बदनाम करना, दुर्नाम करना।
तालू से जीभ न लगना-बराबर बकते रहना।
तिनके की ओट पहाड़-छोटी बात में बड़ी बात छिपी रहना।
तिल का ताड़ करना-छोटी बात को बढ़ाना।
तिल धरने की जगह न होना-बहुत भीड़ भाड़ होना।
तिलांजलि देना-छोड देना।
तीन तेरह करना- इधर उधर करना।
तीन-पाँच करना-घुमाव-फिराव या हुज्जत करना।
तीन में न तेरह में-जो किसी गिनती में न हो। महत्त्वशून्य होना।
तीर की तरह जाना-तेजी से आना।
तीसमार खाँ बनना-मिथ्याभिमान करना।
तुल जाना-तत्पर होना।
तू-तू मैं-मैं करना-गाली करना।
तूती बोलना-प्रभावशाली होना।
तूफान खड़ा करना-ऊधम मचाना।
तू डार-डार, मैं पात पात- चालाक से और अधिक चालाकी का व्यवहार करना।
तेवर बदलना-रुख पलट जाना।
तोताचश्मी करना-बेमुरौवती करना।
तोते की तरह पढ़ना-बिना समझे पाठ याद करना।
त्योरी चढ़ाना-क्रोधित होना।
त्राहि त्राहि करना-मदद के लिए पुकार करना।
त्रिशंकु बनना-किधर का भी न रहना।

थ

थका ऊँट सराय ताकता है-थका आदमी घर की याद करता है।
थाली का बैंगन होना—पक्ष बदलने-वाला होना।
थूककर चाटना-कहकर मुकर जाना।
थू-थू करना-घृणा करना।
थैली का मुँह खोलना-खूब खर्च करना।
थोथा चना बाजे घना-सार-हीन व्यक्ति लम्बी-चौड़ी बातें करता है।

द

दंग रह जाना-घबड़ा जाना ।
दंड कमंडल उठा लेना-अपना सामान लेकर चल देना ।
दबक जाना-छिप जाना ।
दबे पाँव निकल जाना-चुपचाप चले जाना ।
दबाव डालना-जोर देना । लाचार करना ।
दम छोड़ना-प्राण निकलना । साहस छोड़ना ।
दम तोड़ना-प्राण देना ।
दम पर आ बनना-प्राण जाने का भय । आफत में पड़ना ।
दम भरना-किसी पर भरोसा या किसी की प्रशंसा करना।
दम लेना-आराम करना ।
दम साधना-चुप होना ।
दम में दम आना-परेशानी दूर हो जाना ।
दम फूलना-साँस फूलना ।
दमड़ी की बुढ़िया टका सिर मुड़ाई-तुच्छ वस्तु के लिए ज्यादा खर्च करना ।
दबी बिल्ली चूहों से कान कतराती है-अपराध करके सबल भी निर्बल की खरी-खोटी सुनता है ।
दाँतों तले अँगुली दबाना-आश्चर्य में पड जाना ।
दाँतों में तिनका दबाना-विनीत भाव दिखाना ।
दाँतों पसीना आ जाना-बहुत मेहनत करना ।
दाँव चूकना-अवसर खो देना ।
दाँव लेना-बदला लेना ।
दाने दाने को तरसना-मोहताज होना ।
दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते-मुफ्त मिली वस्तु में ऐब नहीं निकालना चाहिए।
दाल न गलना-कोई उपाय न हो पाना ।
दाल में काला होना-छिपा धोका होना ।
दाहिना हाथ होना-सहायक होना ।
दाहिने होना-अनुकूल होना ।
दिन दूना रात चौगुना होना-खूब तरक्की होना ।
दिमाग सातवें आसमान पर होना-अधिक घमंड होना
दिमाग लड़ाना-बहुत सोचना ।
दिल कड़ा करना-हिम्मत बाँधना ।
दिल का गवाही देना-मन को किसी बात की संभावना या औचित्य का निश्चय होना ।
दिल का मैला होना-धोखेबाज होना ।
दिल की दिल में रहना-इच्छा पूर्ण न होना ।
दिल के फफोले फोड़ना-भली-बुरी बातें कहकर क्रोध या दुःख को कम करना ।
दिल खट्टा होना-मन फिर जाना ।
दिल खिलना-खुश होना ।
दिल जलाना-दुखी करना ।
दिल टूटना-निराश होना ।

दिल धड़कना-कलेजा डर से कांपना।
दिल मिलना-प्रेम होना ।
दिल पक जाना-जी कष्ट से ऊब जाना ।
दिल लगना-प्रेम होना । काम में रुचि होना ।
दिल से उतरना-आंखों से गिरना, मान न रहना ।
दिल बढ़ाना-उत्साह बढ़ाना ।
दिल में खटकना-बुरा लगना ।
दिल पसीजना-दया आना ।
दिल फीका होना-मन हट जाना ।
दिल में रखना-बात छिपा रखना ।
दिल दुखाना-दुःख पहुँचाना ।
दिल की लगी बुझाना-मानसिक तकलीफ शान्त करना ।
दीपक में बत्ती पड़ना-सन्ध्या होना ।
दुनिया की हवा लगना-दुनियादारी में फँसना ।
दुम दबाकर भागना-हारकर भाग जाना ।
दुहाई देना-न्याय की पुकार करना ।
दूज का चांद होना-बहुत दिनों बाद जो कभी नजर पड़ जावे ।
दूध का दूध पानी का पानी करना-सच्चा न्याय करना ।
दूध के दांत न टूटना-अनुभव न होना ।
दून की हाँकना-शेखी मारना ।
दूसरे का मुंह तकना-दूसरे की सहायता चाहना ।
दो कौड़ी का होना-बिना कीमत का या अपमानित होना ।
दो दिन का मेहमान होना-थोड़े दिन रहना ।
दो नावों पर पैर धरना-दोनों तरफ होना ।
द्वार झांकना-मदद मांगना ।

ध

धक् से कलेजा हो जाना-एकदम घबड़ा उठना ।
धक्के खाना-इधर-उधर भटकना ।
धता बताना-धोखा देना । बहाना बताना ।
धज्जियाँ उड़ाना-दुर्गति करना ।
धमा-चौकड़ी करना-इकट्ठा होकर शोर-गुल मचाना ।
धर-पकड़ करना-गिरफ्तार करना ।
धांधली मचाना-अनीति बरतना ।
धाक बांधना-प्रभाव होना ।
धार चढ़ाना-शस्त्र की धार तेज करना ।
धुर्रे उड़ाना-नष्ट कर देना ।
धूनी रमाना-जम कर बैठना ।
धूल फाँकना-बेकारी में फिरना ।
धूप में बाल सफेद करना-अनुभव न होना ।
धोखे की टट्टी होना-तत्वहीन होना ।
धोती ढीली होना-डर जाना ।
धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का-जो किसी ओर का न हो ।
धोए हू सौ बार के काजर होय न

सेत-नीच आदमी की नीचता लाख कोशिश से भी दूर नहीं जाती।

न

नंगे परमेश्वर से बड़े-नीच आदमी से सभी भय खाते हैं ।
न इधर के रहे, न उधर के रहे-कहीं का न रह जाना ।
नकेल डालना-काबू में करना ।
नक्कू बनना-बदनाम होना ।
नख शिख वर्णन करना-शुरू से आखीर तक वर्णन करना ।
न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेंगी-काम करने के लिए ऐसी शर्त्त लगाना जो पूरी न हो ।
न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी-झगड़े की जड़ ही नष्ट कर देना ।
नजर लग जाना- कुदृष्टि का प्रभाव होना ।
नजर पर चढ़ना-प्रिय बनना ।
नजर से गिर जाना-सम्मान कम हो जाना ।
नमक खाना-किसी का दिया खाना ।
नमक अदा करना-एहसान का बदला चुकाना ।
नमस्कार करना—त्याग देना ।
नया गुल खिलना-विचित्र घटना होना ।
न तीन में न तेरह में-किसी गिनती में न होना ।
नाक-भौं सिकोड़ना-नाखुश होना ।
नाक में दम करना-परेशान करना ।
नाक कट जाना-बदनामी हो जाना ।
नाक पर मक्खी न बैठने देना-बहुत खरी प्रकृति का होना ।
नाक रगड़ना-दीनता-पूर्वक प्रार्थना करना ।
नाकों चने चबाना-खूब तंग हो जाना ।
नाक रख लेना-इज्जत बचा लेना ।
नाक का बाल होना-बड़ा प्रिय होना ।
नाच नचाना-बहुत परेशान करना ।
नाक कटी पर घी तो चाटा-बेशर्म होना ।
नादिरशाही होना-बड़ा अत्याचार होना ।
नानी याद आना- व्यग्र होना, घबड़ा जाना ।
नाम पर धब्बा लगाना-बदनामी कराना ।
नाम डुबोना-यश खो बैठना ।
नाम बिकना-नाम से किसी चीज का आदर होना ।
नाम लेना-याद करना ।
नाम खोना—कलंकित होना ।
नाम चमकना-मशहूर होना ।
नाच न जाने आंगन टेढ़ा-काम न करने के बहाने ढूंढना ।
नानी के आगे ननिहाल का बखान-अपने से अधिक जाननेवाले के आगे बढ़-बढ़ कर बातें करना ।
[illegible]

संग्रह की चिन्ता में रहना ।
नींद हराम होना-निद्रा न आना ।
नीला-पीला होना-रोष में आना।
नींव डालना-शुरुआत करना ।
नुकताचोनी करना-दोष निकालना।
नौ नकद न तेरह उधार-अधिक मुनाफे से उधार बेचने से कम में नकद बेचना अच्छा ।
नौ-दो ग्यारह होना-भाग जाना ।

प

पंजे में करना-वश में करना ।
पगड़ी उछालना-बेइज्जत करना ।
पगड़ी की लाज रखना-शान रखना।
पट्टी में आ जाना-बहकावे में आना।
पट्टी पढ़ाना-बहकाना ।
पट गँवाना-मर्य्यादा खो देना ।
पते की कहना-रहस्यपूर्ण बात कहना।
पत्थर की लकीर बन जाना-दृढ़ हो जाना ।
पत्थर को जोंक नहीं लगती-निर्दय का हृदय नहीं पसीजता ।
पत्थर का कलेजा करना-निष्ठुर हो जाना।
पत्थर पड़ना-आपत्ति आना ।
पत्थर पसीजना-अनहोनी बात होना।
परछाईं से डरना-बहुत भयभीत होना ।
परछाईं न पड़ना-प्रभाव न होना ।
परछाईं से भागना-अति घृणा करना।
पराई आग में कूदना-दूसरे की तकलीफ में पड़ना ।
परदा डालना-किसी बात को छिपा रखना ।
पल्ला छुटाना-छुटकारा पाना ।
पल्ला भारी होना-पक्ष सबल होना।
पल्ला पसारना-किसी से कुछ माँगना ।
पसीना बहाना-मेहनत करना ।
पहाड़ टूटना-मुसीबत आ जाना ।
पसीना-पसीना होना-अधिक घबड़ा जाना ।
पर्वत को राई करना-बड़ी बात को छोटी बना देना ।
पहले ग्रास में मक्खी पड़ना-काम की शुरुआत में ही असगुन होना।
पाँव पूजना-इज्जत करना ।
पाँचों अंगुलियाँ घी में होना-खूब लाभ होना ।
पाँव उखड़ जाना-हारकर भागना।
पाँव जमीन पर न पड़ना-घमंड हो जाना ।
पानी का बुलबुला होना-क्षण-भंगुर होना ।
पानी-पानी होना-शर्मिन्दा होना ।
पानी के मोल बेचना-सस्ता बेचना।
पानी फेरना-मिटा देना ।
पानी मरना-बेशर्म होना ।
पापड़ बेलना-कष्ट से जीवन बिताना।
पार पाना-अन्त पाना । जीतना ।
पार उतार देना-कार्य पूरा करना।
पाला पड़ना-वास्ता पड़ना ।
पिंड छूटना-पीछा छूट जाना ।

पीठ दिखाना-हार जाना ।
पीठ ठोंकना-बढ़ावा देना ।
पेट का पानी न हिलना-बात छिपी रखना ।
पेट को मार देना-भूखों मारना ।
पेट का पानी न पचना-बिना कहे न रहना ।
पेट में चूहे कूदना-खूब भूख लगना ।
पेट पीठ में लगना-भूख से दुबला होना ।
पेट में पैठना-भेद की बात जानना ।
पैर आगे न पड़ना-साहस न होना ।
पैर जमाना-स्थिर होकर रहना ।
पैरों तले से जमीन हट जाना-सहम जाना, साहस छूट जाना ।
पैर के नीचे से निकल जाना-हार मान लेना ।
पैर उखड़ना-हारकर भाग जाना ।
पोल खोलना-गुप्त बात कहना
पौ फटना-प्रातःकाल होना ।
पौ बारह होना-अच्छा मुनाफा होना ।
पौने सोलह आने ठीक-लगभग ठीक ।
प्रकाश डालना-स्पष्ट करना ।
प्रभुता पाय काहि मद नाहीं-अधिकार पाकर सभी इतराते हैं ।
प्राण सूख जाना-बहुत भय खा जाना ।
प्राणों पर बीतना-विपत्ति में पड़ना ।
प्रेम में नेम कहाँ-प्यार में कोई नियम नहीं रहता ।

फ

फंदे में [illegible]

फंदा फेंकना-धोखे का जाल बिछाना ।
फटा मन और फटा दूध नहीं मिलता-टूटा हुआ प्रेम कभी नहीं मिलता ।
फड़क उठना-प्रसन्न होना ।
फबतियाँ कसना-हँसी उड़ाना, व्यंग्य करना ।
फल पाना-बदला मिल जाना ।
फलना-फूलना-समृद्ध होना ।
फाड़ खाने को दौड़ना-भयंकर क्रोध दिखलाना ।
फाँसी लगी होना-बहुत तकलीफ मिलती होना ।
फूँक-फूँक कर कदम रखना-सोच-समझ कर काम करना ।
फूँक डालना- बरबाद करना ।
फूट फूट कर रोना-बहुत रोना ।
फूटी आँख न सुहाना- अच्छा न लगना ।
फूट डालना-वैमनस्य बढ़ाना ।
फूलकर कुप्पा हो जाना-बहुत खुश होना ।
फूल सूँघ कर रहना-कम खाना ।
फूला न समाना-बहुत खुश होना ।
फेर में आ जाना-धोखे या संकट में पड़ जाना ।
फेरे पड़ना-ब्याह होना ।

ब

बगुला भगत होना-कपट करना ।
बगलें बजाना-बेफिक्री दिखाना ।
बगलें झाँकना-निरुत्तर हो जाना ।
[illegible]

जिसका नाश होना हो, वह बच नहीं सकता ।

बचकर खेलना-सावधान होकर काम करना ।

बछिया के ताऊ-मूर्ख आदमी ।

बट्टा लगना-बेइज्जत होना ।

बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद-चीज की कद्र जानकार करता है ।

बन्दर घुड़की-झूठा भय दिखाना ।

बल्लियों उछलना-खूब खुश होना ।

बड़ा बोल बोलना-शेखी हांकना ।

बड़े घर की हवा खाना-जेल जाना ।

बड़े बोल का सिर नीचा-अभिमानी का अवश्य पतन होता है ।

बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ तो सुभान अल्लाह-छोटे का बड़े से बढ़कर गुणी होना ।

बल निकालना-अभिमान दूर करना ।

बन गये के लालाजी और बिगड़ गये के बुद्धू-काम बन जाने पर वाहवाही मिलती है और बिगड़ जाने पर बदनामी ।

बहती गंगा में हाथ धोना-वक्त से फायदा उठाना ।

बहुत से जोगी मठ उजाड़-काम के करनेवाले बहुत पर परिणाम कुछ न होना ।

बाँबी में हाथ तू डाल मंत्र मैं पढ़ूं-किसी दूसरे को आपत्ति में डालकर खुद बचे रहना ।

बाँह पकड़ना-सहायता देना ।

बाएँ हाथ का खेल होना-सहज होना ।

बाँछें खिल उठना-हर्षित होना ।

बाग ढीली करना-नियंत्रण कम करना

बाजार गर्म होना-किसी पदार्थ का अधिक होना ।

बाजार मन्दा पड़ना-बिक्री में कमी आ जाना ।

बाजी मारना-जीत जाना !

बात पर चढ़ना-बहकावे में आ जाना ।

बात का बतंगड़ करना-छोटी बात को बड़ा महत्त्व देना ।

बात का धनी होना-वादे का पक्का होना ।

बात पी जाना-सुनकर चुप रह जाना ।

बात न पूछना-कुछ न मानना ।

बात रख लेना-शान बचा लेना ।

बात काटना-बीच में बोल उठना ।

बात में आना-बहकावे में आ जाना ।

बात पक्की होना-तय हो जाना ।

बात बढ़ाना-झगड़ा बढ़ाना ।

बात खुल जाना-रहस्य प्रकट हो जाना ।

बातें बनाना-झूठ बोलना ।

बातों में उड़ाना-टालना ।

बानगी दिखाना-नमूना पेश करना ।

बाल की खाल निकालना-बड़ी छान-बीन करना ।

बाल बाल बचना-हानि से बचना ।

बाल बांका न होना-जरा भी हानि न होना ।

बाल-बाल मोती पिरोना-खूब सजना-धजना ।

बालू की भीत उठाना-व्यर्थ काम करना ।

बासी कढ़ी में उबाल आना-बुढ़ापे

में युवावस्था का जोश आना।

बाप न मारी मेंढकी बेटा तीरंदाज-झूठे शेखी लेनेवाला मनुष्य।

बारह बरस दिल्ली में रहे, भाड़ ही झोंका-अच्छी जगह रहकर भी कुछ न सीखा।

बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा-अकस्मात् अच्छा अवसर काम के लिए प्राप्त हो जाना।

बीड़ा उठाना-काम करने का संकल्प करना।

बीच-बचाव करना-झगड़ा निबटा देना।

बुत्ते देना-धोखा देना।

बेगार टालना-दिल लगाकर काम न करना।

बेड़ा पार लगाना-किसी को दुख से छुड़ा देना।

बेदाग बचना-किसी तरह का भी नुकसान न होना।

बेपेंदी का लोटा होना-सिद्धांत-हीन होना, बात का पक्का न होना।

बेवक्त की शहनाई बजाना-बेमौके की बातें करना।

बे सिर पैर की हाँकना-बिना तुक की बातें करना।

बोलबाला होना-प्रसिद्ध होना।

बोली बोलना-चुभती बात कहना।

बोझ हल्का होना-चिन्ता कम होना।

बोलती बन्द करना-चुप कर देना।

भ

भंग खाना-बुद्धि भ्रष्ट होना।

भंडा फोड़ होना-भेद खुलना।

भँवर में नाव फँसना-मुसीबत में जीवन पड़ जाना।

भड़क उठना-क्रुद्ध हो जाना।

भनक पड़ना-भून पड़ना।

भन्ना उठना-उत्तेजित हो उठना।

भबकी देना-भय दिखलाना।

भभूत लेना-आशीर्वाद प्राप्त करना।

भर पाना-ऊब जाना, बदला मिल जाना।

भरम गँवाना-आदर खोना।

भरी थाली में लात मारना-आयी हुई वस्तु को ठुकरा देना।

भरे को भरना- धनवान् को धन देना।

भाँप लेना-जान लेना।

भाड़े का टट्टू होना-केवल पैसे के लिए काम करनेवाला होना।

भाग्य खुलना-अच्छे दिन आना।

भाग्य चमकना- तकदीर अच्छी हो जाना, भाग्योदय होना।

भाड़ में जाना-नष्ट होना।

भागे भूत की लँगोटी भली-जहाँ कोई आशा न हो, वहाँ थोड़ा मिलना भी काफी है।

भीगी बिल्ली बनना-बहुत दबकर रहना।

भीतर ही भीतर-मन ही मन।

भुजा टूटना-भाई की मृत्यु।

भीष्म-प्रतिज्ञा करना- कठिन संकल्प कर लेना।

भुरकुस निकालना-खूब मार-पीट करना।

भूत चढ़ना या स्वार होना-बहुत अधिक आवेश या क्रोध होना।

भूत बनकर लगना-बुरी तरह पीछे लगना।

भूल-भुलैय्या में पड़ना-कोई उपाय न सूझना।

भेड़ियाधसान मचाना-अंधाधुंध अनुकरण करना।

भैंस के आगे बीन बजाई भैंस खड़ी पगुराय-अज्ञानी के आगे गुण प्रकट करना व्यर्थ होता है।

भौंर न छोड़ें केतकी तीखे कंटक जान-अनेक मुसीबतों के होते हुए भी प्रेमी प्रेम नहीं छोड़ता।

म

मन मैला करना-वैमनस्य मानना।

मन रीझना-चित्त प्रसन्न होना।

मन मानी घर जानी करना-जो कुछ इच्छा हो उसे करना

मन चंगा तो कठौती में गंगा-शुद्ध हृदयवाले के घर में ही गंगा है।

मर मिटना-किसी काम में घोर परिश्रम करना।

मरता क्या न करता-मृत्यु की आशंका होने पर मनुष्य सभी कुछ कर सकता है।

मरने पर वैद्य बुलाना-वक्त निकल जाने पर उपाय करना।

मल-मलकर पैसा देना-बड़ी कंजूसी दिखाना।

मलयागिरि की भीलनी चंदन-बेल जराय-जो चीज जहाँ बहुत ज्यादा पैदा होती है, उसकी कद्र वहाँ बहुत कम होती है।

मल्हार गाना-आनन्द मचाना।

मक्खियाँ मारना-बेकार रहना।

मक्खीचूस होना-कंजूसी करना।

मगजपच्ची करना-बहुत बकना।

मरे को मारना-दुखी को दुख देना।

महाभारत मचाना-घोर कलह होना।

माँग उजड़ना-विधवा होना।

माँगी मौत भी न मिलना-किसी भी इच्छित चीज का न मिल पाना।

माँगे हल्दी दे बहेड़ा-उल्टी बुद्धि होना।

माता का दूध लजाना-डरपोक होना।

माथा ठनकना-आशंका हो जाना।

माथे पर चढ़ाना-आदर करना।

माथे पर मढ़ना-इल्जाम लगाना।

माथे पर बल पड़ना-नाराज होना।

माथा रगड़ना-प्रार्थना करना।

मान न मान मैं तेरा मेहमान-जबरदस्ती गले पड़ना।

मार के आगे भूत भागे-मार से सभी

डरते हैं ।

मानो तो देवता नहीं तो पत्थर-विश्वास का फल होता है।

मार-मारकर वैद्य बनाना-जबरदस्ती योग्य बनाने का प्रयत्न करना ।

माल उड़ाना-अपव्यय करना ।

माले मुफ्त दिल बेरहम-मुफ्त की संपत्ति उड़ाने में संकोच नहीं होता ।

मिजाज न मिलना-बहुत अभिमान होना ।

मिट्टी हो जाना-नष्ट हो जाना ।

मिट्टी के मोल बिकना-सस्ता बिकना।

मिट्टी खराब करना-अपमान करना, दुर्दशा करना ।

मिट्टी में मिल जाना-बरबाद हो जाना ।

मियाँ बीबी राजी तो क्या करे काजी-दोनों पक्ष में अभिमत है तो बीचवाले की क्या जरूरत।

मीठा दर्द-हल्की पीड़ा ।

मीठी बात-प्रिय बात ।

मीठी छुरी-स्नेही बनकर हानि पहुँचानेवाला, छिपा दुश्मन ।

मीठा मीठा गप्प कड़वा कड़वा थू-केवल सुख का साथी होना ।

मीठी मार मारना-भला बनाकर बुराई करना।

मीन-मेख करना-बहाना करना ।

मुंह खराब करना-गाली देना ।

मुंह काला होना-बदनाम होना ।

मुंह की खाना-कड़ा जवाब मिलना।

मुंह देखे की मुहब्बत-झूठा प्रेम ।

मुंह चाटना-खुशामद करना ।

मुंह चढ़ाना-ओठ बनाना ।

मुंह ताकना-कुछ पा जाने की आशा करना ।

मुंह-तोड़ उत्तर देना-चतुरतापूर्ण बदला या जवाब देना ।

मुंह में पानी भर आना-ललचा जाना।

मुंह देखी करना-पक्षपात करना ।

मुंह फैलाना-ज्यादा इच्छा करना।

मुट्ठी गरम करना-घूस देना ।

मुट्ठी में आना-अधिकार में आना।

मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त-जिसका काम हो, वह उसमें ढिलाई करे और दूसरे मुस्तैदी ।

मुहर्रमी सूरत बनाना-रोनी शक्ल बनाना ।

मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक-उद्योग का सीमित होना ।

मूछों पर ताव देना-सफलता-जन्य प्रसन्नता प्रकट करना ।

मैदान मारना-विजय प्राप्त करना।

मृदंग बजाना-खुशी मनाना ।

मेढ़े लड़ाना-झगड़ा खड़ा करना ।

मोम होना-दयावान् होना ।

मोरचा मारना-जीत लेना ।

मौत के दिन पूरे करना-जिंदगी दुःख में बिताना ।

मौत सिर पर नाचना-मौत नजदीक होना।

म्याऊँ का ठौर कौन पकड़े-खतरे के स्थान का सामना कौन करे ?
म्यान के बाहर हो जाना-क्रोध वश होना।

य

यमपुर जाना-मृत्यु को प्राप्त होना।
यम की मार खाना-कष्टप्रद मौत होना।
यह मुंह और मसूर की दाल-हैसियत से ज्यादा इच्छा करना।

र

रंग उड़ना-डर जाना।
रंग जमना-धाक जमना।
रंग में भंग होना-मजा किरकिरा होना।
रंग लाना-नतीजा या प्रभाव दिखलाना।
रंग में रँग जाना-प्रभावित हो जाना।
रंग चढ़ना-प्रभाव पड़ना।
रंग-ढंग देखना-चाल-ढाल परखना।
रंग बाँधना-प्रभाव दिखलाना।
रकाब में पैर रखना-तैयार हो जाना।
रग-रग जानना-अच्छी तरह परिचित होना।
रस्सी जल गयी ऐंठन न गयी-दशा खराब होने पर भी अपनी अकड़ न छोड़ना।
रफूचक्कर होना-भाग जाना।
रसातल को पहुँचा देना-सर्वनाश कर देना।
रह रह करके-थोड़ी थोड़ी देर बाद।
राई का पहाड़ बनाना-छोटी बात को देना।
रामकहानी कहना-आप बीती सुनाना।
रास्ते पर लाना-सुमार्ग पर लाना।
राई-रत्ती की जानकारी-पूरी तरह से जानकारी।
रात-दिन एक करना-लगातार परिश्रम करना।
राम-राम जपना पराया माल हड़पना-देखने में सीधा पर हृदय का कुटिल होना।
राह ताकना-प्रतीक्षा करना।
रुपया परखे बार बार, आदमी परख एकबार -मनुष्य को एक बार में ही जान लेना चाहिए और रुपया बार-बार की परीक्षा में।
रोज कुआँ खोदना, रोज पानी पीना-रोज कमाना रोज खाना।
रोटी तोड़ना-बिना मेहनत की कमाई खाना।

ल

लंगोटिया यार होना-बचपन का दोस्त होना ।
लंगोटी बँधवा देना–दरिद्र कर देना ।
लंगर उठाना-जहाज को चलाना ।
लंगोटी पर फाग खेलना-गरीबी की हालत में भी आनन्द मचाना ।
लंबी-चौड़ी हाँकना-अविश्वसनीय बातें करना ।
लकड़ी के बल बँदरिया नाचे—मूर्ख भय से काम करता है ।
लकीर का फकीर होना-पुरानी रीति पर चलना ।
लकीर पीटना-अवसर निकल जाने पर उद्योग करना ।
लग्गा लगाना-उपाय सोचना ।
लगे हाथ करना-सिलसिले में कोई काम करना ।
लपेट में आना-फँस जाना ।
लल्लो-चप्पो करना-चापलूसी करना ।
लहू के घूँट पीकर रह जाना-भारी क्रोध को रोक लेना ।
लहू पसीना एक करना-कठिन मेहनत करना ।
लहू सूख जाना-डर जाना ।
लहू लगाकर शहीदों में शामिल होना-थोड़ा काम करके बहुत श्रेय लेने की कोशिश करना ।
लहू चूसना-शोषण करना, सताना ।
लातों के भूत बातों से नहीं मानते-दुष्ट व्यक्ति शक्ति-प्रयोग से ही वश में आता है ।
लाख का घर खाक होना-बड़ी संपत्ति का नाश होना ।
लाल झंडी दिखाना-काम में रुकावट डालना ।
लासा लगाना-जाल बिछाना ।
लीपापोती करना-ऐब छिपाने की कोशिश करना ।
लुटिया डुबोना-काम बिगाड़ देना ।
लेने के देने पड़ना-लाभ के बदले उलटे हानि होना ।
ले मरना-आफत में घसीटना ।
लोट-पोट हो जाना-बहुत हँसना या अति प्रसन्न होना ।
लोहा लेना-मुकाबिला करना ।
लोहा मानना-अधीनता स्वीकार करना ।
लोहे के चने चबाना-अत्यन्त कठिन काम होना ।
लौ लगना-धुन लगना ।

व

वकीलों के हाथ पराई जेब में-वकील लोग सदा दूसरों का धन खाते हैं ।
वचन तोड़ना-अपनी प्रतिज्ञा तोड़ देना ।
वसन्त की खबर न होना-जानकारी न होना ।

व्यक्ति जो ठगे जाने से पूर्ण सावधान हैं।

वहम की दवा लुकमान के पास भी नहीं-शक की कोई औषधि नहीं होती।

वार देना-न्योछावर कर देना।

वाहवाही होना-प्रसिद्धि होना।

वा सोने को जारिए जासों फाटे कान-कष्टदायक चीज अच्छी होने पर भी नहीं रखनी चाहिए।

विभीषण बनना-घर का भेद दुश्मन को बताना।

विष उगलना-दुर्वचन कहना।

विष की गाँठ-बुरा मनुष्य।

विष के घूंट पीना-क्रोध को जब्त करना।

वीरगति प्राप्त करना-युद्ध में मारा जाना।

वेदवाक्य समझना-प्रामाणिक बात मानना।

वैकुण्ठवास होना-मृत्यु होना।

श

शहद लगाकर चाटना-किसी बेकाम वस्तु को रखना।

शरीर में बिजली दौड़ना-उत्तेजित होना।

शरीर में आग लगना-क्रोध से जल उठना।

शह देना-उभाड़ना, भड़काना।

शिकार हाथ लगना-भोले व्यक्ति का फँसना।

शिकार होना-फन्दे में पड़ना।

शेखी बघारना-अभिमान दिखाना।

शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं बिना पक्षपात का न्याय करना।

शेर के मुंह में हाथ डालना- साहस का काम करना।

शैतान चढ़ना या लगना-भूत-प्रेत का आवेश होना।

श्रीगणेश करना-शुरू करना।

ष

षड्यन्त्र रचना-मिलकर चुपके-चुपके भयंकर काम की योजना बनाना।

षट्रस भोजन करना-स्वादिष्ट चीजें खाना।

षोड़श शृंगार करना-खूब सजना-धजना।

स

संकल्प-विकल्प करना-पसोपेश में पड़ना।

सइयाँ भए कोतवाल अब डर काहे का-किसी को ऊँचा पद मिल जाय तो उसके सम्बन्धी लोग खूब मौज करते हैं।

सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब-टालमटूल करनेवाला या अनिश्चित बातें करनेवाला व्यक्ति

ख़राब होता है।

सठिया जाना-अक्ल मारी जाना।

समझ पर पत्थर पड़ना-बुद्धि भ्रष्ट होना।

सत्तू बांधकर पीछा करना-बुरी तरह परेशान करना।

सच्चे का बोलबाला झूठे का मुँह काला-सच्ची चीज सभी जगह पूजी जाती है और झूठी सभी जगह बदनाम होती है।

सदा के लिए सोना-मर जाना।

सदा कागज की नाव नहीं चलती-छल हमेशा सफल नहीं होता।

सफेद झूठ बोलना-सरासर झूठ बोलना।

सब्जबाग दिखाना-प्रलोभन देना।

सनक सवार होना-किसी बात की धुन होना।

सब धान बाइस पसेरी होना-भले बुरे को समान जानना।

सत्तर चूहे खाकर बिल्ली हज को चली-आजन्म पाप करके अन्त में भगत बनना।

सब गुड़गोबर हो जाना-किया-कराया काम बिगड़ जाना।

सर करना-जीतना।

सांप छछूंदर की दशा होना-असमंजस में पड़ना।

सांच को आंच नहीं-सच्चे को भय नहीं।

सांप को दूध पिलाना-दुश्मन को शक्तिशाली बनाना।

सांप भी मरे, लाठी भी न टूटे-काम बन जाय और कोई नुकसान भी न हो।

सांसें पूरी होना-मृत्यु होना।

साढ़ेसाती आना-दुर्भाग्य के दिन आना।

सात-पांच करना-धोखा देने की कोशिश करना।

साए से भागना-घृणा करना।

सारे जमाने की बातें सुनना-बदनाम होना।

सिक्का जमना-प्रभाव जमना।

सिर उठाकर चलना-अभिमान के साथ चलना।

सिर आँखों पर बैठाना-बहुत प्यार करना।

सितारा चमकना-भाग्यवान् होना।

सिर उठाना-बगावत करना।

सिंहासन डिगना-भयभीत होना।

सिटपिटा जाना-घबड़ा उठना।

सितम ढाना-जुल्म करना, कष्ट देना।

सिर ऊँचा होना-इज्जत बढ़ना।

सिर चढ़ाना-ढीठ बना देना।

सिर झुकाना-सम्मान करना।

सिर देना-बलिदान करना।

सिर धुनना-पछताना।

सिर पकड़कर रोना-बहुत पछतावा करना।

सिर पर आना-पास आना।

सिर पर हाथ रखना-मदद करना, सहारा देना।

सिर पर मौत आना-मौत पास आ जाना।